

श्री

अमृतसागरवैद्यकग्रंथ.

भाषा राजपुत्रस्थानीमें बणायकर.

सर्वलोकहितार्थ श्रीमन्महाराजाधिराज

महाराज श्री १०८ श्री सवाई प्रताप सिंह जी

संग्रह कर्यौ.

भावप्रकाश आदिलेर घण्टां ग्रंथां का प्रमाणसे

जीनें.

श्रीधर गौड़ ब्राह्मण सलेमाबाद के यणीं महान्त सुमुद्रकर

मुंबई मध्ये.

आपका प्रज्ञायुक्त ज्ञानसागर ठापरखानोंमें

छाप्यौ.

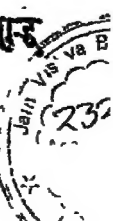
आवृत्ति पहिली बार.

संवत् १९१७ शके १७८९

द्वितीय अभिनवमुद्र

पक्षः

सन् १९६०



प्रथमसूचना:

सूचना कहिजे सावनेतीकरणोजीकोनामसूचनाछै. जीकीया दलिपुंछूं.

उक्तानुक्तसमझणों.

उक्तनामग्रंथमेंकत्याजो. योग, क्रिया, साधन, निदान, चिकित्सा इत्यादिक यादकरणा. अनुक्तनाम. याग्रंथमेंनहीं कत्याछै योगादिक साधनसो. सदैवविदानकमें कृपाकर वाकबहोणों इसी वा से सत्यता करीछै.

सोअबजुरोनुदोभेदकहुंछुं.

युक्तायुक्तविचार १ औषधलेवाकोसमय २ औषधप्रतिनिधि ३ औषधादिकांकापरिमाण ४ काथादिक्रिया ५ स्नेहपाक ६ पा रोगंधक, आदिलेखान्तरादिकरणों. ७ नाडीआदिले अष्टवि धपरिक्षा.

युक्तायुक्तविचार.

सर्वकार्यमें नबीनऔषधलेकर योजना करणी, परंतु भायवि डंग, पीपल, शूल, धणों, सहत एताएकवर्षका जूनालेणों. ओ र, नीमगिलेय, कुंदाकीछाल, भरहुसो, कोहोली, शतावरी, आ सगंध, परेंश, कंक, गंधमदाली. यहऔषधांआलीहीलेणी. प र आलीहीली जाणकर हुगणीलेणीनहीं, औरऔषधसूचीनहीं मिलेंतो सूचीकाउंजमसू आलीहीयतो हुणीलेणी औरजीऔष धकीअंगनहींकस्योछै जेंदेबी औषधकीमूललेणी इसीवैद्यसंप्र दायछै.

औषधलेवाकोसमय.

जेंदेऔषधलेवाकोवषतकस्योनहींछै. जेंदेऔषधप्रभातहीदे

कल्कनाम. सूषी अथवा आलीओषदले ससिलातोदीसुं लुग दीकरेंसो. और कल्कको प्रमाण तोला १ तांईछै. जीमें सद्दत, घिर त, तेल, इत्यादि घालणा होयतो, दुगणा घालणा, और मिश्री, गुल बरोबर घालणा, और चूर्ण करणोसो, अत्यंत सूषी ओषध ले कर संदर कूदकर कपड छाण करणी जीनैं चूर्ण कहिजे. सो मोटा मनुष्यने मासा ६ छै सुलेर तोला १ तांई देणो. बालकनैं मासो १ लेर मासा ३ तीनपर्यंत तारतम्य देष कर देणों, चूर्णमें गुल घाल णों होयतो समान उजन घालणों, मिश्री तो दुगणी. हिंगतो सेक कर घालणी, घृतादिक तो दुगणो, पाणी तो चूर्णसुं चोगुणो चाहि जे. पाणी की साथ चूर्ण की ओषध पेटमें पसरकर गुण करे. और चूर्णनैं कोइ बीरस की भावना तथा पुट देणों होयतो ओषद तरांतर होय जटा तांई देणो. जोयह ओषधांका प्रमाण कत्या छैसो. देस, काल, प्रकृति, वय, अधि, पल, इत्यादिकां न बूब विचार कर देणा.

स्नेहपाक.

कल्कसं. चोगुणां तेल. अथवा घृत लेकर जीं घृत तथा तेल सो चोगुणों पाणी तथा और द्रव पदार्थ घालकर सिजोबणों. सो तेल तथा घृत मात्र बाकीरहे जैवा तांई पाक करणों. पछै बो घृत. तथा तेल कपडासुं छाण लेणो. जी स्नेह की मात्रा तोला चार देणी. पछै तो ओषधको स्वभाव समझ कर देणी.

पारागंधक इत्यादिकां का शोधन, तथा मारण, तरंग बावीस
 वार्में पार्ने ४९९ कामेंछै. औरनाडीआदिलेर परिक्षा मात्र प्रथम
 तरंगमैछै. और ईग्रंथको सूचीपत्रनाम घतावणीछैसुग्रंथका
 समाप्तिमैछै जीमें, रोगादिकां कीषतावणी विशेषछै, औरमु
 ख्यसुख्यओषधांकीछै, बाकीसाधारणओषधीतौ जीरोगको
 निदान करसी जांहीं रोगका प्रकर्णमें सारंषुलासाभिलसीका
 रण. सूचीपत्रकोविस्तार घणों होय, औरईग्रंथमें तोलकोप्र
 माणनहींकह्योछैसुं याप्रमाणैजाणज्यासंक्षेपसं आठ८ सि
 रसुंको१ एकयव ४-आरयवकी१रती ६छैरतीको१एकमासो
 ४-आरमासांकी१एकटांक८ आठटांकको१येकपईसो २दोय
 पईसाकी१एकपल अथवाटकोसो. अथहारिकतोला४-आर
 कीहोयछै ४-आरपलको१एकपाव ४-आरपावको१शेर ४-आ
 रसेरकी१आटक ४-आरआटकको१एकद्रोणहोयछै. ओ
 रयोग्रंथविश्वाद्यमोदरदासकी सहायतासैछाप्योसु. ईमेंह
 मारा अज्ञानपणांसुं अथवा लेशक दोषसुं भूलचूक मिलसी
 तो. सूत्रलोक श्रीधरनै क्षमांही करसी. इसीहमारीआसाछै.

वैद्यलक्षण.

एकसुरकसौंसुणकरपटीहुवीजोबिद्या, जैद्यशास्त्रकी, जीमेंनिपुण, ओ
 रहातमेंजस, औरसुखाव, ओकारीकीक्रियामेंहुशाल, निलोभी, धैर्यवान्,
 रुपालु, पवित्र, निष्पटी, सत्यवादी, आलसरहित, दयावान्, एताजीमेंल
 क्षणहोयसोवैद्यओषधदेवानेंयोग्यछै.

वैद्यकोसुर्यविचार.

प्रथमवैद्यनैसूक्ष्मरीतकापूछणैसो. रोगीकोमूलकारण, नामकोरसो. रोग

गकोणसा कारणसुंहुवो, यानिश्चयकरणी, पछै. साध्य, असाध्य, कष्ट
साध्य, यांकोविचारकरणी. साध्य अथवा कष्टसाध्य रोगी होयतो उपा
यकरणी असाध्य होयतो उपायनहि करणी. कारण, असाध्यको उपा
यहरिभजनछै. **पथ्याऽपथ्यविचार.**

रोगीनें वैद्य कहें सो. पथ्य करणी अवश्य छै, अथवा रोगी आपका मन
सों विचार कर, पथ्य तो करें ही. कारण. पथ्य का करणी सों. रोग निवार
ए होय छै. जद औषध बाय कर पथ्य करै. जी को रोग तो. निवार
ए होय जिमें सदेह बीन हीं छै. और जो रोगी पथ्य करणै बालोजी
नें. औषधी सेवन करणै की गरज नहीं. जिस तरै ही. रोगी पथ्य न
हीं करणै बालोजीनें बी औषध सेवन करणै की गरज नहीं. कारण अ
पथ्य रोगी मरे न जीवै.

मूर्ख वैद्य की औषधी लेणो निषेध.

रोगीनें मूर्ख वैद्य का हात सों औषध लेणी नहीं, व्याधीमें पीडित
होय, ज्वर सों डुखी होय, तो बी मूर्ख वैद्य की औषध लेणी नहीं.
कारण. मूर्ख वैद्य का उपाय सों. गुण आवणै तो कहिण छै. पण
औ गुण तो जरूर ही तुरत होय. ई वास्ते मूर्ख वैद्य की औषध ले
णी नहीं. जैसे कुलीन पुरुष. व्यभिचारणी स्त्रीनें त्याग दे छै. जि
यान. मूर्ख वैद्य का हात की औषध त्याग देणी.

ग्रंथ छापणें को प्रयोजन.

सर्व लोक हित करक अमृत सागरनें. पहिली बार ही. श्रद्धा
रं छापी. जीं की किंमत सुलभ प्रयोजन पणें सर्व को ईनें मि
ल सकें ई वास्ते. आग्रंथकों. ग्रंथ कर. को ई बी मूर्ख वैद्य. धृतरा.
ठग. बाबाल. लालचा. बांकी खोरी. औषध रूपी. फासीमें पड-
मीन हीं दुसरे मार्ग खाना छै.

श्री

श्रीगणेशायनमः॥

अमृतसागर तथा प्रतापसागर

तरेगं १ ला प्रारंभः

अथ श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रमहाराजश्रीसवाई
प्रतापसिंघजीविचारकरिभनुष्यांकारोगांकादूरिकरवाकैवास्तेपर
मंकरुणकरिकेंचरकसुश्रुतवाग्भट्टभावाप्रकाशत्रायेयनेत्रादि
लेकरिकेंवैद्यककासर्वग्रंथानेविचारिकरिवाकौसारिकादिअतिसं
क्षेपतेसर्वरोगांकोनिदानपूर्वकअमृतसागरनामग्रंथकरैये तांकी
वचनिकाकरिकेंओषधांकाअनेकप्रकारकाअजमायाअजसायाज
तनविचारपूर्वकलिषजैहें अथप्रथमरोगविचारः रोगकह
जेकहा कहांतरैकीपाडाहोय तीनेरोगकहजे सोरोगदोयप्रकारको
हैं एकतौकायक दूसरोमानस कायामेंरहेसोकायक तिनकोनाच-
व्याधिहैं मनमेंरहेंसोमानस तीरोगकोनांवआधिहैं सोथैदोन्योवा
यपित्तकफरूपहोयसरीरमेंकहांतरैकाकुपथकरिकें मिथ्याअहार
अरमिथ्याविहारकावसथकीकौपकुंप्राप्तहुवाथकासर्वरोगांनैरुप
जावैहैं अरएषातपित्तकफकहींतरैकाकुपथसेविगड्याथकादेह
कूंविगाहैंहैं अरएहीआळीतरहपथकासेवाथका आछप्राहुवा
थकासर्वदेहउंप्पूटकरैहैं अथप्रथमसर्वरोगांकीअरसर्वरो
ग्यांकीपरिच्छालिषांडां प्रथमसेअंकीपरीक्षातोअतनांप्रकारसूं
होयहैं नाडीपरीक्षा १ मूत्रपरीक्षा २ अररोगकाअहवालसे ३ सोरो
गीकीपरीक्षातीनप्रकारकीहैं अररोगांकानीदानसे निदानकहिये
अहवाल यांतीन्यांप्रकारसेतीरोग्यांकोग्यानहोयहैं अथप्रथम
नाडीपरीक्षालिख्यते पुरषरोगीहोयतींकीतोजीवणंहाथकी

नाडीदंष्ट्रिजेस्त्रीरोगाहोयतींकीबांवांहाथकीनाडीदेखिजे किसीतरैदे
 पैवैद्य एकाग्रचित्तनाडीमेंराधिआपप्रसन्नहोय अररोगीकाहाथनें
 हल्कावादेनहीं इसीतरैअंगुठाकेनिकटिजीवकीसाक्षीनाडीछे सोबा
 नाडीजीवकासर्वराषदुषनेंकहैछे तीनेंवैद्यहंसोआछीतरहआप
 कीतीनअंगुल्यांसेतीदेपै सोबानाडीअंसीतरहदंष्ट्रिथकीसर्वसशर
 कासुपदुषनेंकहैछे जैसेंरागकावेत्ताकूवालाभीतांतसर्वरागकूंकहै
 छे तैसेंरानाडीभीसर्वसुषदुषकूंकहैछे अरवाहीनाडीइसीतरहदे-
 ष्ठ्रिथकीसशरकांसुषदुषकूंवैद्यकूनहींकहैछे किसीतरैकापुरसकी
 तत्कालस्नानकन्योहोयजिंकीं तत्कालभोजनकस्त्रोहोयजींकी स
 रीरकेंतैललगायोहोयजींकी सूताआदमीकी दौडतापुरषकीभूषा
 आदमीकी तिसायाआदमीकी कामातुरकी मलमूवनेंआदितेरवेग
 लगिरह्यो होयजींकी सोअतनापुरसांकीनाडीदेखिजेनहीं अरदे
 पैतोवैद्यनैरोगको यथार्थग्याननहींहोयछै अरजैसेंवैद्यरोगीकाहा
 थकीनाडीदेखैतैसेंहींवैद्यरोगीकापगकीभी नाडीदंष्ट्रिसास्त्रकासंप्र
 दायतें अथवा आपकीबुद्धिकाप्रभावतेंजैसेंजोंहरीअभ्यासका
 बलथकी हीरानेंआदिलंरजंवाहरकासाचाऊठानेंअरवेंकामोल
 नैकहंदेवैछे तैसेंहीभलोवैद्यसास्त्रका अरअभ्यासकाबलथकी
 रोगीकारांगकीसाध्यअसाध्यकी अरसरारकासुपदुषकीसर्वचं
 टाकूजाऐंछे अचईनाडीकीपरिदालिपुंछूं अंगुठाकेलग
 ताहीतानअंगुल्यामें गहलीअंगुलीनचिंतोवायकीगुप्यनाडीवहं
 छे वाचलाअंगुलीकेनचिंपित्तकीनाडावहंछे पाल्नीअंगुलीना
 चेकफकीनाडावहंछे सांसांपजोंनचिंआदिलंरजैसेंवेवांकाचाने
 छे तैसेंवायकीनाडीवांकीनानेअरकावलचामीडकानेंआदितें

रजेंसें वै उतावला अरफदकता चाले छै तैसें पित्त की नाडी उतावली
 अरफदकती चाले छै जैसें राजहंस अरबतक अरमीरक बूतरक
 मेडी कूकडोती नें आदिलेर येजिनावरमंद चाले छै तैसें कफ की ना
 डी मंद चाले अरवारंवार सांप की सी गति चाले वारंवार मंडका की
 सी गति चाले सोवानाडी वात पित्त की जा एजै अरसर्प की सी अर
 हंस की सी गति होयती नाडी नें वायकफ की कहिजे अरबांनरा की
 सी मंडका की सी हंस की सी चाल चाले तीनाडी नें पित्तकफ की कह
 जै अरजेसें पाती चिडोकाष्ट नै कूटे छै अतिवेगसूं तैसें ही पुरुष की
 नाडी चाले अरवाही नाडी चाली वासें रह जाय अरओरुं चाल बा
 ला गिजाय वानाडी सन्निपात की जा एजै अरमंदमंद बांकी बांकी
 व्याकुल व्याकुल होय स्थिरस्थिर होय बांधमनी नाडी जी की चाले
 सोवानाडी सूक्ष्म दुर्इय की पुरष नें मारे छै सोवानाडी सन्निपात की
 जा एजै जी पुरुष के ज्वर को कोप होय तीं की धमनी नाडी उन्ही अ
 र उतावली घली चाले अरजीरोगी की नाडी इकसार सी आपका
 स्थान में चाले सोरोगी मरेन हीं अरकामातुर पुरस की नाडी उता
 वली चले कोधी पुरष की नाडी उतावली चाले चिंतावान पुरस की
 नाडी क्षीण चले अरकहीं नरेंसं पुरस डस्यो होयती की नाडी महा
 क्षीण चाले अरमंद जी की अग्नी होय अरक्षीण जी की धात होय
 तीं पुरष की नाडी महामंद चले अरलोही का बिकार वाला पुरस
 की नाडी कपूये कगरम दुर्इय की भारी चले अरजी पुरस का पेट में
 आंब होयती पुरस की नाडी निपट भारी चले जी पुरस नें भूष घली
 लागीं होयती पुरस की नाडी हल की अर उतावली चाले अरजी पुर
 स भोजन कस्यो होयती पुरस की नाडी धीरी चाले जी पुरस के मल

कोपातहुवाहोयतांपुरसकीनाछाघणीउतावलीचलै सुरवीपुरसकी
 नाडीधीरीअरवलवानचलै औरनाडीकीपरिक्षातोघणप्रकारसुं
 छै सोबुद्धिवानवैद्यहोयसोआपणीबुद्धिसंनाडीकीपरिक्षाशरीरका
 सुरगदुरगकोज्ञानसर्वविचारलाज्यो जैसैंजोगीकूंजोगकाअभ्या
 सकरिकैंब्रह्मकोसारव्यातज्ञानहोयछै तैसैंसदवैद्यकुंनाडिकाअ
 भ्यासकरिकैंसरिरकांसर्वरोगांको अरसर्वसुरवादिकांकोज्ञानहोय
 छै इतिनाडिपरिक्षासंपूर्णम् अथमूत्रपरिक्षालिख्यते वैद्य
 हैसोचारिघडीकैतडकैरोगीनैंउठाय काचकासूपेदवासणमेंअ
 थवाकांसीकापात्रमें मुतावै पाछेवेवासणनैंवस्त्रसूटांकिराषेसूयें
 दिथहुवापाछेवैद्यवैकीपरिक्षाकरै वेंरोगीकोमूत्रपाणीसीरीसोहो
 य लुषोहोयअरघणोहोय अरक्यूनोलेभीहोयतोवायकाविकार
 कोमूत्रजांणिजै अरवेंमूत्रकोलालकसूंभासिरीसोरंगहोयअरग
 रमउत्तरैअथवा पीलोकेसूत्रकारंगसिरीसोरंगउत्तरै अरथीडो
 उत्तरै तोगरमीकाअजारकोमूत्रजांणिजै अरवेंरोगीकोजाडोअ
 रसुपेदअरचीकणोमूतउत्तरैतांकफकाआजारकोमूत्रजांणिजै
 अरओच्छारिघटिकातडकाकोरोगीकोमूततावडेगेलिघडीआ
 रिपाछै वेंमूत्रउपरिवैद्यहैसोकपडासेतीतेलकीबूंदनाछै आतेल
 कीबूंदमूतउपरिफैलिजायतोओरोगीसाध्यजांणिजै अरआरो
 गीचंगोआछोहोंई अरबतेलकीबूंदमूतउपरिफैलेनहीं अरसि
 रहोयरहैतांओरोगीकष्टसाध्यजांणिजै अरआतेलकीबुंदरोगीका
 मूतमेंडूबिजायअथवा आककीसीनाईभ्रमणलागिजायतोओ
 रोभनिश्चैमरे अरवेरोगीकामूतमेंतेलकीबूंदनापतांबूंदमंछेद्र
 पडिजाय अथवा येनिहूहोजाय पडगकेंआकार वादंडवेआ

कार बाधनुषकेआकार तैलकीबूंदहोजायतो योरोगीनिश्चैमेरे अ
 रोरोगीकासूतऊपरितेलकीबूंदतलावकेआकारहोजाय अथवा
 हंसकेआकारहोई अथवा पद्मकेआकारहोय अथवा हाथीकेआ
 कारहोय अथवा छत्रकेआकारहोय अथवा चमरकेतोरणकेआ
 कारतैलकीबूंदहोयतो ओरोगीताजोहोय अरसरसूँकातैलसिरी
 सोजीकोमूतहोय तीकैवायपित्तकोरोगजालिजै अरकालोअरबु
 दबुदानेलायांजीकोमूतहोइतीकैसन्निपातकोअजारजालिजै अ
 रसूततांजीरोगीकीधारलालऊर्जरे सोदीर्घरोगजालिजै मूततांजी
 कीधारकालीउत्तरेसोरोगीमारिजाय अरजीकांमूतमेंबकरीकामू
 तसरीसीवासआवे तांकेअजीर्णकोआजारजालिजै जीकोमूतगर
 मअरलालअथवा केसरिसिरीसोपीलांजीकोमूतहोय तीकेज्वर
 कोआजारजालिजै अरजीकेकूवाकापांलसिरीषोमूतउत्तरेतींयु
 रुषनेनैरोगजालिजै इतिमूत्रपरिक्षासंपूर्णम् अररोगांकोअ
 हवालवाँकाप्रसंगमेंकहस्यां अथरोगीकोपरिक्षालिख्यतेरे
 गीकीपरीक्षाअतनाप्रकारसैंहोयछै देषवासेस्पर्शकस्याँसैंअरबु
 षिवाँसैं अरस्वप्नसैंदूतसैं अरसकुनसैं अरकालज्ञानसैं अरओष
 धदेसकाल अवस्था अग्निबलकाविचारसैं अरसाध्यअसाध्यसैं इ
 तनाप्रकारसंरोगीकीपरिक्षाकरिजे सोअनुक्रमसैंलिषांछां पी
 ल्यानेंआदिलेरकेइकरोगतोरोगीनेंदेयाथकाहींवैद्यनेंग्यानहोय
 छै अरज्वरनेंआदिलेरकेइकरोगरोगीनेस्पर्शकस्याविना वैद्यनें
 हींज्ञानहोयछै अरसुदरसूल पार्श्वशूल मस्तगपीडा ववासीरउपदं
 स सजाष होलदिल अरभूतादिककोलगिवो प्रमेहनेंआदिलेरके
 इकरोगरोगीनेंबुजांविनांवैद्यनेंरोगकोयथार्थग्याननहींहोयछै

अथसुपनपरिष्कालिष्यते रोगीनेंद्रसारूपनांआवेतोआछ्यान
 हीं रोगीनेंद्ररूपनांमेंनांगाअरसुंडित अरलालअरकालाचरूपह
 स्नांथकाआदमीदाषे अरनकटा अरबूचा अरकाला अरआयुध
 नैलायांथका अरफांसीनेलायांथकां मारताथकादीबेंतोओरोगी
 असाध्यजांणजे अरमेंसाऊपरउंदगधाउपरचढ्यादक्षिणादिसा
 नेंजाता सुपनांमेंदेवैतोओरोगीआछोनहीं अरउंचासूनांचेपडे
 जलमेंमूबिजाय अग्निमेंवृलजाय सिंहनेआदिलेरवैनेषातोहं
 य दीवानेंवृत्तोदेवें तेल दारुपीवतांदेवें लोहनेलेतांदेवें पक्का
 ननैषावतोजाय कुचामेंपडतोजाय इसारूपनांरोगीनेंआवेतो
 रोगीकोअसाध्यजांणजे अरईनेंआदिलेरइसारूपनांकांईदेवें
 तां कहींनैकहजेनहीं अरपरभातही भस्मादिककोस्नानकरे वेंसु
 पनामाफिकहोमदानपाठनेंआदिलेकरिदिजेतौरूपनाकोदोस
 दूरहांय अररोगीनेंद्रसारूपनाआवेतोआछा सुपनांमेंदेवता रा
 जा जाचक मित्र ब्राह्मण गरु अग्नि तीर्थदेवैतोओरोगीवेगोआ
 छां होय अरसुपनांमेंकादानेंतिरजाय वैस्त्रोनेंजांते महल रथ प
 र्वत उपरचढेंतोओरोगीवेगोआछोहोय रूपनांमेंरूपंदचरूपरूप
 पेटपुष्पधारे अरमांस मीन फल यांनैषायतोओरोगीवेगोआछां
 होय अररूपनांमेंअगम्यागमनकरै अरसरीरकेंविष्टाकोलेपकरै
 अरसंवें अरआपकीमृत्युदेवै अरकाचोमांसपाथरूपनांमेंतो ओ
 संगीवेगोआछोहोय अरजोक सांप धोंरामांपसुपनांमेंजीनेंयेंकाटे
 ओरोगीवेगोआछांहोय येसुपनाआछाआदमीनेंभाआवेतोवैनें-
 भीरुभजाणजे इतिरूपनपरिष्कासंपूर्णम् अथदूतपरिष्का
 लिष्यते येचक्रावृत्तावासातेदूतभैजै सोकांणोषोडोनकदानें

आदिलेनहिंभेजे अरइसानेभेजेतोओरोगीबिगोआछोहोय चतुरम
 लुष्य अरनिर्मलवस्त्रपहस्यां होय अरसुखीहोयअगामिभेजे अरघोडा
 रथरपरिचदिवरिजाय क्यूवैद्यकैवास्तेभेटलेजाय आछोमुत्तमजाति
 कोमनुष्यजाय अरआछोचेष्टावानहोय जैधीकोउंकोसुरचालतोहो
 य जैधीनेवैद्यकनेजायउभोरहै असोदूतवैद्यकाबुलावावास्तेजायते
 ओरोगीवेगोआछोहोय इतिदूतपरिक्षासंपूर्णम् अथसकुन
 बिचारलिख्यते वैद्यहैसोरोगीकाजतनकरिबावास्तेजातोहोयतां
 नेंसीतलसगुनमिलैतेवैद्यकनआछा अरवैद्यनेरोगीकैजातां अधि
 नेंआदिलेरगरमसकुनसामेंमिलैतोरोगीआछोनहींहोय अरदूतवै
 द्यनेबुलावानेंजातोहोयतानेंजलनेंआदिलेसीतलसकुनसामेंमि
 लैतोआछोनहींअरवैद्यनेंअधिनेआदिलेरगरमसकुनसामेंमिलै
 तोरोगीवेगोआछोहोय इतिसकुनपरिक्षासंपूर्णम् अथका
 लम्पानलिख्यते जोरोगीकैसातिनैतोदाहहोयअरदिनमेंसीतल
 गै अरकंठमेंरोगीकैकफढोले ओरोगीनिअैमरे जोरोगीकीनाक
 कीअणीसीतलहोय अरवैकोहियैअरवैकाहथपगभीसीतलहो
 य अरवैरोगीकासिरकैविषैसूत्रचालैतोओरोगीनिअैमरे अरजां
 रोगीकीकान्तिजातीरहै अरवैकोप्रतापजातीरहै अरवैकीलाजजा
 तीरहै अरवैकोसुआवकोधीहोजाय सोसोगोछमहीनामेंमरे अर
 जांरोगीकोभ्रमकांपतोहोय अरवैरोगीकीगतिभंगहोय अरवैरो
 गीकाशरकोवर्णओरसोहेजाय अरवैरोगीनैसुगंधदुर्गंधकोगं
 ननहींहोय ओरोगीनिअैमरे अरदृक्षकापेसमें अरदृक्षकाभालामें
 रोगीनैअभिकातरवरासादीवै ओरोगीछमहीनामेंमरे अरओरो
 गीकामकरिकैहीनहोय अररोगीकेप्रस्वेदनहींआवै ओरोगीता

नमहिनामेंमरे अरजारीगीकांनकाछिइनेंयूंदिरशब्दसुरेनहीं
 सोरोगीनिश्चैमरे अरजीरोगीकीआंधीअरदेह अरमूढाकोवर्णओ
 रसोहोजायसोरोगीनिश्चैमरे अरजारीगीनेंआपकीजीभकीअ-
 णीअरनासिकाकोअग्रभाग अरमेंधाराकोवीचदिसेनहीं ओरोगीनि
 श्चैमरे अरजीरोगीकामूढाकोवर्णओरसोहोजाय अरवेरोगीकाला
 लनेंनहोजाय सोरोगीनिश्चैमरे अरजीरोगीकीइंटीयांआपआपका
 विसयनेंग्रहएकरेंनहीं सोरोगीनिश्चैमरे अरजारीगीकीबोलवासूं
 वाणीथकिजाय सामर्थ्यका सोरोगीनिश्चैमरे अरजीरोगीनेंकाच
 मेंअरजलमेंआपकाछायादाषेंनहीं सोरोगीनिश्चैमरे अरजारीगी
 कोगूंदोलालपदमसिरिसोहोजाय अरजीकीजीभकालाहोजाय अ
 रजीकासरारमेंपीछाउठिआवे सोरोगीनिश्चैमरे अरजारीगीकोहि
 योअरनाभि अरकांधोकांपणलागिजायसोरोगीनिश्चैमरे अरजी
 आदर्माके अस्लेषा शतभिषा आर्द्रा स्वाति मूल पूर्वाफाल्गुनी पूर्वा
 यादा पूर्वाभाद्रपदा भरणी याँतक्षत्रांमें अरदांतवारशानेश्वरवारहो
 य मंगलवारहोय अरचौंछिछिठ वारसियेतिथिहोय तीमेंरोगउपजे
 तो ओरोगीनिश्चैमरे अरजारीगीनेंपैलाकीआंधिकापूतलीमेंआप
 कीस्वरूपदीसेनहीं ओरोगीनिश्चैमरे अरजारीगीकांसूर्योदयहुवा
 यकाजीवणेश्वरचालें अरसंध्यासंमेंचौंवांश्वरचालें ओरोगीमरेनहीं

इतिकालज्ञानसंपूर्णम् अथश्लोषधीविचारलिखते वैद्यहै
 सोओषादिकागुणगुणविचारं अररोगीनेंरंगकाप्रमाणमाफिकओ
 षधिदे कैसेंदे जोरोगथांडोहोयतोओषधियलीदेनहीं अररोगग्रणो
 होयतोओषधियांडादेनहीं अरबडवीअरकसायलीओषधिरों
 गीषायनहीं अरदेओषधिसोनारोगीदेसकने ओरोरोगीजीवेंनहीं

९० अमृतसागरतथाप्रतापसागरतरंग १

इतिश्रौषादिविचारसंपूर्णम् अथदेसविचारलिख्यते देसहै
 सोतीनप्रकारकोछै आनूप १ साधारण २ जंगल ३ जेठेघणोजलसदा
 बहतोहोय अरकफवेदेसमेंघणोहोय ऐसोपूर्ववेनेंआनूपकहजे
 अरज्यैसोलक्षएऔरठैभीहोय जानेभीआनूपदेसकहजे अरजी
 देसमेंवायघणीहोयतींदेसनेंजांघलकहजे अरजीदेसमेंवाय-
 पित्तकफबराबरिहोय तींदेसनेंसाधारणदेसकहजे अरजीदेसमें
 जोआदमीउपजैतीआदमीकीयाहीप्रकृतिहोयछै इतिदेसविचा-
 रसंपूर्णम् अथकालविचारलिख्यते कालतीनप्रकारकाछै सी
 तकाल १ उष्णकाल २ वर्षाकाल ३ सोयांकोविचारलिखूछूं सीत
 कालमेंसीतथोडोपडै अरघणोपडेतोरोगहोय अरसीतकालमें
 गरमीपडैतोओविपरीतछै ओभीआछोनहीं ईमेभीरोगहोयइसी
 तरेंउष्णकालमेंउष्णथोडोपडै अथवाघणोपडै अथवा ईमेंसीत
 पडैतोरोगकीउत्पत्तिहोय औसैंहीवर्षाकालमेंवर्षाथोडीहोय अ
 थवाघणीहोय अथवाहोयनहीं तोमनुष्यांकैरोगउपजै इतिकाल
 विचारसंपूर्णम् अथअवस्थाविचारलिख्यते अथअ
 वस्थाछैतोयएगप्रकारकी तीमेंतीनिसुध्यछै एकतोबालअवस्था
 १ दुसरीतरुणअवस्था २ तिसरीवृद्धअवस्था ३ तीमेंजोउत्तममध्य
 मअथम जोमनुष्यहोय तीकैभीजोरोगउपज्योहोय तीकासरिग
 अरअवस्थामाफिकसदेवैछहैंसोजतनकरै इतिअवस्थावि
 चारसंपूर्णम् अथअर्थविचारलिख्यते अर्थपांचप्रकारकोछै
 एकतोशब्द १ दूसरोस्पर्श २ तिसरीरूप ३ चौथोरस ४ पांचमेगंध ५
 शब्दकोठिकाणेतोकानमें स्पर्शकोठिकाएतून्चामें रूपकोठिका
 णोनेत्रमें रसकोठिकाएजुंभीमें गंधकोठिकाएतूनासिकामें सो-

गुणवाकासमर्थथकाथोडोसुलैं अथवाघणोसुलैं अथवा मिथ्या
 सुलैं क्यूंकोक्यूंसुलैं स्पर्शकासामर्थथकाथोडोस्पर्शकरै अथवा मि
 थ्यास्पर्शकरै कूंकोईस्पर्शकरै देषवाकासामर्थथकाथोडोदेषै अथवा
 देषघणो अथवा मिथ्यादेषै क्यूंकोईदेषै ३ छयरसकाषाबाकासाम
 र्थसूंथोडोषाथ अथवा घणोषाय अथवा मिथ्याषाय क्यूंकोईक्यूं
 हीषाय ४ संधवाकासामर्थथकाथोडोसूंघै अथवा मिथ्यासूंघै-
 अथवा क्यूंकोक्यूंहीसूंघेतोनिश्चैरोगकीउत्पत्तिहोई अरयापांच
 हीकोमलोसाधनराषिवोकरेतोमनुष्यसदाहीनैरोग्यहोई इतिअ
 र्थविचारसंपूर्णम् अथकर्मविचारलिप्यते कर्मतीनप्रकारका
 छै एकतोकायक १ कायामैरहैसौकर्मकर्मकहियेकरियो सोतोका
 यककहिये २ येकमानसकर्म मनमैरहैसोमानसकर्म ३ येक
 वाचक वाणिमैरहैसोवाचककर्मकहिजे ४ सोकायांकाकर्मकी
 सामर्थथकाथोडोकर्मकरै अथवा घणोकरै अथवा मिथ्याकरैक्यूं
 कोक्यूंकरै १ अरमानसककासामर्थथकाथोडोकरै अथवा घणोक
 रै अथवा मिथ्याकरै क्यूंकोक्यूंकरै अरबोलवाकासामर्थथकांथो
 डोबोलै अथवा घणोबोलै अथवा मिथ्याबोलै क्यूंकोक्यूंहीबोलै
 ३ तौमनुष्यकैरोगकीउत्पत्तिहोय अरयांतीन्यांहीकर्मको मनुष्यभ
 लोयोगराषिवोकरेतौओमनुष्यसदाहीनैरोग्यरहै इतिकर्मविचा
 रसंपूर्णम् अथअग्निबलविचारलिप्यते अग्निपांचप्रकार
 कोछै एकतोमंदाग्नि १ दूसरोतीक्ष्णग्नि २ तीसराविसर्माग्नि ३ चौ
 थीसर्माग्नि ४ पांचवाभस्माग्नि ५ सोतकफकीप्रकृतिजीवं अधिकहो
 य जीवंमंदाग्निहोयछै सोताकफकारोगकूंउपजायै सोआला
 बही १ अरजीर्वापिचकीप्रकृतिहांयतांकीतीक्ष्णअग्निहोय सो

आहोषायोयकोसर्वपचिजाय पणिवामीगरमीकांआजारनैउपजा
 वैछै २ अरजीकीषायकीप्रकृतिहोय तौकैविसमाग्निहोय सोवाचाय
 कांरोगानैउपजावैछै सोबाकदेतौअन्ननेपचायदेअरकदेकअन्नने
 नहींपचावे ३ अरवाचौथीसमाग्निछैसोसारीअग्निसूंअछै आछी
 तरेमनुष्यभोजनकरेसोपचायदेछै अरकोईहीरोगकूंउपजावैनहीं
 ४ अरपंचमीभस्माग्निछैसोभस्मककारोगानैउपजावैछै केसैं कही
 ओषधिकासंयोगसूंसरिरमांहिलोकफघटिजायछै अरपित्तबोअ
 ग्निरूपबधिवोहीवायकासंजोगसेप्रेस्वोथकोमहातीव्रअग्निनैउप
 जावैछै तबभस्मकअग्निहोजायछै तबवेनेषास्त्राकौनहीमिलेतौति
 सपसेव दाहसूर्छानैआदिलेरवेनेकरआदमीनैमारिनाषैछै सोमनु
 ष्यहेअग्निकाबलनैविचार्यांविनाजतनकरै अथवाभोजनादिकक
 रैतोवेंकीनिश्चैरोगहोय अरवेंकीचीकित्तासफलहोयनहीं ५ इतिअ
 ग्निवलविचारसंपूर्णम् अथरोगीकेअसाध्यपरिक्षालिष्यते
 रोगीनेरातनैनांदनहीआवे अरवेंकाकंठमेकफबोले अरवेंकासरीर
 मेंदाहहोय अरवेंरोगीकीनाडीमंदहोय अरवेंकीबोलवामेजीभथकी
 जाय अरवेंरोगीकीसर्वइंद्रियापआपनाधर्मनैछोमंदेसोरोंगीनिश्चै
 मरे अरजीरोगीकीअग्निमंदहोयजाय अरवेंकीप्रकृतिबिगडिजाय
 ओभीरोगीअसाध्यजाणिजे अरजीरोगीकीआंपिलाहहोजाय अर
 स्वासहोयआवे अरहीयामेंसूलचालै अरवेंकैतंद्राहोयआवे अरहि
 चकिचालिजाय अरतृषाबहोतहोयआवे अरघणोशोवै अरघणो
 दाहहोयआवे अरपसेबवेंकैपणांअरचिकराआवैसोरोगीनिश्चैमरे
 इतिरोगीकीअसाध्यपरिक्षासंपूर्ण अथरोगीकीसाध्यपरि
 क्षालिष्यते जोरोगीआपकीप्रकृतिमौठिकाएँरहे अरजीकीअग्नितीव्र

होय अरकहींतरेंकरोगकाउपद्रवहोयतहीं अररोगयेकदोसकोहोय
 अरवेंरोगीकांचिकित्साकाचारूपायामिलै एकतोभलाशास्त्रकोजाणि
 वावालोवैद्यमिलै दूसरीउसीहीवेंहीरोगकीदूरिकरिवावालाऔषधीभि
 लै अरउसाहीचतुरचाकरमीलै अरवेंसोहीरोगांद्रवानहोई जितेंद्रोहो
 य रोगकाघटवावधवांकोजाएवांवालोहोय सोरोगीसाध्यजाणिजै इ
 तिरोगीकांसाध्यपरिक्षासंपूर्णम् अथरोगांकाभेदलिख्यते
 सांआरोगकायामेंरहेंतींकोनाबव्याधिछै सोबहचीद १४ प्रकारकोछै
 सोलिषूंडूं सहजरोग १ गर्भरोग २ जातजातरोग ३ पीडासेउपजैसोरो
 ग ४ कालसेउपजैसोरोग ५ प्रभावसूंउपजैसोरोग ६ स्वभावसूंउपजै
 सोरोग ७ देससूंउपजैसोरोग ८ आगंतुकरोग ९ कायिकरोग १० -
 आंतररोग ११ कर्मसेउपजैसोरोग १२ दोससूंउपजैसोरोग १३ कर्मदो
 ससूंउपजैसोरोग १४ अबयारोगांकाजुदाजुदलक्षणलिख्यते
 मातापिताकावीर्यकादोससेवांकीसंतानकैभीआहीरोगहोयआवे
 ववासीरकोटनेंआदिलेर तीनेंसहजरोगकहिजे १ गर्भमेंहींकूवडोपां
 गुडोछुआंगुलो रावणषंडांनेंआदिलेरहोय तीनेंजरभजरोगकहि
 जै २ गर्भयकांमाताकामिथ्याअहारमिथ्याबिहारकावसथकावा
 लकउपजतांई रतवांचवुरीतरहकांसरीर गूंगापणानेंआदिलेरजो
 रोगहोयतीरोगनेंजातजातकहीजै ३ अरशस्त्रादिककाप्रहारसूंउ
 पज्योजोअस्थिभंगपाडादिकरोगत्यांनेंपीडाजमितरोगकहिजै ४ अ
 रसीतकाल उरुकावर्षाकालसूंउपज्योजोरोग सीतचरणान्गयो
 नावडों न घणेतलग्यो वर्षामेंघणोभीजै त्यांरोगांनेंकालजरोगक
 हिजै ५ अरदेवतारुगुवडाका सराधरूंउपज्योजोरोग अरयहांका
 प्रतिगून्धपणासूंउपज्योजोरोग त्यांनेंप्रभावजरोगकहिजे ६ अर

कृधातृषाजरांनेआदिलेरुपज्योजोरोगत्यांनैस्वभावजरोगकहिये ७
 अरभूतादिककोअरकामकीधरागहेसलोभमोहादिकयेजीकांसरीर
 मैप्रवेसकस्योहोयत्यांनेआगतुक्रोरोगकहिजे ८ अरजरादिसप्रयंत
 सुष्यरोगछेत्यांनेकायिकरोगकहिजे ९ अरहोलदिलनैआदिलेरगह
 लोहोजावैयांनेआदिलेररोगछेत्यांनेआंतररोगकहिजे १० अरजांदे
 समैमनुष्यकालाहीकालाअरलालहीलालअरभूसाहीभूराआदमी
 उपजैतीनैदेसजरोगकहिजे ११ अरपूर्वजन्ममें अथवाईजन्ममें
 ब्रह्महत्यादिकपापकरिउपज्यजोरोगत्यांनेकर्मजरोगकहिजे १२ अ
 रवायपित्तकफसूउपज्यजोरोगत्यांनेदोसजरोगकहिजे १३ अरब्र
 ह्महत्यादिकजोपापअरवायपित्तकफादिकजोदोस यांदोन्यासूं
 मिल्याथकाउपज्यजोरोगत्यांनेकर्मदोसजरोगकहिजे १४ अबयेही
 सारारोगंदोयप्रकारकाछै येकतोसाध्य १ दूसरोअसाध्य २ सौसा
 ध्यमीदोयप्रकारकोछै येकतोयज्ञाजतनकीयांनीदिआछोहोय
 १ अरथोडाहीजतनकीयांआछोहोयसोसाध्यकहिजे २ अरअसा
 ध्यरोगभीदोयप्रकारकोछै येकतोजाय्य १ सोगंभीरादिकववासी
 रमृगीअर्द्धगक्षयीस्वासादिकअरज्यांमैधणारोगमित्याहोय सो
 औषधिबाबोकरै अरपथ्यचालै अरभलावैद्यकाकृत्यामांफिक
 चालबोकरैजैठातांईरोगकीआयुबल होयजैठाताई चैसेभरहै
 तांरोगांनैजाय्यकहिये १ अरएकऔसाउपजैत्यांकोइलाजहीनहीं
 ओमारिहीनाथै ओरोगमहाअसाध्य अप्रीतीकारछै अरबीमाका
 भेदतोअनंतछैत्यांकोपारनहीं त्यांरोगांकोग्यांनतोआपरमेस्वरजी
 कूंछै पलिसदवैद्यहैसोशास्त्रकाबलसूं अरआपकीबुद्धिकाबल
 सूंयांसारारोगांनै यांबौदारोगांमै यांकेअंतरभूतजालिलोज्यो ये

साससेगयांहीमेंअंतरभूतछे इतिरोगभेदसंपूर्णम् अथप्रकारांत
 रसंसारारोगांकीउपजबाकीऔरहीविधिलिखते असर्ववात
 संज्ञावधममनुष्यद्वैसौ चौदा १४ प्रकारकावेगछेत्यांनेंहकनाहकप्र
 गटकरेनहीं अरस्तैसिद्धिप्रगटहुवाछेतोवांनैरोकैनहीं वांकोका
 रजकरेतौमनुष्यकैरोगहोयनहीं अरवांचौदावेगानेंहकनाहकप्रग
 टकरे अरवेप्रगटहुवाछेत्यांकोधारदुकरेतोरोगहोयही सोचौदा
 वेगलिखूं अथचौदावेगलिखते येकतोअधोवाय १ जंगलकी
 बाधा २ मूत्रकीबाधा ३ डकारकोरोकिबो ४ छींककोरोकिबो ५ तृ-
 षाकोरोकिबो ६ भूषकोरोकिबो ७ नांदकोरोकिबो ८ पासकोरोकि
 बो ९ वेदकोस्वासकोरोकिबो १० उवासीकोरोकिबो ११ आंसूकोरो
 किबो १२ छर्दिकोरोकिबो १३ कामदेवकोरोकिबो १४ येचौदावेग
 छे अरयांकावेगनेंहकनाहकरोकै अरयांकाउपज्यावेगकोधार
 एकरे तोमनुष्यकैनिश्चैरोगउपजैछे सोअनुक्रमसंलिखूं
 जोपुरसअधोवायकूरोकैतोरूंकैगोलाकोआजारहोयफीयाको-
 उदरको आफराको पेटमेंपीडको येरोगहोय पाछेवैकैअधोवाय
 आलीतरहहोयनहीं अरवैकेमूत्ररुद्धकोअरबंधकोष्टकोरोगहो
 यज्याय अरनेत्ररोगअरअग्निमंद अरहियोदूषे १ इतिअधोवाय
 रोकिकाकोरोगसंपूर्णम् अथमलकाकोरोगलिखते
 जोपुरसमलकीबाधाकूरोकै जीकेंयेरोगहोयहाथपगामेंफूटली
 होय अरपीनसहोय मस्तकपीडाहोय वायकीउर्ध्वगतिहोयआवे
 अधोवायकीआलीतरहप्रवर्तिहोयनहीं हियोदूषेउदावर्त्तरोगआ
 गैकहस्यांसोहोयआवे अरगोलोफीबोउदरकोराग्य उदरपीडा मू-
 वरुद्धबंधकुष्टनेत्ररोग अग्निमंद येभीरोगहोयआवे २ इतिमल

कारोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथमूत्ररोकिवाकारोगलिप्यते जो
 मलमूत्रकाषाघातैर्नैरोकैतीकैयैरोगहोय अंगकैफूटणीहोय पद्मरीकी
 रोगहोय लिगैशिकैविषैपीडाहोय कार्त्तबालाकीसंधिमेंपीडाहोय अ
 रगौलाफीयनैआदिलेपाछे मलकारोकिवाकाजोरोगकत्याछैसो-
 भीर्मूत्रकारोकिवामेंहोय ३ इतिमूत्रकारोकिवाकारोगसंपूर्णम्
 अथदकारोकिवाकारोगलिप्यते जोमलुष्यडकतआवतीनैरो
 कैतीकैइतजारोगहोयछै अरुचि सरिरकांपै हियोरुकै आफरो वा
 सी हिचकी येरोगदकारकारोकिवाकरिकैहोयछै ४ इतिदकारो
 किवाकारोगसंपूर्णम् अथछींकारोकिवाकारोगलिप्यते जोपु
 रुषछींककावेगनैरोकैतीकैयैरोगहोयछै मथवायहोय अरसरी
 रकीसारीइंदोदुर्बलहोजाय अरगरदनमुडैनहीं सुषकैचमूंवांकाफ
 लोंहोयजाय ५ इतिछींकारोकिवाकारोगसं० अथतिसरोकिवा
 कारोगलिप्यते जोपुरुषनैतिसलागी होयअरतीनैआरोकैतोये
 रोगहोय उकैसुषसोसहोय सर्वअंगमेंफूटणीहोय बहरापणहोय
 अरमोहहोयआवै भ्रमहोयआवै अरहियोइषे ६ इतितिसरोकि
 वाकारोगसं० अथभूषरोकिवाकारोगलिप्यते जोपुस्वभूष
 कावेगनैरोकैतीकैअतनारोगहोय सबअंगदूदिवालगजाय अरु
 चिहोयआवै अरसर्ववस्तुपरिग्लानिहोजाय अरसरीरकृसहोजा
 य सूलचाछै अरभ्रमहोयआवै अरविनाअंगहींभ्रमहोयआवै अ
 रसर्वइंद्रिसिथलहोजाय अरसरीरकोवर्णओरहोजाय ७ इतिभू
 षकारोकिवाकारोगसं० अथनींदरोकिवाकारोगलिप्यते जो
 मलुष्यनींदआवतीनैरोकै तीकैयेतारोगहोय वेंकैमोहहोयआवै
 मांथोअरआंषिभारीहोयजाय आलसआवैउवासीआवै अंगमेंची
 गहोय-

इतिनींदरोकिवाक्कारोगसं० अथपासरोकिवाक्कारोगलिथ्यते
 जोमनुष्यआघतामसंरोकेकेवेदकेपासकीरुहोय सासहोय अरु
 बिहोय हियमेंरोगहोय सोसंरोगहोयहिचकी इतारोगहोय १३
 तिपासरोकिवाक्कारोगसं० अथअमकास्वासरोक्किवाक्कारोगलि
 थ्यते जोपुरयअमकास्वासनेरोके तीकेंइतारोगहोय गोलाहृदोगहो
 हयेरोगअमकास्वासरोक्किवाक्कारोगहोय १० इतिअमकास्वासरोक्किवा
 कारोगसं० अथउवासीरोक्किवाक्कारोगलिथ्यते जोमनुष्यआव
 तीहवासीनेरोके तीकेंमथवायहोय इंदियांकादुरबलताहोय गर्दनको
 अरमुयकोवांकापणोंहोयजाय ११ इतिउवासीरोक्किवाक्कारोगसं०
 अथआंसूरोकिवाक्कारोगलिथ्यते जोपुरयआंसूआवतानेरोके
 तीकेंयेरोगहोयछै पीनसहोयनेत्ररोगहोय अरमथवायहोय हियो
 दूपें गरदनमेंपीडाहोय अरुचिहोय अरभ्रमहोय अरगोलोहोय आ
 वनाआंसूरोकेतीकेंइतारोगहोय १२ इतिआंसूरोक्किवाक्कारो
 गसं० अथवमनकारोकिवाक्कारोगलिथ्यते जोमनुष्यवमनका
 आवतावेगनेरोके तीकेंयेरोगहोय रनवाय पिच्छी कांठनेत्ररोगपा
 जिपांसुरोग ज्वरपासी सास हियांदूपें गुपकेंकाल अथवा जाया
 सोजा येतारोगवमनकारोक्किवाक्कारोगहोयछै १३ इतिवमनकारो
 गसं० अथकामदेवरोक्किवाक्कारोगलिथ्यते जोपुरयकामदेवजा
 ग्यांनेरोकेतीकेंयेरोगहोयछै सुजाय प्रमेह इंदिकेंविपेंपीडाअरु
 दीसृजिजाय अरचित्तबहकिजाय अरगोत्रनविपेंअरुनिहोय ए
 तारोगहोय १४ इतिकामदेवरोक्किवाक्कारोगसं० इतिप्रकारों
 तरसंसारोगोंकाउपजावार्कानिधिसप्त० इतिआमन्महारा
 जाधिराजमहाराजरत्नद्वयसुवार्दनापसिंहजीविरचित्त अमृतसा

गरनामग्रंथे रोगविचरनाडीपरिक्षा भूचपरिक्षा रोगपरिक्षा स्तपनाप
 रिक्षा दूतपरिक्षा सुकुनपरिक्षा कालग्यानपरिक्षा औषदिविचार दे
 सकालअवस्था अर्थकर्मअग्निबलरोगीकोसाध्यासाध्यविचाररोग
 गकाभेदरोगांकीउत्पत्तिनिरूपणानामप्रथमस्तरंगा समाप्त १, ७
 अथकायकरोगामेंसर्वरोगमानकोराजाज्वरछे सोतींकोअहवाल
 पूर्वकलक्षणअरवेंकोजतनक्रमसैलिषजैछे अथप्रथमज्व
 रकीउत्पत्तिलिखते सतीजीकैपितादक्षप्रजापतिजग्यकोप्रारं
 भकस्यौ तांमैअहंकारकेबलसूंत्रिलोकीकेपतिजोसाक्षात्शिवजी
 मेंआपकाजग्यमेंबुलायानहीं औरसर्वदेवतानकूंबुलायजग्यको
 प्रारंभकस्यौ ताहांसतीजमेंआपकापिताकैविनांबुलायांगई शिवजी
 काभेज्याविनांहीगई तबजग्यकेंविषैवैकैपितासतीजीकोअनादर
 कीयो तहांसतीजीजोगबलसूंआपकासरीरकोत्यागकस्यौ तबया
 बातशिवजीसुणी तबशिवजीकेंक्रोधउपज्यौ तबक्रोधउपजतांही
 शिवजीकाललाटकोनेत्रघुलिगयो तीनेत्रमेंवीरभद्रगणप्रगटभयो
 वीरभद्रगणकिसोकछे अतिक्रोधी अरपीलोसरीरछेंजींको अरनेत्र
 जींकेतीन भस्मलगायां प्रलयरूप पीलाजींकानेत्र बाधंवरधात्या
 अग्निकोसोरूप छोटीजांघतीन गडोउदर ऐसोप्रगटभयो सोशिव
 जीसूंअरजकरीकहाकरूं तबशिवजीआग्यादेतभये सुमबाको
 जग्यविध्वंसकरो तबबाकूंमारिवाकोजग्यविध्वंसकीयो अरवाज
 ग्यकीसामग्रीआपघायगयो तबवीरभद्रकोनामशिवजीज्वरपा
 उओ सोओज्वरहसोमनुष्यांकैमिथ्याअहारमिथ्याविहारकावस
 थकीनामिअरस्तनकैविचैजोआमकोघरतांमैंरहताजोवातपित्त
 कफत्यानैरोगीकासरीरमेंआमासयकीजागामैदुष्टहोय अरआ

मासयकीजागामें रहतो जो अहार तीसैं उ पज्यो जो रस तानों वगाडि
 अरबें आमासयमें रहतो जो उदर को अग्नि तीनैं उदरमें सें चारैं काति
 सारो रोगी का सरीर नैं तातो अग्निरूप करि देछैं सो अज्वर रूप होय
 वें हींसमें सरीर का पत्राक्रम नें पाय जाय छै सो ज्वर आठ प्रकार को
 छै एक तो वाय को ज्वर १ पित्त को ज्वर २ कफ को ज्वर ३ शतपित्त को
 ज्वर ४ शतकफ को ज्वर ५ कफपित्त को ज्वर ६ सन्निपात को ज्वर ७
 आगंतुक ज्वर ८ आठ प्रकार का ज्वर छै सो अथ बायां का जुदा जु
 दालक्षण कहस्यं अथ प्रथम ज्वर मान को सा सामान्य लक्षण
 लिख्यते जी का सरीरमें इक सम चेंद सोलक्षण होइ जी नैं ज्वर कहि
 जे सरीर तातो होय आवै अरप सेव भीन हीं आवै अरभूष जाती रहै
 सारो अंग जकड़ो सो होय अरमथ वाइ होय अरहाथ पगां फूटणी
 होइ अरकठे हीमन लागेन हीं अे सालक्षण जी रोगमें होय तीनैं ज्वर
 कहि जे १ अथ ज्वर को पूर्वरूप लिख्यते हाथ पगां फूटणी होय
 मथ वाय होय जां भाई होय बिगारि घेद ही सरीरमें घेद होय अे साल
 क्षण जीं मनुष्य के होय तब जाणिजे ज्वर उ पजसी असोलक्षण बैय
 जायें २ अथ ज्वर को विशेष लक्षण लिख्यते अथ वाय ज्वर ल
 क्षण लिख्यते सरीर कां पै ज्वर को निसम वेग होय कंठ होठ सूं के नीं
 द अग्नि न हीं छाक आवै न हीं सरीर लपो होय मथ वाय होय सरीरमें
 पीडा होय मुख में लउंर सको स्वाद जा तोर है जंगल उतरे न हीं पेट में
 सूल होय आपफो हांय उबासी पणी आवै तौ वाय को ज्वर जाणिजे
 अथ सामान्य ज्वर मान को जतन लिख्यते गरम पाली पाजे आ
 छाहल कालं घन कराजे मल का बल आफिक अरहल को पथ्य करा
 जे पवन न हीं आवै चें सें साधर में राधिजे आछा मिहीं वस्था पर सुवा

१५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २

शिरैतौज्वरजाय अरतीनदिनताईतौज्वरमैकडवीकसायईजुला
 बडगैरे औषदिदीजैनहीं योहीजतनकाजे पाछै सूँठिमासा २ धरौ
 मासा १ इनकोकाथकरिपाजैतौज्वरजायअरभूषलागै १ अथवा
 यज्वरकोजतनलिष्यते अतनांपुरसानेंलंघनकराजैनहीं नाय
 ज्वरवालानै क्षयरोगवालानेंजीकैअग्निघणीहोयजीनैं गर्भाणी
 स्त्रीनैं दूबलानेंवालकनैं बूढानें डरपस्थालनैं तिसवालानें येतांम
 जुषानेंलंघनकराजेनहीं हलकापथ्यकराजे वायज्वरवालानेंऔ
 षधांकोकाथदीजै चिरायतो नागरमोथो नेत्रवालो दोन्यंकटाली
 गिलवै सूँठि येसारीऔषदिछदामछदामभरलेत्यांनैंजौकूटकरि
 यांकोकाथदिन ५ दीजैतौवायज्वरदूरिहोय २ अथवायज्वरका
 दूरिकरिबाकौदूसरोकाथेलिष्यते सूँठि नींबकीछालि धमां
 सो पाठ कचूर अरदूसो एरंडकीजड पुहकरमूल येसारीऔषदि
 छदामछदामभरले त्यांनैंजौकूटकरि यांकोकाथदीजैतौवायज्व
 रदूरिहोय ३ अरहिंगुलेसरससूंवायज्वरततकालदूरिहोय हांग
 लु पीपल सांगीमोहरोसोथो एतीन्यूंवरावरिले यांनैंमिहींचांदि
 पाणीमेंरतीआधप्रमाणकीगोलीचांधैगोली ५ मेंवायज्वरनिश्चै
 जाय अरवायज्वरवालानें मूंगांकोमसूरको कुलथको मोठको
 यांकीदालकोपणीपथ्यछै अरसतावरी गिलवै येदेन्योछदाम
 भरत्यांकोकाथकरै काथमेंछदामभरपुराणोगुडनापै ईतोलदी
 न ५ लेतौवायज्वरजाय अरभिनच्चादाषपीपलि पित्तपापडी
 सौंफ येसबछदामछदामभरिले इनकोकाथदीजैतौवायज्वरजा
 य इतिवायज्वरजतनसंपूर्णम् अथपित्तज्वरकोअहवा
 लअरलक्षणजतनलिष्यते नेत्रामेंदाहहोय मूडोकडवोरहै

२२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २

बारको धो धो घृत तीको सरीर कै मर्दन करै तौ दाह ज्वर की व्यथा त
 काल दूरि होय १७ अथवा नींब का कोमल पानानें चारि घामें पा
 णी घालि बानै बिलोय घामें जग उठाय वांजगां को दाह ज्वर वाला
 का सरीर कै लेपे करै तौ अथवा ईश्रगा में चहेडा की सींगी मिलाय
 लेप करै तौ दाह की विथा त त काल दूरि होय १८ येज तन वैद्य जी च
 न में अर वैद्य विनोद में लिख्य छै इति पित्त ज्वर दाह ज्वर काल
 क्षण जतन सं० अथ कफ ज्वर काल क्षण अर जतन लिख्य
 ते अन्न की अरु चि होय सरीर भाख्यो होय रोमांच होय मूत्र अर
 नब्जों का सुपेद होय नींद यणी आवै सरीर ठंडो होय मूंदो मी
 ठो होय वेग घणों न हीं होय आलस घणों आवै सास होय पास हो
 य पानस होय येजी में लक्षण होय सो तीनै कफ ज्वर कहि जै अथ
 कफ ज्वर को जतन लिख्य ते नींब की छालि सूंठि गिलवै करा
 ली पौह कर मूल कुट की कचूर अर डूसो काय फल पीपलि स
 तावरी ये सारी औषदी छदां मछ दाम भरिले पाछें यां नैजौ कूट करि
 यां को छाथ दिन ७ दै तौ कफ ज्वर दूरि होय १ अथवा काय फल
 पीपलि का कड़ा सींगी पुह कर मूल यां सारानें मिही वांरि छदां म
 भरि सहत में चटावै तौ कफ ज्वर सास कासनैं यो अवलेह दूरि क
 रे ८ येज तन वैद्य विनोद में लिख्य छै २ अर कफ ज्वर वाला
 नैंगर मपाणी सेर को तीन पावर है औसो थोडो थोडां पाजे लंघ
 न १२ कराजै पाछें मृगां को अथवा मौठा को अथवा कुलथ को
 पाणी को पथ्य दीजै दिन में सो बादी जैन हीं अर विजोरा कां कं सार
 सीं थाल ए कै साथ दीजै पथ्य में आटा दीजै अथवा पां पानन भा
 दीजै सो लिखै हैं सूंठि मिरचि पीपलि नित्रक पीपलामूल दो

२३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २

न्यूजीरा उबंगइलायवा सेकीहींग अजवायण अजमोद येसबब
 राबरिले थांकोचूर्णकरैपाछैईनैछदामभरगरमजलकैसाथदीजे
 तौ पाचनहोयभूषलागै कफज्वरदूरिहोय ३ अथवा कटाछी-
 गिलोयसूठि पुहकरमूल अरडूसो यहक्षद्रादिकहै सोयेसब
 औषदिअधेलाअधेलाभरलीजे त्यांनैजौकूटकरि ईतोलका
 थकरिदिन ७ दीजेतौकफज्वरदूरिहोय ४ अथवा कटीछी पी
 पलि काकडासींगी गिलवे अरडूसो येसबऔषदिदंक २ ली
 जै इनकोकाथकरिदिन १० देतौ कफज्वरकूं सासकूं सासकूंमं
 दाग्निकूं इहकाथदूरिकरेछै ५ अथवा अरडूसाकोकादोछ
 दामभरतोलप्रमाणदिन १० दीजेतौ कफज्वरततकालनिश्चै
 दूरिहोय अथवा सीतभंजीरसरती २ दोय अरडूसा अरसूठि
 काकादाकेअनोपानसूईतोलदिन ७ लेतौकफज्वरनिश्चैतत
 कालदूरिहोय ६ अथकफज्वरकूंसीतभंजीरसलिष्यते
 पारोसोध्यो हींगलकोकादोदंक ५ गंधकसोध्योदंक ५ तांमे
 श्वरदंक ५ सींगीसुहरोसोध्योदंक ३ सूठिदंक ५ मिरचिदंक ५
 पीपलिदंक ५ सुहागोसोध्योदंक ५ येसबमिहींवाटियांकैचित्र
 ककारसकीपुट ३ दीजे पाछैआदाकारसकीपुट ७ दीजे पा
 छैईकैपांनाकारसकीपुट ३ दीजे पाछैईकीगोलीरती १ प्रमा
 णकीकीजे योसीतभंजीरसछै ईसूंकफज्वरअरसीतांग अ
 रवायकासर्वरोगानेंदूरिकरेछै ७ इतिकफज्वरकालक्षण
 अरजतनसं० अथवातपित्तज्वरकालक्षणजतनलिष्य
 तेजींमनुष्यकैवातपित्तज्वरहोय जीकैमूर्च्छाहोय अरभौलि
 दाहहोय नींदआवेनहीं अरमथवायहोय कंठ मुषसकै अर

वमन रोमांच अरुचिहोय अंधारीआवै अरसर्व अंगमेंपीडाहो
 यजंभाई अरबकिबो येलक्षणजीस्वरमेंहोय तौनैवातपित्तज्वर
 कहिजे अथवातपित्तज्वरकाजतनलिष्यते षरैंदी गिलेई अरंड
 कीजड़ नागरमोथो पदमष भाडंगीर्पपलि पसरक्तचंदन येसर्व
 औषदिमासापांचपांचप्रमाणले पाछैयानैजोकूटकरिछदाम
 भरिकोकाथदिन १२ देतौवातपित्तज्वरदूरिहोय २ अथवा गि-
 लोय पित्तपापडो चिरायतौ नागरमोथो सूंठि यहपंचभद्रको
 काथछे इनकोंबराबरिलेजोकूटकरिछदामभरिकोकाथरोजी
 नादिन १२ देतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ३ अथवा गिलोय पित्त
 पापडो सूंठि नागरमोथो अरडूसो यानैबराबरिलेजोकूटकरि
 छदामभरिकोकाथदेजेतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ४ अथवा प-
 टोल नींबकीछालि गिलोय कुटकी येबराबरिले त्यांकोछदाम
 भरिकोकाथदिन १२ लेयनौवातपित्तज्वरदूरिहोय ५ अथवा
 महुयो महलोठी लोद गौरीसर नागरमोथो किरमालाकी गिर
 येसर्वबराबरिले यानैजोकूटकरिछदामभरिकोकाथदिन १२
 लेयतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ६ अथवा नांबतांकीपीलाकां
 पाणीमैमिश्रीअरसहतमिलादिन १० पीवैतौवातपित्तज्वरदूरि
 होय ७ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि इनकीसममात्राले इन
 कीबराबरिमिश्रीगिलाय चूर्णकरि अपेलाभररोजीनांसहतकां
 संगसूंदिन १० लेतौवातपित्तज्वरदूरिहोय ८ इतिवातपित्तज्व-
 रजतनसंपूर्णम् अथवातकफज्वरलक्षणजतनलिष्य
 तेजीमनुष्यकैज्वरमेंयेलक्षणहोय पासी अरुचि संधिसंधिमें-
 पीडा मथवाय पीनस संताप अंगकंप सरीरकोभास्यापणोंनां

२५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तंत्रंग २

दआवैनहीं पसेव सास पेटमेसूल अस्जोंमनुष्यकीनाडी सर्पकी
 अथवा हंसकीचालचालौ दूसरी अथवा सपेद चीकरौ अथवा
 सुरमासिरीकोजीकोमूतहोय कालोजोंकोमलहोय अरचीकणो
 होय दूसरीआंघिहोय सुषकंसायलो अथवा मीठोहोय जीभका
 लीहोय अथवासुपेदआलीऔसीहोय कंठमेंकफको घूघरोबोलै
 सरारठंडोलोगे येलक्षणीकीहोय तीनोंवातकफज्वरजानिये ये
 छक्षणज्वरतिमरभास्करमेंलिखाछै १ अथवातकफज्वरका
 जतनलिखते हैंज्वरवालानें लंघनदशकराजे आधौऔटायो
 पानींपार्जि अरदिनदसपछै चिरायतौ नागरमोथो गिलोय सूं
 हि येसब बराबरिलेत्यानैजोकूटकरिछदामभरकोकाथदीजै
 पाछैऊनंपथ्यदीजैतौ अरकोइतरैकोउपद्वयउठैनहीं अरइहांज्व
 रमेंदिन ३ पाछैकाथदीजैतौइहज्वरकूंडूरिकरैछै सोकाथलिपूं
 छूं कायफल देवदारु भाङ्गी नागरमोथो घणौ पित्तपापडो हर
 डैकोछाछि सूंठि कणगचकीजड येसबऔषदिबराबरिलेइनहूं
 जोकूटकरिटंक २ भरकोकाटोकरिदेयतौ वातकफज्वर बासी
 सोजो सास इनकूंडहदूरिकरैछै १ अथवा नागरमोथो पित्तपा
 पडो सूंठि गिलोय धमासो येसबबराबरिले यानैजोकूटकरि
 छदामभरकोकाथदिन १० लेयतौ वातकफज्वरकुं वमनकूं दा
 हकूं सुषसोसकूं यहकाटोदूरिकरैछै २ अथवा कटाली सूंठि
 पीपलि गिलोय येसबछदामभरिलेतींकोकाटोदीजैतौवातक
 फज्वरदूरिहोय ३ अथवा सालपर्णी पृष्ठपर्णी कटाली दोनूं
 गोषरु बीलकीगिर अरण्यू अरलू कुंभर पाठ सोहसमूल छै
 तीनैजोकूटकरि तींकोकाथकरिपीपलिमिलायदिन १० देयतौ

वातकफज्वरदूरिहोय ४ अथवा ईज्वरमें सुषज्वर तालवोस्तकिजा
यजीभलठर होजायतौ बिजोराकी केसरिमें सींधोल्हण अरभिरचि
लगायजीभकैलेपकरैतौ सुषको अरतालचाको सोस अरजीभ
कीलठर ताईनेईहलेपदूरिकरैछै ५ अथवा चिरायतौ गिलोय
देवदारु कायफल वचयेऔषदिवरावरिले त्यांको छदामभरको
काथकरि दीजैतौ वातकफज्वरदूरिहोय येजतनज्वरतिमिरभा
स्करमें लिष्याछै १ इति वातकफज्वरजतनसं० अथकफ
पित्तज्वरकालक्षणलिष्यते मूंदोअरजीभकफसंलिष्याथ
काहोय अरतंद्राहोय मोहहोय घासीहोय अरुचि निसघणीहोय
चारंवारसरीरमें दाहहोय अरसीतहोय सरीरमें पीडाहोय हियोदू
धै भोलिआवे भूषनहींहोय सरीरजकओसोडैजाय जीकीनाडी
हंसकी अथवा मींडकाकी सींचालचालै मूतजीको सुपेदलला
ईनेलीयांची कणोहोय मलभीललाईलीयांहोय जीकानेत्रमींड
ककावर्णसिरीषाहोय सुषमीठोरहै अथवा कठवोहोय जीभ
ललाईलीयांसुपेदहोय जीमनुष्यकैयेलक्षणहोय तांके कफपि
तज्वर कहजे येलक्षणज्वरतिमिरभास्करमें लिष्याछै १ अथक
फपित्तज्वरकाजतनलिष्यते ईज्वरगालानें लंघन १४ कराजे
ईज्वरमें अष्टावसेसजलपावजे अरयां औषदांको काढोदीजै
सोलिपूंहं गिलोय रक्तचंदन संधि नेत्रचालो कायफल दारु
हलद येऔषदिवरावरिले इनकूंजो कूटकरि छदामभरको का
ढोदिन १० देयतौ कफपित्तज्वरदूरिहोय १ अथवा नींबकी छालि
रक्तचंदन पदमाष गिलोय धलौ याऔषदांको काढोकरिदिन
१० दीजैतौ योजुरदूरिहोय अरदाह निस वमनयेभीदूरिहोय २

२७ अमृतसागर तथा प्रतापसागरनरंग २

अथवा गिलोय इन्द्रजव नींबकीछालि पटोल कुटकी स्रंठि सुं पे
दचंदन नागरमोथो पीपलि येसबअम्रौषदिबराबरिले इनकोमि
हीचूर्णकरिमासाचारि ४ अष्टावसेसजलकैसाथिदीजेतौज्वर
कूंसासकूंउष्णताकूं हियोदूषवेकूं अरुचिकों घासीकों यहचूर्णदू
रकरैछै ३ अथवा गिलोय दोनूंकटाळी कनूर दारुहलद पीप
लि अरदूसो पटोल नांबकीछालि चिरायतो येसबअम्रौषदिसम
लाजे इनकूंकूटकरि छदामभरकोकाथकरिदोनूंबघतदिन १०
लेतौपित्तकफज्वरदूरिहोय ४ अथवा दाष किरमालाकीगिर ध
णो कुटकी नागरमोथो पीपलामूल स्रंठि पीपलि येसबबराबरि
ले इनकूंजौकूटकरिछदामभरकोकादो दोनूंबघतादिन ११ दी
जेतौसूल भ्रम मूर्छा अरुचि छर्दिको पित्तकफज्वरको यहकाथ
दूरकरैछै ५ अथवा ईरससेतीयोज्वरततकालजायछै सोलिबू
छूं हींगलकोकालौपारोटंक ५ गंधकसोध्योटंक ५ मिरचिकाली
टंक ५ सुहागोसोध्योटंक ५ येसबमिहीचांदि आदाकारसकीपु
ट ७ दे पाछैषानाकारसकीपुटसांत ७ दे पाछैगोलीरती ४ प्रमा
णकीकरै गोली १ प्रातगोली १ संध्या रोजानादिन ७ घायतौ क
फपित्तज्वरनिअदूरिहोय ६ इतिपित्तकफज्वरजतनसंपू०
अथसन्निपातज्वरकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिप्यते जोम
नुष्य बहुतचोकणो घणौबट्टो घणौगरम घणौताषो घणौमी
ठो घणौलूषोभोजनकरै अरुविरुद्धवस्तुषाय अरघणौषाय
अरदुष्टपाणीपीवै अरक्रोधवतीरोगलीस्त्रीसंसंगकरै अरदु
ष्टमांस अरकचोमांसषाय अरसीततावडोदेसरितुग्रहइनके
विपरीतपणैंतेंमनुष्यकैसन्निपातकोरोगहोय सोयातोईकी

३० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २

सलिष्यते पारोटंक ५ गंधकटंक ५ इन दोऊन की कजली भरल
 में कीजें पाछे या दोन्यां की बराबरि सूठ भिरचि पीपलि ये मिहिवांटे
 फेरि इन कूंभिलाय यां पांचा कै धतूरा का फल कारस की पुट ३ दीजें
 दिन १ ताई भरल करै योउ नान्तनायरस छै तीं की नास देयतौ सन्नि
 पात कूंद्र करै अथ सन्निपात दूरि करि वाको अंजन जमाल
 गोटां की मीजी टंक १० काली भिरचि टंक १ पीपलामूल टंक १ यां ती
 न्यां नैंजें भीरी कारस में दिन ७ ताई भरल करै पाछे ई को अंजन की जे
 तौ सन्निपात दूरि होय ५ अथवा पारो गंधक काली भिरचि पीप
 लि ये सब बराबरिले यां चाखां को चौथो हि सो जमाल गोटोले पाछे
 पारा गंधक की भरल में मिहि कजली करै पाछे ये दोन्यूं कजली में मि
 लाय इन सवन कूंजं भीरी के रस में दिन ८ भरल करै पाछे ई को अं
 जन करै तौ सन्निपात दूरि होय उपद्रव मिटै ई अंजन को नाम भैरावां
 जन छै यो वैद्यरहस्य में लिख्यो छै ७ अथवा सिरस का बीज पीप
 लि काली भिरचि सीं थो लूण लसण मैण सिल वच ये सब बराबरि
 ले तिन कूंभिलावां टिगो सूत्र में दिन १ भरल करै पाछे ई को अंजन करै
 तौ सन्निपात दूरि होय ८ अथ सन्निपात दूरि होवा को पंचवक्त्र
 रस लिष्यते हींगलूको काट्यो पारोटंक ५ सोधो गंधक टंक ५
 सोधो सींगी सुहरो टंक ५ सोधो सुहा गो टंक ५ पीपलि टंक ५ का
 ली भिरचि टंक ५ पारा गंधक की कजली करि पाछे कजली में ये औ
 षधि मिलाय धतूर का बीज का तेल में घटि ४ भरल करै पाछे ई की
 गोली रती १ की बांधे गोली १ आदा कारस में देयतौ सन्निपात दूरि
 होय ई ऊपर दही अरभात पुवावे योजन न वैद्यरहस्य में लिख्यो छै ९
 अथ सन्निपात कूंद्रि वे कूंस्वच्छं द भैरवरस मिश्र्यते हींगलूको

काट्योपारोटंक ५ सोध्यागंधकटंक ५ सोध्यासींगीमुहरोटंक ५
जायफलटंक २ पीपलिटंक १० पारागंधककीकजलीकरै पाछे
येसारी औषदिईमें भिलाय आदाकारसमै दिन १ धरलकरै पछे
रती १ प्रमाणदीजैतौ सन्निपातज्वरसीतज्वर विसृचिका विसम
ज्वर जीर्णज्वर मंदाग्नि माथांकारोग ग्रंथैयोरसदूरिकरैछै इहवै
घरहस्यमैलिष्योछै अथसन्निपातमेंसीतउपज्योहोयती
कोउवटणोलिष्यते मिरचि पीपलि स्तुति हरडकिछाली लो
द पुहकरमूल चिरायतौ कुटकी कूठ कचूर इंद्रजव येबराबर
ले इनकुनिपटमहीपीसि सरीरकैमर्दनकीजैतौ पसेबनैसीतां
गनैंदूरिकरै १० अथवा पारोटंक ५ सींगीमुहरोटंक ५ मिरचिटं
क २० धतूराकाफलकीराषटंक ४० येसबमिहीवांटिसरीरकैम
र्दनकरैतौ अतिपसेव अतीसीतांगसन्निपातदूरिहोय ११ अ
थमहासन्निपातदूरिकरि वैकोजतनलिष्यते पारो सींगी
मुहरो कालीमिरचि नीलोधूयो नौसादर येसबबराबरिलेयां
कूमिहीवांटि धतूराकारसमै अरलसणकारसमैरोटीकरै पा
छे रोगीकामस्तगकैक्षोरकराय मस्तकउपर वारोटीराधैपह
र १ जदिवैकासरीरकैतापहोयंआवै अरऔचैतन्यहीअ
वैतौ औपुरषजीवै अरऊंकैतापनहीहोय अरचैतन्यनहींहोय
तौऔमनुष्यजीवैनहीं १२ अथवा लसण राई सहजणांकीज
डं ग्रंथैगोमूत्रमेंमिहीवांटितीकीरोटीकरै वारोटीमांछाउपरिहो
रकरायपहर १ राधै जोचैतन्यअरतापवैकैनहींहोयतौऔजी
वैनहीं येजतनवैघविनोदमैलिष्याछै १३ अथसन्निपातदू
रि करिवैकोजतनलिष्यते महाभयंकरसन्निपातवारैकोवा

छूकठाइजेतौसन्निपातदूरिहोई १४ अरसन्निपातचारेकूस
 पकठाचोवालिय्योहैं सोलोकविरुद्धहैं सोनहीकीजें १५ अथ
 वा सन्निपातचारेकैंलोहकासलाकानिपटतातीकरिवैंकीपग
 थल्यांकैं अरवेंकाभवांराकैंवाचि अरवेंकाललाटकैंवाचिवेंलो
 हकीसलाकाकोडाहदीजेंतौसन्निपातदूरिहोय १६ योवैंघावि
 नोदमैलिथ्योछैं अरमंत्रजंत्रउगैरैंकेंसाधनसूंभीसन्निपातदू
 रिहोयछैं सुश्रुतचरकवाग्भट्टकेमतसैंतौसन्निपातजुरएकही
 छैं पणिओररिबीश्वरनकैंमतसैंसन्निपातज्वरवावन ५२ प्रका
 रकेहैं तीमैतेरासुथ्यहैं तिनकैंजुदेजुदेनामअरलक्षणअरज
 तनलिषूंछूं अथतेरासन्निपातकानामलिथ्यते संधिग १
 अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तमम ४ सीतांग ५ तंडिक ६ कंठकुज्व
 ७ कर्णक ८ भगननेत्र ९ रक्तष्टीवा १० प्रलाप ११ जिह्वक १२ अ-
 भिन्यास १३ अवयांकीआयुर्बललिषूंछूं संधिगदिन ७ रहैं अं
 तकदिन १० रहैं रुग्दाहदिन २० रहैं चित्तममदिन ११ रहैं सीतांग
 दिन १५ रहैं तंडिकादिन २५ रहैं कंठकुज्वदिन १३ रहैं कर्णकमहीना
 ३ रहैं भगननेत्रदिन ८ रहैं रक्तष्टीवादिन १० रहैं प्रलापदिन १४ रहैं
 जिह्वकदिन १६ रहैं अभिन्यासदिन १५ रहैं येतेरासंनिपातकी
 आयुर्बलकहीपणियांमैउपद्रवउठिआवैतौततकालआदमीम
 रजाय अरसन्निपातजुरचारेमनुष्यकासीतलजतनकीजेंनहां
 दिनसोवादीजेंनहां अर्द्धयसेसजलपाइजे अरआमअरकफ-
 घंटेऐसोंजतनकीजेंसंनिपातकेदोपमाफिकलंघनकराजे अथ
 संधिगसन्निपातकेलक्षणान्तिथ्यने जीमनुष्यकैंसंधिगसन्नि
 पातउयजे जीकासरारकासंधिरतंधिमेंघण्टा मूलचाले सरार

सूजिजाय पेटभास्यो होजाय अंगसिथल होजाय बलजातोर है वाय
 को अरकफको को पधणो होय नांद आवे नही १ येलक्षणसंधिगस
 निपातका जाणिजे १ अथसंधिगसनिपातदूरकरिबे को ज
 नलिष्यते रासनाहर डै की छालि गिलोय सहजलों चित्रका लजा
 लु सुंठि देवदारु कुटकी कचूर अरडू सो वायविडंग सालपर्णी
 पृष्ठपर्णी दोन्यूकटाली वीलकी गिरी अरण्य अरलू कुमेर पाठ
 पीपलि येसब बराबरिले इनकूंजो कूटकरि टंक २ को काटो करि
 दोन्यूबषतां दीजै तो सर्वलक्षणसंयुक्तसंधिगसनिपातदूर होय
 १ अथ अंतकसनिपातके लक्षणलिष्यते सरीरमें दाहय
 लों लागि जाय सरीरकांपै मांथो धुलै घणोषासै हिचकी होय
 बके बहुत ग्यानजातोर है सास होय आवै जीमनुष्यकै येलक्षण
 होय तीनै अंतकसनिपात कहजे योनाइ लाज छै ईसनिपातवा
 रोजीवै नही २ अथ रुग्दाहसनिपातकालक्षणलिष्यते बके
 सरीरमें दाहघणो होय पेटमें सूलचलै सरीर व्याकुल होय तिस
 घणो होय जीमें येलक्षण होय तीकै ये रुग्दाहसनिपात जाणिजे
 योभी असाध्य छै ३ अथ रुग्दाहको जतन लिष्यते हर डै की छालि
 लि पित्तपापडो नींबकी छालि कुटकी देवदारु किरमालाकी गि
 र मिनकादूष नागरमोथो येसब बराबरिले इनकूंजो कूटकरि
 टंक २ को काथ दोन्यूबषतां दि १५ दीजै तो रुग्दाहसनिपात जाय
 ४ अथ चित्तभ्रमसनिपातकालक्षणलिष्यते जीकै भ्रम हो
 य अरमद ताप मोह ये होय अरबकै बावलाकासाने बहोय अ
 रहसै गावै नाचै सास होय आवै ये जीरोगीकै लक्षण होय तीकै
 चित्तभ्रमसनिपात जाणिजे अथ चित्तभ्रमको जतन लिष्य

जीकूँभग्ननेत्रसन्निपातकहिये योभीअसाध्यछै ११ अथभग्नने
 त्रसंनिपातकोजतनलिष्यते दारुहलद पटोलपत्र नागरमो
 थो कट्यालि कुटकी हलद नींबकीछालि त्रिफला येसबबराबरि
 लेटंक २॥ कोकादोदोन्यंबषतांदिन १५ देयतौ भयनेत्रसन्निपा
 तदूरिहोय १० अथरक्तष्टीवीसन्निपातकोलक्षणलिष्यते
 लोहीथूकेघणो तिसघणीहोय मोंहहोय स्वासघणोहोय पेट
 मेंसूलहोय भमहोय वमनहोय आफरोहोय येजोमेंलक्षणहो
 य तीकूरक्तष्टीवीसन्निपातजानिये योमहाअसाध्यछै ११ अथ
 रक्तष्टीवीकोजतनलिष्यते नागरमोथो पदमाष पित्तपाप
 डो रक्तचंदन महुबो नेत्रचालो सतावरी मलियागिरिचंदन बका
 यणकीछालि येसबबराबरिले तिनकूँजोंकूटकरिंटंक २॥ को
 कादोदिन १५ देतौ रक्तष्टीवीसंनिपातदूरिहोय ११ अथचादूब
 कारसकी दांडूकाफूलांकारसकीनासदेतौ रक्तष्टीवीसन्निपात
 दूरिहोय ११ अथप्रलापसन्निपातकोलक्षणलिष्यते सरार
 कोपे बकैबहुतसरारतातोघणोहोयजाय दाहघणोहोय सुर
 कोवेगघणोहोय संज्ञाजातीरहै साराअंगविकलहोयजाय ये
 लक्षणप्रलापसन्निपातकेजानिये अथप्रलापकोजतनलि
 ष्यते नागरमोथो नेत्रचालो सालपर्णी पृष्टपर्णी दोन्यंकदाली
 बालकीगिरि अरलकुंभेर पाठ स्रंदि पित्तपापडो चंदन अररुसो
 येसबबराबरिले इनकूँजोंकूटकरिंटंक २॥ कोकादोदोन्यंबष
 तांदिन १० देयतौ प्रलापसंनिपातदूरिहोय १२ अथजिह्वास
 न्निपातकोलक्षणलिष्यते जामैरासहोय कासहोय तापघ
 णोहोय अरजीभलठहोय अरजीमकैकंराहोयजाय गुंगाहोयजाय

अरबहरोहोजाय अरबलजातोरहै येजामैलक्षणहोयतांकोजिह्मक
 सन्निपातकहिये योभीकष्टसाध्यहै अथजिह्मकोजननलिष्यते
 बच कल्यालीजवासो रास्ना गिलवै नारमोथो सूँठि कुटकी काकडाहीं
 गी पुहकरमूल ब्राह्मी भाङगी नींबकीछालि अरडूसो कन्नूर येबरा
 बरि इनकूँजो कूटकरिदंक २॥ कोकाटोदिन १६ देतौजिह्मकसन्निपा
 तदूरिहोय १२ अथअभिन्याससन्निपातकालक्षणलिष्यते नां
 दआबैनहीं स्वासयणौंउताचलोचालैं सरीरकांपे सरीरकीसर्वचेष्टा
 जातोरहै धांधोबौले कष्टवत्होजाय येजामैलक्षणहोयतांकोअभि
 न्याससन्निपातकहजे योमहांअसाध्यहै मृत्करूपहै १३ अथअ
 भिन्याससन्निपातदूरिकरिवेकेजंतनलिष्यते भाङगी रास्ना
 पटोल देवदारु हलद सूँठि मिरचि पीपलि अरडूसो इंद्रायणकीज
 ड ब्राह्मी चिरायतौ नींबकीछालि नेत्रवालो कुटकी बच पाठ अरलू
 दारुहलद कल्याली गिलवै निसोत जांउंकीजड पुहकरमूल त्रायमा
 ए नागरमोथो जवासो इंद्रजव त्रिफला कन्नूर येसबबराबरले इन
 कूँजो कूटकरिदंक २॥ कोकाटोदोन्युं वषतांदिन १२ देयतौ अभिन्यास
 सन्निपातजाय १३ अथसन्निपातदूरिहोवाकोअंजनलिष्यते
 लसण पीपलि मिरचि बच अरलूकाबीज सांधोलूण येसबबराब
 रले इनकूँगोमूत्रमेंभिहीवांरि नेत्रांमेंअंजनकरैतौ सर्वसन्निपातदू
 रिहोय १४ अथसन्निपातकूनासलिष्यते कालीमिरचि महुवो
 सांधोलूण चित्रक कायफल पीपलि येसबबराबरले इनकूँमिहीं
 चांरिगरमपाणीमेंनासदीजैतौसन्निपातदूरिहोय १५ अथआठो
 ज्वरकादूरिकरिवेकोचिंतामणिरसलिष्यते हिंगलूकोकाठो
 पारो सोधोगंधक अभ्रक ताम्रेंस्वर सूँठि कालीमिरचि पीपलि

हरडैकीछालि बहेडाकीछालि आंवला सोंध्याजमालगोटा येसब
 बराबरले इनसबनकूं दडयलकापानाकारसमें षरलकरे पहर
 दोयताई पाछेताबडैसकायरती १ प्रमाणगोलीबांधै गोलीदीजैतौ
 आठहीज्वरदूरिहोय अरपेटकीसूलजाय अजीर्णदूरिहोय आम
 वातदूरिहोय योवैघरहस्यवैघविनोदमेंलिष्योछें १६ अथअमृत
 संजीवनीगुटिका लिष्यते हींगलूकोकाट्योपारोटंक २ गंधकसो
 ध्योटंक ३ तांमेश्वरटंक ४ सुहागोसोध्योटंक २ सींगीसुहरोसोध्यो
 टंक १ कालीमिरचिटंक ४ प्रथमपारागंधककी कजलीकरै पाछे
 येओषदिमिलाई इनसबनकै ब्राह्मीकारसकीपुट १ दीजै पछेचि
 त्रककीपुट १ दीजै पाछेईकीगोलीरती १ प्रमाणबांधैगोली १ आ
 दाकारसमेंदीजैतौ सन्निपातनें मूर्खानेदूरिकरै यहरस मरेमसुष्य
 कूजिवावैहै अरआमवातकूं वायकीसूलकूं सियादाहकूं विषम-
 ज्वरकूं मंदाग्निकूं सन्निपातकूं यहचिंतामृतसंजीवनिगुटिकाइत
 नेरोगकूं दूरिकरैछें १७ योरसमंजरीमेंलिष्योहै अथकालारि
 सलिष्यते पारोमासा १२ सोध्योगंधकमासा २० सोध्योसींगीमो
 रोमासा १२ कालीमिरचिमासा २० पीपलिमासा ४० लवंगमासा १६
 धतूरकाबीजमासा १२ सुहागोसोध्योमासा २० जायफलमासा २०
 अकलकरोमासा १२ प्रथमपारागंधककी कजलीकरै पाछेवेंकज
 लीमेंयेओषदिमिहांदिमिलावै पाछेइनकैआदाकारसमेंदिन
 ३ षरलकरै पाछेनींबूकारसमेंदिन ३ षरलकरै पाछेकेलिकारस
 मेंषरलकरै पाछेरती १ तथा २ प्रमाणगोलीबांधै गोली १ पायतौ
 वायकौरोगअरसन्निपातदूरिहोय योरसयोगचिंतामणिमेंलिष्यो-
 छें १८ अथत्रिपुरभैरवरसलिष्यते संहिपईसा ४ कालीमिरचि

पइसा ४ तेलियासुहागोसोध्योपइसा ३ सांगीमोहरोसोध्योपइसा १
 भर पाछैइनकूमिहीवांदिदिन ३ नींबुकारसमेंबरलकरै पाछैआद्य
 कारसमेंदिन ५ परलकरै पाछैपानाकारसमेंदिन ३ परलकरै पा
 छैईकीगोलीरती १ प्रमाणबांधै गोली १ आद्यकारसमेंदजैतोसनि
 पातदूरिहोय १९ अथसंज्ञाकरणरसलिष्यते सोध्योसांगीमोहरो
 सांधोलूण कालीमिरचिरुद्राक्ष कटाली कायफल महुवो समुद्रफ
 ल येसरीओषदिबराबरले पाछैयानैमिहीवांदि आकलाषारकी
 पुट ३ दे पाछैईनैरती १ तथा २५ ३ कानकाछिद्रमें तथा नाकमेंदे अ
 रफूकदेतो संज्ञाहोयआवे अरसन्निपातदूरिहोय २० अथब्रह्मा
 स्वरसलिष्यते पाराकीमसमदंक ३ सोध्योगंधकटक ३ यांदोन्यांकी
 बराबरीसोध्योसांगीमुहरो यांसारांकीबराबरिकालीमिरचिले प
 छैयांसारांकोयेकजीवकरि कलहारीबंदाल अरज्जालासुरी यांज
 डांकारसमें अरआदाकारसकीपुट २१ इकीसदेरयोरसतयारक
 रै पाछैरति १ योरसदेतौसन्निपातदूरिहोय २१ इतिसन्निपात
 काजतनसंपूर्णम् अथआगंतुकज्वरकानाग्रउत्पत्तिलक्ष
 णजतनलिष्यते शस्त्रादिकांकाचोटसूंउपजीजोज्वर अरभूतादि
 कांकालगिवांकासंगसेंउपजीजोज्वर २ अरविषादिकांकाषावा
 सेउपजीजोज्वर ३ अरकामक्रोधसोकभयरुहेहृद्देवादिकांकाआ
 धिक्कतेउपज्योजोज्वर ४ अरराजा गुरु मातापितानेंआदिलेरयां
 कातिरसकारसूंउपज्योजोज्वर ५ त्यांसारांहांज्वरानेंआगंतुकज्व
 रकहिजै अथशस्त्रादिकतेउपज्योजोज्वरतीकालक्षणांलिष्य
 ते शस्त्रादिककालागिवासूंउपजीजीपीडा तींसूंवायकोकोपहोय
 पाछैवायायलोहीनैविगाडै पाछैवैकैपीडाहोय अरवैकैसोजोहोय

अरवेंकासरीरकोवर्णचौरसोहोजाय पाछेंवेंकासरीरकोवायवेंकैज्व
रनैकरैछै १ अथशस्त्रादिकसंज्ञपज्योजोजुरतींकोजतनलिख्यते
ईज्वरवालानैलंघनकराजेनहां कसायलीवस्तगरमद्रव्यकोजतनक
रिजेनहां मधुरचीकणाद्रव्यषुवाजै अरसेकिचो सीवणोपाटीबांधि
वानेंआदिलेरजन्मजोभजतनकीजै सोरचीउगैरैषवाजै १ अथभूता
दिककालागिवासंज्ञपज्योजोज्वरतींकोलक्षणलिख्यते सरीर
मेंउद्देगहोयआवै कदेकहसेकदेकरोवै कदेककांपैचित्तिथिरनहांहो
य तींकेभूतादिककोप्रवेशजाणिजे २ अथभूतादिककादिकारि
त्राकोजतनलिख्यते वेनैबांधिजे ताडनादिककारिजे अरैमंत्रजंत्र
तंत्रकीजै अरनांसदीजे यांसंयेद्वारहोयछै सोथोडाथोडासबहीअज
मायलिखूं अथभूतादिककाकादिवाकोमंत्र ऊँ ह्रीं ह्रीं नमोभू
तनायकसत्यस्तभुवनभूतारिसाधयै २ हुं ३ ईमंत्रकोमोरकीपांष
संज्ञाडोदीजेतौभूतादिकनीकलै अथभूतादिककाकादिवाको
इसरोमंत्रलिख्यते ऊँ नमोनारसिंहायहिरण्यकश्यपुवक्षस्थल-
विदारणाय त्रिभुवनव्यापकायभूतप्रेतपिशाचशाकिनीकोलूनूल
नायस्तंभोद्भवसमस्तदोषान् हनहन्सर २ चल २ कंप २ मथ २ हुं फट्
३ ठः ठः महारुद्रोजापयतिस्वाहा इतिनृसिंहरक्षामंत्र ईमंत्रसं
मोरकीपांषसंज्ञाडोदेतौभूतादिकरहैनहां २ अथभूतादिककाव
करावाकोमंत्रलिख्यते ऊँ नमोभगवतेभूतेश्वरायकिलि २ तारवा
य रौद्रदंष्ट्रकरालवक्राय त्रिनयनभूषितायधगधगितपिसंगल
लाटनेत्राय तीव्रकोपानलायामित तेजसेपाशशूलखड्गदंडमरु
क्थनुर्बाणसुदूरभयदंडनासमुद्रव्यग्रदशदेर्दंडमंडितायकपिल
जटाजूटकूर्दार्दचंद्रधारिणभस्मरागरंजितविग्रहायउग्रप्रतिपति

घटादोपमं डितकंठ देशायजय २ भूतडामरेश आत्मरूपं दर्शय २ नृ
 त्यय २ सर २ बल २ पाशेन बंध २ हुंकारेण त्राशये २ यज्जदंडेन हन २
 निशितरवद्वेन छिंधि २ श्लघ्येण भिंघ २ मुद्गरेण चूर्णय २ सर्वग्रहा
 णां आवेशय २ ईं मंत्र सेतीं गरुकां घृतमैगूंगलमिलाय घणौ धूपधे
 वै भूतादिकलाग्यो होय जीर्णैर्नैर् अरइ हीं मंत्रसूड्ड दानैर् मंत्र अरवां उ
 डदां कीर्तैर्कै देतौ ओमनुष्यमुक्तरवकारैर्जिसो होय तिसो कहै ३ पाछे
 बां मंत्रसूं काटे अरधूपमैनींबकापान अरसांपकीकांचनीं मिलावै
 अरभूतादिककाकाटिकाकीनास अरअंजनलिप्यते हांगने
 लक्षणकापाणिमें वाटिनांस देतथा अंजनकरैतौ भूतादिकदूरिहो
 य ४ येतंत्रोपचारग्रंथमेलिष्यछै अथ भूतादिककाकाटिका
 कीर्तनलिप्यते तुलसीकापांत = कालीमिरत्रि = सहदेई कीजड
 दीनवारनैपवित्रहोयले पाछेयेतीन्यूंमिलाय कंठकेबांधैतौ भूता
 दिकदूरिहोय ५ अथ कोथज्वरकालक्षणलिप्यते सरीरकांपै
 मथवायहोय अरपित्तज्वरकालक्षणमिलै तीनैकोधज्वरकहजै
 ६ अथ कोथज्वरकाजतनलिप्यते आछ्यासीतलवचनकरि
 अरमनकुंथारालागैंचैसा लोभकरियोज्वरदूरिहोय ७ अथ मान
 सज्वरकीउत्पत्तिलक्षणलिप्यते पुत्रमित्रस्त्राधनयानैर्आदि
 लेरज्यांकोनासहोय अरआपणाइष्टकोनासहोय अरराजाअरब
 डांजीकोनिरसकारकरै त्यांकेयोमानसज्वरहोयछै अथ ईका
 लक्षणलिप्यते सोचघणौहोय अतीसारहोयआवै सर्ववस्तुमें
 ग्लानिहोयआवै चित्तभ्रमहोयआवै आंसूआवै सासहोयआवै
 येलक्षणहोयतीनैमानसज्वरकहजे ८ अथ मानसज्वरकोजतन
 नलिप्यते ईज्वरकोजतनग्यानमुष्यछै अरधैर्यत्यावणो अर

मिशान्नरुचिकारिनानाप्रकारकाभोजन अरच्यजनषाणा यांसंयो
 ज्वरहरिहोय ९ अथपुरुषकैकामज्वरकालक्षणलिख्यते जीकैका
 मज्वरप्रगटहुवोहोय तीकैभोजनादिक्रमैअरुचिहोय मनमेंदाहहो
 य अरत्नज नोद बुद्धिकोधैर्यपणोंयेसाराजातारहै हियोदूषे संभोग
 मेंहींध्यानरहै निस्वासहोयआवे येजीमेंलक्षणहोय तीनैकामज्व
 रकहिजे अथकामज्वरकाजतनलिख्यते सर्वगुणाकरिकेंसंयुक्त
 महासरूपसुंदरजीकानेत्र महागाढाअरउंचाजीकाकुच अरसोल
 वरसकीमोठ्यारजोस्त्रीतीसूंआछीतरहसंभोगकरैतौकामज्वरदू
 रिहोय १० अथवा सुंदरमहबुबसूसंगकरैतौकामज्वरदूरिहोय ११
 अथस्त्रीकैकामज्वरहुईहोयतीकालक्षणलिख्यते जीस्त्रीकेका
 मज्वरप्रगटहुईहोय तीकैमूर्छाहोयआवे अरवेंकासाराअंगमेंम
 रोडीआवे अरतिसहोय नेत्रचपलहोय कुचमसलावाकीमनमेंआ
 वै पसेवआवे अरहियामेंदाहहोय अरभोजनमेंरुचिनहीं अरत्न
 जनांद धैर्यभीजातारै येजीकैलक्षणहोय तीकैकामज्वरकहिये १२
 अथईकोजतनलिख्यते जीकैकामज्वरप्रगटहुवोहोय सोस्त्री
 आछीसारीसामग्रीलीयांपकाभरतारसूंसंभोगकरैतौकामज्वर
 हरिहोय १३ अथभयज्वरकालक्षणलिख्यते जीकैभयज्वरप्रगटहु
 वोहोय तीकैप्रलापहोय अरअतीसारहोय चित्तस्थिरनहींहोय मो
 जनमेंअरुचिहोय येजीमेंलक्षणहोय तीनैभयज्वरकहिये १४ अ
 थईकोजतनलिख्यते वेनेहर्षकीचातांकहणी अरवेंकोकहीतरेसूं
 भयहरिकरणो १५ अथविषमज्वरकालक्षणलिख्यते जीपुरुषकै
 ज्वरआयांपाछै कहांतरेकाकुपथसूरसंधाननेंछोडि अरलोहीने
 आदिलेरबांधातानेंप्राप्तिहोय पित्तकफहैंसोविषमज्वरनेंकरैछै

अथवा ज्वरआयां विनाभीज्वरहोयआवेछै जांपुरुषकैसीयोदाहआ
 जै अरसीकोअरदाहकोघणोथोडाकोनेसनहोछै अरसमयकोभीनि
 यमनहोरहै किहींबषतआयजाय येजीमेंलक्षणहोय तानेंबिसम
 ज्वर कहिये सोबिसमज्वरआरिप्रकारकोछै येकतोसंततजोरोजी
 नांआवे १ अरयेकइकांतरेआवेजीमेंइकांतरोकहिये २ येकतीसरे
 दिनआवेतानेतेजरो कहिये ३ येकचौथेंदिनआवे तानेंचतुर्थकक
 हिये विषमज्वरकाभेदतोघणाछै त्यामेंआरिभमुष्यछैसोलिप्याछै
 अथबिसमज्वरकाजतनलिप्यते बिसमज्वरवालांनैमूंगाकीअ
 थवामोठाकीदालकोपाणीदीजै हलकोराषिये ठंठीपाणीपाजेनहीं
 अरपटोलहरडैकीछालि इंदजब गिलवै जवासो येसारीत्रोषदिब
 राबरिले त्यांनैजो कूटकरिदंक २॥ कोकादोदोन्यंबषतांदिन ७ लेय
 तौ संततज्वरदूरिहोय १५ अथवासीतज्वरवालांनेयहक्षुद्रादि
 कदेतौसीतज्वरजायसोलिपूंछुं कट्याली धणो संहि गिरुवै ना
 गरमोथो पदमाष रक्तचंदन चिरायतौ पटोलपत्र अरडूसो पुहकरमू
 ल कुटकी इंदजब नांबकीछालि भाडंगी पित्तपापडो यात्रोषद्यांनै
 बराबरिले त्यांनैजो कूटकरिदंक २॥ कोकादोरोजीनांदोन्यंबषतांदि
 न १० लेतौसीतज्वरदूरिहोय १५ अथवा षोडसांगनूर्णसूंभीविषम
 ज्वरदूरिहोयछैसोलिपूंछुं चिरायतौ नांबकीछालि कुटकी गिलवै
 हरडैकीछालि नागरमोथो धणो अरडूसो वायमाण कट्याली काक
 डासांगी संहि पित्तपापडो फूलप्रियंगु पटोल पीपलि कचूर येसा
 रीत्रोषदिबराबरिले त्यांनैमिहींपीसिकपडासूंछालिदंक १॥ सबा
 सीतलंजलसूंदिन ८ लेतौबिसमज्वरदूरिहोय १६ अथवा चिराय
 तौ कुटकी निसोत नागरमोथो पीपलि वायविडंगसंहि नांबकी
 छालि

हरडेंकीछालि येसारीओषादिबराबरिले त्यांनैमिहीपीसि तींचूरएनैदं
 क१ गरमपाणीसुंदिन ७ लेतौविषमज्वरदूरिहोय अरमूषलागै १७
 अथवा साराहीसीयादाह इकांतरातेजराउगैरे त्यांनैज्वरांकुसदूरि
 करैछै सोलिषूछूं सोमलनैभारुवेंगएकापेटमेंबार १४ पकालै तीं
 कौभडीतौकरिलै पाछैवेंबराबरि पीपलि अरहांगलुले त्यांतीन्यांकी
 राईजितीगोलीबांधो पाछैगोली १ पतासामेंदे सीलागैजिहपहली
 तौनिअैसीयोवेलांजरोतेजरोदूरिहोय गोली ३ तथा ५ में १९ अथ
 जीर्णज्वरकालक्षणलिख्यते दिन २१ उपरांतिजुरजीकासरीरमें
 रहै सूक्ष्महोयकर अरजीकीभुषजातीरहै सरीरदूबलौहोयजाय
 अरपेटमेंफियोहोयआवे जीनैजीर्णज्वरकाहिजै अथजीर्णज्वर
 काजतनलिख्यते प्रथमवसंतमालतीरसंजीर्णज्वरादिकांनैदूरिक
 रैछै सोलिषूछूं सोनांकउरक १ भाग बूकाकामोतीदोयभाग २ हांग
 लूतीन ३ भाग कालामिरचि ४ भाग षपठौंगोमूतमेंसोथोआठ
 भाग यांसारानैंबरलमेंमिहीवांदि पाछैवांसारानैंगडकामाषनमें
 वांकातोलमाफिकबरलकरै पाछैनींबूकारसमेंबरलकरै वाचि
 कंदाईभिटेजैगाताई पाछैऔरसतयारकरै पाछैयौरसरती १ तथा २
 पीपलि सहतकासंयोगसुंदेतौ जीर्णज्वरनें धातकाविकारनें गरमी
 कारोगनें संग्रहणीकारोगनें मूत्ररुछनें सासनें बासनें प्रदरनें यां
 रोगानैयोदूरिकरैछै अनुपानकासंजोगसूं २० अथवा कछाली गि
 लवै सूंठि यांतीन्याकौकादौदिन १० लेतौजीर्णज्वरनेंदूरिकरैछै २१
 अथवा कचूर पित्तपापडौ सूंठि नागरमोथो कुटकी कछाली चिरा
 यतौ यांनेबराबरिले त्यांनैजौकूटकरिदं २॥ रोजीनांदोनूं वषतांदि
 न ११ लेतौजीर्णज्वरविषमज्वरदूरिहोय २२ यौवैद्यविनोदमेंलिखोछै

अथलाक्षादितैललिख्यते पीपलकीलाषशेर १ पाणीभित्तेशेर ६
 लोदटक १० यानैओरायमधुरीआंचसंईकौचतुर्थीसरसकाटे पाछे
 ईरसमेंगडकोमठौशेर १ नांषे भित्तोनेलशेर १ नांषे अरसौंफटक
 २ आसगंधकटक २ हलदटक २ देवदारुटक २ सभालुटक २ पि
 त्तपापडौटक २ कुटकीटक २ मुर्वाटक २ महलोटीटक २ नागरमोथो
 टंक २ रक्तचंदनटक २ रासनाटक २ योंसारीओषधानैभिहीचोटे ईते
 लमेंनांषे पाछेसारोंकोयेकजीवकरिमधुरीआंचसंओरावे वेंकौर
 सबलिजाय तेलआईरहै तदिउतारिले पाछेईतेलकौमरदनकरेतौ
 जीर्णज्वरविषमज्वरदूरिहोय अरसरीरमेंबलहोय २३ अथवा पीप
 लित्रतीनसूयेकेकरोजीनावधेईकईसताई अरयेकेकहीघटे तीन
 आय रहैजगताईदे ईनैकईमानपीपलिकहैछै ईसूंजीर्णज्वरबिस
 मज्वरदूरिहोयपथ्यरहै २४ अथवा बकरीकादूधकाफ्फागांसुंभी
 जीर्णज्वरदूरिहोयछै २५ अथवा नींबकापत्र त्रिफला सुंठि काली
 मिरचि पीपलि अजमोद सींधीलूण संचरलूण विडलूण जोषारुचि
 चक्र चिरायतौ पित्तपापडौ येसारीओषदिबराबरिले यानैभिहींषा
 सै कपडछाणकरिटंक १ प्रातैकालहीजलसंतौविषमज्वरजीर्णज्व
 रदूरिहोय २६ योनिंबादिचूर्णछै अथवा त्रिफला दारुहलददौतुं
 कटाली कचूर सुंठि कालीमिरचि पीपलि पीपलामूल मुर्वा गिलवे
 धणै अरदूसौ कुटकी नायमाण पित्तपापडौ मोथो नेत्रबालौ नींब
 कीछालि पौहकरमूल महलोटी अजवायण इंद्रजव भाइंगी सह
 जणांकाबीज फिटकडी वच तजकमलगटापदमाष चंदन अती
 स चरैटी नायविडंग चित्रक देवदारु पटोल चव्यलबंभ वंसलौचन
 पत्रज येसारीओषदिबराबरिले योंसारीओषधांसुं आधोभिययूतौ

त्यांनैमिहीवांरिकपडछाएकरे पाछैरंक १ सीतलजलसुंलेतौ सर्व
 ज्वरमाचनें विषमज्वरनेंजीर्णज्वरनेंयोदूरिकरेछै योसुंदर्शनचूर्ण
 छै २७ अथवा कहींतरैविषमज्वर अरजीर्णज्वरजातीदीसैनहींतौ
 वेनेंवेकारोगमाफिकजुलाब अरवमनकराजेतौविषमज्वर अरजी
 र्णज्वरदूरिहोय २८ अथजीर्णज्वरकालक्षणलिख्यते बारबारप
 तलोजंगलजाय षाटीडकारआवै वमनकाइछारहै उदरमेंपीडा
 होय अरआफरौहोय पेटमेंगुटुगुडाटशब्दहोय तदिअजीर्णज्वर
 जाणिजे अथअजीर्णज्वरकीओषदिलिख्यते अजमोद हरैडेकी
 छालि संचरलुण कचूर यांनैबराबरिले यांकोचूर्णमिहींकरिदंक १
 गरमपाणीसुंलेतौ अजीर्णज्वरजाय १ अथदृष्टिज्वरकालक्षण
 लिख्यते जैभाईयणीआवै उदरमेंपीडाहोय हाथपगामेंफुटणीहो
 य सरीरकीशक्तिजातीरहैतौ दृष्टिज्वरजाणिजे अरदृष्टिज्वरको
 लक्षणलिख्यते सेकीहींग कालीमिरचि पापलि सूंठि येमिहींवा
 रिदंक २ गरमपाणीसुंलेतौ दृष्टिज्वरदूरिहोय १ अथवा मुहराउंगे
 रैकोपाणीपावैतौदृष्टिज्वरदूरिहोय २ अथलौहीबिगंड्योहोय
 तौकीज्वरकालक्षणलिख्यते अंगमेंफुटणीहोय मूंहंडाकरिसा
 सआवै सरीरसिथलहोय तिसहोय मुर्छाहोय आफरौहोय येजीं
 मेंलक्षणहोयतीनैलौहीकीज्वरजाणिजे अथलौहीकीज्वरकोज
 तनलिख्यते दाष अरडूसौ कत्वाली हलद गिलवै हरडैकीछालि
 अनेबराबरिले त्यांनैजौकूटकरिदंक २ कोकोटोकरिदे काटोसी
 तलहुंवांकाटमें अघेलाभरसहतमिलाय दिन ७ देतौ लौहीविग
 ङ्गासुंलपज्योजोजूरतीनेंयोदूरिकरेछै १ अथमलज्वरकालक्ष
 णलिख्यते जीमेंमुषसोसहोय दाहहोय भ्रमहोय वमनहोय मूर्छ

४७ अमृतसागरतथाप्रतापसागरतरंग २

होय मथवायहोय हिचकीहोय पेटमेंसुलहोय येसारालक्षणजीमो
होयतीनैमलज्वर कहिजे अथमलज्वरकीऔषदिलिखते कुट
का पीपलामूल नागरमोथो हरडैकीछाल किरमालाकीगिर येसारी
औषदिवराबरिले त्यांनैजोकूटकरिदंक २ कौकादोकरिदेतौमलज्वरदूर
रिहोय औकिरमालपंचकछै १ अथगर्भिणीस्त्रीकीज्वरकौजतन
लिखते रक्तचंदन दाष गौरीसार बसमहलौदी महुबो धरौ नेत्रवा
लो मिश्री यांसारानैबराबरिले त्यांकोकादौदिन ७ देतौ गर्भिणीस्त्रीकी
ज्वरजाय १ अथसूतिकाज्वरकालक्षणलिखते अंगामेंफूटणी
होय सरिरतातौहोय कांपणीहोय तिसोहोय डीलभास्योहोय सौजो
होय अतीसारहोय येजीमैलक्षणहोय तीनैसूतिकाज्वर कहिजे १
अथसूतिकाज्वरकीऔषदिलिखते अजमौद जीरो वंसलौचन
पैरसारविजे सार सौंफ धरौ मोचरसः येसारीबराबरिले त्यांनैजो
कूटकरिदंक २ कौकादौदिन १० लेतौसूतिकाज्वरदूरहोय १ अथवा
दसमुलकौकादौदेतौसूतिकारोगदूरहोय सौलिखूँछूँ सालपर्णी
पिष्टपर्णी दोन्यंकटेला गोबरू बीलकीगिर अरण्यं अरु कूँभैर पा
ठ पीपलि येसारीबराबरिले त्यांनैजोकूटकरिदंक २ कौकादौदिन १०
लेतौसूतिकारोगजाय १ अथबालककेज्वरहोयतीकीउत्पत्ति
लक्षणलिखते बालककीमाता अथवा धाय कूपथकरै गरिष्ट
वस्त्याय तदिबालककेनानाप्रकारकारोगहोय अरज्वरहोय सोबा
लककारोयबासुंजरयैजाय ज्वरप्रत्यक्षमालुमहोय अथबालक
कीज्वरकौजतनलिखते बालककीमाताकैने अथवा धायनें प
थराधिजे अरहलकाभोजंदजे अथवा बालककीमाताकैदूधन
होहोयनौबकरीकीदुधदजे अथवा नागरमोथो हरडैकीछाल प

दोलमहलौरी ये सारी औषधि मास १ भरलै तौ कौंकाथ करि दिन ७ देतौ
 बालक की ज्वर दूर होय १ अथवा पील महलौरी छड महुवौ यां कौंभि
 ही चूर्ण करि मासौ १ सहत में देतौ बालक की ज्वर दूर होय २ अथवा बा
 लक के अतिसार नैलीयां ज्वर होय तौ अतिस बाल की गिरि इंद्रजव धा
 वड्या का फुल लोद धणों नेत्र बालौ यां कौंमासा २ भर कौं करि देतौ बा
 लक कौं ज्वराति सार दूर होय ३ अथ बालक की सूंडी पकि गई होय तौ
 घृत सूंसे के तौ आछी होय ४ अथ पेट में रुमि पड़ी गई होय तौ सु
 उपजी जौ ज्वर तौ कौल क्षण लिख्यते जुर होय आंचे सरीर कौ वर्ण औ
 र सो होय पेट में सूल होय हियो दूषे वमन आंचे भ्रम होय भोजन में अ
 रुचि होय अतिसार होय तौ रुमि सूं उपजी ज्वर जाणिजे अथ ईको
 जतन लिख्यते पलास पापडौ नांब की छालि सहज णां की जड नागर
 मोथी देवदारु वाय विडंग यां औषधां ने बराबर लिख्यते यां ने जौ कूट करि
 दंक २ कौं काटौ दिन ७ देतौ पेट की रुमि दूर होय अथ ज्वर जाय १
 अथ काल ज्वर काल क्षण लिख्यते ज्वर कौ वेग घणों होय ऊर्ध्व सास
 होय सरीर की कांति जाती रहै पसेव आंचे सरीर सिथल हो जाय नाडी
 हाथ लागै नहां सारी इंद्रियां का धरम जातार है तौ काल ज्वर जाणिजे अ
 थ ईका जतन लिख्यते गऊ प्रथी नै आदि लै अर्द्धा माफिक दान कराने
 ईश्वर कौ स्मरण कराई जौ अरस निपात का जतन पाछे कट्या छै सो क
 रिजे अथ ज्वर का दस १० उपद्रव छै सो लिख्यते निस घणी लागे १
 षासी होय २ सास होय ३ हिच की होय ४ वमन होय ५ अतिसार होय
 ६ अरुचि होय ७ बंध कुष्ठ होय ८ आफरौ होय ९ मूर्छा होय १० अथ
 उपद्रवां कौल क्षण लिख्यते प्रथम ज्वर होय पाछे और रोग होय वो
 जुर कौ जतन करि वादे नहां ११ ईने उपद्रव कहिजे निस तौ ज्वर का स्त्री

घाससासज्वरकावेढाछे हिचकी अरवमनज्वरकीबैठीछे अतीसासज्व
 रकोभाईछे अरुचिज्वरकीबहणछे बंधकुष्ठज्वरकोभाणिजौछे आ
 फरीज्वरकोसुसरीछे मूर्छाज्वरकीवादीछे योमेंजौबलवानहोयती
 कौजतनकीजे अथज्वरअतीसारयेदोनूयेक ठाहोयतीकोज
 तनलिष्यते सुठि अतीस नागरमोथो चिरायती गिलवे कूडाकी
 छालि यांनैबराबरिलै त्यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकाढीरोजीनादि
 न ७ देतौयोरोगदूरिहोय १ अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चि
 नक सुठि बीलगिर नागरमोथो चिरायती कुटकीछालि इंदजव
 यांसारानैबराबरिलै यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकाढीकरिदिन ७ ले
 तौ ज्वरातिसारनै मूषसौसनै हिचकीनै तिसनै वयननै सासनै वा
 सनै यांसारानैयोदूरिकरैछे २ अथज्वरमेंतिसघणीहोयतीको
 जतनलिष्यते धरौं नागरमोथो पित्तपापडो यांनैजौकूटकरिदं
 क २ कौकाढीदिन ३ देतौ तिस दाह अतिसारदूरिहोय ३ अथवा
 वडकाअंकुर चाबलांकीपील कमलगटा यांनैबराबरिलै त्यांनैमि
 हीवांटिसहतमेंगौलीकरै गौली १ मूद्यमेंराखै तौतिसदूरिहोय ४ अ
 थज्वरमेंघासहोयतीकोजतनलिष्यते पीपलि पीपलामूल सुं
 ठि भाडंगी घेरसार कल्याली अरडूसौ कूलीजन बहेडौ यांनैबराब
 रिलैदंक १ कौकाढीदिन ७ देतौ जुरकोषासजाय १ अथजुरमेंसा
 सहोयतीकोजतनलिष्यते सुठि मिरचि पीपलि मोथो काकडा
 सांगी भाडंगी पुहकरमूल येबराबरिलै यांकोदंक १ कौकाढीदिन
 ७ देतौजुरकोसासदूरिहोय १ अथज्वरमेंहिचकीहोयतीकोज
 तनलिष्यते जलमेंसांथात्तएनोंमहिवांटीतीकीनासदेतौहिचकी
 दूरिहोय १ अथवा भोरकाचंदवाकीराषअर पीपलिसहतमेंचरा

वैतौ हिचकी अरबमनहरिहोय ३ अथजुरमेंबंमनहोयतीं कौजत
 नलिष्यते गिलवेदंकसवा १। कौकादौसहतमिलादेतौ ज्वरकौवमनदु
 रिहोय ४ अथवा मांषाकीबीटरती २ सहतमेंचढावैतौछर्दिदूरहोय
 ५ अथवा चावलांकीबील पीपलिसहतमेंचढावैतौछर्दिदूरहोय ६
 अथज्वरमेंमुर्छाहोयतीं कौजतनलिष्यते किरमालाकीगिरिदा
 ष पित्तपापडौ हरडैकीछालि यांकोकादौदंक २ कौकारिदेतौमुर्छादू
 रिहोय १ अथजुरमेंबंधकूपहोयअरआफरोहोयतीं कौजतन
 लिष्यते साबणकीवातीकरिगुदमेंभेलेतौबंधकूपअरआफरोदौ
 लुंदूरहोय १ अथज्वरमेंमूषसोसहोयआवेअरजीभकौविर
 सपणोहोयतीं कौजतनलिष्यते मिश्रीअरदाडूंकबीजांकाकु
 रलाकरे अथवा दाष अरदाडूंकबीजांकाकुरलाकरेतौसुषसोसअ
 रजीभकौविरसपणोंदूरिहोय १ अरजुरमेंनींदजातीरहेतींकाआवा
 कौजतनलिष्यते आलुबूषारो १ सेकीभांगिरती १ सहतमेंचढावैतौ
 नींदआवे अरअतीसारसंघहणीदूरिहोयभूषलागै १ अथवा पीप
 लामूलदंक १ गुरमेंषायतौनींदमुकरआवे २ अथवा अरंडकौतेल
 अरअलसीकौतेल येदोन्यूंकांसीकीयालीमेंघसि ईकोअंजनकरेतौ
 नींदमुकरआवे ३ अथज्वरउत्तरिगईहोयतींकोलसणलिष्य
 ते सरीरसारीहलकौहोजाय मस्तगमेंभुजालिआवे होदामेपाप
 रीहोय सर्वइंदीयांआपकाविसैनेंघहणकरिबालागिजाय सरीर
 कीसारीव्यथाजातीरहे सारासरीरमेंपसेवआजाय भूषघणीलागे
 छीकआवेमलकीप्रवर्तिहोय यैलसणहोयतदिज्वरनिअेदूरिहुवौजानी
 यें स्याणैपुरषदुरिहुवापाछैभी अतनीवस्तकरेनहींबलसरीरमेंवापर
 जवताई अरपथमेंरहै मैथुन व्यायाम छीजउगवौ घणैषावो यां

नैआदिलैर येतीवस्तकरेनहीं इतिश्रीआर्योज्वरकीउत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराज्यराजराजेंद्र
श्रीसवाईप्रतापसिंहजीवरचितेअमृतसागरनामग्रंथेसर्वज्वरकीउ
त्पत्तिअरसर्वज्वरलक्षण अरसर्वज्वरकासुष्यमूष्यजतननिरूपणेना
महितीयस्तरंगः समाप्तः ॥२॥ ७७ अथअतीसाररोग

कीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते इतनीवस्तांसुंमनुष्यांकैअतीसा
रकैरोगपेदाहोयछे भारीवस्तमेंदउगैरैकाषावासुं धणीचीकणीवस्त
काषावासुं लुधीवस्तकाषावासुं गरमवस्तकाषावासुं पतलिसीतल
वस्तकाषावासुं विरुद्धवस्तकाषावासुं भोजनउपरैभोजनकरिवासुं
विसकाषावासुं मलकीवाधाकारैकिवासुं इतनीवस्तांसुंमनुष्यकै
अतीसारकैरोगपेदाहोयछे अथअतीसारकौस्वरूपलिख्यते
मनुष्यांकासरीरमेंयांकुपथ्यांसुजलधातवधेतदिउदरकीअग्निनैसां
तिकरै तदिऔजलहैसौविष्टासंभिलि पवनकौप्रस्तौथकौगुदाकामा
रगसुं पतलीमलनीचेकुंघणोचलै तीनैअतीसाररोगकहिजैछे सो
अतीसाररोगछे ६ प्रकारकोछे येकतौवायको १ पित्तको २ कफको ३
सन्निपातको ४ सौचको ५ आमको ६ अथअतीसारकौपूर्वरूप
लिख्यते प्रथमहियौनाभिगुदाउदरपेडू यांमेंपीडाहोय अंगांमेंफू
टणीहोय गुदाकौपवनरुकिजाय बंधकुटहोयआवे आफरोहोय
अन्नपचैनहीं तदिजाणिजैमनुष्यकैअतिसारहोसी अथवायका
अतीसारकौलक्षणलिख्यते कुंयेकललाईनैलीयांमलहोय अ
रमलमेंफागमित्याहोय मललुषीहोय अरथौडोयडोवारंवारजाय
अरआमसुंभिल्योथकौमलजाय अरमलजातांपेडूमेंपीडाहोय
तौ वायकौअतीसारजाणिजै अथवायकाअतीसारकौजंत

५२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ३

नलिष्यते वच अतीस नागरमोथो इंदजव सूंठि यांनैबराबरिलै ल
 नैजौकूटकरिदंक २ कौकादौदिन ७ देतौवायकौअतीसारदुरिहो
 य १ अथवा इंदजव नागरमोथो लौद बीलकीगिर आंबकीगुंठ
 ला धावड्याकाफुल यांनैबराबरिलै त्यांनैमिहींवांटिचूर्णकरिदंक
 २ भैंसकीछालिमैदिन ७ लैतौवायकौअतीसारदुरिहोय २ अथ
 पित्तकाअतीसारकोउक्षालिष्यते मलपीलौजाय अरलाल
 अरहस्यो अरदुरगधनेलीयांमलजाय अरपतलौजाय अरगुदा
 पकिजाय सरीरमेंप्रसेवआवे निसलागैसरीरमेंदाहहोय सुर्छा
 होय येलक्षणजिमैहोय तीनोंपित्तकोअतीसारकहजै १ अथपित्त
 काअतीसारकोजतनलिष्यते बीलकीगिर इंदजव नागरमोथो
 नेत्रबालो अतीस यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकादौदिन ८ देतौपि
 त्तकोअतीसारजाय १ अथवा रसौत अतीस इंदज य धावड्याका
 फुल सूंठि येबराबरिले त्यांकोमिहींचूर्णकरि बांचलांकापाणीसुंठ
 क २ ॥ तींमैसहतमीलायदिन ७ लैतौ भयंकरभीषित्तकोअती
 सारजाय २ अथवा बीलकीगिर नेत्रबालो मोथो इंदजव अतीस
 यांभोषयांनैलैतांकोकादौदंक २ कौदिन ७ करिदेतौ पित्तकोअती
 सारजाय ३ अथपित्तअतीसारकोरक्तातिसारभीभेदहै जांघशीगर
 मवस्तर्षाहोयतींकोपित्तवर्धे वेंकोलौहीविगडै तदिवेंकोलौहीनैमि
 ल्योमलउतरे तदिवोंनैरक्तातिसारकहैहै अथरक्तातिसारकोज
 तनलिष्यते कुडाकीछालि दाडूकाछोडा यांदौन्यांनैदकाभरिलै
 आंकोकादौकरिकादामैदंक ५ सहतमिलायदिन ७ लैतौरक्तातिसा
 जाय १ अथवा कुडाकीछालि अतीस मोथो नेत्रबालो लौदर
 रुचंदन धावड्याकाफुल दाडूकाछोडा पाछै यांनैबराबरिलै

पाछेयानैजौकूटकरिदंक २ कौकादौकरितीमेंदंक २ सहतनांषि
 दिन ७ देतोरक्तातिसारजाय १ दाहसुलसंयुक्तनेयौद्विरकरैछै २ अथ
 वा स्तूपेदचंदनदंक १ मिहींचांदि तीमेंसहतदंक २ मिश्रीदंक २ सुदि
 न ८ चांदैतौ रक्तातिसारजाय ३ अथचा मीठीदाहमकौसुदपाक
 देसहतमिलायचांदैतौ रक्तातिसारजाय ४ अथवा बकरीकौदूध
 मांषनसहतमिश्रीयैसारमिलायषायतौ रक्तातिसारजाय बंधहो
 य ५ अथगुदापकिगईहोयतांकोजतनलिष्यते पयेलमहलो
 दी महबौ यानैओरायपाछेठंदौकरिवेपाणीसंधोवैतौ गुदाकौपा
 कआछोहोय १ अथवा बकरीकादूधमेंसहतमिश्रीमिलायबेसुं
 धोवैतौ गुदाकौपाकआछोहोय २ अथवा गोंहाकाचूनमेंघृतमि
 लायपाणीसुंओसणिवेसुं सहावतौसुहावतौसेकैतौ गुदाकौपाक
 आछोहोय ३ अथकफातीसारकालक्षणलिष्यतेजोंकैमल
 चौकणो अरसुपेद अरजाडो अरदुर्गंधिनैलीयां अरसीतल अर
 थोडीपीडानैलीयांजाय अरसरिरभासोरहै येजीमेलक्षणहोवतौ
 नैलेधातिसारकहजै १ अथश्लेष्माधितिसारकोजतनलिष्यते
 कफातिसारबालानै दौयचारिलघनकराजै कैसूगांकोथोडोपथ्य-
 दीजै पाछेयौकादौदीजै चव्य अतीसकूट बीलकीगिर सुंदि कुड़ा
 कीछाल तजयानैजौकूटकरिदंक २ कौकादौदिन ७ देतौश्लेष्माधिति
 सारजाय १ अथवा सेकीहीग संचरलुण सुंदि कालीमिरचि पीप
 लि अतीस यैबरचरिलै त्याकौचूर्णकरिदंक १ दिन ७ लेतौश्ले
 ष्मातिसारजाय २ अथसन्निपातका अतीसारकोलक्षणलि
 ष्यतेजोंकौसुरकामांसिरकोमलहोय अरजांमलमेंअनैकरूप
 सोदीयै अरवैपुरषकैनेत्रामेंद्राहोय तिसहोय मुषसोसहोय भ

महोय मोह होय अरयो बालक के बृद्ध के स्त्री के होय तो असाध्य जाणि
 जै १ अथ ईकांजतन लिख्यते पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सुंठि
 भरेंटी बीलकागिरि गिलवै मोथो पाठ चिरायतो कूडा कीछालि इंद
 जब यांनैजो कूट करि टंक २ कौकरी कोरि दिन १० देतो सन्निपात को अ
 तीसार दूरि होय १ अथ वा जांगी हरडै सुंठि मोथो ये बरा बरिलै त्यां
 नैमिहां वांदि पुराणा गुरमें टंक २ दिन ७ पायतो त्रिदोष को अतीसार
 दूरि होय १ अथ वा कूडा कीछालिलै ती कौ पुटपाक करि रस काटे
 पाछे बेरस में सहत मिलावै टंक ५ पाछे दिन १० लेतो सन्निपात को
 अतीसार जाय २ अथ सोच का अतीसार को लक्षण लिख्यते जीं
 पुरष के पुत्र मित्र स्त्री धन यां काना सका सोच सुं उदर को अग्नि है सो
 मंद होय सरीर को वाहिर लौ तेज है सो उदर में जाय पाछे रक्त नै विगा
 डै छै पाछे ओर रक्त विष्टा सुं मिलि अथ वा नहीं मिल्यो औही रुदा के
 द्वार नीकलै चिरमी सिरा को ती नै सो कातिसार कहै जै औ दोहरौ जाय
 औ सोच दूरि दुवा जाय अरई सीत रें हा कहां त रें का भय सुं भा उपज्यो
 सौ भयाति सार भी जांणि लीज्यो अथ सो कातिसार अर भयाति सा
 र कौ जतन लिख्यते ओवाय का अतिसार को जतन छै सो ही जांणि ली
 ज्यो अथ आमातिसार को लक्षण लिख्यते जीं पुरष के प्रथम भो
 जन को अजीर्ण होय पाछे ओगरिष्ट वस्तु पाय त दिवें के वाय पित्त क
 फ है सो कौठ में जाय धात का सुहनें अरमल नै विगाडै अरवें मल नै
 सुल संयुक्त दुर्गंधि नै लीयां जीमें अने कवर्ण ई सामल नै रुदा द्वार काटे
 ती नै वैद्य आमातिसार कहै छै अरमल है सो जल में तिरे आंब है सो
 जल में डुबि जाय अर आंब दुर्गंधि नै लीयां अर सुपेदा ई नै लीयां अ
 र चिकटाई नै लीयां होय छै यो ई को लक्षण छै १ अथ आमातिसा

रकोजतनलिप्यते धरौ सुदि वीलकीगिरि नागरमोथो नेत्रबलो
 यांनेबराबरिले त्यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकादौकरिदिन ७ देतौ
 रोगमाफिकदिन १० तथा १५ देतौ आमातिसारने सुलनेयौदूरिकरे
 छै योधणापंचकछै १ अथवा जांगीहरडै मौथो सुदि अतीस दा
 रुहलद येबराबरिले त्यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकादौदिन ७ देतौ
 आमातिसारदूरिहोय २ अथवा जांगीहरडै अतीस सेकीहांग सं
 चरलुणा सांधोलुणा यांनेबराबरिले त्यांनैमिहापीसिदंक २ गर
 मपाणीसंलेंतौ आमातिसारदूरिहोय ३ अथपक्कातिसारकोज
 तनलिप्यते लोद धावड्याकाफुल वीलकीगिरि मौथो आंबकीगुं
 ठलि इंदजव येबराबरिले त्यांनैमिहापीसिदंक २ भैंसकीछाछिमें
 लेंतौ पक्कातिसारदूरिहोय ४ अथवा अजमोद मौचरससुदि धा
 वड्याकाफुल जामुणिकीगुदली आंबकीगुदली यांनेबराबरिले
 त्यांनैमिहापीसिदंक २ गडकीछाछिमेंलेंतौ पक्कातिसारजाय यो
 लघुगंगाधरचूर्णछै ५ अथसोजातीसारकोजतनलिप्यते
 सादीकीजड इंदजव पाट वायविडंग अतीस नागरमोथो काली
 मिरचि यांनेबराबरिले त्यांनैजौकूटकरिदंक २ कौकादौकरिदिन
 ७ देतौसोजातिसारजाय १ अथअतीसारमेंछादणीहोयतीं
 कोजतनलिप्यते आंबकीगुदली वीलकीगिरि येदोन्युंदंक २
 लेंतौ त्यांकौकादौकरि काढामेंसहतदंक २ मिश्रीदंक २ मिलायदि
 न ७ लेंतौ अतीसारछर्दिसमेंतदूरिहोय १ अथवा सेक्यामुंग
 चाबलांकीपील यांदोन्योनेओटायतीमेंसहतमिश्रिमिलाय दि
 न ५ पीवेंतौ छर्दि अतीसार दाहज्वरदूरिहोय १ अथअतीसार
 कोभेदमोडांनिवाहीछैतीकीलसंललिप्यते कुपथ्यकाकरि

वावालेजो पूरसतीकै वायवध्यौथकोकफसुंमिलिमौडानिवाहीनैक
 रैछे वागौडानिवाहीपुरुषकै स्यायतमेंमौडौराचाले थौडौ अथवा
 घणौमलनेंउदाहाराकाठेछे तीनैमौडानिवाहीकाहजे सोमौडानिवा
 हीन्याप्रकारकीछे वायकी१पित्तकी२कफकी३औहाकी४जांमें
 पीडाघणीचालेमलउतरै तीनैवायकीकाहजे जांमेंदाहघणीहोय
 तीनैपित्तकीकाहजे जांमेंकफसुंमित्योमलजाय तीनैकफकीकाहजे
 अथआंन्यारुहीकाजतनलिष्यते बीलकीगिरि लौद कालीमिरि
 बैतासुं पईसापईसाभरिले पाछेयानेमिहीवांटिदंक१ सहतमेंचा
 रैतौ मौडानिवाहीदूरिहोय१ अथवा धावऊकाफुलटंक२ यांने
 मिहीवांटिदहांकैसातदिन ७ पायतौमौडानिवाहीजाय २ अथवा
 कैथकोरसदंक ५ सहतकैसाथिदिन ७ पायतौ मौडानिवाहीजाय
 ३ अथवा लौददंक२ दहांकैसाथिदिन ७ पायतौ मौडानिवाहीजाय
 ४ येसाराहीलसुणअरजतनभावप्रकासमेंफट्याछे अथआ
 मातिसारकाअौरजतनलिष्यते हरडेकीछालि मिहांवांटिदंक२
 सहतसूदिन ५ पायतौ आमातिसारदूरिहोय१ अथवा भांगराकौर
 सदंक ५ दहांकैसाथिदिन ७ पायतौ सर्वप्रकारकाअतीसारानेंदुरिक
 रे २ अथवा रालदंक२ मिअदंक१० मिलायईतौलदिन १० लैतौघ
 णादिनाकौभीअतीसारजाय ३ अथवा बीलकीगिरिदंक२ बकरी
 कादूधकैसाथिदिन ७ पीवैतौरक्तातिसारजाय ४ येवैद्यविनोदमें
 लिप्योछे ५ अथवा धणौंसुंरि पीपलि सांधौलूण अजमोदसै
 कीहांग जीरो यांनेबराबरिले यांनेमिहीवांटि दहांकामठामें दंक२
 लैतौ साराअतिसार सुल आमदूरिहोय भुषलागैरुचिहोय योवृंदमें
 लिप्योछे ६ अथवा सुंरिनैजलसुंमिहांपीसवैकोगोलौकारि गौला

नैऋतकापाणासुंलपैरुत्कृतवांधि पाछैवैरुपरैमाटीलपैरै सुधरी
 अंचसंपकावै पाछैमाटीउगैरैसबदूरिकरिसुंठिकाटिलै पाछैवैने
 तंदीकरिदंक २ सहतसुंदिन ७ धायतौआमअतिसारजाय ८ अ
 थवा येकभाग अफीमदौयभाग हांगलुतीनभाग लवंगचारिभाग
 मौचरसतीनभाग मिश्रीयांनैमिहीवांटरती १ तथा २ साव्याचांव
 लांकापाणीमें अथवा छाछिकैसाथिलैतौभयंकरमीअतीसारजा
 य ९ अथवा नागरमौथौ मौचरस लौद धावड्याकाफुल बीलकीगि
 रि इंद्रजब अफीम सौधौपारौ सोधौगंधक यांनैबराबरिलै प्रथ
 मपारागंधकीषरलमेंकाजलीकरै पाछैयैसारीऔषदिमिहांवां
 टिवेंकाजलीमेंमिलावै पाछैईनैरती ३ छाछिसुंदिन १० लैतौ अती
 सारनै मौडानिवाहीनै संग्रहणनै साराहीनैयौगंगाधररसदूरिकरै
 छै १० अथवा सुंठि जायफल अफीम कचीदाडमकागुला येसारा
 बराबरिलै पाछैसरबतयेकटाकरिकाचीदाडुमेंभरै पाछैवैकौपुट
 पाककरिपाछैवैकीगौलीचिरमीप्रमाणबांधै पाछैगौली १ गऊ
 कीछाछिसुंदिन ७ देतौपक्कातिसारनैदूरिकरै ११ अथवा अमल
 नैवीकरामेंमूधरीआंचसुंसेकिलैपाछैअनुमानमाफिकदेतौ अती
 सारनिश्चैदुरिहोय १२ अथवा जायफल लवंग धावड्याकाफुल
 बीलकीगिरि नागरमौथौ सुंठि मौचरस हांगलु अमल येसारीऔ
 षदिबराबरिलै यांनैनियटमिहांवांटा अंतराकापाणीसुं रती १ त
 था २ कीगौलीबांधै गौली १ चांवलांकापाणीसुं अथवाछाछिसुंदि
 न ७ लैतौ निश्चैसरबअतीसारजाय १३ अथवा जायफल उवा
 रौ अफीम येतीन्युंबराबरिलै त्यांनैपानाकारसमेंरती १ प्रमाणकी
 गौलीबांधै पाछैगौली १ छाछिसुंदिन ७ देतौभयंकरमीअतीसारदु

रिहोय १४ अथ जीकै अतीसार होय सौ अतनी वस्तु करै नही न
 यो अन्न गरम वस्तु भाख्यो चौकणो भोजन तावडो घेद मैथून सनान
 चिन्ता ये अतीसार वालो करै नही यै वैद्य विनोद मै लिख्यो छे १५ अथ
 अतीसार को असाध्य लक्षण लिख्यते सरका मांस सिरकी मल हो
 य अरति स दाह अरुचि सास हिचकी पसवाडामें सुल मूर्छा अर
 को ईवात में मन लागै नही ये जीमें लक्षण अरगुदा पकि जाय अग्नि-
 जीकी जातोर है तिस जीनें घणालागे अरज्वर भार है अरमुच बंध हो
 य अरसरीर को बल जातोर है ये जी अतीसार में लक्षण होय सौ पुरुष
 मरि जाय अथ अतीसार जीको जातोर न्ह्यो होय तीको लक्षण लि
 ख्यते जीकें जंगल विनां मृत उत्तरै अरगुदा को पवन आछीतर हसुं
 चलै अर आछी भुषलागे अरको सोहल को हुबो होय ये जीमें लक्ष
 ण होय तीको अतीसार को रोग दुग्धि बोजा एजे इति अतीसार
 रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् १ ७ अथ सं
 ग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते अथ संग्रहणी
 को उत्पत्ति लिख्यते प्रथम मनुष्य को अतीसार होय करि औ अती
 सार तो जातोर है पाछे ओ मनुष्य कूपथ्य करै तदि अग्नि मंद होय
 सौ अग्नि मंद हुइथकी पूरष काउ दरमै रहती जी छठी कला जीकी
 नाम ग्रहणी छे बालका अग्निको स्थान छे अन्नादिक जोषाइ जे छे
 तीने वाय ग्रहण करै छे सो वांमंदा भिवे कलाने विगाडै छे सो वाकला
 विगडीथकी काचा अन्न ने तो ग्रहण करै छे अस्पाका अन्न ने उदा
 हार काटे छे ईवास्ति वैद्य है सोई रोग को नाम संग्रहणी कह्यो ईग्रह
 णी कला के अग्नि ही को बत छे सो वाकला अग्नि ने दुष्ट करै छे अथ सं
 ग्रहणी रोग कालक्षण लिख्यते प्रथम संग्रहणी चारि ४ प्रकार की

छे येकतौवायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ येबायपित्त
 कफहैसोघणावध्याथकाकुपथ्यसू वायहणीकलाघणोषाय पणि
 काचाहीअन्ननेंशुदाहाराकाटैहै अथवा पक्षाअन्ननेंकाटैतौभीषी
 उचालिकाटैमलनें कदेकतौबंधोमलजाय अरकदेकपतलोही
 जाय योईसंग्रहणीरोगकोलक्षणछे अरअतीसारसंग्रहणीमेंयोभे
 दहै अतीसारवालोतौपतलोमलजाय अरसंग्रहणीवालोबंधोम
 लपीडानेंलीयांजाय १ अथवायकीसंग्रहणीकाउत्पत्तिसमे
 तलक्षणलिख्यते जोपुरुषवायलवस्तकोघणोसेवनकरै अरभि
 श्याविहारमैथुनादिकघणाकरै तींपुरुषकैवायकुपित्तहुबोथकोजठ
 राभिनेंविगडिवायकीसंग्रहणीनेंकरैहै तींपुरुषकैअन्नषायोदो
 हरोपचै अरवेंकोकंठसूके भूषलागै तिसलागै कानांमेंशब्दहोय
 अरपसवाडामेंजंघामें पैडूमेंकाधामेंपीडाहोय अरकदेकविसू
 चिकाभीहोय हियोदूबै सरीरदूबलोहोय जीभकोस्वहजातोरहै
 मीठाउगेरैसारारसांकाषावांकाकीइछारहै अरभोजनकस्योहो
 यसोर्पाचजाय तदिआफरोहोय अरभोजनकरैतदजीबचैनपावै
 अरपेटमेंगोलांकी फीयाकीआसंकारहै अरमोडोदुषनैलीयां
 थोडोसोझागंसमेतिपवनसरतोथकोबारबार मेंजंगलजाय अ
 र्ज्वाकैसासषासभीहोय येजीमेंलक्षणहोयतीनेंवायकीसंग्रह
 णीकहिजे १ अथवायकीसंग्रहणीकोजतनलिख्यते सूंढि
 गिलवै नागरमोथौ अतीस यांनेबराबारले पाछैयांनेंजो कूट
 करितंक २॥ कौकाटोदिन १५ देतौ आंबसमेतिवायकीसंग्रह
 णीजाय अरभूषवधै १ अथवागउछाछि तींयेंसूंढि पीपलामू
 ल पीपलि चित्रक चय येसारीबराबारदे तींकोचूर्णकरितंक २॥

रोजीनां छाछिमें मिलाय धापिबे छाछिही को धूवसेवनकरैतौ वाय कीसं
ग्रहणीसुकरजाय २ अथवा सोध्योगंधकरटक २॥ पारोटंक १ यांदोण्यां
कीकजलीकरै पाछैसुं हियासा १० भिरचिकालीटक २॥ पीपलिमासा १०
पांचूल्णमासा १० सेकीअजमोटंक ५ सेकीजीरोटक ५ सेकीहांगटंक
क ५ सेकीसुहागोटंक ५ सेकीभांगपईसा ४ भर यांसारानैमिहीपीं
सि पारागंधककीकजलीमें मिलाय पाछैईनेदिन २ भरलकरै तदि
योलाईचूर्णहोय पाछैईनेमासा २ तथा ४ गऊकीछाछिमेंदेतौ वाय
कीसंग्रहणीनेदूरिकरै अरमंदाभिनें अतीसारनें बवासीरनें पेट
काकुमीनें क्षर्दोगनें यांरोगानें योलाईचूर्णदूरिकरैछै ३ अथपि
त्तकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिअरलक्ष्णालिष्यते जोपुरषगरमव
स्तप्रतकालीउगेरै तीषीवस्त षाटीवस्त बारिवस्त घणीषाय तीकै
पित्तदुष्टहोय पाछैओदुष्टपित्तहैसौ अठराभिनेंखुंझायदेछै तदिबेकै
कच्चाहीमलनेंकाटे नीलो पीलोपतलापणानेंलीयां अरबेनैषाटी
उकारआवैहियामेंकरमेंदाहहोय अरुचिहोय निसलागे येजीमेंल
क्षणहोय तीनें पित्तकीसंग्रहणीजाएजे १ अथपित्तकीसंग्रह-
णीकोजतनलिष्यते रसोत अतीस इंदजव तज धावड्याकाफू
ल येसारीबराबरिले आंकोमिहांचूर्णकरटक २॥ गऊकीछाछिसूं
अथवासहतसूं अथवा चांवलांकापाणीसूदिन १५ लेतौ पित्तकी
संग्रहणीजाय १ अथवा जायफल चित्रक सुपेदचंदन वायविडंग
इलायची भीमसेनीकपुर वंसलोचन जीरो सुंठि कालीभिरचि
पीपलि तगर पत्रज लवंग येसारीऔषदिबराबरिले पाछैयानें
मिहीपीसि यांसूदूणीमिथ्रीमिलावै अरसारी औषद्याबराबर मि
थ्रीयिनासेकीभांगईमेंमिलावै पाछैयांसारानैमिहांपीसि मासा ४

तथा ६ गऊकीछाछिकैसाथिदिन १५ लेतौ पित्तकीसंग्रहणीजाय २ येवै
घरहस्यमेंलिखोछै अथकफकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिलक्षणलिख्य
ते भारिवस्त अतिचीकणीवस्त सीतलवस्त जोषाय अरभीजनकरिकै
सोयजाय तीं पुरसकै कफको कोपहोय तदिवै को अन्न दोहरोपवै अर
हियोदूषै अरवैकै छर्दिहोय अरोचकहोय मुषमीठोरहै षासीहोय पी
नसहोय पेटभास्वोरहै मीठीडकारआवै स्त्रीप्यारीलागै नही आमसुं
भिल्योमल्लजाय बलविनासरीरपुष्टदीषै आलसघणोआवै येजीमें
लक्षणहोय तीनैकफकीसंग्रहणीकहिजे १ अथकफकीसंग्रहणी
काजतनलिष्यते हरडैकीछालि पीपलि सूंदि चित्रक संचरलूण का
लीभिरचि यांनैबरिबरिले यांकोमिहीचूर्णकरिदं २॥ रोजीनां छाछि
सूंदिन १५ लेतौ कफकीसंग्रहणीजाय १ अथसंनिपातकीसंग्र
हणीकोलक्षणलिष्यते जीमेंबायपित्तकफकासाराहीलक्षणमि
लै तीनैसंनिपातकीसंग्रहणीकहिजे १ अथसंनिपातकीसंग्र
हणीकोजतनलिष्यते बालकीगिरि मौंचरस नेत्रवालो नागरमो
थी इंद्रजव कुडाकीछालि यांनैबरिबरिले त्यांनैमिहीपीसि पाछेंदं
क २॥ बकरीकादूधमेंदिन २५ लेतौ संनिपातकीसंग्रहणीजाय १
अथवा अनारदाणाटका ८ भर संचरलूणटका १॥ भर जीरोटका १॥
भर धणोपर्ईसा २५ भर सूंठिटका १॥ भर कालीपिरचिटका १॥ भर
मिश्रीटका ८ भर यांसारानैमिहीवांटिदं २॥ गऊकीछाछिमैम
हीनो १ लेतौ संनिपातकीसंग्रहणीजाय अरआमातिसार पस
वाडाकीपीठ अरुचि गोलाकोआजार येसारादूरिहोय २ अथवा
पारोसोध्यो गंधक सोध्योसींगि सुहरो सुंठि कालीभिरचि पीपलि
सेक्योसुहागो सारअजमोद अमल येसारीबराबरिले अरयांसा

रांकीबराबरकी अभ्रकले पाछेयासारांनेचित्रककाकाटाकारसमैदि
 न १ षरलकरै पाछेकालीभिरचिप्रमाणगोलीबांधै गोली १ रोजीनांम
 हिनां १ ताईषायतौ सन्निपातकीसंग्रहणीजाय ३ योअभ्रकगुटिका
 छै अथवा सोधीगंधक चारो अभ्रक हांगलूसार जायफल बील
 कीभारि मोचरस सोधोसींगीमुहरो अतीस सूंठि कालीभिरचि पी
 पलि धावज्याकाफूल घृतमेंसेकीहरडैकीछाल कैथ अजमोद चि
 त्रक अनारदाणां इंद्रजव धतूराकाबीज कृणगच अफीमयेसारीब
 राबरिले अथमपारागंधककाकजलीकरै पाछेईकजलीमें येओष
 दिभिहीवांदिमिलावे पाछेईद्विगोलीभिरचिप्रमाणबांधै छोटारंका
 रसमेंयोग्रहणीकपाटरसछै ईकागोली १ देतौ सन्निपातकीसंग्रह
 णीनै सूलने अतीसारहिं विसृचिकनै यांसारांरोगांनै योदूतिकरैदिन
 १५ सेवनकस्त्रां येवैद्यविनोदमैलिथोछै ४ अथत्रिदोसकीसंग्र
 हणीकोभेद आमचातकीसंग्रहणीतीकोलक्षणलिख्यते पत
 लोसुपेद चीकरणोमलजाय कटिमैपीडाचालै आंबनैलीयोमलउ
 तरे वाचघणोहोय पीडघणीहोय कदेआछोदीषे पाछेपं द्रवैदि
 नमहीनामेंफेरिहोयआवे अथवा रोजीनाहियोरोगरहै आंतबोल
 बोकरै आलसआबोकरै सरीरदूबलोहोजाय घेटमेंपीडरहबोकरै
 दिननैरहै रातिनै आछोहोय येजामेंलक्षणहोय तीनैआमचात
 कीसंग्रहणीकहिजे याभीअसाध्यहोछै ईकोजतनअरसन्निपातकी
 संग्रहणीकोजतनयेकहोछै अथसंग्रहणीकोभेदघटीयंत्रछैतीं
 कालक्षणलिख्यते सरीरसूनोरहै पसकाडामेंसूलचालै पेटबो
 लबोकरै अरसंग्रहणीकालक्षणछै सोहोय ईनैघटीयंत्रकहिजेया
 भीअसाध्यछै औरअतीसारकाअसाध्यलक्षणपाछैलिथोछै सो

ईसंग्रहणीकावेहीजाणिलीज्यो अरअतीसमकाअच्छाआछाज
तनपाछैलिथाछैसोईकापीवेहीजाणिलीज्यो अथसंग्रहणीकाओ
रविसेसजतनलिथ्यते कैथकाभाग ८ मिश्री ६ भाग अजमोद ३
भाग पीपलि ३ भाग बीलकीगिरि ३ भाग धावड्याकाफूल ३ भाग
दड़ूंकारुलांका ३ भाग डांसलांका ३ भाग संचरल्लण १ भाग नाग
केसरि १ भाग धणों १ भाग तज १ भाग पत्रज १ भाग मिरचि १ भाग ना
गकेसरि १ भाग अजवायण १ भाग पीपलामूल १ भाग नेत्रबालो १
भाग इलायची १ भाग यांसारांनैमिहीवांटिगडकीछाछिमैंदंक २॥
लेतौसंग्रहणीनै अतिसारनै गोलांनै यांसारांनै योकपित्याष्टकचू
र्णदूरिकरैछै अथसंग्रहणीरोगवालोइतनीवस्तपायनहींसो
लिथ्यते भारीवस्त आवनहींकरैइसीवस्त भूषबंधकरैइसीवस्त
औरअतीसारमैंवरजोछै वस्तसोनहींकरै अरज्यांवस्तांसंभूषवधै
सोषायतौसंग्रहणीजाय इतिसंग्रहणीरोगकीउत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूर्णम् १ अथववासीररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतन
लिथ्यते अथववासीरकीउत्पत्तिलिथ्यते मनुष्यकैगुदहैसो
संषकीमांहिलीनयिकीतरंहसादाचारिआंगुलिकातांनआंटा
छै येकउपरलोआंटो १ येकबीचरलोआंटो २ येकबेंकनीचलोआं
टो ३ उपलाआंटाकोनाम प्रवाहिनी सोतोमलपवनउगैरैवारैका
टै बीचरलोआंटोमलपवनउगैरैनेछुदायदेसारो तीसरोनीचर
लोआंटो बांछोड्यापछैगुदनेज्यूंकीज्यूंढकिदे यांतीन्यांआंटांमै
वक्लीपेदाहोयछै सोववासीरकोस्थानछै पहलांआंटांमैववासीरहो
यसोतोसाध्य बीचरलामैंहोयसोकष्टसाध्य अरमांहिलांमैंहोय
सोअसाध्य सोवाववासीररोग ६ प्रकारकोछै येकतोदायकी १

पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ स्नेहाकी ५ येकसरीरकी लार
 हीउपजैजीकी ६ अरवायलवस्त अथवा गरमवस्त अथवा कफ
 कापीचीकलीभिष्टावस्त जोपुरषवेघणीषाय अरवायपित्तकफनै
 करवावाला मिथ्याअहारकरै मिथ्याविहारकरै त्यांदोन्यांमिथ्यां आ
 हारअरमिथ्याविहारकरिकै कोपकुं प्राप्तहुवोजोवायपित्तकफदो
 स सोगुदाकीतीन्युंआंवल्याउपरि त्वचा अरमांस अरमेद यानै-
 विगाडैनानाप्रकारकामांसकाअंकूरानै मस्साकाआकारकरिगुदा
 कैउपरिकरैछै तीनैवैद्यहैसोववासीरकहैछै सोछप्रकारकीईने
 लौकिकमेंदोयप्रकारकाकहैछै येकतोषूनां १ अर १ वादी पूनीतो
 जीमैघणोलोहोजाय १ अरवादी जीमैलोहोजायनहीं अरपीडचि
 मचिमौ अरषुजालउगेरैजीमेंहोय येदोन्युंवांछचांहींकाभेदछै
 अथसारीववासीरांकोपूर्वरूपलिख्यते अन्नकोपरिपाक आ
 लीतरह होयनहीं अन्नकूषिमैंहीरहैबंधकोष्टहोय अरअग्निमं
 दहोजाय उकारघणीआवै सरीररुसहोजाय कूषिमैंआफरोहो
 य अंगामैंपीडरहै येजीमैंलक्षणहोयनहिजाणिजै ईपुरसकैवावा
 सीरहोसी अथवायकीववासीरकोलक्षणलिख्यते जीकीशु
 दाकामस्साहैसो सूकाअरचिमचिमौनैलीयांहोय अरकालाल
 लाईनैलीयां अरषरधरा अरकरीर अरवांका तीषा फूटामूटा
 का इसागुदाउपरिमस्साहोय अरछोटावोरसरीसा कपास्यासरी
 सा अथवासरस्यूसरीसा अथवा कदंबकाफूलरिससामस्साहोय
 अरजीकैमथवायहोय अरपसवाडामेंकांधामैं कटीमें जंघामैं पेड
 में यामैंघणीव्यथाहोय अरछीक अरउकारआवैनहीं हियोदूषै
 भूषलागेनहीं पास सास अग्निमंद कर्णमैंशब्द भ्रमयेभीहोय गो

६५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ३

लोफायो उदरकोरोग येभीहोय येजीमैलक्षणहोय तदिवायकीव
वासीरजाणिजै अथवायकीववासीरकोजतनलिंथितैजीमीकं
दनें मांरीसूलपेटि भाडमेंबूब भडीतोकरि तैलसूं अथवाघृतसूं
लपेटिटकायेकभरिरोजीनांदिन ३१ पायतो वायकीववासीरमुकर
हूरिहोय योभावप्रकासमेंहै १ अथवा आककानवांपानांमें पंचू
लूण अनुमानमाफिकलगाय तेलअरषटाई औरलगाय बांपा
नानैदधकरि बांकीराबकरै पाछैबाराषटकसवा १ तथाटक २॥
गरमपाणीसूंदिन १५ लेतौ वायकीववासीरजाय २ योवैधविनो
दमेंलिथोहै अथवा गऊकीछाछिमें सींधोलूण अनुमानमाफि
कयालि ईछाछिकोआछीतरेंसूंघणादिनतांईसेवनकरतौ वाय
कीववासीरजाय अरसरघणोजाडोरहै योभावप्रकासमेंलिथो
है ३ अथवा हरडेकीछालिटका ५॥ भर फालीमिरचिटका १॥ भ
र पीपलामूलटका १॥ भर पीपलीरटका १॥ भर जीरोटका १॥ भर च
वटका १॥ भर चित्रकटका १॥ सूंठिटका १॥ भर सोध्याभिलाचारका
५॥ भर पकायोजिमीकंदपाव १॥ जवधारटका १॥ भर पाछैयांसा
रानैमिहीवांदि यांसारंसूंढुणोगुडले पाछैयांमैमिलायगोली
टका १॥ भरकीबांधैगोली १ रोजीनांपायतौ वायकीववासीर
निश्चैजाय योकांकायनमुनिगुडकत्योहै ४ अथवा वनालका
पानानैऔराय तांकापाणीसूंसौचलेतौ ववासीरकामस्साहूरि
होय अथवा वनालकाडोडांकीधूणीदेतौ ववासीरकामस्साहू
रिहोय ५ अथवा अरवनालकाडोडांकांजीमेंपीसिववासीर
कैलेपकरेतौमस्साहूरिहोय ६ अथवा नींबकापान अरकनी
कापान गुड कडवीतुंबीकीजड यांनैकांजीकापाणीमेंवांदिम

म्साकैलेपकरैतौमस्सादूरिहोय ७ अथवा हलद कडवीतोरईकीज
 ड आककापान सहजणकीजड यानैकांजीकापाणीसूंमहापासी
 ईनैमस्साकैलेपकरैतौमस्साझडिपडै ८ अथवा अरुंडकीजड मह
 लोरी रास्सा अजवायण महुबो यानैकांजीमेंवांरिगरमकरिलेपकरै
 अथवा ईसूंसेककरै मस्साकैतौ मस्साकीचिमचिमीजाय अर
 मस्साझडिपडै ९ येजतनवैद्यरहस्यवैद्यविनोदमेंछै अथवा ही
 कसीस सींधोलूण पीपलि सूंठि कूठ कलहारीजडीकीजड पाषाण
 भेद कनोरकीजड रायबिडंग दायूंणी चित्रक हरताल चौष यानै
 बराबरिले त्यानैवांरि यांसूंतीगुणोतेलले अरथोहरिकोअरआक
 कोइध अरगोमूत येतीन्यूंऔषधांसूं अरतेलसूं चौगुणाले अरयां
 नैसामिलकरीपचावै अरवेबलिजाय अरतेलआयरहैतदितेल
 उतारिले पाछैईतेलकोमस्साकैमर्दनकरैतौ मस्सादूरिहोयववासी
 रजाय आंवलीइधैनहीं योक्षारतेलवैद्यरहस्यमेंलिख्योछै १० अ
 थवा पकायोजिमीकंदभागसोला १६ चित्रकभाग ८ सूंठिभाग ८
 कालीमिरचिभाग ४ त्रिफलाभाग २ पीपलामूलभाग ८ सोध्यामित्त
 वाभाग ८ इलायचीभाग ४ वायबिडंगभाग ८ सतावरीभाग ८ भदा
 यरोभाग १६ भांगिभाग ८ पाछैयांसास्यानैमिहीवांरि पाछैयांसारं
 औषधांसुंदूणोगुडले तींकीदं ५ प्रमाणगोलीबांधैपाछैगोली १
 रोजीनांमहीनां १ तांईषायतौ वावासीरनैहिचकीनै सासनै पासुमें
 राजरोगनै प्रमेहनै पायानै यांसारारोगनै यह्यहतसूरणमोदक
 छैसोदूरिकरैछै ११ योवैद्यरहस्यमेंछै अथपित्तकीबवासीरकां
 लक्षणलिख्यते मस्साकानीलामोंटाहोयअरलाल पीला सुपेदा
 ईलीप्यांमस्साहोय अरवांमस्सामेंमिहींधारलियां गरमगरमलोही

६७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ३

जाय अरुमिहींकोमलमस्साहोय अरुजोकसरीसामूँदाहोय अरु
 सरीरमेंदहहोय अरुसुरभीरहैं अरुपसेवआवै अरुघणीतिसहो
 य मूर्छाहोय अप्रीतिहोय अरुवेंकोमलनीलोपीलोलालहोय अरु
 त्वचानषनेत्रजाँकापीलाहोय येजाँमेंलक्षणहोय तीकैंपित्तकीव
 वासीरजाणिजे १ अथलोहीकीववासीरकोलक्षणलिख्यते
 गुदाकामस्साचिरमीकारंगसिरकाहोय अरुवांमस्सामेंलोहीकीधा
 र गरमघणीवहोतपडै अरुवेंकोमलगालोदोहरोउतरे अरुलोही
 काघणाजावासूँवेकोसरीरमीडकाकावर्णसिरकोहोय अरुवेंकोब
 लवर्णउत्साहपराक्रमयेसाराहीजातरहै सरीरलूषोहोजाय गुदको
 पवनआछीतरेंचलैनहीं अरुमस्सामेंलोहीजातांजागहोयआवै अरु
 कटिमेंजंघामें गुदामेंपीडहोयआवै अरुसरीरदूबलोहोयतौलो
 हीकीववासीरमेंवायकोभीमिलायजाणिजे अरुवेंकोमलसुपेदची
 कणोभास्योठंदोहोय अरुमस्साकालोहीकीधारजाडीतांतिनेलीयां
 होय अरुजीकीगुदाकैकफंसोलाग्योहीकरै तौववासीरमेंकफका
 संबंधनैलीयांलोहीकीजाणिजे अथववासीरकोलोहीजावैजाँ
 काशंभिवाकीओषदिलिख्यते बडवोरकापांनपईसा ४ भर सू
 काआंवलापईसा ४ भरले पाछैगायकोमांषनपावडाले तनिंलो
 हकीकडाहीमैषूवतआवै ओघृतषूवतपिजाय तदियांदोन्यांच
 स्तानेंईघृतमैनांष पाछैयेतान्यूंहीबलिजाय तबउतारिडंढीकरि
 धातकावासणमेंघालणीपाछैयांसारंगनैषरलमेंघालिमिहीयांदि
 यांकोयेकजीवकरणो पाछैववासीरवालारोगीनेमासा ४ दिन २१
 प्रभातदेपाछैपाणीकाकुरलाकरै कुरलांकोपाणीपीवैनहीं अरु
 गरमवस्त वाजरो करेलाप्रतकाली पेडा अथाणूं वैगणकैरउडद

उगैरे पायनहीं तौ बवासीरको लोही थंभे १ अथ बवासीर कालो
 ही थंभे वाको दूसरो जतन लिष्यते निबोली की मांगी अरये लवो
 ये दोन्यूं बराबरिले त्यां नैं षरल में पाणी सूं मिही बां टिरती १ प्रमाण गो
 ली बांधे गोली १ ये कर सोत का पाणी सूं प्रभात रोजी नां दिन ११ ले तो
 बवासीरको लोही निथें थंभे २ अथ बवासीर काम सांडूरि दुवा
 की औषद लिष्यते रसोत चाणियां कपूर निबोली की मांगी यां
 तान्या नैं पाणी सूं मिही बां टिर बवासीर काम सांडूरि के ले पकरै तो यस्सा मु
 रदार होय पाछे नीला थूथा को ले पकरै तो बवासीर काम सांडूरि
 होय ३ अथ पित्त की बवासीर अरलोही की बवासीर यां दोन्यां
 बवासीरको जतन ये कही छै सो लिष्यते रसोत नैं मिही बां टिरं क
 २॥ पाणी में घडी ४ भेद पाछे वैं पाणी नैं छाणिई तोल महीना २ ले तो
 पित्त की अरलोही की बवासीर मुकर जाय १ अथ वा पीपली की ला
 ष हलद महलोडी मजोठ कमलगट्टा की मांगी ये बराबरिले यां नैं
 मिही बां टिरो जी नां टंक २॥ दिन ४९ ले तो ये दोन्यूं बवासीर जाय ५
 अथ वा नाग के सरि मांषन मिथ्रियेटं क ५ रोजी नां दिन ४९ ले तो ये
 दोन्यूं बवासीर जाय ६ अथ वा कुश की छालिटका १०० भर तीन वां
 दिसो ले १६ सेर पाणी में औं रावै पाछे वैं को आठ वों हि सोर है तदि वे
 नैं उतारि रस छाणिले पाछे वैं रस में नागर मोथोटका १॥ भर सूं ठिठ
 का १॥ भर काली भिरचिटका १॥ भर पीपलिटका १॥ भर त्रिफलाट
 का ३॥ भर रसोतटका २॥ भर चित्रकटका २॥ भर इंदुजवटका १॥ भ
 र चवटका १॥ भर पाछे यां को मिही चूर्ण कीर गुड की चासणी में मि
 लावै यो चूरण अरई में शेर ११ सहत मिलावै सेर ६१ गऊ को घृत मि
 लावै पाछे ईनेटका १॥ भर रोजी नां पाय तो ये दोन्यूं बवासीर जाय

६९ अमृतसागरतथाप्रतापसागर तरंग ३

औरसाराहीववासीरईसूंजायछे अरअमलपित्तनेअतीसारनें पां
डुरोगनें संग्रहणीनें बीणपणानें सोजानें जुदाजुदाअनूपानसूं ईउपरि
छाछिंकासेवासूं इहकुडाकीछालिकोअवलेहहैंसोअतनोरोगानें
योदूरिकरैछे ७ अथवा वकायणकाबक्का ६ तथा ७ तथा ८ रोजीनांम
हीनांदेय २ ताईमिश्रीकैसाथिलेतो यांदोन्यांप्रकारकीववासीरजा
यं ८ अथवा गिलोयसत सोधोपारो सोधोगंधक बीजाबोल मो
चारस येबराबरिले पाछेपारागंधककीकंजलीकरै पाछेकजली
मेयेऔषदिमिलावै योबीजाबोलबद्धरसछै सोसहतसूंभासा ३
रोजीनांदिन २१ लेतौ येदोनूंववासीरजाय अतीसार प्रमेह स्त्री
कोप्रदर भगंदर येसाराईसूंजाय ९ अथवा वसंतमालतीरस
रती २ पीपलि २ तथा ४ सहतमिश्रीकासंजोगसूंदिन २५ लेतौ ये
दोनूंववासीरजाय संग्रहणीजाय १० येजतनवेधरहस्यमेंलिथ्यो
छै अथवा ववासीर करिवंधकुष्टहोयआवै अरमस्साउंचाहो
यआवै अरमस्सामेंबाजीआवै अरमस्सामेलोहीकीधारपडै त
दिवांमस्साकैजोकलगायलोहीकदायनांभैतदिवाववासीरजा
य ईंसिरषोऔरउपायछंनही योवेधरहस्यमेंलिथ्योछै ११ योपि
तकीअरलोहीकीववासीरदोनूंछै सोभूनीववासीरजाणिज्यो
अरऔरसारीववासीरवादिजाणिलीज्यो अथकफकीववासीर
कालक्षणांलिथ्यते गुदाकामस्साजाडाहोय मंदपीडाहोय ऊंचा
होय भाखाहोय कफसूंलपेट्याहोय वामेंषुजातिघणीहोयआवै
अरषुजातिघणीप्यारीलागै अरपेडूंमेंआपरोरहै गुदामेंबाजिघ
णांआवै अरबाससासभीहोय अरहियोदूवै अरुचिहोय पीनस
होय अरप्रमेह मूत्ररुद्ध मथवायसीतलागै येभीहोय अरअग्निमंद

वमन आमवातभीहोय अरकफसूलपेत्थोमलजाय अरगुदाकाम
 स्सामेंलोहीजायनहीं सरीरकोरंगपीलोहोय येजामेंलक्षणहोय तीं
 कैकफकीववासीरजाणिजे अथकफकीववासीरकोजतनलि
 ष्यते आदोटका१भर तींकोकादोदिन २१ लेतोकफकीववासीरजा
 य१ अथवा हलदकैथोहरकादूधकीपुट ७ दे वेंहलदकोमस्साके
 लेपकरैतौमस्सादूरिहोय २ अथवा त्रिफला दसमूल चित्रक नि
 सोत दांलूणी येपांचूशेर ५१ ले अरपाणीअधोए ॥ ले पाछेंईपाणी
 मेंओषदिक्कूटिनाषोदिन २१ ईमैराषे अरओषद्यांकीसाथिपाणीमें
 गुडसेर ५७ नांषे पाछेंईनैदारुकजंत्रमेंदारुकीसीनाईअरककादे
 पाछेंईनैटका११ भर रौजीनालेतौ कफकीववासीरजाय ३ योदाखूं
 णीकोअर्कछे योदंदमेंकत्थोछे अथसन्निपातकीववासीरका
 लक्षणलिष्यते वायपित्तकफकामित्यालक्षणछेसोईईकाजा
 णीलीज्यो अथसन्निपातकीववासीरकाजतनलिष्यते आदो
 टका ३१ भर कालीमिरचिटका११ भर पीपलिपाव ५१ भर चव्यटका११
 भर नागकेसरिटंक ५ पीपलामूलटका११ चित्रकटका११ इलाय
 चौदंक ५ अजमोदटका११ भर जीरोटका११ भर येसारीओषदिमि
 हीपींसिगुडटका ३०१ भर तीमेंगोलीटंक ५ प्रमाणबांधे पाछेंगोली
 १ प्रातसमेंषायपाछेंभोजनकरै पथ्यरहैतौसन्निपातकीववासी
 रनैमूत्रछूनें वायकादोगनें विसमज्वरनें पांडुरोगनें गीलानें
 फीअनें षासनै सासनै वमननै अतीसारनें हिचकीनें यांसारं
 रोगंनै जुदाजुदाअनूपानसूंदरकरैछे जैसेंजलमेंतेलनाषोंस्था
 यतेकमेंकैलिजाय तेसैंओषदिअनूपानकावससूततकालगुण
 करै याप्राणदागुटिकाछे सोसर्वसंग्रहमेंलिषीछे १ अथवा

त्रिफला सूंठि कालीमिरचि पीपलि तज पत्रज इलायची वचसेकी
 हांग पाठसाजी जवषार चारुहलद चव्य कुटकी इंद्रजव सौफ पां
 जूलूण पीपलामूल बीलकीगिरि अजमोद ये सारी बरा बरिले पा
 छैयांनैमिहीवांठि गरमपाणीसूंटंक २॥ रोजीनांछेतोसन्निपातकी
 ववासीरनें सासकारोगनें षासकारोगनें हिचकीनें षासीनें भगंदर
 नें पसवाडाकासूलनें गोलाने उदरकोरोगांनें प्रमेहनें पांडुरोगां
 नें अंत्रवृद्धिनें संग्रहणीनें विषमज्वरनें जीर्णज्वरनें उन्मादनें यांसा
 रोगांनें जुदजुदाअनूपानसूं योविजयनामचूर्णदूरकरैछै यो
 भाचप्रकासमेंलिथोछै २ अथवा सोधोपारोटका १। भर सोधीगंध
 कटका २। भर तामेश्वरटका ३। भर सारटका ३। भर सूंठिटका ३। भ
 र कालीमिरचिटका २। भर पीपलिटका २। भर सोधोसींगीमुहरो
 टका १। भर दांतूणीटका १। भर चित्रकटका २। भर बीलकीगिरिट
 का २। भर जवषारपर्ईसा ५। भर सुहागोपर्ईसा २। २५ भर सींधो
 लूणटका ५। भर गोमूत्रटका ३२। भर धोहरकोदूधटका ३२। भर यां
 सारांनैयेकठांकरिकडाहीमेंमधुरीआचसूपकायले पाछैवेकीपीं
 डीहोजाय तदिमासादोयभरत्तातापाणीसूलेतो असाध्यभीसन्नि
 पातकीववासीरजाय ३ योरसकुठाररसछै योजोगतरंगिलामेंलि
 थोछै अथशिवजीकामतकोवणायोलोहसारजींसूववां
 सीरुंउगेरैघणारोगजायछैसोलिथ्यते ववासीरकोमहाअसा
 ध्यरोगजाशिमनुष्यांकें नारदजीश्रीमहादेवजीसूबूझताहुवा सो
 मलउगेरैलगावासुंगुदाकामसादूरिहोयछै पणिवांसंसनुष्यमरि
 मरिनांठिवचैछै ईवास्तैईविनासुंगमहींकोईउपायसूंववासीरजा
 य इसोजतनबानाचोतदिश्रीमहादेवजीबहुतकरुणाकरि नारद

जीने ईसारकी वलावाकी क्रियावताई ईतरेका करिवाका सारसुं ववासी
रउगेरे घणारोग जाय सोलै बूहुं कांतिलोहले अथवा गजवेलि
कोलोहले तांकापत्रकराय वानै तेलमै छाळिमे गोमूत्रमैं काजीमैं बि
फलांमैं बारसात सप्त ७ प्रथम सोधै पाछै वानै रिताय बांबराबरिमें ए
सिल सौनमंषी ये दोन्युंले पाछै यां दोन्यां कीरे त्यालोहकैं सरावामें मे
ल्लि अग्नि पील कारससुं वां दोन्यां नै ओसणि वेंका अनुमान माफिक
रेतीलोहकैं मांहि वां दोन्यां नै घालि वेसरावानै मूंदिलुहारी कोइत्यसुं
धौणि सुं बूंधवें तदि वें दोन्युं वलिजाय वास आवासुं रहै तदि वें नै
काठिले इसी तरे वानै वालि दे वारदसेक पाछै निफलां कारससुं पा
राने वें बेरुन्यालोहकैं चरावै ओहकौ आठउभाग चरावै इही विधीसुं
वारच्यारि ओरुं भस्म करै पाछै वां सारां नै षरलमें भिहीं पीसि तदियौ
लोहपाणीमें तिरवावालो सार होजाय पाछै लोहका सरावामें वें सार
कैं विसषाप राकारसकी पुट १० वेंही विधि सुंदे पाछै छीलाकारसकी
पुट १० दे पाछै थोहरिका दूधकी पुट १० दे पाछै सादी कारसकी पुट १०
दे पाछै सतावरीकी पुट १० दे पाछै गिलवें कारसकी पुट २० दे पाछै जा
मुणिका बकलकी पुट ७ दे पाछै गूलरीका बकलकी पुट ७ दे पाछै
गवारका पाठाकी पुट १० दे पाछै तांदूकी पुट ७ दे पाछै आंवलासार
की पुट २० दे पाछै नांबूकारसकी पुट २० दे पाछै छिल्लका बकल
की पुट १० दे पाछै सारको बारऔं १२ हि सोही गल्ह दे तांनै कवारका
प्राठाकारसमें मिलायवें की पुट दे पाछै वें कै घृतकी पुट १० दे पाछै स
हतकी पुट १० दे अरपुटपुटमें षरल करतो जाय इसी तरे ईसार नै सि
द्ध करै पाछै ईसार नै रती १ प्रमाणले सहत पीपलीका संजोगसुं अर
शिवजीको पूजन करै ईमंत्रसुं ईनिषाय उं अमृतभक्षयामि स्वाहा

अरईकीपरममात्राचदतीवलमाफिकलेतौरती३कोछै प्रभातसमेंहीं
 ७ ईरूपरिषरेंदीकोकादोले इसीतरैमहीनां ३ईकोसेवनकरैतौ ववा
 गीरमात्रद्विहोय अरबूदापणोंद्विहोय तरुणहोजाय अरईकासे
 वनमेंमंदाभिजाई सास घास पांडुरोग वातरक्त सूत्रछछु अंनवृद्धि
 नैआदिलेरअसाध्यभीरोगजाय अरबलवर्णबहोतवधै पुष्टाईस
 गीरमेंहोय आयुर्बलवधै सर्वरोगमात्रईसूजाय अरईकोसेवावालो
 इतनीवस्तुपायनहीं पैठो तेल उडद गई दारू बढई येपायनहीं
 यहविधिबडाअत्रेयमें अरभावप्रकासमेंलिषाछै ४ अथवां वडी
 हरडैकीछालिटंक ३॥ पुराणोगुडटंक ५ येदोन्यूमिलाय जलसूरो
 जीनांले ऊपरसुंगऊकीछाछिकोसे वनकरैतौ याववासीरजाय ५
 अथवां आंधाहेलीनीलाफूलकीजडी होयछैसोले षरेंदी दारुह
 लद पृष्ठपर्णी गोषरू इंदजव सालरीकाफूल गडकाअंकूर गूल
 रकाअंकूर पीपलकाकोमलपत्र येसारीऔषदिदोयदोयटका २
 भरले पाछैयानैजौकूटकरिटंक ३॥ कोकादोकरिछाणिले पाछैजी
 वंतीकीजड कुटकी पीपलामूल कालीमिरचि सूंरि देवदारु सता
 वरी चंदन रसोत कायफल चित्रक मोथो प्रियंगु षरेंदी सालप
 र्णी कमलगडुकीसींगी मजीठ कट्याली बालकीगिर मोचरसपा
 ठ येसारीऔषदि अथेलअथेलभरले पाछैयानैमिहीवांटिसैर
 ५४ याऔषदांकाकादाकोरसले तीमेंगऊको घृतसेर ५१ घाले पा
 छैयांदोन्यांनैकडाहीमेंघालिऔटावे काटोबलिजायघृतआय
 रहै तदिउत्तारिछाणिटका २ भररोजीनां पायतौववासीरजाय ६
 अथवां पारोसोथो गंधकसोथो येबराबरिले यांदोन्यांकीकज
 लीकरि पाछैवैकजलीनैघृतसूंचोपडै पाछैयांदोन्यांसुंदूणोबी

जाबोलकजलीमें घालिओरंगडै टिकडीबांधे पाछैवेंटिकडीमेंलो
 हकापात्रमें आंचदेकरिपतलीकरि केलिकापानउपरिदालै वेंकापाप
 डीकरै नदिवेंकोनामपर्पटीरसहुचो ईरसकोसेवनरती शोजीनादि
 न १५ करैतौ सन्निपातकीववासीरजाय ७ योवैद्यविनोदमेंलिख्यो
 छै अरगुदाकामस्सादिना औरसरीरमेंकहींठिकाणैमसाहोयतौ
 मेंचर्मकीलकहेजेछै तीनैअधिकरि कैअरषारांकरि कैदूरिकीजे
 औरमस्साकोजतनलिष्यते पावाकोचूनो साजी सुहागौ नीलो
 श्रूथो यानैबराबरिले पाछैनींबूकारसमेंदिन ३ भेवै पाछैमस्सा
 कैलगवैतौ मस्सामुकरदुरिहोय - अथवा सीसाकोगोलीनैगड
 कांधृतमेंघसिववासीरकामस्साकैदिन १० लगवैतौववासीरद
 बिजाय ९ अथवा विष्णुक्रांताजडीदंक ३॥ कालीमिरचिदंक
 २० भांगमांसाआधरोजीनांघोटिपीवैतौ ववासीरदवीरह १०
 अथववासीरकाअसाध्यलक्षणलिष्यते जीववासीरमें
 सोजोअतीसार वमन अंगामेपीडा तिस क्षुर अरुचि अग्निमं
 दगुदाकोपकियो हियामेंसूल येलक्षणजीववासीरवालांकैही
 यसोनिअमरे अरववासीरवालो इतनीघस्तकरैनहीं मलमू
 त्रनैरोकैनहीं स्त्रीसंगघणोकैरैनहीं घोडाऊपरैचढ़ैनहीं ऊकडू
 वैठैनहीं कैर करेला वाजराउगैरै गरमवस्तुघायनहीं इति
 ववासीरकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इति श्रीमन्महा
 राजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसर्वाप्रतापसिंहजीवि
 रचिते अमृतसागरनामग्रंथेअतीसारसंग्रहणीववा
 सीरकीउत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणनामस्तृतीयःस्त
 रंगःसमाप्तः ३ ७ अथअजीर्णरोगकीउत्प

तिलिष्यते प्रथममनुष्णाकैजठराग्निहैसौच्यारीप्रकारकीहैये
 कतौमंसग्नि१ येकअतीतीक्ष्णाग्नि२ येकविषमाग्नि३ येकसमा
 ग्नि४ जीपुरुषकीकफकीप्रकृतिहोय तीकैमंदअग्नीहोय१ जीकी
 पित्तकीप्रकृतिहोयतीकैअतीतीक्ष्णाग्निहोय२ जीकीवायकीप्र
 कृतिहोयतीकैविसमअग्निहोय३ जीकीवायपित्तकफकीमिलीप्र
 कृतिहोयतीकैसमाग्निहोय४ अथमंदअग्निकोलक्षणलि
 ष्यते यंचाग्निवालाकैथोडोसोहीतकारीभीषायोथकोभोजनआ
 छीतरैपचैनहीं अरवेंकोसिरउदरभास्योरहबोकरै अरवेंकाअं
 गमेंफूटणीरहबोकरै१ अथतीक्ष्णाग्निकोलक्षणलिष्यते
 गणासूक्ष्मणोभोजनकस्योजीकीआछीतरहपचिजाय योअ
 ग्निआछो२ अथविषमाग्निकोलक्षणलिष्यते कदेतौभो
 जनआछीतरहपचै कदेभोजनआछीतरैपचैनहीं अरआफरो
 होयआवै पेटमेंसूलचालै उदरभास्योरहै अतीसारहोयआवै अ
 रपेटबोलिबोकरै येलक्षणहोयतीविसमाग्निजाणिजै३ अथ
 समाग्निकोलक्षणलिष्यते जीकैसमाग्निहोयतीकैप्रमाणभो
 जनकस्यो आछीतरैपचै घणोषायो अजीर्णमैभी भास्योअनभी
 येसमाग्नितीन्मूअग्निसूत्रेष्ठछै ईअग्निसूत्रहींतैंकोविकारहो
 यनहीं अरभूषलागीछैतीनैंकहींकारणरौकैतोभीततकालरोग
 नैउपजावेनहीं अरतीक्ष्णाग्निहैसोभूषनैबंधकरीततकालपित्त
 करोगनैउपजावैछै ईवास्तैसमाग्निअेष्ठछै४ अरमंदअग्निसूत्रो
 कफकाआजारहोयछै तीक्ष्णअग्नीसूत्रपित्तकागोगहोयछै विस
 माग्निसूत्रवायकारोगहोयछै समाग्निसूत्रोईभीरोगहोयनहीं
 अथप्रसंकरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननलिष्यते तीषा

वस्तुनैत्रादितेरल्लषोअन्नजोषाय तीकैकफघटे अरवायपित्तवधे
 तदिपित्तहैसोपवनसं प्रेस्योथकोभस्यकअग्निनैरोगरूपपैदाकरै
 तदिजोषायसोएकस्थाइतमेंभस्यहोयजाय ईनेभस्यकरोगकहिजे
 योतिसदाहमूर्छानैप्रगटकरिभोजकर्यानेषाय सारीधातानैषायजा
 यछै योमारिनांषैछै ५ अथअजीर्णरोगकीउत्पत्तिलिखतेघणो
 पाणीपीवै विसमानससंभोजनकरै मलमूत्रकावेगनैरौकै दिन
 नैसोवै रातिनैसोवैनहीं इसापुरषकैपथ्यभोजनभाआछीतरै पचै
 नहीं अथवा इतनीवस्तुसंमनुष्यकैआछीतरहअन्नपचैनहींजीं
 कैअष्टप्रहरईषारहबोकरै भयरहबोकरै ओंघरहबोकरै लोभ
 रहबोकरै कोइकरोगरबोकरै दीनतारहबोकरै आछ्योमनमाफि
 कभोजनमिलैनहीं तीपुरसकैभोजनआछीतरैहपचैनहीं अथ
 अजीरणकोसांमान्यलक्षणलिखते मनमेंग्लानिरहै सरीर
 भाखोरहै उदरमेंआफसेरहै भ्रमरहैगुदाकोपवनआछीतरह
 चलैनहीं बंधकुष्टहोयआवै अथवा बारंवारपतलामलकीप्र
 वृत्तिहोय येजीमैलक्षणहोयतदिजाणिजेमनुष्यके अजीर्णछै
 अथअजीर्णकोभेदलिखते अजीर्ण ६ प्रकारकोछै येकतो
 आसकहिजे पीठकचोहीभोजनगुदाद्वाराजाय अरजीकैकफकी
 प्रकृतिकरिमंदाभिहोयजीकै १ अरदूसरोविदग्धक्योंयेकबल्यो
 षटाईनौलियांमलगुदाद्वाराजाय जीकैपित्तकीप्रकृतिकरिती-
 क्षणअभिहोयजीकै २ अरतीसरोविष्टअन्नहैसोकूषिमैहीर
 हैपचैनहीं आफरोपेटमेंकरै अरसूलकरै अरकान्चोहीअन्नगु
 दाद्वाराजाय जीकैवायकीप्रकृतिकरिविसमाग्निहोयजीकै ३ अ
 रचौथोरससेसभोजनकस्योआछीतरैपचैनहीं मलपतलोही

जाय ४ अरपांचऊं अजीर्ण दिन पाकी येकराति दिनमें पचै नही दूसरे दिन भूषलागे यो आछो निर दोष है ५ अरछठो अजीर्ण स्तते सिद्धि सदा ही रहै वेने प्रति वासर कहिजे बांवां पसवाडा का सो वासूं गरम पाणी पीवासूं मिहनत करवासूं हर डेकाषा वासूं योजाय ६ अथ आमाजीर्ण को लक्षण लिख्यते सरीर भास्यो होय वमन की इच्छा रहै जि सो भोजन कस्यो होय उसी ही डकार आवै कच्चो ही मल जाय १ अथ विदग्धाजीर्ण को लक्षण लिख्यते भ्रम होय तिस होय गरमी का नाना प्रकार का रोग होय धूंचानै लीयां पाटी डकार आवै दाह अरप सेव होय २ अथ विष्ट अजीर्ण को लक्षण लिख्यते पेट में सूल होय आफरो होय वाय की नाना प्रकार की पीडा होय अरमल अधो वाय रुकि जाय सरीर जकड़ बंध होय ३ अथ रससोष अजीर्ण को लक्षण लिख्यते अन्न में अरुचि होय हियो दूषे सरीर भास्यो होय ४ अथ अजीर्ण का उपद्रव लिख्यते मूर्छा होय प्रलाप होय वमन होय अंग में पीडा होय भ्रम होय ये अजीर्ण में उपद्रव होय तो ओमरि जाय ५ मूर्ख आदमी अजीर्ण में पशु की सी नाई भोजन करे वें आदमी के अने रोग होय छै सत्य आंच छै सो दोसां सू बंध होय वो अग्निका मार गनें रो कै नही तदि अजीर्ण मे भी भूषलागे वें कचो भूष में जोषाय सो पुरष मरि जाय अथ विसूचिका को लक्षण लिख्यते पुरष के मंदाग्नि संप्रथम आमाजीर्ण होय पछै वे में मूर्ख पर्णा संप्रसु की सी नाई घणी गरिष्ट वस्तु पाय तदि वे कै विसूचिका होय जो कै मूर्छा होय अतीसार अर वमन भी होय अरती समी होय पेट में अथवा और ठै भी सूल होय भ्रम होय पीडा फूटे जंभाई आवै दाह होय सरीर को पर्ण और सो हो जाय कांपणी होय हियो मांघो घणो

दूषे सारासरीरमें सूईका साचभका होय येजीमें लक्षण होय तीनै वि
 सूचिका कहिजे लोकिकमें ईनै वासी कहैं छे येईका उपद्रव छे नींद
 आवै नहां सर्वत्र अप्रीती होय सरीरका पै मूत्ररुकि जाय संज्ञा जा
 तीर है ये उपद्रव होइ तौ औ मरि जाय १ अथ अलसको लक्षण
 लिख्यते पुरुषकें विष्टब्ध वायका अजीर्णसूं ये लक्षण होय पेटमें
 आपरो होय आंतावोले पवन फिरि वासूरुकि जाय कृषिमें फिरे म
 लमूत्र गुदाको पवन ये रुकि जाय तिस घणी लागे उकार घणी आवै
 जीमै ये लक्षण होय तदि अलस जाणिजे २ अथ बिलंबिका
 लक्षण लिख्यते जो भोजन कसो होय सो पचनहां ऊपर नीचै जा
 यनहां वेने बिलंबिका के हजे अरयां तीन्यां हीमै ये लक्षण होय सो
 मरि जाय दांतजीं का काला होय होठनष भी काला होय संग्या जा
 तीर है छादणी लागि जाय नेत्रमांहां घुसी जाय स्वरघांघो हो जाय
 सरीरकी संग्या सिथल हो जाय जीमै ये लक्षण होय तौ औ मरि जाय
 अथ अजीर्णदुरिद्वो होय तीं कालक्षण लिख्यते उकार रुद्ध
 आवै सरीरमें उत्साह होय मलमूत्र पवनकी आछी तरै प्रवर्ति होय
 सरीर हलको होय भूषति सआछी तरै लागे तदि जाणिजे अजीर्ण
 दुरिद्वो १ अथ मंदग्निनें आदिलेर अजीर्ण वि सूचिका क्रां
 त्तन लिख्यते हरडे की छालि सूंठि यांनै भिही वांरि टंक २॥ गुड टंक
 १० कैसा थिजल सूरोजीनां लेतौ आमाजीर्णदुरिद्वो अरभूषवधे
 १ अथवा हरडे की छालि सींधो लूण ईको सेवन रोजीनां करै तौ अ
 जीर्ण जाय भूषवधे २ अथवा सींधो लूण सूंठि कालीमिरचि ये
 बरां बरिले सांनै भिही वांरि टंक २॥ गऊ की छालि कैसा थिदिन १५
 लेतौ भूषवधे मंदाभि जाय पांडुरोग जाय ववासीर जाय ३ अथवा

आमाजीर्ण होय तो वच लवणका वमनसंजाय विदाधाजीर्ण होय
 तो लंघनसंजाय विष्टब्धजीर्ण होय तो सेकसंजाय रससंघ होय
 तो सेवासंजाय ४ अथवा संहि कालीमिरचि पीपलि अजमोदसीं
 धोलूण दोन्यूंजीरा सेकी हींग येबराबरिले त्यांको चूर्ण टंक १॥ तथा
 २॥ घाचडीकें साधि घृतसूं मिलाय प्रथम ग्रासकें साधि रोजी नां-
 षाय तो अजीर्ण कदे भी होय न हीं अरभूषवधे गो लोफी यो दूरि हो
 य यो हिं गाष्ट कळे ५ अथवा जवषार साची चित्रक पांचूलूण इ
 लायची पत्रज भाडंगा हींग सेकी पौह करमूल कचूर निसोत मो
 थो इंद्रजव डांसरुआ अमलवेद जीरो आंवला हरडें की छालि पी
 पलि अजवायण तिलांकोषार सहजणांकोषार लीलांकोषार
 सार येसारी औषदि बराबरिले यानें मिही वांटी छांशि ती कें कि जो
 राकार सकी सुट ८ दे सिद्धि करिले पाळें ई चूर्ण नै टंक २॥ रोजी नांज-
 ल कें साधिले तो भूषण लागे अरअजीर्ण नें गो लानें उदर नें अं
 रुद्धि नें वातरक्त नें यां सारां रोगां नै यो अभिमुष चूर्ण दूरि करै छै ६
 अथवा थोहर आक चित्रक अरंडकोषार साटी तिल आंधोफा
 डो केलि छीलो डांसरुआ यां सारां काषार काटे पाळें यां काजु दाजु दा
 षारले अरअजवायण अजमोद जीरो संहि कालीमिरचि पीपलि
 सेकी हींग येसारी बराबरिले त्यां नें मिही वांटी ई दे आंदाकार सकी
 सुट ५ दे यो वैस्वानर चूर्ण तयार करै पाळें ई नै टंक १॥ सीतल जलसं-
 ले प्रातसमै तो अजीर्ण कंदेर है न हीं अरईसू भूषण वधे अर
 जुदा जुदा अनूपानसूं यो अनेक रोगां नै दूरि करै छै ७ अथवा सां
 भखोलूण पर्ईसा ४ भर संचरलूण पर्ईसा २॥ भर बाय विडंग टंक
 ५ सीं धोलूण टंक ५ धणो टंक ५ पीपलि टंक ५ पीपलामूल टंक ५

पञ्चजटंक ५ कालोजीरोटंक ५ नागकेसरिटंक ५ चव्यटंक ५ अमल
 वेदटंक ५ मिरचिकालीटंक २॥ जीरोटंक २॥ सूंठिटंक २॥ अनारदा
 णांटंक १० तजटंक १॥ इलायचीटंक १॥ यांसारंकोमिहीचूरणकरि
 मासा ४ गजकीछाछिसूले अथवा कांजीसूलेतो गोलाने फीया
 नै उदरकारोगने ववासीरने संग्रहणीने बंधकुष्टने सूलने सोजा
 नै सासषासने आवकाधिकारने पांडुरोगने मंदअग्निने सर्वअ
 जीर्णमात्रने थोलवणभास्करचूरणदूरिकरेछै ८ अथवा सीधो
 लूणटंक १ पीपलामूलटंक २ चव्यटंक ३ चित्रकटंक ४ सूंठिटंक
 ५ हरडैकीछालिटंक ६ यांकीबराबरिमिश्रले पाछैई तोलयो
 चूर्णकरे पाछैई चूर्णनेटंक २॥ रोजीनांलेतो अजीर्णदूरिहोय
 भूषणलीलागे ९ थोवडवानलचूर्णछै अथवा सोधोगंधकट
 का २॥ भर पारोटका १॥ भर सारटंक ५ तांबेस्वरटंक ५ प्रथमपा
 रांगंधककीकजलीकरे पाछैकजलीमेंयेदोन्यूंमिलावे पाछैयां
 च्यास्यांनैलोहकापात्रमें अमिऊपरि चढायपिघलावे चतुराई
 सूं पिघल्यांपछै अरंडकापांनाउपरवेनेढालै पाछैवेनेमिहीवां
 टिले पाछैषरलमेंईनैघालिटका १०० भर जंभीराकोरससुसावे
 पाछैईमैविजोराकोरसटका १०० भर सुसावे पाछैईमेंपीपलि पी
 पलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांकोकाटोकरि ईकीईकैपुट ५० दे
 अरसुकायले पाछैईकैचूककासरकीपुट ५० दे पाछैईकैअमल
 वेदकारसकीपुट ५० दे पाछैयेसागसूकिजायतदि वांसारंबरा
 बरिसेक्योसुहागोहीमेंनांभै अरसुहागासूंआधोसंचरलूणईमै
 नांभै अरसारांकीबराबरिईमैकालीमिरचिनांभै पाछैईकैचणां
 काधारकीपुट ७ दे पाछैईनैतयारकरिले पाछैईकव्यादरसने

८१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरे ४

निषट्जावतंसू आठ्यापानमें धरि राषे पाछे ईक व्यादर सने मासा २
 ले ई उपर सांधो लणमिलाय गडकी छाछि में पीवें तो अजीर्ण मात्र तत्
 काल ई सूँडूरि होय छै अरघणों भोगिष्ठ भोजन कसौ ई सूँत त काल
 पविजाय अरयोरस सूँलनें गोलाने आपराने पीयाने उदर कारो
 गाने यो दूरि करै छै १० इति क्रव्यादरस अथवा जवधार साजी सु
 हागो पारो सोधोगंधक पीप्रलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूँठि
 ये सारी बराबर ले यां सर्व की बराबर से की भांगिले अर भांगि सूँआ
 धास हजणां की जडले प्रथम पारागंधक की कजली करै पाछे कज
 ली में ये सारी औषदि मिलावै पूनमि ही वांटै पाछे याने भांगि कारस
 मै दिन १ भरल करै पाछे याने सहजणां की जड कारस मै दिन १ ब
 रल करै पाछे चित्रक कारस मै दिन १ भरल करै ताव डै सुकावतौ जा
 य पाछे ई नै सरावा मै मेल्हिक पडमि द्वादेर फूकि दे पाछे ई नै काठि
 दिन ७ आदा कारस मै भरल करै योज्वालानल रस तयार करै पा
 छै ई रस नेरती १ तथा २ सहज सूँले उपरि सूँगुड को काथ ले तो
 तत्काल नै अजीर्ण मात्र नै अतीसार नै संग्रहणी नै कफकारोग नै
 वमन नै अरुचि नै इतरां रोगाने यो दूरि करै अरयो भूषघणी बधा
 वै छै १० योज्वालानल रस छै ये सारा भाव प्रकार मै लिखो छै १२ अ
 थवा सोधोगंधक कालीमिरचि चूक संचरलूण याने बराबर ले
 त्यां नो मिही वांदि मिलाय टंक १ पांणी सूँले तो बंधकुष्ट दूरि होय १३
 अथवा पारोटंक ५ सोधोगंधक टंक ५ सोधो सींगी मोहरोटंक ५
 कालीमिरचि टंक १ जायफल टंक २॥ प्रथम पारागंधक की कज
 ली करै पाछे वें कजली में ये मिलावै पाछे याने जांसखां कारस मै दि
 न ५ भरल करै पाछे ई रस नेरती १ रोजी नां दिन ७ ले तो भूषघणी

वधै अजीर्णतत्कालमिदं योरामबाणरसछे १४ अथवा सोधोसा
 रो सोधीगंधक अजमोद त्रिफला साजीजवषार चित्रक सांधोल्ल
 जीरो संचरल्लण वायविडंग सांभरोल्लण सूंठि कालीमिरचि पीपलि
 येसारीबराबरिले अरयांसारांकीबराबरिबकायणावकाले प्रथ
 मपारागंधकुकीकजलीकरै पाछैकजलीमेंयेमिलवै पाछैजंभीरा
 कारसमेंदिन ७ षरलकरै पाछैरती १ प्रमाणगोलीकरै पाछैगोली १
 रोजीनांषायतौभूषघणीवधैईऊपरिहरडैकीछालि सूंठि गुडयां
 कोकादोलेतौ सर्वरोगमात्रनेंदूरिकरैछै याअग्नितुंडावतीगोलीछै
 १५ अथवा सूंठि १ भग कालीमिरचि २ भाग पीपलि ३ भाग सां
 धोल्लणच्यारि ४ भाग सोधीगंधक ५ भाग पाछैयांसारांनेमिहीवांदि
 पाछैयांनेनींबूकारसमेंदिन १० षरलकरै पाछैरती १ प्रमाणगोली
 बांधै गोली १ रोजीनांषायतौभूषघणीवधै योक्षुद्रबोधरसछे १६
 अथवा विडल्लण संचरल्लण अजवायण दोन्यूजीराहरडैकीछा
 लि सूंठि कालीमिरचि पीपलि चित्रक अमलवेद अजमोद धणों
 डांसस्या यांनैबराबरिले पाछैयांकोमिहीचूर्णकरिदंक २॥ रोजीनां
 लेतौपथरभीप्रचिजाय तौभोजनकोकाईक हणों १७ अथवा सो
 धीगंधक कालीमिरचि पीपलि सूंठि सांधोल्लण जवषार लवंग ये
 सारीबराबरिले सांनेमिहीवांदिनींबूकारसमेंदिन १० षरलकरै पा
 छैरती १ प्रमाणगोलीबांधै पाछैगोली १ रोजीनांषायतौभूषघणी
 वधै १८ अथवा हरडेकीछालिभाग ६ पीपलिभाग ४ चित्रकभा
 ग २ सांधोल्लणभाग २ वाकोमिही चूर्णकरिदंक २॥ जलकैसाथि
 लेतौ अजीरएजाय मूषलगै १९ अथवा सेक्योसुहागोटंक २॥ पी
 पलिटंक २॥ सोधोसांगीसुहरोदंव २॥ हींगलटंक २॥ कालीमिर

८३ . अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ४

चिटंक २॥ यांनैमिहीवांदिनीबूकारसमेंदिन १० परलकरै पाछैमट
 रप्रमाणगोलीबांधैगोली ३ तथा २ जलसूलेतौ ततकालअजीरणा
 अरविसूचिकादूरिहोय योअजीर्णदंकरसछै २० अथवा सोधो
 सांगीसुहरोदंक २॥ सेक्योसुहागोदंक २॥ मिरचिटंक २॥ सींधोल्हा
 दंक २॥ यांनैमिहीवांदिपाछैयांमैआदकोरससेर ५१ सुसायदे अ
 रदहीनैवांधिवेंकोजलसेर ४१ ईमैसुसायदे अरनीबूकोरससेर ५१
 ईमैसुसावै पाछैईकीगोलीरती २ प्रमाणबांधै गोली १ रोजीनांजल
 सुलेतौ अजीर्णततकालदूरिहोय अरईकोसेवनकरैतौ आपताको
 रोग उदरकोरोग गोलो सूल येसाराजाय अरभूषवधै योक्क्यादि
 रसछै २१ अथवा दालचिनीदंक १० इलायचीदंक १० लवंगदंक १५
 सेक्योसुहागोदंक १० चित्रकदंक १० कालीमिरचिटंक ५ सींधोल्हा
 परईसा ३ भार यांनैमिहीवांदिदंक १॥ गरमपाणीसुलेतौ ततकालअ
 जीरणाजाय योभीक्क्यादिचूर्णछै २२ योसाराजतनवैघरहस्यमेंलि
 थोछै अथवा स्रंठि कालीमिरनि पीपलि त्रिफला पांचूल्हा सेक्यो
 सुहागो जवषार साजी पारो सींधीगंधक सोधोसांगीसुहरो येसर्व
 बराबरले पाछैपारागंधककीकजलीकरै पाछैकजलीमैयेमिलावे
 पाछैआदकारसकीपुट ७ दे पाछैरती १ प्रमाणकीगोलीबांधै गोली
 १ तथा २ लवंगकाक्षयकैसाधिलेतौ अजीर्णततकालजाय भूष
 वधै योक्ष्मासागररसछै २३ अथवा बडीहरडै १०० ले त्यांनैगऊ
 कीछाछिमेंओटावै पाछैबांकीगुठलीकादिनांछे पाछैबांहरडैमैये
 ओषदिभरै सोलिधूछं स्रंठि कालीमिरनि पीपलि चव्य चित्रक
 दालचिनी पांचूल्हा सेक्योहीजवषार साजी दोन्यूजीरा अजमी
 द निसोत येसर्वबराबरले पाछैयांनैमिहीवांदि यांनैनीबूकारस

८४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग . ४

कीपुट १० दे अरयांबराबरियांमैचूकमिलाय बांहरडैमैभरे पाछेयां
 नैताचडैसुकायले पाछैहरडै १० रोजीनांषायतौ भूषधणीवधै अजी
 रणयेक १ हरडैसंजाय अरमंदाधिनै उदरकारोगनै गोलानै सूलनै
 संग्रहणीनै बंधकुष्टनै आफरानै आमवातनै यांसारांनैयांहरडि
 दूरिकरैछै २४ याअमृतहरीतकीछै अथवा कालीमिरचिटंक ७
 अजवायणटका २। भर बिन्नकटका २। भर पीपलिटंक ७॥ संचर
 लूणटंक २॥ सांभरोलूणटंक २॥ सींधोलूणटंक २॥ पारोटका १॥ सो
 ध्योगंधकटका १। भर पीपलामूलटका २। भर सूडिपईसा ५। भार
 हरडेकिछालिपईसा ५। भर बहेडाकीछालिटंक ५। जीरोटका १। भर
 चयटंक ५। यांसारांसूंआधीलवंग प्रथमपारागंधक कीकजलीक
 रे पाछेयेत्रौषदिमिहीवांटिकजलीमैमिलावै पाछैयांकै आदाका
 रसकीपुट १० दे अरयांबराबरियांमैचूकमिलावै पाछैईकागोली
 मासा २ प्रमाणकरै गोली १ जलसूंषायतौ अजीरणततकालजा
 य अरईकोसेवनकरैतौ भूषधणीवधै सर्वरोगमात्र ईसंदूरिहोय
 सरिरनैपुष्टकरै यालवंगामृतगुटिकाछै २५ येसारावेद्यनिनोद
 भैलिथोछै अथवा दालचिनीटंक ५ लवंगटंक १० दोन्यूजीराटं
 क १० सूडिटंक १० कालीमिरचिटंक ५ अजमोदटंक ५ हरडैकीछा
 लिटंक ५ पत्रजटंक ५। सांस्तांटंक १० सींधोलूणटंक २० संचरलू
 णटंक २० निसोतटंक १५ सनामुषीप्राव ५। अनारदाणांअधसेर ५॥
 यांसारांनैमिहीवांटी यांकैनीचूकारसकीपुट १० दे पाछैयांबराबरि
 यांमैचूकमिलावै पाछैईनैसुकायजायतासूं अमृतवानमैभरिराषे
 पाछैईनैटंक २॥ जलसूंलेतौ अजीरणततकालमिटै अरईकोसेव
 नकरैतौ बंधकुष्टनै मंदाधिनै उदरकारोगनै गोलानै फीयानै सर्व

८५ • अमृतसागरं तथा प्रतापसागरं तरंग ४

रोगने यो दूर करे छै ई चूरण कोना मराज वल्ल भछै २६ अथवा हर डै की छालि पीपलि संचरल्ल ए घे बराबरिले याने मिही वां टिं क २॥ गरम पाणी सूं ले तो आफराने आदिलेर सब अजीर ए जाय २७ अथवा भिन का दाष हर डै की छालि मिश्री यांती न्यां की गोली करै संहत सूं टं क २॥ प्रमाण पाछै गोली १ जल सूं ले तो अजीर ए जाय २९ ये हं दं मै लिख्यो छै अथवा जीरो संचरल्ल ए सूं ठि मिरचि पीपलि सिंधो ल्ल ए अजमोद से की हींग हर डै की छालि ये सारी अथेला अथेला भरिले तिसो तटका २। भरले यां को मिही चूर्ण करि टं क २॥ गरम पाणि सूं ले तो तत काल अजीर ए जाय अरभूष वधै यो जीर का दि चूरण छै जोग तरंगिणी मै लिख्यो छै ३० अथवा अजमोद हर डै की छालि चित्रक ल चंग दाल चिनी सींधो ल्ल ए घे बराबरिले याने मिही वां टिं क २॥ पाणी सूं ले तो अजीर ए जाय भूष लागै यो अजमोद दि क चूरण छै ३१ यो सर्व संग्रह मै छै अथवा सोधो गंध क टं का २। भर चित्रक टं क २॥ काली मिरचि टं क २॥ पीपलि टं क २॥ सूं ठि टं क ५॥ जवुषार टं क २॥ सींधो ल्ल ए टं क १। संचरल्ल ए टं क १। सांभरों ल्ल ए टं क १। याने मिही वां टि नींबू कारस मै दिन ७ भरल करै पाछै टं क १। भर की गोली करै गोली १ जल सूं ले तो अजीर ए नै सूं ले नै आंबक दोसनं गोलाने आफराने तत काल दूर करै या गंध क वरी छै ३२ या सर्व संग्रह मै लिख्यो छै इति अग्नि मांघ अजीर ए काज तन संपूरणम् अथ वि सूचिका काज तन लिख्यते इक पोखाल सण की गुलि जीरो सोधो गंध क सींधो ल्ल ए सूं ठि काली मिरचि पीपलि से की हींग ये सारी बराबरिले पाछै याने भरल मै मिही वां टि नींबू कारस की पुट ५० दे पाछै ई की गोली छोटा बोरे प्रमाण की जे गोली १ पाणी सूं दी जै तो वि सूचिका तत काल जाय अर अजीर ए मिटै भूष लागै

योजीरकादिंकछै अथवा वायविडंग संधि पीपलि हरडैकीछालि आ
 वला बहेडा वच गिलवै सोध्याभिलावा सोधोसोंगीमुहरो येसारीब
 राबरिले पाछैयानैषरलमेंमिहीवांदिगोमूनमेंदिन १ षरलकरै पाछै
 रती १ प्रमाणगोलीबांधै पाछैगोली १ आदाकारससूंअजीरणवाला
 नैदेतो अजीरणजाय गोली २ सूविस्सूचिकाजाय गोली ३ सूसांपको
 काखीआछोहोय गोली ४ सूसनिपातजाय यासंजीवनीगुटिकाछै
 ३४ अथवा सेकोसुहागोटंक ५ पारोटंक ५ सोधीगंधकटक ५ सोधो
 सीर्गामुहरोटक ५ पीलीकौडीकीराषटक २॥ साजीटक २॥ पीपलिटं
 क २॥ सूठिटंक २॥ कालीमिरचितका २॥ भर प्रथमपारागंधककीकज
 लीकरै पाछै येओषदिमिलावै पाछैजंभीरीकारसमेंदिन ८ षरलकरैपा
 छैरती १ प्रमाणगोलीबांधै गोली १ गसीवाला नैदेतो वासीततकाल
 आछीहोय योअग्निकुमाररसछै ३५ अथवा आककापानांकोरससे
 २११ धतूराकापांनकोरससे ११ योहरिकोदूधसे ११ सहजणांकीज
 डकोरससे ११ कुठटका २॥ भर सींधीलूणटक २॥ भर तैलसे ११ कां
 जीकोपाणीसे १४ येसारायेकगकरिकडांहीमेंमधुरीआंचसूपका
 वै योरसमानबलिजाय तेलआयरहै तदिईतेलकोमर्दनकरैतो वि
 सूचिकाअरपक्षघातयेदोन्युंदूरिहोय ३६ येसरववैघरहस्यमेंलि
 थोछै अथवा गणगचकीजड आंधीजाडाकीजड नीबंकीछालि गि
 लवै कुडाकीछालि थानेबराबरिले पाछैटक २॥ कोकाटोकरिदिन ३
 लेतोविस्सूचिकाजाय ३७ अथवा हरडैकीछालि वच सेकाहींग इंद्र
 जब भांगरो सचरलूण अतीस यानैबराबरिले त्यानैमिहीपीसिटंक
 २॥ पाणीसूलेतो वासीजाय ३८ अथवा इलायचीमासा ४ लवंगमा
 सा ४ अमलमासो १ जायफलमासा १० यानैमिहीवांदिमासा ५ गरम

८७० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ४

पाणीसूलेतौबिसूचिकाततकालजाय ३९ अथवा चूकानैऔंराय
 वेंकोरससेर ३९ काटे ईरसमेंसींधोल्हाटंक ५ कूठटंक १० तेल ५ पा
 व यांसारानेंयेकठाकरिमंदाभिसूपकावे ओरसवलजाय तेलमा
 अथायरहै तदिवेंतेलकोमर्दनकरैतौबिसूचिकादूरिहोय ४० अ
 थवा जौवांकोचूनपरिस्र ४ भर जबधारटंक ५ यांनैछाछिमेंसि
 जाय ईकोगरमगरमलेपकरैतौ पेटकीसूल बिसूचिकाकीसूलदू
 रिहोय ४१ अथवा कडवातेलकोगरमगरममर्दनकरैतौ कूषिको
 दरददूरिहोय ४२ अथवा बिसूचिकामैतिसघणीलागै तोलबंगा
 कोकादोदेतौतिसदूरिहोय ४३ अथवा बिसूचिकाघणीबधैतौबें
 कापसवाडामेंडाहदेतौबिसूचिकादूरिहोय ४४ अथवा विजोरा
 कीजड सूंठि कालीमिरचि पीपलि हलद मरागचकाबीज यांनैब
 राबरिले पाछैयांनैकांजांकापाणीमेंमिहीपीसिईकोअंजनकरैतौ
 बिसूचिकाजाय ४५ येसर्वसंग्रहमेंलिप्याछै इतिबिसूचिकाका
 जतनसंपूर्णम् अथअलसविलंबिकाकाजतनलिप्यते
 साबणटंक ६ नीलोथूणोटंक १ यांनैजलमेंमिहीवांदि गुदकैलगा
 वैतौततेकालबंधछूटै अरअलसविलंबिकाजाय ४६ अथवा दरु
 हलद चोष कूठ सौफ हांग सींधोल्हा यांनैबराबरिले यांनैकांजी
 कापाणीमेंमिहीवांदि गरमकरै पाछैउदरकैलेपकरैतौ अलस अर
 विलंबिकादूरिहोय ४७ अथवा जौवांकोचूनअधपांव ५ ईमेंसाज
 टका १ भर नाभिईनैपकायकूषिकैगरमलेपकरैतौ बिसूचिकाअ
 लसविलंबिकादूरिहोय ४८ इतिबिसूचिकाअलसविलंबिका
 काजतनसंपूर्णम् अथहृमिरोगकाउत्पत्तिलक्षणजतन
 लिप्यते प्रथमहृमिदोयप्रकारकीछै येकतौबाहरली १ दूसरिमां

८८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ४

हिली २ बाहर ल्यां को जनम तो च्यां रिजा गा छै एक तो मलसं उपजै ल
 ३ १ येक पसेवसं उपजै जूलाय ३ चमजू ४ अथ मां हिली कृमि की
 उत्पत्ति लिख्यते अजीर्ण में भोजन करै रोजीना मीठो बाटो अरपतलो
 मीषाय अर भोजन करि षेद करै न हीं अर दिन में सेवे अर विरुद्ध भो
 जन करै तीं पुरंस के पेट में कृमि पडि जाय गिंडोला उगै २० प्रकार का
 अथ जीका पेट में गिंडोला उगै कृमि पडि गई होय तीं को ल
 क्षण लिख्यते जुर होय आवे सरार को रंग और सो होय जाय पेट में
 सूल चाले हियो दूषे छादणी आवे भ्रम होय आवे भोजन में रुचि न हीं
 अतीसार होय आवे येलक्षण जीके होय तदि जाणि जै ई का पेट में कृ
 मि गिंडोला छै १ अथ कृमि रोग का दूरि करि या को जतन लिख्य
 ते पुरा साणी अज वाय ए टंक २॥ वास्या पाणी सुं दिन ७ ले तो पेट की
 कृमि पडि पड़े २ अथ वा पलास पा पडाने पाणी में वां टिंक १॥ सह
 त टंक २॥ वेंर स में घालि दिन ५ पीवै तो पेट की कृमि जाय ३ अथ वा
 वाय विडंग टंक २॥ मिही वां टिरो जी नां दिन ७ सह त सूं ले तो पेट की कृ
 मि जाय ४ अथ वा वाय विडंग सींधो लूण हर डे की छालि जव पार
 ये बरा बरिले पाछे यां नै मिही वां टिंक २॥ छाछि सुं दिन ७ पीवै तो पेट
 की कृमि पडि पड़े ५ अथ वा नींब का पत्रां को रस टंक १० मिलाय दि
 न ७ पीवै तो पेट की कृमि जाय ६ अथ वा पारो टंक १ सोधी गंधक टंक
 २ पुरा साणी अज वाय ए टंक ३ वकाय ए को वका टंक ४ पलास पा प
 डो टंक ५ यां नै मिही वां टिंक २॥ सह त टंक ५ सूं रोजी नां दिन ७ चाटे
 ती पेट की कृमि जाय ७ ये सारा सर्व संग्रह में लिख्यो छै अथ वा नाग
 र मोथो त्रि फला देव दस सहज एण की जड यां नै बरा बरिले पाछे यां
 नै जौ कूट करि टंक ५ को का दो दिन ७ ले तो पेट की कृमि जाय ८ ७

८९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ४

अथवा वायविडंग सींधीलूण सेकीहांग पीपलि कपेलीसंचरलूण
 यानैबराबरिले त्यांनैमिहींपीसिटंक २॥ गरमपाणीसूदिन ७ लेतीपेट
 कीहमिजाय ९ येसरबवैद्यविनोदमेंलिथोछै अथमांथांमैजूला
 षपडीगईहोयतींकादूरिकरिवांकोजतनलिथ्यते धतूराकापां
 नांकारसमें अथवा नागरवैलिकापांनाकारसमें पारानैमिजाय
 यांकोबालामेंलेपकरैजूपडीहोयजिठेतौ जूलीषमरिजाय १ अथ
 गुदामेचुरणापडिगयाहोयतींकादूरिकरिवांकोजतनलिथ्य
 ते लसण मिरचि सींधीलूण हांग येसबबराबरिले प्राछैयांनैजल
 मैवादिगुदामांहिलेपकरैतौचुरण्यामरै १ अथवा बहुवाकाफूल
 वायविडंग कलहारीकीजड मेंटल चंदन राल षस कूठ भिलावा
 लोहचान यानैबराबरिले प्राछैयांकीधूणीदेतौ मांछरषटमलयेसा
 राघरमेंसंजातारहै २ येवैद्यरहस्यमेंवैद्यविनोदमेंलिथोछै इति
 कृमिरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथपांडुरोग
 कामलारोगहलीमकरोयांकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिथ्य
 ते प्रथपांडुरोगपांचप्रकारसूंउपजैछै वायको १ पित्तको २ कफको
 ३ सन्निपांतको ४ येकमांटीकापावाको ५ अथपांडुरोगकीउत्पत्ति
 लिथ्यते घणाबेदकाकरि वासूं घणीषटाईकापावासूं दिनकासो
 वासूं घणीनीषीवस्तकापावासूं इतनीवस्तकासेवासूं वातपित्त
 कफहसोपुरषकालोहीनेविगाडि अरवेंकासरीरकीत्वचानेंपीली
 करिदेछै १ अथपांडुरोगकापूरबरूपकोलक्षणलिथ्यते ल
 चांफाटिवालागिजाय अंगामेंपाडाहोय मांटीपावाकीइछारहै आं
 षांरूपरिक्योंसोईहोय मलमूत्रपीलोहोय अन्नपचैनहीं येरुक्षण
 जीकैहोय तदिवैद्यकहैथारे पांडुरोगहोसी ईपांडुरोगनैलीकिंकमें

पील्यो कहै छै १ अथ वायु का पांडुरोग को लक्षण लिख्यते जीकात
चा मूत्र नेत्र ये लक्षण होय अथवा कालो होय अथवा जाल होय अथवा
शरीर में कंप होय पीडा होय आफरो होय भ्रमादिक होय तदिजाणिजे
वायु को पांडुरोग छै १ अथ पित्त का पांडुरोग को लक्षण लिख्यते
मल मूत्र नेत्र जीका पीला होय शरीर में दाह तिस अरजुर ये भी होय
मल पतलोजाय शरीर की त्वचा पीला होय तदिजाणिजे पित्त को पांडु
रोग छै २ अथ कफ का पांडुरोग को लक्षण लिख्यते सुषुंस्कफ
नीकलै शरीर कै सोजो होय तडा होय आलस होय शरीर भाग्यो होय
शरीर की त्वचा मूत्र नेत्र ये सूपेद होय तदिजाणिजे कफ को पांडुरोग छै
३ अथ सनि पात का पांडुरोग को लक्षण लिख्यते कसाय लीमां
टीषाय जी कै वायु को कोप होय मीठी मांटीषाय जी कै कफ को कोप
होय पाछै बां मांटीषाई है सो सातूं धातानै अरभोजन कस्यो होय ती
ने लूखो करि नांघे पाछै बापेट में मांटी होय सो बिगार पकी धकीन
सांनै कुलाय दे अथ चार सवह वासू रोक दे तदिसारी इंद्रियां को ब
लजातर है अर शरीर को बिर्य अर पराक्रम भी जातोर है तदि बापेट
में बाई मांटी सशरीर की त्वचा नै पीली करि बल वरण अभियां को नासक
है तदि वें कै तडा होय आलस आवैं सास घास मूल बवासीर अर
वि आंघ्यांरु परिसोजो पगां कै सोजो पेट के सोजो इंद्री कै सोजो प
ट में रुमि अतीसार मल कफ लोही सूं मिल्यो ये सब लक्षण होय त
दिजाणिजे ई कै मांटीषावा को पांडुरोग छै अथ पांडुरोग को अ
सांध्य लक्षण लिख्यते शरीर को लोही जातोर है शरीर सुपेद हो जा
य दांढ नष्ट नेत्र पीला हो जाय संपूरण वें नै पीलो ही पीलो दीधै अ
र सारा शरीर में सोई होय आवैं अतीसार अर ज्वर होय आवैं औ सो

पांडुरोगी मरिजाय १ अथ कामलारोगको लक्षण लिख्यते जो
 पांडुरोगी गरसंबस्तघणीषाय वेकै पित्त है सो लोही अरमांस नै दा
 थ करै वेकाने वहलदसिरका करै अरवे की त्वचानषमूंदो हलदका
 रंगसिरको करि दे अरवे को मलमूत्र रुधिरसिरीसो करि दे मांडका
 कावरणसिरीसो हो जाय इंद्रीयां को बलजा तोर है दाह होय आवै
 अन्न प्रचेन ही दुर्बलता होय अरु चि होय ये लक्षण होय तदि काम
 लारोग जाणिजे अथ हलीम करोगको लक्षण लिख्यते जो पांडु
 रोगी के वायपित्त वधै तदि वे की त्वचा हरी काली पीली हो जाय अर
 वे को बल उत्साह जा तोर है अरतं दामंदायी मिहां जूर दाह निस अ
 रुचि भ्रम ये सारा होय आवै क्रीसंग प्यारो न ही लागै अंगामें पीड
 होय तदि हलीम करोग जाणिजे अथ पांडुरोगको जंतन लिख्यते
 सारनै गोमूत्र में दि ७ पकावै पाछे ई नै मिहीं बांदि जलसूटंक १ रो
 जीनादिन १५ ले तो पांडुरोग जाय १ अथ वा गोमूत्र में पकायो मांडू
 र तीनै टंक ११ गुड के साधिदिन १५ ले तो पांडुरोग जाय २ अथ वा सा
 दी की जड निसोत संहि मिरचि पीपलि वायविडंग दारु हलद चित्र
 क कूठ हलद त्रिफला दांतूणी चव्य इंदजव कुटकी पीपलामूल
 नागरमोथो काकडासींगी करेलणि अजवाणि कायफल ये सारा
 टकाटका भरिले पाछे यां नै मिहीं बांदि यांसू इणो ई में मांडू रामलावे
 पाछे यां नै अटगुणा गोमूत्र में पकावै पाछे ई की गोली टंक ११ प्रमा
 ण की बांधै पाछे गोली १ गडू की छाछि के साभिलदिन १५ ले तो पां
 डुरोग असाध्य भी जाय अरयोही कामलारोग नै हलीम करोग नै सा
 सनै पासीनै राजरोग नै जरनै सो जानै सूलनै फीयानै आफरानै व
 वासीरनै संग्रहणी नै रुमिरोग नै बातरक्तनै कोटनै या सारा रोगानै

ईकासेवनसूँ येदूर होयछै योसुननेवादिमंडूरछै १ अथवा हरेडेकी
छालिटंक ५ बहेजकीछालिटंक ५ आंवलाटंक ५ सूँठिटंक ५ काली
मिरचिटंक ५ पीपलिटंक ५ नागरमोथोटंक ५ वायविडंगटंक ५ चि
त्रकटंक ५ माखीसारपईसा ९ भर यांसारान्नेमिहीवांदि यांमैसारमि
लवै पाछैरती ९ इनेसहतकेसाथिले अथवा घृतकेसाथिले अ
थवा गजकीछालिकेसाथिले अथवा गोमूत्रकेसाथिलेतो पांडुरो
गनें सोजानें अग्निमांछनें बवासीरनें अरोचकनें यांरोगानें योन
वायसचूरणदूरिकरैछै दिन १५ ईकोसेवनकरै प्रथमादिवस ईनेर
ती २ वाय पाछै ईनेरती दोयदोय २ रोजीनांवधै अठारारतीताई
योनवायसचूरणछै २ अथवा अरडूसो गिलवै नींबकीछालि
त्रिफला चिरायती कुटकी येबराबरिले यानेंजौकूटकरिटंक ३ का
काटेकरितोमैसहतमिलायदिन १० लेती पांडुरोगनें रक्तपित्तनें का
मलारोगनें हलीमकरोगनें यांरोगानेंयोदूरिकरैछै ३ अथवात्रिफ
लाकोरस अथवा गिलवैकोरस अथवा दारहलदकोरस अथ
वा नींबकोरस यांरसांमैसहतमिलायदिन १० पीवैती पांडुरोग
कामला हलीमकायेसर्वजाय ४ अथवा दडघलकोरसनेत्रांमै
आंजैती पांडुरोगकामलारोगहलीमकजाय ५ योवैघरहस्पमैलि
थोछै अथवा चिरायती कुटकी देवदारु नागरमोथो गिलवै ७
दोल धमासो पित्तपापडो नींबकीछालि सूँठि कालीमिरचि पीप
लि चित्रक त्रिफला वायविडंग यांनैबराबरिले पाछैमिहीपीसि
यांबराबरिईमैसारमिलावैपाछै ईनेटंक १। सहतसूँ अथवाछा
छिसूँरोजीनांलेती पांडुरोगनें कामलानेंहलीमकनें सोजानें प्रमेह
नें संयहणीनें सासनें वासनें रक्तपित्तनें बवासीरनें आमवातनें

१३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंगः ४

मोक्षार्थं कीदृशं यां रोगान् योऽप्यष्टादशंगः अवलेहद्विरकरैश्चैधयोभा
वप्रकासमैकल्यैश्चैः अथवा कडवीतूबीकागिरिकारसकीनांसदे
तौ तत्कालपीत्योजाय ७ अरपांडुरोगवालो जंब गौह चावल मूंग
ग अरहड मसूर येषाय इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजरंज
राजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनाम ग्रंथे
अजीरणमंदाग्निभस्मक विसूचिका अलसविलोवकाकुमिरो
गपांडुरोगयां कीउत्पत्तिलक्षणजतन निरूपणं नाम चतुर्थस्तरंगः
संपूर्णम् ४ अथ रक्तपित्तरोग कीउत्पत्तिलक्षणजतनलि
ष्यते घणालावडा में रहवासं घणाषेदसं घणाचालिवासं घणा
मैथुनसं तीषावस्तकाषावासं पणसोचसं गरमवस्तकाषावासं
सारीवस्तकाषावासं लण पटाईकाषावासं कडवीवस्तकाषावासं
यांसं पित्तदग्ध होय शरीर का लोहीने दग्ध करैछै तदिवें को लोही दोय
तरह करि प्रवर्त्त होयछै येकरुपर ये कनीचै २ ऊपर तो नाक मां हि
कर नेत्रां में कान में मूढा में यां में प्रवर्त्त होयछै अरलिगेंद्रि में योनि में
गुदा में यां हारांनीचै प्रवर्त्त होयछै अरपणो लोही कुपित्त होयतौ स
र्वबालां माह प्रवर्त्त होयछै अथ रक्तपित्तको पूर्व रूप लिष्यते
अंगा में पीडा होय ठंडिसुहावै मूढा में धूबानी कलै वमन होय लोही
की मूढा में आवै ग्रेलक्षण होय तदिजाणि जै रक्तपित्त होसी अथ
कफकार रक्तपित्तको लक्षण लिष्यते जाडो पीलो चाकणो मोरका
चंदवासिर को लोही होयतौ कफको जाणिजे अथ वायकार रक्तपि
त्तको लक्षण लिष्यते कालो मांगा समेत मिहां धारनें लीयां लूणो लो
ही होयतौ वायको जाणिजे अथ पित्तकार रक्तपित्तको लक्षण लि
ष्यते वैरका कांटा सिरको कालो गोमूत सिरको स्याही सिंही सो ची

कणो इसो लोही होय तो पित्त को जाणिजे अरये सर्ब लक्षण लोही में
 मिलै तो संनिपात को जाणिजे नांक मूंदो आंघि कान में होय लोही जा
 य तो साध्य जाणिजे सुदालि गयो भिमें होय करि जाय तो जाप्य जाणि
 जै दोन्युं मार्ग सूं जाय तो असाध्य जाणिजे अथ रक्त पित्त काउ प
 द्रव लिप्यते रोगां सूं जी को पीण सरीर होय अरबू दो होय लंपन क
 रतो होय दुर्बल होय जी कै यो रोग असाध्य छै अरसास बास ज्वर
 वमन मदलियां पांडू रोगी कै दाह मूर्छा अथै र्वान कै हियो दूषतो
 होय जी कै निसवाला कै अतीसारवाला कै भोजन की अरु चिवाला
 कै इतना की होय तो उपद्रव जाणिजे अर रक्त पित्त वाला नैं आकास
 भी लाल दोषे सो असाध्य अर लोही दाछै अर लाल जी काने त्र होय
 अर लोही की जी कै डंकार आवै अर सरबन्न लोही सो देखै तो ओ अ
 साध्य अथ रक्त पित्त को जतन लिप्यते त्रक सीरवाला नैं मूदां
 में लोही पड़े जी नैं जुलाव दीजे हर डै त्रिफला निसीत किरभा लो यां
 का जुलाव सूरक्त पित्त जाय १ अर नीचरला मार्ग कारक्त पित्त धम
 न सूं जाय २ अथ वा बस कमलगंठा अर डू सो गिलवै मंहलीठी
 महुवो नागर मोथो रक्त चंदन धणो ये सारा बराबर लेयां कोटंक
 २॥ कोकाटोस हतनां पिले तो रक्त पित्त जाय ३ अथ वा फूल प्रियं
 गु लोद रसोन चांक की मांटी अर डू सो यां नैं बराबर ले पाछै टंक
 २॥ कोकाटोस हत मिश्री मिलाय दिन १० ले तो रक्त पित्त जाय ४ अ
 थ वा दोब कारस की अथ वा दांखू का फूलां कारस की अथ वा अ
 लता कारस की अथ वा हर डै की सीतल जल में वांटी तीं कारस की
 नास दे तो नंक सीर डू रि होय ५ अथ वा दोब आंबल वांटी माथा कै
 ले पं करै तो नंक सीर दू जल काल बंध होय ६ अथ वा पक्का गूलरिका

फल अथवा लवारा अथवा द्यव ये सहतसूषायतौरक्तपित्तजा
 य ७ ये सारावेद्यविनोदमैलिष्याछे अथवा धणों आंबला अरडू
 सो दाष पित्तपापडो ये साराबराबरिले पाछें टंक ५ सीतलजलमें
 भेग्रवें पाणीमें बांदि छाणि पीवें तो रक्तपित्तजाय जुंर दाह तिस सो
 स ये भी जाय ८ अथवा भिनका दाष चंदन लोद फूल प्रियंगु ये ब
 राबरिले यानें मिही बांदि सहतसूदिन १० चटें तो रक्तपित्तजाय
 सर्वप्रकारको ९ अथवा वसंतमालती रस बोलवद्ध पर्पटी रस पा
 छैलिष्याछे त्यांसू भीनक सोर आछी होय १० अथवा प्याज के रस
 की नांस ले तो नक सीर बंध होय ११ अथवा सौ १०० बार को धोयो घृ
 तमस्तग किले पकरें तो नक सीर बंध होय १२ अथवा बडो पकोपे
 बोले तो का बीज छोट दूर करि पाणीमें वें नें पकाय वें नें टंडो करि गा
 दा वस्त्र सूवें पेठा को जल काटे श्रीजल जुदा घास एमैराषे अरपेरा
 नें कडाही घृत घालित लिखे पेरो करै बलिवादेन ही पाछें वें पेठा कार
 समै मिथी की चासणी करै पाछें बेचासणीमें वें पेठानें नांषे अरपीप
 लिटका २१ भर सुंदिटका २१ भर जीरोटका २१ भर गणौदंक ५ पत्रज
 टंक ५ इलायची टंक ५ गिरचिका ली टंक ५ तज टंक ५ वंसलोचन
 टंक ५ यानें मिही बांदि वें चासणीमें नांषे अरपाव ११ सहत दू चासणी
 में नांषे पाछें ई नैटका ११ तथा २१ भर रोजी नांषाय तो रक्तपित्त नें पि
 त्तजर नें तिस नें दाह नें प्रदर नें घात नें वमन नें स्वर भंग नें पास
 नें सांस नें क्षय नें यांसारा नें यो पेठा को अवलेह दूर करै छे अर
 सरीर नें धणो पुष्ट करै छे इति पेठा को अवलेह अथवा इलाय
 ची पत्रज वंसलोचन तज दाष पीप छि ये सारी पई सा पई सा भि
 ले पाछे यानें मिही बांदि मिथी टका ११ महलोटी टका ११ दाष टका ११

छवाराटका ॥ भर यानेभिहींवादि बाँमेंमिलायसहतटंक ॥ मेंगोली
 बांधें गोली १ रोजीनांषायतौ रक्तपित्तनें सासनें पासनें पित्तज्वरनें
 हिचकीनें मूर्छानें मदनें भ्रमनें तिसनें पसवाडाकीसूलनें अरुविनें
 सोसनें ज्वरभगेनें क्षयीनें योयलादिरुटिका यांरोगानेंदूरिकरैछै
 अरुपुष्टाईकरैछै इतियेलादिरुटिका येजतनवेंद्वारइस्यमेंलि
 ष्योछै इतिरक्तपित्तकाजतनसंपूरणम् अथराजरोगकीउ
 त्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते राजरोगतोपंच ५ प्रकारकोछै नाय
 को १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ हियामेंचोटलागिवाको
 अरसोसरोगछ ६ प्रकारकोछै येकतौस्थियांकाघणासंगकरिवासं
 १ घणसोचसूं २ गंभीरादिकघणअरहियामेंचोटघणीलागीहोय
 जासूं ३ मार्गकाघणाचालिवासं ४ घणाषेदसूं ५ बूढामणसूं ६
 अथराजरोगकीउत्पत्तिलिष्यते मलमूत्रप्रभोवायकारोकिवा
 सूं अरवीर्यकाक्षीणपणसूं घणासाहसपणाकरि आपसूंनहोय
 सोकरैतिसूं विगारिसमेंघणाभोजनकरिवासूं यांसूंयोत्रिदोसरूपी
 राजरोगपैदाहोयछै सोईरोगमेंकफप्रधानछै सोयोक्कफघणांस्त्री
 संगकरिवासूं रसनैंचहवावालीनाड्यांनैरोकैछै वीर्यनैषीणकरैछै
 पाछैसारीधातानैषीणकरैछै तदिअ्योमनुष्यदिनदिनसूकिवालागै
 याईकीउत्पत्तिछै अथराजरोगकोपूर्वरूपलिष्यते सास अं
 गामेंपीडा पासीकरिकफकोथूकिवो तालवाकोसोस वमन अग्नि
 कीमंदता पीनस पासीनीदघणीआवै आंषांकोसुपेदहोवो मां
 टकाषावाकीइछा मैथुनकीइछारहै येलक्षणमनुष्यकैहोयतौजा
 रजे राजरोगपैदाहोयसी अथराजरोगकोलक्षणलिष्यतेसं
 १मेंअरपसवाडामेंसंतापहोय अरवैकहाथपगबलै अरसर

९७ अमृतसागरं तथा प्रतापसागरं तरंग ५

बांगमेंजुरर है तदिजाणिजै ई कैराज रोग छै १० अथवा भोजन मात्रमें
रुचिन होय खुर होय सास पास होय मूँदा में लोही आवै अरस्वरभंग
होय ये छै ६ लक्षण होय तो जाणिजे योराज रोग छै २ अथवा यकाराज
रोग को लक्षण लिख्यते स्वर भेद होय सूँल होय कांथा अरपस बाडा
को संकोच होय तो वाय को जाणिजे अथपित्तकाराज रोग को लक्ष
ण लिख्यते खुर होय दाह होय अतीसार होय लोही मूँदा में आवै तो रा
ज रोग पित्त को जाणिजे अथ कफकाराज रोग को लक्षण लिख्यते मांथो
भाखोर है भोजन में रुचिन हीर है पास होय कंठ सूबो ल्यो जाय न ही तो
राज रोग कफ को जाणिजे ३ येग्यारा ११ सर्व लक्षण मिल्या होय तो रा
ज रोग सन्निपात को जाणिजे ४ अथ हिया में त्रोट लगि वासूं उप
ज्यो जोराज रोग ती कोराज लक्षण लिख्यते मिर में पीडा होय मूँदा
में सूँलो ही को यमन होय सरीर लक्षोपहि जाय ओराज रोगी असाध्य
जाणिजे १ अथ वासुपेद सूपेद जी के आंभि होय अन्न काषावा में अ
रुचि होय अरसास को रोग जी के वधि जाय रजी के प्रमेह को रोग घणो
होय जाय अरघणो मूँते ओराज रोगी मरि जाय २ अथ ईराज रोग की
अवधिलिख्यते भलों सास्त्र को बेत्ता सर्व जतन उगे रै क्रिया में कुसल
इसो वैद्य तो जतन को कर्त्ता मिलै अर ओरोगी तरुण होय अर द्रव्य वा
म होय वैद्य कहै सो करै अर जिनें दी होय सो भी दिन हजार १००० तां
ई जीवै उपरांतिन हीं जीवै अथ कुंकसाध्यराज रोग को लक्षण लि
ख्यते जी के खुर न हीं होय अर बोबलवान होय अर वैद्य औषदि कड
बाँकसायली दे जीनें बाय जाय अर भूषजी की तीव्र होय अर सरीर पु
ष्ट होय वैराज रोगी को जतन करजे १ अथ घणो में शुन कर वासूं उ
पज्यो जो स रोग ती को लक्षण लिख्यते लिंगे ई में पोता में पीड होय

मैथुनकरि वामैशक्तिन होय पाछै हाडांको नास होय अरराज रोग काउ
 पदव कट्यासो होय सरिर पीलो होय चिंताग्रस्त होय स्थिर अंग होय
 येलक्षण होय तदिजाणिजे ईकै मैथुन करि सो सहबोछै अर सोच कर सो
 सरोगहुबो होय तींको भीयो हीलक्षण छै ये कई मैचार्य को क्षय नहीं २
 अथ यजरा सो सीको लक्षण लिख्यते कस होय जाय वीर्य बुद्धि बल
 येजातार है सरिर कांपै भोजन में अरुचि होय घांघोबोले अर कफ य
 णोथूकै सरिर भाखो होय पीनस होय लूषो सरिर होय ये जीमें लक्षण
 होय तदिजाणिजे योजरा सो सी छै ४ अथ मार्ग सो सी कालक्षण लि
 ख्यते अर यजरा सो सी कालक्षण संमित्या छै पणिवे कौहिया में पीडनहीं
 होय ५ अथ गंभीरादिक ब्रण सूं उपज्यो जो सो सतीं को लक्षण
 लिख्यते घणीतीरं दाजी करि वासूं भार काउठा वासूं यां सूं हिया मैजो
 र आय पड़े अर घणो मैथुन करै लूषो घाय तदिवे काहिया मै यो रोग पै
 दा होय तींको हियो घणो दूषे पसवाडा दूषे अंग सूं के अंगामे कांपणी
 होय अर वीर्य बल वर्ण रुचि अभिये सर्व घटि जाय लोहा छांदे लोही
 मूतै पसवाडो पीठिकाटिये दूषे अर ज्वर होय आबै गरीब सो होजा
 य अतीसार होय पासी होय ये सर्व लक्षण होय तदिजाणिजे ईकै ब्र
 ण सो सको रोग छै अथ राजरोग अर सो सरोग यां काज तन लि
 ख्यते वंसलोचन टंक ८ पीपलिटंक ४ इलायची टंक २ तज टंक १ मि
 श्री टंक १६ यां नैमिही बांटिस हत मांषन कै साथि चारै तीं राजरोग में
 सास बास नै पित्त ज्वर नै पांसू कासूल नै मंदाग्नि नै अरुचि नै हृथ
 पगां का दाह नै रक्त पित्त नै यां सारनेयो दूर करै छै यो सितोपलादि अ
 बलेह छै अथ वा गिलोय सत सार ये टंक १ ले पाछै स हत मांषन सूं
 चारै तीं राजरोग जाय २ अथ वा भाखो पागे ३ भाग सौना की राष २

मैणसिल १ भाग गंधक १ भाग यांसारांनैयैकटाकरि वडीपीलीकौडी
 मेंभरै पाछेबकरीकादूधमेंसुहागानैवांरि वेसुहागासूखं कौड्यांका
 मूदानैमूदेपछेवां कौड्यांनैकूल्हडीमेंमोल्ह पामदेगजपुरमेंपूंकदे
 पाछेस्वांगसीतलहुवांवेनैकाटे योराजमृगांकरसछै ईनैरती ४ मही
 नो १ वर्द्धमानपीपलिसूं पीपलि ३सूं २१ ताई सहतमांषनमिलायतौ
 राजरोगमुकरजाय योराजमृगांकरसछै ३ अथवा भीमसेनीकपु
 रतंक ५ तजरतंक ५ कंकोलमिरचितंक ५ जायफलतंक ५ लवंगतंक
 ५ नागकेसरतंक ७ पीपलितंक ८ सूठितंक ९ यांसर्बकीबराबरिमि
 श्री यांनैमिहींवांरिसहतउगेरै अनेकअनूपानसूतंक १ लेतौ राजरो
 गनै अरुचिनै क्षयिनै सासनै पासनै गोलाबवासीरनै वमननै कंठ
 कारोगनै यांसारांनैयोदूरिकरैछै ४ योकपूरादिचूर्णछै अथवा सो
 पीगंधकतंक ५ अभ्रकतंक ५ सोधोपारोतंक ५ हांगलूतंक २॥ मैणषि
 लतंक १ प्रथमपारागंधककीकजलीकरै पाछेईमेंयेऔषदिमिलावै
 पाछेयांसारांसूंआधोईमेंसारमिलावै पाछेवरलमेंयांनैघालि यांकैस
 तीवरीकारसकीपुट १४ देरईनैसुकायले पाछेरती २ तथा ३ मिश्रीवैसा
 धिपातःसमैषायतौ राजरोगनै नायपित्तकफकारोगांनै सर्जज्वरनैयो
 दूरिकरैछै योकुमुदेस्वररसछै येसारावैघरहस्यमेंछै अथवा चौला
 ईरांधितंमैघृतघालिनित्यभोजनकरैतौराजरोगबहुमूत्रतादूरहोय
 ५ अथवा ह्वांआंबलाबडापकापांचसै ५०० लेत्यांनैजलमेंपकावै
 लांकोरसकाटे वैरंसमै पचास ५० टकाभरिमिश्रीकीचासणीकरिचांदा
 काचासणमें पाछेईचासणीमेंयेऔषदिनांघेंसोलि पूंछूं भिनकादाष
 अगरचंदन कमलगटा इलायची हरडैकीछालि काकोली बीरकाको
 ली रिडिं हडिं मेदमहामेदजीबकरिसभ गिलवै काकडासांगी पौह

करमूल कचूर अरडूसो विदारीकंद परैटी जीवन्ती सालपर्णी पृष्ठपर्णी
 दोन्धूंकटाली बीलकीगिरि अरण्य अरल कुंमेर पाठ नागरमोघो ये
 सर्व औषदिकठका भरले त्यानें निपट मिहीं वांटे ईचावलाकासंजो
 गकीमिश्नाकीचासणीमें नाषे पाछे ईचासणीमें टका ६ भरसहतना
 षे पाछे ईमें पीपलिटका १। भरनांषे पाछे ईमें तजटंक २। पत्रजटंक
 २। नागकेसरिटंक २। इलायचीटंक २। वंसलोचनटंक २। भर यानेमि
 हीवांटे ईचासणीमें नाषे पाछे यांको येकजीव करिटका १। भर रोजीनां
 पायनौ राजरोगनें सोसरोगनें योचिमनप्रास अवलेह दूरिकरेंछे
 अरयोबलकर्त्ताछे सरारनें पुष्टकरेंछे अरबूटापणानें दूरिकरेंछे अ
 रसरारनें जुबानकरेंछे ७ इतिचिमनप्रास अवलेह संपूरणम्
 अथवा अरडूसाकोरस अरकव्यालीकोरसटका १। भर तीमें सह
 त १। भर पीपलिटंक २। मिलाय रोजीनां पायतौ राजरोग दूरि होय
 ८ अथवा मुगांक १ भाग पारो १ भाग मोतीअवांध २ भाग सोधां
 गंधक २ भाग प्रथमपारागंधक कीकजलीकरि येयामें मिलाय कां
 जीमें दिन १ भरलकरे पाछे ईकोगोलोकरि सरावामें मेलिवैकैकप
 उमिटीदे अरलएसूंभांडोभरितीकैवीचिसरावोमेलिदिन १ आंच
 देवैनैपकायले तदिऔसीतल होय पाछे बैनैकादें औकुमुदेस्वर
 रससिद्धि होय पाछे ईरसनैरती १ तथा २ प्रभात हीमिश्नाकैसाथ
 लेतौ राजरोग जाय इति कुमुदेस्वररसः ९ येसर्व वैद्यविनोदमैलि
 थोछे अथवा पिळीकौडावडीले अरपारागंधकनें चरावरिले तीं
 कीकजलीकरि वांकोव्यामै भरै कौडीकैसूंदैस हागो देसेककरि पा
 छे सरावामें वांकोव्यानें मेलि वेसरावानें गजपुटमें फूकिदे सीतल
 हुवांकावै पाछे ईनैरती १ पायतौ राजरोग सोसरोग सासनै पासनै

संयहणीनें ज्वरातिसार येसाररोग ईरसम्पजायछै यो कपदेसररस
छै योरुदत्तमेंलिथ्योछै १० अथवा राजरोगसेसरोग बालाने येव
स्तहितकाराछै सोलिपूछूं साठ्याचावल गौहूं जव भूंग हिरणकोभा
स कुलस्थ बकरीकोघृत बकरीकोदूध मीठीदाऊं आवला येसाराआ
ख्या येवुंदमेंलिथ्योछै ११ अथवा सिलाजीतसुद्धकासेवासंराजरोग
जाय १२ योचरकमेंलिथ्योछै अथवा तालीसपत्रदंक १० चित्रकदं
क १० हरडैकीछालिदंक १० अनारदाणदंक १० डांसरुदंक १० अज
मोददंक २॥ गजपीपलिदंक २॥ अजवायणदंक २॥ ऊरुंषकीजड
दंक २॥ जीरोदंक २॥ धणोदंक २॥ जायफलदंक २॥ लवंगदंक २॥ तज
दंक २॥ पत्रजदंक २॥ इलायचीदंक २॥ यांकीबराबरिमिश्रीले पाछै
यानेमिहींवाटिदंक २ रोजीनांबकरीकादूधमेंलेतौ राजरोगनें स्यो
रोगनें पीनसनै फीयानै अतीसारनें मूत्रछुनै पांडुरोगनें वायपि
त्तकफरोगनें प्रमेहनें योचूरणदूरिकरैछै १३ इतिमहातालीसदि
चूरण योहरीतमेंलिथ्योछै अथवासूठि कालीभिरचि पीपलि त
ज पत्रज इलायची लवंग जायफल वंसलोचन कचूर बाबची अ
नारदाणां येसाराबराबरिले पाछैयानेमिहींवाटि यांबराबरिईमै
चोषोसारमिलावे पाछैयांबराबरिईमैमिश्रीमित्तायदंक २॥ ईनै
रोजीनांबकरीकादूधकैसाथिलेतौ राजरोगनें मंदाग्निनें बीसप्रमे
हनै योदूरिकरैछै अरसशिरनें पुष्टकरैछै १४ इतिगगनायसंचूर
णम् १४ अथवा लवंग कंकौल भिरचि षस चंदन तगर कमल
गट्टा कालीजीरो इलायची अगर नागयैसरि पीपलि सूठि चित्र
कनेत्रवालो भीमसेनी कपूर जायफल वंसलोचन यांसारांनै बरा
बरिलै यांसारांकीआधीमिश्रीले पाछैदंक १॥ रोजीनांवायतौ राज

रोगनें मंदाग्निनें पासनें हिचकाने संयहणीनें अतीसारनें भगंदरनें
 प्रमेहनें योदूरिकरैछै १५ इतिल वंगारिचूरण अथवा यासौअभक
 दका २। भर भीमसेनीकपूरमासा ४ जावनीमासा ४ बसमासा ४ तेज
 पत्रमासा ४ लवंगमासा ४ तालीसपत्रमासा ४ दालचिनीमासा ४ दाल
 चिनीकाफूलमासा ४ धावडाकाफूलमासा ४ हरडैकीछालिमासा ६ आं
 वलांमासा ४ बहेडाकीछालिमासा ६ सुंदिमासा ६ अथमपारागंधक
 कीकजलीकरै पाछैकजलीमेंयेओषदिमिहांवांदिवैमौमलाययेक
 जीवकरै पाछैपाणीसूंचणांप्रमाणईकीगोलीबांधै पाछैमौली ४ रो
 जीनांसीतलजलसूंचायतो राजसेगनें सौंसनें सासनें पासनें सूलनें
 प्रमेहनें वमननें अमलपित्तनें अरुचिनें संयहणीनें वांतरक्तनें यां
 सारांरोगांमै यागोलीदूरिकरैछै शरीरनेंपुष्टकरैछै १६ याभृंगारी
 भृङ्गसुदिवाले अथमधुपक्कहहरडैकीक्रियालिष्यते दस
 मूल पीपलि चिचक कौंछिकाबीज बहेडाकीछालि कायफल काक
 डासांगी देवदारु सारीकीजड धणौ लवंग किरमालाकीगिरि गोष
 कूषधायरो कूठ इंद्रायण येसारीओषदिरंका २ दोयभरलीजे सोया
 नेजोकूटकरिसेरसौला १६ पकाजलमेंयांओषद्यांनैनांषि अरओष
 षद्यांकीछारचोषामोटीहरडैबडीसेर १४ पकांनांषि मधुरीआंचसूं
 मदकीमैघालिओटाइजे ओढ्यांपाछैवांहरडैकीपाणीकादि वानेव
 दीकरै पाछैचोषीसहतमेंनांषिदिनपांचराषिजे पाछैवांहरडैनेंसह
 तमेंसूंकादि औरसहतमेंनांषिजे सहतमेंडूबारहै इसीतरींदिन १५
 तांईराषिजे पाछैवानेओसूंकादि महीनां १ तांईऔरसहतमेंराषि
 जे सहतमेंडूबारहै पाछैवांहरडैसमेंतसहतफावासणमें तज ५
 अज नागकेसरी इलायची पीपलि यांसारांकोचूर्णदका ८ भरभि

ह्रींवांदिईमैमिलाय दीजे पाछैहरउँ १ रोजीनां पायती राजरोगसोस
 रोग बास सास हिचकी वमन जुम मूत्रकृच्छ्र प्रमेह नातरक्त ववासीर
 संग्रहणी रक्तपित्त दाह विभूति औंवा कोटमृगी पांडुरोग थांसारो
 गानैइहमधुपकहरडेइरि करैछै १७ इतिमधुपकहरडेकीविधि
 संपूरणम् याधनंतरिसंहितामेंलिख्योछै अथवा पुराणोगुडसेर
 ३१ अरब्यादाकोरससेर ३१ ईरसमेंगुड कीचासणी करै मधुरी आंच
 सूं पतली ईचासणीमें तज पत्रज नागकेसरि इलायची लवंग सूं
 ठि कालीमिरचि पीपलि येसारीऔषदिटकायेकेकभरिले त्यांनैमि
 ह्रींवांदिईमैमिलाय टकायेकेकभरिरोजीनां पायती राजरोगनै मंद
 अधिनै बासनै सासनै अरुचिनै यानैयोइरि करैछै १८ इतिआद्य
 कोअचलेह अथवा बकरीकादूधमें बराबरकोपाणि घालि तां
 मेंपीपलि ३ नांघै अरयेकेकरोजीनां वधै महीनायैकतांईवधावै प
 छैयेकेकघरावै अरवेंमैपाणीवलजिआय अरदूधआयरहै तदिपेहती
 तौपीपलिबाय पाछैओइधपीजायतौ राजरोगअर सास बास ये
 नातारहै योकासीनाथीपिदितमैलिख्योछै १९ अथवा भिन
 कायषसेर ४ पकाले त्यांनैमण १ पाणीमेंओरावै वैकोचतुर्याश
 रावै पाछैवेमैपुराणोगुडनांघै अरवेंमैबायविडंग फूलप्रियंगु तज
 इलायची पत्रज नागकेसरि येटकाटकाभरनांघितरुक्तायंत्रसूयां
 कोअर्ककाटै पाछैटका १ भर रोजीनीलेतौ राजरोगसासबास इरि
 होय २० योदाषांकोआसवछै योजोगतरंगिणीमेंलिख्योछै अ
 थवा मृगांक १ रूपरस २ तांमेस्वर ३ पाराकीभस्म ४ अभ्रक ५ ये
 येकेकभागवधताले पाछैयांनैयेकठामिलाय यांकेजुदीजुदीयेके
 कपुटदे प्रथम बायविडंगकी १ नागरमोथाकी १ कायफलेकी १ नि

गुंडीका १ दसमूलकी १ चित्रककी १ हलदकी १ सूठिकी १ कालीमिर
 चिकी १ पीपलिकी १ यांकीपुटदे पाछे गोलीरती आधप्रमाणबांधे
 गोली १ रोजीनांषायतौ राजरोग प्रासी फीयो गोलीजाय योपंचामृ
 तरसछै योसारसंघहमेंलिष्योछै अथवा वडासंषनैगडकासूत्र
 भैवाल्लि वैकीराषकरि वैकीबडी सुसि वणावै वैसुसिमें पारोटंक ५
 गंधकदंक ५ यांकीकाजलीकरिमेंले पाछेईकैकपडमिट्टीदे अर
 गजकुटमेंफूकिदे पाछेईनैसुसिसमेतवांटरती १ सहतसूलेतौ
 राजरोगजाय २२ योरसारणवमेंलिष्योछै अथवा थोहरिकील
 कडीआलीपाव ५ ले सींधोलूणटक १ भर संचललूणटक १
 भर सांभरोलूणटक १ भर बैंगणसेर ५ चित्रकटक २ भर यानै
 येकठावांदि सरावामेंमेलि गजपुटमेंफूकिदे पाछेईनैमासो १ भोज
 नउपरांतजलसूलेतौ ततकालभोजनपचै अरराजरोग सास ववा
 सीरजाय अरआंबततकालभस्महोय सूलजाय योक्षद्रादिकषार
 छै २३ योरसराजलक्ष्मीग्रंथमेंछै अथवासंषकीराष नींबुकार
 समेंबुजायकरि वाराषटक १ भरले अरचव्यटक १० जबवारदं
 क १० पांचूलूणटक १० सेकीहींगटक १० सूठिटंक १० कालीमिरचिदं
 क १० पीपलिटंक १० पारोटंक १० सोधोसींगीसुहरोटक १० सोधागं
 धकटक १० प्रथमपारागंधककीकजलीकरै पाछेकजलीमेंयेमिल
 वै पाछेनींबुकारसमेंगोलीचणप्रमाणबांधे गोली १ रोजीनालवंग
 कापाणीमेंलेतौ राजरोग संघहणी सूलगोल येसाराइरहोय २४ या
 संषवदीजोगतरंगीमेंलिष्योछै अथअगस्थिहरडैकीविधिलि
 व्यंते दसमूल कौंचकाबीज संषाहली कचूर वरैदी गजपीपलि
 आंधीआडो पीपलामूल चित्रक भाडंगी पौहकरमूल येसारीऔष

दिदोयदोयदर्काभरलीजे अरवडीहरडे १०० लीजे पाछैयांओषधानै
 जौकूटकरि सेरवीसपांणीमेंओषदिअरहरडेसाभिलकरीओढाजै पा
 छैओपाणीचतुर्थीसरहै तदिवेनैउतारि वैमाहिसंहसैकादीलीजै पा
 छैहरडेकीगुंठलीकादि हरडेनैवांदिराषै पाछैपुराणीगुडदका १००
 भरतीकीचासणीकरै बेचासणीमें ईहरडेकाचूननैमिलावै वैमैगड
 कोघृतदका ८। भरनांषैचासणीमेंपाछैईनैदका १। भररोजीनांषा
 यतौ राजरोगनै सोसनै पासीनै सासनै हिचकीनै विसमज्जरनै सं
 ग्रहणीनै ववासीरनै अरुचिनै पीनसनै याअगस्तिहरडेइतनांरोगा
 नैदूरिकरैछै अरसरीरनैपुष्टकरैछै भूषवधावैछै कोष्टनैसुद्धकरैछै
 २५ इतिअमृतहरडेकीविधि यावंदमैलिषाछै अथवा अर
 डसोदका १०० भरलेतीकोकाटोकरिचतुर्थीसराषिजे जुदोछाणि
 पोछैईकादाकारसमैदका १०० भरगुडकी चासणीकरिदका ८। भ
 र विलांकोतेलनांषै अरदका ८ भर गरुकोघृतनांषै अरईचा
 सणीमेंवडीहरडे १०० काबकलकोचूरणमिहींनांषै पछै पीपलि
 टंक २॥ पीपलामूलटंक २॥ कालीभिरचिटंक २॥ पौहकरमूलटंक
 २॥ चव्यटंक २॥ चित्रकटंक २॥ संहिटंक २॥ येमिहींचांदि ईचांस
 णीमेंयांकोचूर्णनांषै पाछैयांकोयेकंजीवकरि दका १। भररोजीनां
 पायतौ राजरोगभिअैदूरिहोय अरईसूं ववासीर पासी स्वरभेद
 मोजो अमलपित्त पांडुरोग उदररोग अभिमांघ नपूसकता येसा
 रा रोगईसूंजायछै याचरकमैलिषाछै २६ इतिराजरोगसोस
 रोगक्षयीरोगयांकीउत्पत्तिलक्षणजननसंपूरणम् अथ
 वासरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननलिष्यते अथवासकीउ
 त्पत्तिलिष्यते मूढामेंधूवांकाजावासूं मूढामेंधूलिकाजावासूं

लूषाअन्नकाषावासूं भोजनकाकुपथसूं मलमूत्रकारोकिवासूं ठीक
 कारोकिवासूं चिकदाईमूलीऊगैरैऊपरजलकापिवासूं यांसूंषास
 पैदाहोयछै याछैओषासहैसोहियाका प्राणपवनसूंमिलै अरओषा
 णपवनकंठकाउदानपवनसूंमिळि बांदोन्यांपवननैदुष्टकरै तदिबे
 दुष्टकंठकापवनहैसोवांकोशब्दकांसीकाफूटवासासरीसोहोय मूं
 दांसूंवेगदेरनीकलैतदि मनुष्यईनैषासकहैछै सोओषासरोगयांच
 ५ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ चोटलागिवाको ४ क्षया
 रोगको ५ अरअनुक्रमसूंषासहैसोपाछिलोपाछिलोवलवानजाणी
 जै वायसूंपित्तकोवलवान ईकमसूंजाणिल्यो अथषासकोपूर्व
 रूपलिप्यते कंठमैगलामैंकांटासापडिजाय कंठमैषुजालिआवै
 भोजनकस्योजायनहां तदिजाणिजेषासहोसी अथवायकाषा
 सकौलक्षणलिप्यते हीयामैं कनपट्टामैं मांथामैं उदरमैं पसवा
 डामैंसूलचालै मूंदोउतरिजाय बलपराक्रमस्त्रयेषीणपडिजाय
 गासधातांकंठमैविधाहोय सूकोषासैं दूदोसुरबोलै येलक्षणहोय
 तदिजाणिजैवायकोषासछै अथपित्तकाषासकोलक्षणलिप्य
 ते हियामैंदाहहोयज्वरहोय मूंदोसूकैं तीषोमूंदोरहै तिसलागै क
 उबोवमंनकरै सरीरपीलोहोजाय येलक्षणहोयतदि पित्तकोजाणि
 जै अथकफकाषासकोलक्षणलिप्यते कफसूंमूंदोलिपोरहै
 मथवायरहै भोजनमैंरुचिनहांहोय सरीरभास्त्रोरहै कंठमैषुजालि
 आवै कफकागलकाथूकैं येलक्षणहोयतोकफकाषासीजाणिजैअ
 थक्षतजषासकोलक्षणलिप्यते पणोस्त्रीसंगकरै भारउठावै
 मारगकाचालिवासूं जुद्धकाकरिवासूं घोडाहाथीकादोडावासूं क
 षाषावासूं वायहैसोहियामैंजाय षासनैप्रगटकरै ओषासप्रथम

सूकोषासै पाछैलोहीधूकै कंठघणोडुषै सूखचालै संधिसंधिमें
 पांदाचालै नुरहोयसासहोयतिसहोय स्वरधांधोहोय कबुतरकी
 सीनाईबोलबोकरै येलक्षणहोयतौ क्षतजकोषासजाणिजै अथ
 यक्षयीरोगसूंडपज्योजोषासतीकोलक्षणलिख्यते कुपथ्य
 अरविसमासनडगेरैकरै घणोंमेंधुनकरै मलमूत्रनैरोके घणों
 सोचादिककरै तदिमनुष्याकैमंदाग्निहोय वायपित्तकफतीन्युंको
 पै तदिईक्षयीरोगकाषासनैपैदाकरै तदिअोषाससरारनैबाण
 करै ज्वरदाहमोहयांनैकरै तदियोप्राणकोनासकरै सूकोषासैडु
 वलोहोतोजाय रुधिरमांससरारकोजातोरहै राधिधूकै तदियोअ
 साध्यजाणिजै अथषासकाअसाध्यलक्षणलिख्यते रायपित्त
 कफकीतौषासीसाध्य अरक्षतजरीरोगकीषासी अरक्षयीरोगकीषा
 सी असाध्यजाणीजै अरबूटाआदमीकीषासी असाध्यजाणीजै
 अथषासरोगकाजंतनलिख्यते लवंगदं८५ कालीमिरचिदं८५
 बहेडाकीबकलदं८५ धैरसारदं८५ यांनैमिहीवांदि बांबलकीब
 कलकाकादामेंगोलीरती२ भरकीबांधें गोली१ तथा २ त-३ रोजी
 नीदिन ७ षायतौ षासीजाय १ यालवंगादिककीगोलीलोखिंबरा
 जमेंलिखीछै अथवा पारोटं१ सोधीगंधकदं२ पीपलीदं३
 हरडैकीछालिदं४ बहेडाकीबकलदं५ काकडासींगोटं५
 यांनैमिहीवांदि बंबूलकाबकलकाकादाकीपुट २१ दे पाछैगोलीदं
 क१॥ भरकीबांधें गोली१ रोजीनांषायउपरिसूंसेदिकोकादोपीवै
 तौषाससुकरजाय २ यारससमूहमेंअरयोचिंतामणीमैलिख्योछै
 अथवा कालीमिरचिदं२॥ पीपलिदं२॥ दांड्यूकाछोडादं१०
 गुंडदका२॥ भरजवपारदं१॥ यांनैमिहीवांदि गोलीचलाप्रमाण

बांधै गोली २ तथा ४ रोजीनां पायतौ पासी जाय ३ अथवा पीपलि पो
 हकर मूल हरडै की छालि सूंढि कचूर नागरमोथो यानै मिहीवांदिगु
 दुमै गोली करै रता ३ प्रमाण गोली १ तथा २ त ३ पायतौ पासी जाय
 ४ अथवा सूंढिका काटासू पासी जाय ५ अथवा आदा कोरस
 सहत भिलायलेतौ पासी जाय ६ अथवा कट्याली गिलवै सूंढि
 पोहकर मूल येबराबरिले अरईमै अरडूसो भिलावै योक्षद्रादिक
 कोका दोछे तींसेतौ पासी जाय ७ अथवा ओटी कट्याली तींकोभ
 डी तो करिवे कोरस कादि यैरसमें पीपलि कोचूर्ण भिलाय रोजीनां पी
 वैतौ पास सास जाय ८ अथवा हरडै की छालि पीपलि सूंढि काली
 मिरचि यानै मिहीवांदिगुडमै गोली करि गोली १ तथा २ त ३ रोजीनां
 पायतौ पासी जाय ९ अथवा सूंढि टंक २॥ काली मिरचि टंक २॥
 पीपलि टंक २॥ अमल वेद टंक २॥ चव्य टंक २॥ चिक्र टंक २॥ जी
 रो टंक २॥ डांस स्या टंक २॥ तजमासा ४ पचजमासा ४ नाग केसरी
 मासा ४ यानै मिहीवांदि पाव ५। येक गुडमै टंक २॥ प्रमाण गोली
 बांधै गोली १ रोजीनां परभात पायतौ पास सास जाय १० अथवा
 लवंग टंक २॥ पीपलि टंक २॥ जायफल टंक २॥ काली मिरचि टंक
 ५ सूंढि पईसा ८ भग यांस बर्बकी बराबरि मिश्री पाछै यानै मिहीवांदि
 टंक २॥ जलसूंलेतौ पासीनै जुरनै प्रमेहनै अरुचिनै सासनै मंदा
 भिनै संयहणीनै यांसारंगोनां योचूर्ण दूरि करै छै इतिल वंगा
 दिचूरण ११ अथवा हींगल काली मिरची नागरमोथो सोधो
 सींगी सुहरो यानै बराबरिले यानै मिहीवांदि जंभीरी कारसमें सूं
 गप्रमाण गोली बांधै अथवा आदा कारसमें बांधै गोली १ रोजीनां पा
 यतौ सास जाय १२ अथवा काली मिरचि नागरमोथो कूठ वच

सोधोसुहरो यानेबराबरिले यानेआदाकारसमेंमिहोवादि मृगप्रमा
 णगोलीबांधे ओली१ रोजीनांषायती बासने मूलने कफकारोगने सू
 तकारोगने संगहणीने यांरोगानेयोगोलीदूरिकरेछै१३ अथवा बंगट
 क१ पीपलिटंक २ हरडेकीबकलटक ३ बहेडाकीबकलटक ४ अरडू
 सोटक ५ भांडगीटक ६ यांसारोंकीबसबरीषैरसारले पाछेयानेमिहा
 वांदि बांबुलकीबकलकाकादाकीपुट २१ दे अरसहंतसंगोलीबांधेच
 णाप्रमाणगोली१ रोजीनांषायती साल पांस सई येसारजाय १४
 इतिषासकर्तरी अथवा भामसेनीकपूरटक१ कस्तूरीटक ३ लव
 गटक१ मिरचिटंक २॥ पीपलिटंक २॥ बहेडाकीछालिटंक २॥ कुली
 जनटक २॥ दाल्यूकाछोडाटका१॥ बांसारोंकीबराबरिषैरसारयामें
 मिलावे यांसारोंनेमिहावांदिपाणीसूचणाप्रमाणगोलीबांधे गोली१
 रोजीनांषायती बासजाय १५ इतिकपूरादिगुटिका पेंसारज
 तनचेघरहस्यमेंछै अथवा आककाफूलांकीविचलीफूलां अरवां
 बराबरि मिरचि यांदोन्यानेवांदि चिरमाप्रमाणगोलीबांधे गोली१
 रोजीनांषायतीबासीजाय १६ अथवा आककाफूलांकीविचलीफू
 लां बाबराबरिलवंग यांकीगोलीरतीप्रमाणबांधे ओली१ रोजीनां
 षायतीबासीजाय १७ येरुद दत्तमेंलिथ्योछै अथवा पसरकटाली
 कोपचांगले सेर ५४ ईमैपाणीघालिकादोकरे ईकादामेहरडेसो १००
 वडीपकवै वेसाजिजायतदिकाटिलेकादांमांसो पाछेवानेसातल
 करि गुंडलीकादिवांटिले पाछेपुराणेरुडटका १०० मरलेतीकीचास
 णीकरे पाछेओहरडेकोचूरणवैचासणीमेंमिलावे पाछेवैचासणीमें
 येओबदिनांवेसोलिधूळूं सडिटका१ कालीमिरचिटका ३ पीपलि
 टका१ तजटका१ पत्रजटका१ नागकेसरिटका१ इलायचीटका१

भर येमिहींवांढिवेचासणीमेंनांषे अरसहतआधसेरईमेंनांषे पाछे
ईकोयेकजीवकरिटका१। भररोजीनांषायतौ सर्वप्रकारकीषासीजा
य१८ याभृगुहरीतकीछे अथकट्यालीकोअबलेहलिष्यते
कट्यालीसेर५४ कोकादेकरेईकाटामेसेर५४ मिथ्याकीचासणीकरि
ईमेंयेओषदिनांषे सोलिषूछं गिलवेटका१। काकडासींगीटका१।
चब्यटका१। चित्रकटका१। नागरमोथोटका१। सूंठिटका१। पीपलि
टका१। धमासोटका१। भाडंगीटका१। कचूरटका१। यानैमिहींवांढि
वेचासणीमेंनांषे ईमेंसेर५१ सहतनांषे बंसलोचनपाव५। ईमेंनांषेपा
छेईनैटका१। भररोजीनांषायतौ सरबप्रकारकोषासजाय१९इति
कट्यालीकोअबलेहसंपूरणम् येभावप्रकासमेंलिष्योछे अथ
वा अरडूसाकाकाटामेसहतनांषिपीवैतौषासीजाय२० अथवा
आककापान मेंएसिल सूंठि कालीमिरचि पीपलि येबराबरिले
तीकीगुडाबूषणावे वाहुकामेपीवैतौषासीनिअेजाय२१ अथवा पा
रो सोधोगंधक हीगळू सोधोसींगीमोहरो सूंठि कालीमिरचि पीप
लि सेकोसुहागो येबराबरिले पाछेपारागंधककीकजलीकरे पाछे
येओषदिमिहींवांढिईकजलीमेंमिलावे पाछेईकजलीनैभागराका
रसमेंदिन१ भरलकरे पाछेबजोराकारसदिन ३ भरलकरे पाछेई
कीगोलीरतीआधकीकरे पाछेगोला१ रोजीनांदिन१० षायतौ षासी
नै क्षयनै सग्रहणीनै सन्निपात मृगी यानेयोरसद्विरकरेछे२२इति
आनंदभेरवरससंपूरणम् इतिषास्रोगकीउत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूरणम् अथहिचक्रोरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतन
लिष्यते गरमवस्त वायलवस्त भारीवस्त लूपा सीलाने आदिलेर
जोवस्ततीक्ष्णषावासे सुषमैरजकाजावासे षेद काकरिवासें मार्ग

काचालिवासं मलमूत्रकारोकीवास्त्रं भूषारहवासं इतनीवस्तांसं मनु
 ष्यकैहिकीहोयछै सासषासपैदाहोयछै अथहिचकीकोस्वरू
 पलिष्यते गयहैसोदोन्धूपसवाडानै अरआंतानैदुःखदेरभूंदानैहो
 यकरवडाशब्दनैलोयांप्राणाकोनासकरतोथको भूंदामाहिसंभयंक
 रशब्दनैकाटैछैतीनेमनुयैहिचकीकहैछै सोओवायकफसंभिलिषां
 चपकारकीहिचकीनैकरैछै येकतो अंनजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभी
 रा ४ महती ५ अथहिचकीकोपूर्वरूपलिष्यते कंठहयोभास्यो
 होयभूंदोकसायलोहोयकूषिमैंआफरोहोय तदिजाणिजैईकैहिच
 कीपैदाहोसी अथअंनजाहिचकीकोलक्षणलिष्यते अंनघ
 णोषाय अरपाणीघणोंपीवैतांकारबायकोपेवेगदेर तदिओवायऊ
 र्ध्वगामीहोय मनुष्यकैअंनजाहिचकीनैपैदाकरै १ अथयमलाहि
 चकीकोलक्षणलिष्यते मोडीमोडीदोयदोयहिचकीचालैसिरकांधी
 नैकंपावतीथकी तीनैयमलाहिचकीकहिजे २ अथक्षुद्राहिच
 कीकोलक्षणलिष्यते मोडीमोडीमंदमंदचालै कंठहियाकीसंधी
 सं तीनेक्षुद्राहिचकीकहिजे ३ अथगंभीराहिचकीकोलक्षण
 लिष्यते नाभीसं भयंककरुटै जीमैंपीठघणी अनेकउपदवानैक
 रतीथकी तीनैगंभीराहिचकीकहिजे ४ अथमहतीहिचकीको
 लक्षणलिष्यते सर्वमर्मस्थाननैपीठतीथकी अरसर्वगात्रनैकंपा
 वतीथकीचालै वनेमहांहिचकीकहिजे ५ अथहिचकीकोअ
 साध्यलक्षणलिष्यते हिचकीचालतांजीकोसरीरकांपिठठै अर
 ऊंचीदृष्टीहोजाय अरअंधेरीआबजाय सरीरक्षीराहोजाय भोजन
 मैंअरुचिहोजाय अरठांकघणीआवै औलयेदोन्धूहिचकीगंभीरा
 अरमहती असाध्यजाणिजै अथहिचकीकोजतनलिष्यते शा

एणायमकाकरिवासूं कहींतरेंकाडरिवासूं भयंकरवातकांकहवासूं वा
 यअरकफघट्टेंदूषावस्तकाषावासूं हिचकीडूरिहोयछे १ अथवा ब
 करीकाइंधमेंसूंठिनेपचायऔंधूधसूंठिसमेतपीवैतौहिचकीजाय २
 अथवा बिजोराकोरसतीमेंजौकोसातू अरसींधोलूणमिलायषायतौ
 हिचकीजाय ३ अथवा सूंठि पीपलि सहतसूंचाटैतौहिचकीजाय ४
 अथवा मांषीकीवाडनेंधूधमेंवांठिवेंकीनांसलेतौहिचकीजाय ५ अ
 थवा गुडसूंठिपाणीमेंवांठिवेंकीनांसलेतौहिचकीजाय ६ अथवा कां
 सकीजडकोरसतीमेंसहतमिलायतीकीनांसलेतौहिचकीजाय ७ अ
 थवा मोरकीषांषकीरापसहतसूंचाटैतौहिचकीजाय ८ अथवा बिजो
 राकोरसतींधोलूणसूंठिमिलायषायतौहिचकीजाय ९ अथवा कवा
 रकापाखकोरसतीमेंसूंठिमिलायषायतौहिचकीजाय १० अथवा पो
 हकरमूल जनपार कालीमिरचि येबरावरिले यानैमिहापीसीदंक २॥
 गरमजलसूंलेतौहिचकीजाय ११ अथवा हलद उडद यानैवांठिनिधूं
 मंत्रंगारापरमेतिहुकामेधालिवेंकोधूवोपीवैतौभयंकरहिचकीजाय
 १२ येवैद्यविनोदमैलिप्याछे अथवा सणकीछालिकोचूरणकरि
 तीकोडूकोपीवैतौहिचकीजाय १३ अथवा सूंठि कालीमिरचि पीप
 लि जवासो कांभफल करेलण पीहकरमूल काकडासींगी येसबबराव
 रिले यानैमिहावांठिदंक २॥ सहतसूंचाटैतौ हिचकीजाय अरषासीसा
 सयेभीजाय १४ अथवा पित्तपापडो पीपलि येदीन्यूदंक २॥ गुडदं
 क ५ आंकोकाटोदेतौहिचकीजाय १५ अथवा असाल्यूदंक १० कोका
 टोकरिछाणिपीवैतौहिचकीततकालडूरिहोय १६ येवैद्यरहस्यमैलि
 प्याछे अथवा महलीदंक १॥ सहतसूंचाटैतौहिचकीजाय १७ अ
 थवा पीपलिदंक १॥ मिश्रीकैसाथिलेतौहिचकीजाय १८ अथवा

दूधमैघृतघालिगरमगरमपीवैतौहिचकीजाय १९ येसुथूतमैलिषो
 छै अथवा विजोराकोरस सहत संचरलूण येमिलायषायतौहिचकी
 निश्चैदूरिहोय २० योवैद्यसरचस्वमैलिषोछै अथवा कैथकोरस
 अथवा आंवलांकोरस तीमैसहतमिलायपीवैतौ हिचकी सासजाय
 २१ योकाशीनाथपद्धितयैलिषोछै अथवा इलायची १ दलचिनी
 २ नागकेसरि ३ काठीमिरचि ४ पीपलि ५ सुंठि ६ येवधतीवधतीले
 त्यांनैमिहांवाटि ईमैघृतमिलायअरयांसर्वबराबरिमिश्रीमिलाय
 टंक १॥ जलसूलेतौ हिचकीनै अजीर्णनै उदररोगनै ववासीरनै सा-
 सनै वासनै थारोगानैयोदूरिकरैछै २२ योएलादिचूरणचूंदमैलि-
 षोछै इतिहिचकीरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूरणम् अ-
 थसांसरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते ज्यांवस्तांकाषावा-
 सूंहिचकीपेदाहोय त्यांहांवस्तांकाषावासूसासरोगहोयछै सोबा-
 सासरोगपांच ५ प्रकारकोछै येकतौमहासास १ ऊर्ध्वसास २ छिन्नस्वा-
 स ३ तमकसास ४ क्षुद्रसास ५ अथस्वांसरोगकोपूर्वरूपलि-
 ष्यते हियोदूषे सूलहोय आफरोहोय मूलमूलउतरैनहीं मूंदोयैर-
 सकोस्वादआवेनहींकनपरिदूषे तदिजाणिजैसासरोगहोसी अथ-
 सांसरोगकोस्वरूपलिष्यते सर्वसरीरमेंफारंतोजोवाय सोकफ-
 संभिल्योसर्वनसानैरोकै तदिओवायफारिवासरहै तदिसासनैप्रग-
 टकरै अथमहास्वासकोलक्षणलिष्यते तदिमनुष्यसाससुंदुबा-
 डुबोथको उंचैप्रकारमस्तबलधकासीनार्इसासनिरंतरले अरनष्टह-
 ईछैसंज्ञाजींको अरनष्टदुबोछैग्यांनजींको अरजीकानेत्रतरतशटक-
 रै अरसासलेतौमूंदोफाटिजाय अरनेत्रफाटिजाय अरबोत्योजायन
 हींगरीवहोजाय अरवैकोसासदूरिसुरै येजीमैलक्षणहोय तदि

ओमहास्वासाजिजै ईसासवालोततकालमरिजाय १ अथउर्ध्व
 स्वासकोलक्षणलिख्यते ऊँतोसासलेनाचोआवेनहीं कफसंमूंदो
 भरिजाय ऊँचोदृष्टिहोजाय नेत्रतरतरकरै ईसाससंडुषीहुबोथको
 नेत्र अमतांहोजाय मोहहोयआवे ग्लानिहोयआवे येलक्षणहोय
 तदिउर्ध्वस्वासाजिजै योमनुस्यानेमारिजांषे २ अथछिन्नस्वा-
 सकोलक्षणलिख्यते सरवसरीपकापांचूपचनांसंघोडोथकोम
 लुष्वट्टोसंसले अथवा दुषीहुबोथकोसासनहींलेवैईकामर्मस्था
 नदूदजाय तदिआफरोहोयआवे प्रसेदहोय नेत्रफाटिजाय सासले
 तांनेत्रलालहोयजाय चेतजातोरहै शरीरकोवर्णऔरहोजाय वो
 प्राप्तिततकालमरिजाय ३ अथतमकस्वासकोलक्षणलिख्यते
 सस्तरकोषमनउलटोफिरिनासांनैरोकीदे तदिकांधीसारनैयकडि
 कफनैप्रगटकरो तदिओकफकंठमेंजायशब्दधुरधुरनैकरै प्रा
 णकाहरबावालासासनैप्रगटकरो तदिमनुष्यसासकाबेगकरिग
 निनैप्राप्तिहोय तदिबेकीअग्निरुकिजाय तदिषोषासैजदिमोहनै
 प्राप्तिहोय अरकफसंलूहै तदिदुषीहोय अरमुषमांहिसूंकफनी
 कलजातदिओघडीदोयैकसुषपावैतदिबेंसूंनोल्याजाय अरओ
 सोवैतदिसासहोयआवे तदिबेंनैनांदआवेनहीं बैद्योहीरस्थांचैन
 पडै अरगरमीसुहावै आंघांउपरिसोजोहोय ललाटमेंपसेवआवै
 मूंदोसूके धवणिकीसीनाईसासछे मेहकापवनसूंसीतलवस्तसूं
 ओवधै मधुरवस्तसूंवधै येलक्षणहोयतदि तमकसासजाजिजै
 योसासजाप्यछै ४ अथक्ष्मद्रस्वासकोलक्षणलिख्यते ज्वषीवस्त
 काषावासूं षेदकरिवासूं कोठामेंपवनहैसोक्ष्मद्रस्वासनैप्रगटक
 रै तदिबोमनुस्यानैयलोदुषदेनहीं अरमनुस्यांकीबानकीगतिनै-

११५. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ५

रोकै नही इंदियाने पीडा करे नही ये लक्षण होय तदि क्षुद्र स्वास जगिजे
 ५ यो बलवान पुरस के साथ छै क्षुद्र स्वास साथ तमक स्वास कष्ट सा
 ५ अरमहा स्वास ऊर्ध्व स्वास छिन्न स्वास ये तीनूं असाध्य प्राण का
 हरवावाला छै अथ स्वास रोग को जतन लिख्यते लक्षण मै तेल घालि
 सुहावतौ सुहावतौ हियाने से कैतौ सास दबै १ अथवा आदा को रस
 सहत मै मिलाय चाटे तौ सास जाय २ अथवा आदा को रस सेर ११ तीं
 मै संधि पाव १ बहेंडा की छालि पाव १ बकरी को मूत सेर १२ यां सारां
 नैगर मकरि कूं जाडो करै पाछे ई मै सहत सेर १॥ मिलाय टका १॥ भर
 रोजीनां पायतौ पास सास जाय ३ अथवा दस मूल कचूर रास्ना पीप
 लि संधि पौह कर मूल भाडंगी का कडा सींगी गिलवै चित्रक यां नैब
 राबरिले यां करो काटो टंक २॥ भर को रोजीनां ले तौ सास पास पसवा
 डा को मूल जाय ४ अथवा पेठा की जड को चूर्ण टंक १॥ गरम पाणी सूं
 लैतौ सास पास निश्चै जाय ५ अथवा हलद काली भिरचि दाष पी
 पलि गरुडा कचूर यां नैब राबरिले याने मिहीं बांटे टंक १॥ गुड अर
 कडवा तेल के साथि चाटे तौ सास को रोग निश्चै जाय ६ अथवा भाडं
 गी सेर ११ तीनें चौरायती को रस कादि ई मै टका सो १०० भर गुड की चा
 सणी करै ई चासणी में हरडै की छालि को चूर्ण सेर ११ नां बें चासणी प
 कता हीं मै पाछे चासणी दंडी दुवांटका ६ भर ई मै सहत जांघे संधि ट
 का १॥ भर काली भिरचि टका १॥ भर पीप लि टका १॥ भर तज टका १॥ भर
 पचज टका १॥ भर नाग के सरि टका १॥ जवषार टंक २॥ याने मिहीं बांटे
 वें चासणी मै मिलाय दे पाछे पर्ईसा १ भर रोजीनां पायतौ सास को र
 ग जाय पास बवासीर गोली क्षयी रोग उदर का रोग ये सारा जाय ७
 यो भाडंगी को चबले हूँ ये सारा जमन भाव प्रकास मै लिख्यो छै

अथवा पारोटक २॥ सोधोगंधकटंक २॥ सोधोसींगीसुहरोटंक २॥ कु
 लायोसुहागोटंक २॥ मैणसिलटंक २॥ कालीमिरचिटका २॥ भरसूठि
 टंक २॥ पीपलिटंक २॥ प्रथमपारागंधककीकजलीकरै तीमैयेबोषदि
 भिलावै पाछैईकैआदाकारसकीपुट १॥ दे पाछैरती १ रोजीनांषायती
 सासजाय २ इतिस्वांसकुमारसः अथवा पारो १ भाग गंधकआध
 भाग यांकीबराबरितामैस्वरले यांनैकवारकापाठांकारससूंपरलकरै
 पाछैईनैतांबाकीमाबीमैयालि बालकाजंभमैदिन १ पचायसिइक
 रै पाछैईरसनैरती २ पांनमैषायतीसासरोगजा इतिसूर्यावर्त्तरसः
 योवैद्यविनोदमैलिथोछै अथवा काकडासींगी सूठि पीपलि
 नागरमोथो पौहकरसूल कचूर कालीमिरचि यांनैबराबरिले अरयां
 कीबराबरिमिश्रीले पाछैयानैमिहीवांटिटंक २॥ गिलवै अरडूसो पीप
 लि पीपलामूल चय चित्रक सूठि यांकाकाटासूंयोचूरएलैतौ सास
 रोगजाय ११ योचक्रदत्तमैछै अथवा पीपलि पौहकरसूल हरडै
 कीछालि सूठि कचूर कमर्गट्टा यांनैबराबरिले यांकोचूर्णकरि यांब
 राबरिगुडसूंगोलीबांधैचणाप्रमाणगोली १ तथा २ त ३ रोजीनांषाय
 तीसासजाय १२ अथवा पारो गंधकसोधो सार सूठि कालीमिर
 चि पीपलि पत्रज नागकेसरि नागरमोथो वायविडंग सांभाल कपे
 लो पीपलामूल येसाशवांसूं दुणीलेपाछैयांसारानैमिहीवांटि जल
 पीपलीकारसकीपुट ३ दे पाछैईकीचणाप्रमाणगोलीबांधै गोली १
 रोजीनांषायती सासनै पासनै वंवासीरनै भगंदरनै हिलाकीसूल
 नै वांसूंकीसूलनै संग्रहणीनै उदररोगनै प्रमेहमात्रनै यांसारानैयो
 महोदधिरसडूरिकरैछै इतिमहोदधिरसः येसरवसंग्रहमैलि
 थोछै अथवा पारो सोधोगंधक सार सुहागो रास्ना वायविडंग

त्रिफला देवदारु सूंठि कालीभिरवि पीपलि गिलचै कमलगट्टा सोधो
 सांगीसुहरो येबराबरिले पाछेपारागंधककीकजलीकरै कजलीमेंये
 मिलायसहतसंरती १ तथा २ प्रमाणाकीगोलीबांधै गोली १ रोजीनां
 बायतौ सासरोगजाय १४ इतिअमृतार्णवरसग्रीवैद्यरहस्यमेंछे
 अथवा पारोगंधकबराबरिले त्यांकीकजलीकरि चौलाईकारस
 मैदिन ५ घरलकरै पाछेवज्रमुसिमैईनैपालिवालजंघमैईनैपकावे
 दिन १ पाछेईनैरती २ पानसंषायतौ सासहिचकीदूरिहोय १५

इतिमेषउंबरसओरुद्रदत्तमेंलिख्योछे इतिश्रीमन्नाराज
 धिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते
 अमृतसागरनामग्रंथे रक्तपित्तराजरोगक्षयीरोगसोसरोग
 बासरोगहिचकीसासरोगयांकीउत्पत्तिलक्षणजतननिरूप
 एनामपंचमस्तरंगःसंपूर्णम् ५ अथस्वरभेदरोगकीउत्पत्ति
 लक्षणजतनलिख्यते मनुष्यहैसोघणाबोलवासं काढासुरका
 पदवासं कंठकेकहींतरैकीचोटलागिवासं अरविसादिककाषावा
 सं कौपकोंप्राप्तहुवाजोवायपित्तकफ सोकंठकास्वरनैबहवावालि
 जोनसांत्यामैरहिअरस्वरकाभंगनैक सोओस्वरभंगहैसो ६ प्र
 कारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ संनिपातको ४ सरिरका
 स्थूलपणाको ५ क्षयीरोगको ६ अथवायकास्वरभंगकोलक्षण
 लिख्यते कालाछेनेत्रमूंदोमलमूत्रजीको दूदोथकोशब्दनैबोलै ग
 धाकोसोशब्दहोयतौवायकोस्वरभंगजाणिजे १ अथपित्तकास्व
 रभंगकोलक्षणलिख्यते नेत्रमूंदोमलमूत्रजीकापीडाहोय अर
 गलांमैंदाहहोय बोलवाकैसमै तदिपित्तकोस्वरभंगजाणिजे अ
 थकफकास्वरभंगकोलक्षणलिख्यते सदांहीकंठकफसंरुद्धो

रहै अरमंदमंद दोहसौबोलोजाय रात्रिमेंवधजाय तदयोस्वरभंगक
 फकोजाणिजे ३ अथसन्निपातकास्वरभंगकोलक्षणलिख्यते
 जीमेंवायपित्तकफकासर्वलक्षणमिलेंतीनैसन्निपातकोस्वरभंग
 हिजे योअसाध्यहै ४ अथक्षयीरोगकास्वरभंगकोलक्षणलिख्य
 ते बोलतांमूढांमेंसूंधूवानीसरै सोक्षयीरोगकोस्वरभंगजाणिजेसो
 असाध्यहै ५ अथसरीरका मोटापणांसंउपज्योजोस्वरभंगती
 कोलक्षणलिख्यते गलाकैमांहिहींबोलैशब्दजाण्यजायनहीअर
 मोडोबोलै गलोबोलै तिसघणीलागे जीकैयेलक्षण होयतौसरीरका
 मोटापणांकोस्वरभंगजाणिजे ६ योभीआछओनही अथस्वरभं
 गकोजतनलिख्यते वायकोस्वरभंग होयतौलूणतेलकीवस्तुवा
 वासूंजाय १ पित्तकोस्वरभंगघृतकाअरसहतकाषावासूंजाय २ क
 फकोस्वरभंगक्षत्रीकडवीअरसहतउगेरैकाषावासूंजाय ३ अथ
 वा गलाकोतालवाकोमसूदांकोलोहीकटावासूंस्वरभंगजाय ४
 अथवा गरमजलकापीवासूंवायकोस्वरभंगजाय ५ घृतगुडकाषावा
 सूंवायकोस्वरभंगजाय ६ गरमदूधकापीवासूंपित्तकोस्वरभंगजा
 य ७ पीपलि पीपलामूल कालीभिरचि यानैगोमूत्रसूंपीवैतौकफ
 कोस्वरभंगजाय ८ अथवा कट्वालीटका १०० भरले ईसूंआधोपीप
 लामूलले ईसूंआधोचित्रकले चित्रकबरबरिदसमूलले यानैमण
 येकपालीमेंओटावै ईकोपालीसेर ५४ रावै अरपाणीछाणिले पा
 छैईपालीमेंटका १०० भर पुराणागुडकीचासणीपतलीकरै पाछै
 ईचासणीमेंयेओषदिमिहीवांटिनांषै ईमेंसहतसेर ५१ नांषै पाछैट
 का ३ तथा ३शेजीनांषायतौ सर्वप्रकारकास्वरभंगनै सासषास
 नै मंदाग्निनै गलाकारोगनै आफरानै मूत्रछूनें यांसारानैयोदिर

करैछे ९ इतिकठ्यालीकोअबलेह येसाराभावप्रकासमैलि
 थाछे अथवा अजमोद हलद चित्रक जवषार आबला येसाराब
 राबरिले यानैमिहींवांरिदंक १॥ घृतसहृतकैसाधिचाटैतौ भयंकर
 भीस्वरभंगजाय १० अथवा हरडैकीछालि वच पीपलि यानैमिहींवां
 रि गरमजलसूंलेतौ मेदकोस्यारीरोगकोस्वरभंगजाय ११ येबैद्य
 विनोदमैलिथाछे अथवा बहेडाकीछालि पीपलि सांधोलूण
 आबला यानैमिहींवांरिगडकीछालिसं अथवा गोभूतसूंलेतौस्वर
 भंगजाय १२ योचुंदमैछे अथवा जायफल पीपलि बाल बिजोरा
 कीकेसरी येसारामिहींवांरिसंहतैचाटैतौस्वरभंगजाय अरस्वरनि
 पदचोभोमिहींहोजाय योजायफलकोअबलेहछे योसर्वसंग्रह
 मैछे १३ अथवा कुलीजनमूंदामैराषेबेंकोरसचूसैतौस्वरभंगजा
 य १४ अथवा चय्य अमलवेद स्रंठि कालीमिरचि पीपली डांसरुआ
 पत्रजे तज जीरो चित्रक इलायची येसारीबराबरिले यानैमिहींवां
 रिदंक १॥ पुराणातिरुणायुडमैलेतौ स्वरभंग पीनस कफकारोग
 अरुचि येसाराजाय १५ इतिचव्यादिचूर्ण अथवा पाराकीराखं
 तामेस्वर सार येबराबरिले तीकै कठ्यालीकाफलांकारसकीछुट २१
 दे पाछेबेकीगोलीमूंगप्रमाणबांधै गोली १ मूंदामैराषेतौस्वरभंग
 दूरिहोय ओगोरषनाथजीकीगोलीछे १६ अथवा ब्राह्मी वच
 हरडैकीछालि अरडसो पीपलि यानैबराबरिले यानैमिहींवांरिदं
 क १॥ सहृतकैसाधिदिन १४ लेतौस्वरभंगनिश्चैजाय अरवेंकोस
 रकिन्नरकोसोहोजाय १७ येसाराजतनवैद्यरहस्यमैलिथाछे
 इतिस्वरभंगरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूरणम् अथ
 अरोचकरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिथते सोचसं कोथ

सं मोहसं अतिलोभसं उरपवासं मनपकड्यौजाय इसाभोजनसं
 अरबुरीतरैकारूपकादेवीवासं बुरीतरैकागंधकासं धिवासं तदिम
 लुप्याकै वायपित्तकफहसोअरुचिनामरोगनेपेदाकरैछै श्रोवाअरु
 चिपांचप्रकारकीछै वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ सो
 कादिककी ५ अथवायकी अरुचिको लक्षणलिख्यते पादोक
 सायलोमूंदोहोय हियामेंसूलचालै अरुचिजातीरहै भोजनसं तोपा
 यकीअरुचिजाणीजै १ अथपित्तकीअरुचिको लक्षणलिख्य
 ते कडवा पादो गरम विरस सलणोजीकोमूंदोहोय अरसशिरमें
 दाहहोय मुषसोसहोयतोपित्तकीअरुचिजाणीजै २ अथकफकी
 अरुचिको लक्षणलिख्यते मूंदोमीरोहोय अरचिपचिपोहोय स
 शिरभासोहोय बंधकुष्टहोय लालपडै सरीरमेंजागांजागांपीडाहो
 य भोजनमेंअरुचिहीयतौ कफकीअरुचिजाणीजै ३ येसर्वमितै
 तदिसन्निपातकीअरुचिजाणिजै ४ अथसोकादिकसंयजीजो
 अरुचितीको लक्षणलिख्यते पेटमेंभूषलागैमूदांमेंचलैनहीं
 ५ यासोकादिककीअरुचिजाणिजै अथअरुचिकोस्वरूपलिख्य
 ते मूदांमेंअन्नकोगासलेतदिपुरसनेकूंभीसांदआवे नहीं तदिजा
 णिजैईकैअरुचिकोरोगछै अथभुक्तहैसको लक्षणलिख्यते भो
 जनकोचिंतवनकस्यौ अथवा भोजननेंदेख्योतदिओ भोजनरुचै
 नहीं तदिवेकैभुक्तहैसनामकहजे अथअरुचिरोगकोजतन
 लिख्यते भोजनपहलीसींभोल्लणलगाय आदोषायतौ अरुचिजाय
 मुषलागै कंठजीभसुद्धहोजाय अरसहतआदकोरसर्मिलायपीवै
 तौ अरुचि सासवासजाय २ अथवा पंकीआमिलीकोसरबतमि
 श्रीघालिकरै तीमेंइलायचीलवंग भीमसेनी कपूरकोप्रतिवासदे

अरयोसरवतषाय अथवा ईकाकुरलाकरैतौ अरुचिजाय ३ अ
 थवा राईजीरो सेकीहींग सूंठि सीधोल्लण येमिहींवांदि अनुमान
 माफिकगऊकादहींकोमढीकरितीमेंये घालिपावैतौ अरुचिजाय
 भूषवधै अथवा गऊकादहीनैवस्वसंछाणितीमेंमिथ्रीमिलाय अ
 रईमैइलायची लवंग भीमसेनीकपूर कालीमिरचि येअनुमानमा
 फिकईमेंमिहींवांदिनांषिषायतो अरुचिततकालजाय ५ इति
 सिषरणिक्कीक्रिया अथवा अनारदांणाटका २१ भर मिथ्रीटका १
 सूंठिटका १ कालीमिरचिटका १ पीपलिटका १ तजटंक २॥ पत्रजटं
 क २॥ नागकेसरिटंक २॥ यांनैमिहींवांदिटंक २॥ जलसूरोजीनांले
 तौ अरुचिजाय पासीजाय ६ इति दाडिमोटिचूरण अथवा
 लवंग कंकोल मिरचि षस चंदन तगर कमलगट्टा काछोजीरो नेत्र
 बालो अगर नागकेसरि पीपलि सूंठि चित्रक इलायची भीमसे
 नीकपूर जायफल वंसलोचन येसर्षबरावरिले यांसारांसंख्या-
 धामिथ्रीले पाछैयानैमिहिपीसिटंक १ रोजीनाजलसूंलेतौ अरु
 चिनै मंदागिनै क्षीणपणानै बंधकुष्टनै आसीनै हिजकीनै राजरो
 गनै संग्रहणनै अतीसारनै प्रमेहनै यांसारांरोगांनैलवंगादिचू
 रणंदूरिकरैछै ७ येसाराजतनभावप्रकासमैछै अथवा सौंफ
 जीरो कालीमिरचि डांसखां अमलवेद संचरल्लण गुड सहत मि
 जोत्राकीकेसरि तज पत्रज वंसलोचन डोडोंकीबीज अनारदांणा
 जीरो येसाराअधेलाअधेलाभरिले अरपीपलि पीपलामूल चय
 चित्रक सूंठि कालीमिरचि अंजमोद डांसखां अमलवेद आसगंध
 अजवायण कैथ येमीअधेलाअधेलाभरले मिथ्रीटका २१ भरले
 यांनैमिहींवांदिटंक २॥ रोजीनांजलसूंलेतौ अरुचिनै सासनै

१२२ ॥ अमृतसागर तथाप्रतापसागरंतरंग ६

पासनें सूलनें वमननें रक्तपित्तनें यांसारंगोंगोंनेयो दूरिकरैछै ९
 इतिब्रह्मदेलादिकचूर्ण योंसारसंग्रहमेंलिखोछै अथवाजब
 पार साजी सेकोसुहागो पांचूल्हणसंछि कालीमिरचि पीपलि त्रि
 फला सार मीमसेनीकपूर लवंग चय चित्रक अनारदाणों अंसखा
 आदो येसबबराबरछे यांनेंमिहींवारि अजवायणकाअर्ककीपु
 दतीन ३दे पाछेंनींबूकारसकीपुट ५दे पाछेंअमलवेदकारसकीपु
 ० ३दे पाछेंईरसकीचणाप्रमाणगोलीबांधें गोली १ रोजीनांषायतो
 अरुचिनें मंदाग्निनें गोलांनें प्रमेहनें आसनें पासनें कफनें नानाअ
 नूपानसूं योअग्निकुमाररसदूरिकरैछै १० इतिअग्निकुमारर
 ससंपूर्णम् योसर्वसंग्रहमेंछै इतिअरुचिरोगकीउत्पत्ति
 लक्षणजननसंपूर्णम् अथछर्दिरोगकीउत्पत्तिलक्षणजनन
 नलिष्यते घणीपतलीवस्तकाषावासूं घणीचीकणीवस्तकाषा
 वासूं सूरगलीचकाषावासूं पेटमेंहमिकापडिवासूं दुरगंधकादेष
 वासूं स्त्रीकैगरभकारहवासूं अतिउतावलाभोजनकाकरिवासूं वा
 यपित्तकफयांसूंइष्टहोय अंगानें पीडाकरताथकासूंदाऊपरदौड
 सूंदाद्वाराषायोपीयोसर्वकदायदेछै तदिईनेमनुस्यछर्दिकहैछै सो
 बाछर्दिपांच ५ प्रकारकीछै वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपा
 त ४ सूरगलीवस्तनेंआदिलेनींकारेबंवाकी ५ अथछर्दिकोपू
 र्वरूपलिष्यते हियासूंषारोषादोप्रथमहीनीकलै अरंडकारआ
 वैनहीं लालपडनैलागै षारोसूंदोहोजाय अन्नपानउपरिरुचिजा
 तीरहै तदिजाणिजैवमनहोसी अथवायकीछर्दिकोलक्षण
 लिष्यते हियामेंपसवाडामेंपीडाहोय सुषसोसहोयमथवायहोय
 नाभिदुषै पासहोय स्वरभेदहोय डकारकोशब्दउंचोहोय वमनमें

१२३ अमृतसागर तथा प्रताप्रसागर तरंग ६

जाग्रावे वमनकोरंगकालोहोय कसायलोहोय घणोवेगसूंथोरोछा
 दै छदतांडुषघणोपावै जांमैयेलक्षणहोयतौ बायकीछर्दिजाणिजें
 अथपित्तकीछर्दिकोलक्षणलिप्यते मूर्छाहोय तिसहोय सुष
 सोसहोय माथोतातोहोय तालवो नेत्रयेताताहोय अंधेरीआवैभोलि
 आवै अरउंडुंहस्यो लंगरमनैलीयांछादै येलक्षणहोयतौपित्त-
 कीछर्दिजाणिजें २ अथकफकीछर्दिकोलक्षणलिप्यते तंद्रा
 होय मूंदोमीरोहोय कफछादै नांदआवै भोजनमैअरुचिहोय स
 शीरभाखोरहै बीकणो मादोजाडो कफलीयांछादै रोमांचरहै येलक्ष
 णहोयतदिकफकीछर्दिजाणिजें ३ अथसन्निपातकीछर्दिको
 लक्षणलिप्यते सूक्ष्महोय अन्नपचैनही अरुचिहोय दाहहोय ति
 संहोय सासहोय प्रमेह येसाराघणानिरंतररहै अरसल्लणोपाटो
 लीलोजाडो उंनो खल इसोवमनहोयतौसंनिपातकीछर्दिजाणिजे
 अथसूगलीचस्तनैआदिलेरतीकोदेषवासूंउपजाजोछर्दि
 तांकोलक्षणलिप्यते उत्क्लेदहोय छर्दिकरवालागिजाय ५ अ
 थछर्दिरोगकाजतनलिप्यते ५ एं सूंठि दसमूल यांकाकादसूं
 बायकीछर्दिजाय १ अथवा घृतमेंसांधोलूणापालिपीवैतौबायकी
 छर्दिजाय २ अथवा मूग आंवला यांनैऔराययांकोरसकाटि ईमें
 घृतअरसांधोलूणानांधिपीवैतौ बायकीछर्दिजाय ३ अथवा उदद
 मूग मसूर जय यांकाचूनकीराच करितीमेंसहतनांधिपीवैतौपित्त
 कीछर्दिजाय ४ अथवा आंवलाकारसमेंचंदनसहतमिलायपीवै
 तौपित्तकीछर्दिजाय ५ अथवा पित्तपापडाकाकाथमेंसहतनांधि
 पीवैतौपित्तकीछर्दिजाय ६ अथवा गिलचै नांचकीछालि पराल
 त्रिफला यांकोकाटोकरितीमेंसहतनांधिपीवैतौपित्तकीछर्दिजाय ७

अथवा माषीकीबीठ मिश्रीचंदनसहतसूंचादेतौपित्तकीछर्दि
जाय८ अथवा पीलांकोसातूधृतमिश्रीसहतमिलायपायतौपि
तकीछर्दिजाय ९ अथवा मसूरकोसातूमिश्रीमिलायपायतौपि
तकीछर्दिजाय १० अथवा दांडूकारसमेंसहतनांषिपीवैतौवायपि
तकफकीछर्दिजाय ११ अथवा चांवलांकापाणीमेंसहतनांषिपी
वैतौपित्तकीछर्दिजाय १२ अथवा इलायची नागरमोथो नागकेस
रिचांवलांकीपील गौरीसर चंदन बहुफली बोरकीमीगीलवंग
पीपलि येवसवरिले यानेंमिहीपीसिटंक ३ तथा २॥ सहतसूंचा
देतौ त्रिसोसकीछर्दिजाय १३ अथवा पीपलकाछोडानैबालि
पाणीमेंबुझायओपाणीपीवैतौछर्दिजाय १४ अथवा बोरकीमां
गी आंवलांकीमांगी पीपलि मांषीकीबीठ यांकोकादोकरितीमें
सहतमिश्रीमिलायपीवैतौछर्दिजाय १५ येसर्वजबीनोदमैलिथो
छै अथवा जामुणिका आंवका पल्लवलेत्यानैओरायपाणीकरि
वेपाणीमेंपीलांकोचूननांषिसहतमिलायवेनैपीवैतौभयंकरभी
छर्दिजाय १७ अथवासंगलीवस्तसूउपजीजोछर्दितीनैआछीव
स्तदिषायांछर्दिजाय १८ अथवा अरआंवसूउपजीजोछर्दितीनै
लंघनकरायांछर्दिजाय १९ येजतनभावप्रकाशमेंछै अथ
वा केसरिमासो १ इलायचीमासो २ हांगलूरती २ यानेंसहतसू
चादेतौछर्दिजाय २० इतिछर्दिरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननसं
पूर्णम् अथतिसरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननलिख्यतेभयसंषे
दसू बलकानासथकीवध्योजोपित्तहैसोवायसूमित्यौ अरताल
वानेंप्राप्तिहोय तिसकारोगनैप्रगटकरैछै अरजलनैबहवाबाली
नसानैरौकिंकरि येवायपित्तकफहैसोसातप्रकारकीतिसनैकरै

छैसोलिबूँछूँ वायकीतिस १ पित्तकी २ कफकी ३ शस्त्रादिककीचोट
 सूँउपजी ४ बलकानाससूँउपजी ५ आँबसूँउपजी ६ भोजनकरिवा
 सूँउपजीजोतिस ७ अथतिसरोगकोस्वरूपलिख्यते निरंतर
 पाणीपीतोजाय अरवृत्तीहोयनहीं अरपाणीपीवाहीभैमनरहै
 तदिजाणिजेईकैतिसरोगछै अथवायकीतिसकोलक्षणलि
 ख्यते मूँदोउतरिजाय कनपटीअरसिरमेंपीडाहोयआँबै नसांरू
 किजाय मूँदामेंसूरसकोस्वादजातोरहै ठंडोपाणीपीयांतिसव
 धेतदिजाणिजेवायकीतिसकोरोगछै अथपित्तकीतिसकोलक्ष
 णलिख्यते मूर्छाहोयभोजनथारोलागेनही दहहोय नेत्रलाल
 होय मुषमेंघणोसोसहोयठंडिसुहावै मूँदोकडबोहोय सरीरमें
 तापहोय मलमूत्र नेत्र पीलाहोय येलक्षणहोयतदिपित्तकीति
 सकोरोगजाणीजे २ अथकफकीतिसकोलक्षणलिख्यते
 जठराग्निनैकफरोकैतदिअग्निकीगरमीहैसौजलनैवहवाली
 नसांनैसोसि अरकफहैसोमनुस्यकैतिसनैउपजावैछै तदिवें
 तिसकरिपाडितमनुस्यहैसो नींदनैसरीरकाभास्वापणानैप्रा-
 सीहोयछै अरवेंकोमूँदोमीदोरहै अरओमनुस्यसूकतोजायत
 दिजाणिजेईकैकफकीतिसछै ३ अथशंखादिकांकीचोट
 सूँउपजीजोतिसतिकोलक्षणलिख्यते शस्त्रादिकांकाला
 गिवासंसारकोलोहीनीकलैतींसुं पीडाहोयतदिघणीतिसला
 गै ४ अथक्षणात्तासूँउपजीजोतिसतींकोलक्षणलिख्य
 तैहियोदूषे कंपहोय मूँदोसूकै सरीरमेंसून्यताहोय तिसघ
 णालागै पीतोपीतोधापैनहीं ५ अरयेहीलक्षणआँबकीतिस
 काजाणिजे ६ अथभोजनरूपशान्तितिसलागैतींकोलक्षण

१२६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ६

लिप्यन्ते घणौचीकणौषादोसत्त्वणोभास्यो अन्नपायोहोय तदि
ततकालतिसजायै ७ अथतिसकाउपद्रवलिप्यन्ते अरमु
षकोस्वरवैरिजाय कंदगलो तालबोसूकै अरज्वरमोहसासवा
सयेहोयतौ वेतिसवालोमरिजाय अथतिसरोगकाजतन
लिप्यन्ते गायकीतिसवालात्रैगरमअन्न अरजलच्याछ्यातीस
गायकीतिसजाय १ अथवा दहीगुडसूंवायकीतिसजाय २ अ
थपित्तकीतिसकोजतनलिप्यन्ते सोनोरूपोगरमकरिबैपाणी
मैलुजायपाछैओपाणीपीवैतौपित्तकीतिसजाय ३ अथवा
मिश्रीकाठंठासर वनसूंपित्तकीतिसजाय ४ अथवा धणूंरात्रिनै
भैवैपछैवेनैप्रभातघोंटवेमैमिश्रीमिलायपीवैतौपित्तकीतिस
जाय ७ अथवा दाजूंकासर वनमैमिश्रीमिलायपीवैतौपित्त
कीतिसजाय ८ अथवा सीतलजगामैरहवासूं अरजलकीडा
सूं सीतलवस्त्रांकापहर वांसूं पित्तकीतिसजाय ९ अथवा क
पूर चंदन अगरकालगावासूं पित्तकीतिसजाय १० अथकफ
कीतिसकोजतनलिप्यन्ते तिषीकडवी ऊंहीवस्तकाषावासूं
कफकीतिसजाय ११ अथवा उवंगकाकाढासूंफकीतिसजाय
१२ अथवा जीरो सूंठि संचरल्लण यांकोचूरणजलसूंलेतौकफ
कीतिसजाय १३ अथवा सुंदरमघकषीवासूं कफकीतिसजाय
१४ अथक्षीणताकीतिसकोजतनलिप्यन्ते सार्वाकारससूं
तिसझरिहोय १५ अथवा बडकाअंभूर महलौदी पील कम
लगदा यांनैमिहीवांदिगोलीकरि मूंदामैराषैतौतिसजाय १६
अथवा मोषाकोगुंदमूंदामैराषैतौतिसजाय १७ अथवा भिजो
राकीजड कैथ दाजूंकीजड चंदन लोदबोकीजड यांनैजलमैमि

ही बाँटिसारकेले पकरैतौ तिसदाहसोसप्रेसाराजाय १८ अथ
 शस्त्रप्रहारसंयुज्जोति सतीकोजतनलिष्यते वकराका
 लोहीकापीवासूं योतिसजाय १९ अथवा वकराकासौरवामैस
 हतमिलायषायतौ शस्त्रप्रहारकीतिसजाय २० अथवा वीरयौमि
 आमिलायषायतौ योतिसजाय २१ अथआंबकीतिसकोलक्ष
 णलिष्यते वच बीलकाकादासूं आंबकीतिसजाय २२ अथदु
 र्बलआदमीकीतिसकोजतनलिष्यते दूधकापीपासूं ईकीति
 सजाय २३ तृषासंडुधीपुरुषमोहनैप्राप्ताहोय मोहसूंमनुस्यप्रा
 णानैछोडिदे ईकारणकहींअवस्थाकैविषैमनुस्यहैसोजलनैच
 ज्योनहांजलथोडोथोडोसदाहीपीवै येंजतनवैद्यविनोदमैअ
 रभावप्रकासउगेरैसर्वग्रंथामैलिष्योछै इतितिसरोगकी
 उत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथमूर्छामोहप्रमत्त
 दानिद्रासंन्यासयारोगांकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते
 वीणपुरसकै धणकुपथकाकरवावालीकै मलमूत्रकाशोकिवा
 सूं चोदफालागिवासूं यांसंपुरसकै बाहरलैइंदियांजोनेवकर्ण
 नेआदिलेत्यांमै वायपित्तकफधसिकरिसंज्ञानेवहवावालीजोन
 सांल्यांनैवेवायपित्तकफरोंकिअरअंधकारनैनतकालवेप्राप्तहो
 यमनुस्यनैकाष्ठकीसीनाई पृथ्वीउपरिनांधिदेछै सोतेनैसुषुप्त
 पसोग्यात्तरहैनहींतनैवैद्यहैसो मूर्छाअरमोहकहैछै सोवामू
 र्छा ६ प्रकारकीछै वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ लोहाकी ४
 मद्यकी ५ गिसकी ६ यांचवांहीमूर्छा गिसौपित्तहैसोसुष्यप्रधान
 छै अथमूर्छाकोसामान्यस्वरूपलिष्यते कुपथकोसेवावालो
 अरहीनछै पराक्रमजीको अरसीण अरमद्यादिककोपीवावालो

असोजो पुरसतीकै अग्यान को हेतु असोजो तमोगुण पित्त रूप सो
 बंध करि ग्यान रूप ऐसो जो सतोगुण अरर जो गुण त्यागै छादित करि
 अरदसौं इंद्रियां का स्थाना कै बिसै । वाय पित्त कफ है सो ग्यान नै बहवा
 वाली जो न सांत्थानै आछादन करि ओसुषुषुको नाष को करवागलो
 असो अग्यान को हेतु जो तमोगुण सो बधि वेगंदे करि कै मनुष्य को पृ
 थ्वी पारिकाष्ट की सी नार्नाधि देछै सो वे नै वै दह सो मूर्छा कहै छै १ अ
 थ मूर्छा को पूर्व रूप लिख्यते हियो दूषै जंभाई घणी आवै मन मै
 ग्लानि होय आवै संग्या की दुर्बलता होय जाय तदि जाण जे ई पुरस
 कै मूर्छा को रोग होसी अथ वाय की मूर्छा काल क्षण लिख्यते
 आकास नीलो अथवा कालो अथवा लालजी नै दिसै पाछै अंध
 कार मै प्रवेश होय करियां न होय पाछै सरीर कां पै अंगामै फूटणी
 होय हियो दूषै सरीर कस होय लाल काली जी नै छाया दीषै येल
 क्षण जे कै होय तां कै वाय की मूर्छा जाणिजे अथ पित्त की मूर्छा
 को लक्षण लिख्यते आकास लाल हस्यो पीलो जी नै दीषै पाछै वे
 नै मूर्छा आवै पाछै पसेव आवै तदि ग्यान होय अरती सलगै स
 रीर मै संताप होय लाल पीछा जी का नेव होय मुषमां हिंसं दूदा अ
 क्षरनी सरै सुद्धनी कलै न हीं सरीर की कांति पाली होय जाय तदि
 पित्त की मूर्छा जाणिजे २ अथ कफ की मूर्छा को लक्षण लिख्यते
 मेघ की घट नै लीयां आकास जी नै दीषै पाछै वे नै मूर्छा आवै पा
 छै मोडो जी नै ग्यान होय अरजी को सरीर जाड़ा पसेवां सेती व्यास
 होय अरलाल जी कै यणी पडै कउ ओगर मथू कै तौ कफ की मूर्छा
 जाणिजे ३ अरसर्वलक्षण मिलै तदि संनिपात की मूर्छा जाणिजे
 यामूर्छा मृगी की तुल्य छै सगली वस्तु देखां विनां ही आवै ४ अथ

सोहीकीमूर्छाकोलक्षणलिप्यते मनुष्यनैलोहीकीदुर्गंधिआय
 पृथ्वीअरआकासअंधकाररूपहीदीसै अरसर्वत्रलोहीकीवासआ
 वैनिश्चलहुइहोय सासआछीतरे आवैनहीं पाछैमूर्छाआवै तदि
 वैकैलोहीकीमूर्छाजाणिजे ५ इसीतरहचंपाकापुष्पादिकांकासूं
 पिबासूंमूर्छाहोयछै योईकोसुभावछै अथमंघकीमूर्छाकोल
 क्षणलिप्यते घणोमघपीयांमनुष्यवकैघणो अरसोयजाय पा
 छैसंग्याजातीरहै अरपृथ्वीपरहाथपगपटकैजैठाताईवैमंघको
 सरीरमेंअमलरहै सरीरकांपै सोवैघणो तिसलागै येलक्षणहोय
 तदिमंघकीमूर्छाजाणिजे ५ अथविसकीमूर्छाकोलक्षणलिप्य
 ते विसबायोहोयजींकोसरीरकांपै अरनींदघणीआवै तिसघणी
 लागै संज्ञाजातीरहै मूंदोकालोहोजाय अतीसारलागजाय भोज
 नमेंरुचिजातीरहै यैजींमैलक्षणहोयतदिविसबायाकीमूर्छाजा
 णिजे ६ अरतमोगुणअरपित्तकाआधिक्यपणातेमूर्छाहोयछै
 अथभ्रमकोलक्षणलिप्यते अररजोगुणअरवायपित्तमिलै
 तदिभ्रमहोयछै अथतंद्राकोलक्षणलिप्यते तमोगुण अरवा
 यकफमिलैतदितंद्राजाणिजे आधानेब्रह्मत्यारहै अथनिद्राको
 लक्षणलिप्यते तमोगुण अरकफमिलै तदिबेपुरषकोमनबेद
 कूंप्राप्तिहोय अरदसूंइंद्रियांभीषेधकूंप्राप्तिहोय तदिबेइंद्रियां
 हसोआपकाविसयनेग्रहणकरैनहीं तदिपुरससोवै अथस
 न्यासकोलक्षणलिप्यते हियामैरहताजोवायपित्तकफयेदो
 षसूंवाणीदेहमनकीचेष्टाकूंग्रहणक्रीनिर्बलपुरषकूंकाष्टकी
 सीनाईमूर्छितकरैछै तीनैसन्यासकहिजे अथमूर्छाकोजत
 नलिप्यते तिलांदिकांकासेकसूंवायकीमूर्छाजाय १ अथपित्त

कीमूर्छाकोजतनलिष्यते सीतलसरबतमात्रसंपित्तकीमूर्छाजा
 य २ चमत्कारीमणिकाधारिवासंसूर्छाजाय ३ कपूरचंदनउगैरै सी
 तलद्रव्यकालेपसंसूर्छाजाय ४ अथवा बोरकीमींगी सीतलमिर
 चि षस नागकेसरि येच्यारुंदंक ५ ले यांनैभिजोयसीतलजलसं
 भिजोयसरबतकरिईमेंसहतमिलायमित्रीमिलायपीवैतौमूर्छाजा
 य ५ अथवा मांदांदाऊंकासर्वतमेंमित्रीमिलायपीवैतौमूर्छाजा
 य ६ अथवा भिनकादधोकासर्वतमेंमित्रीमिलायपीवैतौमूर्छाजा
 य ७ अथवा साबलनै जलमेंघसिअंजन करैतौमूर्छाजाय ८ अथ
 वा सिरसकाबीज पीपलि मिरचिकाठि सींधोलूण येगोमूतमेंवांदि
 अंजनकरैतौमूर्छाजाय ९ अथवा मैणसिल वच लसण यांनैगोमू
 तमेंवांदिअंजनकरैतौमूर्छाजाय १० अथवा मैणसिल महुवो सींधो
 लूण वच कालीमिरचि येबराबरिले यांनैजलसंभिहींवांदिनासदेतौ
 मूर्छाजाय ११ अथलोहीकीमूर्छाकोजतनलिष्यते सर्वसीतल
 जतनसंयामूर्छाजायछे १२ अथमद्यकीमूर्छाकोजतनलिष्य
 ते मद्यकीमूर्छाविसैंथोडोसोमद्यऔरपावैतौमद्यकीमूर्छाजाय
 १३ अथवा सोवासंसूर्छाजाय १४ अथविसकीमूर्छाकोजत
 नलिष्यते विसपावावालानैबमनकराजेमेंटलसं अथवा लिला
 यूथासं अथवा फिटकडीसं गरमपांणी पीपलि उगैरैकहींतैरैब
 मनकदावैतौविसकीमूर्छाजाय १५ अथवा पीपलि मासूँपारो
 तामेसुर षस नागकेसरि येबराबरिले यांनैरती १ सीतलजलसंदे
 तौ सर्वप्रकारकीमूर्छाजाय १६ अथभौलिकोजतनलिष्यते
 धमासांकाकादामेंघृतनांषिपीवैतौभौलिजाय १७ अथवा हर
 डे आंवलांकाकादामेंघृतनांषिपीवैतौभौलिजाय १८ अथवा

स्रष्टि पीपलि सौंफ हरडेंकीछालि येदकादकाभरले गुडरकाधभ
 रले तांकीगोलीरंक ५ भरकीकरै गोली १ रोजीनांषायतौभौलिजी
 य १९ अथतंद्राअतिनिद्राकोजतनलिष्यते सींधोदण कपूर
 सरसू मैणसिल पीपलि महुवाकाफूल यानैघोडाकीलालसूँमि
 हांवांदिअंजनकरैतौतंद्राजाय अरअतिनिद्रायेदोन्यूंदूरिहोय २०
 अथवासहजणांकाबीज सींधोदण सरसू कूट यानैबकराकासू
 तसूँमिहांवांदिनासदेतौ तंद्राअतिनिद्रायेदोन्यूंजाय २१ अथवा
 कालीभिरचि सहजणांकाबीज स्रष्टि पीपलि येबराबरिके यानैअ
 गथ्याकारसमैमिहांवांदिनांसदेतौतंद्राजाय २२ येसाराजतनभाव
 प्रकासमैछै अथवा स्रष्टिकारसमैसहतमिआमिलायपीवैतौसू-
 र्छाजाय २३ अथवा कौंछकीफलीकालगावासूँमूर्छाजाय २४
 इतिमूर्छाभयतंद्रानिद्रासंन्यासयांरोगांकीउत्पत्तिलक्षणज
 तनसंपूर्णसू इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराज
 द्रथीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथेस्व
 रभेदअरोचकछर्दिमूर्छानैआदिलेरयांकाभेदसंयुक्तउत्प
 त्तिलक्षणजतननिरूपणनामषष्ठः स्तरंगः ६ अथमदा
 त्ययोरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते जोखुणविसभक्षण
 मैछैसोहाखुणमद्यकापीबांमैछै बुरीतरैषणी कुपथ्य कैसाधि
 जोपुरषमद्यपीवै वैकैमदान्यनैआदिलेरघणारोगहोयछैईसा
 सैयद्यआछीतरसूंपीबोजोग्यछै ईनैआछीरीतीसूंपीवैतौअमृ
 तकासायुणकरैछै अरईनैबुरीतरैसूंपीवैतौरोगानैउपजायवि-
 सकीतरहमारिनांषैछै इहहृष्टांतदाजैछै जैसोमनुष्यहसोआ
 छीतरैआपकीभूषमाफिम अन्नकोभोजनकरैषत्तुपरि-

अरप्रमाणपूर्वकतौ अन्न अमृत की तुल्य गुण करै अरसरीर नैन रोग
 राषै अरओही अन्न को भोजन पसु की तरै बाय अरघणा थोडा को
 म्यान न हो राषै तौ बौ भोजन वासी नै आदिले रोगा नै उ पजावै छै मनु
 थनै तत काल मारि नांषै अैसे ही मद्य अरवि सै ये दोनूं मा एकाह
 ती छै पणियां नै सुक्ति सस्तेवन करै तो ये दोनूं अमृत की तुल्य गुण क
 रै छै रोग यात्र नै दूरि करै छै सदा पुरष नै तरुण राषै अथविधि
 सू मद्य पीवै ती को फल लिख्यते मातसमै सौ चादिक जाय रूनादि
 क करि रक्ता ३। भररीति सू मद्य पीवै मध्याह्न समै चो कण भोजन वै
 साधित का ४। भरपीवै रात्रिका भोजन कै समै प्रहर रात्रि प्रथमटक
 ८। भरमद्य पीवै तौ यो मद्य अमृत का गुण करै भूष वीर्यादिक वधावै
 रोग आवादेन ही अरचोषोका द्योनि सा को पीवै अरकूं आछा भो
 जन कै साधि ही पीवै मन प्रसन्न राषी पीवै समै की सयै तौ मद्य मेक
 त्या छै सौ गुण करै सौ गुण लिखूं काम वधावै मन प्रसन्न राषै ते
 ज नै पराक्रम नै बुद्धि नै स्मृति नै हर्ष नै सुष नै भोजन नै नींद नै मैशु
 न नै यां सारां नै आछी तरै पीयो मद्य वधावै छै अर अन्यथा पीवै तौ
 मदात्यय नै आदिले रश्चने करोगां नै अने कंचा र्त्ता नै उ पजावै छै सो
 लिखूं बकवाला गिजाय स्मरण जातोर है वाणी की अरसरीर की
 चेष्टा गहला की सी तरै करि वाला गिजाय आलस्य आवै नहीं कहवा
 की बात कहै काष्ट की सी नाई पड्योर है अगम्यागमन करै बडाने मा
 नै न ही अभक्षा भक्ष करै संज्ञा जातीर है गुह्य वार्ता कहजे और रो
 गां नै उ पजाय सरीर को नास करै इसी तरै पीवै तौ सोतरह लिखूं भो
 जन बिना पीवै निरंतर पीवै ही करै कोध करि पीवै भय करि पीवै तिसा
 यो पीवै घेद युक्त पीवै मल सूत्र का वेग मै पीवै घली घटाई कै साधि पीवै

निर्वलहृवोपावै कहींतरैकीगरमीकोपाड्योथकौपावैजोपुरष
 लांकैमदात्ययनैआदिलेररोगहोयडै अथवायकामदात्यय-
 कोलक्षणलिख्यते हिचकीहोय स्वासहोय मांथोकांपे पसबाडा
 मेंसूलहोय नांदआवै बकैचडुत येलक्षणहोयतौवायकोमदात्य
 यजाणिजे १ अथपित्तकामदात्ययकोलक्षणलिख्यते तिसप
 लांलांगे दाहहोय जुरहोय पसेवआवै मोहहोय अतीसारहोय
 भौलीआवै सरारकोहसोवर्णहोय येलक्षणहोयतौपित्तकोम
 दात्ययजाणिजे २ अथकफकामदात्ययकोलक्षणलिख्य
 ते छर्दिहोय अरुचिहोय सल्लूणो पादोछादै तंडाहोय सरारभा
 र्होहोय येलक्षणहोयतौकफकोमदात्ययजाणिजे ३ अरयेसं
 वलक्षणमिलैतौसन्निपातकोमदात्ययजाणिजे ४ अथपरम
 दकोलक्षणलिख्यते पानसहोय मथवायहोय अंगांमेंपीडा
 होय सरारभास्वोहोय सुषकोस्वादजातोरहै मलसूचरुकिजाय
 तंडाहोय अरुचिहोय तिसहोय येलक्षणहोयतौपरमदजाणिजे
 ५ अथपानाजीर्णकोलक्षणलिख्यते घणोआफरोहोय व
 मनहोय दाहहोय अजीर्णहोय येलक्षणहोयतौपानांजीर्णक
 हजै अथपानविभ्रमकोलक्षणलिख्यते हियोदूषै अंगमेंपी
 डाहोय कफधूकै मूँदासंधूवोनीसरे मूर्छाहोयवमनहोय जुर
 होय मथवायहोय भिवाईमेंदारुमें रुचिनहींहोय येलक्षणहो
 यतौपानविभ्रमकहजै अथमदात्ययकोअसाध्यलक्षणलि
 ख्यते नीचलोहोठलरुकिजाय सरारउपरैसूँढोलांगे सरारमां
 हिंदाहहोय मूँदामेंतेलकीवासआवै जीमहोठदांतकालाहोय
 नीलापीलाखालजींकानेवहोय अरहिचकीजुरवमन पसबाडांमें

स्तूल वासी भौलि येलक्षणहोयतौमदात्ययअसाध्यजाणिजे अथ
 मदात्ययपरमदपांनाजीर्णपांनविभ्रमयांकोजतनलिप्यते
 अथवायकामदात्ययकोजतनलिप्यते आसवां चोषीदारुका
 विधिपूर्वकसेवासूवायकोमदात्ययदूरहोय अठेदृष्टांतदीजैछै
 अग्निकादाज्यानेअग्निसूतपावैतौआआछोहोय अथवा बिजो
 राकीदेसरी अमलवेद मीदाबोर मीठीदाळूं अजवायणिजीरो
 सूरि यांतीन्यांनैमिहांवांदि किजोरादिककारसकीयांकेपुटदे यो
 चूर्णअनुमानमाफिकचोषामद्यमेंनाषिविधिपूर्वकमद्यनैपीवै अ
 रपुराणोमद्यपीवै अथवा संचरल्लण सूरि कालीभिरचि पीपलि
 यांकोमिहांचूर्णकरि अनुमानमाफिकमद्यमेंमिलायमद्यपीवैतौ
 वायकोमदात्ययजाय २ अथवा चय संचरल्लण सेकीहींग सूरि
 अजवायण यांकोमिहांचूर्णकरि मद्यमेंनाषिपीवैतौवायकोमदा
 त्ययजाय ३ अथवा लावो तीतर मुरगाकामांसभक्षणसंबात-
 कोमदात्ययजाय ४ अथवा सर्वगुणसंपन्नजोवननैलीयांषेइसवा
 र्षिकीस्त्रीकासेवनसूवायकोमदात्ययजाय ५ येजतनभावप्र
 कासमेंलिष्योछै यष दाळूं छवारा महवा यांकीदारुमिश्रीकासं
 जोगकीपीवैतौवायकोमदात्ययजाय ६ अथवा गडकादहीको
 मट्टो मिश्रीमिलायपीवैतौ वायकोमदात्ययजाय ७ येसारसग्रह
 मेंलिष्योछै अथपित्तकामदात्ययकोजतनलिप्यते सर्वसी
 तलजतनांसंपित्तकोमदात्ययजाय ८ अथवा सीतलजलमेंमि
 श्रीसहत्तमिलायपीवैतौपित्तकोमदात्ययजाय ९ अथवा मीठीदा
 ङ्गकारसमेंमिश्रीमिलायपीवैतौपित्तकोमदात्ययजाय १० अथ
 वा सुसो हिरण लावो यांकांमांसकापावासंपित्तकोमदात्ययजाय

अथवा बकराकासोरवासं सांघावापलांकापावासं पित्तकोमदा
 त्ययजाय १२ अथरूपकामदात्ययकोजतनलिष्यते चंदन
 वस यांकालेपसंरूपकोमदात्ययजाय १३ अथवा जव गौहं कू
 लत्वं यांकापावासंरूपकोमदात्ययजाय १४ अथवा कडवी मा
 दी सखलीधस्तकापावासंरूपकोमदात्ययजाय १५ अथवा वम
 वसं लंपनसंरूपकोमदात्ययजाय १६ अथवा संचरल्ला जी
 रो अमलवेद तज हलायची कालीमिरचि मिथ्री यांनैबरावरिले
 यांनैमिहांपीसिजलकैसाधिलेतौ रूपकोमदात्ययजाय १७ अथ
 सनिपातकामदात्ययकोजतनलिष्यते आंघलांकारसमेषा
 रागंधककीकजलीदं क१ मिलायपीवैतौसनिपातकोमदात्ययजा
 य १८ अथपानविभ्रमकोजतनलिष्यते दाषांकासरबतमें अ
 थवा कैथकासरबतमें अथवा चळूंकासरबतमें सहतमिथ्रीमि
 लायपीवैतौपानविभ्रमजाय १९ योहंदमेंछे अथधुतूराका-
 फलकामदकोजतनलिष्ये पेडाकारसमेंगुडघालिपीवैतौध
 तूराकोमदजाय अथवा इधमेंमिथ्रीनांषिपीवैतौधतूराकोअरभां
 गीकोमदजाय २० अथभांगिकामदकोजतनलिष्यते रुपास
 कीजडकोरसपीवै अथवा वेगणकीजडकीजडकोरसपीवै अ
 थवा पतलीछाछिपीवै अथवा घृतपीवै अथवा मिथ्रीकासरब-
 तमेंनीचूकोरसनांषिपीवैतौधतूराकोअरभांगिकोमदजाय अथ
 वा इधमिथ्रीपीवैतौभांगीकोमदइरिहोय २१ अथविसकामद
 कोजतनलिष्यते निबोलीकीयांगी नीलोथूथोमासा २ वांटिकांजी
 कापाणीसूंपीवैतौ सर्वविसमाचकोमदइरिहोय २२ येजतनवे
 द्योपचारयंथमेंछे इतिमदात्ययपरमदपांनाजीर्णपान

१३६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

विभ्रमधतूराभंगविसमंघ्यांकीउत्पत्तिलक्षणजननसं
पूणम् अथदाहरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननलिख्यते ॥

दाहहैसो ७ प्रकारकोछै पित्तको १ दुष्टलोहीकायधवाको २ श
स्त्रादिकोसूनीसरोजोडोहीतीकरिपूर्णकोष्टहोयजायवाको ३ म
द्यादिककापीवाको ४ तिसकारोकिवाको ५ धातुक्षयको ६ म
र्मकाचोरलागिवाको ७ अथपित्तकादाहकोलक्षणलिख्य
ते पित्तजुरकासर्वलक्षणमिलै १ अथलोहीकादुष्टपणसं
उपज्योजोदाहतीकोलक्षणलिख्यते सर्वसरीरमेंदाहलागिजा
य अरसर्वसरीरमेंधूवोसोनीसरै सरीरकीतांबाकीसीआकृति
होय अरतांबाकारंगसिरकानेवहोय मूदामेंलोहीकीसीगंधआ
वैअरसगलाभंगअभिकीसीनाईबलै येलक्षणहोयतौदुष्टलो
हीकोदाहजाणिजे २ अथशस्त्रादिकसूनीसखौजोलोहीती
सूकोष्टपूर्णहोयतीकादाहकालक्षकोलक्षणलिख्यते जो
होसंकोरोभरजा अरदाहलागिजाय सोअसाध्यछै ओमभिजाय
३ अथमद्यादिककापीवाकादाहकालक्षणलिख्यते इ
दाकोपवनहैसोपित्तअरलोहीसंमिलियेसारात्वचामेंआयपा
सीहोय अरसारासरीरमेंभयंकरदाहनैकरैछै ४ अथपित्तका
रोकिवाकादाहकोलक्षणलिख्यते तिसकारोकिवासंसरी
रकोजलधातुपीणहोय तदिसरीरमेंगरमीबधै तदिसरीरमेंद
ग्धकरै पाछैबैंकोचित्तमंदहोवै अरबैंकोगलीतालबोसूकै जा
भवारैकाट कांपणलगै ५ अथधातुक्षयकादाहकोलक्ष
णलिख्यते धातुक्षयकादाहसंसूखाहोयआवै तिसलगै मुख
कोस्वरवैठिजाय सरीरकोसामर्थ्यजातोरहै योदाहअसाध्यछै

अथ मर्मकीचोदलागिवाकादाहकोलक्षणलिख्यते सिरह
दयपेड़नैआदिलेर मर्मस्थानमेंचोदलागिवासं उपजेसोअसा
धजाणजे अथदाहकोअसाध्यलक्षणलिख्यते सरिरदंडोहो
जाय अरमाहांदाहहोय सोमरजाय अथदाहकोजतनलिख्य
ते हजारंवारकोधोयो अथवासौवारकोधोयोघृततांकोसरिरके
मर्दनकरैतौसरिरकोदाहजाय १ अथवाजवांकासातूमैमिश्रीमि
लायंवायतौदाहजाय २ अथवा आंवलांकापाणीमैकपडोभिजो
यवेनेओटैतौसरिरकोदाहजाय ३ अथवा पसअररक्तचंदनने
पसिसरिरकैलेपकरैतौदाहजाय ४ अथवा केलिकापांनकी अ
थवा कमलकापांषड्यांकीसज्याउपरिसेवैतौदाहजाय ५ अथ
वा कबाराचादरिउगैरैजलकीडासुंदाहजाय ६ अथवा पसषां
नाकारहवासुंदाहजाय ७ अथवा सीतलजलकापीवासुंदा
हजाय ८ अथवा उपवनउगैरैसीतलस्थानमेंरहवासुंदाहजा
य ९ अथवा चंदन पित्तपापडो पस कमलगट्टा धणों सोंफ
आंवला यांकोटक १॥ भरकोकाथकरि तीमेंसहतमिश्रीमिला
यपीवैतौदाहततकालजाय १० अथवा धणानैरातिनैभेवे पाछे
वैहांजलमेंप्रातसमैवैनेघोटिछाणिमिश्रीमिलायपीवैतौदाहह
रिहोय ११ येसर्वभावप्रकासमैलिख्योछै अथलोहीका
विगाडिकाकादाहकोजतनलिख्यते वैकैसीरछुटायदीजेतौ
डुहलोहीकोदाहहरिहोय १२ अथवा पारो सोध्यागंधक भी
मसेनीकपूर चंदन पस नागरमोथो येसाराबराबरिले पाछे
पारागंधककीकजलीकीरतांकजलीमैयेओषादिनांवे पाछेयां
कीजलसुंगोलीबांधे गोली १ मूंदामैराषिचूंसेतौ सरिरकोसांहि

१३८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

लोदाहजाय योदाहदूरिकर गकोरसछै १३ अथवा पारोतोलो

१तामेस्वरतोलो ॥ अभ्रकतोलो १ अरसोध्योगंधकतोलो २ पथ

मपारागंधककीकजलीकरि पाछैयेथौषदिकजलीमेंमिलावै पा

छैयांकैनागरमोथाकारसकीपुट १ दे पाछैमीठांदाडूँकारसकी

पुट १ दे पाछैकेवडाकाअर्ककीपुट १ दे पाछैसहदेईकारसकीपु

ट १ दे पाछैपीपलिकारसकीपुट १ दे पाछैचंदनकारसकीपुट १ दे

पाछैदाषकारसकीपुट ७ दे पाछैछायासुकाय चणप्रमाणगोली

बांधै पाछैगोली १ रोजीनांषायतो दाहनें अमलपित्तनें मूत्ररुछ

नें प्रदरनें प्रमेहनें यांसारंगोनांयेचंद्रकलारसदूरिकरेछै १४

इतिचंद्रकलारसः औषधरहस्यमैलिथ्योछै इतिदाहरोग

कीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथउन्मादरोगकी

उत्पत्तिलक्षणजतनलिप्यते विरुद्धभोजनसं दुष्टभोजनसं

अपवित्रभोजनसं मनुष्यकोचित्तविगडैछै अरदेवताशुक्र आ

म्हण तपस्वी राजा यांसारंकातिरसकारसंपुरसकोमनविग

डै ३ अरकहींतरैकामयसं अरकहींतरैकाहर्षसं पुरसकोमन

विगडैछै अरधतूरानैभांगिनैआदिलेरत्यांकाषाचासंभीपुरस

कोमनविगडैछै तदिओपुरसकोमनविगड्योथको वायपित्तकफ

कंप्राप्तिहोय पुरषकूंमदजुक्तकरिदेछै नामसुरषनेंगहलोक

रिदेछै तीनैलौकिकमैहोलदिलकहैछै सोयोरोगछ ६ प्रका

रकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ मनका

दुषको ५ विसकाषानीको ६ अथउन्मादकोस्वरूपलिप्यते

विरुद्धभोजनादिकपाछैकत्थायांसेती अरबीएपुरषके वाय

पित्तकफदुष्टहोयबुद्धिकोनासकरै पाछैवेकाहियांमैपीडाकरै

पाछे मनमें बहवावाली जो नसावाने वेदों पमोहित करै तदिमलु
 स्यको चित्तविगाडि जाय थिर रहै नही ई नै होल दिल कहै छै अथ
 उन्मादको पूर्व रूप लिख्यते बुद्धि थिर रहै नही सरीर को पराक्र
 मजा तोर है दृष्टि थिर रहै नही धारजजा तोर है आछी तरै बोलै न
 हीं हृदोसू नो होय जाय येलक्षण होय तो जाणिजे पुरष के उन्मा
 द होसी अथ वाय का उन्माद को लक्षण लिख्यते लूषी वस्त
 का अरु ठंढी वस्त का घणषा वासूं घणजुलाब काले वासूं धात
 का घणषणषासूं वायवधै तदिओ वाय हियानें विगाडै अरबुद्धि
 को अरस्मरण को तत काल नास करै तदिमलुस्य है सो विनाकार
 एही हसै गावै नाचै बोहाथ सूं सूढा नै वानरा को सीना ई करवाला
 गिजाय अर रोवाला गिजाय सरीर कठोर अर कलोलाल होजाय
 अर भोजन पन्थां पछै यो रोग वधै येलक्षण होय तो वाय को उन्माद
 जाणिजे १ अथ पित्त का उन्माद को लक्षण लिख्यते अजीर्ण
 में भोजन कस्तां कडबोषादौ गरम यां भोजन सूं पित्त वधै तदिम
 लुणका हृदा को पित्त है सो विगाडि उन्माद नै करै तदिओ पुरस कहीं कीं
 बात नै मानै नहीं अर नांगो होजाय मारवाला गिजाय डोलवाला ग
 जाय बेंको सरीर तातो होजाय सीतल वस्त कीं बांछारा पै अर सरी
 र की आलति पीली होजाय येलक्षण होय तो पित्त को उन्माद जाणि
 जे अथ कफ का उन्माद को लक्षण लिख्यते भूषमंद होय अ
 र जीमें घणषाय तदि पुरस के काम करि जा मै आलस घणो आवै
 तदि वेंकै पित्त है सो कफ सूं मिलि अर मर्म स्थान नै वधावै तदि पुरस
 की बुद्धि को अर स्मरण को नां स करै पाछे वेंका चित्त नै विगाडै वें पुर
 स नें उन्मत्त करि दे अर ओ पुरस क मं बोलै भूषजा तोर है स्त्रियां प्या

शिलागै पैकांतस्थानपारांलागै नींदघणीआवै छर्दिहोय बलजातो
 रहै नषादिकसुपेदहोजाय येलक्षणहोयतीकफकोउन्मादजाणि
 जे ३ अरयेसर्वलक्षणहोयतीसन्निपातकोउन्मादजाणिजे ४ अथ
 मनकादुरबउन्मादकोलक्षणलिख्यते चोरांकाभयसं राजाका
 भयसं प्रबलशत्रुकाभयसं औरकहिभयंकरकर्मकाभयसंउस्यो
 जोपुरसतीकै अथवा धनकानाससं अथवा पुत्रादिकानाससं
 बस्तांसं पुरसकैमननैचोटलागै अरघणोंमैयुनकरैजीकै तदिबैंको
 मनविगडैपुरसकैउन्मत्तकरिदे तदिवोमनमेंआवैसोबकै संज्ञा
 जातीरहै अरगावालागिजाय हसिवालागजाय येलक्षणहोयती
 मनकादुरबकोउन्मादजाणिजे ५ अथविसषावाकाउन्मादको
 लक्षणलिख्यते लालनेत्रहोय बलसरीरकोजातीरहै सर्वइदि
 यांकीकांतिजातीरहै गरीबहोजाय मूढ्येकालोपडिजाय येलक्ष
 णहोयती विसषावाकोउन्मादजाणिजे ईउन्मादवालोमरिजाय ६
 अथउन्मादमात्रकोअसाध्यलक्षणलिख्यते कैतौनीचोहीमुष
 राषैकैउंचोहीमुषराषै अरसरीरकोबलमांसजातीरहै नींदआ
 वैनहीं जागिबोहीकरै येलक्षणहोयतीओपुरसमरिजाय ७ अ
 थभूतादिकजीनैलाग्येहोयजीसूंउपज्योजोउन्मादतीकोल
 क्षणलिख्यते जींपुरसनेंभूतादिकलाग्येहोयतींपुरसकीवाणी
 मनुस्यकीसीनाईहोयविचित्रहोय अरबैंकोपराक्रमभीविचि
 त्रहोय अरबैंकासरीरकीचेष्टाभीविचित्रहोय अरबैंकोग्यानभी
 अरबैंकोविज्ञानभीविचित्रहोय येलक्षणजीमेंहोय तीकैभूतादि
 कलाग्याकोउन्मादजाणिजे ८ अथजीकासरीरमेंकहांदेबता
 गोप्रवेसहुबोहोयतींकाउन्मादकोलक्षणलिख्यते सर्वबातसं

ओसंतुष्टरहै अरओपवित्ररहै अरसुंदरपुष्पादिककीमालाधा
 रे अरसुंदरअतरसंधिवोकरै अरवैकीआंषीभिन्नही अरवि
 गरिपढ्योसंलुतबोलै अरसरीरमेंतेजवधै अरजोमांगैजीनैवर
 रै अरओत्र भूएयहोजाय येजीयैलक्षणहोयतीमें देवताकाप्रवे
 सकोउन्मादजाणिजे २ अथजीकासरीरमेंअस्तरप्रवेसक
 होहोयतीसूंउपज्योजोउन्मादतीकोलक्षणलिख्यते पसे
 वआवै अरब्राह्मणगुरुदेवतायांमैदोषकाटेकुरिलजीकीदृष्टि
 होय कहींतरैकोवैकैभयहोयनहीं षोढाभागमेंदृष्टिहोयकहां
 तरैतुष्टिहोयनहीं भोजनादिकमेंदुष्टात्माहोय येलक्षणजीमेंहो
 यतीनैअसुरलाग्योजाणिजे ३ अथगंधर्वलागिवासूंउपज्यो
 जोउन्मादतीकोलक्षणलिख्यते दुष्टात्माहोय अरपुलिनमें
 वनमेंरहवासूंमनराजीरहै आचारमेंमनरहै गावोनोंचबोसुहा
 वै थोहोबोलैयेलक्षणहोयतीगंधर्वलाग्योजाणिजे ४ अरयेहीज
 क्षम्रहकालक्षणजाणिजे ५ अथजीकासरीरमेंपितरांकोस
 तीकोदोसहुबोहोयतीकोलक्षणलिख्यते शभकेरूपरिपिंड
 मेंलवोकरै सतोगुणीहोजाय तर्पणकरवोकरै मांसमें तिलमेंगु
 डमें पीरकाभोजनमेंमनरहैयेलक्षणजीमेंहोयतीपित्रेसुरांको
 दोसजाणिजे ६ अथसतीकोदोसजोंकासरीरमेंहोयतीको
 लक्षणलिख्यते मनीनअलरहैनहीं संतानादिककोअवरोधक
 रै सतीकीवार्तासुहावै बोलैनहीं बोलैतोवरदेतोबोलैपवित्रर
 है आछीवस्तांमेंमनरहै येलक्षणहोयतीसतीकोदोसजाणिजे
 ७ अथषेत्रपालकादोसकोउन्मादलिख्यते सुषनांसिकामें
 लोहीचलावै स्रसांनकीराषमस्तगमेंनांषे षोढासुपनाआवै

पेटमें पीडरहै अस्संधिसंधीमें पीडरहै चित्तस्वस्थिररहैनहीं येल
क्षण होयतौ क्षेत्रपालको दोसजाणिजे - अथबीजासणिकादो
ससूँउपज्योजोउन्मादतीकोलक्षणलिप्यते पथाघातहोय
सरीरअरुधिरसुसिजाय मुषपगवांकाहोजाय सरीरबाणहोजां
य स्मरणारिक्कातोरहै येलक्षण होयतौ बीजासणको दोसजाणि
जे ९ अथकामणकादोससूँउपज्योजोउन्मादतीकोलक्षण
लिप्यते कांधोमांधोभाखोहोय मनधिररहैनहीं सर्वअंगक्षी
णहोजाय नासिकामें नेत्रामें हाथामें पगामें दाह होय वीर्यकोनास
होय सरीरकाआतूंअंगामें सुईकासाचभकाचालिबोकरै सरीरसू
किजाय येलक्षण होयतौ कामणकादोसकोउन्मादजाणिजे १०
अथशाकिनीडाकिनीलागिवासूँउपज्योजोउन्मादतीकोल
क्षणलिप्यते साराअंगामें पीडाहोय नेत्रघणादुषै मूर्छाहोय स
रीरकांपै रोबैबकै भोजनमें अरुचिहोय हसैस्वरभंगहोय सरीर
कोबलअरुभूषजातीरहै भौलीहोय जुरभीहोय येलक्षणजामें हो
यतौ शाकिनीडाकिनीको दोसजाणिजे ११ अथषोटीगतिसंसू
वाजोमनुष्यवैप्रेतहोयतीसूँउपज्योजोउन्मादतीकोलक्षण
लिप्यते संचारै घरमेंसूँउठिउठिभागे षोटावचनकाटै बहुतब
कैं सरीरकांपैरोबै पाबै पीवेनहीं वुरीतरैसासलेबोकरै मनमें
आचैसोपावै येलक्षण होयतौ प्रेतको दोसजाणिजे १२ अथजीं
कांसरीरमें राक्षसलाग्योहोयतीसूँउपज्योजोउन्मादती
कोलक्षणलिप्यते मांसकाषावामें अरलोहीकापीवामें जांकी
रुचिरहै अरदारूकापीवामें रुचिरहै अरनिलजघणोरहै घणो
दुष्टपणसंबोले पणोसुरापणोजीनैचटिजाय ओधजीनैघणो

१४३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

होय रात्रिनेँ एकलोफिरै अपवित्ररहै येलक्षणहोयतौराक्षसला
 ग्योजाणिजे १३ अथब्रह्मराक्षसजीनेँ लाग्यौ होयतीसूंउप
 ज्योजोउन्मादतीकोलक्षणलिख्यते देवता ब्राम्हणगुरु यांसूं
 बैरराषे वेदअरवेदांतकीजाणिवावालेआपहोजाय अरआप
 कासरीरनेँ आपहीपीडाकरै अरमारै नहीं येलक्षणहोयतौ ब्रह्म
 राक्षसलाग्योजाणिजे १४ अथपिसाचजीनेँ लाग्यौ होयती
 सूंउपज्योजोउन्मादतीकोलक्षणलिख्यते उँचाहाथराषिबो
 करै सरारहसहोजाय भूँकोकूमिथावकै सरारमेंदुर्गंधिअवि
 अपवित्ररहै अतिचंचलहोजाय घणौषायउघानमेंमनरहै भ्रम
 घणौरोवै येलक्षणहोयतौपिसाचलाग्योजाणिजे १५ अथउ
 न्मादकोअसाध्यलक्षणलिख्यते आंषिफरीसीहीजाय मोल
 बोकरै मूँटेजगआवोकरै नांदघणीआवै पडिजाय कांपै येल
 क्षणहोयतौअसाध्यजाणिजे अरपूयूँनेँआजारघणौहोयतौ दे
 वतांकोदोसजाणिजे अरसांजमेंकोईलागेतौअसुरकोदोसजाणि
 जै अमावसनेँ येलक्षणहोयतौपितरांकोदोसजाणिजे आठेनेँ ये
 लक्षणहोयतौगंधर्वकोदोसजाणिजे पडिवानेँयोधिकारहोयतौ
 जक्षकोदोसजाणिजे रात्रिनेँयेलक्षणहोयतौराक्षसपिशांचा-
 कोदोसजाणिजे अथयांसारोंकासागिवाकीतरहलिख्य
 ते जैसेमनुष्यादिकांकोप्रतिबिंबदर्पणादिकांमेधसिजायछै
 तैसेंहीप्राणीमात्रमेंसातउष्णधसिजायछै जैसैआतसीकाचमें
 सूर्यकीकिरणधसिकरअग्निनेँउपजायदेछै तैसेंहीमनुष्यादिकां
 कासरीरमेंभूतप्रेतादिकधसिजाय अरदीषेनहीं चिन्हासंजाएनां
 पडैछै अथउन्मादनेँआदिउरयांसारोंकाजथाजोग्यज

१४४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

तनलिष्यते घृतादिककापीवासंवायकोउन्मादजाय १ आच्छा
जुलाबकालेवासंपित्तकोउन्मादजाय २ वमनकाकरावासंकफको
उन्मादजाय ३ अरलिंगमेंगुदमेंश्रीषदिकीपीचरकीकादेवासं
योवस्तिकर्मछै ईकाकरावासंभीउन्मादजायछै ४ अथवालूणा
कोरसकादि तीमेंबराबरकोगुडमिलाय तीमेंगुडकीछाछिनांधि
पीवैतौउन्मादजाय ५ अथवा षरेंदीहात्यांकोरसकादिपीवैतौ
उन्मादजाय ६ अथवा कडवातेलकोमर्दनकरिताबड़ेराषैतौ
उन्मादजाय ७ अथवा कोईअदुतवस्तुदिषावै अथवा कोईदृष्ट
कोनामसुणावैतौउन्मादजाय ८ अथवा ताताघृतको अथवाता
तातेलको अथवा ताताजलकोस्पर्शकरावैतौउन्मादजाय ९ अ
थवा कौंछकीफलीकोस्पर्शकरावैतौउन्मादजाय १० अथवा
कोरडाकीदेतौउन्मादजाय ११ अथवा शस्त्रसंहारीसंहसं
सर्पसं रोकियासं कहांतैसंडरावैतौउन्मादजाय १२ यांकारणां
संचित्तदिकणैआवै सोसर्वदुःखसंप्राणकोराषिबोसिरैछै ईका
सैयेजतनसिरैछै १३ अथवा कूठ असगंध सांधोदूला अजमो
द दोनूंजीरा सूंदि कालीभिरनि पीपलि पाठ सांवाहूली येसारा
श्रीषदिवराबरले अरयांसर्वकीबराबरिवचले पाछैयांसर्वने
मिहींवांदि ईकैब्राम्हीकारसकीपुट १० दे पाछैईनेछायासुकायदं
करा। घृतसहतकैसांधिईसारस्वतचूर्णनेदिनै १५ लेतौसर्वप्र
कारकोउन्मादजाय १६ अरयोसर्वबायकाविकारनें प्रमेहनैहू
रिकरैछै अरयोबुद्धिनेवधावैछै अरयोकवितानेकरावैछै योचूर्ण
ब्रम्हाजीवणायोछै इतिसारस्वतचूर्ण अथवा त्रिफला पित्तपाप
डो देवदार सालपर्णी जीवासो तगर हलद दारुहलद इंद्रायराकी
जड

१४५ अमृतसागरे तथा प्रतापसागर तरंग ७

गौरीसर चंदन पदमाष कूठ कमलगद्दा इलायची कट्याली मजी
ठ पक्क निसोत वायविडंग रुदंती नागकेसरि महलोभा पृष्ठपर्णी
चमेलीकाफूल येसारीऔषदि अधेलाअधेलाभरिले पाछेंयेऔष
दिसेर ५४ जलमें कूटिनां वै अरईमेंसेर ५१ गडको घृतनां वै पाछेंम
धुरीआंचसंपकावै तदिऔजलबलिजाय अरघृतमात्र आयरहै त
दिईनैउतारिले पाछेंईनैदंक ५ रोजीनांभोजनकैसाधिषायतौ उ
न्मादनैमृगीकारोगनै अरपांडुरोगनै योघृतदूरिकरैछै इतिक
ल्याणघृतं १४ अथवासूँठि कालीभिरचि पीपलि हांन वच सि
रसकाबीज सांधोलूण सिस्यू येबराबरिले यांनैगोमूत्रमेंमिहींवां
दि अंजनकरैतौउन्मादजाय १५ येजतनवैद्यविनोदेंमेछै
अथवासूँठि अजमोद हलद दारुहलद सांधोलूण वच मह
लोभा कूठ पीपलि जीरो येसर्वबराबरिले यांनैगोमूत्रमेंमिहींवां
दिदंक ३॥ घृतकैसाधिलेतौ उन्मादजाय अरवेंकीजीभऊपरिस
रस्वतीआयवसे इतिविश्वामेचूर्ण १६ येभावप्रकासमेंछै
अथवा ब्राह्मीकोरस अथवा पेठाकोरस अथवा पीपलामूल
कोरस अथवा सांघाहूलीकोरसदंक १० पीवैतौउन्मादजाय १७
अथवा वच कूठ संधाहूली धतूराकीजइयेबराबरिले यांके
ब्राह्मीकारसकीपुट ७ दे अरकालाधतूराकाबीजांकातेलकीपु
ट ५ दे पाछेंईकीनांसदेतौउन्माददूरिहोय १८ येसर्ववैद्यरह
स्यमेंछै अथवासिरसकाफूल मजीठ पीपलि सरस्यू वच
हलद सूँठि यांनैबराबरिले यांनैवकरीकामूतमेंमिहींवांदि गो
लीकरै पाछेंगोली १ घसिअंजनकरैतौउन्मादजाय १९ योजोग
रलावलीमेंछै अथवा सेकीहींग संचंदलूण सूँठि कालीभि
रचि

पीपलि येसारीबराबरिले दोयदोयटकाभरि २ पाछेगडकोघृ
 सेर १४ ले अरघृतसूचौगणोगोमूत्रले पाछेयांसारानेएकठकंरि
 मधुरीआंचसंपकावे तदिबैमैकोगोमूत्रवल्लिजाय घृतमात्रआय
 है तदिईनैउतारिदंक ५ भोजनकेसमैलेतौउन्माददूरिहोय २० इ
 तिउन्मादरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथभूत
 नैआदिलेरजोउन्मादतीकोमंत्रतंत्रसर्वशास्त्रकैअतुस्वा
 लिष्यते प्रथमभूतनैआदिलेरयांकाजतनकरैसो आपपवित्र
 होयआपकीरक्षाकरिवैकोजतनकरै कालीभिरवि पीपलि सी
 धोखण गोरोचन यांनैमिहांवादि सहतमैअंजनकरैतौभूतप्रेतजा
 य १ अरज्वरकाप्रकर्णमैभूतज्वरउपरिअनृसिंहजीकोदिव्यमं
 त्रलिष्योछै तींसंभूतप्रेतादिककोसर्वहीउन्माददूरिहोयछैसोदे
 षिलीज्यौ अथउड़ीसमैयांकासाचरमंत्रजंत्रलिष्याछैमहर्षे
 कजीसोलिषूछं ऊनमोभगवतेनारसिंहायघोररोडमहिषासुररू
 पायत्रैलोक्यडंबरायरोडक्षेत्रपालायहीहोकिकिमितिताडय
 ताडयमोहयमोहयइभिडभिक्षोभयक्षोभयआभिआभिसाधय
 साधयहीहृदयै आशक्तय आसक्तय प्रीतिल्लाटे बंधयबंधय
 हींहृदयेस्तंभयस्तंभय किलिकिलि ईहींझाकिनीं प्रछादयप्रछा
 दय शाकिनीं प्रछादयप्रछादय भूतंप्रछादयप्रछादय अप्रभूति
 अद्वितीस्वाहा राक्षसंप्रछादयप्रछादय अमरुराक्षसंप्रछादयप्रछा
 दय आकासंप्रछादयप्रछादय सिंहनीपुत्रंप्रछादयप्रछादय एते
 डाकिनीग्रहसाधयसाधय शाकिनीग्रहसाधयसाधय अनेनमंत्रे
 ए डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचादि एकाहिकद्वाहिक त्राहिक
 चातुर्थकं पंचमकं वातिकं पौत्तिक श्लैथिक सन्निपातकेशरीडा

१४७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

किनीग्रहादिसुंचमुंचस्वाहा गुरुकीशक्तिमेरीभक्तिपुरोमंनोईश्व
रोवाचा ईमंत्रसूखाडोदीजेवार २१ मोरकीपांषसू अथवा लोहाकी
वस्तसू अथवा छानिकीपानिसूतौभूतादिककासर्वउन्मादकोदो
सइरिहोय २ अथडाकिणीशाकिणीकावकरावाकोमंत्रः
ऊनमोआदेसगुरुकुं ऊनमोजयजंयनसिंह तीनलोकज्योदाभव
नमें हाथचाविहोठचावि नयनलाललाल सर्ववैशेषछाडिमारि
भगतनक्षत्रपणराषि आदेसआदेसपुरषको ईमंत्रकीक्रिया यो
मंत्रपदिरोगीनैवैठाय ईमंत्रसूपाणीमंत्रि आपपविचहोयओ
पाणीवैनेपावे पाछेवैनेबुधै शाकिनीडाकिनीबोलैसहा ३ अ
थडाकिणबुलावाकोमंत्र ऊनमोचंदोचंदीसूरवीर धरतीच
दिपातालचंदि प्रगपालीचंदीकुणकुणवीरचंद्या हणवंतवीरच
द्या धरतीचंदी प्रगपाणीचंदी एडीचंदी एडीचंदी सुरचैचंदी सु
रचैचंदी पीडीचंदी पीडीचंदी गोमांचंदी गोमांचंदी जांघंचंदी जां
घंचंदी कटिचंदी कटिचंदी पेटचंदी पेटसूंधरणिचदि धरणीसू
पांसल्याचंदी पांसल्यासंहियेचंदी हियासूछातीचदि छातीसू
षवांचदि प्रवांसूंकठचंदी कंठांसूमुषचंदी मुषसूजिह्वाचंदी जि
ह्वासूकानाचदि कानांसूआंघ्यांचदि आंघ्यांसूललाटचंदी लला
टसूसीसंचंदी सीससूकपालचंदी कपालसूचंदीचंदी हनुमा
ननारसिंहकरवारत्त्याचत्यावीर समदवीर दीठवीर आग्यावीर
सोसंतावीर येवीरचत्यावकरावैतौवैपुरसमैवैनिश्चैआयबोलै
४ अथडाकिणीकैचोटलागिवाकोमंत्र ऊनमोमहाकाय-
जोगिणी जोगिणीपारसाकिनीकल्पदृष्टाय दृष्टिजोगिणीसिद्धि
रुद्राय कालदंभेनसाधयसाधय २ मारय मारय चूरयचूरय अ

१४८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

पहरशाकिनीसपरिवारं नमः उँग ६ ऊँहां ६ हो हो फट् स्वाहा ईंमं
त्रकीक्रियापवित्रहोय वार ७ गूगलनेंमंत्रिउषलमेंनांषिमूसल
सूँकूरिजेतौ बेचोदडाकणिकेलागे अरईंमंत्रसूँगोडोमूँडिजेतौ
डाकणिकोमांघोसूँडौजाय अरईंमंत्रसूँडदमंत्रिनांषिजेतौतांके
घरआयषेलै अरजलनेंईसूँमंत्रिआंघांछाँटैतौवाषेलउठे ५
अथडाकणिकादोसदूरिहोवाकोछाडोमोरकीपांघंसूँदी
जे अथवा लोहकाराछसूँदीजे उँनमोआदेसगुरूकौडाकिणी
सिहारी किन्तैमारीजतीहणवंतनैमारी कहांजायदवकाकिनदेशा
जतीहणवंतनैदेशा सातबैंपांतालगई सातवांपातालसूँकुणपकडि
ल्यायाजतीहणवंतपकडिल्याया एकतालदे एककौठातोड्या दीय
तालदेदोयकोगतोड्या तीनतालदेतीनकोठातोड्या आरितालदे
आरिकोठातोड्या पांचतालदेपांचकोठातोड्या छतालदेछकोठा
तोड्या सातवांकोगेघोलिदेघैतौकुणकुणषडीछै डाकिनीसिहारी
भूतप्रेतचल्या जतीहणवंततेरेअडैसूँचल्या उँनमोआदेसगुरूकू

इहजंत्रनैबालकके गलेपांघिजेजंघ			
११५	६६	१	५
७	६	७	६
९	२	१	१०
८	१	९	४०

गुरुकीशक्तिमेरीभक्तिपु
रोमंत्रईरवरोवाच अथ
डाकणिकादूरिहोवा-
कोयंत्र इहजंत्रनैअथ
तापाणीमेंघोलिपाजैतौ

इहजंत्रपाणीमेंघो लिपाजैजंघ			
७	७	९	८
९	६	६	७
४	॥	९	११
७	६	११	॥

डाकिनीशाकिनीदूरिहोय अथप्रत्यक्षहाजरायतलिख्यते अथ
हाजरायतमंत्रः उँनमः कामारव्याये सर्वसिद्धिदाये अमुककर्म
कुरुकुरुस्वाहा २४ अथमंत्रस्यबाल्लोककविः जगतीछंदः कामा
रव्यादेवता प्रणवःशक्तिः अव्यक्तंकीलकं अमुककर्मणिजपेविनि
योगः

ऊनमः अंगुष्ठाभ्यांनमः कामारव्यायैतर्जनीभ्यांनमः स्वाहासर्वसिद्धि
 दायैमध्यमाभ्यांबषट् असुककर्मभनामिकाभ्यां हुंकुरुकुरुकनिष्ठि
 काभ्यां वौषट् स्वाहाकरतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्रायफट् ऊनमोहदया
 यकामारव्यायैसिरसेस्वाहा सर्वसिद्धिदायैसिषायैवषट् असुकक
 र्मेकवचायहुं कुरुकुरुनेत्रत्रयायवौषट् स्वाहाअस्त्रायफट् अश्रु
 ध्यानं योनिमात्रशरीरायाकुंगुवासिनिकामदा रजःस्वलामहा
 तेजाकामाक्षीध्वेययासदा मंत्रस्यसहस्रजपः १००० गुडहलका
 फूलांकी १०० आहूति मेंदलकीराषकरिराषै रुईमैमिलायवैकीवा
 तीकरणी शवातीतेलकादीवामेंमेलणी दीवाकीपूजाकरणी दी
 वाकैआगेवालक आठवरसको अथवा दसवरसको पवित्रशक्त
 इवशको देवतागणकोवालकस्थापणो अथवापभीपवित्रहोय
 मेंदलकाफलरूपरि ईमंत्रकाजपकासंकल्पकोजलनांषणै अथ
 दीपकआगेयोजंत्रलिपि जंत्रकोपूजनकरणै अथयोजंत्रवालकमें
 दिषावणैवेकीहथेलीमें अथमेंदलकीराषतेलसंस्त्रोसशिवेकी
 हथेलीकैमसलणै पाछैवेनैवृण्णै ओदेवैसोसर्वसमंचारसत्यक
 है अथवा आठदसवरसकीदेवतागणकीकन्याबैदावणै प-
 वित्रकुलकीवेनैदोषैसोकहै दशांसमार्जन दशांसतर्पण दशांसब्रा
 म्हणभोजन इतिहाजरायतकीविधिसंपूर्णम् यासत्यहाज
 रायतछै येसर्वउड़ीसमैलिथालै अथवा

योज्ज्वलरायतको
 बांधिजैछै

१	८	७	८	९
५	६	३	५	९
७	२	९	३	०
७	८	५	८	९

कडा भोरकाचंदवा कल्याली शिवकोनिर्मा

ल्य मरवो तजछड बलंधकोदांत मर्जार कीविषा तुसबच केस सांप
 कीकाचली गडुकोसींग हथीकोदांत हांग कालीभिरचि यांसारानें
 बराबरिले थानेंकूटिईकीधूणीदेतौ सर्वप्रकारकाभूतानें आदिलेर
 जोदोसहोयसोसाराइरिहोय योमहाहेस्वरधूपछे योचकदत्तमें
 लिख्योछै १ अथवा पीपलि कालीभिरचि सींधोलूण गोरोचनयां
 नैसहतमेंवांदि अंजनकरैतौसर्वभूतादिककोदोसजाय १० अथ
 वा कणगचकीजड दारुहलद सिरसूं कूठ हांग वच मजीर विफ
 ला सुंदि कालीभिरचि पीपलि फूल प्रियंशु येबराबारिले थानेंबक
 राकामूतमेंवांदिनासदेतौ अथवा अंजनकरैतौसर्वभूतादिकको
 दोसजाय ११ अथवा गोरषकाकंडीनैंगोमूतसूंवांदिनासदेतौ
 ब्रम्हराक्षसकोदोसजाय १२ अथवा सांघाहलीकीजडनै वाकलं
 कापाणीमेंवांदि अथवा घृतमेंवांदि वेंकीनासदेतौभूतादिकजाय
 १३ इतिभूतादिकोकाउन्मादकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर
 णम् अथमृगीरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते चिं
 तासोकादिकांकरिकेंकोधकूंप्राप्तिहुवाजोवायपित्तकफसोहदा
 कीनसांमेंपैठिरस्मरणमात्रकोनासकरिमृगीकारोगनैप्रगटकरैछै
 सोअमृगीरोग ४ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ संभि
 यातको ४ अथमृगीकोपूर्वरूपलिख्यते हियोकांपै अरहि
 योसूंनोक्खैजाय पसेवआवै ध्यानलागिलाय मूर्छाहोयआवै ग्वां
 नजातोरहै नींदआवैनहीं येलक्षणहोयतदिजाएजैईकैमृगीको
 रोगहोसी अरबेनैसर्वत्रअंधकारहीदीसै स्मरणजातोरहै अरह
 थपगानेंआदिलेरसाराअंगानेंपृष्ठाउपरिपरकिबोकरै तदीजाति
 जेमृगीकोरोगडुबो १ अथवायकीमृगीकोलक्षणलिख्यते

कांपली होय दांत चावै मूटै जाग आवै सास होय कालो पीलो वे नै दी
 वै ये लक्षण होय तो बाय की मृगी जाणिजे १ अथ पित्त की मृगी को
 लक्षण लिख्यते मूटामें पीला जाग आवै अर सरीर को त्वचा मूटो
 आंघिये पीला हो जाय वे नै लाल पीलो सर्व दी सै तिस घणी लागै स
 र्व सरीर उन्होर है अर वे नै सर्वत्र अग्नि बल ती सी दी सै ये लक्षण हो
 य तो पित्त की मृगी जाणिजे प्रथम कफ की मृगी को लक्षण लि
 ख्यते मूटै सुपेदा जाग आवै सरीर की त्वचा मूटो नेत्र ये सारा सुपेद
 हो जाय सीत लागै रोमांच होय वे नै सर्व सुपेद ही दी सै ये लक्षण हो
 य तो कफ की मृगी जाणिजे अथ सन्निपात की मृगी को लक्षण
 लिख्यते ये पाछे कल्या सो जी के सर्व लक्षण होय तीनै सन्निपात
 की मृगी जाणिजे ४ अथ मृगी को असाध्य लक्षण लिख्यते
 जो को सरीर घणौ फुर के सरीर क्षीण हो जाय भ्रंश चरि वाला गि
 जाय नेत्रां की विरुति और हो जाय तो ओ मृगी बालो मरि जाय
 अथ मृगी का समय लिख्यते बारं वै १२ दिन आवै तो बाय की
 जाणिजे पंद्र वै दिन आवै तो पित्त की जाणिजे महां ११ मं आवै तो क
 फ की जाणिजे अठे दृष्टांत दी जे छै असें इंद्र जल नें चर सें छै तदि
 सर्व वस्तु उगे पणि जब गौह चरणै आदि छेर पृथ्वीरु परिसरद
 रितु में होऊगे ते सै सरीर में ये रोग रहै तो सदा ही पणि वारो गं को
 समय आवै तदि को पकरै अथ मृगी को जतन लिख्यते तिल
 के साथिल सण बाय तो बाय की मृगी जाय १ दूध के साथि सतावरी
 बाय तो पित्त की मृगी जाय २ ग्राम्ही को रस सहत के साथि बाय तो
 कफ की मृगी जाय ३ अथ वा राई सिर स्युं नै बाय तो अथ वा यानै
 गो मूत्र में बांढि सरीर कै ले पकरै तो मृगी जाय ४ अथ वा तेल सेरै

१५२ . अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग . ७

सहजणांकोरससेर ३४ कवारकापादांकोरससेर ३४ चिरचिराको
रससेर ३४ नींबकीछालिकोरससेर ३१ गोमूत्रसेर ३४ यांमैतेलनें
पकावै पाछैयेसारासबलिजाय तेलमात्रआयरहै तदिईते
लनेंजुद्वारापै पाछैईतेलकोमर्दनकरैतौमृगीजाय ५ अथवा
मैससिल नीलटांचकीबीठ अथवा कबूतरकीबीठ यांदोन्यां
नैमिहींबांढिअंजनकरैतौमृगीजाय ६ अथवा पारोमाखौअथ
कसार सोधोगंधकमाखौमैणसिल मारीहरताल रसोत्त येसा
राबराबरिले पाछैयांनैगोमूत्रमैदिन १ परलकरै पाछैलोहका
पात्रमें यांसारासंडूणीगंधकमेलि अरगंधककैबीजियांनैमे
लियांनैपकायले पहरयेकमें पाछैईनैरती १ रोजीनादिन ७
ताईपायतौमृगीजाय ७ अथवा संहि कालीमिरचि पीपलि
संचरल्लण सेकीहींग येबरांवरिले यांनैमिहींबांढिदंक २॥ रोजी
नांधूतकैसाथिदिन १५ लेतौमृगीजाय ८ अथवा महलीदीनै
मिहींबांढिदंक २॥ पेडाकारसमैदिन ७ पीवैतौमृगीजाय ९
अथवा श्रांहीकारसकैसाथि वच कूठ यांदोन्यांनैमिहींबांढि
दंक २॥ पीवै अथवा सांभाहलीकारसकीसाथिपीवै अथवा
पुराणागुडकैसाथिदिन १५ पीवैतौमृगीजाय १० अथवा गडको
घृतसेर ३१ पेडाकोरससेर ३१ ८ मालोक्षिकाकाटाकोपाणीसेर ३२
यांतीन्यांनैपचावै योदोन्यांकोरसबलिजाय घृतआयरहैतदि
ईघृतनैपावैतौमृगीजाय ११ अथवा सहजणांकीछालि कूठ
नेत्रबालो जीरो लसण संहि कालीमिरचि पीपलि हींग येसर्व
पईसापईसाभरले तेलसेर ३॥ बकराकोमूतसेर ३२ लेपाछैयां
नैमधुरीआंचसूपकावै येसारावलिजाय तेलमात्रआयरहै

१५३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ७

तदिदं कानांसदेतौ मृगीजाय १२ ये सर्वजतनभावप्रकासमै-
लिष्योछे अथवा पीपलि पीपलामूल चय चित्रक सूठि विफ-
ला वायविडंग सींधीलू अजवायण धर्णी जीरो यानै बराब
भिले यानैमिहांवांटि टंक ॥ गरमपाणीसूंलेतौ मृगीजाय संग्र-
हणीजाय उन्मादजाय बवासीरजाय योचूरणयानैदूरिकेरैछे

१३ अथवा पुष्पनक्षत्रके दिन कुत्ता कापित्ताकादीवेंको अंज-
नकरै अथवा घृतकैसाथिईको धूपदेतौ मृगीजाय योजोगंत
रंगिणीमें लिष्योछे १४ अथवा वचकोचूर्ण टंक ॥ दूधकैसा
थिषाय अथवा सहतकैसाथिषाय महीनोयेकतौ मृगीजाय

१५ योजोगंत रंगिणीमें लिष्योछे अथवा नौल्याकीविष्टा
विलाबकीविष्टा कागलाकीबीठ यांकाधूलीदेतौ मृगीजाय १६
योचक्रदत्तमें लिष्योछे इति मृगीरोगकोलक्षणजतनसंपू-
र्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज्यराजराजेन्द्र-
श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरने अमृतसागरनाम ग्रंथे मदा-
त्यय उन्माद मृगीयांकासर्वभेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षणजत-
ननिरूपणं नाम सप्तमः स्तरंगः ७ अथवा तच्चाधि रोग

की उत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते कसायली कडवी तीषीव
स्तकाषावासूं स्वल्पभोजनसूं लघीवस्तकाषावासूं षेदसूंसीत
लभोजनसूं घणामैथुनसूं धातकाषीणपणासूं मलमूत्रकारो-
किवासूं सोचसूं भयसूं घणालोही कानाकलवासूं मांसकाक्षी-
णपणासूं घणावमनविरचनसूं आंवकादोससूं लुटापासूं म-
लुष्णकैवर्षारितुमें अथवा तिसरैपहर अथवा पह्ररकैतडकै
बलगानवायहैसो लुलुस्यकासरीरकी शक्तिजोनसांसांमें आय

धसिकरि नाना प्रकार का जो रोग त्यां सारां नै अंगामें अथवा ये के
 क अंगमें ही ओवां वस्तां संकुपित जो वाय सो चौरासी प्रकार का रोग
 गानै करै छै सो वे चौरासी रोग लिखूं छूं सिरोग हरोग १ अत्य के
 स २ जंभाई घणी आवै ३ डादी सुडै न ही ४ जीभ हालै न ही ५ वंकाई
 षातौ बोलै ६ होखूं बोलै ७ गुंगा पणौ होय ८ षोटी ही बोलै ९ घणौ
 बकै १० जीभ को स्वाद जातोर है ११ बहरो हो जाय १२ काना में गुगाट
 शब्द होय १३ त्वचामें स्पर्श को ग्यांन जातोर है १४ अर्दित रोग १५ कां
 धी सुडै न ही १६ भुजा सुसि जाय १७ भुजा सुडै न ही १८ चर्चित रोग
 १९ विश्वाची रोग २० उर्ध्व वात उकार घणी आवै २१ आफर होय
 २२ प्रत्याधान रोग होय २३ अष्टी लारोग २४ प्रतीष्टी लारोग २५ त्
 नी २६ प्रतितूनी २७ अग्नि की विसमता २८ आटो प रोग २९ पस
 बाडा की सूल ३० पीठि में सूल चालै ३१ बहुमूत्रता ३२ मूत्र रुकि जाय
 ३३ मल गाटो हो जाय ३४ मल रुतरै न ही ३५ ग्रध सी रोग ३६ का
 ला पषजतारोग ३७ षोडा पणौ ३८ पांगला पणौ ३९ कोष्ठ शीर्षक
 गोडा को रोग ४० षत्य रोग ४१ वात कंठ करोग ४२ पग सो जाय ४३
 पग बल बोकुरै ४४ आक्षेप रोग ४५ दंड करोग ४६ वाताक्षेप करोग
 ४७ पित्ताक्षेपक ४८ दंडी पतानक ४९ अभिघाताक्षेपक ५० अं
 तरायाम ५१ वात्यायाम ५२ धनुर्वात ५३ कुञ्जक ५४ अपतंत्र ५५
 उपतान ५६ पक्षाघात ५७ आधिलगिक ५८ कंफ ५९ स्तंभ ६०
 व्यथा ६१ लोद ६२ भेद ६३ स्फुरण ६४ लूषापणौ ६५ कालापणौ ६६
 क्षीणपणौ ६७ सीतलपणौ ६८ रोगांस ६९ अंगमर्द ७० अंगविभ्रंग
 ७१ नसांको संकोच ७२ अंगको सोस ७३ डरपणौ ७४ उन्मादप
 णौ ७५ मोहपणौ ७६ नींद न ही आवै ७७ पसेवन ही आवै ७८ बल

१५५ अमृतसागर तथा अतापसागर तरंग ८

कीहानि ७९ वार्यकोनास ८० स्नाधर्मकोनास ८१ गर्भकोनास ८२
 विनाशमहीश्रम ८३ श्रमनास ८४ अथवातव्याधिकासर्वरोग
 गांका लक्षण अरजतनलिष्यते अथवातव्याधिकोसा-
 मान्यजतनलिष्यते इतनीवस्तांकाकरिवासू वायकासर्वरोगइ
 रिहोयछै मंठीवस्तकाषावासू सलणीवस्तकाषावासू चीकणी
 वस्तकाषावासू वायकासर्वरोगइरिहोयछै आंबलाकाषावासू
 गरमवस्तकाषावासू नांदकालेवासू ताबडाकासेवासू पसेवका
 लेवासू तृप्तिभोजनसू गरमउवटणासू तेलकामर्दनसू औष
 घांका लेवासू यांवस्तकासेवासू सामान्यवायकारोगइरिहोय
 छै अथसिरोग्रहकोलक्षणलिष्यते वायहैसोखेहीसू मि
 लि माथानैनसानैलूषीकरै पाछेवांमैघणीपीडकरै नसानैका
 लाकरै योरोगअसाध्यछै अथसिरोग्रहकोजतनलिष्यते
 दसमूलकोकांठोकरिवेंकोरसकाटै अरविजोराकोरसकाटै
 अरईरसमेंतेलपकावै पाछैईतेलकोमर्दनकरैतौसिरोग्रहइ
 रिहोय २ अथवा कूट अरंडकीजड धतूराकीजड सहजणां
 कीजड सूरि कालीमिरचि पीपलि सींगीमोहरो यांनैबराबरिले
 अरमिहांवाटि गरमकरिलेपकरैसहावतौ २ तौसिरोग्रहइरि
 होय ३ अथकल्पकैसीकीचिकित्सालिष्यते देसागोषरू
 तिलांकाफूल यांनैबराबरिले अरयांकीबराबरिसहतपुन
 लेतांमैयांदोन्यांनै केंसाकैलेपकरैतौ कैसघणावधै अथवा
 महलोदी नीलकमलकीजड मिनकादाष इनकों तेलमें घृतमें
 दूधमें मिहींपीसीलेपकरैतौ कैसलंबाघणाहोय अरयांचौष
 घांसू छछूंदरीकोदोसइरिहोय अथजंभाईकोलक्षणलि

१५६. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग

प्यते मूँदा का एक स्वासनै प्रथम मूँदा में पीजाय पाछै ओ स्वासनै
पूछो काटि देवे गदेर अर आलस अर नींद नै लीयां आवै वैनै जंभा
ई कहजे अथ जंभाई घणी आवै तीं को जतन लिप्यते स्मि
पीपलि कालीभिरचि अज मोद सींधो लूण यां नै लुदा लुदा अथ
बा ये कठामि हीं वांदि गरम पाणी मूँले तौ जंभाई को रोग दूरी होय
१ अथ वा कडवा तेल को मर्दन करै अथ वा मीठो भोजन करै
अथ वा तांबूल को भक्षण करै तौ जंभाई को रोग दूरी होय २ अथ
हनुग्रह रोग को लक्षण लिप्यते दांत एकी फट मूँदा भनै घणी
घसें तौ अर चवीणां का पावासूं अथ वा कहीं तरै की चोट सूं डा
दी का जड में रह तो जो वाय सो छुपित होय ओ मूँदा नै फाडो हीरा
षिदे अथ वा मां च्यो हीरा षदे तदि पुरष है सो बडा कष्ट सूं बोलि
वामें अर पाचामें सर्वथा होय तीं नै वैद्य है सो हनुग्रह रोग कहै छै
अथ हनुग्रह को जतन लिप्यते जीं को मूँदो मिचि गयो होय
तीनै चीकणी बस्त सूं सेकि पसे बलि वावै तौ मूँदो उघडि आवै अ
र जीं को मूँदो फाट्यो रह जाय तीनै सीतल बस्त सूं फाट्या पणों दू
रि होय अर जीं की डाढी मुडि वा सूं रह जाय तीनै पीपलि आदो
चचाय चचाय थुकाय देतौ डाढी मुडि वा को रोग दूरी होय १ अथ
वा तेल में लसण नै तलि सींधो लूण लगाय पाचतौ हनुग्रह रोग
गदूरी होय २ अथ वा उडवां का बडामें लसण सींधो लूण आ
दो हांग मिलाय तेल में बडा करि पायतौ हनुग्रह रोग जाय १ अ
थ वा तेल नै गरम करि सुहावतौ सुहावतौ मांथा कै मर्दन करै तौ
हनुग्रह रोग जाय ३ अथ वा प्रसारणी तेल का मर्दन सूं इतनां रो
ग जाय सो लिप्यते पीपल को पंचांगटका १०० भरले तीनै सोला

सेर पाणीमें औटावै औटावै वैनें कूरि पाछे वैको चतुर्थीस आयर है
तदि वैनें छाणिवें पाणीमें तिलांको तेलरका १०० भरनां पै अरइ हीं
मैंद हींको मट्टोदका १०० भरनां पै अरदका १०० भरकांजींको पाणी
नां पै अरतेलसूं चौगुणौगउको दुधनां पै अरचित्रक पीपलामूल
महुवो सींधोला वच सौंफ देवदार रास्ना गजपीपलि छड छ
डीलो रक्तचंदन अरुंडकीजड परेंदाकीजड सूरि येसारी औषदि
दकादका भरिले त्यांको काटोकारिं वैकाढाकोरसवें तेलमें नां पै अ
रषांपकोरससेर १ वैंतेलमें नां पै पाछे मधुरीआंचसूं पकावै येस
बरसबलिजाय तेलमात्र आयर है तदितेलने उतारिले पाछे ईने
लको मर्दन करै अथवा नांसदे अथवा ईने पुवावै अथवा ईको
सेक करै तो सर्वबायकाधिकारनें हनुस्तंभनें पांशुलानें जिह्वास्तं
भनें अर्दितरोगनें बकाईकारोगनें कांधाकास्तंभनें पीठिकास्
लनें ग्रधसानें षोडानें नांयलानें थलुवातनें कूबडापणनें इत
नाबायकारोगांनें योतेल डूरि करै छै इति प्रसारणी तैलम्
अथ जिह्वास्तंभको लक्षणालिख्यते गणीनें वहवावालीजी
नसां त्यांमै रहतोजो पवनं सो कुपित होय जीभनें स्तंभित करै
छै सो गजीभजलकापीचामे अरबोलगामें समर्थन हीं होय छै
ईनें जिह्वास्तंभरोग कहिजे अथ जिह्वास्तंभको जतन लिख्य
ते गीठोरस लूण मट्टाई चीकणी उन्ही यां वस्तां सूं जीभनें जथा
योग्यनें मर्दन करै अथवा सुहावतागरमपाणीसूं कुरलाकरै
तो जिह्वास्तंभको रोग डूरि होय अथ गुं गां पणों मद्गद पणों
वकाई पायवो यां रोगांको लक्षण लिख्यते कफकारकै सं
जुक्त बाय है सो धयनीनाडीमें वहवावालीजी नसां त्यांनें आछा

१५८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

दनकर मनुस्यां नैर्गंगा अरनां कर्मैर्होबोलै अरबकाईषायबोले
इसारीगां नैकरैछै अथ गंगाको अरगनगन्याको अरबकाईषा
यबोलै त्यांको जतन लिख्यते गऊको घृतसेर १ सहजणां कीज
उटका ११ भर वचटका ११ भर सींधोलूणटका ११ भर पावड्याका फू
लटका ११ भर लोदटका ११ भर यांसारां नैवांदि बकरीको दूधसेर ५४
तींमै घृतसेर १ नांषि अरयेओषादिमिलाय मधुरीआंचि संपकावै
पाछै दूध अरओषादि चलिजाय घृतमात्र आयरहै तदिवे नैकादि
छे पाछै ई घृतको सरस्वती मंत्रसंविधि पूर्वक सेवन करैतौ गंगा
पणै अरगनगन्या पणै अरबकाईषायवौये सारारोग दूरि होय
अरवैकी स्मृति बुद्धिमेधाकांति बहोत बधै इति सारस्वत घृतम्
अथ सरस्वती मंत्र लिख्यते ऊं ह्रीं ऐं ह्रीं ऊं सरस्वत्यै नमः यो सर
स्वती सिद्धि मंत्र छै इकोयां अळरां बराबरि सहस्र करै ई मंत्र नैसि
द्धि करै ई मंत्र संयो घृतषाय अथवा मालकांगणीको तेलषायतौ
येस रोग जाय अरवैकी बुद्धिततकाल चमत्कारी होजाय अथवा
हलद वच कूठ पीपलि सूरि जीरो अजमोद महलोठी महुवो
सींधोलूण यांनै बराबरिले पाछै यांनै निपटमिहीं वांदि टंक शाभां
पनकै साखिले तोरोजीनादिन २१ तौ येस रोग दूरि होय अरवै
रसश्रुति धर होजाय हजारस्रो करोजीनां कंठ करै इति कल्याण
कावलेह अथ प्रलाप अरवाचालरोग कालक्षण लिख्यते
आपका कुपथ्यसूक्ष्मपित्तजो वाय सो अर्थरहित क्यूंको क्यूं वच
नबोलै तींनै प्रलाप रोग कहिजे अर अर्थलीयां बोराशब्द सुषं
काटे तींनै वाचाल कहिजे अथवा चाल प्रलाप रोग का जतन
लिख्यते तगर पित्तपापडो कुटकी नागरमोषो असगंध श्राद्धी

१५९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग

दाष अगर दसमूल सापाहुली यांसारा नै बरा बरि ले पाछैयानै
जो कूट करि यांको काटो करि देतौ प्रलापनै अरवांचालरोगनै इरि
करै अथजीभकारसाग्यांनको लक्षणलिख्यते जो मधुर
रसनै आदिलेर छे दस छै त्यांकाषा बांमै जथार्थ ज्ञानजीभको
जातोरहै जाणिजे क्यूँ बाइजै छै तीनै रसाग्यांनरोग कहिजै
अथसाग्यांनसेमको जतनलिख्यते सूँठि कालीभिरचि पी
पलि सांधोलूण अमलवेदचूक यांओषधानैमिहीं बांदि यांको
एकजीवकरि जीभकै आछीतरहलेप करैतौरसाग्यांनको दोस
इरि होय १ अथवा ब्राह्मी पलासपापड़ो राई कालोजीरो पी
पलि पीयलामूल चित्रक सूँठि यांनैमिहीं बांदि जीभकै बारंवा
रलगावै अथवा यांको काटो करि ईंका कुरला करैतौ जीभका
रसका अग्यांनपणांको दोस इरि होय १ अथवा आदौ बारंवार
षायतौ जीभकारसाग्यांनपणांको दोस इरि होय १ अथसरीर
की त्वचासूनी होयगई होयतीं को लक्षणलिख्यते जो पुरस
नैसातउणाको मलकठिणपणांको ग्यांनजातोरहै तीनै त्वचासू
नीपणांको रोगजाणिजे अथत्वचासून्यको जतनलिख्यते
त्वचासून्यपणांवाला कैलोही कटायजेतौ योरोगजाय १ अथ
वा लूण धूमसो यांदोन्यांनेतेलमेंमिलायतांको सरीरकै मर्दन
करैतौ त्वचाकीसून्यपणांको दोस इरि होय १ अथअर्दितरो
गको लक्षणलिख्यते ऊंचासूंपडती जो भारीवस्तुतीनै हाथां
संजंचो मूंदो करियहणकरै अथवा करडीवस्तुनै घणीषाय अ
थवा घणोंहंसै घणीजंभाईले अथवा बोजनैमाथासूंधणौब
है अथवा बिसमस्थानमैसोवै तांपुरसकै सिरमैनासिकांमै

होदमें दाढ़ीमें ललाटमें नेत्रोंमें ग्रंथानांमें रहतौ जो बायं सो पुरस
 कामूदांमें अर्दितरोगनें उफजावै है सो वै पुरस को मूंदो आधो बां
 को हो जाय अरवें की कांधी सुडै न हीं अरवें को सिरहाल बोकरी
 आछीतरह बोल्यो जाय न हीं आछीतरह देख्यो जाय न हीं अरवें पुर
 सकें कांधीमें अरदादीमें अरदांतांमें पीडरहै येजोंमें लक्षण होय
 तोंनें अर्दितरोग कहिजे १ सो अर्दितरोग तीन प्रकारको है बाय
 को १ पित्तको २ कफको ३ अथवायका अर्दितको लक्षण
 लिख्यते लालघणीपडे सरीरमें पीडाघणी होय सरीरकांपै पुर
 कै घणी डाढ़ी सुडै न हीं होदसूजि जाय ये लक्षण होय तौ बायको अ
 र्दित जाणिजे १ अथ पित्तका अर्दितको लक्षण लिख्यते मूं
 दो पीलो हो जाय जुर होय आयै तिस घणी होय तौ पित्तको अर्दित
 जाणिजे २ अथ कफका अर्दितको लक्षण लिख्यते मोहघ
 णो होय आवै गलांमें सिरमें कांधीमें यां तान्यां स्थानांमें सो जो होय
 आवै अरये तीनूं सुडै न हीं तौ कफको अर्दितरोग जाणिजे ३ अथ
 अर्दितरोगको असाध्य लक्षण लिख्यते क्षीण पुरस कै निमेष
 न हीं लागे जी पुरस सूं बोल्यो न हीं जाय अर सरीर कांपता तीनि बर
 सहोय गया होय तौ अर्दितरोग असाध्य जाणिजे १ अथ अर्दितरो
 गको जतन लिख्यते अर्दितरोग बालाने चाकणं पुवाजे नाराय
 ण विसर्ग भर्नै आदिलेर त्यां को मर्दन कराजे गरम वस्त को सेवन क
 राजे डाह दिवाजे गरम औषधां संपसेव लिवाजे सिर ऊपरि धाय
 काते लनां षजे यां वस्तां संप अर्दितरोग जाय २ अथ वायका अ
 र्दितरोगको जतन लिख्यते दंसमूलका कांदां संचायको अर्दि
 त जाय १ विजोराकार सकासे वा संचायको अर्दित जाय १ अथ

परैटी पीपलि पीपलामूल चय चित्रक सूरि यांकाकादासंवाय
 कोअर्दितजाय १ अथवा उडदांकावडामें हांग आदो लसणमि
 लायबाय ऊपरसूंसांसकोसोर बोपीवैतौ वायकोअर्दितजाय १
 अथपित्तकोअर्दितरोगकोजतनलिष्यते घृतकोवस्तकर्म
 करे अथवा इधकोसेवनकरैतौपित्तकोअर्दितहूरिहोय १ अ
 थकफकाअर्दितकोजतनलिष्यते वमनकरायांसंकफको
 अर्दितजाय १ अथवा तिलांकातेलमेंलसणमिलायबायतौस
 र्वप्रकारकोअर्दितततकालजाय १ अथमन्यास्तंभकोलक्ष
 णलिष्यते दिनकासोवासूं घणवैआरहवासूं विकारकूं प्राप्त
 हुबोजोकफसोवायसूंभिलिकांधीनैसुडिवादेनहीं तीनैमन्यास्तं
 भरोगकाहिजे १ अथमन्यास्तंभकोजतनलिष्यते दसमूल
 काकादासूं अथवा पंचमूलकाकादासूंमन्यास्तंभजाय १ अथवा
 पसेवलेवासूं अथवा नासिकालेवासूंमन्यास्तंभजाय १ अथवा
 तेलकोमर्दनकरितांरूपरिअरंडकापांनचांधैतौमन्यास्तंभजाय
 १ अथवा कूकडाकाअंडाकोरस तीमेंसंधोल्हण अरघृतमि
 लायतींकोकांधीकैमर्दनकरैतौमन्यास्तंभजाय १ अथवाहुसो
 सकोलक्षणलिष्यते कांधामेंरहतोजोवाय सोकुषितहोय
 भुजानैसुसायदे अरभुजानैस्तंभितकरिदे वैनैबाहुसोसरोगक
 हिजे १ अथवाहुसोसकोजतनलिष्यते पाछानैकल्याण
 घृतउन्मादरोगमेंलिष्योछै तींकोसेवनकरैतौबाहुसोसरोगजा
 य १ अथवा परैटीकोकादोतीमेंसंधोल्हणमिलायपीवैतौ वा
 हुसोसअरमन्यास्तंभरोगजाय १ अथअवबाहुकरोगकोल
 क्षणलिष्यते भुजाकीनसांमैरहतोजोवाय सोनसांनैसंकोचकरि

१६४. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग . . . ८

यारोगानैयमहानाराचरसदूरिकरैछै ईकादस्तलागिनुकैतदिमि
श्रीमिलायदहाधुवाजे पाछैचावलनैदहांसुभिलायउनमानया
फिक सींधोलूण वैमैघालि थोडासायेधुवाजेतौआध्यानकोरोग
जाय१ अथप्रत्याध्यानकोलक्षणलिख्यते पसवाडामेंअर
हायामेंतौआफरोहोयनहीं अरनाभिखूंलेरपेटहीपेटमेंआफो
होयतीनै प्रत्याध्यानकहिजे अथप्रत्याध्यानकोजतनलिख
ते लंघनकराजे पाचनादिकदीजे वस्ति कर्मकराजेतौप्रत्याधा
नजाय१ अथवाताष्टीलाकोलक्षणलिख्यते नाभिकेनीचै
पवनकीगांठिभाठासीरकीबंधिमलमूत्रनैरोकिदे अरउठेपीड
घणीकरै तीनैप्रत्याष्टीलाकहिजे अथयांदोन्यांकोजतनलि
ख्यते सेकीहींग पीपलामूल धणोंजीरो वंच चच चिचक पाठ
कचूर अमलवेद संचरलूण सींधोलूण सांभरोलूण सृंठि काली
मिरचि पीपलि जवषार साजी अनारदणों हरडैकीछालि पौ
हकरमूल डांसस्थां जांडेरूषकीजड येसाराबराबरिले यानै
मिहींवांठि आदाकारसकीपुट ३ दे पाछैईचूर्णनैछायासका
यंटंक २॥ गरमपाणीखूंलेतौवाताष्टीलाअरप्रत्यष्टीलाजाय१
अथतूनीरोगकोलक्षणलिख्यते मलमूत्रकास्थानमेंरहतो
जोपवन सोखुदालिंगमेंपीडाकरै तीनैतूनीरोगकहिजे१ अ
थप्रतितूनीरोगकोलक्षणलिख्यते शुदालिंगमेंरहतोजोपवन
सोचानैपीडाकरै पेडूमैंजायपीडाकरै तीनैप्रतितूनीरोगकहिजे
१ अथयांदोन्यांकाजतनलिख्यते यांदोन्यांकैस्नेहकीवस्तदीजे
तौतूनीरोगप्रतितूनीरोगजाय१ अथवा सृंठि पीपलि कालीमि
रचि सेकीहींग जवषार साजी सींधोलूण यानैमिहींवांठिदंक॥

१६५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तुरंग ८

गरमपाणीसूंडेतौतूनीअरप्रतितूनीरोगजाय १ अथत्रिकसू-
लक्ष्मणालिष्यते कटिकातीन्यूहाडामें अरपीठिकातीन्यूहा-
डामें अरबांसकाहडामेंपीडाहोय तीनेत्रकसूलरोगकहिजे १
अथत्रिकसूलकोजतनलिष्यते बालूरेतसंसेककराजे अ-
थवा आरणाछाणांकीराषकोसुहावतोसुहावतोसेककराजे
तौत्रिकसूलजाय १ अथवा गूल्हीबोलीकीजडकीबकल अस
गंधजंरुंरुंषकीबकल गिलोय सतावरी गोषरू गरुमा भिसीत
सौंफ कचूर अजवायणि मंदि यांनैबराबरले यांसर्वकीबराबर
सोध्योगूगललेगूगलसूंचोथाईघृतले यांसारांकोएकजीवक
रि पंचमासारोजीनांवाकूकैसाथिले अथवा गरमपाणीकैसाथि-
ले अथवा मांसकासोरवाकैसाथिले तौत्रिकसूलनैजातुग्रहनें
भुजास्तंभनै संधिगतवायहोयजीनै हडटूटिगयोहोयतीनै षो-
डपणानैग्रधसोनै पक्षाघातनै यांसारांरोगानैयोषयोदशांगरू-
गलदूरकरैछै इतित्रयोदशांगरूगल १ अथवस्तिवानको
लक्ष्मणालिष्यते पेडूकोवायकुपितहोयअरमूत्रआछीतरै
बालतौहोयतीनैरोकिदे अरघणांरोगानैप्रगटकरै तीनैबास्ती-
वातरोगकहिजे १ अथइंकोजतनलिष्यते परैदीकीजडकी
बकल तीबराबरिमिश्रीमिलायटंक २॥ गंडकादूधकैसाथि-
लेतौ बारबारमूतिवाकोरोगदूरहोय १ अथवा त्रिफलाकोचू-
रोंकरितीबराबरिसारमिलाय मासा ४ सहनकैसाथीचाटैतौ
बारबारमूतिवाकोरोगजाय अथमूत्ररूकिगयोहोयतीको
जतनलिष्यते जबवारमासा ५ मिश्रीकैसाथिलेतौमूत्रकोबं-
धछूटै १ अथवा पेडाकाबीज अरतेवरसीकाबीजयांनैपांखी

१६६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

मैंघोद मासा २ तीमैजवधारनाधिभित्रीमिलायपीवैतौ मूतरुकि
 गयोहोयतीकोबंधछूटै १ अथवा चीशियांकपूरकीवत्तीकरलिं
 गमें अथवा भगमेंदेतौमूतकोबंधछूटै अथग्रधसीरोगको
 लंक्षणांलिख्यते पहलीकूलाबामेंपीडहोय पाछैकरिमेंपीडहो
 य पाछैपीठिमेंपीडहोय पाछैगोडामेंपीडहोय पाछैजांघमेंपीड
 होय पाछैपगांमेंपीडहोय अरपगांनैस्तंभितकरिदे अरपगनि
 पटहोलूउटै ईनैग्रधसीरोगकहिजे सोग्रधसीरोगदोय २ प्रकार
 कोछै येकतौवायको १ येकचायकफको २ वायकामेतौपीडघ
 णीहोय अरसरारबांकोहोजाय अरगोडामेंजंघामें संधिसंधिमें
 फुरकणीहोय अरस्तंभितहोजाय अरवायकफकीग्रधसीमैस
 ररभात्तौहोजाय अंधिमंदहोजाय अरतंद्रहोय लालघंणीपडै
 अथग्रधसीरोगकोजतनलिख्यते बमनकरावासंग्रधसीरो
 गजाय १ वस्तकर्मसंग्रधसीरोगजाय १ सरारनैहरडैकाजुला
 बसूं निरामकरि पाछैवस्तिकर्मकरै १ अथवा अरंडकोतेलअ
 रगोमूत्रमिलायमहीनां १ तांईपीवैतौग्रधसीरोगजाय १ अथ
 वा तेलघृतआदाकोरसविजोराकोरस चूक गुड येअनुमानमां
 फिकमिलायमहीनां १ तांईपीवैतौग्रधसीरोगजाय अरइहींसूं
 करिकीपीडजांघकीपीड बिकसूल गोलो उदावर्त येभीरोगजाय
 १ अथवा अरंडोल्याकीदूधमेंपीरकरि महीनांयेक तांईषायतौ
 ग्रधसीरोगनैपोताकीसूलनैहूरिकरै १ अथवा अरंडकीजड
 बोलकीगिरि कटेली इनकोकाटोकरि यांमैतेलमिलायपीवैतौग्र
 धसीनेपोताकासूलनैहूरिकरै अथवा विडलूण संचरलूण यां
 नैमिहींवांदि गोमूत्र अरंडकातेलमेंयेघालिपीवैतौ कंफवातकी

ग्रधसीजाय १ अथवा अरंडसौ दांखूणी किरमालाकीगिरि
 यांकोकादोकरि तामें अरंडकातेलनांषिपवैतौग्रधसीरोगजाय १
 १ अथवा निरुंटीकापानांकाकादासंग्रधसीरोगजाय १ अथवा
 रास्तादका ५१ गूगलदका ५१ यादोन्यांनैवांदि घृतमेंगोलीमासा
 ४ कीकरिपाछैगोली १ रोजीनांषायतौग्रधसीजाय १ अथवा
 मिलवै रास्ना किरमालाकीगिरि देवदारु गोषरू अरंडकीजड
 साठीकीजड संहि यांकोकादोकरिदेतौ ग्रधसीरोगनै अरजांध
 कीपीडनै पेटकीपीडनै पसवाडाकीसूलनै यांसांरोगानैयो
 कादोदूरिकरैछै १ इतिरास्नादिककोकादो अथ षोडा
 पांगलारोगकालक्षणलिख्यते करिमैरहतौजोवाय सोजां
 धकीनसांनैपकडियेकपगमैस्तंभितकरिदे तीनैषोडोकही
 जे अरकरिमैरहतौजोवाय सोजांधकीनसांनैयहणकरिदे
 न्यूंजांधाकेनासकरै चालवादेनहींतीनैपांगलोकहिजे १ अ
 थयादोन्यांकोजंतनलिख्यते जुलांबकालेवासं औषधां
 कागरमपसेवासंयोगराजउगैरैगूगलकाषावासं तैलादिकां
 कामर्दनसंयस्तकर्मसं येदोन्यूरोगजाय १ अथकलापषं
 जरोगकोलक्षणलिख्यते चालैजोसमैंसररकापै अरषो
 डाकीसोनांईदपै जाशिजेनसांआपकोरिकाणोछोडीदीयोछै
 तीनैकलापषंजरोगकहिजे १ अथईकोजंतनलिख्यते
 विसगर्भादिकतैलकामर्दनसंयोरोगजाय १ अथक्रौष्टुशी
 र्वरोगकोलक्षणलिख्यते गोढामेंवातलोहाकाविकारसंसो
 ईहोयअरगोढामेंघणीपीडहोय अरस्याल्पाकामाथांसिरीसो
 गादोहोय तीनैक्रौष्टुशीर्वरोगकहिजे अथक्रौष्टुरोगको

१६८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

जतनलिष्यते गिलवैदंक २॥ त्रिफलादंक १० यादोन्यांकोकादो
करितींमैगुगलदंक २॥ नांषिईतोलमहीनां १ तांईपावैतौयो
क्रोष्टुशीर्षरोगइरिहोय १ अथवा दूधसेर ५१ अरंडकोतेलदं
क १० नांषिमहीनां १ तांईपावैतौक्रोष्टुशीर्षरोगइरिहोय १ अ
थवा यथायराकोचूर्णदंक २॥ गडुको दूधसेरआध ३॥ तांको
साधिपावैतौक्रोष्टुशीर्षरोगजाय १ अथवा तीतर्कामांसका
सोरवामैदंक २॥ गूगलनांषिपायतौयोरोगजाय १ अथवा
किसोरगूगलकासेवासंयोरोगजाय १ अथगोडादूषिवा
कोजतनलिष्यते तेलकोमर्दनकरि तांउपरिवांटि सूरिकोम
र्दनकरै पाछैवैउपरितेलसूचोपडिअरंडकापानगरमकरि
बांधैतौगोडादूषतारहै १ अथवा कौठिकाबीजदंक २॥ दहीवै
साधिदिन ७ तथा १४ लेतौगोडादूषतारहै १ अथबल्लीरो
गकोलक्षणलिष्यते पगमें जंघामें पटुंछामें काषनमें बां
यंदा आवैतीकोबल्लीरोगकहिजे १ अथबल्लीकोजतनलिष्य
ते कूठ सांधोलूण यांकोकादोकरि ईकाटाकारमसैं तेलअर
अमलवेदकोरसनांषिईतेलनैमधुरीआंचसंपकावै पाछैरस
बलिजायतेलमानआयरहै तदिईतेलकोमर्दनकरैतौबल्लीरो
गजाय १ अथवातकंदकरोगकोलक्षणलिष्यते ऊंची
नीचीजागामें पगमें लतांषेदहोय पाछैटकोएवामें पीडाआ
यरहै तींकूवातकंदकरोगकहिजे अथईकोजतनलिष्यते
टकूंएयाकीजगैसुयासूंषोदिलोहीकडाईजेतौवातकंदकरोग
जाय १ अथवा अरंडकोतेलदंक ५१ रोजीनांमहीनां १ तांईपा
वैतौ वातकंदकजाय २॥ अथयाददाहकोलक्षणलिष्यते

वातपित्तलोहायेतीन्धूमिलि पगथलीनमें दाहकरै तीं को पाददाह
 को रोग कहिजे १ अथ पाददाह को जतन लिख्यते मसूर की दा
 लि कूंमि ही पीसि चौटावै पीछे वै कौनि पटहं दो करि रांमैं आटा को
 सांनि पतलो ले प करै बार प्रांच सात तीं पाददाह रोग जाय १ अथ
 धन्ना मांषन को पगथलीन कै मर्दन करि पगथलीन को अधिसू
 त पावै तीं पाददाह रोग जाय १ अथ वा अरंडोल्यांनै गडका दूध
 में मिही पीसि हथेली वा पगथली कै ले प करै तीं घणौ भी दाह जाय १
 अथ पादहर्ष को लक्षण लिख्यते जीका दोनूं पगजरा जणों ट
 करि सोय सोय जाय को ईतरे दा बिबे उगेरै कूं छोडै तीं जागि उठै तीं
 को पादहर्ष रोग कहिजे १ अथ ई को जतन लिख्यते कफ का
 अरवाय का दूरि करवावाला जतन करै तीं पादहर्ष रोग जाय १
 अथ पग फूटणी को जतन लिख्यते सिल सांभरो लूण हलद
 ये बराबरिले अरइन धत्ता के पीजन कूं पाणी में पीसि उन तीन्धू
 बराबरि गड को माषन ले पाछैयानै पकावै अरयां पचतां ही में
 जौणौ गोबून नां वै ये सब बलि जाय मांषन मात्र आयर है तदि
 पगथलीन कै मर्दन करै तीं पग फूटणी दूरि होय १ अथ पित्त-
 सहित जौ वाय तीं का आक्षेप रोग को लक्षण लिख्यते पित्त
 को स्थान उदरादिक तीं में रहत जौ वायतिन को स्तंभित करि दंड
 की सी नाई करि दे अथ वा कफ में मिल्यो जौ वाय सो धमनी नाडी में
 रह करि सरीर कूं स्तंभित करि दे सो ओ कष्ट असाध्य छै अथ के
 वल वाय का आक्षेप को लक्षण लिख्यते हाथ पग मांथो पाठि
 दूंगा इन कूं स्तंभित करि दे अरवाय इन में पीड भी करि दे सो इह अ
 साध्य छै १ अथ चोट लागि वासूं उ पज्यो जौ वाय तीं का आ

क्षेपकोलक्षणलिख्यते जीरेसखादिककीचोटलागोहोयतीसं
 उपज्योजोवायसोतींमाफिकसाध्यजानिये अथईकोजतन
 लिख्यते षरेंदोकीजड दसमूलजब बोरकीजड कुलथ इनस
 बनकोअष्टांघसेसकादोकरि तीमेंतेलनांषि अरयेओषदिनांषि
 मधुरी आंचसूंखाय तेलतयारकरि येओषदिऔरमिलजेसो
 लिखूंछूं सींधोरुण अगर बाल देवदाक मजीठ पदमाष कूठ
 इलायची छड पत्रज तगर गौरीसर सताबरी असगंध सौंफ
 सादोकीजड येतेलकैअनुमानमाफिकनांषि तेलनेंपकायले पा
 छैईमहाबलीतेलकोमर्दनकरैतौसर्वप्रकारकाआक्षेपकरोग
 नकूंसर्वप्रकारकावायकारोगानै हिचकीनें सासनैं गोलानैं अं
 बहइनें पीणतानैं दूत्याहाडकूं पेदकूं इनसर्वरोगानैंओमहाब
 लीतेलइरिकरैछै १ अथअंतरायामरोगकोलक्षणलिख्यते
 पगनकीआंगुलीटिकोएयां पेदहियो गलो इनमेंरहतौंजोवाय
 सोचडानसांकासमूहकूंसररकैमांहिपकावैछै पाछैवैकाने
 बफादिनिश्चलसेहोयजाय अरडादीमुडैंनहां अरवेकापस
 वालादूटासाहोयजाय कफकोंछादै अरसररकैभीतप्रिकबाण
 कीसीनाईबांकोहोयजाय जीमेंयेलक्षणहोयतौअंतरायामरो
 गकहिजे अथवात्यायामरोगकोलक्षणलिख्यते घणावा
 यलबस्तकाषावासूं कुपितहुबोजोवाय सोसररकासगलीन
 सांनै अरकांधीनेंपीठिनें सुसारअरमलुस्यकैसररकूंकबांन
 कीसीनाईबांकोकरिदेछै अरवेंकाहियाकुंजांधनकूंवावायतोडि
 नांघै येजीमेंलक्षणहोयतीकूंवात्यायामरोगकहिजे सोअर्दित
 रोगकेजतनपीछैलिपैहैसोहीइनकोजानिलज्यो अथधनुस्तंभ

लेलक्षणलिख्यते कबानकीसीनाईवेंकोसरीरहोजाय अरस
 रकोवर्णऔरसोऔरहोजाय मूढोमिचिजाय देहसिथलहोजा
 य चेतजातोरहै पसेवआवे यांकूंधनुस्तंभरोगकहिजे यारोगवा
 रोदन १०जीवै अथकुञ्जक रोग कोलक्षणलिख्यते कोपकू
 प्राप्तिभयोजोवायसोहियाकूंडंचोकरिदे अरउठेपीडघणीकरै
 तोंकूंकुञ्जक रोगकहिजे अथइनतीन्यूरोगनकूंदूरिकरिवेवारो
 प्रसारणीतेंलयाहो प्रकर्षमैलिख्योछै तीसूं धनुस्तंभ वाह्यायम
 अंतरायाम व्यात याधिसर्वप्रकारकोदूरिहीयछै अथअपतं
 वरोगकोलक्षणलिख्यते वायलवस्तकेसेवनसूकोपकू प्रा
 प्तिभयोजोवायसोआपकेस्थानकूँछोडिअरहियामैजायभा
 गीहोय सिरकूँअरकनपटीनकूँपीडाकरै कबानकीसीनाई
 सरीरकूँनवायदे अरओमोहकूँप्राप्तिहोजाय अरबोवडैकष्ट
 सूंउंचेप्रकारकरिसासले अरवैकानेनफादिजाय कैमिचिजा
 य अरवैकोकंठकबूतरकीसीनाईबोलेसंज्ञाजातीरहै जीके
 येलेलक्षणहोयतीकैअपतंवरोगजाणिजे अथअपतंवरोग
 कोजतनलिख्यते मिरचि सहजणांकाबीज वायविडंग अ
 फाम महुवो येबरावरिले इनकूँमिहीपीसीनांसदेतौअपतं
 जाय अथवा हरडैकीछालि कचरासा सांधोलूण अमलवेद
 इनकूँमिहीपीसिडंक ३॥ घृतकैसाथि अथवा आदाकारसकै
 साथिलेयतौअपतंवरोगजाय १ अथअपतानकरोगको
 लक्षणलिख्यते नेत्रफाटासाहोजाय संज्ञाजातीरहै कंठमैक
 फबोले संज्ञाआवैतबचैनपडे अरअग्यानआवैतबओरूसो
 हहोय इहभयंकररोगहै अरइहस्त्रीकैगर्भपातसूहोयछैत्र

रपुरसकैघरेलोहीनिकलवेसंहोयछै अथवा घणीचोटलागि
वेसंहोयछै इहरोगअसाध्यजानिये अथर्दकोजतनलिष्य
ते दंसमूलकाकादोमेपीपलिनांषिपीवैतौअपतानकरोगजाय
अथवा तेलकैमर्दनसंजाय २ अथवा तीषीवस्तकीनांसकेतौ
अपतानकरोगजाय ३ अथवा घृतकेपीवेसंहअपतानकरोग
जाय ४ अथवा स्नेहकीवस्तिकैलेवेसंहअपतानकरोगजाय ५
अथपक्षाघातरोगकोलक्षणलिख्यते कोईकारणसंजुषित
जोवायसौमनुष्यकैआधेसरीरकूपकडिअरसर्वसरीरकीनसां
नैसुकायदेछै अरआधेसरीरकीनसांनैनिपटदीछाकरिदेछै
अथवांसर्वसर्वसरीरकीनसांनैदीछाकरिदेछै निपटनिकमीक
रिदे उननसंनकोम्पानजातोरहै येलक्षणहोयतीनैपक्षाघात
रोगकहिजे जीवनौअंगहोय अथवा वांवेअंगहोयनिर्जीवसो
पक्षाघातदोयप्रकारकोछै पित्तवायको १ कफवायको २ सरीर
कैमांहीनबारैदाहहोय अरमूर्छाहोयतौपित्तवायकोपक्षाघा
तजानिये अरसरीरकैमांहीबारैसीतलगे अरसोजोहोयस
रीरभारीहोयतौकफवायकोपक्षाघातजानिये पक्षाघातकोसा
ध्यलक्षण केवलवायसंपक्षाघातउपज्यौहोइतौकष्टसाध्यजा
निये अथपक्षाघातकोअसाध्यलक्षणलिख्यते गर्भिणी
स्त्रीकै अथवा व्यावरस्त्रीकैपक्षाघातहोयसोअसाध्यजाणि
जे अथवा बालककैरुद्धकै क्षीणपुरसकै घाववालाकै लोही
निकलिगयोहोयतीकै संलांसरीरवालाकै पक्षाघातअसाध्य
जाणिजे अथपक्षाघातकोजतनलिष्यतेउडरकौंछकाबी
ज अरउकीजड षरेंदीकीजड इनकोकादोकरितीमेंसेकीहींग

अरसींधोलूणमित्तायपीवैतौपक्षाघातहूरिहोय १ अथवापी
पत्त्रमूल चित्रक पीपलि स्रंष्टि रास्ना सींधोलूण उडद इनकोका
टोकरि ईकाटाकारसमेंतेलपकावै रसबलिजाय तेलमात्रआ
यरहै तबईकोमर्दनकरैतौपक्षाघातजाय १ इतिग्रंथिका
दितैलम् उडद कौंठकेबीज अतीस अरंडकीजड रास्ना सौंफ
सींधोलूण इनकुंमिहीपीसियांकोकाटोकरि ईकाटामेंतेलपका
वै तदिरसबलिजाय तेलआयरहै तौकोमर्दनकरैतौपक्षाघात
जाय २ इतिमाषादितैलम् येसर्वजतनभावप्रकासमें
लिखाहै अथवा कौंठकाबीज षरैदीकीजड अरंडकीजड
उडद स्रंष्टि सींधोलूण इनकोकाटोकरिछाणिपीवैतौपक्षाघा
तजाय १ यहवैद्यविनोदमेंहै अथवा महुवाकोरस गूंग
लटंक ५ बीजाबोलटंक ५ बकरीकीमांगणिटंक ५ कटेलीको
रसटंक ५ पलासपापडोटंक ५ आंवीहलदीटंक ५ सुहागोटंक
५ विजोराकीजडटंक ५ इनकोमिहींपीसि तेसरीरकैलेपकरे
पीछेकमरबरावरिषाडोषोद अरषाडाकुंअग्निवालिलालक
रै अरबाषाडाकैआसपासनीचैआककापानमेंलै पीछेवाप
क्षाघातकेलेपवारेआदमीकूवाषाडामेंवैराचै बाकैपसीनोआ
वै जहांताईतौपक्षाघातकोरोगउहींदिनजातोरहै १ अथनि
द्रानासंरोगकोजतनलिष्यते सेकीभांगीकोचूर्णमिहीपी
सिरात्रिकोंअनुमानमाफिकसहतसंचाटैतौ नींदनिश्चैआवै
अरयासूंअतीसारसंग्रहणीभीजाय अरभूषघणीलागे अथ
वा पीपलामूलकोचूर्णगुडकेसाधिलेतोनष्टमयीभीनींदआवै
१ अथवा काकल हरिकीजड सिरकैबांधैतौनींदआवै १ अ

१७४ अमृतसागरं तथा प्रतापसागरतरंग ८

थवा कांगसीसुं सुहावतो २ मांथोवहावैतौ नींदआवै ३ अथवा
कोमल हाथनसुं पगथली पलोटावैतौ नींदआवै ४ अथवा वैग
एकाभडीतामै सहत मिलायषायतौ नींदआवै ५ अथवा तेल-
कीकांजीकैसाथि अथवा बदाईकैसाथि भंडी तोराति कूंषायतौ
नींदततकालआवै ६ अथवा अरंडकोतेल अरअलसीकोते
ल येदोन्यूं वरावरिले तिलकूंकासीकांथालोमें घूवघसि अंजनक
रैतौ नींदघणीआवै ७ अथवा सौंफ अरभांगि इनकूंमिहापी
सिबकरोका दूधमें निवायो सुहावतौ लेपकरैतौ नींदआवै ८ अ
थवा बंकरीकै दूधसुं पगथली धोवैतौ नींदआवै अरपगथल्या
कोदाहदूरि होय ९ अथवा कस्तूरीनैस्त्रीका दूधमें मिहापीसि
अंजनकरैतौ घणादिनैकी गईभीनींदआवै १० येसर्वजतन
वैद्यरहस्यमें लिखेहै अथसर्वांगमें वायहोयतींकोलस
एलिष्यते सर्वअंगमेंकोपकोप्राप्तिभयोजोवाय सोसाराही
अंगमेंपीडाकरै अथईकोजतनलिष्यते विसगर्भकूंआदिले
र तेलनसुं सर्वांगवायजाय १ अथसातूं धातनमें प्राप्तिहुवो
जोवायतींकाजुदाजुदालक्षण अरजतनलिष्यते त्वचाकूं
सूनीकरिदे अरत्वचाकूं पीलीकरिदे सरीरकूं कसकरिदे सर्वत्र
सरीरमेंपीडाकरै २ अथलोहीमें प्राप्तिभयोजोवायतींकोल
क्षणलिष्यते सरीरमेंपीडाघणाहोय वर्णऔरसोहोजाय स
रीरकसहोजाय सरीरभीखोहोय अरुचिहोय मूंडापैकीलहोय
भोजनपचैनहीं ३ अथमांसमें प्राप्तिभयोजोवायतींकोल
क्षणलिष्यते सरीरभास्योहोयपीडाहोय सरीरस्तंभितहोय
४ अथमेदमें प्राप्तिभयोजोवायतींकोलक्षणलिष्यते सरी

१७५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

रमें फोडाकरै अथ हाडनमें रहतोजो कुपित वायतीं को ल
क्षण लिख्यते संधि संधिमें पीडा होय मांस वलि जाय तींद्र आवै
नहीं अरमज्जा में वाय हाड की सी नाई जानिये ६ अथ वीरजमें
प्राप्ति भयो जो वायतीं को लक्षण लिख्यते स्त्री संग करै तो बी
र्य तत काल गिर पड़े कै पड़े नहीं अरगर्भ कू विगाड तो उपजावै ७
अथ इन सब न के जतन लिख्यते रसमें विगड्यो जो वायतीं कै
तेल को मर्दन करिये १ रक्तमें विगड्यो जो वायतीं कै सीतल लेप
सूं अथ बाजुला वसूं अथ बालो ही के कंठ वसूं सांत करिये २ मां
स में दमै रहतोजो वायतीं नैं जुला वसूं सांत करिये ४ हाडनमें वि
गड्यो जो वायतीं को बीकनी वस्त के पावेसूं ४ अथ बा लगा वासूं
सांत कीजिये ५ अरमज्जा में गयो जो वाय सो बीकनी वस्त के पा
वाल गा वासूं आछ्यो होय ६ अथ वा वीर्यमें विगड्यो जो वाय
सो पुष्टाई की औषदि पा वासूं आछ्यो होय ७ अथ कोष्ठमें प्रा
प्त भयो जो वायतीं को लक्षण लिख्यते उदरमें रहतोजो दुष्ट
वाय सो मल मूत्र कूं रोकि दे अर वद को हिया को गोला को बवा
सीर को पसवाडा के सूल को उपजावै छै ८ अथ ई को जतन
लिख्यते पाचनादि कनसूं ई को जतन कीजे अथ वा दूध पाजे
अथ आमास यमें रहतोजो वायतीं को लक्षण लिख्यते
हियामें पसवाडा में नाभिमें इनमें पीडा होय तिसलागे डकार
घणी आवै विसूचिका होय पास होय कंठ मूंदो सूकि जाय सा
स होय अथ ई को जतन लिख्यते दीपन पाचन की औषदि
दीजे लंघन कराजे वमन कराजे जुला वदीजे बावामें पुराणा मूं
गचा वल दीजे अथ वा रोहीस हरडै की छालि कचूर पुहकरसूं

ल नीलकीगिरि गिलचै देवदारु स्तंभि वच अतोस पीपलि वाय
विडंग येसर्ववरावरिले इनकोकादोकरि देयतौआमासयकी
वायजाय १ अथ पक्षासयमें रहतौजोवायतीकोलक्षण
लिख्यते आंतबोलै पेटमेंसूलचालै आफरोहोय मलमूत्रक
ष्टसुईतरै पीठिमेंपीडहोय अथगुदामें रहतौजोदुष्टवाय
तीकोलक्षणलिख्यते मलमूत्र पवनसूरुकिजाय पेटमेंसू
लहोय आफरोहोय पथरीकोरोगहोय जंघामें पीठिमें पसवा
डामेंपीडाहोय अथईकोजतनलि० रस्तिकर्मसुं इहरोगजा
य अथहियामेंप्राप्तिभयोजोवायतीकोलक्षणलिख्यते
गिलचै मिरचि इनकूमिहांपीसिनिवायेजलसूंपीवैतौ यहवा
यजाय १ अथवा असगंध बहेडाकीछालि मिहोवांटिगुडमें
मिलायवायतौ इहवायजाय २ अथवा देवदारु स्तंभि मि
हीपीसिनिवायेपाणीसूंपीवैतौइवायजाय ३ अथकर्णारि
कनमेंप्राप्तभयोजोवायतीकोलक्षणलि० उनकर्णादिक
इंद्रियनकोनासकरै अथईकोजतनलि० सेकसूतैलादिक
केमर्दनसूंइहवायजाय अथसरीरकीनसनमेंप्राप्तभयो
जोवायतीकोलक्षणलि० नसनमेंसूलचालैनसईकट्टाहो
जाय अथईकोजतनलि० सीरछुड़ावैसूंइहरोगजाय अथ
संधिमेंप्राप्तिभयोजोवायतीकोलक्षणलि० संधिसंधिमेंसू
लहंय संध्यानेविगाडिदे अथईकोजतनलि० सेकसूतैलकै
मर्दनसूंइहवायजाय अथवा इंद्रायणकीजड पीपलीतंक
२॥ गुडमेंपायतौ संधिगतवायजाय अथवातब्याधिकोसा
प्राप्तजतनलि० अथनागयणतेलकीविधिलि० अस

१७७. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग

गंध षरेंदीकीजड बीलकीगिरि पाठल दोन्यूंकटेला गोषरू गंगे
रनिकीछालि नांबकीछालि अरल साटीकीजड पीप अरण्यं ये
सबऔषदिदकादसदसभरिले अरपाणीसेर ५५ ले तौमयेऔ
षदिनांषि सनेंसनेंपचाय यांकोकादोचतुर्थीसराषे पाछैईमैति
सांकोतेलसेर ५४ नांषे अरईमैसतावरीकोरससेर ५४ नांषे तेल
सूंचौगुणोईमेंगऊकोदूधेनांषे पाछैयांकूंमधुरीआंचसूपका
वै यांनेपचताहांईमैयैऔषदिनांषे कूढटका १। इलायचीद
का २। कृत्तचंदनदका २। वचदका २। छुडटका २। सिलाजीतदका २।
सांधौलणदका २। असगंधदका २। षरेंदीदका २। रास्नादका २।
सौंफदका २। इंद्रायणदका २। सालपर्णीदका २। पृष्ठपर्णीदका
२। मांसपर्णीदका २। उदपर्णीदका २। रास्नादका २। येसबबर
वरिले ईमेंनांषिमधुरीआंचसूपचावै सर्वरसबलिजाय तेल
मात्रआयरहै तवईकूउतारिछाणि पाछैईतेलकोमर्दनकरै
तौ अथवा बायतौ अथवा यांकोवस्तिकर्मकरैतौ इतनारो
गजाय पक्षाघात हनुस्तंभ पन्यास्तंभ गलग्रह वधिरपणों
गतिभंग करिग्रह गात्रसोम नष्टशुक्र विसमज्वर अंचवृद्धि
गोसो सिरोग्रह पार्श्वसूल ग्रध्रसा बायकासर्वगोग ईनाराय
णतेलसुंदूरिहोयछै इतिनारायणतेलम् अथजोग
राजगूगलकीविधिलिख्यते सूंठि पीपलि चय पीपला
मूल चित्रक सेकीहांग अजमोद सिरस्यूं दोन्यूंजीरा संभालू
इंद्रजव पाठ वायविडंग गजपीपलि कुटकी अतीस भाडंगी
वच मूर्वा येसबऔषदिमासाचारिचारिले अरविफलास
गलीऔषदनीसुंदूणीले पाछैइनसबऔषदानैमिहांवांदि

१७८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

कपडछाएकरै अरयांसारीऔषधांवरवरिसोध्योगूलले पाछै
गूलअरयेसारीऔषदित्यांकोएकजीवकरि मासाचारिचारि
भरकीगोलीकरै अरघृतकावासणमेंमोलराबै पाछैरास्नादिकका
कादासूंगोली १ ले सोलिपूछूं रास्ना साठीकीजडसूंगिलवै अ
रंडकीजड यांकाकादासूजोगराजगूललेतौ सर्वबायकाविकार
जाय अरकिरमालापंचककाकादासूलेतौकफकारोगजाय अर
दारुहलदकाकादासूलेतौ प्रमेहकारोगजाय अरईनेंगोमूचसू
लेतौ पांडुरोगजाय सहतसूलेतौ वायरक्तकोरोगजाय अरबुन
नर्वादिककाकादासूलेतौसर्वउदरकारोगजाय अरगूरालकोसे
वावालो इतनीचस्तकरैनहीं मैथुनकरैनहीं पदार्डुगैरेषायन
हीं इतिजोगराजगूलकीविधिसंपूर्णम् अथवाल्हस
एकोरसदका ११ भरकाटि तीमेंबराबरिकोनेलमिलाय अनुमा
नमाफिकसींधोल्हानांषि पीवैतौ नायकासर्वरोगजाय अथवा
दूधकैसाथि अथवाघृतकैसाथि अथवानेलकैसाथि अथवामां
सकासोर वाकैसाथिलसएादिन १४ पायतौ सर्वप्रकारकीबा
यजाय अरविषमज्वरनें सूलनें गोलाने अश्विकीमंदताने फी
याने सिरकारोगनें वीर्यकारोगनें यानेयोलसएायांकासंजोग
सूंडूरिकरैछै इतिलसएाकल्प अथवा रास्ना धमासो परें
टीकीजड अरंडकीजड देवदारु कंचूर वच अरडूसो हरडैकी
छालि चव्य नागरयोथो साठीकीजड गिलवै बघायरो सौंफ
गोषरू असगंध अतीस किरमालाकीगिरि सतावरी पीपलि
सहजणांकीवकल धरौं दोलूंकुदाली येसर्वबरावरिलेत्यांको
कादोकरि तांकीसाथिबीजोगराजगूललेतौ सर्वप्रकारकावा

१७९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

यकाधिकारजाय इतिमहारास्त्रादिककाथ येसाराभावप्र
कांसमैल्लिण्याछै अथवा योहरकापांनाकोरस अरंडकापा
नांकोरस बकायशकापांनाकोरस संभाळकापांनाकोरस स
हजणांकापांनाकोरस कंडीरकापांनाकोरस यांसारंस्त्रौषाई
तेलनांषिपकावे पाछैईमैस्त्रिनांषे येसर्वबलिजाय तेलआ
यरहै तदिईतेलकोमर्दनकरैतौ सर्वप्रकारकोबायजाय इति
अष्टांगतेलम् अथविसंगर्भतेललिप्यते धतूराकीजड
निर्गुंडा कडवीतूबीकीजड अरंडकीजड असगंधपवाड चि
त्रक सहजणांकीजड कागलहरी कलहारीजडीकीजड नांब
कीछालि बकायशकीछालि दसमूल सतावरी चिरफोदणिगो
रीसर बिदरीकुंद योहरिकापांन आककापांन सनाय दोन्यूंक
नोरकाछालि आंधीपाढो धीप येसारीऔषदीतीनतीन श्टका
भरले यांऔषद्यांबरावरिकालातिलांकोतेलले अरइतनोहीं
अरंडकोतेलले अरईमैचौगुणोपाणीनांषे येऔषदिकूटियां
मैनांषि पाछैयानैमधुरीआंचसूं पकावे येसर्वजलसमेतबलि
जाय तेलमानआयरहै तदिईनैउतारिले पाछैईतेलमेयेऔ
षदिनांषे सोलिबूळूं स्त्रि मिरनि प्रीझलि असगंध रास्त्रा
कूड नागरमोथो वच देवदारु इंदजव जबधार पांचूलूण नी
लोथूथो कायफल पाठ भांडंगी नीसादर गंधक प्रौहकरमूल
सिलाजीत हरताल येसारीऔषदि अथेलाअथेलाभरिले सां
गीमोहरोटका १। भरले पाछैयांसर्वनैभिहावांदि ईतेलमैनांषे
पाछैईतेलकोमर्दनकरैतौ सर्वबायकारोगदूरिहोय अरकूषिको
अरभंवांको अरपीठिको जांघांको अरसंधिसंधिको यांजाय

गांकोसोजोद्विहोय अरगधसीरोगनें सिरकारोगनें फूटणीमें
 कर्णकीसूलनें गंडमालानें यांसर्वरोगानें योविसगर्भतैलद्विक
 रेछै इतिविसगर्भतैलम् अथवा मजीठ दैवदारु चीट क
 खाली वच तज पत्रज सोधीगंधक कचूर हरडैकीछालि बहेडा
 कीछालि आंवला नागरमोथो येओषदि टकायेकेकभरिले त्यां
 नैंवांदि ओढायरसकादिले पाछें ईरसमेंसेर १ तैलनांषे पाछे
 ईतेलनैपकावै पाछेओरसवलिजाय तेलमात्रआयरहै तदिई
 मैयेओषदिनांषे सोलिधूँछूँ छड मूर्वा मेंदल चंपाकीजड तज
 पीपलामूल नेत्रवालो संचरल्ला येओषदिटकादोष २ भरले
 अरलोहवान येरजो असंगंध नरब छड येटकाटकाभरले अ
 रइलायची लवंग चंदन जायकीकलि कंकोल अगर कैसरी
 येसारीपर्सापर्साभरिले कसूरीदंके २॥ ले येसारीमिहींवांदि
 तेलमेंमधुरीआंचसूपकावै तदिसर्वरसओषदिसमेतवलिजा
 य तेलमात्रआयरहै तदिईमैदंके २॥ कपूर वांदिनांषे पाछेई
 कोमर्दनकरैतौसर्ववायकारोगजाय सर्वप्रकारकोप्रमेहजाय
 अरसोजानें गोलानें जुरनें थारोमानेंयोतेलद्विकरेछै इतिल
 क्षीविलासमहासुगंधितैलम् योचनदत्तमेंलिख्यैछै
 अथवा सूंदिटका ७ भर अरईवरावरि इकपोत्योलसण अर
 सूंदिनैमिहींवांदि वरावरिकाधृतमेंभूनिले पाछेलसणनैंवांदि
 वेंमैमिलाय पाछेईमैचोषीसहस्रटका ७ भरनांषे पाछेयांसारं
 कोएकजीवकरि टकायेकेकभर रोजीनांषायतौ पक्षाघातनें
 हलुस्तंभनें कटिभंगनें मुजाकीपीडनें सर्ववायकारोगानें योड
 सणद्विकरेछै १ अथविजैभैरवतेलकीविधिलिख्यते

मालकांगणी असाखू कालोजीरो अजवाण मेथी तिल येसर्व
 वरावरिले अरतेली कीपाणीमैयां तेलकाटे पाछेई तेलकोमर्द
 नकरैतौ बायकासर्वरोगजाय १ इति विजैभैरव तेलम् अथ
 कः पारो गंधक हरताल येणसिल येसर्व वरावरिले पाछेयांसा
 रानैमिही बांदि कांजीमैदिन ३ तई पाछे एक १ हाथमिही कपडो
 ले तांकेयां च्याखांकोलेपकरि वेंकपडा कीवातिकरि वेंकैसूतल
 पेठे पाछे वेंवातीरपरितिलां कोतेलचौगुडौनांयै अरवेंवातीनै
 नां चौरापिजोयदे वेंवातीकैनांचैलेहकोपान्नमैले वेंलोहकापान्न
 मेंउनटवकांकोतेलपडैसोजुशैले पाछेई विजैभैरव तेलकोमर्द
 नकरैतौ सर्वप्रकारकी नायकारोगजाय इति विजैभैरव तेलम्
 अथ विजैभैरवसंलिख्यते हरडैकोछालिदका ३ चित्रकदका
 ३ इलायची तज पत्रज नागरमोथो येच्यारूपईसापईसाभ
 रिले अरसभाळदंक १० सूरिदंक १० कालीमिरचिदंक १० पीप
 लिदंक १० पीपेलाभूलदंक १० सोधोसींगीसोहरोदंक १० सारदंक
 १० वंसलोचनदंक १० पारोदंक १० सोधीगंधकदंक ५ प्रथमपा
 रागंधककीकजलीकरै पाछेवेंकजलीमैयेसारीओषादिमिला
 यै पाछेयांओषधांमैपुराणोतिबरस्योगुडदका ५० भरमिला
 यईकोयेकजीवकरै पाछेघृतसईकीगोली बोरकीमांजीप्रमा
 एचणावे बांगोल्यानैघृतकाचासएमेंरायै पाछेगोली १ तथा
 २ तथा ३ रोजीनांमहीनां ३ ताईबायतौ कफकाअरपित्तकास
 र्वरोगजाय अरईरसनेमहीनांचारिताई सेवनकरैतौ बायका
 सर्वरोगजाय अरवरण १ ताईईरसकोसेवनकरैतौ सर्वप्रका
 रकारोगजाय अरवरसदोयताईईरसकोसेवनकरैतौ बुडा-

१८२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ८

पोदूरिहोय अरतरुणहोजाय अरबरसतीन १ ताईईसकोसे
वनकरैतौ आसुरबलघणीहोय सरारनिरोगोरहै इतिविजै
भैरबरसः अथवातारिसलिल्यते पारोभाग १ सोधगंध
कभाग २ भिफलाभाग ३ चित्रकभाग ४ सोधोगुमलभाग ५ पांसा
रानैअरंडकातेलमौदिन १ परलकरै पाछैईमैहिंगाष्टकचूर्णनांषे
ओरूयेकदिन १ परलकरै पाछैईकीगोलीटंक १॥ प्रमाणबांधै
पाछै लोंग सूरि अरंडकीजडकाकादासूरोजीनांमहीनां १ ताई
ले अरब्रह्मचर्यरहैतौसर्वप्रकारकीवायजाय अरसाधारणवा
यतौ ईकासात ७ दिनसेचाहीसुंदूरिहोय १ इतिवातारिरसः
अथसमीरपन्नगरसलिल्यते सोधगंधक सोधोसोमांमु
हरो सूरि कालीमिरचि पीपलि पारो येसारावरावरिले पाछैपा
रागंधककीकजलीकरै पाछैकजलीमैयेओषदिनांषि अरभां
गराकारसकीपुट ७ दे पाछैईकीरती येकेकप्रमाणगोलीबां
धै गोली १ आदाकारससूंलेतौसर्वप्रकारकीवायजाय १ इ
तिसमीरपन्नगरसः अथसमीरगजकेसरीरसलिल्यते
अफीम चोबीनई कुचिला कालीमिरचि येवरावरिले पाछैपां
सारानैमिहींबांदिरती १ प्रमाणकीगोलीबांधै पांनंकारसमें-
गोली १ रोजीनांप्रभातवाय अरऊपरसंपांनचावैतौ सर्वप्रका
रकोवायजाय १ अरसोजो विसृजिका अरुचि मिरगी येसारा
जाय १ इतिसमीरगजकेसरीरसः येसर्ववैद्यरहस्यमैहै
अथहृदचिंतामणिरसलिल्यते पुरासानि अजवाणि जारो
अजमौद काकडासांगी असगंध येसर्ववरावरिले यानैमिहीं
बांदिमासो १ तातापांणीसूंलेतौसर्वप्रकारकीवायदूरिहोय १

953

१८३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग
विजय नमः येमाराजाय इ

१८३ अयत्तसागरं तथा प्रतापसागरं च ।
अरसास पासे प्रक्षाप्यति निद्रां अरुचि ये साराज्याय इति वृद्धिं
तामयशिरसः अयम् अयत्तनामगुहिका लिख्यते चित्रकहका

३। हरदेकीछालिदका ३। पारोटका १। सूरिदका १। मिरचिदका १।

३॥ हरदेवीछालिंदका ३॥ पारादका १॥ स्वर्णदं १॥
पीपलिंदका १॥ पीपसामूलदका १॥ नागरमोथोदका १॥ जायफल
१॥ नागराक्षीदं ५॥ कूटदं ५॥ सोधीगंध

वीपल्लिंदका ११ वीपल्लामूलदका ११ नागरीनावा ११
दका १ वधायरोदका ११ इलायचीदंक ५ कूठदंक ५ सोधीगंध

कदंक ५ हिंगलदंक ५ आकलकरोदंक ५ मालकांगलीदंक ५
खोशोमींगीमहरोदंक ५ गुडदका ८

कदंबक ५ हिंगलूदक ५ आकलकरादक ५ गुडदका ८
तजदंबक ५ अन्नकदंबक ५ सोधोसांगीसुहोदंबक ५ गुडदका ८

तजदंक ५ अन्नकदक ५ साध्यासागालु ह...
प्रथमपारागंधककीकजलीकरि पाछेयेचौपदिमिहींवांटि क...

जलीमें गुड समेत मिलावै पाछै ई कै जल भांगराकार सकी पड़तै

जला में गुड़ समेत मिलाव पाछे इकट्ठा करके गोली बनाई जाती है। गोली १ रोजीनां बायतौ स
पाछे रती २ तथा ३ भरकी गोली बांधै गोली १ रोजीनां बायतौ स
पाछे रती २ तथा ३ भरकी गोली बांधै गोली १ रोजीनां बायतौ स

प्रकार की बायनें कोढ़नें प्रमेहनें मृगानें क्षयनें सासनें सो

प्रकारकीबायनै कोदनें प्रमहनें मृगाने लक्ष्येन साधने
ने व्याघ्राननें पांडुरोगनें यवासीरनें यांसारंगानेयोरस

ने व्याघ्रचातने पादुरोगन ववासारन वासासारन
एकरेहै इतिअमृतनामगुटिका. योजोगतरंगिणीमे

अथरसराक्षसरसलिख्यते सोध्योपारो सोधीगंधक ये

अथरसराक्षसरसालेखन मीथ्यापराजानां विनाश
नृवरारविले पादोन्यांकीकजुलीकरै पाछैईकैइथाकारस

न्यूवरावरिले यांदोन्याकाकजुलकर पाछेकहूना
पुढे पाछेतुलसीकारसकापुढे पाछेवावचीकारस

पुट १ दे पाछै तुलसी कारस का पुट १ दे पाछै बाबरी कारस
ट १ दे पाछै मोर सिषा कारस की पुट १ दे पाछै महलोदी का

कांपुट १दे पाछै बाराही कंद कारस की पुट १दे पाछै बहुप

कीपुट१दे पाछैबाराहीकदकारसकीपुट१दे गडबनु
कारसकीपुट१दे पाछैयांकारसमुकाय पारागंधककीव
... .. पाछैवेअंरं

कारसकीपुट १८ पाहैयाकारसमुकाय पारागव फल
नैककुडाकाअंडामैभरै अंडानैधोयसोधिखे पाहैवेअंडा

नैककृदाकाचंद्रामैपरि अंडनधायसाधिल जलपत्र
पडमिहो जदे अंडनैसुकायले पाठैवेअंडनैगजपुटमै

इसी तरे बार ३ करै पाछै ई नैरती १ घायतौ सर्व प्रकार की

इसी तरे वार ३ करै पाछे इतिरती १ घायता सब प्रकार स
य अरयो भूषण करै इतिर सरास सरसः योरस

१८४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तंत्र ८

मैछै अथवंगेस्वरसलिष्यते पारोसोध्यो गंधकसोध्यो यांकी
कजलीकरै यांदोन्यासूआधीसोधीहरतालनांषै यांबरावरिरांग
नांषै पाछैयानैआंककादूधमौदिन ७ परलकरै पाछैसुकाय काच
कीआतसीसीसीकैकपडभिदृदेरबैमैभरिदे पाछैसीसीनैवालू
काजंभमेंपहर १२ पकावै सीतलहुवांकाटै पाछैरतीआधआन
मैषायतौसर्वप्रकारकीवायजाय अरुआद क्षीणता मंदाधि
द्वय विसमज्वर येसाराजाय इतिवंगेस्वररसः योजोगन
रंगिणीमैछै सोधीहरताल सोध्योगंधक पारो हींगल सुहागो
सूँठि मिर्चि पीपलि येसर्वबरावरिले पारागंधककीकजलीक
रियेमिलावै पाछैआदकारसकीसुट १दे अरसूंगप्रमाणगोली
बांधै गोली १ प्रभातषायतौ सर्वप्रकारकीवाय अरसूतिकारो
ग मंदाग्नि संग्रहणी सीतज्वर येसाराजाय इतिहरतालगु
टिका योरसरलप्रदीपमैछै अथलसणपाककीविधि
लिष्यते लसणपर्ईसा ५ भखोलीजे तांकोभिहींजीरोसोक्त
रिलीजे फेरिदूधपर्ईसा १ भखोपांणी तांमैअधेलाभखो तांमें
चदायआंचदीजे सोदूधलसणमैसुसिजाय तदिलसणनैपर
लकीजै सोलुगदीबंधिजाय तबघृतअधेलाभरिबैमैनांषिआंच
दीजे आंचसूंसुरपीपडिआवैतदितारिलीजै सिवायघृतरहै
सोकादिनांषिजे फेरिमिश्रीपर्ईसादोयभरकीचासणीकीजै तांमें
कस्तूरीरतीआधी लोंगरती ४ जायफलमासो १ दालचिनीमासो १
सौनाकीतबक २ येसारीऔषदिपीसिचासणीमेंनांधणी पाछैऔ
लसणनांषि गोली ५ बांधणी गोली १ प्रभातषाय अरघलीकाय
होयतौदूजीगोली आंधणलजाय तौवायवैजेआरासहोय पथ

१८५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग

यैरत्नां गोली दिन २१ पाय जादावाय होयतौ दिन ४९ पाय और गो-
ली सिवाय करणी होयतौ ईहि सावसं श्रीषदिवाल सणतौ लामाफी
कवधायले ईल सणपाक नै पायां सर्व वाय कविकार इरि होय अर
शोल सणपाक सरीर नै पुष्ट करै छै अर भूषनै वधावै छै इति लस
एपाक की विधि संपूर्णम् इति वात व्याधिरोग चौ रासी भे
दांस मेतयां की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् इति श्रीमन्म
हाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्री सवाई प्रतापसिंह
जीविरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे वात व्याधिरोग की चौ
रासी भेदांस मेत उत्पत्ति लक्षण जतन निरूपणं नाम अष्टम
स्तरंगः समाप्तः ८ अथ उरूस्तंभरोग की उत्पत्ति लक्षण
जतन लिख्यते सीतल वस्तकाषावासं गरम वस्तकाषावासं
प्रतली वस्तकाषावासं भारी वस्तकाषावासं चीकरी वस्तका
षावासं दिन कासो वासं रात्रिकाजागि वासं पुरसकैषणी भूषसं
अथवा थोडा अजीर्णमें ये पाछै कही सो वस्तकाषाय तदिवे पुरसकै
वाय है सो को पकूं प्राप्ति होय अर पित्त नै बिगाडै अर पुरसकै दो
न्यूं जंघानै स्तंभित करि दे छै अर वेंकी जंघानै सूंजी करि दे छै जाणि
जै ये जंघा पैला की छै हालवा चालवा देन ही ती नै उरूस्तंभरोग क
हिजे अथ उरूस्तंभरोग को पूर्व रूप लिख्यते नींद घणी आवे
ध्यान लागि जाय कौंजुर को अंस होय रोमांच होय अरु नि होय
छर्दि होय दोन्यूं जंघां में पीडा होय ये लक्षण होय तदि जाणिजे उरू
स्तंभरोग होसी धनंतर जी ईरोग नै शुश्रुत में महा वात व्याधिरोग
कह्यौ छै ती को लक्षण लिखूं दोन्यूं पग सो जाय अर वां में पी
डा होय वडा कष्ट सं दोन्यूं पग उठै दोन्यूं जंघा में पीडा होय अर दाह

१८६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ९

होय अरधरतीमें पगमैले तदि पीड होय सीतस्पर्श कूँजा ऐनहीं ना
 ल्यो जाय नही जांशि जै जांय कारकी है मां नूंदू दी सी दी पै ये लक्षण
 होय जौ नै यह बात व्याधिकहि जै इहाँ नै उरूस्तं भ कहि जै ~~अथ~~
 रूस्तं भ को असाध्य लक्षण लिखते उरूस्तं भ बालारोगि कै दह
 होय पीडा होय अर सरीर कां पै ओउरूस्तं भी मरि जाय १ अथ उ
 रूस्तं भ को जतन लिखते भिफला पीपलामूल सूरि काली
 भिरवि पीपलि यांको भिहां चूर्ण करि दंक ॥ रोजी नांस इत कै सा
 थिले तो उरूस्तं भितरोग जाय १ अथ वा सूरि पीपलि सिलजी
 त गूगल ये सारा मासा ५ गोमूत्र कै साथि रोजी नां पीवै तो उरूस्तं
 भ जाय १ अथ वा दसमूल काकाटा कै साथि गूगल पाय तो उरू
 स्तं भ जाय १ ये मां व प्रकास में लिखा है अथ वा भिलवा दंक
 १ गिल बैदंक १ सूरि दंक १ देवदारु दंक १ हर डै की छालि दंक
 १ सादी की जड दंक १ दसमूल दंक १ यांको का दोले तो उरूस्तं भ
 जाय १ अथ वा गूगल दंक १ गोमूत्र कै साथि दिन १५ लै तो उरू
 स्तं भ जाय १ अथ वा सहत सूं बंवी की मां दी यां नै भिही बांदि यां
 को मर्दन करै तो उरूस्तं भ जाय १ अथ वा वच को चूर्ण दंक ॥ गर
 म पाणी सूं ले तो उरूस्तं भ जाय १ अथ वा उरूस्तं भ बालो इत नीय
 स्त करै नही जो ही कटावै नही व मन विरेचन करै नही व स्ति कर्म क
 रै नही ये सर्व वैद्य रहस्य मै छै अथ वा पस कोरस अथ वा
 नां बू कोरस गुड कै साथि अथ वा सहत कै साथि पीवै तो उरूस्तं
 भ जाय १ योका सी नाथी प्रदित मै छै अथ वा चव्य हर डै की
 छालि चिचक देवदारु कृष्णगच का फूल सिरस्युं यांको चूर्ण करि
 दंक ॥ सहत सूं ले तो उरूस्तं भ जाय १ यो सर्व ग्रंथ ह मै छै ७

१८७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ९

अथ उरुस्तंभरोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ
 आमवातरोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते मंदाग्निवा
 ला पुरस के कुपथ्य करिकें चीकणोन्नपाय अरवेद करै नहीं औ
 सो जो पुरस तों कै वाय करिकें प्रेस्यो औ सो जो कच्चा अन्न कोरस सो
 कफ को स्थान जो हीयो तीनै प्राप्ति होय अरओ कचो हीरस वाय क
 रि कें नसां मों जाय प्राप्ति होय अरवाय पित्त कफ करिकें घरो दूषित
 हुबो जो कच्चा अन्न कोरस सो सरीर की नसां नै पूरित करि अग्निकामं
 दपण नै प्रगट करै छै अरहिय नै घणो भास्यो करि दे छै अरयो कच्चा
 अन्न कोरस आम को अरस रोग कूं करै छै १ अथ ग्रंथांतर
 संभी इह रोग को लक्षण लिख्यते मंदाग्निवालो पुरस अजीर्ण
 में भोजन करै तदि वें कापेट में आम पैदा होय तदिवा आम अने
 करोग नै पैदा करै मथ वाय नै करै सर्वगात्र में पीडा करै अरकांथा
 में पारि में कटि में गोडा में यामें घणी पीडा होय अरनसां नै संकुचि
 त करि दे छै अरसरीर नै संभित करि दे छै येलक्षण जों में होय तों
 नै आमवातरोग कहिजे अथ ग्रंथांतर सूत्र आमवात को लक्षण
 लिख्यते अंगामें पीडा होय भोजन में अरुचि होय तिस घणी लागै
 आलस घणा आवै सरीर भास्यो हो जाय जुर होय अन्न पचै नहीं अं
 ग सूतो हो जाय येलक्षण होय तों नै आमवातरोग कहिजे अथ आ
 मवातरोग को जतन लिख्यते ई नै लंघन कराजै अरसेक कीजे ई
 नै तीघोर सदीजे अरभूष लागै इसा औषदि दीजे ई नै जुलाब दीजे
 ई नै वस्ति कर्म कराजे ई कै पालू रेत सूं सेक कीजे अरतूण सूं सेकिवो
 ई नै जोग छै अह ई नै जोग्य छै वथवा की अरवै गण को तरे कारी ई नै
 पुवाजे करे ला ई नै जोग्य छै कोदूं जव सादी चावल पुराणा चोचल

इतनी वस्तु ईने जोग्य छै गरु की छाछि ईने जोग्य छै अरकुलस्थ मर
 र चणा ये ईने जोग्य छै अथवा चित्रक कुटकी हरडै की छाछि वच
 देवदार अतीस गिलवै यांको कादो दंक २॥ कोरोजीनां गरम पाणी
 संलेतौ आमवात जाय अथवा कचूर संहि हरडै की छाछि वच
 देवदार अतीस गिलवै यांको कादो दंक ३॥ कोरोजीनां लेतौ आ
 मवात जाय अथवा अरंडको तेल दंक ५ कोरोजीनां पीवैतौ आम
 वात निश्चय अथवा अरंडको तेल हरडै की वकल को चूर्ण ईको से
 वन करैतौ आमवात अरगंधसी निश्चय जाय अथवा किरमाला
 का पांनानै कड़वा तेल में भूनि करि कोरोजीनां पाय चावल कांसा धितौ
 आमवात जाय अथवा अरंडका बीजानें दूध में पकाय पीरक
 रिषायतौ आमवात अरगंधसी ये दोन्युं जाय अथवा रास्ना अ
 रंडकी जड़ अरडूसो धमासो कचूर दारु हलद धरैदी नागरमोथो
 संहि अतीस हरडै की छाछि गोषरू सहिजणों चय दोन्युं कला
 ली यांनै बराबरिले अररास्ना ये कओषदि सूति गुणीले पाछै या
 नै जौ कुटक गिंदक ५ कोकादोरोजीनां करि देतौ इतनारोग दूरि हो
 य यक्षाघात अर्दित कांपणी कूबड़ा पणों संधिसंधिकी वाय
 गांडां की पीड अथसी हनुग्रह उरुस्तंभ वातरक्त ववासीर वीर्य
 को दोस स्त्री को वंध्या पणों इतनारोगां नै यो दूरि करै छै इति
 महारास्नादिक काथ अथवा अजमोद कालीभिरचि पीप
 लि वायविडंग देवदारुं चित्रक सौंफ सौंधोल्हा पीपलाभूल
 ये सारी ओषदि टकाटका भरिले संहिटका १० भरले वधायरोदका
 १० भरले हरडै की छाछि टका ५१ भरले यांसारानै मिहीं वांदि यांसा
 रांकी बराबरि गुडले पाछै यांकी दंक २॥ भरकी गोली बांधै गोली १

१८९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ९

रोजीनांगरमपाणीसूलेती आमवातनें आफ्राने सूलनें गृध्रसी
 नें गोलांनें प्रतितूनीनें कटिकीफूटणीनें पीरकीफूटणीनें जांयां
 कीअरहाडांकीफूटणीनें सोजानें यांसारंगोनांनेयोचूर्णदूरिकरेछै
 इतिअजमोदादिचूर्ण अरजोगराजगूगलपाछैवातव्याधिमें
 लिथोछै तांसूभीआमवातकोरोगदूरिहोयछै १ अथवा संहित
 का ८१ भर गऊकोघृतसेर ३१ दूधसेर ३४ संहिनेंमिहींवांदि घृतमें
 मकरोय दूधमेंपकाय कसारकरिले पाछैपांडरका ५०१ भरकिचा
 सणीकरै ईचासणीमेंघृतसंमकरोईसंहि मावासमेंतनांषे पा
 छैचासणीमेंयेओषदिनांषे संहिटका ११ भर नागकेसरीदका ११
 येसारीओषदिमिहींवांदिचासणीमेंनांषे पाछैईकीगोलीदका
 येकेकभरकीवांधे पाछैगोलीयेकेकदोन्यंबषतांषायतीआमवा
 तनेंदूरिकरे सरीरमेंपुष्टकरे बलकरे पराक्रमकरै इतिसुंढीयां
 कः अथवा मेथीदका ८१ भर संहिटका ८१ भर यांदोन्यांनेंमिहीं
 वांदि गऊकोदूधसेर ३४ मेंपकाने यांदोन्यांनेंघृतमेंमकरोययां
 कोषेरोमावोकरै पाछैसेर ३४ पक्षामिश्रीकीचासणीकरै पाछै
 चासणीमेंयोमावोनांषे अरयेओषदिनांषे सोलिबूछूं भिरचि
 दका ११ भर चित्रकदका ११ भर पीपलीदका ११ भर धणौदका ११ भ
 र संहिटका ११ २५ भर पीपलामूलदका ११ अजवायणदका ११ भर
 जीरौदका ११ सौंफदका ११ भर जायफलदका ११ कन्नूरदका ११ भर त
 जदका ११ पत्रजदका ११ भर नागरमोथोदका ११ भर यांसारंगोनेंमि
 हींवांदि चासणीमेंनांषे पाछैसारांकोयेकजीवकरि दकायेके
 कभरकीगोलीकरै पाछैगोली १ रोजीनांषायती आमवातनें वात
 व्याधिनें विसमज्वरनें पांडुरोगनें उन्मादनें मृगीनें प्रमेहनें

अर वातरक्तनें अमलपित्तनें मथवायनें नेत्रविकारनें प्रदरनें
यांसासंरोगानेयोद्धारकरैछे वीर्यनें वधावैछे इति मेथीपाकः ॥

अथवा लसणकोरसटक २॥ गऊकोघृतटक २॥ यांदोन्यानेंमिला
य रोजीनां पीवैतौ आमवातजाय अथवा सींधोलएटक ५ हरडै
कीछालीटक ५ पौहकरसूल ५ महुवोटक ५ पीपलिटंक ५ यांसा
रानेमिहीवांटिले पाछैअरंडकोतेलसेर ५१ ले सौंफकीअर्कसेर ५१
ले कांजीसेरदोय ५२ ले दहीकोमहोसेर ५४ ले यांसारिऔषधांस
मेतएकठाकरि कडाहीमेंचढ़ावै नीचैमंदआंचदे सर्वरसबलिजा
य तेलमात्रआयरहै तदिउतारिले पाछैईनेटक २॥ रोजीनांषाय
अथवा लगावैतौ आमवातजाय भूषवधावै इति ब्रह्मसैंधवा
द्यंतैलम् अथवा पारो सोधीगंधक सूरि कुटकी त्रिफलाकि
रमालाकीगिर येपरावरिले हरडैकीछालियेकऔषदिसूतिय
लीले प्रथमपारागंधककीकजलीकरै

पाछैईमैयेऔषदिमिलावै पाछैईनेमासो १ सूरि अरअरंडकी
जड यांदोन्यांकाकादासूंलेतौ आमवातकोरोगततकालजाय
इति आमवातारीरसः आमवातवालोइतनीवस्तषायनहीं
दहीं इध गुड मछलीकोमांस उडदकाचूनकीवस्त मांस येषा
यनहीयेसाराभावप्रकसमैछै अथवा गूगलसेर ५१ कडवो
तेलठका ८ भर हरडैकीछालिकोचूर्णसेर ५१ बहेडाकीछालिको
चूर्णसेर ५१ आंवलांकोचूर्णसेर ५१ पाणीसेर ५४ तीमैयेऔषदिसं
र्वनांषै पाछैकडाहीमेंपकावै पाछैजलकोचतुर्थीसआयरहै त
दिउतारिले पाछैअभिऊपरिऔरूचदाय ईनेक्यूंकादोकरिले
छैईमैयेऔषदिऔरनांषै सूरिटंक २॥ भिरचिटंक २॥ पीपलिटंक

९१ अमृतसागरं तथा प्रतापसागरं तरंग ९

त्रिफलाटंक २॥ नागरमोथोटंक २॥ देवदारुटंक २॥ सोधीगंधकटंक २॥ सोध्योजसालगोटा १०० प्रथमपारागंधककीकजलीकरै पाछैकजलीमेंयेसारीवस्तुमिलावै पाछैगूगलकारसमेंयेमिलावै पाछैमासो १ तांतापाणीसूंईनैलेतौ आमवातनैततकालदूरिकरै अरयोभूषणीकरै धातनैवधावै बूटासूंजवानकरै अरवायका रोगानै भगंदरनै सोजानै सूलनै ववासीरनै यांसारारोगानैयोदूरिकरै इतिआधिसाईलगूगल० अथवा हरडैकीछालि सीं धोल्हा निसीत इद्रायणकीजड सूंदि इद्रायणकाफलकीमींगी यांसारानैमिहांवांदि लोहकापात्रमेंजलघालि तामैयेनांषै पाछै मधुरीआंचसूपकाय छोटाबोरप्रमाणगोडीबांधै गोली १ गर मपाणीसूंले उपरैघणघृतसूंचावलपायतौ आमवातकोरोग जाय इतिआमात्रिसुटिका येसाराजवतवै धरहस्यमेंछै अथवा सूंदि कालीभिरचि पीपलि त्रिफला नागरमोथो गाय बिडंग चव्य चित्रक चंच इलायची पीपलामूल ज़ांउरूषकीज उ देवदारु तुंबरु पौहकरमूल कूठ दोनूंहलद सौंफ जीरो सूंदि पत्रज धमासो संचरद्वणजवषार साजी गजपीपलि सींधोल्हा येसारीऔषदिंवरावरिले यांकीवरावरिसोध्योगूगलले पाछैयां औषधानैमिहांवांदि गूगलमेंमिलावै पाछैईनैटंक २॥ घृतकैसा थि अथवा सहतकैसाथिरोजीनांलेतौ आमवातनै उदावर्तनै पांडुरोगनै कमीकारोगनै विषमज्वरनै उन्मादनै आफरानै कोटनै सोजानै यांरोगानैयोदूरिकरैछै धन्वंतरजीईकोनांवद्वा त्रिंशतगूगलकाट्योछै योवीरसिंहावलोकनमेंछै अथवा सोध्योगूगलसेर ५१ कडवोतेलटका ८॥ भर त्रिफलासेर ५३

१९२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ९

पाणीसेर २४ तीमेंत्रिफलानांभिश्चोदावै पाछैपाणीकोचोयोहिसो
 सेर ५६ आयरहै तदिईपाणीनेछाशि औसंअग्निउपरिचदायकादो
 करिले पाछैईत्रिफलाकाजलमेंयेओषदिनांषै गूगलनांषै तेलनां
 षै अरसूँठिदंक ॥ भिरचीदंक ॥ पीपलदंक ॥ त्रिफलादंक ॥
 नागरमोथोदंक ॥ देवदारुदंक ॥ गिलवैदंक ॥ भिसोतदंक ॥
 दांत्यूणीदंक ॥ वचदंक ॥ जिमिकंददंक ॥ पारोदंक ॥ सोधी
 गंधकदंक ॥ धतूराकाबीजदंक ५ यांसारानैमिहीबांढिवैत्रि
 फलाकाजलमेंमिलाय येकजीबकरै पाछैईनैमासो १ रोजी
 नांतातापाणीसूँलेतौ भूषअतिघणीलगे योधातनैबधावैछै स
 रीरनिरोगोकरिदेछै अरआमवातनै मथवायनै कटिकीवायनै
 भगंदरनै गोडांकीवायनै जांघांकीवायनै पथरीनै मूत्रछूने र
 तनारोगानैयोगूगलदूरिकरैछै इतिसिंहनादगूगल ० यो
 जोगतरंगिणीमैछै अथवा सोधीगंधकदंक ५ तांमेसुरदंक ५
 पारोदंक ॥ सारदंक ॥ यांसारानैएकटाकरि अरुंढकापानांउप
 रिदावै पाछैईनैबरलमेंबांढि पीपलि पीपलामूल चच चिच
 क सूँठि यांकोकादोकरिईकीपुट १ दे अरवहेडाकाकांदाकारस
 कीपुट २० दे अरगिलवैकारसकीपुट १० दे अरयांसारानैओषधां
 कीचरावरिईमैसेकोसुहागोनांषै सुहागासूं आधोईमैविडल
 एनांषै विडलएवरावरिईमैकालीभिरचिनांषै अरभिरचिवरा
 वरिईमैडांसस्थानांषै अरसूँठि पीपलि त्रिफला लवंग येसाराये
 केकभिरचिवरावरिनांषै पाछैयांसारानैमिहीबांढियांकोयेकजी
 बकरै पाछैईनैमासो १ रोजीनांलुदलुदाअलुपानसूंषायतौ सर्व
 रोगमात्रनैयोरसदूरिकरैछै भूषघणीवधावैछै अरआमवातनै

१९३ अमृतसागर तथा प्रन्ताप्रसागर तरंग ९

हरिकरैछे स्थूलपुरुषनेरुसकरैछे अरुसनेपुष्टकरैछे इंकीच्यार
रतीकीमाचाछे सोकंठपर्यंत भोजनकस्योभीततकालयोपचायदे
छे इतिआमवातेसररसः योसारसंग्रहमेंछे अरुदही मछली
गुडदूध उडदकोचून येआमवातवाछोनपाय इतिआमवात
रोगकीउत्पत्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथपित्तव्याधिकी
उत्पत्तिलक्षणजननलिख्यते कडवारसकाषावासं षट्दार्द्रकाषा
वासं गरमवस्तकाषावासं दाहकरिवावालीवस्तकाषावासं ती
षीवस्तकाषावासं उपवासकाकरिवासं तावडाकासेवासं घण
मैथुनकाकरिवासं घणालूणाकाषावासं ओधकाकरिवासं तिस
कारोकिवासं भूषकारोकिवासं षेदकाकरिवासं मद्यादिककापी
वासं इतनीवस्तकाकरिवासं गरमीकोकोपहोयजायछे कदे
भोजननेंजीर्णहोतांथका सरदमित्तुकैसमें शीषमरितुकैवैषे
मध्याह्नकैसमें आधीरातिकैसमें पित्तहैसोकोपकृंग्राप्तिहोयछे
सोपित्तका चालीस ४० रोगछे त्यांकांनामअरुलक्षणलि-
ख्यते जबानीमेंसुपेदवाळहोजाय १ लालनेत्रवहवोकरै २ मूत्र
लालरहै ३ नेत्रपीलारहै ४ मूत्रपीलोरहै ५ मलपीलोरहै ६
नषपीलारहै ७ दांतपीलारहै ८ सरारपीलोरहै ९ अंधरीआवो
करै १० सर्वत्रपीलोदीषवोकरै ११ नांदथोडीआवै १२ मूदोसूकै १३
मुखमेंदुर्गंधिआवै १४ मूदोतीषोरहै १५ गरमसासनीसरै १६ मूं
दोषादोरहै १७ डकारमेंधूवोनीसरै १८ भौलियावै १९ इंद्रिसिथ
लहोजाय २० क्रोधघणोआवै २१ दाहरहै २२ अतीसाररहवोकरै
२३ तेजसुहावैनहीं २४ शीतलतासुहावै २५ कर्हावस्तसंधोपेन
हीं २६ सर्ववस्तसंअतिप्रीतिरहै २७ भोजनकस्यांदाहहोय २८

१९४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ९

भूषणलीलागे २९ नक्षत्रादिक होय ३० मलपतलो रहै ३१ मलग
रमउतरै ३२ सूत्रगरमउतरै ३३ मूत्रछू होय ३४ वीर्यको अल्प
पणों होय ३५ सरारगरम रहै ३६ पसेवधणों आवै ३७ पसेवमें दुर्ग
धि आवै ३८ हाथ पगां मै व्याड घणी होय ३९ सरारमें फूटली अरफो
उफुणसी घणी होय ४० चेनालीं सरोगरमी काठै अथ ये रक्त-
राही पित्तकारोग त्यां का सामान्य पणों सृजत न लिखते कीं व
की छांलिनें आदिले रतीषा द्रव्यकाषा वासूं मिथी नैं आदिले रतीषा
द्रव्यकाषा वासूं चंदन नैं आदिले रतीषा तलवस्त कांछिं गा वासूं सीतल
पवनका सेवासूं सीतल छायाकार ह वासूं रात्रि में रह वासूं षष्ठ्या
बीजणों का पवनसूं चंद्रमा की चांदणीसूं तहषांना कार ह वासूं इ
धकापी वासूं जुलाब काले वासूं रुधिर का कदा वासूं इतनी वस्तां
का कार वासूं पित्तकारोग दूर होय छै इति पित्तव्याधिकी उत्पत्ति
लक्षण जतन संपूर्णम् अथ कफव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण
जतन लिखते भारी वस्त काषा वासूं मीठी वस्त काषा वासूं घणो
बीकणी वस्त काषा वासूं मंदाग्नि सूं घणा दही काषा वासूं दिन का
सो वासूं सीतल वस्त काषा वासूं घणा वैठार ह वासूं इतनी वस्त
सूं कफ को कोप होय छै परमात कै समै भोजन करिबु कै जावष
तव संतरितु मै कफ को कोप होय छै अथ कफ का बीस २० रो
ग छै त्यां को लक्षण लिखते मूंदो मारो रह वो करै १ मुषकफसूं
लिप्यो रहै २ लाल पडै ३ नींद घणी आवै ४ कंठ में घूघरी बोलै ५
कड़वारस की वांछार है ६ गरम वस्त की वांछार है ७ बुद्धि की जड
तार है ८ चेतनो डोर है ९ आलस घणी आवै १० भूषलांगे न हीं ११ मं
दाग्नि होय १२ जंगल घणो जाय १३ मल सुपेद होय १४ मूत्र घणो उतरै

१९५ अमृतसागरनाम प्रतीपस्तगर तरंग ९

पूतसुपेदहोय १५ वीर्यकीअधिकाघणीहोय १७ निश्चलपणों
रहै १८ सरीरभारीहोय १९ सरीरठंघोरहै २० येकफकावीसरोग
है अथकफकारोगांकोसामान्यजतनलिथ्यते लूणीवस्तका
षावासूं कसायलीवस्तकाषावासूं कंडवीवस्तकाषावासूं पंदका
करिवासूं कुरलोंकाकरावासूं वमनकाकरावासूं पसीनांसूं लंघ
नकरावासूं तिसकारोकिवासूं हुकाकापीवासूं कुस्तीकाकरिवासूं
जंलक्रीडासूं गरमवस्तकाषावासूं चिक्काकाषावासूं नांसकाले
वासूं मारगकांचालिवासूं जागिवासूं मैथुनसूं इतिनीवस्तका
करिवासूं कफकावीसरोगदूरिहोयहै इतिकफव्याधिका
उत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज
महाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेश्रम
तसागरनामग्रंथे उरुस्तंभंआमवातपित्तव्याधिकफव्या
धियांरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंना
मनवमंस्तरंगः समाप्तः ९ अथवातरक्तरोगकीउत्पत्ति
लक्षणजतनलिथ्यते लूणकाषावासूं उन्हीवस्तकाषावासूं अ
जीर्णसूं गल्यांमांसकाषावासूं बडामूलांकाषावासूं कूलथकाषा
वासूं उडदकाषावासूं घणीतरकारीकाषावासूं दारूकाआसव
कापीवासूं मांसकाषावासूं मांछलीकाषावासूं दहीकाषावासूं
कांजीकापीवासूं निरूद्धवस्तकाषावासूं अजीर्णमेंभोजनकृत्यां
सूं क्रोधसूं दिनमेंसोवासूं हाथाघोडाऊंटकादोडावासूं इतनीव
स्तसंसूकुमारपुरसकै सुषीपुरसांकै वातरक्तकोआजारकोपकूं
प्राप्तहोयहै अथवातरक्तकोस्वरूपलिथ्यते सर्वसरीरमेंलोही
दग्धहोनायहै प्रांठेंआरक्तदुष्टदुबोथकोदोन्यूपगांमेंचुयवालागिजा
यहै

अथवातरक्तको पूर्वरूपलिप्यते पसेवघणंआवे अथवाआ
 वैनहीं सरीरकालोपडिजाय शरीरकास्पर्शकोग्यानहोयनहीं थो
 डीसीचोटमेंपीडघणीहोय संधिसंधिसिथल होयजाय आलस
 घणोंआवे सरीरमेंफुलस्यांहोयआवे गोडमेंजांघांमेंकटिमें हथ
 पगांकीसंधिमेंपीडाहोय सरीरभास्वोरहै सूजोहोजाय सरीरमें
 दाहहोय सरीरकोरंगब्योरसोहोजाय सरीरमेंलालचाठापडिजा
 य येलक्षणहोयतदिजाणिजेवातरक्तहोसी अथवायकाअ
 धिककोवातरक्तकोलक्षणलिप्यते पगामेंसूलादिकघणी
 होय अरकुरकै अरसोजोहोय अरलूषाहोय अरकालहोय
 अरचौबीसूनाख्यामें अरआंगुलीकीसंध्यामेंसंकोचहोय सरीर
 कडबंधहोय सरीरकापैअरसरीरसूनोंसोदीसै येलक्षणईमेंहो
 यतौबायकाअधिककोवातरक्तजाणिजे अथरक्ताधिवातर
 क्तकोलक्षणलिप्यते जीमेंसोजोहोय पीडघणीहोय ललायी
 नेंलीयांहोय जीमेंचिमचिमीहोयबुजालिहोय येजीमेंलक्षणहो
 य तीनैरक्ताधिकवातरक्तकहिजे अथपित्ताधिकवातरक्तको
 लक्षणलिप्यते जीमेंदाहहोय मोहहोय पसेवआवे सूछाहोय म
 दहोय तिसहोय स्पर्शसह्योजायनहीं पीडाहोय सोजोहोय पीक
 जाय गरमघणीहोय येलक्षणजीमेंहोयतीनैपित्ताधिकवातरक्त
 कहिजे अथकफाधिकवातरक्तकोलक्षणलिप्यते सरीर
 मेंसलपडिजाय सरीरभास्वोहोजाय सरीरसोजाय सरीरचीक
 णोंहोजां थ सरीरदंठेहोजाय सरीरमेंबुजालिआवे येलक्षणजी
 मेंहोयतीनैकफाधिकवातरक्तकहिजे १ अरयेसर्वलक्षणजीमें
 होयतीनैसन्निपातकोवातरक्तकहिजे १ अथवातरक्तहा-

१९७ असुत्तसांगर तथा प्रतापसांगर तरंग १०

था में होय छै ती को लक्षण लिख्यते जेयां पगथली में होय छै ते सैं
 हीं हथेली ऊपर फुल सां उगेरें होय छै पाछें सारा सरीर में होय २ अ
 थवांतरक्त को असाध्य लक्षण लिख्यते पगथली सूं लेर गोड़ां तां
 ई फुल सां होय अरफा दिवाला गिजाय अरचुयवाला गिजाय अ
 रबल मांस अग्नि को नास हो जाय वो वातरक्त असाध्य जा एजे अर
 ई नेवर सयेक को १ जाय जा एजे ३ अथवांतरक्त कां उ पद्वलि
 ष्यते नांद आवे न हीं रुविजाती रहै मांस होय आवे मांस गलि जाय
 मथवाय होय पीडा होय तिस होय जु रहोय मोह होय सरीर को पै
 हिचकी होय आंगल्यांगलिवाला गिजाय यौं ची होय फुल सां पांकि
 जाय पीडा होय भौलि आवे आंगल्यां पांकि हो जाय फोड़ां में दाह होय
 येई कां उ पद्व छै अथवांतरक्त काजत न लिख्यते वातरक्त वा
 ला कै लोही कटाजे जो कां करि कै अथवा सींगी करि कै अथवा पाछ
 ला करि कै अथवा सीर करि कै पणि लोही अतनूं अनुमान माफिक
 कटाजे गायब धै न हीं जात ई अर वातरक्त वाला नैं इत नो वस्त क
 रिबो जोग्य न हीं दिन में सो बो को प करिबो वेद करिबो मैथुन करिबो
 कउ बो पाबो गरम वस्त को पाबो भारी वस्त को पाबो लूण को पां
 बो पटाई को पाबो इतनी वस्त को करिबो जोग्य न हीं अर अतनी व
 स्त को करिबो जोग्य छै पुराण जव पुराणा गौ हूं पुराणी सखि इतनी
 वस्त पाजे अथवा लाबो तीतर बटेर अर हड बणां भूंग मसूर कू
 लख धणों चिरपोटा श वधवो लूणयो नील बी वधवा को भेद
 करि को घृत बकरी को दूध इतनी वस्त को करिबो जोग्य छै अथवा
 अरंड को जउ गिल वै यां को कादो जोग्य छै अथवा मूगल टंक १
 गिल वै का काटा सूं लेबो जोग्य छै १ अथवा अरंड को तेल टंक

नाम
पते
व
वृत्ति
वस
पंक्ति
वर्ग
वर्ग
वर्ग
वर्ग

गिलवैकाकादामेंनाषिपीवैतौवातरक्तजाय अथवा मंजिष्ठादिकका
कादासूंवातरक्तजां सोलिधूंलूं मजीठ त्रिफला कुटकी वन दारद
लह गिलवै नींबकीछालि येसर्ववरावरिले बांनैजौकूटकरिदंक॥
कोकादोरोजीनांलेतौ वातरक्तनै कोदने पांवनें फोडानै यांरोगानैयो
दूरिकरैछै येकमंडलताईले इतिलघुमंजिष्ठादिककाय अथवा
वा गिलवै वावची पवाड नींबकीछालि हरडैकीछालि हलदंआव
लां अर्द्धसो सतावरी नेत्रवालो धरेंदी महलोरी महुबो गोषरू पवो
ल षस मजीठ रक्तचंदन येसर्ववरावरिले पाछैयांनैजौकूटक
रिदंक॥ कोकादोरोजीनांलेतौ वातरक्तनै कोदने पांवनें दादनें
यांरोगानैयोकादोदूरिकरैछै इतिगुडूच्यादिककाय येसर्वभा
वप्रकासमेंछै अथवा सोधोभेंसागूगेलसेर ११ पाणीसेर १५४
हरडैकीछालिसेर ११ बहेडाकीछालिसेर ११ आवलासेर ११ गिलवै
टका ३२। भर यांसारांनैकूटिचौसष्टिसेर पाणीमेंयांसारीओषधां
नैओरावै पाछैयांओषधांसमेतपाणीआधोआयरहै तदिईनैउ
तारिछाणिले पाछैओरूंकडाहींमें घाखिबेनैचौदायगाद्येकरै पाछै
ईमेंयेओषदिनांघै पारोटंक॥ वायविडंगटंक॥ निसोतटंक॥
गिलवैटंक॥ दांतूणीटंक॥ प्रथमपारागंधककीकंजलीकरै
पाछैकंजलीमेंयेओषदिमिहींबांटिमिलाय येसारीबेंगूगलमेंना
वै यांसारांकोयेकजीवकरै पाछैमासा ४ अथवा मांस= रोजी
नाईनैमंजिष्ठादिककाकादासूंलेतौ वातरक्तनै फोडाकुणसीनै
त्रणनै पासनै गोलानै कोदनें सोजानै उदररोगनै पांडुरोगनै
प्रमेहनै मंदाग्रिनै यांसारांरोगानैयोदूरिकरैछै ईकोपावावालां
इतनीवस्तकरेनहीं फेददरेनहीं ताकडैरहैनहीं अधिकनैजाय

नहीं बटाईषायनहीं मांसदहांषायनहीं मैथुनकरै नहीं मार्गचा
 लैनहीं तावडेरहैनहीं लूणषायनहीं तेलषायनहीं इतिकिसोर
 गूगलसंपूर्णम् अथवा भिलावाभास्त्राजलमें डूबिजाय असा
 सेर ३२ ले त्यांकासूदाघोरसुंघसिसेर ३१५ पाणी घालिऔदावे ई
 औदतापांणीमें गिलवै सेर ३२ कूटिनांषे तदिई पाणी कोचतुर्थीस
 रहै तदिई मैये औषदि कूटिनांषे सोलि घूंछूं गिलवै दंक ३॥ वाव
 चीदंक ३॥ नांबकीछालिदंक ३॥ हरदोंकीछालिदंक ३॥ आवलादंक
 ३॥ हलददंक ३॥ नागरमोथोदंक ३॥ तजदंक ३॥ इलायचीदंक ५
 गोषरूदंक ५ कचूरदंक ५ रक्तचंदनदंक ५ यांनैमिहांवांदि ईभि
 लावासमेत एकजीवकरि अमृतवानमें सांषे पाछै ई नैदंक ५ ज
 लसूरोजीनांजलसूंलेतो वातरक्तनै कोटनै ववासीरनै विसर्पनै
 यांवने वायकासर्वविकारनै रुधिरकासर्वविकारनै इतनांरो
 गांनै योदूरि करै छै ई कोषावाबलो इतनीवस्त करै नहीं पेदकरै
 नहीं तावडेरहैनहीं अग्निकत्तैरहैनहीं बटाईषायनहीं मांस
 षायनहीं तेललगावैनहीं मार्गचालैनहीं इति अमृतभस्त्रात
 कावलेहसंपूर्णम् अथवा अलसीनै दूधमें पीसि अथवा अरं
 डकी अरंडोलीनै दूधमें वांदि हाथपगांके लेपकरै तो वातरक्तजा
 य १ अथवा गौरीसर रास योममजीर येवरावरिले त्यांनै तेल
 में पकावै पाछै ई कोमर्दनकरै तो वातरक्तजाय १ अथवा अरंड
 कीजड गिलवै अरंडूसो यांकोकादोकरि तीमें गूगलमासा ४ अरं
 डकोतेलदंक ३॥ नांषिपीवै तो वातरक्तनै सूखानै मथवायनै सा
 नै कोटनै यांनै दूरि करै छै येवै घरहस्थमै छै अथवा हरताट
 सपत्रचोपाळे त्यांनै साढीकारसमै दिन २ परलकरै पाछै वैनै साद

करि वैकीटीकडीकरिसूकायलेपाछैसाटीकाषारकैवीचि वैहरताल
 कीटीकडीमेलिटीकरामें पाछैऔठीकरांचूल्हाऊपरिचढावै पाछैम
 धुरीआंचदेदिमपांचातांईरातीदिन पाछैवेनेंसांगसीतलहुवांकाटै
 बाहरतालसुपेदनीकलै तौलउतारै पाछैईनैरती १ गुडूच्यादिकका
 कादाकीसाधिषायतौ वातरक्तनें अठराप्रकारकाकोटनें फिरंग
 वायनें विसर्परोगनें पांवनें फोडनें सर्वरोगानेंयोडूरिकरैछै ईको
 षावावालो लूण पगई कडबोरस ताबडो अग्निकनैवैठिवो थैछो
 डै अरसांधोलूणषाय मीबोरसषाय इतिहरतालकेस्वररसः
 याहरतालकीक्रियाछै भावप्रकासमेंलिषीछै इतिवातर
 क्तकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथसूलरोगकीउ
 त्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते सूलरोगआठप्रकारकोछै वायको
 १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ आंवकारसको ५ वातक
 णको ६ कफपित्तको ७ वातपित्तको ८ अथवायकासूलको
 उत्पत्तिलक्षणलिष्यते वेदसूं घोडादिकांकांढोडावासूं अतिमें
 थुनसूं घणाजागिवासूं घणाजलादिककापीवासूं चोटकालागि
 वासूं कसायलीवस्तकाषावासूं कडवीवस्तकाषावासूं भेयाअन्न-
 काषावासूं विरुडुवस्तकाषावासूं सूकामांसकाषावासूं मलमूत्रका
 रोकिवासूं मैथुनकारोकिवासूं अधोवायकारोकिवासूं सोचकाक
 णवासूं लंघनकाकरिवासूं घणाहसिवासूं इतनीवस्तांसूंवायव
 धैतदि इतनाहिकाणामेंसूलकारोगनें प्रगटकरै हियामें दोन्युं प
 सवाडामें रोमामें याहिकाणामें सूलचलावै संध्यासमें वादलामें
 सीतकालमें यामें घणीचालै वारंवारथंभिजाय वारंवारचालिवा
 लागिजाय मलमूत्ररुकिजाय सूलचालै पीडघणीहोय यावायकां

सूलकी उत्पत्तिलक्षण है। अथपित्तकासूलकी उत्पत्तिलक्षण
लिख्यते पारीवस्तकाषावासं प्रतकाळीनैश्चादिलेरघणीतीषी
वस्तकाषावासं गरमवस्तकाषावासं निळाकाषावासं क्रोधकाक
रिवासं पलिकाषावासं कुलसकाषावासं पटार्द्रकाषावासं कंजी
कापीवासं दारूकाआसवकापीवासं पेदकाकरिवासं तावडाका
सेवासं घणामैथुनकाकरिवासं इतनीवस्तांसंपित्तकोकोपहोयअ
रसूलनैप्रगटकरै तदितिसघणीलगावै दाहघणोकरै नाभिकेप
सेवआवैयूछाहोय त्रमहोय क्रोधहोय मध्यान्हमें आधीरातिमें श्री
आश्रुमें सरदरितुमें इतनीजायघणांकीसूलचाळे तदिजाणिजे-
पित्तकीसूलछै अथकफकीसूलकोलक्षणलिख्यते अथ
पदेसकाभांसकाषावासं मांछडीकाषावासं पेडाउगैरैहृथकाषा
वासं सांयकानूसिवासं मैदाकाषावासं घणामधुररसकाषावासं
इतनीवस्तांसंरुफकोपकंप्राप्तिहोयछै सूलमेंपैदाकरैछै हियोइपे
वमनसोआवै पासीहोय पीउहोय भोजनमेंअरुबिहोय पेटमेंपी
उचाले मलउत्तरैनहीं मथवायहोयआवै सरीभास्योहोयजाय भो
जनकसांपीउघणीहोय प्रभातसमैवसंतरितुमेंघणीहोय तदि
जाणिजेकफकीसूलछै अथसन्निपातकीसूलकोलक्षणलि
ख्यते येकह्यासोपाठिलालक्षणसोसाराहीमिले तीनैसंनिपात
कीसूलकहिजे अथआंवकीसूलकोलक्षणलिख्यते आफ
रोहोय पेटमेंगुडगुडशब्दहोय हियोपकह्योजाय वमनआवै स
रीरभास्योहोय लालपडे अरुफकीसूलकासारालक्षणमि
लेतीनैआंवकीसूलकहिजे अथचायकफकीसूलकोलक्षण
लिख्यते पेडूमें हियामें कंदमें दोनूपसचाडामेंसूलचाळे जीनै

वायकफकीसूलकहिजे ६ अथकफपित्तकीसूलकोलक्षणलि
 ष्यते कूपिमें हियामें नाभिमेंसूलचाले तीनैवातपित्तकीसूलकहि
 जे ८ अथसूलरोगकाउपद्रवलिष्यते पीउघणीचाले जीमेंतिस
 होय मूर्छाहोय आफरोहोय सरारभासोहोय अरुचिहोय वासहो
 य सासहोय येसूलकाउपद्रवछे अथसूलरोगकोभेदपरिणा
 मसूलछे तीकोलक्षणलिष्यते जेताभेदसूलकाछे तेताहीपरि
 णामसूलकाछे वाहीवैकीउत्पत्तिछे ईमेंइतनोबिसेसछे कुपि
 तवायहैसोकफपित्तसूमिलिसूलनैकरैछे अथईकोलक्षणलि
 ष्यते भोजनपचापीछेसूलउपजैतीनैपरिणामसूलकहिजे १ अ
 थअनद्रवसूलकोलक्षणलिष्यते भोजनकसौपचजाय अथ
 वानहीपचैसदाहीसूलरहै पथ्यचालतांभीकहींतरैसूलकीसांति
 होयनहीं तीनैअनद्रवसूलकहिजे अथजरत्पित्तसूलकोल
 क्षणलिष्यते जोभोजनपचतांसूलहोयतीनैजरत्पित्तसूलकहि
 जे अथसूलरोगकाजतनलिष्यते सूलरोगबालानें वमनक
 राजे औरलंघनकराजे औषद्यांसूपसेवलिवाजे पाचनदीजे व
 स्तिकर्मकराजे साजीषारनैआरिलेरत्यांकाचूर्णदीजे कब्बादिकदी
 जे गरमगरमकुलत्थकोसेककीजे रेतनैगरमकरिजीमेंपाणीनांषि
 वेनैसिजायवेनैकपडामेंधातितीकोसेककराजे अथवा काकिंड
 कीमींजी कुलत्थ तिलजव अरंडकीजड अलसी सारीकीजड ल
 सणकाबीज यांनैकांजीमेंसिजाय जैवैसूलचालेतैडेहीसेककराजे
 तौसूलजाय अथवा तिलानैवांरिकांजीमेंसिजाय वेमेंकूतेलनां
 षिवेनैसेककराजे कपडाकीपोतलीसूतौसूलततकालजाय १
 अथवा मैटलनैकांजीमेंवांरिनाभिकैलेपकरेतौसूलजाय अथवा

सूँरि अरंडकीजड यांकोकाटोदेतौसूलजाय १ अथवासूँरि अर
अरंडकाकाटामें हींग संचरलूणनांषिपीवैतौसूलजाय १ अथवा
गुडनैऔदाय तींमैजवषारनांषिपीवैतौसूलजाय १ अथवा कांसी
कारूपाकातांबाकापात्रमैंजलघालिजेतैसूलचाळेतौउपरिवेंपात्र
नैफेरैतौसूलजाय १ अथवा पित्तकीसूलहोयतौसुहावसूँरिहो
य १ अथवा गुड हरडैकीछालितीमेंसूरितीमेंघृतमिलायषायतौ
पित्तकीसूलजाय १ अथवा कफकीसूलकोजतनलिखते आव
लांकोचूर्णसहतमैंचाटैतौ कफकीसूलजाय १ अथवा नांघकीछा
लितींकोकाटोकरितींमैंपीचकीदारूनांषिपीवैतौकफकीसूलजा
य १ अथवा जवषार सांधोलूण संचरलूण सांभरोलूण पीपलि
पीपलामूल चक्र चिचक सूँरि सेकीहींग यांकोचूरणकरि ईचूर
णनैरंक २॥ गरमपाणीसूँलेतौ कफकीसूलजाय येजतनकफ
कीसूलकाछै सोयेहीआमसूलकाजाणिलीज्यो अथवा
राई त्रिफलांकोचूर्ण सहतघृतसूँलेतौ सर्वसूलमात्रदूरिहोय १
अथवा दारुहलद चोष कूठ सौंफ हींग सांधोलूण यांसारनैकां
जीमैंपीसिगरमकरिसुहावतौसुहावतौलेपकरैतौसूलदूरिहोय
१ अथवा बीलकीजड अरंडकीजड चिचक सूँरि सेकीहींग सां
धोलूण यानैवरावारिले यांनैभिहींवांटित्यांकोचूरणकरिरंक २॥
गरमपाणीसूँलेतौसूलजाय अथवा पक्कापेठानैलेतींकाटुक
डाकरितावडैमुकावै पाछैबांदूकडानैपीतलकाकचोलामेंवालै
वांकाकोइलाकरैजुगतिस्त्राषकरिदेनहीं बूलापरित्रिदायनीचै
अग्निवालीकोईलाकरै पाछैयांकोइलानैवांरिईमैंसूँरिकोचूर
णमासा २ मिलायईनैजलसूंपीवैतौ असाध्यभीसूलकोरोगजाय

इतिकूष्माण्डसार० येसर्वजतनभावप्रकासमेवै अथवा
 अजवायलि सांधोत्तर सेकीहींग जववार संचरल्लण हरडैकीछ
 छि येवरावरिले यांकोभिहींचूर्णकरिदंक २॥ गरमपाणीसूंलेतो वा
 यकोसूलजाय १ अथवा संचरल्लणदंक १ जीरोदंक ३ कालीमि
 रचिदंक ४ यांनैमिहींवांदि ईमेंअमलवेदकारसकीपुट ७ दे पाछै
 दिजोराकारसकीपुट ७ दे पाछैईकीगोलीमासा ४ भरकीबांधै पा
 छैगोली १ रोजीनांगरमपाणीसूंलेतो वायकोसूलजाय १ अथवा
 सूरि हरडैकीछाति पीपलि निसोत संचरल्लण येवरावरिले यां
 नैमिहींवांदिदंक १ गरमपाणीसूंलेतोसूलने आफरानें ववासीरने
 आमवातनैयोडूरिकरैछै इति पंचसमचूरण अथवा सूरि
 काकाटामें अरंडकीतेलवांधि अरसेकीहींग संचरल्लण मिला
 यपीवैतो ततकालसूलजाय १ अथवा संवकोचूर्ण संचरल्लण
 सेकीहींग सूरि कालीमिरचि पीपलि येवरावरिले त्यांकोचूर्णक
 रिदंक २॥ गरमपाणीसूंलेतो ततकालसूलजाय १ अथवा सो
 धोसींगीमुहरो चित्रक सूरि कालीमिरचि पीपलि जीरो सेकी
 हींग येवरावरिले यांनैनिपटमिहींवांदि ईकैभांगराकारसकीपुट
 ३ दे पाछैईकीगोलीचणांभमाणबांधै गोली १ गरमपाणीसूंले
 तो सूलततकालजाय १ अथवा संवनेभस्मकरिले अरकणगज
 कीजड सेकीहींग सूरि कालीमिरचि पीपलि सांधोत्तर येसर्वव
 रावरिले यांनैमिहींवांदिदंक २॥ गरमपाणीसूंलेतोसूलकोरोगजा
 य १ इतिसूलनसन्नचूर्णम् अथवा चित्रक सेकीहींग पाठ
 सूरि कालीमिरचि पीपलि पांचूत्तर जीरो धणै छड अजवायण
 पीपलासूल येवरावरिले यांनैमिहींवांदि आंकेजंभीरीकारसकी

पुट ५ दे पाछै ई की गोली बांधे पाछै गोली १ गरम पाणी सूंले तो सूल
 नें हिया की सूल नें पस बाड़ा की सूल नें आंव की सूल नें अरु विनै यसी
 ८० प्रकार की वाय नें या गोली तत काल दूर करै छै इति चिब कदि
 गुटिका अथवा हर डै की छालि संधि काली भिरचि पीपलि कु-
 चिला सोधी गंधक से की हांग सोधो लूण ये सर्व वरा वारले पाछै यानें
 मिहीं बांदि चण प्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजी नां प्रभात समें गरम
 पाणी सूंले तो सूल नें संग्रहणी नें अती सार नें अजीर्ण नें मंदाग्नि नें
 या गोली दूर करै छै इति सूल नासिनी गोली अथवा कूट दंक
 ३॥ संधि दंक ३॥ संचर लूण दंक १॥ से की हांग दंक १॥ यानें मिहीं बांदि
 सहज पां की जड कार समूं अथवा लसण कार समूं गोली बांधे गो-
 ली १ रोजी नां गरम पाणी सूंले तो सूल तत काल जाय इति कुचि
 लादि गुटिका अथवा विफल सार महलोटी महुवो यानें व-
 रां वरै लै यानें मिहीं पासि दंक १॥ सहन घृत में चाटै तो बिदोस की सू-
 ल जाय १ अथवा सोधो पारो दंक १० सोधो सींगी मोहरो दंक १० का-
 ली भिरचि दंक २० पीपलि दंक २० संधि दंक २० से की हांग दंक २० पा-
 चूल दंक ५॥ भर आमिली कोषार दंक ८॥ भर जंभीरी कोर सटका
 ८॥ भर अर संभ नें वार ७ दूध करितां को चूर्ण दंक ८॥ भर ले पाछै यां
 सारा नें ये कडा करि नांबू कार समें दिन ५ पर ल करै पाछै ई नें दंक
 १॥ गरम पाणी सूंले तो तत काल सूल जाय इति सूल दावानल र-
 स अथवा हीरा कसीस सेर आध ३॥ लाहोरी फिटकडी सेर ३१
 सोधो लूण सेर ३१ कलमी सोरो सेर ३१ यानें बांदि टींक ली जंभ सूं यां
 नें चुवाय यां कोर सकाटिले चीणी का वासण में पाछै मां सो १ रोजी
 नां जी भकै घृत ल गाल अर ई नें दां ता कै ल गावें न हां इसी तरें ले तो

सूलरोगनें गोलारोगनें पीयाने उदरकारोगनें बवासीरनें अजीर्ण
 नें वायकारोगनें खांसारानेयोद्दिरकरैछै इतिसंघट्टाव अथवा
 सोधीगंधक तीसूंआधोसोध्योपारो पांदोन्यांकीबरावरिसोध्योकं
 टकवेधी तांबाकापत्र यांतीन्यानें भरलमेंघालिमर्दनकरादिन
 पाछेयांकोगोलीकरि हांडीमेंलूणभरि तीकैवाचियोगोलोमेंछै पा
 छैआंचदिन ३ कीदेर ईगोलानेंपकावे पाछेईनैस्वांगसीतलहुवां-
 काटेपाछेईनैरती १ नागर बोलिकापानसंघुवावैतौ ततकाछेसूलका
 बहुरिहोय १ इतिसूलगजकेसरीरसः अथवा जीरो संहि
 कालीमिरचि सेकीहींग वच येवरावरिले यांनैमिहीपीसिरंक २॥
 गरमपाणीसूंलेतौ सूखजाय १ अथवा त्रिफलाटका १ सोधीगं
 धकटंक ५ सारटंक २॥ यांनैमिहीवांदि यांकोयेकजीवकरि पाछे
 सहतटंक २॥ घृतटंक २॥ पांदोनांकीसाथि यांनैलेतौ सूल मात्रनें
 वायकविकारनें फोडनें महीनां ३ सेवनकत्तां यांनैदूरिकरैछै १
 इतिगंधकरसायनम् अथवा गुडटका १ आंवलाटका १ मांडू
 रटका ३ भर यांसारानेमिहीवांदिटंक २॥ सहतघृतकैसाथिई
 नषायतौ सूलनें अनडवनें जरतपित्तनें अभलतपित्तनें परिणा
 मसूलनेंयोद्दिरकरैछै इतिगुडाघमंडूरम् अथवा नायविडंग
 चिंचक चय त्रिफला संहि कालीमिरचि पीपलि येसारावरावरि
 ले अरयांसारंकीबरावरिमंडूरले यांवरावरिगुडले पाछेयांसारं
 सूंदसगुणोगोमूत्रले पाछेयांनैकडाहीमेंघालि मधुरीआंचसूं
 प्रकावे पाछेयांकोएकपांडोकरि चीकणाचासणमेंमेलिराखे पा
 छेईनैटंक २॥ भोजनकैपहलीलेतौ सूलनें पंक्तिसूलनें कामलातो
 गनें पांडुरोगनें सांजाने मंदाग्निनें बवासीरनें संग्रहणीनें रुमियो

गर्भे गोलानें उदरकारोगर्भे अम्लपित्तर्भे यांसारानें योद्धार करैछै १
 इति चाराग्रं हरः अथवा हरडै की छाति सुहागो स्रंठि सेकी हांग
 कालीमिरचि चित्रक सोधी गंधक सींधो लूण ये सारा वरावरिले
 यां सारा की वरावरि कुंचिलाले पाछै यां सारा नें मिहीं बांदि यां कोर
 कजी व करि मा सो १ जल सुंले तो सुंल नें आफ्रानें बंध कुष्ट नें कफ
 का आजार नें अजीर्ण नें मंदाग्नि नें ज्वर नें या गोली दूरि करैछै इ
 ति सुखगंज के सरी सुटिका अथवा कषागच की जंड सेकी हीं
 ग सेकी सुहागो स्रंठि ये सारा वरावरिले यां नें मिहीं बांदि रंक २॥
 गरम पाणी ले तो महा सुल दूरि होय ये सा सजत न बै धरहस्य
 मैछै अथवा भिसोत वायविडंग सहजणां की फली हरडै की
 छाति कपेटो ये सारा वरावरिले यां नें मिहीं बांदि षोडा का मूत्र में प
 कयले पाछै ई नै रंक २॥ पीवा का दारू के साथिले तो वाय की सुल जा
 य १ योचक्र दत्त मैछै अथवा सेकी हांग अमल वेद पापलि
 संचरलूण अजवायण जवषार हरडै की छाति सींधो लूण ये सर्व
 वरावरिले यां नें मिहीं बांदि रंक २॥ पीवा की दारू के साथिले तो वाय
 की सुल जाय १ अथवा संचरलूण अमल वेद जीरो मिरचि ये
 सारा येक संयेक दूणोले यां नें मिहीं बांदि विजोरा कारमें गोली क
 रै पाछै गोली १ गरम पाणी सुंले तो सुल जाय १ इति सोमर्चला
 दिग्गुटिका अथवा सेकी हांग अमल वेद स्रंठि कालीमिरचि
 पापलि अजवायण संचरलूण सींधो लूण ये सर्व
 वरावरिले यां नें मिहीं बांदि विजोरा कारमें गोली करै पाछै गोली
 १ गरम पाणी सुंले तो सुल जाय १ इति हिंखादि क सुटिका
 अथवा विजोरा की जंड रंक २॥ तो नें मिहीं बांदि घृत सू पीवै तो वा

यकीसूलहूरिहोय१ इतिविजैपूरादिजोग येजतनसर्वसं
ग्रहमेंछै अथवा सूरि कालीभिरचि पीपलि संचरखण यानैव
रावरिले पाछैयानैमिहीवांदि विजोराकारसकीपुट ३दे रससुका
यले पाछैईनैटंक २॥ सहतमेंचाटैतौ बिदोसकीसूलहूरिहोय१
अथवा संपकीभस्म संचरखण सेकीहींग सूरि कालीभिरचि
पीपलि येसर्ववरावरिले यानैमिहीवांदिटंक २॥ गरमपाणीसूले
तौबिदोसकीसूलजाय१ अथवा हलद सहजणंकीछालि सीं
धोखण अरंडकीजड भैसायुगल सिरसूं मेथीदाणं सौंफ अ
सगंध महुवो यानैवरावरिले यानैमिहीवांदि कांजीकापाणीमेंरो
टीकरि बेनेंपकायअग्निउपरि पाछैवेंकापेटउपरिसेककरैतौपे
रकीसूलहूरिहोय१ अथवा कौज्यांकीराष सोधोसींगीसुहरो
सींधोखण सूरि कालीभिरचि पीपलि येसर्ववरावरिले यानैमिही
वांदि नागरवेलीकारसमें गोलीरती१ प्रमाणबांधै पाछैगोली१
रोजीनांषायतौ सूलकोरोगजाय१ इतिसूलगजकेसरीरसः
अथवा पारो सोधोगंधक अभ्रक तामेस्वर अमलवेद सोधो
सींगीसुहरो येवरावरिले पाछैयानैमिहीवांदि आदाकारसमेंरती३
प्रमाणगोलीकरै पाछैगोली१ रोजीनांजलसूलेतौ बायकीसूल
हूरिहोय१ इतिअग्निमुषरसः अथवा बडासंपनैवार २१ ग
रमकरिनांबूकारसमेंबुझावै पाछैवेंकोचूर्णकरै पाछैआमिलीको
षार ईमैटका१ भरनांषै संचरखणटंक ५ ईमेंनांषि सांधोखणद
का१ भरईमेंनांषि सांभरखणदका१ भरईमेंनांषि अरकचखण
विडखणदका१ येकेकभरनांषै सूरिमासा ६भिरचिमासा ६पी
पलिमासा ६नांषै सेकीहींगदका१ भर सोधीगंधकदका१ भर

२०९. अमृतसागर तथा प्रतापसागरतरंग १०

पाँरोटका १॥ भर सोधोसींगीमुहरोटक ५ पाँछैयांसारानेंमिहींवां
दि अरपारागंधककीकजलीकरिईकजलीमेंयांसारानेंमिलायपा
छैयांकोएकजीवकरि यांकीगोलीछोटाबोरप्रमाणबांधै गोली१
लवंगकाकादासूँलेतौसूलतवकालदूरिहोय१ इतिसंषवदीरसः
अथवासीयांकीभस्मटक २॥ तातापाणीसूंपीवैतौ भोजनकसां
पाँछैसूलचालैसोदूरिहोय१ अथवासोध्योपारोटक १॥ सोधी
गंधकटक १॥ सोधोसींगीमुहरोटक १॥ कालीमिरचिटका १॥ पीप
लिटका ३॥ काकडासींगीटका २॥ सेकीहींगटक २॥ पांचूल्हादका
८॥ आमलीकोषारदका ८॥ जंभीरीकारसमेंबुझाई संषकीभस्मट
का ८॥ भर प्रथमपारागंधककीकजलीकरै पाँछैईकजलीमेंयेसा
रीऔषदिमिलाय नींबूकारसमेंयेकजीवकरै पाँछैईकीगोलीदं
क १॥ प्रमाणगोलीबांधै पाँछैगोली१ जलसूँलेतौसूलने अजी
र्णनैउदरकारोगनै मंदागिनै दूरिकरैछै१ इतिसूलदोवानल
रसः येसाराजतनसर्वसंग्रहैग्रंथमैछै अथपसवाडा
कीसूलकोजतनलिप्यते सींगीमोहरो हरताल हींग राई
नौसादर मैणसिल लसणा बचएलीयो यानैबरावरिले यानै
मिहींवांदि गरमपाणीसूँले गरमसुहावतौ लेपकरैतौ पसवा
डाकीसूलजाय इतिसूलरोग ८ प्रकारकीअरपरिणामसू
लअन्नद्रवजरत्तपित्तकाजतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महा
राजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रथीसबाईप्रतापसिंह
जीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथे वातरक्तसूलपरिणा
मसूल अन्नद्रवजरत्तपित्तयांकीउत्पत्तिलक्षणजतननि
रूपणनामदशमः स्तरंगः समाप्तः १० अथउदावर्त्त

रोगकी उत्पत्ति लक्षणजनन लिख्यते मनुस्यकैतेरा १३ वस्तु
धारणकस्यांसं उदावर्त्तरोगपैदा होय छै सोतेरा वेग १३ लिखूं अ
धोवायको वेग १ अमलको वेग २ मूत्रको वेग ३ जंभाईको वेग ४ अशु
पातको वेग ५ छींकको वेग ६ उकारको वेग ७ वमनको वेग ८ मैथु
नको वेग ९ क्षुधाको वेग १० तृषाको वेग ११ स्वासको वेग १२ निद्राको
वेग १३ यांतेरां वेगां नैजो मनुस्यरो कै तीं कै उदावर्त्तको रोग पैदा होय
अथ अनुक्रमसं धोवायनै आदिले १३ वेग लिखा स्वांका
लक्षण लिख्यते अथ अधोवायनै रो कै तीं संसेम पैदा होय
सो लिख्यते जो अधोवायनै रो कै तीं कै मलमूत्रकारो किवा को रोग
होय आफरो होय पेडूमें पोतामें इंद्रीमें पीडा होय अरपेटमें नाय
का और भी रोग पैदा होय तीं नै अधोवायकारो किवा को उदावर्त्तरोग
कहिजे १ अथ मलकारो किवा का उदावर्त्तको लक्षण लिख्य
ते पेटमें गुडगुडाट शब्द बोलै पेटमें सूल चालै पेडूमें पीडा होय
मलउतरे नही उकार घणी आवै मलसूदांमें निकलि आवै येजांमें
लक्षण होय तीं नै मलकारो किवा को उदावर्त्त कहिजे २ अथ मूत्र
कारो किवा का उदावर्त्तको लक्षण लिख्यते पेडूमें इंद्रीमें सूल हो
य मूत्रकष्टसं उतरे मथवाय होय आवविनाहि पेडूमें आफरो हो
य तो मूत्रकारो किवा का उदावर्त्त जाणिजे ३ अथ जंभाईकारो कि
वा का उदावर्त्तको लक्षण लिख्यते जीमें कां धीगलोरु किजाय
माथां का विकार होय आवै जंभाई घणी आवै नायका और विकार
रहोय नेत्रांमें नांसिकामें पीड घणी होय कानमें पीड घणी होय येल
क्षण होय तदि जाणिजे जंभाईकारो किवा को ईं कै उदावर्त्त छै ४ अ
थ आंसूकारो किवा का उदावर्त्तको लक्षण लिख्यते आनंदका

आंसू नैरोकै अथवा सोचका आंसू नैरोकै तो वैकै मांथो भास्यो होय अ
 र नेत्र का आजार होय ५ अथ भूषण सौं किवा काउदावर्त को
 लक्षण लिख्यते कांथी सुडे नही माथा में सूल चालै आधा सी सी हो
 य सर्व इंद्रो दुर्बल होजाय ६ अथ भूषण सौं किवा काउदाव
 र्त को लक्षण लिख्यते कंठ अर मूत्रो भोजन संभास्यो दीर्घ मोह निष
 द घणो दीर्घे सरार में बिथा होय पवन सरै नही और वाय का घणा वि
 कार होय ७ अथ छर्दिकारो किवा काउदावर्त को लक्षण लि
 ख्यते सरार में पुजा लि होय दाफ उ होय अरुचि होय मूदा उ परिछा
 य पडि जाय सोजो होय पांडुरोग होय जुर होय कोद होय हियो दूषे
 निसर्प रोग होय ८ अथ भूषण सौं किवा काउदावर्त को लक्ष
 ण लिख्यते पेडू में गुद में पोता में इंद्रो में पीड होय अर सोजो होय
 मूत्र रुकि जाय वीर्य आपर तो इंद्रो में संपडि वाला गिजाय पथरी को
 आजार होय नेत्र का विकार होय ९ अथ भूषण सौं किवा काउ
 दावर्त को लक्षण लिख्यते तंद्रा होय हाना में फूटणी होय अरुचि
 होय विना अमही अम होय सरार क्षीण पडि जाय दृष्टि मंद होजाय
 १० अथ तिसकारो किवा काउदावर्त को लक्षण लिख्यते कं
 ठ मूंदो सूकै थोडो सुणै हिया में पीड होय ११ अथ स्वासकारो कि
 वा काउदावर्त को लक्षण लिख्यते दोड़तां सास होय आवै तीने
 रोंकै जीकै ये लक्षण होय हियो दूषे मोह घणो होय पेट में गोला
 को रोग होय १२ अथ तींद्रकारो किवा काउदावर्त को लक्षण
 लिख्यते जंभाई घणी आवै अंग में फूटणी होय आंघि भारी होय
 मांथो भास्यो होय तंद्रा होय १३ अथ उदावर्त की उत्पत्ति लिख्य
 ते कौदा में रहतो जो वाय सोलूषाक सायला कडवा भोजना संकु

पित्तहृद्योथकोउदावर्त्तरोगनेंकरेहे-अथउदावर्त्तकोसोमावृत्त
 क्षणलिप्यतेजहांवायकोउर्ध्वभ्रमहोजायतीनेउदावर्त्तकरिजे
 १ अथउदावर्त्तकोविशेषलक्षणलिप्यतेरूपमेदनेंवहवावा
 लीजोनसां सौअधोवायनेंअरमलमूत्रनेंउंचोलेजाय अरमलनें
 सुकायदे अरहियामेंपेटुमेंसूलचालेंवमनसोराधें अरुचिहोय अ
 रअधोवाय मलमूत्रयेनिपटकष्टसुंउतरेंसास बास पीनस दाह
 मोह तिसज्वर वमन हिचकी मांथांकारोग हौलदिल स्रणैथोडों
 अरवायकाधणाअजारहोय अरतिसकरिकेंपीडित अरसरीरसी
 लपडिजाय सूलघणीचालें मलकोवमनकरे इसाउदावर्त्तवा
 लोमारिजाय १ अथक्रमकरिकेंउदावर्त्तकाजतनलिप्यते
 अधोवायकारोकिवासुंउपज्योजोउदावर्त्ततीनेंस्नेहपानकराजैतौ
 उदावर्त्तजाय १ अथमलकारोकिवाकाउदावर्त्तकोजतन
 लिप्यते ईनेंसुलावदीजे अरमलनेंदूरि करिवावालाओषदीदी
 जै इसाहीअनदीजे फलवर्त्तिदजै तैलकोमर्दनकीजे वस्तिकर्म
 कराजे अथमूत्रकारोकिवासुंउपज्योजोउदावर्त्ततीकाजत
 नलिप्यते जवषारटंक ॥ वचटंक ॥ यांनैपाणीमेंमिहींवांदिपीवै
 तौमूत्रकारोकिवाकोउदावर्त्तजाय १ अथवा कल्याली अर्जुन
 बल्लकीजड ईकोकादोलेतौमूत्रकारोकिवाकोउदावर्त्तजाय १ अ
 थवा तेवरसीकाबीजत्यांनैपाणीमेंवांदिजोमेंसोंधोक्षणोंधि
 पावैतौमूत्रकारोकिवाकोउदावर्त्तजाय १ अथवा मिश्री सांढाको
 रस दूधदाघांकोसरवतपीवैतौमूत्रकारोकिवाकोउदावर्त्तजाय १
 अरऔरभीवायकारोगजाय १ अथवांसंकारोकिवासुंउप
 ज्योजोउदावर्त्ततीकोजतनलिप्यते स्नेहकापानसुं अथवा

२१३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

मर्दनकीयांसं अथवा ईसंपसेवलिवायांसंयोजाय अरओरभी-
वायकारोगजाय २ अथआंसूकारोकिवासंउपज्योजोउदाव
र्त्ततीकोजतनलिष्यते ऊंचाप्रकारसंरुदनकरे अरआंसूकादे
तौ अथवा सुषपूर्वकआछीतरैसोवैतौयोजाय १ अथवा म
नोहरकथासुलैतौयोजाय २ अथछीककारोकिवासंउप
ज्योजोउदावर्त्ततीकोजतनलिष्यते कालीभिरचि राईन क
छीकलीनैआदिलेरतीकीनांसदेतौ अथवा सूर्यनैदेषितीकरिछी
कलैतौउदावर्त्तजाय अथवा तैलमर्दनकरायजे अथवा पसेवलि
वावैतौयोरोगजाय ४ अथइकारकारोकिवासंउपज्योजोउ
दावर्त्ततीकोजतनलिष्यते तैलकामर्दनसं प्रस्वेदसंयोजाय १
अथछर्दिकारोकिवासंउपज्योजोउदावर्त्ततीकोजतनलि
इनैवमनकराजे लंघनकराजे जुलावदीजै तैलकोमर्दनकराजै व
स्तिकर्मकराजे नासिकासूंपाणीपाजेतौयोरोगजाय १ अथशुक्र
कारोकिवासंउपज्योजोउदावर्त्ततीकोजतनलि सुंदरषोड
सबरसकीस्त्रियांसंभोगकराजैतौयोजाय अथवा तैलाभंगक
राजे मदिरापाइजे कूकडाकोमांसपुवाजे साठीचावलपुवाजे व
स्तिकर्मकराजेतौयोरोगजाय १ अथभूषकारोकिवासंउपज्यो
चीकणागरम हलकारुचिकारी हितकारीभोजनकराजे सुगंध
पुष्पांकोधारणकीजेतौयोरोगजाय १ अथतिसकारोकिवासं
उपज्यो ० सीतलक्रियासर्वहितकारी पंचाराचादीरउगैरैजलकी
डासाराईनैहितकारी अरसीतलजलमेंभीमसेनाक पूरनांधितीको
सनेसनेपानकरैतौयोरोगजाय १ अथअमकासासरोकिवासंउ
वैकोबेदहरिकराजेविआमकरि अथवासोरवाकैसाधिचावलपु-

२१४ अमृतसागरतथा प्रतापसागरतरंग ११

वाजेतौ योजाय १ अथ नांदकासोकिवासंउपज्योजोउदावर्तते
गरमदूधमें मिश्रीनांषिसुहावतौ सुहावतोरुचिमाफिकपीजे अथ
वा सुषसं सोजे अथवा मनोहरकथासुहाजेतौ योरोगजाय १३
अथ लूषावस्तकांषावासंउप हींगसहत सीधोल्हा गानैषि
सियांकीवातीकरि घृतसं चोपडिगुदामें मेलै सुहावतोजैयताईतौ
योउदावर्तजाय १ इति हिंवादिफलवर्ति अथवा मैदल पीप
लि कूठ वच सिरसं गुडयानें दूधसं वांदि यांकीवातीकरि गुदामें
सुहावतीराबैतौ योउदावर्तजाय १ इति मदनफलादिफलवर्ति
अथवा पामटका १॥ निसोतटंक २॥ पीपलिटंक ५ यांकोचूर्णक
रि भोजनकैपहलीटंक २॥ सहनसूंलेतौ मलगादोदोहरोउतर
तौ होयतौ दूरि होय योउदावर्तईसंजाय १ इति नाराचचूर्णम्
अथवा संधि मिरचि पीपलि पीपलामूल निसोत दांतूणी चि
न्नक येसर्वबराबारले यांनैमिहीं वांदिटंक १॥ गुडकैसाधिपरभा
तही जलसूंलेतौ उदावर्तनें फाणनें गोलानें सोजानें पांडुरोगनें
यां दूरिकरैछै इति गुडाष्टकम् अथवा सूकीमूली साठीकाज
ड पीपलि पीपलामूल चय चिन्नक संधि दसमूल किरमालाका
गिर यांओषधानें घृतमें पकाजे पाछै ईधृतनें षायतौ सर्वप्रका
रकोउदावर्तजाय १ इति शुक्लमूलकाद्यंघृतम् येसर्वजतन
भावप्रकासमें लिप्पालै अथवा सोध्याजमालगोटा पारो सो
धागंधक सेखोसुहागो संधि मिरचि पीपलि येसर्वबराबारले
प्रथमपारागंधकीकजलीकरै पाछै येओषदिईकजलीमें मिला
वै पाछै ईनेरती ४ अथवा मासो १ मिश्रीकैसाधिलेतौ उदावर्तनें
आफरानें उदरकारोगनें गोलानें यो दूरिकरैछै १ इति अजेपाल

तः योबेधरहस्यमेंछै अथवा निसोत थोहरिकापांन तिल
आदिलेरओरगरमवस्ततीकासेवनसूं उदावर्त्तजाय अथवा -
नसोत दंतूणी तज थोहरिसांषांहुली किरमालो कपेलो कणगच
मेजउ चोष येसर्ववरावरिले यांनैजौ बूद करिदंक १। रोजीनांदिन
३ काहोदेकाहामेंतेलदंक २। धृतदंक ३। नांषिलेतौ उदावर्त्तजाय
अरउदरकासर्वरोगजाय आफरोगजाय तिसरोगजाय गोलोजाय
योकाहोइतनारोगांनैइरि करै छै इतिउदावर्त्तरोगकोउत्पत्तिल
क्षणजतनसंपूर्ण अथआनाहरोगकीउत्पत्तिलक्षणज
तनलिष्यते उदरमेंआंबकावधिवासं अथवा मलकावधिवा
सं अथवा अधोवांयकारुकिवासं अथवा सरीरमेंदुष्टपवन-
कावधिवासं मनुस्यकै उदरमें आनाहनामआफराकोरोगपे
दाहोयछै अथआंबकाआफराकोलक्षणलिष्यते आंआ
फराका रोगमें निसयणीहोय पीनसहोय सिरकाविकारसारा
होय पेटमेंसूलहोय सरीरभात्तोरहै हियोदूधै इकासआवैनहीं
येलक्षणजामेंहोय तानैआंबकोआफरोगकहिजे १ अथमल
कावधवाकाआफराकोलक्षणलिष्यते सरीरजकउबंधहो
य अरकहिमेंपीठिमें मलमेंसूलहोय मूर्छाहोय मलमेंछर्दि
करै सारहोय अरविसूचिकाहोय अरपाछैलक्षणकह्यछैसो
भीहोय तदिमलकावधिवांकाआफराकोलक्षणजाणिजे अथ
आफराकाजतनलिष्यते जोउदावर्त्तकाजतनपाछैलिष्य
छैसोहीआफराकाजाणिलीज्यो ओरक्यूंविसेसलि घूंछूं नि
सोतभाग २ पीपलिभाग ४ बडीहरडैकीछालिकाभाग ७ यांनै
मिहांबांठि यांतीन्यांकीबरावरिगुडमिलाय गोलीदंक १ प्रमाण

करै पाछैगोली १ रोजीनांजलकैसाथिदिन १५लेतो आफराकोया
 जारदूरिहोय १ अथवा संहि कालीभिरचि पीपलिसींधोक्ष्ण सिर
 संधमासो कूढे मेंदल येसारीबराबरले यानैमहींवांदिगुडमें
 मिलायपकावै पाछैवैकीवातीकरै अंगुठासिरीसीजाडोपाछैवैकैघृ
 तलणायवावातीगुदामेंमेलैतो आफराकोरोगअरउदावर्तकोरोग
 उदरकोरोग अरपेडकोरोग गोली येसारादूरिहोय येसाजत
 नभावप्रकासमेंलिख्यछै इतिअनाहनामआफराकारोग
 कीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्ण अथगुल्मरोगकीउत्पत्तिलक्ष-
 णजतनलिख्यते वायपित्तकफहैसोमिथ्याअहारअरमिथ्यावि-
 हारकाकुपथ्यपणसंडूष्टहुंचायकोपुरुषांकोअथवा स्त्रियांके
 हियासूलेरपेडूमांहिगोलाकैआकारएकगांठनैकरैछै सोओगोले
 पांचप्रकारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४
 लोहीको ५ अथकोष्टकैविसेजोस्थानमेंगुल्महोयसोस्था-
 नलिख्यते दोन्हापसबाहामें २ हियामें ३ नाभिमें ४ पेडूमें ५ अ-
 थगुल्मकोसामान्यलक्षणलि० हियाअरपेडूकैबीचिगांठिहो
 य अरफिरै अथवा नहींफिरै गोलहोय अरबधतीहोय तीनैगु-
 ल्मकहिजे अरईगुल्मरोगमें अरुचिहोय अरमलमूत्रदोहरोऊ
 तरै वायवधै आंतबोलै आफरोहोय पवनकीऊर्ध्वगतिहोय ये
 जांमेंलक्षणहोयतीनै गुल्मकोआजारकहिजे अथवायगो-
 लाकीउत्पत्तिकोलक्षणलि० लघाअन्नकाषावासूं विषमा-
 सनकावैठीवासूं मलमूत्रकारोकिवासूं सोचकाकरिवासूं चोटका-
 लागिवासूं मलकाक्षीणपणांसूं लंघनकाकरिवासूं विरुद्धचेष्टा
 सूं बलवानसूं गुडकरिवासूं खांवस्तांसूं वायकोगोलोपैदाहोयछै

२१७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

अथवायकागुल्मकोलक्षणलिख्यते जोगोलाकास्थानमेंपीडा
कोधतवधतपणों होय अधोवायकी प्रवर्तिआहीतरै होयनहीं
मलउतरै नही मूदोसूके गलोसूके शरीरकी कांतिकाली होय
सीतज्वर होय हियामें कूषिमें पसवाडा में यांसारा में पीडा होय हि
या में भोजन पचा पाछै पीडा घणी होय भोजन कसां हलकी होय
अरत्नूषाक सायला कडवार सां सूपीडा वधै येलक्षणजीमें होय
तीनें वायको गोलोकहिजे । अथपित्तकागोलाकी उत्पत्ति-
लिख्यते कडवो षादोतीबोउन्हूं यांरसां कासे वासूं मोधकाकरि
वासूं अतिमद्यकापीवासूं तावडाका वैठिवासूं अमिकासे वा
सूं आंबकावधिवासूं चोटकालागिवासूं रुधिरकाविगडवासूं
यांवसां सूपित्तको कोप होय है । अथपित्तकागोलाकोलक्ष
णलिख्यते ज्वर होय तिस होय शरीरमें पीडा होय सूल होय भो
जनपचतां यणों पसेव आये दह होय ब्रण होय गोलाकै हाथला
गतां पीड घणी होय येलक्षण होय तौ पित्तको गोलोजाणिजै ।
अथकफकागोलाकी उत्पत्तिलिख्य । इंटी वस्तकाषावासूं भा
री वस्तकाषावासूं चीकणी वस्तकाषावासूं वैगंरहवासूं दिन
कासोवासूं इतनी वसां सूपित्तको गोलो पैदा होय है अरये सर्व
कारण मिलै तदिस निपातको गोलो पैदा होय है अथकफका
गोलाकोलक्षणलिख्यते जीमें सीतज्वर होय शरीरमें पीडा हो
य मूदां सूं कडवो षादो वमन होय षासी होय भोजनमें अरुचि
होय शरीर भाखौ होय येलक्षणजीमें होय तीनें कफको गोलोक
हिजे ये सर्व वायपित्तकफकाजीमें होय तीनें संनिपातको गोलो
कहिजै । अथस्त्रीधर्मरूपजोरुधिरतां सूपंज्योजोगुल्म-

तीकोलक्षणलिख्यते योलोहीगुल्मस्त्रीकैहीहोयछै नवमांसही
नांपहलीस्त्रीकोकाचोगर्भपडै कुपथ्यभोजनांसूं प्रथमगर्भकारि
तुसमें अथवा पितुविनां तीस्त्रीकैचायहैसोलोहीकूंग्रहणकरि
गोलानेंपैदाकरैछै वेगोलामेंपीडघणीचालै वेमेंदाहहोय अर
पित्तकागोलाकासर्वलक्षणमिलैजांमें अरओसर्वजागांफिरै अं
गाविनांहीतींमेंसूलचालै वेंस्त्रीकापेटकागोलामेंगर्भकासर्वल
क्षणमिलै वेंनैरुधिरउपज्योगोलाकोरोगजाणिजे पणिवेंस्त्रीकै
दशओंमहीनोव्यतीतहोयतुके तदिगोलाकोवैद्यहैसौजननकरै
५ अथगुल्मरोगकोअसाध्यलक्षणलिख्यते जीमनुस्यकैगे
लौफिरैतौ अथवा नहींफिरैतौ अरपीडघणीचालै सरारमेंदा
हघणोंहोय पथरीकासीगांठिउंचाहोय बागाठिमननैविगाहि
नांषे सरारनैदुर्बलकरिदे अमिकाबलकोनांसकरिदे तांगोला
कारोगनैनिदोषकोजाणिजे योअसाध्यछै१ अथगोला
काऔरअसाध्यलक्षणलिख्यते गोलोक्रमसंवधै जीमेंसू
लचालै काछिवाकीसीनांईगाढोहोय सरारदुर्बलहोय भोजन
मेंरुचिजातीरहै कडबोषाटोवमनकरैजुरहोय तिसहोय तंद्रा
होय पीनसहोय अरअतीसारहोय हियाकै नाभिकै पगांके सो
जोहोय तिसघणीलागै येरीगावात्समनुस्यकैअसाध्यलक्षा
जाणिजे१ अथगोलाकाजननलिख्यते गरमइधमेंअ
रंडोल्याकोतेल अरहरडैकोचूर्णनांषि रोजीनांपीवैतौ जुला
बलागिकरिगोलोडूरिहोय१ अरतेलकामर्दनसूंभीगोलो
जाय अथवा साजी कूठजवषार केवडाकोयार यांकोचूर्णक
रिईमेंअरंडकोतेलमिलायपीवैतौचायकौगोलाजाय१ अथ

२१९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

पित्तकागोलाकोजतनलिथ्यते निसोतकाचूर्णकोसेवनकराजें अथवा त्रिफलाकोसेवनकराजें अथवा कपेलानें मिश्रीकैसाथि अथवा सहतकैसाथि दीजेंतौ पित्तकागोलोजाय १
अथवा कागोलाकाजतनसोकफकागोलाकाजाणिलीज्यो १
अथवा सेकीहींग पीपलामूलधणोंजीरो वच चव्य चित्रक पाठ कचूर अमलवेद संचरल्लण सांभरोल्लण सींधोल्लण जवषार साजी अनारदाणा हरडैकीछालि पौहकरमूल डांसखां जां ऊरूषकीजड येसर्वबराबरिले यांनैमिहींवांदि यांकैआदाकार सकीपुट ७ दे अरविजोराकारसकीपुट ७ दे पाछैदंकरा ईनैरो जीनालेतौ गोलानें आफ्रानें ववासीरनै संग्रहणीनै उदावर्तनै उदरकारोगनै उरूस्तंभनै उन्मादनै सूलकारोगनै यांसारंगोनै योहरिकरैछै इतिहिंवादिचूर्णम् अथवा साजीपासा ४ गुड मासा ४ यांनैमिलायरोजीनांपायतौगोलोजाय १ अथवा पलांसकोषार योहरिकोषार आंधीजाडकोषार आमलीकोषार आककोषार तिलांकोषार जवषार साजी यांनैमिहींवांदिदंकरा १ अथवा दंकरा गरमपाणीसूंलेतौ गोलानें सूलकारोगनैयो हरिकरैछै इतिस्त्राष्टकम् अथवा सांभरोल्लण सींधोल्लण रुचल्लण जवषार संचरल्लण सुहागो साजी येबराबरिले यांनै मिहींवांदि यांनैथोहरिकादूधमैदिन २ भिजोयराषे पाछैतावडै सुकावैपाछैयांनैआककापानामेंलपोदिमांटीकावासणमैमेलिगज पुटमैपकायले पाछैईमैसूंठि कालीभिरचि पीपलि त्रिफला अजवायण जीरो चित्रक यांनैवाषारांकीवरावरिले पाछैयांनैमिहींवांदिवांषारामैमिलावै पाछैईनैदंकरगरमपाणीसूं अथवागोमूत्रसूं

२२० अमृतसामर तथा प्रतापसागर तरंग ११

छेतो गोलानें सूलने अजीर्णनें सोजानें सर्वउदरकारोगनें मंदपि
नैं उदावर्तनें फीयानें पारोगानें यों दूर करै छै इति वज्रक्षारचूर्णम्

अथवा गवारकापाठाकी गिरि तीमें स्रंठि कांलीभिरवि पीप

लि सींधोलूण यानें मिहीं बांदि टंक २॥ वेंकैलगाय घृतकैसाथिरो
जीनां पायतौ गोलोफीयो दूरि होय १ अथवा गवारकापाठाकी
गिरिमण १ जीमें गुडटका २०० भरनांषे सहतटका १०० भरनांषे धा
वज्राका फूलसेर ३२ नांषे स्रंठिटका २॥ भिरचिटका २॥ पीपलिटका
तजटका २॥ पत्रजटका २॥ चवटका २॥ इलायचीटका २॥ कडूरटका
२॥ चित्रकटका २॥ नागकेसरिटका २॥ आउरुषकीजडटका २॥ अज
मोदटका २॥ जीरोटका २॥ देवदारुटका २॥ बौलीकी बकलटका २॥ अ
सगंधटका २॥ रास्नाटका २॥ वधायरोटका २॥ इंद्रजवटका २॥ यानें
मिहीं बांदि गवारकापाठांकार समें नांषे पाछें यांको येक जीवक
रिची कणावासणमें घालि दिन २॥ पृथ्वीमें गामिराषे पाछें ईनें बा
टिटका २॥ भरपीवैतौ गोलानें उदावर्तनें उदरका विकारनें वि
सूचिकानें ग्रधसीनें सासनें पासनें पांडुरोगनें सर्वबायकाविका
रनें यों दूर करै छै इति गुवारकापाठाको आसव येसर्वज
तनभावप्रकासमें छै १ अथवा सोरोटंक १॥ आदोरेक १॥
यानें रोजीनां पायतौ गोलोजाय १ अथवा सीपकी भस्मटका १॥
गुडमासा ४ रोजीनां पायतौ गोलोजाय १ इति सीपप्रयोग ०
अथवा लसणटका २॥ दूधमें पचावै पाछें यांकी पीर करै पाछें
ईं पीरनें रोजीनां पायतौ गोलोजाय १ अथवा अरंडकीजड
चित्रक स्रंठि पीपलामूल बायबिडंग सींधोलूण सेकी हांग यां
की कादोदेतौ गोलोजाय १ आफरो मूलजाय १ अथवा अजवा

२२१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

यलिमासां १५ जीरोदंक ५ धणोदंक ५ कालीमिरचिदंक ५ कुडाकी
छालिदंक ५ अजमोददंक ५ कालोजीरोदंक ५ सेकीहींगदंक ५
जवधारदंक ५ साजीदंक ५ पांचूरणदंक ५ निसोतदंक ५ दांखू
णीदंक १० कन्नूरदंक १० पौहकरमूलदंक १० वायविडंगदंक १०

अनारदाणांदंक १० हरडैकीछालिदंक १० चित्रकदंक १० अमल
वेददंक १० सूरिदंक १० यांसारानैमिहीवांठिविजोराकारसकीपु

ट १० दे पाछैदंक १ प्रमाणकीगोलीकरै गोली १ घृतकैसाथि से
जीनांषायतौ अथवा दूधकैसाथिलेतौ पित्तकागोलानैदूरिक

रै मद्यकैसाथिलेतौ वायकागोलानैदूरिकरै दसमूलकाकादा
कैसाथिलेतौ त्रिदोसकागोलानैदूरिकरै अरहियाकारोगनै सं

ग्रहणीनै सूलनै रुमिनै बवासीरनै यागोलीदूरिकरै ३ इतिकों
अथवा लवणभास्करचूर्णपाछैलिथोले

तौ कालेवासु गोलाकोरोगजाय १ अथवा तिलकोकाढोले
तौ गोलोजाय १ अथवा भाडंगी गुड घृत पीपलि तिल सूरि

मिरचि यांकोकाढोदेतौ गोलाकोरोगजाय १ अथवा पीपलि
भाडंगी पीपलामूल देवदारु कणगचकीजड तिलकोकाढोदेतौ

गोलाकोरोगजाय १ इतिफलदिकाथ अथवा मैणसिल ह
रिताल रूपमषी आंबला सार गंधक तामेसुर पारो धेवरावरि

ले प्रथमपारागंधकीकजलीकरै पाछैकजलीमेंयेओषधि मि
लाय पाछैपीपलिकाकाढाकरैसमेंबरलकरैदिन १ पाछैपौह

रिकादूधमेंदिन १ बरलकरै पाछैदंक १ सहतमेंले अथवा गो
मूत्रसूलेतौ गोला अरसूलकोरोगजाय १ इतिविद्याधररसः

अथवा पारो सोधीगंधक सेकीसुहांगो त्रिफला सूरि काली

मिरचि पीपलि सोधीहरताल सोधोसोंगीमोहरो तामेसुर सोध्या
जमालगोटां ८ येसर्ववरावरिले प्रथमपारागंधककीकजलीकरै
पाछैकजलीमेंयेऔषदिवांदिमिलावै पाछैईकेभांगराकारसकीपु
द ३ देरदिन ३ ताईबरलकरै पाछैईकीगोलीरती १ प्रमाणकीबां
धै पाछैगोली १ आदाकारसमैलेतौ गोलानेंडूरिकरैछै १ इतिशु
ल्लकुंठारसः येसात्राजतनबैद्यरहस्यमेंलिप्याछै अथ
वा हाथकीसीरछुडावैतौगोलाकासर्वरोगजाय १ अथवा सेकी
हींग अनारदाणा विडलूण सांधोलूण येवरावरिले यानेंविजो
राकारसमेंबरलकरै पाछैटंक २॥ पीचाकीदारूकैसाथिरोजीनां
लेतौवायकोगोलोजाय १ अथवा साजी कूठ जवषार केवडा
कोषार येवरावरिले यानेंमिहींवांदिटंक २॥ तेलकैसाथिपीवै
तौ वायकोगोलोजाय १ अथयोनिमेंसूलचालतीहोयनीं
कोजतनलिप्यतै त्रिफला निसोत दांलूणी दसमूल येसर्वजु
दाजुदाटका १ भरले पाछैयानें जवकूटककरि ईकोकाबोटंक
५ कोरोजीनांकरिछाणिले पाछैईकाटामें अरुंडकोतेलनांधि
पाछैईमेंघृतमिलाय दूधसूंपीवैतौ योनिकीसूलडूरिहोय इति
मिश्रकस्नेहः योजोगंतरमिणीमेंलिप्योछै अथवा अज
चायणिमेंमिहींवांदिटंक ५ लूणटंक १॥ गुडटंक ५ ईमेंमिलाय
छालिकैसाथिरोजीनांलेतौगोलोजाय भूषलागै मलमूत्र आ-
छातरेउतरै ओरुंदमेंलिप्योछै अथवा अजचायणि सेकीहीं
ग सांधोलूण जवषार संचरलूण हरडैकीछालि येवरावरिले
यानेंमिहींवांदिटंक २॥ पीचाकीदारूकैसाथि रोजीनांलेतौ गो
लोसूलडूरिहोय १ अथवा सेकीहींगभाग १२ सांधोलूणभाग २

२२३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

पीपलिभाग ३ पीपलमूलभाग ४ कंकोलभिरचिभाग ५ अजवा
यणभाग ६ हरडैकीछालिभाग ७ अनारदाणांभाग ८ आंबकीज
डकीवकलभाग ९ चित्रकभाग १० सूरिभाग ११ फिटकडीभाग १२
यांसारानेंभिहींबांढिटंक २॥ रोजीनांपाणीसूंलेतौ गोलानें अरु
चिनें तृदोगनें आफरानें बवासीरनें बायकासर्वविकारानें योचू
लंड्रिकरैछै १ इति हिंमुद्गार शनैचूर्णम् अथवा वच हरडै
कीछालि सेकीहींग सींधोल्लण अमलवेद जवषार अजवाय
ण यानें बराबरिले यानेंभिहींबांढिटंक २॥ गरमपाणीसूंलेतौ सू
लनें गोलानें दूरिकरैछै १ इति वचायेंचूर्णम् अथवा वमीहर
डै २५ जलसेर १५ मैपकावैजलमें मचतांये औषदिनां पै दालूणी
टका १५ भरनां पै चित्रकटका १५ मरनां पै पाछें ई कै मधुरा आंच
दे अरजलकोचौधौहसोरापै पाछें पाणीमें हरडै समेत गुड ट
का १५ भरनां पै पाछें औरु औठावै अर्धोरापै पाछें ई मै पीपलि
टका १॥ सूरिटका १॥ घृतटका ४॥ सहतटका ४॥ तजटका १॥ पत्रज
टका १॥ नागकेसरिटका १॥ इलायचीटका १॥ यांसारोंको एकजीव
करि अबल्लेहकरै पाछें टका १॥ भर रोजीनां पायतौ जुलावलागै
अरइतनारोगजाय गोलो संग्रहणीनें पांडुरोग सोजो विषमजु
र कोद बवासीर अरुचि फीयो तृदोग पेसारारोगजाय इति दं
तीहरि नक्की अथसंघदावसूंभीगोलोजाय अथवा व
डजंभीरीपकी २० तींकोरसलीजें घृतकांचीकणवासणमेंवै
मैयेनांषिजे सेकीहींगटका २ सींधोल्लणटका १॥ सूरिटका १॥ का
लीभिरचिटका १॥ संचरल्लणटका ४ अजवायणटका १॥ सिरस्यू
टका ९ यांसारो औषद्यानेंभिहींबांढि जंभीरीकारसमेंनांषिदिन २७

रूडीमैगाभिराषे पाछैदका १। भर रोजीनां पायतौ गोलानें फीयानें
विद्रधीनैं अशीलानें वायका कफका अतीसारनैं पसवांजकी सूल
नैं हियाकारोगनै नाभिका सूलनैं बंधकुष्टनैं जहरनैं उदरकारोग
नैं वायकफकारोगानें योद्दिरकरैछै इतिजंभीसिद्धाच येनन
नभावप्रकासमैलिष्योछै अथवा मदीकोषार कुडाकोषार
आककोषार सहजणांकोषार कल्यालीकोषार योहरीकोषा
र बोलकोषार छीलाकोषार वकायणकोषार आंधीजाडाको
षार कदंबकोषार अरदूसाकोषार सांभरोलूण येसर्ववरावरि
ले यांमैयांकाअनुमानमाफिकसेकी हांगनांषि पाछैईनैदंक ॥
गरमपाणीसूलेतौ गोलानें सूलनैं उदरकारोगनैं योद्दिरकरैछै
इतिनादेईक्षार येजोगसतकमैछै अथवा सौंफ कण
बकीजड तज दारूहलद पीपलि यांकीकाटोदे अरतिल गुडसं
ठिमिरचि सेकी हांग भाउंगी येसारीऔषदिकाटामेंनांषि औटा
यदेतौ लोहीकोलोस्त्रीधर्मपणीजातौरह्योहोयजनैं इरि करै १
अथवाजनवार सूरि कालीमिरचि पीपलि यानैंऔटायपीवै
तौ लोहीकोगोलोजाय १ अथवा पारोभाग १ बंगकीभस्यभाग
१ सोधीगंधकभाग ४ तामेसुरभाग ४ यांसारानें आककाडूधमें
दिन २ भरलकरै पाछैईकोगोलोकुरि सरावामैमेल्है पाछैईनैग
जपुटमैपकावै पाछैईनै ठंडोहुवांकाटै पाछैरती २ घृतकैसाथि
ईनैलेतौ गोलानें फीयानें उदरकारोगानें इरि करै इतिअंशे
स्वररसः मछलीकोमांस सूकीतरकारी दाल मीठाफल येगी
लावालोषायनहीं येसर्वसंग्रहमेंलिष्याछै इतिगुल्मरोगकी
उत्पत्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथयहतप्राहरोगकीउ

त्यक्तिसंक्षालितनल्लिख्यते यत्तु प्रहयेदोन्यं सरीरकाग्रं चै-
 जीमणां पसबाडा में तो यरुतर है छै हीया के नांचै १ अर बां बां पस
 बाडा में हीया के नांचै प्रह रह छै इने लोकि कमें फीयो कह छै सो लो
 हीने बहवा वाली नसां त्यां को सुष्य रिकारों छै अथ प्रह रोग की
 उत्पत्ति लक्षण लिख्यते मनुस्य है सो गरम वस्तु पाय अथ बां दही
 नें आदिलेर कफ काशी वस्तु धणी पाय ती कै ये दोन्यं कफ अर लो ही
 बधै तदि फीया नै बधावै तदि ओ फीयो बधो थको मंद जुरनें अर अ
 ग्नी का मंद पणानै करै अर कफ पित्त का जीं कै लक्षण होय सरीर
 को बल जातोर है सरीर पीलो होय जाय तीने फीयो कह जे औ फी
 यो चार प्रकार को छै बाय को फीयो १ पित्त को २ कफ को ३ लोही को ४
 अथ बाय का फीया को लक्षण लिख्यते पेट को नित्य अपरोर
 है नित्य उदावर्त्त रोगर है पेट में पीडर है वो करै ती बाय को फीया ज
 णिजे १ अथ पित्त का फीया को लक्षण लिख्यते जुरर है तिस
 लागे दाह होय मोह होय सरीर पीलो होय ये पित्त का फीया काल क्ष
 ण छै १ अथ कफ का फीया काल लक्षण लिख्यते पीड मंद होय फी
 यो भासो अर गाँठो होय सरीर भासो होय भोजन में अरुचि होय
 ये कफ का फीया काल क्षण छै १ अथ लोही का फीया को लक्षण
 लिख्यते सर्व इंद्रियां स्थूल हो जाय भ्रम होय मोह होय दाह होय
 सरीर की रंग और होय सरीर भासो होय उदर लाल होय ये लक्षण
 होय तो लोही को फीया जणिजे अर त्रिदोस को फीयो होय तो असा
 ध्य जणिजे अर ये ही लक्षण यरुत्तर रोग का जणिजे १ अथ फीया
 का जतन लिख्यते जब पार ऊटडी का दूध सूले तो फीया जाय १
 अथ बां सीं पाकी मस दही स्याय तो फीया जाय १ अथ बां पाप

लीटंक ११ दूधकैसाथिरोजीनांछेतौ फीयोजाय ३ अथवा आककापा
नांकीराषजीमेंलूणमिलायमट्टाकैसाथिपीवैतौ फीयोजाय ४
वासेकीहींग सूंठि काळीमिरनि पीपलि कूठ जबषार सींधोलूण ये
बरावरिले यानैमिहांपीसिबिजोराकारससूंलेतौ रोजीनांटंक २१ तौ
फीयोजाय अथवा लीलाकाषारमेंभेईपीपल्यानैटंक २१ रोजी
नांषायतौ फीयो गोलेजाय ७ अथवा संपकीभस्यमासा ४ जंभी
रीकारसकीलारषायतौ फीयोजाय ८ अथवा थांवांरुषकीसीरुड
डावैतौ फीयोजाय ९ अथवा जीवणांहाथकीसीरुडपैतौयठतज
य १० अथवा पकाआंबकारसमें सहतनांषिपीवैतौ फीयोजाय
११ अथवा अजवायण चिन्नक जबषार पीपलामूल दांतूणी
पीपलि येबरावरिले यानैमिहांवांटिटंक २१ मट्टाकैसाथि अथवा
दारूकैसाथिरोजीनांपीवैतौ फीयोजाय १२ येसर्वभावप्रकास
मेंलिख्योछै अथवा सींधोलूणटंक ५ जलमेंओढायरोजीनांपी
वैतौ फीयोजाय १३ येवैद्यरहस्यमेंछै अथवा जबषार बायवि
डंग पीपलि कणगचकीजड असलवेद येबरावरिले यांसूंदूणी
हरडैकीछालिले यानैमिहांवांटिगुडकैसाथिपाणीसूंलेतौ फीयो
जाय १२ अथवा पीपलि सूंठि दांतूणी येबरावरिले यांसूंदूणीहर
डैकीछालिले यानैमिहांवांटिगुडकैसाथिलेतौ फीयोजाय १४ अ
थवा बायविडंग इंदायणकीजड चिन्नक येबरावरिले यांसूंदूणी
देवदारूले सूंठितिगुणीले साधकीजड बायविडंग येबरावरिले
भिसोतचौगुणीले यानैमिहांवांटिटंक ११ गरमपाणीकैसाथिलेतौ
फीयोजाय १५ अथवा सहिजणांकीजड सींधोलूण चिन्नक पीप
लि यांकोकाटोकरिपीवैतौ फीयोजाय १६ अथवा भिलावा हर

इंकोछालि जीरोयेवरावरिले यानैमिहीचांरि योमेवरावरिकागुड
 मिलायें दंक ५० रोजीचांदिन ७ वायतौ फीयोजाय १७ अथवा लसपा
 पीपळामूल हरदैकीछालि येवरावरिले यानैमिहीचांरिदंक २॥ गो
 मूतसूलेतौ फीयोजाय १८ येचक्रदत्तमैलिष्णोछै अथवासे
 हीसकीनद हरदैकीछालि संदि येवरावरिले यानैमिहीचांरिदंक
 २॥ गोमूतकीसाथिलेतौ उदरकोरोग प्रमेह ववांसार कफकोरोग
 फीयो कोट येजाय १९ योजोगंतरंगिणीमैलिष्णोछै अथवा
 सांभरोलूण हलद राई येतीन्यूदकायेकेकभरिले छालिरका १००
 भरले चीकणावासणमें घालिदिन १५ सबै पाछै रोजीनांदिन २५ तौ
 ईदका ५॥ भरपावैतौ फीयोजाय २० इतितकसंधानम् योभांचप्र
 कासमेंछै अथवा रोहीसदका १०० भर ईमें कूटिले बारकाजड
 १४ शेर पाणीसेर १५ ईमें यादो त्यानें औटावै पाछै ई पाणीकोनौ
 थोहिसोआयरहै तदिवेनें उतारि छापिले पाछै ई पणभमें सेव ३॥
 बक्रको घृतनांघे भर ईमें वकरीको दूध १४ शेरनांघे संदिदंक २॥
 साटीकीजड दंक २॥ तुंबकदंक २॥ वायविडंगदंक २॥ जंबाउदंक
 २॥ पौहकरमूल दंक २॥ जांऊंरूषकीजडदंक २॥ वचदंक २॥ यां
 सारांनैमिहीचांरि घृतमें मधुरीआंचसूपकावै ये औषदिअरदू
 धवलियाय घृतमात्रआयरहै तदिवेनें छापिअमृतवाणमें घालि
 रावै पाछै ईदंक ३॥ भर प्यथकै साथिई घृतनें पायतौ इतनांसे
 गनै दूर करै फीयानै घीहोदरनें कृषिकीसूलनें पसबाडाकीसू
 कनें अरुचिनें बंधकृष्टनें पांडुरोगनें छईमें अतीसारनें विषम-
 जरनें पोडूभिकरैछै १ इतिमहाराहितकंघृतम् योचक्रदत्त
 मैलिष्णोछै अथवा निचक्रदका १०० भरले तीकोकादोकरै ईमें

कांजीफोपाणीटका २०० दहींकीमट्टोटक ४०० भर पीपलामूलटका।
 चव्यटका १। चित्रकटका १। सूंरिटका १। ताईसपवटका १। जववारट
 का १। सींथोल्हणटका १। दोनूंजीरोटका १। दोनूं हलदटका १। कालीमि
 रचिटका १। येमिहीवांरि चित्रककाढामेंनांषे ईमेंसेर ५१ घृतनांषे
 तदिपाणीउंगेरै सर्ववलिजायघृतमात्रआयरहै तदिईनेउतारिछा
 णि चोषाअमृतबाणमेंयालिराखे पाछेईकोसेवनकरैतौ फीयानें
 गोलीनें उदरनें आफ्राने पांडुरोगनें अरुचिनें विषमज्वरनें पेडू
 कासूलनें सोजानें मंदाग्निनें पांसारंगोगनेंयोदूरकरैछैवलनें
 बधावैछै इतिचित्रकाद्यंघृतम् योहंदमेंलिख्योछै अरुफीया
 काजोजतनछैसोहियरुत्तरोगकाजाणिलीज्यो अथवा जववार
 वायविडंग पीपलि कणगचकीजड यांकाकाढासूंयरुत्तफीयोये
 दोनूंजाय १ इतिफीयायरुत्तरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतन
 संपूर्णम् अथरुद्रोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते
 घणीगरमवस्तकाषावासूं घणीभारीवस्तकाषावासूं घणीषटा
 ईकाषावासूं घणीकसायलीवस्तकाषावासूं घणीतीषीवस्तकाषा
 वासूं घणाश्रमकाकरिवासूं घणीचोटकालागिवासूं घणागाढापि
 टवासूं घणीचिंताकाकरिवासूं घणामलमूत्रकारोकिंवासूं यांब
 स्तांसूंहियांकोरोगहोयछै सोयोरोगपांचप्रकारकोछै वायको १
 पित्तको २ कफको २ संनिपातको ४ रुमिको ५ अथरुद्रोगको
 सामान्यलक्षणलिख्यते अन्त्रकोषायोरसहसोप्रथमहियामेंजा
 य तदिबैरसनेंवायपित्तकफहैसोविगाडिहीयानेंघणोपीडिनक
 रें तीनैबैद्यहैसोह्रद्रोगकहैछै अथवायकाह्रद्रोगकोलक्षण
 लिख्यते हियामेंपीडफैलिजाय अरुहियामेंसुईकासाचभकाना

स्त्रिजाय हियामें जेरणो सो फिरे हियामें करोत की सी नाई फिरे हिया
 में पथरी की सी चोट लागे हियामें कुहाड़ा की सी चोट लागे येलक्षण
 होय तो बाय को हृद्रोग जाणिजे अथ पित्त का हृद्रोग को लक्षण
 एलिष्यते तिस घणी लागे दाह होय हियो दूषे कंठ मां हो संधुवो
 नीसरे मूर्छा आवे जी को सरीर सीतल हो जाय पसेव आवे मूठो सू
 कि जाय येलक्षण जी में हो प्रती नौ पित्त को हृद्रोग जाणिजे २ अथ
 कफ का हृद्रोग को लक्षण एलिष्यते हियो भारो होय मुषमें संक
 फणों नीसरे भोजन सूरुचि जा तोर है सरीर जकड़ बंध हो जाय मू
 ठो मां होय मंदाभि होय हियामें कफ जा मि जाय येलक्षण होय त
 दि जाणिजे कफ को हृद्रोग छै ३ ये सर्व लक्षण मिलै तदि जाणिजे सनि
 पात को हृद्रोग छै ३ अथ कृमि का हृद्रोग को लक्षण एलिष्यते
 आंतां में कृमि होय पाछे कुपथ्य को कर बावालो मसुष्य तिल दूध गु
 ड में आदिले रमा ठावस्त पाय तदि वें काम र्म स्थाता में पीड होय हि
 यो दूषे हियो सिद्धि जाय तदि वें को आत्मा पणों दुष पावे ये जी में लक्ष
 ण होय ती में कृमि को हृद्रोग जाणिजे ५ वें में उल्टे दन हीय थूक
 णों हियामें सुल चाले भोजन में अरुचि होय नेत्र काला होय जाय
 सरीर सुसि जाय ये कृमि हृद्रोग कलक्षण जाणिजे अथ हृद्रोग
 का उषं द्रव लिष्यते सर्व इंद्रियां को ग्यां न जा तोर है सरीर में पीडा
 होय भौलि आवे सरीर सुसि जाय १ अथ हृद्रोग का जनन लि
 ष्यते बड़े डाका वृक्ष की वकल को चूर्ण दंक ३॥ रेजीनां दुध के साथि
 अथवा घृत के साथि अथवा गुड का पाणी में साथि पीवे तो हृद्रोग में
 जीर्ण जरने रक्त पित्त नै दूरि करे छै १ अथवा हरडै की ठालि वच
 राक्षा पापलि सूंठि कचूर पौह कर मूल ये सर्व वरा वारले यां नै मि

हींवांढिटंक २॥ जलसूंछेतौ तूद्रोग दूरि होय २ अथवा हिरणका
 सींगको पुटपाक करे अरगडका घृतकै साथि धायतौ तूद्रोगनें सू
 लमात्रनें दूरिकरे ३ इति हिरणकासींगको पुटपाक अब बाष
 रेंटी गंगेरणि की छालि कहवा रूष की बकल महलोठी येचोष दिव
 रावरिले यांनै मिहींवांढिटंक ४ यांको रोजीनां काटोलेतौ तूद्रोगनें
 वातरक्तनें रक्तपित्तनें दूरिकरे छै ४ येसर्वभावप्रकासमें लिख्यो
 छै अथवा कूट वायविडंग यांनै मिहींवांढिटंक ५ गोमूत्रकै सा
 थिलेतौ हिया कांठ मिजाय पड़े तूद्रोग दूरि होय ५ अथवा गंगे
 रणि की जड अरक कहवा की बकल पौहकर मूल यांनै मिहींवांढिटं
 क ६ दूधकै साथि अथवा सहतकै साथि रोजीनां लेतौ तूद्रोगनें सा
 सषासनं छर्दिनें हिचकीनें दूरिकरे ६ अथवा हरडै की छालि वच
 रास्ना पीपलि सूंठि कचूर पौहकर मूल यांको चूर्णलेतौ तूद्रोग जा
 य ७ इति हरीतक्यादिचूर्णम् अथवा दसंमूलका कांठामें अरं
 डकोतेल अरसांभरोल्लण नांषिपीवैतौ तूद्रोग जाय ८ अथवा
 पौहकर मूल सूंठि कचूर हरडै की छालि जवषार येवरावरिले यां
 कोकाटोकरि ईमें घृतनांषिपीवैतौ वायको तूद्रोग जाय ९ येसर्व
 वैद्यरहस्यमें छै अथवा सेकीहांग वच वायविडंग सूंठि पीपलि
 हरडै की छालि चित्रक जवषार संचरल्लण पौहकर मूल येसर्ववरा
 वरिले यांनै मिहींवांढिटंक १० गरमजलकै साथिलेतौ तूद्रोग जा
 य १० योजांगरत्नावलीमें छै अथवा पौहकर मूलनें मिहींवां
 ढिटंक ११ सहतकै साथिलेतौ तूद्रोगनें सासनं आसनं गजरोग
 नें हिचकीनें दूरिकरे छै ११ अथवा सेकीहांग सूंठि चित्रक
 कूट जवषार हरडै की छालि वच वायविडंग संचरल्लण पाशे पौ

२३१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ११

इकरमूल येवरावरिले यांनैमिहींवांदिदं१ जलकैसाथिलेतौ ल
शेगनै अजीर्णनै विस्त्रिकानै दूरिकरैछै १२ योरसप्रदीप्रमेंछै

इतिहृद्रोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीम
हाराजाधिराजमहाराजराजराजेंदश्रीसवाईप्रतापसिंहजी
विरचितेअमृतसागरनामग्रंथे उदावर्त्त अनाह गुल्म अरु
तश्चिह्न हृद्रोग यांसर्वरोगाकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणज
तननिरूपणनामएकादशःस्तरंगःसंपूर्णम् ११ अथमू

त्ररुद्धरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतमलिष्यते वेदकाकरि वा
सूं तीषीवस्तकाषावासूं लूषाअन्नकाषावासूं मद्यकाषीवासूं
नांविवासूं दुष्टयोडाकावैदिवसूं नदीकाजिनांवरंक्रामांसका
षावासूं लूषाअन्नकाषावासूं भोजनरूपरिभोजनकस्यांसूं अ
जीर्णसूं यांकारणसूं मनुष्यकै मूत्ररुद्धपैदा होयछै सोआठप्र
कारकोछै १ वायुको २ पित्तको ३ कफको ४ सन्निपातको ५ चोट
अलागिवाको ६ मलकारोकिवाको ७ शुक्रकारोकिवाको ८ प

थरीको ९ अथमूत्ररुद्धरोगकोसामान्यलक्षणलिष्यते
कोपकूपातिहुत्रोजोडापित्तकफआपापकाकारणसूं पेडू
में पातिहोय मूत्रकामारगूनै घणीपीडाकरै अरबडाकष्टसूं
बीसचालिनांरिमूंते मूत्रकोबंधतौ कमहोय अरमूत्रतां पीडघ
णीहोय तांनैमूत्ररुद्धकहिजे अथवायुका मूत्ररुद्धकोलक्ष
णलिष्यते जांघांकीअरपेडूकासंधिमें अरपेडूमें अरइदिमें पी
डघणीहोय अरथोडोथोडोवारंवारमूंते येलक्षणजीमेंहोयतीनै
वायुकोमूत्ररुद्धकहिजे १ अथपित्तकोमूत्ररुद्धकोलक्षणलि
ष्यते पालीलाठमूत्रऊतरै अरपलीगरममूत्रऊतरै अरबडाकष्ट

सं वासदेरसूतऊतरे तानैपित्तकोमूत्ररुद्धकहिजे २ अथकफ
 का मूत्ररुद्धकोलक्षणलिख्यते पेडूअरलिंगयेदोन्युभाखाहोय
 अरयांदोन्याकैसोजोहोजाय अरमूत्रमेंजाग्यायें अरमूत्रकष्ट
 संऊतरे येलक्षणहोयतानैकफकोमूत्ररुद्धकहिजे ३ अथयेसर्व
 लक्षणजीमेंहोयतानैसन्निपातकोमूत्ररुद्धकहिजे ४ अथचो
 टलागिवांकोमूत्ररुद्धकोलक्षणलिख्यते मूत्रनेबहवावांसी
 जोनसांत्याकैकहांतरेकीचोलागे तदिबेकोमूत्ररुद्धकिजाय अरवा
 यका मूत्ररुद्धकासर्वलक्षणमिलैसोईमूत्ररुद्धसंभुष्यमरि
 जाय ५ अथमलकारोकिवाकोमूत्ररुद्धकोलक्षणलिख्यते
 जोपुरबमलकीवाधानैरोकैतांकैवायंकुपितहोय अरपेडूमेंअरपे
 टमें आपरोकरै अरबेंजांगांपीढंघणीचालै अरमूत्रघणाकष्टसं
 उतरे येलक्षणजीमेंहोय तानैमलकारोकिवाकोमूत्ररुद्धकहि
 जे ६ अथशुक्रकारोकिवाकोमूत्ररुद्धकोलक्षणलिख्यते
 शुक्रकारोकिवासं मूत्रकोमारगरुद्धकिजाय तदिपुरसकै पेडूमें ई
 दीमें सुलचालै वार्यनेलीयांवडाकष्टसंसूतै ईनैशुक्रकारोकिवाको
 मूत्ररुद्धकहिजे ७ अथपथरीसूतपज्योजोमूत्ररुद्धतीको
 लक्षणलिख्यते पथरीअरशर्करानामरेत येदोन्युपोतामैरहैछै
 यांदोन्यासंमूत्ररुद्धहोयछै अरवापथरीहैसोपित्तकरिकैपची
 थकी वायकरिकैसूक्ष्मकीअरकफसंतहीमिली वाहीपथरीरे
 तरूपहोय मूत्रकामार्गहोयनीकलैमूत्रनैरौकिकरि अथशर्करा
 काउपडवल्लिख्यतं हीयामेंपीडाहोयभरारकांपै सुलचालै रूषि
 मेंमंदाभिहोजाय वेंसेतीमूर्छाहांय अरमूत्ररुद्धहोय येलक्षण
 होयतदिमनुष्यमरिजाय ८ अथमूत्ररुद्धरोगकाजनन

लिख्यते गोषरू किरमालाकीगिरि डाभकीजड कांसकीजड जवा
सौ आंवला पाषाणभेद हरखेकीछालि येवरावरिले यानैजौकूटक
रिदंक ३॥ कोकादोकरि कादामेंसहतमिलायरोजीनांलेतौ मूत्ररुछ
अरपथरीकोअसाध्यभीरोगजाय १ इतिगोक्षरादिक्वाथ अ
थवा इलायची पाषाणभेद सिलाजीत पीपलि गोषरू तेवरसी
काबीज सांघोलेण केसरी येसारीओषदिबरावरिले यानैमिहींवां
दिदंक ३॥ जवावलाकापाणीकैसाथि अथवा पुराणागुडकापाणीकै
साथिरोजीनांलेतौमूत्ररुछजाय २ अथवा दूधमेंपुराणागुडनां
षि अथवा मिश्रीनाषिकुंगरमसोधापिररोजीनांपीवैतौमूत्ररु
छजाय ४ अथवा चंदकालागिवास्तुपज्योजोमूत्ररुछतीको
जतनलि ० आंवलांकारसमेंसहतनांषिपीवै अथवा सांठाकार
समेंसहतनांषिपीवैतौमूत्ररुछजाय ५ अथमलकाशोकिवा
कामूत्ररुछकीजतनलिख्यते गोषरूकोकादोकरितीमेंजवा
पारनांषिपीवैतौमूत्ररुछजाय १ अथवा त्रिफलादंक ५
बोरकीजडकीबकलदंक ५ यांदोन्यांनैरात्रिमेंभेय परभातिवेषा
लीहींमेंवांदि येमेंसांधीखणनांषिपीवैतौमूत्ररुछजाय ७ अथ
वाजनषारमासा ५ मिश्रीमासा ५ यानैवांदिजलसूंलेतौमूत्ररु
छनिअैजाय ८ अथवा मिनकादाषदंक ५ मिश्रीदंक १० दहांकोम
होदंक १० येतीनूंमिलायपीवैतौमूत्ररुछजाय ९ अथवा गोषरू
कीजडसमेतईकोकादोकरै तीमेंसहतमिथीनांषिपीवैतौमूत्ररु
छजाय १० येसर्वजतनभावप्रकासमेंलिखाछै अथवा गिल
वै संहि आंवला असगंध गोषरू येवरावरिले यानैजौकूटकरिदं
क ३॥ रोजीनांईकोकादोपीवैतौमूत्ररुछजाय ११ अथवा पक्का

२३४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १२

नींबूकारसनें गडकाकचाइधमें नांषिमनमें आवै जितोरोजीनां पी
वैतौ ल्लाकीजोबीकादोसतें उपज्यो जोरोगतीनें अरदाहनें प्रमेह
नें मूत्रछुनें योइरकरैछै ११ अथवा हरडैकीछालि गोषरू कि
रमालाकीगिरि पाषाणभेद धमासो अरडूसो येसर्ववरावरिले
यांनैजो कूटकरि टंक ५ कोकादो करितीमें सहतनांषि रोजीनां पीवै
तौ दाहसंयुक्त मूत्रछुनें बंधकुष्टनें योइरकरैछै १२ इतिहसति
क्यादिक्वाथ अथलोहाकष्टसंमृततो होयती कोजतनलि
ष्यते डाभकीजड कांसकीजड दोबकीजड सरकनांकीजड सांघ
कीजड यांकोकादोदेतौलोहामृततोआछोहोय १ इतिचरणपं
चकं अथवा पक्कपेठाकादसमें भित्रीमिलायपीवैतौ मूत्रछुजां
य १४ इतिकूष्मांडरसः अथवा कत्यालीकारसमें सहतनांषि
पीवैतौ मूत्रछुजाय १५ अथवा गोषरूटका २८ भर ईमें आठ
गुणोपाणीनांषितीकोआधोपाणीरावे पाछै ईनेछाणिईपाणी
में गुगलटका ७ भरनांषे पाछै ईनेओरूपकावै पाछै ईमें संहि
टका १ कालीभिरचिटका १ पीपलिटका १ हरडैकीछालिटका १
बहेडाकीछालिटका १ आंवलाटका १ नागरमोथोटका १ येमि
हांवांदिईगुगलमेंनांषे पाछै यांको एकजीवकरिमासा ५ रोजीनां
जलस्रलेतौ मूत्रछुनें मूत्रघातनें प्रमेहनें प्रदरनें शतरक्तनें
शुक्रकादोसनें यांरोगांनैयोइरकरैछै १६ इतिगोधुरादिगूण
लम् अथवा जीरोटका १ गुडटका १ रोजीनांघायनो मूत्रछु-
छुजाय १७ अथवा जवधारटंकरा गडकीछालिसंपीवैतौ मूत्र
छुनें पथरी येदोन्यूरोगजाय १८ इतिजवधारतक्रजोगः
अथवा पारोभाग १ सोधीगंधकभाग ४ यांदोन्यांकाकजलीकरै

पाछैयाकजलीबडाकौडामेंभरै पाछैसुहागोपाणीमेंवांरि कौंडा
 कैमूंदैलगावै पाछैबाकौडानैकूळडीमेंमेलिगजपुरमेंफूकिदेपा
 छैसांगसीतलहुवांवैकुल्हडीमांहींसूवैकौडानैकोटिमिहांवांरिले
 पाछैरतीच्यांरा ४ भरले अरईमेंभिरचि २१ मिहांवांरिमिलायघृत
 कैसाथिषायतौमूत्ररुछजाय १९ इतिलघुलोकेसुररस ये
 सर्वजतनवेद्यरहस्यमेलिष्याछै अथवा निरुहवस्ति काक
 रिवासं उत्तर वस्ति का करि वासं मूत्ररुछजाय २१ अथवा सता
 वरी कांसकीजड डामकीजड गोषरू विदाराकंद सालरकीजड
 किसोखा यांकोकाढोकरितीमें सहतमिश्रानांषिपावैतौ मूत्ररु
 छजाय २२ योचक्रदत्तमेंछै अथवा तेवरसीकाबीज महुवो
 वरुंहलद यांकोकाढोकरिपीवैतौपित्तकोमूत्ररुछजाय २३ अ
 थवा केलिकारसमेंगोमूत्रनांषिपावैतौकफकोमूत्ररुछजाय २४
 अथवा इलायचीमिहांवांरिजलसंलेतौकफकोमूत्ररुछजाय
 २५ अथवा मूंगांकोचूर्णदेक १॥ चांवलांकापाणीसंलेतौकफ
 कोमूत्ररुछजाय २६ अथवा गोषरू सूरि यांकोकाढोलेतौक
 फकोमूत्ररुछजाय २७ योचंद्रमेंछै अथवा गडीकट्याली
 पाठ महलौदी महुवो इंद्रजव यांकोकाढोलेतौसन्निपातकोमू
 त्ररुछजाय २८ अथवा शक्रकारोकिवाकोमूत्ररुछलिष्यते
 सिलाजीसहतमेंमिलायषायतौशुक्रकारोकिवाकोमूत्ररुछ
 जाय २९ योचक्रदत्तमेंछै अथवा उत्तमस्त्रीसंसंगकरैतौयो
 मूत्ररुछजाय ३० अथवा परैटीकीजडकोकाढोलेतौसंपूर्णमूत्र
 रुछजाय ३१ अथवा गोषरूकोपंचागटका १०० भरलेतीनैकू
 टिआडगुणांपाणीमेंओटावै तांकोचतुर्थीसरहै तदिवेनैछा

एलि पाछेवेमैं भित्रीदका ५० भरकीचासणीकरै अबलेहकीसीतीमैं
येथ्रीषदिनांषै स्तंडिका २। पीपलिकका २। इलायचीदका २। जवधार
दका २। केसरिकका २। कहवारूपकीबकलदका २। तेवरसीकाबीजद
का २। बंसलोचनदका ८। भर यांसारीथ्रीबेद्यानैमिहींचांदि ईमैना
षैपाछेदका १। भर रोजीनांषायती मूत्रछछुनें दाहनें बंधकुछनें प
थरानें लोहाकामूतवानें मधुप्रमेहनें योइरकरैछै ३२ इति
शबलेह येसर्वजतनसर्वसंग्रहहोछै इतिमूत्रछछुकीउत्प
त्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथमूत्राघातरोगकीउत्पत्तिल
क्षणजतनैलिख्यतेमनुप्रदेकरिकेंआसंकाकरैछै मूत्रछछुअ
रमूत्राघातमैंभेदकाई सोलिषूंछूं मूत्रछछुमेंमूततांकटतांषण
अरमूतकोबंधथोडी अरमूत्राघातमैंमूत्रकोबंधतोघणोअर
मूततांपीडथोडीभीभेदछै अथमूत्राघातकीउत्पत्तिलक्षण
लिख्यते कुपथ्यकरिकेंकोपकूप्राप्तिहुबोजोगायपित्तकफलांकारि
केंमूत्राघातहोयछै सोमूत्राघाततेराप्रकारकोछै १३ वातकुंडलि
का १ अष्टीला २ वातवस्ति ३ मूत्रातीत ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्संग ६
मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रंथि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णवात १० मूत्रसाद ११
विडविघात १२ वस्तिकुंडलि १३ अथवातकुंडलिककोलक्ष
गलिख्यते लपीवस्तकाषावासं अरमूत्रशुक्रकाधारवासं वा
यहैसोपेडूमेंजायपीडाकरै मूत्रकीनसांमेंजाय विचरतोथकोकु
पितहोजाय तदिकफहैसोमूत्रकाछेदनेंरोकै तदिवायहैसोइं
द्रीकासुषमेंकुंडलकैआकारहोय ऊंठेरहै तदिपुरषहैसोथोडी
थोडीसूतें अरमूततांपीडघणीहोय येलक्षणजामैंहोय तीनै
वातकुंडलिकारोगकाहजे सोअसाध्यछै ईरोगवालोपुरषामि

अथ अक्षीलाकोलक्षणलिख्यते पेड़में आफरो होय गुदाफोप
 वनचलेनहीं गुदामें पवनकी गांठि भाठासिरासी होजाय ऊंठे पीड़
 घली होय अरओपवनमलमूत्रनें रोकि देयेजीमें लक्षण होयनी
 नै अक्षीलरोग कहिजे २ अथ यातवस्ति कोलक्षणलिख्यते ॥
 जो पुरुष मूत्रकारोगनें रोके तीकें पवनहै सो पेड़में जाय मूतकीनसां
 का मूंदानें रोकि दे मूत उतरि वादेनहीं पेड़में अरकूषिमें पीड़ा करे
 वेनें यातवस्तिरोग कहिजे योरोग कष्टकारी छै ३ अथ मूत्राजी
 तरोग कोलक्षणलिख्यते मूतनें घणीवार रोके अरवेगदेर मू
 चकरेनहीं तदि पुरसके मूत मंद उतरै इने मूत्राजी तरोग कहिजे
 ४ अथ मूत्रजठररोग कोलक्षणलिख्यते जो पुरुष मूत्रकावे
 गनें रोके तीकें गुदाको अपान पवनहै सो उदरनें पवनसंभरे ना
 सिके नीचे आफरो करे घणी पीड़ करे तानें मूत्रजठररोग कहिजे
 ५ अथ मूत्रोत्संग कोलक्षणलिख्यते पेड़के मांहि अथवा सिं
 गकीनसांमें आयोजो मूत तीनें करेनहीं तदि वे पुरसके मूत्र द्वारा
 थोडो थोडो लोही मूते पीड़ानें लियो अथवा नहीं पीड़ानें लियो ई
 नें मूत्रोत्संगरोग कहिजे ६ अथ मूत्रक्षय कोलक्षणलिख्यते
 जो पुरसके घेद कुरि कैं सरीसृखो पीड़ जाय तोका पेड़में रहतौ
 जो वायपित्तकफसों मूत्रका नासनै करे छै पीड़ा अरदाह संयुक्त
 तीनें मूत्रक्षयरोग कहिजे ७ अथ मूत्रग्रंथिरोग कोलक्षणलि
 पेड़के मांहि गोल अरस्थिर अरछोटी आंचला प्रमाण निपटगांठी
 वायकी गांठि अकस्मात्तउपजि आवै तीनें मूत्रग्रंथिरोग कहिजे ८
 अथ मूत्रशुक्ररोग कोलक्षणलिख्यते मूत्रको वेगला गिरत्यो हो
 य अरमै शुन करि वानें स्त्रीक नै जाय तदि वैकै वायहै सो शुक्रनें

स्थानसंभृष्टकरै मूत्रकैपहली अथवा मूत्रकैपाछेनांघै आरणा
 छाशकीराषकापाणीसिरासो तीनैमूत्रशुक्ररोगकहिजे ९ अथ
 उष्णवातरोगकोलक्षणलिख्यते स्त्रीसंगसेती भेदसेती ताव
 डाकापडिवासेती पुरसकैपेडूमेंरहतोंजोवायपित्तसो पेडूमें इ
 द्रीनें गुदानें दग्धकरताथकाहलदसिरासोमूत्रै अथवा लोही-
 लियांबडाकष्टसंमूत्रै तीनैउष्णवातरोगकहिजे १० अथमूत्रसा
 दरोगकोलक्षणलिख्यते पुरसकैकुपथ्यकरिकें पेडूमेंरहतोंजो
 पवनसोपित्तनेंअरक्कफनेंविभाडे तदिवैकैमूत्रनिपटकष्टसंज्ञ
 तरै पीछो अथवा लाल अरसुपेदउतरै निपटजाडोउतरै अर
 गरमउतरै गोरौचनसिरासो संषसिरासो कैलोहीसिरासो कै
 चूनासिरासो थोडोउतरै सरीरकोवर्णसूकिजाय ईनेंमूत्रसाद
 रोगकहिजे ११ अथविडघातरोगकोलक्षणलिख्यते घणो
 लूषोअभ्रषातोजोपुरषसोदूवलोहुद्योथको मलनेंलीयांधकां
 मूत्रै वेंकामूत्रमेंमलकीसीदूरगंधआवै अरघणाकष्टसंमूत्रै
 तीनैविडघातरोगकहिजे १२ अथवस्तिकुंडलरोगकोलक्ष-
 णलिख्यते घणाउतावलादोडिवासूं लंघनकाकरिवासूं घणा
 भेदसूं पेडूमेंकहींतरैकीचोटलागिवासूं पेडूमेंगोलगांठिपडि
 जाय तदिवैठेपीडहोय ओगांठिवडीवडीथकीहालेनहांगर्भकी
 सीनांईरहैवैठेसूलचालै पुरकें वेठेदाहघणोहोय वेंगाठिनैहा
 थसूंपीडैतदिमूत्रकीबूंदउतरै अरघणीपीडैतदिमूत्रकीधार
 उतरै अरपीडनिपटघणाचालै शस्त्रकीसीचोटलागीसिरामी
 ईनेंवस्तिकुंडलरोगकहिजे यारोगअसाध्यछै ईरांगवालोमारजा
 य १३ अथमूत्राघातरोगकोजतर्नालिख्यते नरसरलकीजड

डाभकीजड कांसकीजड सांघकीजड षरेंटीकीजड यांकोकाढोक
 रें दंडोकीरितीमें सहतनांषिपीवैतौमूत्राघातरोगजाय १ अथवा
 कपूरनेजलसूभिहांवांटे अरमिहांवरुनैवैकोलेपकरिवैकीवाती
 करै पाछेवैवातीनेइंदोमेंमेलेतौमूत्राघातकोरोगजाय २ अथवा
 धणै गोषरू यांदोन्यांकोकाढोकरिईकाढाकारसमेंघृतपकाय-
 योघृतपायतौ मूत्राघात मूत्ररुद्ध अरशुककोदोष येतीन्युंजाय
 ३ इतिधान्यगोक्षुरकोघृत अरजितनाजतनमूत्ररुद्ध अरप
 थरीरोगकाछे सोजितनांमूत्राघातकाजाणिलो ज्यो ४ योभा
 वप्रकासमेंलिख्योछे अथवा तेवरसीकाबीजटंक ५ धणैटंक
 क ५ यांनैरातिनेभयपाछेवैहीपाणीमें परभातिवांटेछाणि सीं
 धोलूणटंक एकनांषिपीवैतौमूत्राघातजाय ५ अथवा पाहल
 वृक्षकोबारटंक ॥ संचरत्नूणटंक १॥ येदोन्यूसुराकैसाधिपीवै
 तौमूत्राघातजाय ६ अथवा पीवाकीदारूमेंषादिदाजुंकोरस
 नांषि अरवैमेंइलायचीनांषिपीवैतौमूत्राघातरोगजाय ७ यो
 वृंदमेंलिख्योछे अथवा सीलाजीतकोसेवनकरैतौमूत्राघा
 तजाय ८ अथवा कौंछीकाबीजटंक ५ पीपलिटंक १ तालमषा
 णटंक १ मिश्रीटंक १० मिनकादाषटंक १० यांनैमिहांवांटेगर
 मडूधमेंसहतघृतपीवैतौशुककारोकिवांकोमूत्राघातजाय ९
 अरइहप्रयोगबंध्याकैपुत्रउपजावावालोछे येसर्वसंग्रह
 मेंलिख्योछे अथवा चिबक ॥ गौरीसरटंक ५ षरेंटीकीटंक १०
 दषअधपाव ३ इंद्रायणकीजडटंक ५ पीपलिटंक ५ त्रिफला
 टंक १० महुवोटंक १० बडाआंवलाटंक १०० पाणीसेर १६ मेंयां
 कोकाढोकरै पाछेयांकोचतुर्थीसआयरहै तदिईनैउतारिछा

२४० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १२

शिले पाछेईकारामें घृतसेर १४ नांषिपकावें तदिऔषदिअरपा
लीचलिजाय घृतमात्रआयरहे तदिईनेछाशिले पाछेईमेंबंसलो
चनअधपाव १५ नांषे पाछेरोजीनांअधपाव १६ शायतौ सर्वप्रका
रकावीर्यकादोसनेयो घृतद्विरकरैछे अरस्त्रीकैगर्भनैकरैछे अर
मूत्राघातनै प्रदरकारोगनै जोनिकादोसनें मूत्ररुछुनें योसर्वरोगां
नैद्वारकरैछे १० इतिचित्रकाद्यंघृतम् योचरकमैलिष्याछे
अथवा त्रिफलांकोकादोकरितीमैगुडदूधनांषिपीवैतौमूत्राघा
तकोरोगजाय ११ अथवा पादल अरल नांषकीछालि हलद गो
बरू पलारकीवकल येबरावरिले यांकोकादोकरितीमैगुडनां
षिपीवैतौमूत्राघातरोगजाय १२ अथवा सुंदरअरचतुरस्त्रीसंभे
शुनकरैतौमूत्राघातजाय १३ येसर्वआत्रेयमैलिष्याछे इतिमू
त्राघात रोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथमूत्ररो
धरोगकोजतनलिष्यते योजतनमूत्ररुछु मूत्राघातकाछेसो
हाईकांजाशिलीज्यो क्युंविसेषछेसौलिषुंछुं काकडाकाबीज
त्रिफला सांधोत्पूष यांनैबरावरिले पाछेयांनैदंक ५ मिहींवांदि
छाशि गरमपाणीसूंपीवैतौमूत्रारोधजाय १४ अथवातिलांका
काकडानेंदाधकरितींकोषारकादि औषारदंक २॥ दहीसहतकी
साथिलेतौमूत्रारोधरोगजाय २ अथमूतनिप्रदगरमउतरे
तींकोजतनलिष्यते चंबेलीकीजडनैवकरीकादूधसूंवांदिपी
वैतौयोरोगजाय ३ अथवा कमलकीजडनैगोमूतसूंवांदि येमै
तिलमिलायपीवैतौमूत्ररोधजाय ४ इतिमूत्ररोधकाकाजतन
संपूर्णम् येआत्रेयमैलिष्याछे अथअस्मरारोगकीउत्प
त्तिनक्षत्रजतनलिष्यते अस्मरानेंलौकिकमैपथराकहैछे

सोपथरीरोगचारि ४ प्रकारको छै वायको १ पित्तको २ कफको ३
वायकारोकिवाको ४ यांच्यास्त्रामैक फमित्यौछै येज मरूप छै अ
थपथरीकी उत्पत्तिकहै छै पेडूमें रहतो जो पचन सो पेडू का वीर्य
नें पेडू का मूत्र नें पेडू का पित्त नें पेडू का कफ नें सुकाय करिके पथ
रीनें क्रमसे तीउ पजाय देछै अठै दृष्टांत दीजे छै जैसे गऊ का पित्ता
में गोरोचन बधि जाय तैसें पुरस के पथरी पै दा होय अथ पथरी
को पूर्व रूप लिखते पथरी को रोग सन्निपात सूं पै दा होय छै प
थरी वाला का मूत्र में बस्तब करा की सी गंध आये पेडू में आफ्रो हो
य पेडू में पीठ घणी होय अर मूत्र बडा क ह सुई तरै नुर होय भी
जन में अरु चिहांय वं पथरी का पूर्व रूप कालक्षण छै अथ पथ
री रोग को सामान्य लक्षण लिखते नाभि में मूत्र की नसां मै पे
डू में मांघा मै आंघे पीठा पणी होय मूत्र की धार बंधी येक पडेन ही
मूत्र को मार्ग रुकि जाय अर बा पथरी मूत्र का मार्ग ने छोड़ि दे तादि
इ पुरस के सुषुप्त जै मूत्र आछी तरै पालो उतरै अर वाको पकुं प्रा
प्ति होय तदि लोही नैंलीयां बडी पीठानें लीयां मूत्रै अथ जी में
वाय घणी होय इसि पथरी को लक्षण लिखते जी में मूत्र तां पा
ठ घणी होय दांतां नैं चावै मूत्र तां का पणला गि जाय मूत्र तां इंड्री
में पीठ होय नाभि में पीठ होय मूत्र तां सुकारी ऊठै मूत्र तां मल क
रिदे मूत्र की बूंद बूंद उतरै पथरी को रंग कालो होय अर पथरी
के कांटा सा होय बेल क्षण होय जी नैं वाय की पथरी को रोग कहि
जै १ अथ पित्त की पथरी को लक्षण लिखते पेडूं अश्विसरी
सो बलैं जाशिजे राधिसरी सो पकिंगयो छै अर पथरी विदाम का
छोड़ा सिरीसी होय अर पीठी होय लाल होय सुपेदा ईने लीयां

ये लक्षण होय तनिं पित्त की पथरी कहिजे २ अथ कफ की पथरी
 को लक्षण लिख्यते पेडू में पीड घणी होय पेडू सीतल होय अरमासों
 होय अरवे की पथरी चाकणी गिल गिली होय अरसु पेद होय अर
 कूकडा का अंडा की वरावरि हांय ये जी में लक्षण होय तनिं कफ की प
 थरी कहिजे ३ अथ शुक्र कारो कि वासूं उपजी जो पथरी तां को
 लक्षण लिख्यते जो बडो पुर पती कै मैथुन करि वाकी इच्छा होय अ
 र ओ शुक्र नै रां कै कहां तरे जा बादे नहां तीं कै शुक्र की पथरी पेदा हो
 य इंद्रि अर पोतां कै बीच ओपन वीर्य नै सुकाय पथरी करि दे
 पाछें वा पथरी पेडू में पीड चलावे मूत महां कष्ट सुंउतरे वादे पोता
 सूजि जाय वें को शुक्र जातो हीर है अर ओ इंद्रि नै पीडा करे तदि इंद्रि
 द्वारा शुक्र नी सरें अथ वा ओ इंद्रि नै पीडित करे तदि वाय है सो वें
 पथरी का निपट छोडारें तसिरी साटू कडा करि दे तदि ई नै सर्करा
 कहैं छै ४ अथ पथरी का उपद्रव लिख्यते सरीर डूबलो हो जाय
 सरीर में पीडा होय कूषि में सूख होय अरुचि होय सरीर पालो हो
 य मूत्राघात होय अर नाभि पोता सूजि जाय मूत रुकि जाय ये ई
 का उपद्रव छै अथ पथरी रोग का जनन लिख्यते संहि अरण्य
 पाषाण भेद कूट वरणो गोषरू अरुंड की छालि किरमाला की गि
 रि यं वरावरि लें यां नै जौ कूट करि टंक ५ को काटो करे तां में संकी
 हांग जवधार सींधो लूण ये नां धि पथरी चालो मनुष्य ईं काटानें
 पीवें तौ वें को पथरी को रोग मूत्र रुछ्य ये दां न्युं दूरि होय अरयो को
 गका बाय नें वचासीर नें उपदंस नें ओदूरि करैं छै अरयो दीपन
 पाचन छै इति सुंख्यादि वक्तव्यः अथ वा इलायची पीपलि म
 हुयो पाषाण भेद १ पन पापडो गोषरू अरुंड सो अरुंड की जड ये

२४३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ॥ १२

वरावारले यांनैजो कूट करि यांको काटो करै ईकाटा में सिलाजीत
नांषिपीवैतौ पथरीनै मूत्रछूनें योडूरिकरैछै इति इलादिका
थः अथवा पेंठाकारसमें सेकाहींग जव पारनांषिपीवैतौ पेडू
कापीडनै पथरीकारोगनै योडूरिकरैछै २ अथवा बरण्याकीछा
लि पाषाणभेद सूंठि गोषरू यांको काटो करि जव पारनांषिपीवै
तौ पथरीनै डूरिकरैछै ४ अथवा गोषरूको चूर्ण करि टंक ५ तीं
में सहत मिलाय भेद का डूध सूं पीवैतौ पथरीको रोग जाय ५ अ
थवा बरण्याका जड को काटो करि तींमें गुडनांषिपीवैतौ पथरी
को रोगनै पेडूकी सूलनै योडूरिकरैछै ६ अथवा आदाको रस
जव पार हरडै कीछालि मन्त्रयागिरिचंदन यांको काटो करै तींमें
दहानांषिपीवैतौ पथरीजाय ७ अथवा बरण्याकी वकल टका
१०० भरले तींनै चौरुणापाणीमें औटाय तींको चोथोहसोरापै
तींमें गुड टका १०० भर काचासणीकरै तींचासणीमें सूंठिटका १
पेंठाका बीज टका १ वहेडाका मांगिटका १ अथवा काबीज सह
जणांका बीज येदो न्यूं टका येके कभरिनां पै दाषटका २ इलाय
चीटका १ हरडै कीछालिटका १ वायविडंगटका १ यांको चूर्ण करि
वैमें राखे पाछें यांको एक जीव करि रोजीनां टका २ भर घायतौ
पथरीजाय इति बरण्यादि गुडको अवलेह अथवा
मजीठ तेवरसीका बीज जीरो सौंफ आंबला बोरका मीजी सो
धीगंधक आंबलासार मैरासिल येवरावरिले यांनै मिहांवां टि
टंक १ राजानां सहत कैसाधिषायतौ पथरीनिश्चै जाय ९ अ
थवा कुलत्थटका २ भरतींको काटो करि तींमें सींधो लूणमासा
२ सरपंठाको रसमासा २ नांषिपीवैतौ पथरीजाय येसर्व

२४४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १२

भावप्रकाशमैलिष्याछै अथवा हलदकोचूर्णदं ५ गुडदं

१० कांजीमैमासो १ तांषीपीवैतौ पथरीइंद्रीद्वाराऽडिपडै ११ अ

थवा संचरत्तूण सहत दूध तिलांकीनालीकोराघ पीवाकीदाह

मैनांषिदिन ३ पीवैतौ पथरीजायपडै १२ योचक्रदत्तमैलिष्ये

छै अथवा तिलांकीनालीकोषारदं २॥ सहतदं ५ येदूधकै

साथिदिन १५ पीवैतौ पथरीनिश्चैऽडिपडै १३ अथवा गोपाल

काकडीकीजडदं २॥ तीनेरातनेंभेवै पाछै ईनेपरभातवैहीपा

णीमैवांढिदिन ७ पीवैतौ पथरीइंद्रीद्वाराऽडिजाय १४ ये

मार्तंडमैलिष्याछै अथवा कुलत्थ सींधोत्तूण वायविदंग सार

मिथ्री सांठांकोरसंजवषार पेठाकोरस तिलभार पेठाकाबीज

गोषरू यांकोकांदीकरि ईंकाढामैगुळकोघृत पकायदका १॥

भररोजीनांषायतौ पथरीनै मूत्ररुद्धनै मूत्राघातनै सुक्रकाव

धनै यांसारंगीनांषांरुकरेछै १५ इतिकुलत्थाद्यघृतम्

योष्टंदमैलिष्योछै अरसंग जब गौहं चावल दूध घृत

शमसा सींधोत्तूण येईरांगनेपथ्यछै इतिअस्मरानामपथ

शरीरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथप्रमेहोग

कीउत्पत्तिलक्षणजननलिष्यते घणावैठिवासूं घणासोवासूं

घणादहीकाषावासूं नवीनपाणीकापीवासूं बकराभेमकासां

गपावासूं गुडनंआदिलंघणाभीठाषावासूं कफकारीजोवस्त

तीकाषावासूं घणाश्रमकाकरवासूं घणामैथुनकाकरवासूं ता

बंदाकारहवासूं विरुद्धभोजनसूं गरमभोजनकारवासूं घणा

मद्यकापीवासूं पाराकडबारसकाषावासूं पुरपकैअमेहकोगेग

पेदाहांथछै अथकफकापित्तकावायकाजोअमेहसांकी

संप्राप्तीनामजननमसो लिख्यते कफहैसोपेडूमेंप्राप्तहुवोजो
मेदअरमांस अरसरीरकोजलतीनें दूषितकरि अरकफकाप्र
मेहनेंकरैछै अैसेंहींपित्तहैसो गरमदयांसुकुपित्तहुवोथकोपे
डूमेंप्राप्तहुवोजोमेदअरमांस अरसरीरकोजलत्यानें दूषितकरि
अरपित्तकाप्रमेहनेंकरैछै अैसेंहींवायहैसो आपकिअपेक्षाक
रि आपसोंक्षीणजो कफपित्ततीनें क्षीणहुवांथकां पेडूमेंप्राप्तहु
वोजो शुद्धमांसकोरुंहतीनें मीजीनें अरसरीरकाजलनें पेडूकी
नसांका मूटा मेंप्राप्तकरि वायकाप्रमेहनेंकरैछै सो कफका तो
दस १० प्रमेहसाध्यछै अूं दोस दुष्याका समान जतन थकी अरपि
त्तकाप्रमेहछै सो जाप्यछै जाप्यका र्जितन कियेदब्यारहै अूं यां
का विसमजतनछै अूं दोष दुष्याका विसममणकीथकी अैंदोष
दूषितछै अरदुष्परसमासादिकछै सीतलमधुरादिकपित्तहारी
द्रव्यछै अरवांयकाप्रमेहचारि ४ सोअसाध्यछै बैजायनहीअूं
मीजीनेंआदिलेरवैगंधीरधातुछै सोसर्वसरीरयापीछै अरस
रीरकोविनासकारीछै ईकारणसूंवायकाप्रमेहअसाध्यछै १
अथप्रमेहबीस २० प्रकारकाछै त्यांकानामलिख्यते उदकप्र
मेह १ दसुप्रमेह २ सांडप्रमेह ३ सुगप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ सुक्तप्र
मेह ६ सिकताप्रमेह ७ सीतप्रमेह ८ शनैप्रमेह ९ लालीप्रमेह १०
येदोस तो कफकां प्रमेहछै अरक्षारप्रमेह १ नीलप्रमेह २ काल
प्रमेह ३ हरिद्राप्रमेह ४ मंजिष्टप्रमेह ५ रक्तप्रमेह ६ येछह ६
पित्तकाप्रमेहछै अरबसाप्रमेह १ नीलप्रमेह २ कालप्रमेह ३
हस्तीप्रमेह ४ यवायकाजाशिजे येवीस २० प्रमेह वाग्भटसु
शुनचरकभावप्रकाशादिककामतसूंछै अरआत्रेयजीका

मनसूविसेसछैसोलिपूछं पूअप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पीडिकाप्र
मेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ येप्रमेह
आत्रेयकामतसूविशेषलिख्यछै अथप्रमेहकोपूर्वरूपलि
ख्यते दांततालबोजीभयांकैमेलघणोहोय हाथपगांकैदाहहोय
देहचीकणीहोय तिसघणालागै मूदोमांदोरहै येलक्षणहोयत
दिजाणिजेप्रमेहहोसी अथप्रमेहकोसामान्यलक्षणलिख्य
ते घणोंजाडोअरघणोंपतलोमूत्रहोय तदिजाणिजेईकैप्रमेह
कोरोगछै अथकफका १० दसप्रमेहछैतांनैअनुक्रमसंलि
ख्यते अथउदकप्रमेहकोलक्षणलिख्यते निर्मलमूतै घणों
मूतै सुपेदमूतै सीतलमूतै गंधरहितमूतै जलसरीसोमूतै
अथयेकजाडोअरचीकणीमूतै तांनैउदकप्रमेहकहिजे १ अथ
इक्षुप्रमेहकोलक्षणलिख्यते सागंकारससरिसोभिपदमां
गोहोयतांनैइक्षुप्रमेहकहिजे २ अथसांद्रप्रमेहकोलक्षण
लिख्यते जैसैंवास्योपाणीपऊधकोवासणमेंजाडोहोजाय त
सोजाडोपुरसमूतै तांनैसांद्रप्रमेहकहिजे ३ अथसुराप्रमेह
कोलक्षणलिख्यते जीकामूतमेंदारूकीसीवासआवै असवैको
मूतऊपरतोनिर्मलदासैंअरनीचैंजाडोहोय तांनैसुराप्रमेहकहि
जे ४ अथपिष्टप्रमेहकोलक्षणलिख्यते चाचलांनैआदिंदर
जोचनतीनैंपीसितांकापाणीसीरासोमूतैसुपेदकष्टकारिकें अ
रमूततांरोमांचहोयआवै तांनैपिष्टप्रमेहकहिजे ५ अथसुक्त
प्रमेहकोलक्षणलिख्यते वीर्यसिरासोमूतै अथवावायनेलीं
मांमूतैतांनैसुक्तप्रमेहकहिजे ६ अथसिकताप्रमेहकोलक्ष
णलिख्यते वीर्यकारेतनेलीयांमूतै तांनैसिकताप्रमेहकहिजे ७

अथसीतलप्रमेहकोलक्षणलिख्यते बारबारमूतैघणों सीत
लमूतै तीनेसीतलप्रमेहकहिजे २ अथशनैःप्रमेहकोलक्ष
णलिख्यते सनेंसनेनिपरमंदमंदमूतैतीनेशनैःप्रमेहकहिजे ९
अथलालप्रमेहकोलक्षणलिख्यते अलकीतांतिनेलीयांमूं
तैतीनेलालाप्रमेहकहिजे १० येकदसकफकाप्रमेहछै अथ
छै ६ पित्तकाप्रमेहतीमेंप्रथमक्षारप्रमेहकोलक्षणलि
ख्यते जींकामूत्रमेंबारकोसोवर्णहोय अरबारकोसोहीवेंमूत
कारसकोस्पर्शहोय अरबारकापाणीसीरीसोमूतैतीनेबारप्र
मेहकहिजे १ अथनीलप्रमेहकोलक्षणलिख्यते जींकोमूत
नीलयंचकारंगसिरीसोउतरै तीनेनीलप्रमेहकहिजे २ अथ
कालप्रमेहकोलक्षणलिख्यते स्याहीसिरीसोकालोमूतैतीने
कालप्रमेहकहिजे ३ अथहरिदप्रमेहकोलक्षणलिख्यते ह
लदकारंगसिरीसोमूतै अरकरडोमूतै तीनेहरिदप्रमेहकहिजे
४ अथमंजिष्ठप्रमेहकोलक्षणलिख्यते मजीठकापाणीका
रंगसिरीसोमूतै अरजीमेंदुरंगंधिआवै तीनेमंजिष्ठप्रमेहक
हिजे ५ अथरक्तप्रमेहकोलक्षणलिख्यते लोहीसिरीसोमूं
तैजीमेंदुरगंधिघणीआवै अरगरममूतै अरलूणनेलीयांमूं
तै ईनेरक्तप्रमेहकहिजे ६ येपित्तका ६ प्रमेहछै अथवाय
काचारि ४ प्रमेहछैतीमेंप्रथमवसांप्रमेहकोलक्षणलिख्यते
मुद्गमांसकोजीघृततीनेलीयांमूतै अरवेंकारंगनेलीयांमूतै
तीनेवसांप्रमेहकहिजे १ अथमज्जाप्रमेहकोलक्षणलिख्यते
हाडमांहीतीमीजीनेलीयांमूतै अरवेंकारंगसिरीसोमूतै अर
बारबारमूतैतीनेमज्जाप्रमेहकहिजे २ अथक्षौद्रप्रमेह

कोलक्षणालिख्यते कसायलोर्जाकोमूतहोय सहतसिरासोर्जा
कोमूतसीरोहोय अरल्लुबोमूतहोय तीनेंक्षौद्रप्रमेहकहिजे ४
यांपुरषांकैकोईप्रमेहहवाछै अरवेंपुरषजतेनकरैनहीं अरप्रमे
हानेंदिनघणालागजाय अरवेंपुरसकुपथ्यकरवोकरै तदिबांपुरषां
कैमधुप्रमेहहोजाय येमधुप्रमेहअसाध्यछै अथकफकाप्रमे
हकाउपद्रवलिख्यते अन्नपचैनहीं भोजनमेंअरुचिहोय छा
दणीहोय नांदघणीआवे बासीहोय पीनसहोय येकफकाप्रमे
हकाउपद्रवलिख्याछै अथपित्तकाप्रमेहकाउपद्रवलिख्यते ॥
पैडूमेंइंड़ीमेंसूलहोय पोताफाटणलागीजाय जुरहोयआवे दा
हहोय निसहोय बाटाहकारआवे मूर्छाहोय अतीसारहोय ये
पित्तकाप्रमेहकाउपद्रवछै अथवायकाप्रमेहकाउपद्रवलिख
ते जांमेंउदावर्त्तक्रोरोहोयआवे सरीरकांपै हियोदूषे सर्बस
काषावाकीइछारहै पेटमेंशूलचाले नांदआवेनहीं सरीरसृजि
जाय बासीहीय स्वासहोय येवायकाप्रमेहकाउपद्रवछै अथ
प्रमेहकोअसाध्यलक्षणालिख्यते वायुपित्तकफकाजोप्रमेह
छै बांउपद्रवांसंयुक्तजोपुरषकैजोप्रमेहहोय सोपुरषअसा
ध्यजाणिजे वोपुरषमरिजाय अरप्रमेहकीदसपिडिकाकहिजे
छै तींपिडिकासंयुक्तजोपुरषहोय सोपुरषमरिजाय यांउपद्रवांसं
युक्तहोयतौ अथआत्रेयकामतकाप्रमेह६छै त्यांकानाम
अरलक्षणालिख्यते पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिडिकाप्रमेह ३
सर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ अथपूयप्रमेहको
लक्षणालिख्यते जांका मूतमेंराधिफठे अरराधिकीसांनेमेंवासआ
वैतीनेंपूयप्रमेहकहिजे १ अथतक्रप्रमेहकोलक्षणालिख्यते

जीकोमूतछाडिसिरिसोउतरे अरबेंकामूतमेंछाडिसिरिसोवास
 आवें तांनेतकप्रमेहकहिजे २ अथपिडिकाप्रमेहकोलक्षणलि
 ष्यते जीकामूतमेंपिडकडीबीर्यकीपडै तीनेपिडिकाप्रमेहकहिजे
 ३ अथशर्कराप्रमेहकोलक्षणलिष्यते जीकोमूतमिश्रीसिरि
 सोमीगोहोय अस्जीकामूतकोवर्णमिश्रीसिरिसोहोयतीनेशर्क
 राप्रमेहकहिजे ४ अथघृतप्रमेहकोलक्षणलिष्यते जीकामू
 तकोघृतसिरिसोस्वादहोय अरघृतसिरिसोहीवर्णहोयतीनेघृ
 तप्रमेहकहिजे ५ अथअतिमूत्रप्रमेहकोलक्षणलिष्यते
 जीपुरुषकैमूत्ररात्रिअरदिनमेंघण्टासंघण्टाउतरे अरओपुर
 सनिर्बलपडिजाय तीनेअतिमूत्रप्रमेहकहिजे ६ येआग्नेय
 कामतकाप्रमेहहै अथप्रमेहवालाकैदस १० जातिकीपी
 डाहोयछैत्यांकानामलिष्यते शराविका १ कछपिका २ जालि
 नी ३ विनिता ४ अलजी ५ मसूरीका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८
 विदारिका ९ विदधी १० अथपिडिकाकोलक्षणलिष्यते श
 शरकाहुंगाने आदिलेरजोपुष्टस्थानसांकाजोमर्मस्थानकैविसे
 दस १० संधिउपजैछैतीनेपीडिकाकहिजे १ अथसराविकाको
 लक्षणलिष्यते वाफुणसीहैंसोऊपरतोऊंचा बीचमेंजीकैषाडो
 तीनेसराविककहिजे २ अथकछपिकाकोलक्षणलिष्यते पा
 छैकछाजोसरीरकापुष्टस्थानांकैविसेसरभूंप्रमाणजोफुणसी
 होयदाहनेलीयांकछवाकैआवारतीनेकछपिकाकहिजे २ अ
 थजालिनीकोलक्षणलिष्यते जीफुणसीमेंदाहयणीहोय अ
 रनामांसकासमूहमेंहांयतीनेजालिनीकहिजे ३ अथविनि
 ताकोलक्षणलिष्यते जीफुणसीमेंमांहीपीडाहोय वाफुणसी

बड़ी होय अरपीठिपीठै होय अरबाउदरमें होय बेनीविहता कहि
 जे ४ अथचलजीकोलक्षणलिख्यते जो बाऊरासी लाल होय का
 ला होय बहोत फाटै पीठघणी होय बेनेंचलजी कहि जे ५ अथम
 सूरिकाकोलक्षणलिख्यते जो फुणसीमसूरकै प्रमाण होय अर
 मसूरको सोरंग होय बेनेंमसूरिका कहि जे ६ अथसर्पपीकाको
 लक्षणलिख्यते जो फुणसीसरसूं प्रमाण होय सरसूंकारंगमि
 शसोरंग होय तीने सर्पपिका कहि जे ७ अथपुत्रणिकोलक्षण
 लिख्यते जो फुणसीउरतीही बडीउठै तीने पुत्रिणी कहि जे ८ अ
 थविदारिकाकोलक्षणलिख्यते जो फुणसीविदारीकंदसिरासी
 गोल होय अरकरडी होय अरउसोहीरंग होय तीने विदारिका कहि
 जे ९ अथविद्वधाकोलक्षणलिख्यते विद्वधरोग ६ ठै मकार
 कोछै तांकोलक्षणागेलिषस्यांसोई देजाणिलीज्यो येदस १०
 पिडिकाछै सोप्रमेहवालारोगीकै होयछै त्यांहांकारणांसंपुरुषां
 कोपीठिकादस होय अरज्यांपुरुषां कै सरीरमें मेददुष्टहुवोछै त्यां
 कै प्रमेहविनांभीयेदस १० पिडिका होयछै अथदस १० पिडिकां
 काउपद्वलिख्यते निस बासी मांसकोसंकोच मोह हिचका मद
 लुर विसर्प मर्मकोरोकिबो येयांकाउपद्वछै अथपिडिकाका
 असाध्यलक्षणलिख्यते गुदाकै हायाकै मस्तगकै कांधांके मर्मसा
 नकै मंदाग्निबालाकै यांस्थानांमें फुणसी होय तीने असाध्य कहि जे
 केईकआचार्याकोमतछै स्त्रीप्रमेहकोरोग होयनहीं स्त्रीही
 सोमहीनांकामहीने स्त्रीधर्म होयछै तींसेतीस्त्रीकासरीरकासाग
 रंगजातारहैछै अथप्रमेहजातोरह्यो होय तांकोलक्षलिख्यते
 जीकोमूतनिर्मल होजाय अरपतलोपाणीसिरासो होजाय अरमूं

तैजोको कडबोअरतीषोहोजाय तीकैप्रमेहगयोजाणिजे अथर
 क्तपित्तरक्तप्रमेहकोभेदलिख्यते जोकोसरिरकोहलदसिरासो
 वर्णाहोजाय अरजीकोसूतलोहीसिरासोहोजाय तीकैरुधिरप्रमेह
 जाणिजेनहीं वैकैरक्तपित्तकोकोपजाणिजे अथप्रमेहरोगका
 जतनलिख्यते प्रमेहवालानेंइतनीवस्तुबाबोजोग्यछै सांठूं कोंदू
 गोहूं चणां अरहड कुलथ जवमूंग मौढ साव्याचावल येसारा
 पुराणंषाबोजोग्यछै अरतीषासागपत्र अरहिराकोमांस अर
 प्रमेहवालाकैपेकुपथ्यछै गुडनेंआदिलेमींठीवस्तुघृततेलछा
 छि दारुपीवाकी बटाई सांठाकोरस पीस्योअन्न अनूपदेसकोमां
 स येप्रमेहवालानेंवरज्याछै अरकफकादसप्रमेहछैतीनेयोका
 दोजोग्यछै नागरमोथो हरडैकीछालि छोट कायफल येवरावरि
 ले यानेंजौकूदकरिदंक ५ ईकोकादोरोजीनांसहतनांषिलेतौ पि
 त्तप्रमेहजाय २ अथवा पसलोद कहवाकीवकल अररक्तचं
 दन येवरावरिले यानेंजौकूदकरिदंक ५ यांकोकादोरोजीनांस
 हतनांषिलेतौपित्तकाप्रमेहजाय ३ येजतनभावप्रकासमेंछै
 अथजलप्रमेहकोजतनलिख्यने धवरूपकीवकल कहवारू
 पकीवकल रक्तचंदन सालरूपकीबकल ईकोकादोलेतौज
 तप्रमेहजाय ४ अथप्रमेहकोजतनलिख्यते वास्यापालीमें
 दाषांकोसर्वतकरौतीमेंमहलोरीसुपेदचंदननांषिपीवैतौ रक्त
 प्रमेहजाय ५ अथक्षारप्रमेहकोजतनलिख्यते सुंदरलो
 कासंभोगसूंक्षारप्रमेहजाय ६ अथवा धंवरूपकीवकल कह
 वारूपकीवकल अरलूकीवकल किसोका केलिकीमांहीलीसुपे
 दवकल कमलकीजडदाष यांकोकादोदेतौक्षारप्रमेहजाय ६

अथतक्प्रमेहकोजतनलिष्यते लोद कहवाकीबकल पैरगांव
 कापांन आंवला रक्तचंदन यांकोकादोकरि गुडघालिलेतौ तक्प्र
 मेह अरपिडिकाप्रमेहयेदोन्मंजाय ७ अथसूक्तप्रमेहकोजतन
 लिष्यते दोब मूर्वा डामकीजड कंसकीजड दांतूणी मजीठ सासर
 कीबकल यांकोकादोलेतौ मुक्तप्रमेहनें अररुधिरप्रमेहनें यांदोन्मां
 नैयोदूरिकरैछै ८ अथघृतप्रमेहकोजतनलिष्यते त्रिफला किर
 मालाकीगिरि अरवेंकीजड मूर्वा सहजणांकापांन नींबकापांन
 कंलिकीसुपेदबकल भिनकादाष यांकोकादोदेतौ घृतप्रमेहजा
 य ९ अथइक्षुप्रमेहकोजतनलिष्यते कूठ पित्तपापडो कुर
 का मिथ्री यांकोकादोदेतौइक्षुप्रमेहजाय १० अथवा अरण्यांकी
 जड पाडल धमासो अरलू छिलाकीजड यांकोकादोदेतौइक्षुप्र
 मेहजाय ११ अथपित्तकाप्रमेहकोजतनलिष्यते कमलकी
 जड कहवाकीबकल इंद्रजय धवकीबकल आमिलीकीबकल
 आंवला निबोली यांनेमिश्रीनांषिपीवैतौपित्तकोप्रमेहजाय १२
 अथकफकाप्रमेहकोजतनलिष्यते वायविडंग राल कहवांरू
 पकीबकल कायफल कदंबकीबकल लोद विजयसार यांकोका
 दोलेतौकफकाप्रमेहजाये १३ अथसंपूर्णप्रमेहमात्रकोजत
 नलिष्यते नागरमोथो त्रिफला हलद देवदारु मूर्वा इंद्रजय औ
 द यांकोकादोकरिदेतौ संपूर्णप्रमेहमात्रनें अरमूत्रग्रहनेंइरिक
 रैछै १४ अथवा काकलहर हरडैकीछालि हलद कहवाकीबक
 ल बेवरावरिले यांनेंमिहीवांदि यांकीवरावरिईमैमिश्रीमिला
 यदं १५ सहतकैसाथिलेतौ सर्वप्रकारकोप्रमेहजाय १ अथम
 धुप्रमेहकोजतनलिष्यते वटकीजडकीबकल अरलुकांजडकी

बकल चारोलीकारूपकीबकल आंवलाकीजडकीबकल पीपल
 कीजडकीबकल किरमायाकीजडकीबकल महलोदी लोदनीब
 कीछालि पटोल वरणाकीबकल दांतूणी मीठासींगी विषक कण
 गवकीजड इंद्रजब त्रिफला सोध्याभिलावा सूँठ कालीभिरवि त
 ज पवज इलायची येसर्ववरावरिले याँनैमिहींवाँटिदंक ॥ सह
 तकैसाथि रोजीनांलेतौ मधुप्रमेहजाय अथवा बडकीजदानें
 आदिखेरयेऔषदिहै तांकोकादोदे अथवा यांकोतेलकरै अ
 थवा यांकोघृतकरै अरईतेलकोतोमर्दनकरै अरघृतकोपोन
 करै तोमधुप्रमेहजाय १७ इतिन्यग्रोधाद्यंचूर्णम् अथवा
 सोधोसनामुषी पाषाणभेद सोधोसिलाजीत चंदन कचूर पीप
 लि वंसलोचन येसर्ववरावरिले याँनैमिहींवाँटिदंक ॥ सहतदं
 क १० मिलाय गरुकादूधकैसाथिरोजीनांपावैतौ मधुप्रमेहनै अ
 रमूत्रकाअवरोधनेंयोइरि करैहै १८ येसर्वजननआत्रेयमै-
 लिथाहै अथचंद्रप्रभाशुटिकालिथते कचूरदंक १ वचदं
 क १ नागरमोषोदंक १ चिरायतौदंक १ देवदारुदंक १ हलददंक
 १ अतीसुदंक १ दारुहलदंक १ पीपलामूलदंक १ चित्रकदंक १
 एणदंक १ त्रिफलादंक १ चयदंक १ गजपीपलिदंक १ जवपारदं
 क १ साजीदंक १ सींधोल्णदंक १ संचरल्णदंक १ सांभरोल्
 दंक १ सारदंक १ मिश्रीदंक १ सोधोसिलाजीतदंका ४ सो
 गूलदंका ४ पांसारानैमिहींजुदाजुदावांदै पाछैयांसारानें
 फटाकरि मिलाययांकोयेकजीवकरै अरपारोटका १ सोधोगं
 कटका १ अभकटका १ पाछैपारागंधककाकजलीकरै ये
 शीशोइदि ईपैमिलावै पाछैमासा ४ ईनेंसहतघृतकैसाथि

अमृतसागर
 प्रतापसागर
 तरंग
 अमृतसागर
 प्रतापसागर
 तरंग
 अमृतसागर
 प्रतापसागर
 तरंग

सर्वप्रमेहमात्रनें यवासीरनें क्षयीनें वीर्यकादौसनें नेत्रांकारोगांनै
 दांताकाशगनें पांडुरांगनें पांवनें सूत्रनें उदरकारोगनें मूत्रकृच्छ्रनें
 मूत्राघाताने फीयाने पासीनें कादनें यांसारारोगांनैयोदूरिकरैछै १९
 इतिचंद्रप्रभासुदिका अथवात्रिफलादका ४। जीरोदका ४। प
 णोदका ४। कौंछिकाबीजदका ४। छांदीइलायचीदका २। दालचिनी
 दका २। लवंगदका २। नागकसरिदका २। तुकमरियाकाबीजदका
 २। यांसारारोगांनैमिहींवांदि एकजीवकरै पाछैयांनैमिश्राघृतमें
 मिलाय यांकालमुगटायैकेकभरकाकरै पाछैरोजीनांलाडूएक।
 प्रातःसमेंषायतौयोप्रमेहमात्रनेंदूरिकरैछै इतिप्रमेहारिचूर्ण
 सू २० अथमधुप्रमेहकोजतनलिप्यते सोधोपारो सोधो
 गंधक कहवाकीवकल मिश्री येवरावरिले यांनैषरलमेंमिहीं
 वांदि अरसालरकीजडकीपुट ३दे पाछैषरलकरै पाछैईकीगो
 लीमासा १ प्रमाणवांधै पाछैगोली १ रोजीनांवांयतौमधुप्रमेह
 जाय २१ अथवा लोदटक १ सहतसूंले अथवा परैदाकाका
 दासूंलेतौप्रमेहजाय २२ अथवा गिलोयसत त्रिफला सार ये
 तीन्युंमिलायदंक १ सहतसूंषायतौ प्रमेहजाय २३ अथवा मि
 श्री सिंघोडा रेवतचीनी येवरावरिले यांनैमिहींवांदिदंक २। ज
 लकैसाथिरोजीनांलेतौ घणादिनकोभीप्रमेहदूरिहोय २४ अ
 थवा पक्कागूलरिकाफलदका १। सींधोल्हूणकीसाथिषायतौअ
 साध्यभीप्रमेहजाय २५ अथवा बंगेस्वररसरती १ सहतसूं
 ले अरईउपरिपक्कागूलरिकाफलांकोचूर्णसहतसूंलेतौ असा
 ध्यभीप्रमेहदूरिहोय २६ अथवंगेस्वररसकीक्रियालिप्यते
 रांगपाव १२ नोषोले ईनेंगालि ईनेंगलतां अधपाव १२ पारोनांधै

पाछैईकीथालीमेंपतलीपापडीकरै पाछैवांकाछोटाछोटादूक
 करिजुदाराधिजे पाछैछाण २थापड्यावडावडासेर पांचकागा
 वरवाकराययेकेकछाणउपरिकसेलासेर १कोनूर्णविछावै
 जुगतिस् तामध्येमिहदीकोनूर्णसेर १मिलावै यांदोन्याकैवाचि
 बांपारांगकादूकडानें बांदोन्यांकानूर्णमेंजुगतिसूदाविदेउपरि
 दूसरोछाणोदे पाछैवानेंनिर्वातस्थानमेंजुगतिसूफूकिदे पाछैवा
 नेंसांगसीतलडुवांजुगतिसूकाटै वेंकाफूलासुपेदहोजाय ओतो
 लउतरै यावंगेश्वरकीक्रियाछै ईकागुणकोपारनहीं योसर्वरोग
 मान्नैदूरिकरैछै जुदजुदाअनूपानसं इतिबंगेसरकाक्रिया
 संपूर्णम् २७ अथसुपारीपाकलिष्यते दषणीसुपारीदका
 ८।तांनैमिहींवांदि गऊकोघृतदका ८।तांमैईनेओसणिसेर १३
 गऊकाइधमैईकोषैरोमावोकरै पाछैईमानामेंयेओषधांमिहीं
 वांदिनांषै सोलिषूछूं नागकेसरीदंक ५नागरमोथोटंक ५चं
 दनदंक ५सूंठदंक ५कोलीमिरचिदंक ५पीपलिटंक ५आंव
 लादंक ५कोयलकाबीजदंक ५जायफलदंक ५लवंगदंक ५ध
 णोटंक ५चारोलीदंक ५तजदंक ५पत्रजदंक ५इलायचीदंक
 ५दोन्यूंजीरादंक ५सिंघाडादंक ५चंसलोचनदंक ५ग्रानैमिहीं
 वांदिईमानामेंनांषै पाछैमिथ्रीदका ५॥भरकीचांसणीकरै ईबा
 सणांमैओषधांसमेतमावीनांषैपाछैवेंकीदका १येकेकभरकी
 गोलीबांधै गोली १प्रभातगोली १संध्याषायतौ अतनांरोगानैदू
 रिकरै प्रमेहनैजोएज्वरनै अम्लपित्तनै ववासीरनै मंदाग्निनै
 शुक्रकादोषनै प्रदरनै यांरोगानैयोदूरिकरैछै अरसरीरनैपुष्टक
 रैछै २८ इतिसूपारीपाकः अथगोषरूपाकलि० गोषस्सैरबा
 ध ३॥

ईनेमिहांवांरि गऊकाघृतसेर ११ मैमकरोवै पाछैगऊकोइधसेर १२
 मैईकोवैरोमावोकरै इमावोयैयेच्यो यदिनांयै सोलिबूछूं बीलकी
 गिरिटंक २॥ कालीमिरचिटंक २॥ सारदंक ५ जायफलदंक २॥ ससु
 इसोपदंक २॥ इलायचीदंक २॥ भीमसेनीकपूरदंक २॥ पञ्चजदंक २
 दालचिनीदंक २॥ हलददंक २॥ कूठदंक २॥ तालमषाणदंक २॥ अ
 फीमदंक २॥ चांच्योषद्यांसूंआधीभांगि यांनेमिहांवांरि वैमैनांयै
 पाछैसेरच्यारि १४ मिश्रीकीचासणीकरै ईचासणीमेंच्योषद्यांसुधो
 मावोभिलावै पाछैईकीगोलीदंक ५ प्रमाणकीकरै गोली १ रोजीनां
 सधतीसधतीपायतौ प्रमेहनेइरि करै अरवीर्यकोस्थंभकरै सि
 यांनैयणीप्रसन्नकरै इतिगोषरूपाकः २९ अथवाचित्रक सो
 धागंधक सूंठि कालीमिरचि पीपलि पारो सोध्योसींगीमुहरो
 मिफला नागरमोथो येनरावरिले पाछैपारागंधककीकजली
 करै पाछैकजलीमेंयेच्यो यदिमिहांवांरिमिलावै पाछैईकैभां
 गरकारसकीपुट १ देवरलकरै पाछैगोली १ प्रमाणकीबांधै गो
 ली १ रोजीनांप्रभातपायतौ अठाराकोप्रकारकाकाढानैचोदूप्रि
 करैछै ३० इतिपंचाननगुटिका येजतनवैघरहस्यमेंछि
 ष्ठाछै भीमसेनीकपूरमासो १ कस्तुरीमासो १ अफीममासा ४
 जायपत्रीमासा ४ यांसांनैनागरिवेलीका पांनकारसमेंबांदै
 पाछैरती १ प्रमाणबोलीकरै पाछैगोली १ रोजीनांइधमौप्रची
 नांधितोकैसाधिलेतौ प्रमेहमात्रइरिहोय अरस्थंभनकपेकरै
 ३१ अथघृतप्रमेहकोजतनलिप्यते गिलवै चित्रक पाठ कु
 डाकीछालि सेकीहांग कुटकी कूठ येनरावरिले त्यांनेमिहांवांरि
 दंक २॥ जलसंलेतौघृतप्रमेहजाय ३२ अथवा आंवलाहलः

२५७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १२

येवरावरिले अरदंक ५ यांनैरात्रिने भेय परभात वेही पाणी में बांटे
ईमैस हतनां पिरोजीनां पीवैतौ प्रमेह मात्रा जाय ३३ अथवा सोधी
गंधकसार सोधीसनासुषी स्रुति मिरचि पीपलि त्रिफला सिला
जात बोरकीभीगि दलद कैय येवरावरिले पाछै पारागंधककी
कजली करै तीमैं ये औषधि भी बांटे मिलाय तां कै भांगराकार
सकी पुढ २१ दे पाछै दंक १ रोजीनां पायतौ प्रमेह मात्रा दूरि होय ३४
इति मेघनाद रसः अथवा पारी अभ्रक बरावरिले यांनै औ
बलांका परल करै दिन ७ पाछै रती १ रोजीनां पायतौ प्रमेह मात्रा जा
य ३५ इति हरिशंकर रसः अथवा इलायची भीमसेनाक
घूर भाडंगी जायफल गोषरू सलरकी वकल मोचारस पारा
अभ्रक बंग सार येवरावरिले यांने परल में मिहां बांटे रती २ रोजी
नां स हतसूं लेतौ प्रमेह मात्रा दूरि होय ३६ इति प्रमेह कुंठार
रसः अथवा बकायण का बीज दंक ५ चां बलांका पाणी में पी
सि बेंमैंगरू को घृत मिलाय रोजीनां पीवैतौ घणों दिनां को भी प्रमे
ह जाय ३७ ये सर्व जतन सर्वसंग्रह में लिख्या छै इति प्रमेह
हरण का जतन संपूर्णम् अथ प्रमेह पिडिका कालक्षण
अरजतन आत्रेय का मत सूलिख्यते पित्तकी पिडिका पीछी
अथवा लालहाय दाह होय जुर होय अरवाय की पिडिका कालि
होय सरीर कां पै सूतनां सूल होय पुरपावकल होय जाय कफकी
पिडिका सुपेद होय जाडी होय सीतल होय मोडी पचै सो जानैली
यां होय ये सर्व लक्षण जीमें होय तीनों सन्निपात की पिडिका कह
जै धवक हवाकी वकल कदंबकी वकल बोरकी वकल सिस्यू
की वकल नींबकी वकल यांको काटो करि ई पाणीं सूं वे पिडिका

नेंधोवैतौओपिडिकाआछीहोय १ अथइंद्रीउपरिराधिपडिग
ईहोयतींकोजतनलिथ्यते कहवाकीवकल कदंबकीवकल
तींद्रीअंतरछालियांकाकादासूंथोवैतौइंद्रीकीराधिआछीहो-
य २ अथइंद्रीउपरिवायकीपिडिकाहोयतींकोजतनलि-
भांगराकोरस तुलसीकापांन पटोलकापनयांनैकांजीसूंवांदि
लेपकरैतौपिडिकाजाय ३ अथपिडिकाकोजतनलिथ्यते
महलोछी कूठ रक्तचंदन यस रोहास गेरु कमलगटा येदूधमेंवां
दि पित्तकीफुणस्यांकैलेपकरैतौ वांकोदाहडूरिहोय ४ अथइंद्री
कीफुणसीपकिजायतींकोजतनलिथ्यते सीतलजलसूंसां
वायकोधोयोभाषन तींकोलेपकरैतौ वांकोदाहडूरिहोय ५ अ-
थवा कदंबकापांन कहवाकापांन दांजूकापांन बैरकापांन आं
बलाकापांन यांनैगरमपाणीमेंवांदि लेपकरैतौफुणस्यांकीराधि
जाय ६ अथवानिफलांकाभुरकासूंराधिजाय ७ अथवा कांजी
काधोवासूं छाछीकाधोवसूं सीतलजलकाधोवासूं राधिआछी
होय ८ येजतनआत्रेयमेंलिण्याछै अथरसरलाकरकाज
तनलिथ्यते कपासकीमींगी भैंसकीछाछिमेंदिन ७ परलकरै पा
छैवेनेमासा २ गोजीनांघायतौलालाप्रमेहजाय १ अथबहुमूत्रप्र
मेहकोजतनलिथ्यते मूर्खो पारो वंग अथवा बंगेखर सार अ-
भक यांनैवगवरिले त्यांनैसहतमेंदिन १ परलकरै पाछैमांसां
सहतसूंराजीनांघायतौ बहुमूत्रपणींजाय २ इतितालकेसुर
रसः ईरसनेलीयांपाछै पक्कागूलरकाफलनंक २। ईकोचूर्णई
रसउपरिलेतौ बहुमूत्रपणींजाय ३ अरपंचरचरसमासा २ले
तौबहुमूत्रपणींजाय ४ येजतनरसरलाकरमेंछै इतिप्रमे

हृरोगचरपिडिकारोगयांकीउत्पत्तिनक्षणजतनसंपूर्णम्
इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजंराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंह
जीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात अ
स्मरशर्करा प्रमेह वांसर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिनक्षण
जतननिरूपणं नाम दशस्तंभः संपूर्णम् १३ अथमेदरो
गकीउत्पत्तिनक्षणजतनलिख्यते यणात्रैसकाकरिवासं
वैक्यारहवासं दिनकासोवासं कफकारिक्काषावासं मधुरअ
नक्काषावासं घृतनेत्रादिलेचीकणीवस्तकाषावासं मेदवधैछैज
दिमेदवधैतदिपुंरवहैसोव्युंभीकामकरिवैकंसमर्थहोयनहीं
निकमोहवोथकोपयोरहै कूंओरधातजोछै हाडमींजीवीर्ययेमै
दनवध्यांथकांपुष्टहोयनहीं ओआदमीनीकमोहोजाय १ अथ
मेदकाओरदौसलिखूंछूं जीकैमेदहोयतांकेक्षद्रस्वासहोय
तिसहोय मोहहोय कुणाहतोसोवै सरिरमेंपीडाहो छीकआवै
पसेवआवै सरिरमेंडूरगंधिआवै मैथुनकरि वामेंसमर्थहोयन
हांयेमेदवाकालक्षणछै अथमेदकोस्थानलिख्यते शरिमा
त्रकैमेदहैसोउदरमेंरहैछै ईकारणमेदहसोउदरनेंवधावैछैपा
छैउदरवधोथकोअग्निनेदीर्घमानकरैछै कूंमेदकरिकैटक्यो
छैमार्गजिनकी औसोजोवायसोकोष्टहांमौवचरै तदिअग्निंकूंदे
दीर्घमानकरिषावाहीकीबांछासपै तदिमनुस्यहैसोघणोषाथी
थको अनेकभयंकरआजारानेंघणांदिनांमैंपैदाकरै पाछैउद
रमेंरहतोजोअग्नि अरपवनसूंस्थूलजोओमेदवानो पुरुषती
नैवैदग्धकरै औंढैदृष्टांतदीजैछै जैसेंवनमेंरहतोजोअग्निओप
वननेंदग्धकरैछै पाछैमंदघणोंवधोथकोपेटमेंरहतोजोवाय

पित्तअग्नि वैधणाधिकारानैपैदाकरै ईपुरसनेंमारिनांपै१ अथ
 स्थूलकोलक्षणालिख्यते मेदमांसजदिघणां बधैतदिपुरसके
 दूंगाउदरस्तनयेवध्याथका घणाथलथलाटकरताहाले अरवें
 पुरसकोबलमांसउत्ताह जातारहै ईनेस्थूलकहिजे पाछैस्थूलपु
 रषकैयेभयंकररोगहोयछै विसर्पभगंदर विषमजुर अतीसार
 बवासीर पांवने आदिलेरऔरभीरोगकरै अथमेदवात्प्रसे
 गीकोजतनलिख्यते पुराणाचावल मूग कुलथ कोंदूयेपाय
 लेषन वस्ति कर्म घेदकरिबो चिंता कुस्ती मार्गचालिबो सहत
 कोषाबो जबकोषाबो जागिबो धारोरस अरंडकापानांकीतर
 कारा हांग चाबलांकोमांड इतनींवस्तईरोगवालानैसंभोजोय
 छै अथवा गिलबै त्रिफलायांकाकाटासंमेदकोरोगजाय१
 अथवा गिलबै त्रिफला यांकोकाटोकरि तांमेंसारसहतनांषि
 पीवैतौ मेदकोरोगजाय २ अथवा वास्याटंटापाणीमेंसहत
 नांषिपीवैतौ मेदकोरोगजाय ३ अथवा उन्हूंअन्नपाय अथवा
 चाबलांकोमांडपीवैतौ मेदकोरोगजाय ४ अथवा सूंठि मिर
 चि पीपलि चित्रक त्रिफला नागरमोथो वायविडंग यांकाका
 टामेंगूगलनांषिपीवैतौ मेदकोरोगजाय ५ अथवा पीप
 लीसहतसूंरोजीनांपायतौ मेदकोरोगजाय ६ अथवा धत्त
 राकापांनकोरसतांकोमर्दनकरि बोकरैतौ मेदकोरोगजाय ७
 अथवा पारो तांमेसुर सार बीजाबोल यानैवरावरिले यानैभि
 हांवांठि ईनेकृकरभांगराकारममेंदिन ३ परलकरै पाछैरती ८
 ईनेरोजीनांसहतसूंचाटैतौ मेदकोटोसजाय = इतिवडवान
 लरसः योवैधरहस्यमैले अथवा नव्यजीरो सूंठि कालीनि
 रवि

पीपलि सेकीहींग संचरल्लण येवरींवरिले यानैमिहांवांरिजवां
 कायात्कैसाधिरंक२॥ रोजनींपीवैतौमेदकोरोगजाय ९ योचक
 दत्तमेंलिष्योछै अथवा वायविडंग सूंठि जवधार पीपलि सार
 यानैमिहांवांरिटंक १ तीमें जवअरआंबलाकोचूर्णमिलाय सह
 तसूंलेतौमेदकोरोगजाय १० अथवा बोरकापांनाकोकलक तीं
 मेंकांजीकोपाणिनांषि अरइहींमेंअरएयाकोरस अरमित्ताजीन
 नांषिपीवैतौमेदकोरोगजाय ११ अथवा गिलवै इलाचचीकुठा
 कीछालि आंबला येसाराअनुक्रमसूंयेकसूंयेकवधताले अरगू
 गडयांसारंकीवरावरिले त्यांकोएकजीवकरै पाछेंईनैटेकसवा
 सहनकैसाधिलेतौ मेदकोरोग भगंदर येजाय १२ इतिअमृ
 तागूगलः योचकदत्तमेंछै अथवात्रिफला अतीस मूर्वा
 निसोत चित्रक अरइसो नांबकीबकल किरमालाकीगिरि
 पीपलामूल दोन्हुंहलद गिलवै इंद्रयण पीपलि कूट सिरसूं
 सूंठि येवरावरिले त्यांकोकाढोकरि तींमेंतुलसीकोरसनांषि
 ईकाअनुमानमाफिक पाछेंईमेंतेलपकावै पाछेंईनेलकोम
 रदनकरै अथवा ईकोवभित्कर्मकरैतौ मेदकारोगांनै कफ-
 कारोगांनै योइरकरै १३ इतित्रिफलायंतैलम् योचक
 दत्तमेंछै इतिमेदरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम्
 अथदेहमेंपसेवांसूंदुर्गंधिआवतीहोयतींकोजतनलि
 अरइसाकापांनाकोरस तींमेंसंषकोचूर्णमिलायतींकोलेप
 करै अथवा वीलपत्रकापांनामेंसंषकोचूर्णमिलायलेपक
 रैतौसरीरकीदुरगंधिजाय १ अथकाषामैवासआवती
 होयतींकोजतनलिष्यते नांबूकापांनांकोरसकोलेपकरैतौ

कापांकापसेवकोदोसइरिहोय अथवा हलदनेत्रधबलीकरि
 तीनेवांदिपाणीमेंलेपकरैतोकापाकीदुर्गंधिजाय अथवा नागके
 मरि सिरसकीवकल लोद पस हरडैकीछालि योनेपाणीमेंवांरि
 यांकोउबरणोंकरैतो सरारकीदुर्गंधिकोदोसइरिहोय अथवा
 बोलिकापानीनेंजलमेंवांदि वांकोमर्दनसरारकैकरै पाछेआ
 नकरिनांपैतो सरारकीदुर्गंधिपणांकोदोसइरिहोय ३ येजन
 नभांवप्रकासमेंलिप्याहै अथसरारकीदुर्गंधिदूरिहुवा
 कोउबरणोंलिप्यते तांबूलकापान हरडैकीछालि कूद याने
 पाणीमेंवांदि सरारकैमर्दनकरैतो सरारकीदुर्गंधिजाय ४
 योहंदमेंहै अथरूपांकाआछारंगकरिवाकोलेपलिप्यते
 हरडैकीछालि लोद नींबकापान दाल्युंकीवकल आवकीवक
 ल यानेंजलसंभिहीवांदि ईकोसरारकैलेपकरैतोदेहकीकानि
 नेकरै ५ यांकाशीनाथीपरितमेंहै अथकाषकीदुर्गंधि
 हरिवाकोजतनलिप्यते कूद दोन्यहलद यानेंगोमृतमेंवांदि
 अथवा गोवरमेंवांदिजलसंईकोलेपकरैतोकापकीवामदूरिहो
 य अरईसंकोदभीजाय ६ योचक्रदत्तमेंलिप्योहै और
 सरारकीदुर्गंधिदूरिहुवाकोजतनलिप्यते कुलैथ कूद जा
 डछडीला चंदन मंकाजवांकोचून तज वच यानेंजलसंभिही
 वांदि सरारकैमर्दनकरैतोसरारकीदुर्गंधिजाय ७ यांशाई
 धरमेंहै अथकार्प्यरोगकीउत्पत्तिलक्षणजननलिप्यते
 ईकाश्यरोगनेंनौकीकमेंबाणकहैहै वायलवस्तकापावासं
 ल्हाअन्कापावासं लंघनकरिवासं घणांमेंशुनकाकरिवासं
 पैदकाकरिवासं धयसं धनपुत्रादिककानांसं घणोंसोचअ

करि वासं यांकारणं संपूरं सकै कार्यरोग होय छै ८ अथ क्षीणप
 णांकारोगकोलक्षणलिख्यते कूलाउदर कांधी येसूकिजाय
 नसां नीकलि आवै हाडचामडी सरार की अवसेस आयर है सरार
 दूबलो होजाय ये लक्षण होयती पीणपणांकोरोगमनुष्यकै जाणि
 जे ९ अथ मनुष्य अत्यंत पीणपडिगयो होयती कौं इतनां रोग
 गहोय सोलिषूंछूं पीयो होय बासी होय क्षयरोग होय गोला
 कोरोग होय अरववासीर होय उदरकोरोग होय संग्रहणी आफ
 रानें आदिलेर औररोग होय अरके ई पुरष दीषतका तो दूबला
 क्यूं जां कै मेदको भाग तो सरार में थोडो अरपीर्य कोहि सो सरार में
 घणोर है अरओ मैथुन घणों करै अरवें ओबंधे जघणोर है अर
 ओस्त्रीयां को गर्भापिदे अरके ई कदीषतका तो सरार का पुष्ट अ
 रबल हान अर मैथुनादिक में समर्थन हीं तानें पीणक हीजे क्यूं
 वें का सरार में मेदको भाग तो घणों अरशुकको बिभाग थोडो जीस
 ओपुरष पीण हीं जाणि जे १० अथ कृसनाम पीणपणांकारो
 गको जतन लिख्यते जीतनी बल करी ओषदि छै अरजीतनी
 बंधेन की ओषदि छै अरजितनां पुष्ट करी घृत दूध मांसने आदि
 लेर पुष्टाई कछै खांस पीणपणां दूर होय छै अरयां का जतन
 पुष्टाई का ग्रंथ का स्नाप्ति में लिषयां ११ अथ असाध्य क्षीणप
 णांकारोगकोलक्षणलिख्यते जिहपुरसकै स्वतः स्वभावसे ती
 पीण होय अरअग्नि मंद होय अरजीहपुरसकै स्वतः स्वभावसे ती
 हींसह हीवें को सरार निर्वल होय १२ तांको जतन नहीं छै ये
 सर्वजतन भाव प्रकास में लिष्या छै अथ कार्यनाम पीण
 पणांकारोग की उत्पत्तिलक्षण जतन संपूरणम् ॥ ७५

अथउदररोगकीउत्पत्तिनक्षत्रजतनलिख्यते मंदाग्निवाला
 पुरसकैनिश्चैपैदाहोयछै पण्डितरकीसर्वहीआठप्रकारछैतीं
 नैआदिलेर अरसर्वउदररोगमंदाग्निवालापुरसकैनिश्चैपैदा
 होयछै१ अथउदररोगकीऔरभीउत्पत्तिलिख्यते अजीर्ण
 तैउदररोगहोय अत्यंतदोसनैउपजावै इसिवस्तथाइतौउदर
 रोगहोय दोसांकोसंचयहोय अथवा मलको अथवा आंवको
 संचयघोष्टमेंहोय तदिपुरसकैउदररोगपैदाहोय१ अथउद
 ररोगकीउत्पत्तिलिख्यते कुपथ्यसूंसंचयकूंप्राप्तिहुवाजांवा
 यपित्तकफ सोजलनैबहवावालीजोनसांत्थानैरोंकै हियाकाप
 वननै अरअग्निनै अरगुदाकापवननैभलोप्रकारदूषितकरै
 आठप्रकारकाउदररोगनैपैदाकरैछै१ अथउदररोगको
 अन्यलक्षणलिख्यते पेटमेंआफरोहोय चालिवाकीसामर्थ
 जानीरहै सरीरदूबलहोजाय मंदाग्निहोयजाय सरीरमेंसो-
 जोहोय हाडांमेंफूटणीहोय मलमूत्रआछीतरैऊतरेनहीं सरी-
 रमेंदाहहोय येलक्षणहोयतदिजाणिजे ईकैउदरकोरोगछै१
 अथउदररोगआठप्रकारकोछैसोलिघूंछूं वायको१पित्त
 को२कफको३सन्निपातको४फियाको५मलेकाबंधहोवाको
 ६चोटकालागिवाको७जलोदरको८ अथवातोदरकोलक्षण
 लिख्यते जांपुरसकैपगांके हाथांके नाभिके सोजोहोय कूषि
 मेंपसवाडांमें कटिमें पीठिमें थांमेंपीटाहोय अरसंधिसंधिमें
 पीटाहोय सूकोषासहोय सरीरभार्योहोय मलउत्तरैनहीं स
 रीरकीत्वचा नषनेत्र येकालापडिजाय पेटमेंपीटाचाटै आफ
 रोहोय पेटबोलिबोकरै येलक्षणहोयतदिवायकांउदरकोनि

कारजाणिजे। अथपित्तोदरकोलक्षणलिख्यते जीमैजुरहोय
मूर्छाहोय दाहहोय तिसहोय कडबोमूंदोरहै भौलि अतीसार ये
सारारोगहोय असरीरकीत्वचा पीलीहरीहोय सरीरमें पसेवआ
वै अरदाहहोय धूवांनैलीयांडकारआवै तचाकोस्पर्शकोमलहो
य अरत्वचापकीसीहोय येजांमैलक्षणहोयनीकैपित्तकोउदररोग
जाणिजे। अथकफोदरकोलक्षणलिख्यते जीकासरीरमेंपी
डाहोय सोवैधणौ सोजोहोय सरीरभास्योहोय हियोदूषे भोजन
मेंअरुचिहोय मोडोपचै सरीरठंढोहोय अरपेटबोलिवोकरै ये
जीमैलक्षणहोयतीनैकफकोदरकहिजे येजीमैसर्वलक्षणहो
यतीनैसन्निपातकोउदररोगकहिजे ४ अथदुस्योदरकोल
क्षणलिख्यते जीपुरसकोवैरीकहींतरैसूंकहींपुरसनेंसिंहस
नष अथवा मूछकावालकहींदुष्टजिनावरकोमलमूत्ररुधिर
वीर्य अथवा जहरकहिंसंमिलि जोअन्नपानमेंधुवायदे तीकै
योदुस्योदरपैदाहोयछै सोतीकासरीरकोलोही अरवायपित्तक
फ येसाराहीसरीरमेंकुपितहोयछै अरईसन्निपातकाभयंक
रउदररोगनेंपैदाकरै पाछैओउदररोगहसोमेहकादिनांमेंकु
पितहुबोथको वेंपुरसनेंघणोंडुषितकरै मूर्छितकरैछै मृत्पुतु
ल्यईनेंदुस्योदरकहिजे ५ अथप्लीहोदरनेंफायोकहैछैतीको
लक्षणलिख्यते गरमवस्तुकाषावासूं अरगरमवस्तुकापीवासूं
दुष्टहुबोजोलोही सोकफसूं फायानेंवथावैछै पाछैफयोवध्यो
थको उदरकारोगांनेंपैदाकरैछै बांवांपसवाडामेंनदिवैसेतीमनु
ष्यहैसोसिंहायजायछै वैमनुष्यकैमंदापिहोजाय जीर्णसुरहो
जाय बलजातोरहै येलक्षणहोयतदिप्लीहोदरकहिजे ६

अथमलकावद्गुदोदरकोलक्षणलिप्यते जीपुसकैश्चनहैसो
विनांसोध्योषाय तीमेंवाल अथवा कांकरारेत यांसूमिल्योथकोपा
य तीकैदोसांनैलीयांथकामलकोसंचयहोय तदिओपुरसहैसो
कष्टसेतीथोडोथोडोगुदाद्वारामलनैउतारै अरवेंपुरसकोहियोअ
रनांभिवधिजाय तीनैवैद्यकद्गुदोदरकहैछै ७ अथक्षतोद
रकोलक्षणलिप्यते जोपुरसपाषाणनैआदिलेरेतसूमिल्योअ
नषाय तींपुरसकीआंतांनैकाटतोथको ओअन्नपाणीसिंरीसो
होयगुदाद्वारानिकलै अरवेंकागुदारातिदिनबहवोईकरै अर
वेंकोपेडूबधै अरपेडूमैंपीडघणीचालै ईनैक्षतोदरकहिजे क्ष
तोदरअरबद्गुदोदरएकहीछै ७ अथजलोदरकोलक्ष
णलिप्यते जंपुरसघृतादिकषायोहोय अथवा वस्तिकर्मक
सोहोय अथवा जुलाबलीयोहोय अथवा वमनकसोहोय इसो
पुरसयांकर्माऊपरि सीतलपाणीपीवै तींपुरसकैजलनैबहवा
वालीनसांहैसोदूषितहोय अरस्नेहकरिकैलिपीजोवेहीनसां
लांकैबिसेजलोदरनैपैदाकरैछै ओसीतलजल पाछै ओजं
लोदरपैदाहुवोथकोनाभिकेचोगडदाई गोलअरचीकणो अ
रवडोबधै पाणीकीमसककीनाई जलसूंभसोथको तदिओम
नुष्यहैसो वैसेतीबहुतदुषीहोय अरवेंमनुष्यकोसरीरकांपै
येलक्षणजीमैहोयतीनैजलोदरकहिजे ८ येसर्वहीआहुंउद
ररोगउपजतांहीकष्टसाध्यछै अरबलवानपुरसकैजीतैजलो
दरनहींहोय अरतत्कालकाहुवा १ अधउदररांगांकोअ
साध्यलक्षणलिप्यते बद्गुदोदरहोयतोएकपक्षउपरांति
असाध्यजाणिजे अरजलोदरअसाध्यहीछै २ अथपुनः

असाध्यलक्षणलिख्यते पसवाडामेंसूलचालै जीकानेत्रांपर
 सोईहोय अरइ दीवांकीहोय जीकासरीरकीलचागलिजाय अ
 रजीकासरीरकोलोहीमांसबलजातोरहै अभिमंदहोयजाय
 ओपुरसअसाध्यजाणिजे ३ अथपुनः असाध्यलक्षणलि
 पसवाडामेंसूलचालै मांनूपसवाडादूटिगयाहोय अन्नमेंसूरु
 चिजांतोरहै सरीरमेंसोजोहोयआवै अतीसारहोजाय अर
 जीकोउदरीतोछै अरभर्योदोषैतोउदररोगनेअसाध्यजाणि
 जे ४ अथवातोदरकोजतनलिख्यते दसमूलकाकादामें
 अरउकोतेलनांषिपीवैतौवातोदरइरिहोय १ अथवा त्रिफला
 काकादामेंगोभूतनांषिपीवैतौवातोदरजाय २ अथवा कूठ दां
 लूणी जबधार पाठ सींधोलूण संचरलूण आंभुरोलूण वच
 सृंढि येवरावरिले तानेंमिहींवांरिदंक ५ गरमजलसूंछैतौवा
 तोदरजाय ३ इतिकुष्टादिचूर्णम् अथवा इकपोखोलस
 णटका १०० तानेंवांरिपाणीसेर ११ ६ मेंओटावै तामेंओदतांहीये
 ओषदिनांषै सृंढिटका १ कालीमिरचिटका १ पोपलिटका १
 साधकीजउटका १ संचरलूणटका १ बिडलूणटका १ त्रिफला
 टका ३ दांलूणीटका १ सहजणांकीवकलटका १ अजवाय
 णटका १ गजपीपलिटका १ निसोतटका ६ तानेंमिहींवांरिदें
 लसणकाकादामेंनांषै ईमेंतेलसेर ३२ नांषै पाछैईनेमधुरी
 आंचसूपकावै येसर्वरसअरओषदिबलिजाय तेलमात्रआय
 रहै तादिईनेउतारि वासणमेंभरिराषै पाछैईनेदंक ५ प्रातःका
 लआपकीअग्निमाफिकपीवैतौसगलाउदरकारोगजाय अर
 मूल लड्डनें उदावर्तनें अन्नहडिनें पार्श्वसूलनें आंवसूलनें

अरुचीनें फीयानें अधोलानें हृमफुटणीनें सर्ववायकारोगानें योम
होनायेकमें इरकरैछै ४ अथपित्तोदरकोजतनलिष्यते जुल
बकालेवासूपित्तोदरजाय ५ अथकफोदरकोजतनलिष्यतेनि
सोतकोचूर्णदंकराउंटणीकाइधमेंनांषि अरअरमकोतेलनांषि
दंकरा ५ अरइहीमें पीपलि पीपलामूल चिचक अथेल्यभीरनांषि
वेंदूधनें महीनायेकतांईगरमकरिपीवैतौकफोदरजाय ६ अथ
सन्निपातकाउदररोगकोजतनलिष्यते स्रंढि त्रिफला यां
कोकादोकरि तीमें दहीं अरतेल अथवा घृतनांषिपकावै पाछै
औतेल अथवा घृतईनेंयोषायतौ सन्निपातकाउदररोगजाय
७ अथवा गरमइधमेंअरमकोतेल अरगोभूत्रनांषिपीवैतौ
वायकोउदररोगजाय ८ अथवा छांछिमेंसंचरलूण पीपलिनां
षिपीवैतौवातोदरजाय ९ अथवा मिश्री कालीमिरचियेजलसूं
पीवैतौपित्तोदरजाय १० अथवा अजवायण पांउंरूषकीजड
जीरो स्रंढि कालीमिरचि पीपलि यांनैवांटिदंकरा ५ गरमपाणीं
सूंलेतौकफोदरजाय ११ अथवा स्रंढि कालीमिरचि पीपलिब
वषार सांधोलूण यांनैवांटिदंकरा ५ गरमपाणीसूंपीवैतौ सन्नि
पातकाउदररोगजाय १२ अथनासयणचूर्णलिष्यते अज
वायण पांउंरूषकीबकल धणों त्रिफला पीपलि कालेजीरो
अजमोद पीपलामूल वायविडंग येसर्ववरावरिले दांसूंणीये
कओषदिकाहिस्सासूतगुणीले निसोतएकओषदिकाभागसूं
दुणीले इंद्रायणयेकओषदिकाभागसूंदुणीले थोहरिकोइधस
वंसूंचैगुणीले यांसारानेंमिहीवांटि थोहरिकाइधकीईकैपुट
१दे पाछैसुकायदंकरा २॥ गरमपाणींसूंलेतौ उदरकारोगानें

२६९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १३

वायकारोगानैदूरिकरै अरई बौरकी बकलका कादासूंलेतौ गोला
 कोरोगजाय ईनैदासूंलेतौ आफराकोरोगजाय अरमडासूंलेतौ
 बंधकुष्ठजाय अरईनैदासूंकारसकेसाथिलेतौ व वासीरुजाय गर
 मपाणीसूंलेतौ अजीर्णजाय अरयोभगंदरनै पांडुरोगनै पासीनै
 सास नै क्षयीरोगनै संधहणनै कोदनै मंदाग्निनै विसमात्रनै
 योचूर्णदूरिकरैछै जेसैं भगवानको सुदर्शनचक्रदेखानैमारैतैसे
 योनांरायणचूर्णयांरोगानैदूरिकरैछै १२ इति नारायणचूर्णम्
 अथवा ओहरिकोदूध दांतूणी त्रिफला वायविडंग कट्याली
 चित्रक कूकर भांगरो येसारासेर ३२ ले यांसूंचौणरोपाणी घाले
 अरईमैसेर ७१ गऊको घृतजांयै पाछै मधुश्रीआंचसूंईनैपंकावै
 येसाराबलिजाय घृतमात्रआयरहै नदिईनैउतारि पात्रमेंपालिरा
 वै पाछै ईनैटंक २॥ लेतौ जुलाबलागिउदरकारोगानैदूरिकरै १४
 इति नारायणघृतम् अथवा सागीकीजड दारहलद कुटकी
 पटोल हरडैकीछालि भींबकीछालि देवदार संहि गिलवै ये
 सर्ववरावरिले यांनेजौ कूटकरिटंक ५ कोरोजीनांकादोलेतीका
 ठामेंगोमूंन अरगूगलनांषि रोजीनांपीवैतौ सफोदरपसवाडाकी
 सूल सास पांडुरोग येसाराजाय १५ इति पुनर्नवादिक्काथः
 येसाराभावप्रकासमैछै अथवा अजवायणटका १४ सेकी
 सुहागोटका २ यांकोचूर्णकरिटंक २॥ गरमपाणीसूंलेतौ उदर
 कारोगजाय १६ अथवा पीपलिटका ५ तीनैथे हरिकादूधमें
 दिन ७ भेवै रोजीनांसुकायछायमें पाछै यांनैमिहिंवांदिमासा ४
 जलसूंयेकदिनकाआंतरासूंले ईउपरिछाकिचावलपायतौ
 उदरकोरोगजाय १७ इति उदरामयहरचूर्णम् अथवा

पीपलि १००० तीकैथोहरिकादूधकीपुट ७ दे अथवा हरडैकाचूर्ण
 कैथोहरिकादूधकीपुट ७ दे तीनेदंक १ गोमूतसूलेतौ सर्वउदर-
 कारोगजाय १८ अथवा दांत्यूणी पीपलि सूंठि येवरावरिले नो
 षयांसांरांसूंदूणीले बिडलूणायांसूंचौथाईले पाछैयानैभिहीवां
 रिदंक १ गरमपाणीसूलेतौफ्रीयानै गोलानै मंदाभिनें पांडूरो
 गनै उदरकारोगनै यांसांरानैयोदूरिकरेछै १९ अथवा आकस
 पानानै अरसींधोलूणमटकीमैघालै वेंकामूंटानैदांकि फूंकदे
 पाछैयानैवांरिदंक ५ रोजीनांछाछीसूले अथवा गवारकापाठा
 सूलेतौ उदरकारोगजाय २० अथवा सूंठि गुड अथवा गुड हर
 डै अथवा गुड पीपलि यानैदंक २१ रोजीनांषायतौ उदररोगनै
 सोजानै पीनसनै षासनै अरुचिनै जीर्णज्वरनै बवासीरनै संध
 हरीनै कफका अरवायकारोगानै ईनैसेयांधका योरोगानैदू
 रिकरेछै २१ येसाराजतनवेद्यरहस्यमैलिप्याछै अथजलो
 दरकोजतनलिप्यते नीलोथूथो गंधक पीपलि हरडैकाछा
 लि येवरावरिले यांनैभिहीवांदि यानैथोहरिकादूधसूंदिन ५
 षरलकरै पाछैकिरमालाकीगिरिकारसंसू ५ षरलकरै पाछै
 ईनैमासो १ रोजीनांगरमपांणीसूलेतौ जलोदरजाय ईउपरि
 चाबलपाय उपरिआंमिलीकोसरबतपीवै २२ इतिउदरदि
 रसः योजोगंतरंगिणीमैछै अथवा सूंठि कालीभिरवि पी
 पलि पांचूल्ण सुहागो साजी येसर्ववरावरिले यांसर्वकातुल
 सोध्याजमालगोदाले यांसांरांकैदांत्यूणीकारसकीपुट ३ दे पा
 छैबिजोराकारसकीपुट ३ दे षरलकरि लायासुकायले पाछैई
 नैअधरतीप्रमाणयानैयायतौ सर्वउदरकारोगानै फीयानै गो

लानें आफरांनै सूलनै बवासीरनै यांरोगानैयो दूरिकरैछै अर
 दैनै नेनमैंआंजां सर्पकोजहर दूरिहोयेछै २३ इतिउदयभा
 स्कररसः योरसरलप्रदीपमैंछै अथवा आककोदूधरका
 २। कुढाकीछालिटका २॥ चित्रकटका १॥ पीपलिटका १॥ संपाह
 लीटका १॥ नीलकीजडटका १॥ गऊकोघृतसेर ३१ थोहरिकोदू
 धटका ६॥ निसोतटका १॥ हरडैकीछालिटका १॥ कपेलोटका १॥
 यांसारिऔषधांमिहींवांदि येकडीकरै पांणीसेर ३५मैंयालि
 घृतसमेतअभिऊपरचटावणी मधुरी आंचसूं पचावणी पा
 रीउगेरैसर्ववलिजाय घृतमात्रआयरहै तदिघृतउतारिवास
 णमैंयालिराखै पाछैईघृतकीजितनीबूंदपाय तितनाहींजुला
 बलागै तौइतनारोगजाय उदररोगानैं सोजानैं भगंदरनैं गो
 लानैं यांरोगानैयोघृतदूरिकरैछै २४ इतिविधुघृतम् योवै
 घविनोदमैलिथोछै इतिउदररोगकीउत्पत्तिलक्षण
 जतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराज
 राजराजेन्द्रश्रीसैवाइप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसा
 गरनामग्रंथे मेदरोग कार्श्यनाम क्षीणपणांकोरोग उदर
 रोग यांसर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणजतननिरू
 पणानामत्रयोदशस्तरंगः समाप्तः १३ अथसोथनामसो
 जारोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते ज्यांपुरसांकैबचन
 विरेचलियांहोय तींकारिडूबलाहोय अरजुरादिकरोगसूंडूब
 लाहोय अथवा लंघनादिकसूंडूबलाहोयत्यांपुरसांकै पारीव
 स्त पाटीवस्त तिषीवस्त उन्हीवस्त भारा दहीं काचीवस्त मां
 टी साक विरुडूवस्त गौहूंकीमैदा जहरकोमित्योअन्न यांका

षावांसू अरवासांरघणौ वल्लौरहवो येदमैआबल्ले अरजुलाबले
 नहीं अरचोटलागिवासू काचागर्भकांपडिवासू जुलाबलेरपां
 चकर्मकरैछै त्यांमैंकुपथ्यकांकरिवासू अतनीवस्तांसू बांहव
 लाआदम्यांकैसोजाकोरोगहोयछै सोओसोजाकोरोगनव९प्र
 कारकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ वातपित्तको ४ वातक
 फको ५ कफपित्तको ६ सन्निपातको ७ चोटलागिवाको ८ वि
 सको ९ अथसोजाको पूर्वरूपलिख्यते सरीरमेंवायहोय
 अरनसानेपसारतापीडाघणीहोय अरसरीरभास्वोरहै येजां
 मेंलक्षणहोयतदिजाणिजेईकै सोजाकोआजारहोसी १ अ
 थसोजाकोसांमान्यलक्षणलिख्यते आपकाकारणंकरि
 केंदुष्टदुबोजोवाय सौरक्तपित्तकफकरिकैं वेंकागतिरुक्जाय
 तदिरक्तपित्तहैसोसरीरकाजोवाहरलीनसां त्यांप्रतिकफनें
 प्राधिकरि सरीरकीजोत्वचासांसयांकासमूहनेंघणोंफुलाय
 देखै ईकारणईनैसोजाकोरोगकहैछै सोवहसोजोदतनीवात
 नैंकरैछै सरीरनेंभास्वोकरिदे मनमेंआवेजैठेईहोजाय वेंसां
 जामेंगरमपणोंहोजाय नसांनीकलिआवे रंगमांचहोयआवे
 सरीरकोवर्णओरसोहोजाय येलक्षणहोयतदिसोजाकोरोग
 कहिजे १ अथवायकासोजाकोलक्षणलिख्यते सरीरकीत
 चाहैसोकठोरहोजाय लालहोजाय अथवा कालीहोजाय अ
 थवा सांईहोयजाय तदिवेंकैसेकादिककरै तदिआछाहोजाय
 अरदिनमेंघणीसोईहोजाय येजांमेंलक्षणहोय तानेंवायकी
 सोईकहिजे १ अथपित्तकीसोईकोलक्षणलिख्यते सरीर
 कीत्वचाकोमलहोय जीमेंबुयंगंधनेंलीयांहोय पीलीहोयलज

२७३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

इनेलीयां होय सरीरभमें जुर होय पसेव घणां आवै तिस घणीला
गै मद होय आवै सरीरको स्पर्श सहावे नही न च लाल होय सरी
र की त्वचा में दाह घणों होय ये लक्षण होय तीने पित्त की सोई कहि
जे २ अथ कफ की सोई को लक्षण लिख्यते जाके सोई में सरीर
भास्यो होय अर चामंडी पीली होय भोजन मूर्ख बिजाती रहै नांद
घणां आवै अग्नि मंद होय सोई उंची नहां होय रात्रि नैव धिजाय
ये लक्षण जां में होय तीने कफ की सोई कहि जे ३ अर दोय दोय दो
सां का जी में लक्षण मिलै तीं में दोय दोय दो सां की सोई कहि जे
अर जी सोई में सर्व दो सां का लक्षण मिलै तीने सन्निपात की सो
ई कहि जे १ अथ चोखला गिवांसूं उपजी जो सोई तीं को ल
क्षण लिख्यते सत्त्वादिक काला गिवांसूं उपजी जो सोई अथवा
मीन पवन काला गिवांसूं उपजी अथवा दही काषावांसूं उपजी
सोई अथवा भिलावा काला गिवांसूं उपजी सोई अथवा कों
ठि काला गिवांसूं उपजी सोई अथवा जिमी कंद नै आदिलेर
तीं काला गिवांसूं उपजी सोई सोवाये कजागा की सोई सारा सरी
र में फैल जाय अर वें सोई में दाह घणों होय लाल होय आवै-
और पित्त का सर्व लक्षण मिलै ये लक्षण जां में होय तीने शत्त्वा
दिक काला गिवा की सोई जाणि जे १ अथ विसैल जिनां वरां दि
कांते उपजी जो सोई तीं को लक्षण लिख्यते विसैल जिनां वरां
कामूत्र को स्पर्श करि वांसूं सोई होय अथवा माद काला गिवा
सूं सोई होय दांतां का ठिवांसूं सोई होय नष काला गिवांसूं सोई
होय विसैल जिनां वरां का मल मूत्र वीर्य ये वस्त्रां का स्पर्श कंठों
सोई होय विसहस्र का पवन का स्पर्श कंठों सोई होय जहर

कापावासू अथवा लागिवासू सोई होय त्यांको योलक्षण वें सोई में पीडाघणी होय सरीरमें घणी फैलि जाय दहघणों होय तदिजाणि जेया बिसकी सोई छै १ अथ सोई काउ पद बलिष्यते पास होय तिस होय छर्दि होय सरीर दुर्बल होय जुर होय भोजनमें रुचि जातीर है ये सोई काउ पद बछै यांउ पदवांवालां को जतन कीजेन हीं १ अथ सोई वाला को कष्ट साध्य लक्षण लिख्यते पेडू सूं ले रसना ताई सोई होय वां कष्ट साध्य छै अरसर्व सरीरमें सोई होय वा सोई असाध्य छै १ अथ पुनः असाध्य लक्षण लिख्यते पुरस के तो प्रथम पगां सूं ले रसुषरु परताई सोई चाले स्त्राफे प्रथम सुध के सोई होय अरपगां तांई आवै वा सोई असाध्य छै ई को जतन छैन हीं अरप्रथम पेडू में होय अरसर्व न फैले वां सोई वां दोन्यां के असाध्य जाणिजे १ अथ सोथ रोग को जतन लिख्यते सूं छि सारी की जड अरंड की छालि पीपलि पीपल मूल व व्य चित्रक यांको काटो लेतौ वायको सो जो जाय १ परोल त्रिफला नांव की छालि दारुहलद यांको काटो गूगल नां धिलेतौ पि त्तकी सोई नैं तिस नैं जुर नैं यां औषधांको काटो दूरि करै छै २ अथ कफ की सोई को जतन लिख्यते पीपल्यां नैं अथवा हरद नैं थोहरिका दूध में भिजोय दिन ३ पाछै यां नैं सुकाय मिहीं वां टिदंक २॥ रोजी नां दिन १० लेतौ सन्निपात की सोई जाय ४ अथ भिलावा की सोई को जतन लिख्यते निल अरकाली मांठी भैस का दूध में तथा भैस का मांषन में वां टियांको लेप करैतौ भिलावा की सोई दूरि होय ५ अथवा महलौटा काला तिल में सिको दूध अरभैस को मांषन तीमें यां नैं वां टि यांको लेप करै

तौभिलावाकी सोईजाय ६ अथवा शालहृक्षका पांनकोलेपक
 रैतौभिलावाकी सोईजाय ७ अथवा विसकी सोईका जतन विसका
 प्रकर्णमैलिषयां अथ सोथरोगका सामान्य जतन लिष्यते
 हरडैकी छालि हलद भाइंगी गिलवै चित्रक दारुहलद साठी
 कीजड सूंठि यांकोकाटोलेतौ उदरकी पणांकी सूंटाकी सोईत
 तकालजाय ८ इति पथ्यादिकथ्य अथ पोतांकी गोईको
 जतन लिष्यते त्रिफलांका काढा मैंगो मूतनां पिपीवैतौ पोताकी
 सोईजाय ९ अथवा विसबापराकीजड देवदारु सूंठि यांकाका
 वासू सोईजाय १० अथवा रांयूणी निसोत सूंठि काभिभिरचि
 पीपलि चित्रक यांकोकाटोलेतौ सोईजाय ११ अथवा सनामुषी
 विसबापरो नांबकी छालि गोमूत यांकोकाटोलेतौ सोईजाय
 १२ अथवा साठीकीजड दारुहलद सूंठि सहजणांकीजड स
 रसू यांनैकांजींका पाणीसूंचांठि क्यौंगरमकरिलेपकरैतौ सर्व
 सोईभान डूरिहोय १३ अथवा गुडआदो अथवा गुड सूंठि
 अथवा गुड हरडैकी छालि अथवा गुड पीपलि यांनैमिहींचां
 दिटंक २॥ सूंलेरटका १॥ भरतांई वधतीषाय महीनांयेक १ तां
 ईतौ सोजानै पानसनें गलाकारोगनें सासनैं घासनैं अरुचि
 नैं जीर्णज्वरनें बवासीरनें संग्रहणीनें कफवायका विकारनें
 यां सारां रोगांनें यो डूरि करैछै १४ अथवा पीपलि सूंठि यांनैमि
 हांवांठि यांबसंबरिगुहमिलायषायतौ सोजानै आंवनें अ
 जीर्णनें सूलनें यांनें यो डूरि करैछै १५ अथवा गुडटका ३॥ भर
 सूंठिटका ३॥ भर पीपलटका ३॥ मंडूरटका १॥ भर तिलटका १॥
 यां सारांनें मिहींवांठि यांको एकजीव करै पाछैटंक २॥ रोजीनां

पायतौ सर्वप्रकारकी सोई जाय १६ अथवा सूकी मूला सारीकी
जड दारहलद रास्मा सूंदि पांकोकाटोकर ईरसमें तेल पकायले
पाछे ई तेल को मर्दन करै तौ सूल संयुक्त सोई जाय १७ ये सब ज
तन भाव प्रकास में लिख्यते अथ सोजा का दाह का दूरि हुवा
कोले पलिष्यते बहेडा की मीजी नें पाणी में बांदि वेंकालै पकरै
तौ सोजा का दाह को दोस दूरि होय १८ अथवा सादी की जड दारु
हलद गिलवै पाठ सूंदि गोषरू ये बराबरिले यांने मिहीं बांदि
दंक ३॥ गो मूत्र सूं पीवै तौ सर्वप्रकार को सर्वसरीर में फैल तो सो
जो जाय अरई सूं आठ प्रकार को उदर रोग जाय अरई सूं ब्रणमा
त्र जाय १९ इति पुनर्नवादि चूर्णम् अथवा सादी की जड नीं
बकी छालि पटोल सूंदि कुटकी गिलवै दारु हलद हरडै की छा
लि पांकोकाटोले तौ सर्वांग सोथनै पासनै उदर रोगनै पांडुरोगनै
सांसारानै यो दूर करै छै २० इति पुनर्नवादि क्वाथ इति सोय
नाम सोजारोग नी उत्पत्ति लक्षण जनन संपूर्णम् अब दृ
ष्टि रोग ई नै लौकिक में अंड दृष्टि अर अंन दृष्टि रोग कहै छै
तीं की उत्पत्ति लक्षण जनन लिख्यते अंड दृष्टि ६ प्रकार को
वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ मेदको ५ मूत्रको ६
अंन दृष्टि ये क प्रकार को वायको १ अथ अंड दृष्टि का सामान्य
लक्षण लिख्यते आधी गामी जो पवन है सो आपका कारण सूं
कुपित कुबोधको आंदां में अरजां पांकी संध्या में प्राप्ति होय अर
ऊठे ही विचरतो थको ऊठे सो जानै अर सूलनै करै पाछे बां दोन्यां
आंदां नै अर आंदा की घाल की मंडा खांनै बहवावाला जो न सांतीं
नै ओ दुष्ट पवन प्राप्ति होय वांन सांने पीडित करै अर बां दोन्यां आं

नि अरदो न्यां आंडा का भंडारा नें वधाय देवै छै तीनैं वैद्य अंड हडि कहै छै १ अथ वाय का अंड हडि को लक्षण लिख्यते वाय क रि कै भरी औ सी जो लुहार की धमणि ती को सो सार्श होय अर लूणी होय अर विगार कारण ही बें में पीड़ा होय ती नें वाय की अंड हडि कहि जे २ अथ पित्त की अंड हडि को लक्षण लिख्यते पक्ष्मे जो गूलर को फल ती सरी सो सो जो होय अर बें में दाह होय ती नें पित्त को अंड हडि कहि जे ३ अथ कफ की अंड हडि को लक्षण लिख्यते ओ चंड हडि सीतल होय अर भारी होय अर चीकणी होय अर्जी में बुजालि होय अर करडी होय अर बें में पीड़ा थोड़ी होय तदिजा निजे वा अंड हडि कफ की छै ४ अथ लोही का दुष्ट पणों की अंड हडि को लक्षण लिख्यते काली होय फोडा जी बें घणा होय अर पित्त की हडि का जी बें लक्षण मिलै ती नें रक्त दुष्ट की अंड हडि कहि जे ५ अथ मेद की अंड हडि को लक्षण लिख्यते सर्व कफ का साजी में लक्षण होय अर क्रोमल जो ताड़ को फल ती सिरीसी होय ती नें मेद को अंड हडि कहि जे ६ अथ मूत्र कारोकि वाका अंड हडि को लक्षण लिख्यते जो पुरस मूत्र का सेग नें शकै अर मार्ग नै चले ती कै मसक सरी सो क्रोमल अंड वधै अर बें में पीड़ा होय अर मूत्र कष्ट संज्ञत रे ती नें मूत्र कारोकि को अंड हडि कहि जे ७ अथ अंत्र हडि की उत्पत्ति लक्षण लिखांव स्तां सूवाय है सो को पकुं भासि होय इसाती भोजन करे क रसीतल जल में तिरे जुद्ध में उंचोर है ती संभार का उदावास गर्ग चलि बास अंगां कुं औ ठीउं ठीकरि बास और कोई भयंकर स्तका करि बास यां कारण सुंपवन है सो सांकुचित होय सर

कीछोदीआंताकाअवयवानें आपकास्थानथकीनींचैप्राप्तिक
 रें पेडअरुजांघांतींकीसंधिमेंआफरोकरे अरुंठेपीडाकरे पीछे
 लुस्यहैसोहाथसूंआंडनैंभीचै तदिबोओडओलिआपकास्थान
 स्थानमेंवैदिजाय अरओरूंकहीतरैआफरोहोय तदिबारेनीक
 लिआवै अरजीपुरसकैवायकोसंचयघणोहोय तोंकैआंताअवय
 वमिलिअंनवृद्धिनैंकरिलेवैछै ओअंनवृद्धिवायकीवृद्धिकीतुल्यछै
 योअंतरवृद्धिरोगअसाध्यै २ अथअंडवृद्धिकोजतनलिष्यते
 दूधमेंअरुंडकोतेलनांषिमहीनायेकतांडपीचैतौवायकीअंडवृद्धि
 जाय ३ अथवा गूगल अरुंडकोतेल पैदोन्यंगोमूतसूपीचैतौषि
 तकीअंडवृद्धिजाय ४ अथवारक्तचंदन महुवो कमलगट्टा बस
 कमलकीजड़ यानैंवरावरिले पाछैयानैंदूधसूंमिहीवांदि ऊढेले
 पकरैतौ पित्तकीअंडवृद्धिनैं दाहनैं पीडानैं योलेपदूरिकरैछै ५
 अथवा सूंदि कालीमिरचि पीपल त्रिफला यांकोकाढेले तों
 मेंजवबार सींधोलूणनांषिपीचैतौ कफकी अंडवृद्धिदूरिहोय ६
 अथवा कडवीतूंबी लूषी आंवस्तांकोसुहावतोसुहावतोसेकड
 र अरबांकापाणीकोतरडोदेतौसर्वप्रकारकीअंडवृद्धिजाय ७
 अथवा वारंवारऊढेजोकलगायडराकोलोहीकटावोकरैतौ
 रक्तकाकोषकौअंडवृद्धिजाय ८ अथवा जुलाबसूंरक्तकोअंड
 वृद्धिजाय ९ अथवा मिर्चासहतपांणीमेंनांषिपीचैतौरक्त
 काकोषकोअंडवृद्धिजाय १० अथवा सीतलद्रव्यकालेपसूं
 रक्तअरपित्तकोअंडवृद्धिजाय ११ अथवा तुलसीकापाननैं
 सिजायवेंकोसुहावतौलेपकरैतौ मेदकोअंडवृद्धिजाय १२ अ
 थगोसोउत्तरगयोहोयतांकोआछाहोवावैओषादित्

२७९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

नेडिको घृतकांसी की थाली में मथै तांमै राल मिलावै पाछे औंरु
 पे पाछे वैमै क्यूसींगी मोहरो भिन्न वै पाछे ईको गोसां के मर्दन करैतौ
 गोसां प्राणो होय १३ औषदि अंड हृदि की पैरी को गूंदतंक १५ व
 चतंक १० सूंरिदंक १५ गऊका डूध पैसा - तांमै सालिम मिश्री पैसा -
 भर मिलायतंक ४ रोजीनां दिन २१ तांई आंड़ां कै लेप करैतौ अंड हृदि
 जाय १४ अथवा आंड़ां की सीमणिका पसवाड़ां कैनी चैमि हीं वस्त्र
 करि धेनें वां धैतौ मूत्र की अंड हृदि जाय १५ ये सर्व जतन भाव प्रकास
 में छै अथवा रास्ना महलोठी गिल वै अरंड की जड़ परैरी कि
 माला की गिर गोषरू पटोल अरंड सो यांको काटो करै तांमै अरं
 डको तेल नां पिपी वैतौ अंन हृदि जाये १६ अथवा हरडै की छा
 लि चिरायतौ धणों ये सारी पैसा पैसा भरिले लवंग पैसा पौण
 भरिले सना सुषीर का ११ भर मिश्री यां सारां की बराबरिले अर
 मिश्री बराबरिस हत मिलाय रोजीनां टंक ३१ पायतौ निश्वे अंड
 हृदि हरि होय १७ ये वै घर हस्य में लिप्या छै इति अंड हृदि
 अंन हृदि रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्ण अथव धारो
 गईनें लौकिक में वद कहै छै तां की उत्पत्ति लक्षण जतन लि
 धणी भारी धणी कफकारी वस्तु धाय अथवा भास्ना मांस का
 पा वासूं अथवा पित्तकारी मिथ्या विहार स्नासंग संकुपित ह
 वोजो पित्त संयुक्त वायसो पेडू अरजोय तां की संधि में सो जानै
 लीयां गांठि नै करै छै वां गांठि जुर नै जुर नै सूल नै करै अरपगां में
 पीडा करै छै तां नै वैद्य है सो वधारो गईनें लौकिक में वध कहै छै अ
 थव दको जतन लि हरडै की छालि पीपलि सींधो लूण ये ब
 राबरिले यां नै मिहीं बांदि यां नै अरंड का तेल में मूनें पाछै टंक ३१ यां नै

२८० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

वायतौवधकोरोगजाय १ अथवाजीरो आंठरूखपीवकल क्रूर
गौहूं बोरकापांनयानैकांजीकापाणीमेंमिहींवांटे बदकैलेपकरै
तौबदकोरोगजाय २ येभावप्रकाशमेंलिप्याछै अथवातत
कालकोमाखोजोकागलोतीकोमांहिलोमल्लले तीनैंखूंयेकगर
मकरिवदकेबांधै अथवालेंपकरैतौततकालवदआछीहोय
३ योबैद्यरहस्यमेंछै अथवाकुंदरु भेडिकादूधमेंवांटे वैकै
लेपकरैतौवदआछीहोय ३ इतिवदरोगकीउत्पत्तिलक्षण
जननसंपूर्णम् अथगलगंड १ गंडमाला २ अपची ३
ग्रंथि ४ अर्बुद ५ यांरोगांकीउत्पत्तिलक्षणजननलिप्यते
जांपुरसकागलकैआंडकीसीनांईगाढोसोजोहोय लटकै ओसो
जोवडोहोय अथवा छोढोहोय तीनैंवैद्यहैसोगलगंडरोगकहैछै
अथगलगंडकोसामान्यलक्षणलिप्यते वायअरकफये
दोनूंगंलामेंडुष्टहोय अरगलकैबीचिमेंदेनेंपकडिसनैंसनैंमेंद
नैंआंडकीसीनांईआपकाचिन्हानैंलिचयाचदेछै तीनैंगलगंडक
हिजे सोगलगंडतीनिप्रकारकोछै वायको १ कफको २ मेदको ३
अथवायकागलगंडकोलक्षणलिप्यते जीमेंपीडाधलीहो
य अरगलकैंनिंसांकातीहोय अथवा लालहोय अरबांमैक
रोरपणीहोय अरमोडीवधै अरपचैनहां अरमूंदोविरसहो
जाय अरवैंकोतालबो अरगलो लिप्योसोदासैकफकरिकैंयेंजीं
मेंलक्षणहोयतीनैंवायकोगलगंडकहिजे १ अथकफकभल
गंडकोलक्षणलिप्यते गलकैआंडकीसीनांई लटकतीसोई
स्थिररहै अरभारीरहै अरवैंमैखुजालिधलीआवै अरवासीमल
होय अरमोडीवधै अरमोडीपकै अरवैंमेंपीडकमहोय अरवैंको

५१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

हूंदीमीहो होय अरताल नो अरगलोक फसूलि प्यो दसै तीनैं कफ को
 ल गंड कहिजे २ अथ मेद कागल गंड को लक्षण लिख्यते औ ची
 कणो होय कोमल होय पीलो होय अरवें में खुजा लि होय अरवें में पी
 डा होय अरगला कै घोया की सी नाई लटके अरवें की जड थोड़ी हो
 य अरवें का देह का अमृत मान माफिक घरे वधै अरवें को सूंदो चीक
 शो होय अरओगला ही में बोलै ये लक्षण जौ में होय तीनैं मेद काग
 ल गंड कहिजे ३ अथ गल गंड को असाध्य लक्षण लिख्यते जौ
 कै सासनी दिआयै अरवें को सर्व सरीर कोमल होजाय अरओ व
 रस १ उलंघि जाय अरभोजन में रुचि जाती रहै अरसरीर क्षीण
 पडि जाय अरस्वर आछौनिक लैन ही ओगला गंड वालो असाध्य
 जाणिजे ४ अथ कूंडमाला को लक्षण लिख्यते जौ कागल है
 अथवा कां पडै अथवा कां धी कै अथवा पेड़ की अरजां पां की सं
 धि में बोर प्रमाण अथवा आवला प्रमाण मेद कफ की घणी गादी
 गांठि पडि जाय तीनैं वैद्य गंडमाला को रोग कहै छै १ अथ अप
 ची को लक्षण लिख्यते अरगाह गंडमाला घणादिन की होजा
 य अरवें में ये लक्षण होय वागांठि पडि जाय अरवें में राधि पडि
 करि वहनी कले अरओ रुंदे ही पैदा होती जाय अरमिदती भि
 य अरदिन वें में घणाख गै तीनैं वैद्य है सो अप ची कहै छै १ अथ
 अप ची को असाध्य लक्षण लिख्यते पसना डामें सूख होय प
 स होय ज्वर होय अरवमन होय ये लक्षण होय तो असाध्य
 शिजे १ अथ यंत्रि जौ नैं गांठि कहै छै ती को लक्षण लिख्यते
 बाय पित्त कफ है सो ओही नैं मांस नैं मेद नैं नसानैं दू सित क
 र गोलं चो सोई नै लायां औ साजो गांठि तीनैं पै दाकरे छै सो

अमृतसागर
 प्रतापसागर
 तरंग
 अमृतसागर
 प्रतापसागर
 तरंग

वैद्यग्रंथिनामगांठिकहैंछै सांयागांठिपांच ५ प्रकारकीछै वाय
 की १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ नसांकी ५ अथवायकीगांठि
 कोलक्षणलिख्यते प्रथमवागांठिचामडीनैघ्नैत्रिकरिवरीहोय
 पाछैवैमैचदकाचालै पाछैवैमैब्याधणीहोय अरवाफूटैजदि
 निर्मललोहीनैचहै १ अथपित्तकीगांठिकोलक्षणलिख्यते वा
 गांठिसीतल होय जीकोवर्णओरसोहोय जीमेंअल्पपीडाहोय
 जुजालिजीमेंघणीहोय पथरसिरीसीगांठिहोय मोडीवधै बाफू
 टैजदिजाडीराधिनासरे लोहीनहींनीसरे यैलक्षणजीमेंहोयननै
 कफकीगांठिकहिजै २ अथमेदकीगांठिकोलक्षणलिख्यते
 जींसरीरमाफिकवागांठिवधैघटै वागांठिचीकणीहोय अरवरी
 होय जुजालिहोयवैमैपीडघणीहोय अरवाफूटैतदिषलसिरीसो
 घृतसिरीसोवैमैनीकलै तीनैमेदकीगांठिकहिजै ४ अथनसां
 कीगांठिकोलक्षणलिख्यते वागांठिनिर्मलपुरसकैषेदसंउप
 जै नसांनैसंकोचकरै वायगांठिनैउपजावै वागांठिउंचीअरगो
 लहोय अरवैमैपीडाहोय अरकोमलहोय अथवा करडीहोय
 पीडाभीनहींहोय अरवांगांठिमर्मस्थानमेंहोयनौनिश्चैहीअसा
 ध्यछैनहीं वागांठिकष्टसाध्यछै ५ वैमर्मस्थानभीलिषूछं ॥
 गाल गलां कांधी सरीरकीसंधिहियो गुदाकैनिकटि पीठियै
 मर्मस्थानछै अथअर्बुदसेगकीउत्पत्तिलक्षणलिख्यतेजां
 पुरसमांसघणोषातोहोय अरअन्नादिकथोडोषाय तीकैवाय
 पित्तकफहैसो दुष्टहोयवैकालोहीनै अरमांसनै वैगिगाडिवैका
 सरीरमें अथवा सरीरकायेकदेशमें बडी गोल स्थिरजीमेंथोरी
 पीडाजीकीजडयोडी मोडीवधै पचैनहीं इसीमांसकीगांठिहोय

२८३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

तीनें वैद्यहंसो अर्बुदरोग कहें छे सोओ अर्बुदरोग दोय २ प्रकार का
येक तोर का बुद १ मांसा बुद २ अथर का बुद कोल क्षण लिख्यते
आप कारण सुंदुष्ट दुबो जो पित्त सो रुधिरनें अरन सो नै संकुचित क
रै अर गनै पीडा करै बांका मांस का पिंड कर मांस का अं कूरा से तो वां
नै टकै वां नै वधावै पालें वै नै ब्यूं येक पकाय अर नो ही संयुक्त वनें ध
खेव हावै निगंतर वनें रुधिर को अर्बुद कहि जे यो असाध्य छे ईरक्त
का नां सथ की सरीर में और उ पद व पांडुरोग नै आदि लेर करै छे १
अथ मांसा बुद की उत्पत्ति संयुक्त लक्षण लिख्यते जी पुर स कै क
हां तरे सूं सूदी नै आदि लेर का ही की वें का सरीर कै चोट लगै जी ज
गां का मांस दुष्ट होय तदिओ मांस दुष्ट दुबो थ को उंटे सो जानै करै
सो वै सो जा में पीडन ही अर वें सो जा को देह का वर्ण सिरी सो रंग हो
य अर ओ सो जो पकै न ही अर ओ सो जो पथरी सिरी सो गादो हो
य अर ओ सो जो थिर रहै ये जी में लक्षण होय तीनें मांसा बुद कहि
जे यो भी असाध्य छे २ अथ अर्बुद कोल लक्षण लिख्यते जो अ
र्बुद मर्म स्थान में उ पजे अथवा नसां में उ पजे ओ छोटो भा छे तीनें
अर्बुद कहि जे १ अथ अर्बुद रोग पकै न ही तीं को कारण लि
ख्यते ई में कफ का अधिक पणां थ की अर मेद का अधिक पणां थ की
पकै न ही जूं यो असाध्य छे १ अथ गल गंड नै आदि लेर ये रोग क
हायां का अनुक्रम संज्ञत न लिख्यते सरसूं सहजणां का बीज
संसां का बीज अलसी जब मूली का बीज ये बगारि ले याने पाट
छा छि में मिहां बांटे यां को ले पकरै तीं गल गंड नै गंड माला नै गां
नै यां रोग नै तत काल दूर करै १ अथवा संगसूं जल कुंभी की रा
यां दोन्यां नै तेल में बांटे यां को ले पकरै तीं गल गंड रोग जाय २ अ

थयसांषाहूलीनेंजलसूंवांदि वेंनेंछाणि प्रतसमेंदिन १५ पावेंड
 परिसंगलकोघृतथणोषायतौगलगंडरोगजाय ३ अथवा कुट
 कीनेंवांदिवेनें पकीयीयाकाफलमेंरात्रिनेंभिजोयराषे पाछेवेंहीज
 लमेंवेनेंवांदिछाणिदिन ७ पावेंतौगलगंडरोगजाय ४ अथवा गि
 लवें नींबकीछालि छड तुणकीछालि पीपलि दोब्बूपरेंटी देवदार
 येबराबरिले यांकोकादोकरि ईकादाकारसमें तेलपकावें पाछे
 ईतेलनेंटेक ५ रोजीनांदिन १५ पावेंतौगलगंडरोगजाय ५ इति
 अमृतादितैलम् अथवाजव मूंग पदोल कडबीवस्त लषां
 अन्न बमन लोहीकोछुदावो पाछेणांकोदेवो येसारागलगंडरी
 गनेंआख्या ६ अथवाजलकुंभा सींधोल्ण पीपलि यांनेंवांदि
 प्रभातसमेंसूंठिनांषिपावेंतौकंठमालजाय ७ अथवा बरण्या
 कीजडकोकादो तांमेंसंहतनांषि पावेंतौकंठमालजाय ८
 अथवा कचनागरकीबकलटका ५। भर सूंठिटका १। भर पीप
 लिटका १। भर मिरचिटका १। भर हरदैंकीछालिटंक ५ वहेदाकी
 छालिटंक ५ आवलाटंक ५ वरण्याकीछालिटंक २। तजटंक १
 पत्रजटंक १ इलायचीटंक १ यांनेंमिहींवांदि यांबराबरिईमेंसो
 धोगूगलमिताय ईकोएकजीवकरिमासा ४ प्रभातहीजलसूं
 रोजीनांलेतो गलगंडनें अर्बुदनें गांठिनें ग्रणनें गोलानें कोढ़नें
 भगंदरनें जुदाजुदाअनूपानांसूं यांरोगांनेंइरिकरेंछे १० इति कं
 चनारिगूगलम् अथवा वायविडंगकीजड ईकोकादोकरि
 तांमेंजलभांगराकोरसनांषि तांमेंतेलअनुमानमाफिक नांषि
 मधुरीआंचसूंईनेंपकावें तदिरसमात्रबलिजाय तेलमात्रआ
 यरहै तदिईनेंसींइरनांषिउतारिले पाछेईकोलेपकरेंतौकंठ

मालजाय ११ इतिचक्रमर्दनतैलम् अथवा चिरमीकोपचांगले
 तीनैजलसूवांदि वैमैअनुमानमाफिकतेलनांषि मधुरीआंचसू
 पकावै तदिरसवल्लिजाय तेलमात्रआयरहै तदिईतेलकोवैकै
 मर्दनकरैतौकंठमालजा १२ इतिगुंजातैलम् अथअपचीको
 जतनलिष्यते सिरस्यु नींबकापान भिलावा यानैघालि बक
 रीकामूतमें यानैबांदिलेपकरैतौ अपचीजाय १३ अथवारक्त
 चंदन हरडैकीछालि लाष बच कुटकी यानैपाणीमेंवांदि ईपा
 णीमेंतेलपकावै पाछैईतेलकोमर्दनकरैतौ अपचीरोगजा
 य १४ इतिचंदनादितैलम् अथवासंदि कालीमिरचि पीप-
 लि नायविडंग महुबोसीधौलूण देवदारु यानैपाणीसंभिहीवा
 दि ईमैतेलनांषिमधुरीआंचसूपकावै जलबलिजाय तेलमात्र
 आयरहै तदिईतेलकीनांसलेतौअपचीजाय १५ इतिव्योषा
 दितैलम् अथगांधिकोजतनलिष्यते साजी मूलीकोषार
 सषकोचूरा यानैपाणीमेंवांदिलेपकरैतौ गांधिनै अर्बुदने या
 दोन्यानैयोडूरिकरैछै १६ अथरजात्पादिघृतआगेव्रण
 रोगमेंकहस्यां तीसूंगांधिउगेरैव्रणमात्रसर्वजाय अथ
 अर्बुदकाजतनलिष्यते हलद लोद पतंग धमासो मैण
 ल यानैभिहीवांदिसहतमें पाछैईकोलेपकरैतौ मेदको
 अर्बुदरोगकोदूरिहोय १ अथवा मूलीकोषार हलद सषको
 णी अंजलमैभिहीवांदि लेपकरैतौअर्बुदजाय २ अथवा इ
 षारोलूण बउकोइय यानैभिहीवांदि लेपकरैतौ अरुपंर
 कोपानबांधैदिन ७ तौ अर्बुदरोगजाय ३ अथवा सहजणां
 जठ अरसहजणांकीबीज सिरस्यु तुलसीकापान जब क

२८६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १४

रकीवकल इन्द्रजव येवरावरिले पाछैछाछिसंभिहांवांर ईको
लेपकरैतौअर्बुदरोगजाय ४ येसर्वजतनभावप्रकासमें
लिष्याछै अथवा लालअरंडकीजड छीलाकीजड यांदोनां
नेचांचलाकापाणीमेंवांरि लेपकरैतौगलगंडजाय ५ अथ
वा किरमालाकीजड चांचलाकापाणीमेंवांरिलेपकरैतौ
कंठमालाजाय ६ अथवा संभालूकीजड जलसूंवांरिलेप
करैतौ कंठमालजाय ७ अथवा सिरस्यू सूकरकीविष्टा यांनै
बराबरिले यांनैठिकरामेंबालि पाछैकडवातेलईमेंभिहांवां
टिवेकोलेपकरैतौ कंठमालजाय ८ येसर्वजतनबैधर
हस्यमेंलिष्याछै इतिगलगंडकंठमालाअपचीअंघ्रिअर्बु
दयांरोगांकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्री
हाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंह
जीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथे सोधरोगअंडहृदि
अंत्रहृदिवधनामवद गलगंड कंठमाला अपची ग्रंथि
नामगांठि अर्बुद अथ्यर्बुद यांसारांरोगांकाभेदसंयुक्त
उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणानामचतुर्दशस्तरंगः १४
अथश्लोपदरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते जोषु
रषपुराणोजले तलावउगैरैकोछउरितुमें पावैतौसीतलहा
जल तांपुरसकैयोश्लोपदरोगनिश्चैहोयछै अथश्लोपद
रोगकोसामान्यलक्षणलिष्यते जोकैंपेडूअरजांघांकी-
संधिमेंसोजोघणोकरै वेंचैपीडघणीकरै वापीडजुरनैंकरै
पाछैवासोईउंठासूंचालें सोक्रमसंपगांताईआवै ईनैंवैयहैसो
श्लोपदकहैछै केईकआचार्यहाथकैं कानकैं इंद्रिकैं आपकैं

२८७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

होवकै नाककै भासोई होय तीनै भीष्म पदरोग कहै छै वोष्ठीप
दरोग चारि ४ प्रकार को छै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्नि
पातको ४ अथवा वायकोष्ठीपदको लक्षण लिख्यते कालो
होय लूषी होय ओफाटि जाय जीमें पीड घणी होय जु र होय १
अथ पित्तकाष्ठीपदको लक्षण लिख्यते शीकणो होय पीलो
होय स्थिर होय बिनांकफ भाखापणो अर बड़ा पणो होय २
अथ सन्निपातकाष्ठीपदको लक्षण लिख्यते जींष्ठीपदमें
छिद्र घणी होय जुय चाला गि जाय यावांकी सीनाई होय ओ-
ष्ठीपद सन्निपातको जाणिजे ओअसाध्य छै ४ अथष्ठीपद
को जतन लिख्यते ईरोग बालनैं लंपन लेप स्वाद जुलाब लो
ही को छुं डाय वो गरम वस्त कोषा वो ये सारा आख्या अथवास
रस्यूं सहजणां कीजड देवदारु सूंठि यांनै गोमूत में बांदि बांको
लेप करै तौष्ठीपद जाय २ अथवा सादी कीजड सूंठि सिरस्यूं
यांनै कांजीमें बांदि यांको लेप करै तौष्ठीपद जाय ३ अथवा ध
तूरा कीजड अरुंड कीजड संभालू कीजड सहजणां कीजड सि
रस्यूं यांनै पाणी सूंमि ही बांदि ईको लेप करै तौष्ठीपद जाय ४
अथवा सहदेई तालफल काससूं बांदि ईको लेप करै तौष्ठीप
द जाय ५ अथवा साषोट कृक्ष कीव कल को काटो तीमें गो
मूत नांषि पीवै तौष्ठीपद जाय ६ अथवा हलद अर गुड ये दो
न्यंबरा बरिले यांनै मिहीं बांदि ये कजीव करि जो पुरस गोमूत
सूंई नै पीवै तौष्ठीपद रोग नैं दाह नैं कोट नैं कोट नैं यो दूषि करै
छै ७ अथवा सादी कीजड त्रिफला पीपलि ये बरा बरिले यांनै
मिहीं बांदि टंक भा सहत सूंले तौ घणां दीनां भीष्म पद जाय ८

२८८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

अथवा बडी हरडै काचूर्णमें अरंडकोतेलमिलायवेंमैंगोमूत
नांभिदिन १५ पीवेंतौ स्त्रीपदरोग दूरिहोय ९ येसर्वजतनभा
वप्रकासमेंलिप्याछै अथवा वदायरो पीपलि संहि काली
मिरचि वायविडंग यांनैमिहींवांरिपाणीमें पाछैअनुमानमा
फिक ईमेंतेलमिलाय पाछैईमेंमधुरीआंचदेपकावै तदिओ
पाणीबलिजाय तेलआयरहै तदिउतारिले पाछैईकोमर्दनक
रेंतौस्त्रीपदरोगजाय १० अथवा धतूराकाबीजानैयेकसंव
धैबीसताई तींऊपरिसीतलजलपीवेंतौस्त्रीपदरोगजाय ११
येसर्वजतनवैद्यरहस्यमेंलिप्याछै अथवा मजीठ मह
बो रास्त्रा जाल सादीकीजड यांनैमिहींवांरि कांजीमेंलेपकरेंतौ
पित्तकोस्त्रीपदजाय १२ अथवा अंगूठाऊपरलीनसांकोलो
हीकटावेंतौपित्तकोस्त्रीपदजाय १४ अथवा कसौंधीकीजड
तीनैटंक आंगूठाघृतकैसाथिपीवेंतौस्त्रीपदजाय १४ अथ
वा पीपलि त्रिफला देवदारु ईमेंनांषे पाछैयांनैमिहींवांरि
टंक २॥ रोजीनांकांजीकापाणीमेंलेतौ स्त्रीपदनै अजीर्णनै
वायकारोगनै फायांनै यांसारांरोगानैयोदूरिकरैछै अरभृष
घणीबधावैछै १५ इतिपिप्पल्यादिचूर्णसु योहंदमेंछै द
तिस्त्रीपदरांगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथविद
धीरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० हालामैरहतोजोचाय पित्त
फ सोईकासरीरकीत्वचा लोहा मांस मेद यांनैविगाडि अरसनैसनै
पुरसकैभयंकरसोजानैपैदाकरैछै सोसोजोगोलहोय अरपीडनैभीका
होय अरओखणोहोय अरबओखणोहोय येजीमेंलक्षणहोय तीनंच
यहैसोविदधीकरैछै सोवाविदधीरोग ६ प्रकारकोछै वायकी १ पित्तकी २
कफकी ३ संनिपातकी ४ चोरलागी

वासु उपजी ५ रक्तविदधी ५ अथ वायव्यविदधी कोलक्षण
लिप्यते वासो ईकाली होय अथवा लाल होय क्षणेकमें थोड़ा
होय जीने ऊठता ही नाना प्रकार का पकिवा होय ये जीमें लक्षण
होय तीने वायकी विदधी कहिजे १ अथ पित्तकी विदधी को
लक्षण लिप्यते वासो ई पक्का गूलर का फल सिरीसी होय अ
रकाली होय जुरदा हनें डीयां होय अर वासो ई ततकाल पकि
जाय ये जीमें लक्षण होय तीने कफकी विदधी कहिजे ३ अ
थ सन्निपातकी विदधी को लक्षण लिप्यते जीं सो ई में नाना
प्रकार का वर्ण होय अर जीमें नाना प्रकार का स्नाव होय अर वा
सो ई गला की गांठी कनें होय अर वासो ई विसम होय कदे तो
घटै कदे कवथै अर बावडी होय अर वें को पकिवों भी विसम हां
छै कदे कतो वेगी पकै कदे क मोडी पकै ये जीमें लक्षण होय ती
ने सन्निपातकी विदधी कहिजे ४ अथ चोटलागिवा की वि
दधी को लक्षण लिप्यते जीं स्थानमें चोटलागै उठै ही पित्त
में या वाय है सो पित्त संयुक्त लोही नै विगाडै पाछै उठै सो ई नै क
रि अर जुर तिस दाह वाय उपजावै अर वें विदधीमें पित्त का
भी लक्षण मिलै ये जीमें लक्षण होय तीने चोटलागिवा की उप
जी विदधी कहिजे ५ अथ रक्तविदधी को लक्षण लिप्यते
वासो ई काली होय अर वें में फोड़ा घणा होय अर वें में पीड़ दा
ह जुर ये भी होय अर पित्तकी विदधी का जीमें सर्व लक्षण होय
तीने रक्तविदधी कहिजे ६ अथ साध्य असाध्य जाणिवा के
वास्ते अंतर विदधी को लक्षण लिप्यते जुदा जुदा अथ वा मि
लाइ सा वाय पित्त कफ हैं सो रूप थ्यां सूं को पकूं प्राप्ति हुवाथका

सरीरकैमांहि येकगांठिगोत्रकैआकार बांवाकीसीनाईऊंचा ई
 सापेदाकरैछै सरीरकैमांहि तांनैवैद्यहै सोअंत्रविदधीकहैछै वा
 अंतरविदधीदशप्रकारकीछै येकनोगुदाकैवैसैंहोयछै १ पेडू
 कामुषमें २ नाभिमें ३ कूषिमें ४ पेडूअरजांघकीसंधिमें ५ हियाअ
 रतिसकास्थानकैबिचै ६ फीयामें ७ हियामें ८ अरनाभिकैजीव
 णीकानी ९ तिसकास्थानमें १० अथगुदाकीविदधीकोल
 क्षणलिष्यते गुदामेंविदधीहोयतो पवनआछीतरैचालैनहीं
 वायपवनरुकिजाय १ पेडूकामुषमेंविदधीहोयतो वैकैमूत्ररु
 छु कोरोगहोय २ नाभिमेंविदधीहोयतो वैकैहिचकीघणीआवै
 अरपेडूमेंआफरोरहै ३ अरकूषिमेंविदधीहोयतो उठेबायको
 कोपहोय ४ अरपेडूजांघकीसंधिमेंविदधीहोयतो करिमेंपी-
 टिमेंपाडघणीहोय ५ हियाकैअरतिसकास्थानकैबिचैविदधी
 होयतो पसबाडाकोसुंकोचहोय अरउठेपाडघणीहोय ६ फी
 यामेंविदधीहोयतो सासआवैनहीं ७ हियामेंविदधीहोयतो
 सर्वअंगामेंपीडहोय सर्वअंगरुकिजाय अरषासहोय ८ अर
 नाभिकैजीवणीकानीनाभिकैविदधीहोयतो सासकोरोगहोय
 ९ अरतिसकास्थानमेंविदधीहोयतो जलघणौपीचै धापैन
 हीं १० अथविदधीकोसाध्यासाध्यलक्षणलिष्यते नाभि
 कैउपरिपकीविदधीछै वाफूटिवैंकीराधिउपरिजायछै अरना
 भिकैनाचरलीविदधीछै सोवाफूटिवैंकीराधिनांचैजायछै जो
 विदध्यांकीराधिनांचैजायसोतोआणीजीचै अरज्यांविदध्यांकी
 फूटिकीराधिउपरिजाय वेप्राणीमरिजाय १ अथपुनःअ
 साध्यलक्षणलि० हियामेंनाभिमेंअरपेडूमेंविदधीहोयतो-

आलीनहीं औरस्थानोंमेंआलीअरविदधीकच्चीअरपकीअर
दधहोयगईहोय तीनैसोजाकीसीनाईदेपिलीजे १ अथमांहि
ओविदधीकोअसाध्यलक्षणलिख्यते आफरोहोय छईहो
य तिसघणीहोय हिचकीहोय जांमैंपीडघणीहोय येजांमैंलक्ष
णहोयतौओप्राणीमरै २ अथविदधीकोकष्टसाध्यलक्षण
लिख्यते बाविदधीकच्चीहोय अरवायकीहोय बडीहोय छोटी
होय बामर्मस्थानमेंहोय सोकष्टसाध्यजाणिजे १ जोविदधीस
न्निपातकीछै अरहियामेंनाभिमें अरपेडुमेंछै अरवायकीजा
य अरबांधूंटीप्रमाणहोय बाविदधीअसाध्यजाणिजे अरमूंठी
प्रमाणमांसलोहीकोगोलीहोयछै सोविदधीतोपकिजाय
अरगोलोपकैनहीं योईमेंभेदछै १ अथविदधीकोजतनलि
ख्यते सर्वविदधीमानकूजोकलगायवांकोलोहीकाटैतौविद
धीआलीहोय २ अथवा सुलावसूपित्तकीविदधीजाय ३ अ
थवा विदधीपकैनहींजितैत्रणकासोजाकोसोजतनकरै ३ अ
थवा अरंडकीजडकोकाटोकरितीमेंतेल अथवा घृतपकावै
पाछैवेंकोसुहावतौसुहावतोसेककरैतौवायकीविदधीजाय ४
अथवा जब गौहूं मूंग यांकाचूननेघृतसूपकायवेंकोलेपकरैतौ
विदधीविनांपकीभीआलीहोय ५ अथवा असगंध बस म
हुंवो रक्तचंदन यांनैदूधसूपीसि ईमेंघृतमिलायनिवाईकारले
पकरैतौपित्तकीविदधीजाय ६ अथवा ईंट बालूरेत लोहको
मैल गोबर यांनैमिहांवांदि गोमूतमेंसिजाय ईकोसुहावतौसे
ककरै अथवा लेपकरैतौकफकीविदधीजाय ७ अथवा दस
मूलकाकाटैमेंतेल अथवा घृतनांषिवेंकोतरडोदेतौविदधी

कात्रणकोसोजो अरवेंकीसूलजाय ८ अथवा रक्तचंदन मजीठ
हलद महुवो गेरू यांनेइधसूसिजायलेपकरैतौलोहीकीअरचोद
लागिवाकीविदधीजाय ९ अथवा कालोजीरो इंद्रायणकीजड
तोरुंयांकोकादोरंक १० कोलेतौकोठाकीउपजीविदधीजाय १०
अथवा सहजणांकीजडकोरसतीमेंसहतमिलायपीवैतौअंब
बींविदधीजाय ११ अथवा सहजणांकीजडकाकादमेंसेकीहांग
सींधोलूणनांषि प्रभातहीपीवैतौ अंबकीविदधीजाय १२
सर्वजतनभावप्रकासमेंलिष्याछै इतिविदधीरोगकीउ
त्पत्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथव्रणकासोथरोगकीउ
त्पत्तिलक्षणजननलिष्यते व्रणसोथरोगहैसोछप्रकारकोछै
वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीकादुष्टप
णांको ५ कहींतरैकीलकडीउगैरैचोटलागिवाकी ६ यांकार
णांसंप्रथमव्रणहोय पाछैव्रणकैसोथहोय अथव्रणसोथ
कोलक्षणलिष्यते वायकोव्रणविसमपकै पित्तकोव्रणतत
कालपकै कफकोव्रणमोडोपकै लोहीकोभीव्रणततकालप
कै चोटलागिवाकोव्रणततकालहीपकै १ अथव्रणसोथ
नहींपकोतींकोलक्षणलिष्यते वेंव्रणसोथमेंगरमथोडा
होय अरसोजोथोडोहोय अरआव्रणसोथकरडोहोय अरवें
कीत्वचावर्णसिरासीहोय वेंमेंपीडाकमहोय अरसोजोथोडा
होय येलक्षणहोयतदिजाणिजैव्रणसोथकाचोछै १ अथ
पक्काव्रणसोथकोलक्षणलिष्यते वासोईअग्निकीसीनाई
वलै अरवासोईपारकीसीनाईपकै वासोईकीडोकीसीनाई
काटै वासोईछुरीकीसीनाईकाटै अरवासोईदंडकीसीनाईमा

रै अरवासोई हाथसूं पीडीहनीमानूं अरवासोई सुई करिकें बिधा-
हनीमानूं अरवें सोई में दाह धरणे होय अरवें सोई कोरंग और सो
होय अरवासोई अंगुली करि पीडि जैनहां मानूं आसन के बिसें सो
वाकें बिसें सांति कूं प्राप्ति होय बांछ का कात्या की सीनां ई जीति वा
सोई गादी होय तिन नैं वें सोई का पको वा को जतन करै वें नैं फाड़ै
नहीं अरवें सोई में जुर होय तिस होय अरु नि होय येलक्षण जी
में होय तदि जाणिजे वा सोई पकि गई अथ व्रण सोथ पकि ग
यो होय तां को लक्षण लिखते वें सो जामें पीडन हीं होय लला
ई थोड़ी होय घणो उंचो न हीं होय अरवें सो जामें सल यणा प
डि जाय अरवें में पीड होय अरु जालि घणी आवै सर्व उपदव
जा तोर है वा सोई नय जाय तवा फाटि वाला गि जाय वें में अंगु
ली सूं पीड्यारा धिनी सरै येलक्षण जी में होय तदि जाणिजे व्र
ण सोथ पकी गयो छै वें में भी वाय विनां पीडन हीं पित्त विनां प
कि चो न हीं कफ विनां राधिन हीं ई कारण सूं पकि वाकें स में ये
तो नूं ही होय १ अथ परिपाक अवस्था में और भी मतांतर
काल लक्षण लिखते वें का जतन करि वां में दील करै तो पित्त है
सो करि जाय कफ को ग्रहण करि लोही नें पकाय दे ओ लोही प
न्योथ को राधिनैं करि दे अथ वा राधिका टेन हीं तां का दोस लि
खते जै सैं तृणां का समूह नैं पवन सूं प्रेसौ थकौ अग्नि दग्ध क
रै छै तै सैं हां वें की राधिका टेन हीं तो वें का स शर का मांस नैं रसा
नै या राधि पाय जाय छै १ अथ सोजा का काचं पक्वा का ग्या
न कै अर्थ वैद्य का गुण दोस कहि जै छै जो कचा व्रण नैं जाणैं
अर पचता व्रण नैं जाणैं अर जो पक्वा व्रण नैं जाणैं सो तो वैद्य

अरयानैजाऐनहींसोवैद्यनहींछै वेचोरकीवृत्तिकरिवालावैद्य
 चोरछै१ जोवैद्यफोडव्रणनैकचानैफाडै अरपकानैफाडैनहींसो
 वैद्यनहींछै वांवैद्यनैकच्चापकाकोग्याननहीं वैवैद्यनैचांडाल
 मंगीकीसीनाईजाएनों२ इतिव्रणसोथकीउत्पत्तिलक्षण
 जतनसंपूर्णम् अथव्रणरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि
 ष्यते प्रथमव्रणहैसोदोयप्रकारकोछै एकतौवायको१ पित्तको
 २ कफकोयां दोसांकोयेक१ सस्त्रादिककालागिबाको २ वैवाय
 पित्तकफकाहैसोआठप्रकारकाछै वायको१ पित्तको २ कफ
 को ३ लोहीको ४ वायपित्तको ५ वायकफको ६ कफपित्तको ७
 सन्निपातको अथवायकाव्रणकोलक्षणलिष्यते ओव्र
 णहैसोस्थिरहोय कठिनहोय मंदअवै पीडयणीहोय जीमें
 व्यथाघणीहोय कुरकैघणों कालोघणोंहोय येलक्षणजीव्रण
 मेंहोय तीनैवायकोव्रणकहिजै१ अथपित्तकाव्रणकोलक्ष
 णलिष्यते जीमेंतिसहोय मोहहोय जुरहोय आलापणोंहो
 य जीमेंदाहहोय पीडहोय जीमेंफाटिहोय जीमेंदुर्गंधिला
 यांनीकलैयेक्षणजीमेंहोय तीनैपित्तकोव्रणकहिजै२ अ
 थकफकाव्रणकोलक्षणलिष्यते जीमेंघणोंआलापणों
 होय भासोहोय चीकणोंहोय जीमेंपीडाकमहोय पालोव
 र्णहोय मोडोपकै येजीमेंलक्षणहोयतीनैकफकोव्रणकहिजै
 ३ अथलोहीकाव्रणकोलक्षणलिष्यते ओव्रणलालहोय
 अरजीव्रणमेंलोहीघणोंनीकलै ४ अस्जीव्रणमेंवायपित्तको
 लक्षणहोयतीनैवायपित्तकोकहिजै ५ जीव्रणमेंवायकफको
 लक्षणहोयतीनैवायकफकोकहिजै ६ जीव्रणमेंकफपित्तको

२९५ अमृतसागर तथा प्रतापसागरंग १५

लक्षण होयतीनें कफपित्तको कहिजे ७ जीवणमें सर्वलक्षण हो
यतीनें सन्निपातको कहिजे ८ अथ शुद्धब्रणको लक्षण लिखे
जीभकानांचरलापांदासिरीसाजीकी कांति होय अतिकोमल
होय निर्मल होय चीकणो होय जीमें पीडा थोडी होय आछी जी
की विवस्था होय वेमें राधिउगैरे क्यूंभी नीसरे नहां तदिजाणिजे
यो ब्रण शुद्ध हो १ अथ दुष्टब्रणको लक्षण लिखते जीमें
राधिलोही दुर्गंधिये बहोत निकलि चोकरे अरजीमें सो जोरह
वोकरे अस्थिर पणोंर है वेनें दुष्टब्रण कहिजे २ अथ जीमें अंकुर
रशुद्धनी कलता होय तीको लक्षण लिखते अरजीव्रणमें कोपी
लोरंग अथवा धूसरो वर्ण होय अर राधिउगैरे जीमें संजातीर
है अर अंकुरनी सरबाला गिजाय तीनें ब्रण भरि वाकै वास्ते अ
कुरित ब्रण जाणिजे ३ अर भले प्रकार ब्रण भरतो होय ती
को लक्षण लिखते ब्रणमें अंकुरशुद्धनी सरे तीमें गांठिनहां
होय जीमें सो जो नहां होय तीनें भले प्रकार ब्रण भसौ जाणिजे ४
अथ ब्रणको सुषसा आदिक को लक्षण लिखते ओ ब्रण
मर्मस्थानमें नहां होय अर त्वचामें अर मांसमें होय अर तरु
ए पुरसकै होय अर पथ्य चालतो होय अर सीतकाल होय इ
सा पुरसकै तो ब्रण सुषसाध्य है ५ अर वायपित्तकफको तो ब्र
ण होय अर बसाने मेद दनें मंजीनें मांथा की भेजी सिरीसाने
जो ब्रण आबै तो ओ ब्रण आछो होय नही अर शस्त्रादिकां की
दसंड पन्थो ओ ब्रण तीमें बसा मेद मंजी अर मांथा की भेजी
सिरीसो वै ब्रणमें नीसरे तो ओ ब्रण आछो होय ६ अर कोट
अर विषधानो होय जीकै रज रोगीकै अर मधुमहीकै अर

अथ जीमें अंकुर
रशुद्धनी कलता
होय तीको लक्षण
लिखते अरजीव्रण
में कोपी लोरंग
अथवा धूसरो वर्ण
होय अर राधिउगैरे
जीमें संजातीर
है अर अंकुरनी
सरबाला गिजाय
तीनें ब्रण भरि वाकै
वास्ते अकुरित
ब्रण जाणिजे ३
अर भले प्रकार
ब्रण भरतो होय
तीको लक्षण
लिखते ब्रणमें
अंकुरशुद्धनी
सरे तीमें गांठिनहां
होय जीमें सो
जो नहां होय
तीनें भले प्रकार
ब्रण भसौ जाणिजे
४ अथ ब्रणको
सुषसा आदिक
को लक्षण लिखते
ओ ब्रण मर्मस्थान
में नहां होय
अर त्वचामें
अर मांसमें
होय अर तरु
ए पुरसकै
होय अर पथ्य
चालतो होय
अर सीतकाल
होय इसा पुरस
कै तो ब्रण सुषसा
ध्य है ५ अर वाय
पित्तकफको तो
ब्रण होय अर
बसाने मेद दनें
मंजीनें मांथा की
भेजी सिरीसाने
जो ब्रण आबै तो
ओ ब्रण आछो
होय नही अर शस्त्रा
दिकां की दसंड
पन्थो ओ ब्रण
तीमें बसा मेद
मंजी अर मांथा की
भेजी सिरीसो वै
ब्रणमें नीसरे तो
ओ ब्रण आछो
होय ६ अर कोट
अर विषधानो
होय जीकै रज
रोगीकै अर मधुम
हीकै अर

२९६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

मैत्रा होय जी के इतना पुरसा के वरा है सो कष्टसं आछो होय ।
 अथ पुनः वरा को असाध्य लक्षण लिखते वरा में लांघि
 णों दोह होय अर वरा वारा संसीतल होय अर वें पुरस का सरी
 र को मांस लो हो जा तो रत्यों होय अर सा सषास अरु चि ये जी के
 हो जाय अर ओ बूढ़ो होय अर वें वरा में लो ही राधिनी सरि वो कने
 अर ओ मर्म स्थान में होय इसा वरा आछ्यान ही होय सो वें वैद्य
 वें को जतन करे न ही आप को जस चाहे तो ये वाय पित्त कफ यां दो
 सां का वरा काल क्षण कल्या १ अथ आगंतुक वरा कहि जै
 तर वारि नैं आदिले रजो सस्त्रादिकां काला गि वासं उपज्या
 जो पावती नैं वरा संज्ञा कहि जै छै त्यां की उत्पत्ति लक्षण लि०
 तर वारि सेल तीर दुरी गोली बाण फरसी उगै रै कहीं की ईं पु
 रस के कै दै हीं सरार में लागे तीं काला गि वासं पुरस के बां वरा
 काना मयां बां की नाना प्रकार की आकृति होय छै सो वा आकृति
 पुष्प ६ प्रकार को छै सो हूं लिखूं छिन्न १ भिन्न २ विद्ध ३ क्ष
 त ४ पिच्छित ५ दुष्ट ६ अथ छिन्न वरा को लक्षण लिखते
 जो पुरष तर वारि नैं आदिले रशस्त्र करि कै दै दो कट्यो होय अ
 थवा सूथो कट्यो होय जो ओ पाव वडो होय अर मनुष्य कां सरी
 र नैं पृथ्वी उपरि नां धि दै तीं नैं वैद्य है सो छिन्न वरा कहैं छै १ अ
 थ भिन्न वरा को लक्षण लिखते वरछा सेल तीर दुरी तर
 वारि नैं आदिले रयां की जी के लागे तीं काला गि वा करि को ठो कहीं
 तरे कटी जाय तीं को ठा कटि वा करि वें को लो ही चले तदि ओ लो
 ही करि उदर भरि जाय तदि ओ लो हि संभस्यो जो उदर चुर नैं
 दाह नैं पैदा करैं छै पाछे ओ लो ही इं द्री द्वारा गुदा द्वारा मूदा ह

य नासिकाद्वारा नासरे अरवे कैमूर्छा सास तिस आफरो अरु
 नि शानै पैदा करै छै अरमलमूत्रवै कारुकिजाय पसेव आवे ने
 बल्लल होजाय मूदा मै लोही की वास आवे सरार मै दुर्गंधि आवे
 हिया मै पसवाडा मै सुल चाले ये जी मै लक्षण होय ती नै भिन्न ब्र
 एकहिजे १ अथ विद्रवण को लक्षण लिख्यते जी पुरस कै
 सस्त्र की मां हिली अणी की लागे वे को अंग कटिजाय वेंधा वने
 विरुद्ध कीजे २ अथ जीं घाव मै ती रुगे रै र हग यो होय ती
 कलक्षण लिख्यते जो घाव का लो होय सो जा संयुक्त होय फुल
 सानै लीया होय अर वें घाव मै बारं बार लोही नीसरे अर ओ घाव
 को मल होय अर वें घाव को मांस बुद बुद सरी सो ऊंचो होय अ
 र वें घाव मै पीडा होय तीं घाव नै शस्त्र समेत जाणिजे ४ अथ
 कोष्ठ मै तीर इत्यादि कर हग या होय तीं को लक्षण लिख्यते
 सरार की सातू त्वचानै उलंघि करि कै अर सरार क्रीन सां नै उ
 लंघि करि कै पाछे बाहीन सां नै विदार्ण करै अर कोष्ठ कै बिसेर
 हताजो वे सस्त्रादिक सो वे आफरानै करै छै अर ब्रण का मूदा मै
 अन्न नै अरमलमूत्र नै लेवा आवे छै तदि जाणिजे ई का कोष्ठ मै
 स्वल्प छै ५ अथ असाध्य जो कोष्ठ मै रह तो रक्त अरमल
 तीं को लक्षण लिख्यते कोष्ठ मै रह तो जो लोही सो पा लो होय
 तदि वें को सरार भी पी लो होय अर हाथ पग मूदो वें को सीत
 ल होय अर वें कानांक को सास भी सीत ल चाले लाल जी काने व
 होय ये जी मै लक्षण होय ती नै असाध्य कोष्ठ मै रह तो रक्त मल
 तीं को लक्षण जाणिजे यो असाध्य छै ६ अथ क्षत ब्रण को ल
 क्षण लिख्यते जी मै अग्नि छिन्न काल क्षण न ही मिलै अर जी मै

अतिभिन्नकाभीलक्षणनहीं मिलै दोन्यां कामियां जीमें लक्षण होय
 ओघ्रण विसम होय सो वें का हाड में घ्रण होय वें नें पिच्छित घ्रण कहि
 जे ८ अथ घृक्ष घ्रण को लक्षण लिख्यते जी कैं ईद पथर भीता उगे
 रै कहां तरै हंसूं सरीर की चामडी घसि जाय वांचामडी सरीर सूं दू
 री हो जाय वें चामडी में बेपनी सरीर को रै अर वें में दा होय वें नें घृ
 घ्रण कहि जे ९ अथ जी कैं मांस नसां संधि मर्म स्थान यां में को
 टलांगी होय तीं को सामान्य लक्षण लिख्यते जी कैं भ्रम होय म
 लाप होय दह पडे मोह होय चेत जा तोर है ग्लानि होय दाह हो
 य सिथल अंग होय पीड घणी होय मांस का जल सिरि सो जी को
 लोही होय अर सर्व इंद्रियां का धर्म जातार है पाछै कत्या जो पांच
 मर्म स्थान त्यां में जो वां की चोट लागी यां को यो लक्षण कहि जे १०
 अथ मर्म स्थान नसां संधि हाड ये घ्रण सूं बिंधि गया होय तीं च
 जुदा जुदा लक्षण लिख्यते इंद्र का धनुष सरीर सो सां वण कि डो
 कडी सो जी को लोही नीसरै तीं कैं क्षत ज घ्रण कहि जे ओघ्रण वा
 य का अने करोगां नें करै छै अर तीर नें आदि लेख रूप छै अर त
 रवारि नें आदि लेख रजेश रूप छै त्यां करि नसां बांधि जाय त्यां सू उप
 ज्या जो घ्रण त्यां करि सरीर है सो कूब डो होय अर सरीर का अंग अंग
 ग में पीडा होय चाल्यो जाय नहीं व होत मोडो वां में अंकूर अंग
 तदि जाणि जे इंकी नसां बांधी गई तीं को ई कैं घ्रण छै वें घ्रण के सो
 जो घणों होय वें को बल जा तोर है अर संधि में घाव लाग्यो होय तो
 संधि को हलि बोचलि बो जा तोर है अर वें में पीड घणी होय राति
 दिन में जक पडे नहां तीं कैं हाड में सस्त्रादिक सू उप ज्या घ्रण जाणि
 जे अर मर्म स्थान में चोट लागि वां घ्रण होय तीं का सरीर को वर्ण

२९९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

पीलो होय ओवणस्पर्सहैनहीं अथव्रणकोसोला १६ उ
पदवछै त्वानैलिफजैछै वेनैविसर्परोग १ पक्षाघात २ सिर
मुडैनहीं ३ अपतांन ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणमें पीडा ७ शूल
८ तिस ९ कांधिसुडैनहीं १० पास ११ छर्दि १२ अतीसार १३ हिच
की १४ सास १५ कांपणी १६ येव्रणरोगकाउपदवछै अथअ
ग्निदग्धकीउत्पत्तिलक्षणलिख्यते प्रथमअग्निदग्धदोयप्र
कारकोछै ऐकतोतेलादिकसूंदग्धहुवो १ इसरोलोहअग्निनेआ
दिलेरदग्धहुवो २ पुनःअग्निदग्धचारिप्रकारकोछै पुष्ट १ दुर्द
ग्ध २ समकदग्ध ३ अतिदग्ध ४ अथपुष्टदग्धकोलक्षण
लिख्यते अग्निसूंदग्धहुवोछै अरवेंकोवर्णओरसोहोयजाय
वेनैपुष्टकहिजै १ अथदुर्दग्धकोलक्षणलिख्यते जीमेंदाहय
लैहोय अरवेंमेंपीडहोय अरफोडाहोयआवै अरमोडामिटै
तीनैदुर्दग्धकहिजै २ अथसम्यक्दग्धकोलक्षणलिख्यते जी
काअंगकोतांवासरीसोवर्णहोय अरओबूदोनहींहोय असजीमें
दाहअरपीडाहोय अरफैलैनहीं तीनैसम्यक्दग्धकहिजै ३ अ
थअतिदग्धकोलक्षणलिख्यते जीकोत्वचाअरमांससर्वद
ग्धहोजाय अरयांससरीरजुदोहोजाय अरनसां स्नायु हाड
संधि येसारादग्धहोजाय अरवेंमेंपीडहोय दाहाहोयचुरहो
य तिसहोय मूर्छाहोय जीमेंअंकूरमोडोआवै वर्णओरसोहोजा
य येजीमेंलक्षणहोयतीनैअतिदग्धकहिजै ४ अथदोसांसै
उपज्जाइसाजोसारीरव्रणतीकाजतनलिख्यते कैंजतनसर्व
मेंमुष्णईग्यारा ११ प्रकारकोछै सोक्रमसूलिषांछा अरमुशु
तचरकमेंतौव्रणकाजतनसाठि ६० प्रकारसूलिषांछै ॥

३०० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

प्रथमतोलेप १ पाछै औषधांकाजलसूंनिवायोतरडो २ पाछै बां
सकीलकडीसूंअंगुष्ठोमसलिवैकैपसेवल्यावण ३ पाछै कहीं
तरेलोहीछुडावणों ४ पाछै औषधांकोपाटोबाधिवैकैपसेवल्या
वणों ५ पाछै वेंनेपकावणों ६ पाछै शस्त्रादिकांसूंचीरोदेणो ७
पाछै व्रणनैअंगुष्ठासूंदावि वेंमांहीरबीराधिकादणी ८ पाछै व्र
णकोसोधिबो ९ पाछै बांमैअंकूरल्यावणों १० पाछै वेंनेतचाका
बर्णसिरीसोकरिदेणों ११ अथवा वायकासोजादूरिकरिवा
कोलेप जैसैलायलागीहोय अरवेंलायनैजलबुझायदे जैसैयो
लेपहैसोसोजाकीपीडनैदूरिकरैछै विजोराकीजड छड देवदा
रु संधि रास्त्रा अरण्युं येबराबरिले यांनैजलसूंमिहीवांदिनि
वायोलेपकरैतौ वायकोसोजोदूरिहोय १ अथपित्तकासो
जाकादूरिकरिवाकोलेपलिप्यते महुबो रक्तचंदन दोब
आंवला कमलकीजड षस नेत्रवालो पदमाष यांनैबराबरि
ले यांनैजलसूंमिहीवांदि सीतलहीलेपकरैतौपित्तकोसोजोद
रिहोय २ अथवा वडकीजड गूगलकीजड बेतकीजड कंच
कल यांनैजलसूंमिहीवांदि ईमैऔषधांसूंदसबोहिसोघृतया
लिवैकोलेपकरैतौपित्तकोसोजोजाय ३ अथकफकासोजा
दूरिहोवाकोलेपलिप्यते नगदबाबची मीढासींगी मजाठ
गल असगंध सत्तावरी यांनैजलसूंमिहीवांदि निवायोलेप
करैतौकफकोसोजोजाय ४ अथवा पीपलि पलि सहज
णांकीजडकीबकल रेतहरडैकीछालि यांनैमूतसूंमिहीवांदि
निवायोलेपकरैतौकफकोसोजोजाय ५ अररातिनैलेपकी
जैनहीं अथऔषधांकाजलसूंनिवायोतरडोदेसोअ

लुक्कमसंलिप्यते हरडैकीवकलमेंऔदाय ईकोसहायतोवैसो
 जाकादाहकैतरडोदेतौवैकोदाहनतकालदूरहोय ८ अथवावा
 यनैदूरकरिवावालीजोऔषधांकाकाकाजलसूंवैकैतरडो
 दे अथवा तेलकोवैकैतरडोदे अथवा मांसकारसकोवैकैतर
 डोदे अथवा गरमगरमघृतकोवैकैतरडोदे अथवा गरमकां
 जीकोवैकैतरडोदेतौवायकोसोजोदूरहोय १ अथपित्तकासो
 जादूरकरिवाकोतरडोलिप्यतेसीतलऔषधांकाकाका
 तरडांसू दूधसूं घृतसूं पांसूं सांठाकारससूंतरडोदेतौपि
 त्तकोसोजोजाय २ अथकफकासोजाकादूरहोवाकोतर
 डोलिप्यते कफनैदूरकरिवावालीऔषधांकाकोगरमगरमत
 रडोदे अथवा तेलपारकोजलगोभूतयांकातरडांसूकफकोसो
 जोदूरहोय ३ अथरक्तकासोजाकोअरपित्तकासोजाको
 जतनएकछे अथव्रणकासोजाकोअंगूठाउंगैरै मसलि
 करिपसेबलिवावणा ३ जोकैरडोव्रणहोयतीनैअंगूठासूं अ
 थवा वांसकीस्वाफलकडीसूंसेनैसेनैमसलिवैकैपसेबलिवावैतौ
 ओदीलोपडिआछोहोजाय अरवैकीवर्णऔरसोहोय अरका
 लोवर्णहोय अरवैमैपीडघणीहोय इसाव्रणकासोजाके अथ
 वा कहींबिसेलजिनावरकांल्योहोय तींसोजाकैजोकैरुनगाय
 वैकोलोहीकादिनांषणों अथवा पाछणादेरलोहीकादिनांषणों
 एककानीतोसाराजतनछे अरयैककानीलोहीकादिवा योएक
 हीसाराजतनकीबराबरिछे ४ अथव्रणकाचाअरपकवाने
 सनसुषहोयरत्यात्वाकैऔषधांकोबांधिवैतीकरिवैकै
 सेवआयवोसोलिप्यते जोकाचाअरपकवाकैसनसुषहो

रत्नाजोन्नतां कैंये औषदिवांधिपकावैतौ वेव्रण आच्छा होय
सौ औषदिनिषूछूं दसमूल षरेंदी रास्ना असगंध बीप असं
केजड अथवा ईकाफल निरुंटी सांथी सहजणों पीपडि सांथो
लंछा स्रंठि सणकाबीज कपासकाबीज अलसी कुलथ तिलज
व सिरस्यूं मूलीकाबीज सौंफ नांबकापांन नागर बेलिकापांन
अलेवांसकापांन यांउगैरेंजोपावैत्यांनैंगरमकरिवानैवांदिवांधे
अथवा यांकोकाढोकरितींकोतरडोदेसुषपूर्वका आळीतरह कि
यासूंतीं वैवायकाव्रणकोसोजो आछो होय ५ अथव्रणका
सोथका डूरि करि वाकोले पालिष्यते साठीकीजड देवदार
हलद स्रंठि सहजणांकीवकल सिरस्यूं यांनैषटायीसूंवांदि
निवायाकरियांकोलेपकरैतौ सर्वप्रकारकाव्रणकोसोजो डूरि
होय ६ अथव्रणकापकिवाकीविधिलिष्यते व्रणहै सोले
पादिकांकरिषकै नहांतौ ये औषदिव्रणनैपकाय देसोलिषूं
छूं सणकीजड सहजणांकाफल तिल सिरस्यूं अलसी दासूना
दिवोकोजावो जव गोंडूं नांबकापांन उगैरें यांनैसिजायव्रणकैवां
धैतौ व्रणपकिजाय ७ अथव्रणपकिगयो होयतीं कैंचीते
देतींकीविधिलिष्यते जीव्रणमैराधिपडिगई होयतीं कैंच
तुरवैद्यकनासस्त्रसेतीचीरोदिवाय वैकीराधिकादिनांभै पा
छैमल्लिमादिक्लागावैतौ व्रण आछो होय ८ अथअतनां
आदमीकैचीरोनहांलागावैसोलिष्यते बालककै बूढाकै
जींसंचिरोसखोजायनहांतीं कैं क्षीणपुरसकै डरपस्यालकै
स्त्रीकै मर्मस्थानमैंजोव्रण होयतीं कैं इतनां आदम्यांकै चारोरी
जेनहां वैकै औषधांसेताभेद करी वैकीराधिकदाय आछो कीजै

सोवैधेदनओषदिलिखजैछै कणगचकीजंड चित्रक दंत्य
 णीभिलावा कनीर कबूतरकीवीठ यामैसंकहींकोलेपकरैतौ
 ओवणआपहीकुटै वैकीराधिनीकलिजाय १ अथवा वारी
 लूण जबवार साजी आंधीफाडाकोषार यामैंकहींकोलेपकरै
 तौवणकीराधिनीसरिजाय १ अथवा ओवणघणोगाटोहोय
 तौ हाथीकादांतनैजलमैंघसीवैकीवैवणकैबूंददेतौवैकोसो
 जोइरिहोय वैकीराधिनीसरिजाय १ ८ अथपीडनलिष्य
 ते ९ राधिजामैंपडिगईहोय अरमर्मस्थानमैंहोय ईसावण
 कैवीरादोजैनहीं त्यांकेयेओषदिलगाय वैकीराधिकादिनां
 धिजैतौवैवणआछ्योहोय सोयेओषदिलिखूंछूं जब गो
 हूंउडद यानैमिहींवांढि पाणीसूंवानैनिवायाकरिअरवण
 कासूंढासांहीसूंराधिकादिनांपै पाछैवैकैमहिमादिकलगावै
 तदिओवणआछ्योहोय ९ अथवणसोधनलिष्यते जो
 वणकचोहोय तीकैपटोलकापांन अथवा नींबकापांन त्यांनै
 सिजाय बांकापाणीसूंवणनैधोवैतौवणआछ्योहोय २ अर
 गूलरकीवकलकाकादासूंधोवैतौवणआछ्योहोय ३ अर
 किरमात्रकीवकलकाकादासूंधोवैतौकफकौवणआछ्योहो
 य ४ अरपीपलिकीवकलगूलरकीवकल वडकीवकल वी
 लकीवकल यांकाकादासूंवणकासोजानैउपदंत्यनैधोवैतौ
 येआछ्योहोय ५ अथवा तिल सांधोलूण महलोठी नींबका
 पांन दोनूंहलद निसोत नागरमोथो यांनैबरबरिले अरज
 लसूंवांढि यांकोलेपकरैतौवणपकिवैकीराधिनीसरिजाय ६
 अथवा नींबकापांन तिल दंत्यणीं निसोत सांधोलूण यामैं

३०४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

भिहींवांरियांकोलेपकरैतौदुष्टव्रणआछोहोय ८ अथवा नां
बकापांनसिजायबांधैतौदुष्टव्रणआछोहोय ९ अथवा हरडै
निसोत सींधोल्हा दंत्यूणी कलहारीकीजड सहतमेंयानैवांरि
यांकीव्रणकैवातीदेतौदुष्टव्रणभीआछोहोय १० अथवा व्र
णकामुंदासूस्महोय त्यांनैनीबउगैरैकापांनकारसउगैरैयांओ
षयांकीवातीदेतौवेव्रणआछाहोय ११ अथवा नांबकापा
न घृत सहत दारुहलद महुवो यांकीवातीकरिव्रणमेंदे
वा तिलांनैओदाय वेंकीव्रणकैवातीदेतौव्रणआछोहोय १२
अथव्रणकोरोपणनांभअंकूरल्यावैसोलिथ्यते यांव्र
णकीराधिनीसरगईहोय अरवेव्रणभरेनहीं त्यांकेनीवका
पांनानैओदाय पाछैवेंपाणीसूंव्रणनैंधोवै पाछैसहतमिला
य तेलकोफोहोवैकैदेतौव्रणभरिजाय १३ अथवा असगंध
लोद कायफल महलोडी मजीठ धावड्याकाफूल यांनैवांरि
व्रणकैबांधैतौव्रणभरिआछोहोय १४ अथव्रणमेंदाहब
लउपजिआयीहोयतींकाडुरिकरिवाकोलेप जवांकोआ
रो सहततेल घृतयेसर्वमिलाय क्यंगरमकरिलेपकरैतौव्र
णकोदाहसूलजाय १५ अथव्रणमेंकृमिपडिगईहोय
तींकाडुरिहोवाकोलेप कणगचकीजड नांबकीछालि
निगुंडी यांनैवांरियांकोलेपकरैतौव्रणकोकृमिमिडिजाय १६
अथवा लसणकोव्रणकैलेपकरैतौव्रणकीकृमिभरिजाय १७
अथवा हांग नांबकीछालि यांकोलेपकरैतौव्रणकीकृमिमो
१८ अथव्रणमेंछोतिपडीवेंमैंषाजिषीडकृमिपडिगईहो
यतींकाडुरीहोवाकीधूणी नांबकापांन वच हांग घृत

लक्षण सरस्युं वानैयेकगघृतमेंवांदि यांकाव्रणकेंधूणीदेतौ व्र
 णकीकृमिपाजिपीडांजाय १९ येसर्वजननभावप्रकासमें
 लिप्याछे अथव्रणकाभरिवांकीमलिम कडवोतेलपैसा
 साभर पाणीपईसा २॥ भर बांदोन्यानेंकांसीकीथालीमेंघालि
 दिन १ तांईहाथसूंमसलै पाछैईकेमांहिरालपईसा ५ भर मि
 हींवांदिईमेंमिलावे पेरसारटका १॥ भर मिहींवांदिईमेंमिलावे कू
 रटंक ५ ईमेंमिहींवांदिमिलावे नीलोथूघोटंक २॥ ईमेंमिलावे
 बेरजोटंक १॥ मिरचिटंक १॥ मिहींवांदिईमेंमिलावे पाछैयांसारो
 नैने मिहींवांदि हाथसूंमथै पाछैव्रणकेंईनेंलगवैतौव्रण
 ततकालभरिजाय २० अथआगतुकव्रणकहिजेतरवारि
 नैआदिलेरशास्त्रत्यांकालगिवासूउपन्याजोव्रणत्यांका
 जननलिप्यते आंपुरसांकैतरवारिनैआदिलेरनानाप्रका
 रकाधारछें ज्वांके त्यांकालगिवासूंवांकीतचाफाटिजाय अ
 यवा तचाकीनानाप्रकारकीआहतिहोजाय त्यांआकृत्यांनै
 आख्यास्याणसथियाकनैपाटकासूतसूंसिमावै निर्वातस्थान
 में पाछैवांटाकाकाव्रणांकास्थाननै गौहाकीमेंदातीमेंपाणी
 घृतघालिपकावै वेंकोपाणीबलिजाय घृतमात्रआयरहै इसी
 तरैवेंकोलोईकरिसुहावतौवेंऊपरिसेककरैतौ ओव्रणतत्त-
 कालआछोहोय २ अथवा कुरकी गोम हलद महलोठी
 कणगचकीजड अरकणगचकापांन अरकणगचकाफल प
 दोल चंवेलीकापांन नींबकापांन यांमेंघृतघालिपकावै पाछै
 पाणीबलिजाय घृतमात्रआयरहै तदिईघृतकोसुहावतौसु
 हावतौसेककरैतौ ओव्रणतत्तकालआछोहोय ३ येजनन

वैद्यरतनमैलिष्याछै अथवा शस्त्रादिकां करिजींकोलोहो
 यणोनीसरिगयोहोयतींकेवायकीपीडाहोयआवै तींकाडूरि
 वावास्तेबेनेंघृतपांनकराजै अरजींकोषडगादिकां करिगाबठि
 न्नहोय तींकेगंगेरणीकीजडकोरसवेमेंभरिदेतौ वेव्रणतत
 कालभरिजाय अरआछ्याहोयजाय ४ ईव्रणवालानेंसीतल
 जतनसर्वआछ्याछै अरशस्त्रलागिवेंकोरुधिरआमासयमें-
 जायतौकेंपुरसनें वमनकरायांओआछ्योहोय अरपेडूमेंरुधि
 रजायतौ ओजुलावसूंआछ्योहोय अथवा वांसकीछालि
 अरउंकीककल गोषरू पाषाणभेद यांकोकाढोकरि तींमैंसे
 कीहींग सींधोलूण ईमेंनांषिपीवैतौ कोराकोरुधिरनिकलवो
 आछ्योहोय ५ अरजव कुलत्थ सींधोलूण येषावामेंलूषाआ
 छ्याछै अथवा चंवेलीकापांन नींबकापांन पटोल कुटकी
 दारुहलद हलद गौरीसर मजीठ हरडैकीछालि सोम नील
 शूथो सहत कणगचकाबीज येसर्वबराबरिले यांकीबराब
 रिगडकोघृतले अरयांसूंअठगुणौपाणीले यांनैमधुरीआं
 चसूंपकावै तदिपाणीवलिजाय घृतमात्रआयरहै तदिईघृ
 तनैबातिउगैरै करिब्रणकैलगवैतौगंभीनेंआदिलेरसर्वब्र
 णआछ्योहोय इतिजात्यादिघृतम् अथवा चंवेलीका
 पांन नींबकापांन पटोलकापांन किरमालाकापांन पौम म
 हुयो कूठ दारुहलद हलद कुटकी मजीठ पदमाष हरडै
 कीछालि लोद तज कमलगट्टा गौरीसर नीलोशूथो किरमा
 लाकीगिरि येवराबरिले त्यांकोकाढोकरि तींकाढाकारसमें
 तींकांकोतेलपकावै मधुरीआंचसूं वेंकाढाकोरसवलिजाय

तेलमात्रआयंरहै तदिबैतेलनैउतारि आछ्यावासणमें घालिरा
 बै पाछैईतेलनैचातीउगैरैकहींतरेसूवांघणकैलगावैतौओघ
 एततकालभरि आछ्योहोजाय ७ इतिजात्यादितैलम् अ
 थवा चित्रक लसण हींग सरपंषा गौडदेशमेंप्रसिद्धछै क
 लहारीजडिकीजड सिंदूर अतीस कूठ कडवोतेल अरयांओ
 षधांमाफिकपांणीनांबै पाछैमधुरीआंचसूपकाबै तदिबैमें
 कौपांणीबलिजाय तेलमात्रआयंरहै तदितेलओर वासणमें
 घालिराबै पाछैईतेलकौंकपडाकी बतीसूंकहींतरे वणकैल
 गावैतौ वणमात्रनै दुष्टघणनै नाडीवणनै यौतेलततकाल
 दूरिकरैछै ८ इतिविपरीतिमंल्लतैलम् अथवा गिलवै
 पटोलकीजड निफला वायविडंग येबरावरिले त्यांनैमिहां
 बांदि यांवरारिगूगलले पाछैयांनैमिलाय येकजीवकरिदं
 क २॥ पांणीसूरोजीनांवायतौ वणमात्रनै वातरक्तनै गोला
 नै उदररोगानै सोजानै योगूगल दूरिकरैछै ९ इतिअमृ
 तादिगूगलम् येसर्वजतनभावप्रकासमेंलिप्याछै ॥
 अथ ६ प्रकारसूंकहींतरेसूअग्निसूंदग्धहोयगयोहो
 यत्यांसारंहींकाअनुक्रमसूजतनलिप्यते अग्निसूंक
 हींतरेदाभिगयोहोयजोपुरस तीनैअग्निसूतपावैतौओपु
 रसवेगोआछ्योहोय १ अथवा वेंपुरसकैअगरनैआदिले
 रगरमओषधांकोवेंदुआडपरिलेपकरैतौ ओवेगोआछ्यो
 होय २ योपुष्टकोजतनछै अथदुर्दग्धकोजतनलि
 ओषधांकाघृतनै अथवा ईहींघृतवैगरमकरि पाछैईनैठं
 दोकरिईकोलेपकरैतौदुर्दग्धपणोआछ्योहोय ३ अथस

म्यङ्गदग्धकोले क्षणलघ्यते तवापीर वडकीजड रक्तचंद
न सौनगैरु गिलवै यांनैघृतसूंमिहांवांदि यांकोलेपकरैतौस
म्यङ्गदग्धआछ्योहोय ४ अथअतिदग्धकोजतनलिष्यते
पुरामांसनैकादिनांषै पाछैसादीचावल तांदू यांनैघृतसूंमि
हांवांदि वेंकोलेपकरै उपरिगिलवैकापांनबांधैतौअतिदग्ध
पणोंआछ्योहोय ५ अथवा मोम महुवो लोद राल मजाठ
रक्तचंदन मूर्वा येसर्ववरावरिले यांनैमिहांवांदि गडकाघृत
मेंपकावै पाछैईघृतकोलेपकरैतौ अतिदग्धपणों अग्निह
रिहोय अरसरीरमैमांसओरहोयआवै ६ इतिसिकथादि
घृतम् अथवा पटोलकापंचांगकोकादोकरि तीमेंकडवो
तेलपकावै वेंकाटाकोरसवालिजाय तेलमान्नआयरहै त
दिवैनेलगावैतौअग्निकादाज्याकादाहअरअववो अरयेंकी
फाडा येसाराजाय ७ येसर्वजतनभावप्रकासमेंलिष्य
छै अथवा पुराणो आलोचूनोंषावाको तीनैंदहींकापांणी
मेंवांदि अग्निकादाज्याउपरिलगावैतौओआछ्योहोय तेल
कोदज्योहोयतौवेंकाफफोलाभीइरिहोय ८ अथवा जवा
नैवालि तिलांकातेलमेंवांटै पाछैवेंकौदज्याउपरिलेपकरैतौ
ओआछ्योहोय ९ अथवा सक्थेजीरोतीनैमिहांवांदि वेंब
राबर मोम राल घृतमेंमिलाय ईकोलेपकरैतौ अग्निकादा
ज्योततकालआछ्योहोय १० अथतेलउरैरैकहींतरैसूंदा
ज्योहोयतीकोजतनलिष्यते तिलांकोतेलपाव ११ अरबावा
कोचूनों आलोपुराणोपईसा ३भर तीनैंहाथसूंमसलि पहर १
येक वेंनैरावसोकरिले पाछैवेंनैरुईकीपह्लासंवेकैलगावै

३०९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

तोदाघ्नोततकालआच्छेयोहोय ११ अथत्रणग्रंथिरोगकी
उत्पत्तिलक्षणजननलिष्यते विगारिषेदहीसरीरमांहांसं
नीकलतोजोदुष्टलोही तानैपवनपवनसोसकरिकै तैंकागां
हिपैदाकरिलेछै बेंगादिमेंदाहअरखुजालिघणोंहोयतीनैव
एग्रंथिकहिजै १२ अथत्रणग्रंथिकोजननलिष्यते कपे
लो वायविडंग तज दारहलद यानैभिहीवांदिजलसं अरबैंमें
तिल्लांकोतेलनांषि मधुराआंचसूपकावै ओपाणीचलिजाय
तेलमानआयरहै तदिईतेलकोलेपकरैतौत्रणग्रंथिजाय १३
इतित्रणग्रंथिकीत्रणरोगकीअग्निदग्धरोगकीउत्पत्ति
लक्षणजननसंपूर्णम् अथभग्नरोगकीउत्पत्तिलक्ष
णजननलिष्यते भग्नकहिजैहाडकोट्टिबो सोदोयप्रकारको
छै एकतौकांडको १ येकसंधिको २ कामकोतोनल १ कपाल
पट्ट्यांनैआदिलेर अरसंधिको ५ प्रकारकोछै उत्पिष्ट १ विस्ले
ष्ट २ विवर्तित ३ तिर्यगत ४ क्षिप्त ५ अथ ५ अथसरीरकी
संधिभांवैजैठाकीट्टीहोय कहींतरै तीकोसामान्यलक्ष
णलिष्यते संधिस्थानमेंपीडाघणीहोय ऊठतां पसारतां
येकठाकरतां अरऊंठेसपरसमुहायैनहीं तदिजाणिजैक
हांतरैसंधिटूटीछै अथउत्पिष्टसंधिटूटिबाकोलक्षणलि
ष्यते दोयहाडांकीसंधिटूटीहोय ऊंठेचहूअरसोजोघणोंहो
य अरऊंठेपीडाहोयतदिजाणिजेउत्पिष्टसंधिटूटीछै १ अथ
विस्लेष्टसंधिटूटिबाकोलक्षणलिष्यते ऊंठेसोजोहोय
अरराबिमेंपीडासोजोघणोंहोय जोमेंयेलक्षणहोयतीनैव
विस्लेष्टसंधिटूटीजाणिजै २ अथविवर्तितसंधिटूटीकोल

क्षणलिप्यते पसवाडामें पीडघणी होय अरऊरेसोजो पीडरह
 वोई करै येजीमें लक्षण होय तीनों विवर्तिसंधि दूटी कहि जै ३
 अथतिर्यगति संधि दूटी होय तीनों को लक्षण लिप्यते ऊंरेसो
 जो होय पीडघणी होय येजीमें लक्षण होय तीनों तिर्यगति संधि
 दूटी जाणि जै ४ अथक्षिप्तसंधि दूटी होय तीनों को लक्षण लि
 प्यते जीमें विषमसूल होय सांथलमें कदेक थोड़ी कदेक धणी
 होय ये लक्षण होय तीनों क्षिप्तसंधि दूटी जाणि जै ५ अथबाध
 संधि दूटी होय तीनों को लक्षण लिप्यते जो ओ संधि नीवरला
 दूटी छै तीं कै नचै पीड होय तीनों अधसंधि दूटी जाणि जै ६
 अथसंधिविनाकांड कहि जै हाड दूटा होय नल कपाल
 बलयनै आदिलेर त्यां को लक्षण लिप्यते नरसल की सीनां
 ई चेहा ड छिद्र छिद्र लियां होय सूधा होय तीनों नल कहि जै अ
 थ हाड दूटि बो वारा १२ प्रकार को छै सो लिप्यते कर्कट १ अ
 श्वकरण २ विचूर्णित ३ कंचित कहि जै यं बिन कसौ ४ अस्थि
 छलित ५ कांड कै विसै भग्न ६ अतिपातिन ७ मज्जागन ८ प्र
 स्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधा करबो १२ जिसायां कानां मति
 साही लक्षण जाणि लीज्यो अथ हाड दूट्यो होय तीनों को ल
 क्षण लिप्यते अंगसिं थल हो जाय अरऊरे सपरस सुहावै
 नहीं अरऊरे सरीर सुरकै अरसरीरमें पीडा होय अरसूल होय
 अरराति दिनमें कदेही चैन पडै नहीं येजीमें लक्षण होय तदि
 जाणि जै ई को कहि तरै संहार दूट्यो छै अथ भग्न रोग का कष्ट
 साध्य लक्षण लिप्यते अभिमंद होय जाय रुपथ्य करि वो
 करै अरवाय को सरीर होय अरजीमें जुर अतीसारादि कहोय

ओभग्नरोगीकंष्टसूचकं अथभग्नरोगकोअसाध्यलक्ष
 णलिख्यते जीकोकपालफटिगयोहोय कटिदूटिजाय अरसं
 धिसंधिषुलिजाय अरजांधफिसिजाय अरललाटकोचूर्णहोजा
 य अरस्तनकीजांगादूटिजाय हियोफाटिजाय गुदाफाटिजाय
 कनफटीफाटिजाय पीदीफाटिजाय अरमांथोफाटिजाय ओअ
 स्तध्यजाणिजै १ अथपुनःअसाध्यलक्षणांलिख्यते हाडा
 नेंआख्याप्रकारबांध्याछै पाछैगाढावांधणीआवै अरवैषोटा
 यणामेंवंधिजाय अरऊंठेचोटलागणीआजाय अरमैथुनादि
 ककरणीआजाय ओहाडदूटिबोअसाध्यसेजाय अथसूरी
 रमैस्थानांकाहाडांकेचोटलाग्याजोचिन्हहोयछै सोलि
 ख्यते कंठाके तालवाके कनफलांके कांधाके सिरके गोडाके
 कपालके कानके आंधिके यांजाणांकहांतरेंकीचोटलागैतो
 उताकाहाडनयजाय पोंहचाकापींडीउगैरैसुधाहाडछै सोवा
 काहोजाय कपालनेंआदलेरजोगोलहाडछै सोफाटिजाय
 दांतउगैरैछोटाहाडछैसोदूटिजाय १ अथभग्नरोगकहीजै
 हाडसंधिकोट्टीवौतोकाजतनलिख्यते प्रथमचोटउगैरै
 कहांतरैसुहाडअरसंधिदूटिजाणैतो वेंहांवषतउठैठंरोपां
 लीबांधै पाछैबुद्धिबानआदमीहैसोवेंकैओषधांकोसेकरै
 अथवा पादोवांधिवोकरै अरऊंठेजोइलाजकीजैसोसीतलइ
 लाजकीजै असजोबुद्धिबानपुरषहोयसो पादीसाथलनहांबां
 धै अरनिपटगादीभीनहींबांधै आछीतरेंसाधारणबांधै सि
 लबांध्याआछीतरेंस्थिरभिलैनहीं अरगादीबांध्यांतचाकैसो
 जो अरपीडा अरचामडीकोपकिवोहोजाय इवास्तेपादीसा

अथभग्नरोगकोअसाध्यलक्षणांलिख्यते हाडा नेंआख्याप्रकारबांध्याछै पाछैगाढावांधणीआवै अरवैषोटा यणामेंवंधिजाय अरऊंठेचोटलागणीआजाय अरमैथुनादि ककरणीआजाय ओहाडदूटिबोअसाध्यसेजाय अथसूरी रमैस्थानांकाहाडांकेचोटलाग्याजोचिन्हहोयछै सोलि ख्यते कंठाके तालवाके कनफलांके कांधाके सिरके गोडाके कपालके कानके आंधिके यांजाणांकहांतरेंकीचोटलागैतो उताकाहाडनयजाय पोंहचाकापींडीउगैरैसुधाहाडछै सोवा काहोजाय कपालनेंआदलेरजोगोलहाडछै सोफाटिजाय दांतउगैरैछोटाहाडछैसोदूटिजाय १ अथभग्नरोगकहीजै हाडसंधिकोट्टीवौतोकाजतनलिख्यते प्रथमचोटउगैरै कहांतरैसुहाडअरसंधिदूटिजाणैतो वेंहांवषतउठैठंरोपां लीबांधै पाछैबुद्धिबानआदमीहैसोवेंकैओषधांकोसेकरै अथवा पादोवांधिवोकरै अरऊंठेजोइलाजकीजैसोसीतलइ लाजकीजै असजोबुद्धिबानपुरषहोयसो पादीसाथलनहांबां धै अरनिपटगादीभीनहींबांधै आछीतरेंसाधारणबांधै सिल बांध्याआछीतरेंस्थिरभिलैनहीं अरगादीबांध्यांतचाकैसो जो अरपीडा अरचामडीकोपकिवोहोजाय इवास्तेपादीसा

३१२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

रणहीबाधिवोजोग्यछै १ हाडसंधिदूटाकीजाय गांडाभसेतीवां
धै औषधांआलीकरि अथवा चोटकीजायगांआलोकादोल
गावैतौहाडसंधिदूटीआछीहोय २ अथवा मजीठ महुचो यां
येन्यांनैठंटापाणीसूंमिहींवांदि ओहाडटूट्योहोयतै ठेंवाकोले
पकरैतौओआछ्योहोय ४ अथवा सौ१०० वारकोधोयोघृत
तीमेंसास्याचाकलवांदि वोकोलेपकरैतौओआछ्योहोय अरहा
उकीसंधिदूटीहोयतौ वोर पीपलकीलाष गोंहूं कहुवांरुषकी
बकल येघृतमेंवांटिदंक ५ दूधसूंपीवैतौसंधिदूटीअरहाडटू
ट्योआछ्योहोय ५ अथवा लाष कहुवांकीककल असगंध ५
रेंदा गूगल येबराबरिले त्यांकीयेकजीवकरिदंक १॥ दूधइसा
थिलेतौहाडटूट्योसंधिदूटीआछीहोय ६ अथवा गोहंनैआ
बाबालिलेपीठकरीमें पाछैवैनेमिहींवांटिदंक ५ सहनदं
क १० कैसाथिचारेरोजीनांदिन ७ तौ हाडटूट्योआछ्योहोय ७
अथवा आंवला मैदालकटी तिल येठंटापाणीसूंमिहींवांदि
कैजागालेपकरै अरईमेंघृतभीमिलावै पाछैवैकोलेपकरैतौ
हाडटूट्योसंधिदूटीआछीहोय ८ अरचोपीमिमाईमनुष्यक्रमां
सकीमिलैसो अनुमानमाफिकसहतसूंऊनैदेतौवैकाहाडअर
संधिदूटीआछीहोय ९ अथवा चोटलागिवाचालाकै मांससो
रवोदूधघृतपुष्टाईकीऔषदीयेसारीआछी अतनीवस्तईनेंआ
छीनहीं लूण कडवीवस्त पारबटाई मैथुन तावडो घेद लूणो
अन्न गालककी अरमोत्यारकीचोटवेगीआछीहोय बूटाकी
अरसोगीकीचोटवेगीआछीहोयनहीं १० अथवा लापटंक ३॥
दूधसूंदिन १५ पीवैतौटूट्योहाडआछ्योहोय ११ अथवा पीत

३१३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

कोड्यांकौचूर्णरती २ तथा ३ ओटायाइधसूपीवेंतौ दूरोहाइछुदै १२
येसर्वजननवेघरहस्यमौलिष्याछै अथवा बोलकीवक
ल त्रिफला सूंठि मिरची पीपलि यांसारंकीबराबरिगूगलनां
बै पाछैयांकोयेकजीवकरिदंक २॥ रोजीनांदिन १५ दूधसूंलेतौ
सरीरवज्जकोसोहोजाय १३ अथवा बोलकीवकल दंक २॥ ई
नैमिहींवांटिसहतसूंमहीनांयेकतांईलेतौ सरीरवज्जकोहोजा
य १४ योजोगतरंगिलीमेंछै अथमुदगरउगैरैकहिं-
तरैकीचोटलागीहोयतींकाआछ्याहोवाकीविधिलि०
मेथी मैदालकडी सूंठि आंवला यांनेगोसूतमेंमिहांवांटि चो
टकेलेपकरैतौचोटआछीहोय १५ इतिमग्नरोगकीउत्प
त्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथनाडीब्रणरोगकीउत्प
त्तिलक्षणजननलिष्यते जोअग्यानवैधसधियोछै सोयां
गूमडाकाब्रणनैकाचोआणिबेंकोजतनकरैनहीं वेंकीराधिक
दैनहीं वाराधिब्रणकैमांहिनसांमेंधसिजाय पाछैबेंकास्थानां
नैविगाडिदे पाछैवाकहींतरै वारांनीसरै वेंगधिकाघणाप्रभा
वसूं ईवास्तेवाराधिनाड्यांमेंनलकीसीनांई नलमेंजैसैजलव
दै तैसौनांड्यामेंराधिदै ईवास्तेईरोगकोनांवनाडीब्रणकही
जै १ ओनाडीब्रणरोगपांच ५ प्रकारकोछै वायको १ पित्तको
२ कफको ३ सन्निपातको ४ सस्वादिककीचोटलागिवाकी ५
अथवायकीनाडीब्रणकोलक्षणलिष्यते कछोमिहांजां
कोमूंदोहोय अरजीमेंसूलचालै जांकेमूंदैराधिरहै रातिनेंघ
णीरहै येजीमेंलक्षणहोय तीनैवायकीनाडीब्रणकहिजै १
अथपित्तकीनाडीब्रणकोलक्षणलिष्यते जंमेंतिसहोय

जुरहोय मीहांदाहहोय गरमअरपीलीजीमेंराधिनीसरै तीनें
 पित्तकीनाडीघ्रणकहीजै २ अथकफकीनाडीघ्रणकोलक्ष
 णलिष्यते जीघ्रणकैमूंदेलोहीलीयांघणीजाहीसुपेदराधि
 नीसरै अरवेंमैंबाजिआवै अरपीडभीहोय रातिमेंघणीहोय
 येजीमेंलक्षणहोय तीनेंकफकीनाडीघ्रणकहीजै ३ अथसं
 निपातकीनाडीघ्रणकोलक्षणलिष्यते जीमेंदाहहोयजु
 रहोय सासहोय मूर्छाहोय मूंदोसूके अस्त्रोंकीराधिकगति
 गंभीरहोय जीकोछेवडोआवेंनहीं ऐसाराधिनीसरै ओनाडी
 घ्रणकालकीरातिहाछै मानूंसारिहींनांभैली येजीमेंलक्षणहो
 यतीनेंनाडीघ्रणकहीजै ४ अथशस्त्रादिकांचीचोटका
 गिवासूंउपज्योजोनाडीघ्रणतीकोलक्षणलिष्यतेजीमें
 सरीरमेंतीरगोलीइत्यादिकलाग्याछै अरवेंकासरीरमेंवेंरांम
 कहांतरैरहजाय तीनेंवैद्यसथियोहेंसोवेंकासरीरमेंसूंसस्त्र
 काढे सोवेंजागांकहांतरैघ्रणपडिजाय तींघ्रणमेंजागांसमेत
 लोहीराधिनीसरिगोहांकरै अरवेंमैंपीडरहवोकरै कहांतरैस
 रीरहलावतां येजीमेंलक्षणहोय तीनेंशस्त्रादिककीचोटकागि
 वाकीनाडीघ्रणकहीजै ५ अथनाडीघ्रणकोअसाध्यक
 ष्टसाध्यलक्षणलिष्यते त्रिदोसकीनाडीघ्रणआछ्योनहींहो
 य ओरचारिप्रकारकानाडीघ्रणआछ्या सोवेंवैद्यकाजतन
 सूंआछ्याहोय १ अथनाडीघ्रणकाजतनलिष्यते सस्त्रमूं
 दाकाघ्रणछै सांमैंराधिनीकलिचोकरैतो वेंकैथोहरिकाइध
 अथवा आकदाइधमेंदारहलदभिजोय तीनेंघासितोंकीना
 तीकरिवेंघ्रणकामूंदाभैदेतो ओघणभरिजाय १ अथवा कि

३१५: अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

रमालाकीजड हलद मजीठ यानैसहतमैमिहीवांदि वेंकीवाति
करै वेंबराभैलुगतिस्वैघदेतौब्रणआछ्योहोय १ अथवा न
बेलीकापानांकोरस आकंकीजड किरमालाकीजड दांतूणी
सोधोखण संचरलूण जवबार यानैमिहीवांदि यांकीवातिमि
हीब्रणकामूढाभैलुगतिस्वैघदेतौओब्रणभरिकेंआछ्योहोय ३
अथवा जात्यादिघृत अथवा जात्यादितेलयांसूभीयोनाडी
ब्रणरोगजायछै ४ अथवात्रिफला सूडिभिरचि पीपलि
यांबराबरिसोधोगूगल यानैमिहीवांदि यांकोएकजीवकरि
दंक आरोजीनांदिन ४९ सीतलजलसूलेतौसर्वप्रकारको
नाडीब्रणरोगजाय पथ्यभैरहतौ ५ अथवा गूगल सिंहूर
यांदोन्यांनैमिहीवांदि ईनैजतनसूब्रणभैरहतौ नाडीब्रणरो
गआछ्योहोय ६ येसर्वभावप्रकासभैलिष्याछै अथवा
आंधाआडाकाबीज तिल यानैमिहीवांदि ईनैजतनसूनाडी
ब्रणलेपकरैतौ वायकोनाडीब्रणआछ्योहोय ६ अथवा तिल
मजीठ हाथीकोदांत हलद यानैमिहीवांदि पित्तकानाडी
ब्रणकेलेपकरैतौ पित्तकोनाडीब्रणजाय ७ अथवा तिल
महलोठी दांतूणी नींबकीछालि तथायान सोधोखण यानै
मिहीवांदि यांकोलेपकरैतौ नाडीब्रणरोगजाय ८ अथवा
तिल संहत घृत येकठाकरिलेपकरैतौ घावकोब्रणआछ्यो
होय ९ अथवासहतकीवत्तीसै अथवा लूणकीवत्तीसैदु
ष्टब्रणआछ्योहोय १० अथवा तेलकीवत्तीसैदुष्टब्रणआ
छ्योहोय ११ अथवा साजी जवबार रूपेलो महेदी सुहागो
रुपेदषैरसार येबराबरिले यानैगडंकाघृतमैमिहीवांदि

३१६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ३१५

दिन १ पाछे ईमें ब्रणमें भुरैतौ ब्रणकी छमिमरिजाय ब्रणकी धा
जिजातीरहै अरओ ब्रणभरिजाय १२ इतिस्वर्जकदिघृत
म् योचक्रदत्तमैलिथोछै अथवा संमालस्रपांनाका
रसमैतेलपकाय वेंतेलकीवातीब्रणमेंदेतौब्रणआछ्योहोय
१३ इतिनिगुंडीतेलम् योहंदमैछै अथसुपेदमल्हम
कीविधि रालपईसा १ भर सुपेदोपईसा १ भर सुपेदमोमप
ईसा २ भर मुरदासींगीपईसा १ भर रालस्रपेदोमुरदासींगी
यांनैषूवमिहींवांदि पाछैगऊकोघृतपईसा ६ भर गरमकरिईमें
मोमपघलायसुद्धकरै अरवेंमिहींवांदि ओषधिभीवेंमोमका
घृतमेंवेंहीवषतनांषे पाछैवेंहीसमेंकासीकीयालीमेंपाणी
नांषिवेंपाणीमेंमोमसुद्धाये ओषदिनांषिहाथसूंषूवथोवें बार
१०८ पाछैब्रणकेईनैलगवैतौब्रणआछ्योहोय १४ अथवा
पारो सोधीआंवला सार गंधक येबराबरिले यांदोन्यांकीबर
वरिमुरदासिंहले अरयांतीन्यांबराबरिकपेलोले यांमैथोडो
सोनीलोथूथोनांषे यांसारंसूंचैगुणोईमेंगऊकोघृतनांषे
अरईमेंनीचकापानाकोरसअनुमानमाफिकनांषे पाछैयां
सारानेंघृतमेंषूववांटै दिनदोयताई पाछैब्रणकेलगवैतौब्र
णमानसर्वआछ्याहोय १५ योवैद्यरहस्यमैलिथोछै अ
थवा सुपेदमोम मस्तंगीगूंदमैढल नीलोथूथो सुहागो सा
जीसींदूर कपेलो मुरदासींगी गूगल कालीमिरबि सोनगै
रूइलायची बेरजो सुपेदो हींगलू सोधीगंधक येसर्ववरा
वरिले मोमविनां सारानेंयेकठाजुदावांटै अरमोमनैंगऊ
काघृतमें अग्निउपरितपायसुद्धकरिले पाछैसर्वओषदिई

३१७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

मोममें मिलाय धूव मिहीषरलमें दिन २ वां टिये कजीव करे पा
छै सरु उगैरै अर सर्वहु ब्रण भी ई काल गायां सू आछ्या होय
१५ यो बै ध कूतू हल में लिखा छै अथवा नीलो धूयो क
पेलो मुरदा सींगी सुपेद बैर सार सुपेदो सीं दूर हांगलू मो
म केसरि गऊ को घृत ये सर्व बरा बरिले पाछै गऊ का घृत नै
तातो करि पहली ताता घृत नै नीचै उतारि ई में अथम नीलो धू
यो बांदिनां पै पाछै वें ही वषत ई में मोम नां पै पाछै ई नै पघला
यले पाछै ई में ये औषदि बांदिनां पै यां सारी को ये कजीव करे
पाछै ई नै कासी की थाली में घणों जल नां पि ई में ये सारी मोम
सुधा ये औषदिनां पै हथेली सू दिन १ धूव मर्दन करे पाछै ई में
मल्लिम नै ब्रण मात्र कैल गावै तो ब्रण मात्र चांदी उगैरै सर्व आ
छ्या होय १७ यो बै ध कूतू हल में छै अथवा हांगलू प
ईसा ३ भर सुपेद मोम पईसा ३ भर साजी पईसा १ भर नीव
का पांना की टिकडी करि गऊ का घृत में पकावै अर मोम घृत
में पघलायले मुरदा सिंह पईसा १ भर पाछै ई नै बांदि यां सा
र को ये कजीव क पाछै ब्रण कैल गावै तो ब्रण मात्र आछ्या हो
य १८ अथ सरि र में हाथ पग उगैरै फाटि फाटि ब्याऊ
सां पडि जाय तीं का आछ्या होवा को मल्लिम लिख्यते
शाल पईसा १ भर काथो पईसा १ भर काली मिरचि पईसा १
भर गहुं को घृत पईसा ४ भर चवेली को तेल पईसा ४ भर
यां औषदानै मिही बांदि लोह का कड छलं में मल्लिम करिले
पाछै ई नै लगावै तो हाथ पग उगैरै कै दो हा फाट तो होय सोनि
अछ्या होय १९ अथ मल्लिम नींब की नींब का पांना

३१८ - अमृतसागर तथा प्रनापसागर तरंग १०

कोरसत्तर १ काँद पाँचगङ्गाको वृत्त पाच ३ कटुल्लामें चट्टा यें वें
तातो करे सो धृतता नो होय तदि वें पंगल पर्दसा ५ भगनां पें वें नो
यलावें तदि ओ पांतां कोर सवें नें सुस्त्रिजाय जाओ हो जाय तदि वें पंग
य पर्दसा १ नीलो धृतो पर्दसा १ सुरदासिंह पर्दसा १ भग यें वां दि वें
वां यि ये कर्जाव करि पाँठे ईने क पडा कैलगाय कोडा का वण केउ
परिलगावें नो वण निश्चै आछो होय २० अथ वण कारि ठा
की त्वचा को रंग और सो होय जाय ती त्वचा का वर्ण सिरी
मो करि वा की ओषदिलिख्यते यें ए सिल मजांठ लाष यें न
हलह ये वरा वरि ले यानें घृत सहन सुं मिद्रीं वां दि वें तुचा केउ
पकरे नो सरार की त्वचा सर्ग सो वें को वर्ण होय २१ इति नाडी
वरा रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संप्रणम् इति श्री मया
हारा जाधिराज महाराजराजराजेंद्र्यासिंवाई प्रतापसिंह
जी विरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे स्थापद विदुषी वण
सोय मारार वण वायपित्त कफादिकांका आगंतुक वण
शस्त्रादिकांका अग्निदग्ध वण ग्रंथि भगन नाडी वण वांस
वरा रोगांका भेद संसुक्र उत्पत्ति लक्षण जतन निरूपण नाम
पंचदशान्तरंगः १५ अथ भगंदर रोग की उत्पत्ति लक्षण
जतन लिख्यते गुदा के आसि पास नागद दाद होय दोय वांगु
लमां दि कुगा सी होय अरु फूटें डरे पीडा रहवों करे अरु डंटे फुल
सी अद्वो करे यें नें दासैं भगंदर कलि जें छे भग के वी चिह्नं ओं
यो यो य छे अरु गुदा के अरु वल के वी चिह्नं होय छे भग के सीत
रें यो रोग होय छे ईव नें दै नें दै य भगंदर कलि जें छे मो भगंदर
चप्रकार कलि वाचको १ दिन के २ काल के ३ नल्पात के ४

शस्त्रादिककीचोटसागिवाको ५॥ अथवायकासंतयोनक
भगंदरकोलक्षणलिख्यते जोपुरसकसायलोअरलूषोब
हुतभोजनकरै तीकैवायहैसोकोपकुंप्राप्तिहोय गुदाकैकनैकु
णसीकरै वेंकोआलसकरिपुरसजर्तनकरैनहां तदिवाफुण-
सीपकै अरउंठेपीडघणीकरै अरवाफुणसीफूटैतदिवेंमैंरा
धिउगैरैमलमूत्रवीर्ययेभीनीसरिवोकरै अरवेंकैचालणीस
रिसासोछेदहोजाय ईनैसंतयोनकभगंदरकहीजै १ अथ
पित्तकतउष्ट्रग्रीवभगंदरकोलक्षणलिख्यते गरमवस्त-
काषावासूपित्तहैसोकुपितहोयगुदाकैचोगुडददोयआंगु
लकीजायगांमैंलालफुणस्यांनैंपैदाकरैछै वाफुणसीततका
लपकिजाय अरवेंमैंगरमगरमराधिनीसरै अरवांफुणसी
उंठकीसीगरदनसिरीसीउंचीहोयआवै वेंनैवैधहैसोपित्त
कोउष्ट्रग्रीवभगंदरकहैछै २ अथकफकापरिआवीभगं-
दरकोलक्षणलिख्यते ऊठेछुजालिघणीचालै अरवेंमैंजा
डीजाडिराधिनीकलवोकरै अरवेंमैंपीडथोडीरहै अरवाफु
णसीसुपेदहोय अरवाअववोहीकरै तीनैपरिआवीकफको
भगंदरकहीजै ३ अथसन्निपातकोसंबूकवर्तभगंदर-
कोलक्षणलिख्यते वांफुणस्यांमैंवहोतप्रकारकीतोपीडा
होय अरवेंफुणस्यांकावहोतप्रकारकावर्णहोय अरवाअव
वोहीकरै अरवाफुणसीभिनकादाषसिरीसीहोय अरवाफुण
सीसंषमांहिलीनाभिसिरीसोहोय तीनैसन्निपातकोसंबूका
वर्तभगंदरकहिजै ४ अथशस्त्रादिककीचोटसागिवाको
भगंदरकोलक्षणलिख्यते गुदाकैकनैकांठनैआदिलेर

अथवायकासंतयोनकभगंदरकोलक्षणलिख्यते

३२० अमृतसागर तथा अतापसागर तरंगे १६

लाग्यो होय अथवा उंठे खुंजा लिवा सून बादिक लागि जाय अ

थवा उंठा का बाल लेता पाछा की उंठे लाग जाय तदि उंठे फू

एँ सी होय अथवा फुल सी फूटे अथवा वें कोरा भिका मूँग सँ और उ

ठे फुल स्यां होय जाय अथवा वें फुल स्यां जाय नही अथवा स्वब बोही क

रें वें नें उन्मार्ग संज्ञिक सस्त्र का चोट लागि वा को भगंदर कहि जै

५ अथ भगंदर को कष्ट साध्य लक्षण लिखते भगंदर तो

सर्व ही कठिन सँ आछ्यो होय परंतु सन्निपात को अथवा उंठे चोट

लागि वा को भगंदर आछ्यो होय नही १ अथ भगंदर को जत

न लिखते गुदा की जाय गां भगंदर उपज्यो जाऐ तदि वैद्य है

सोजो का दिक्कल गाय उंठा को लोही तत काल कदायनां पै द

सी तरे कदावे तो वें फुल सी पकै नही १ अथवा उंठे फुल सी उ

पजी जाऐ तदि उंठे साटी की जड गिलवें सूँठि महलोठी वड

का को मल पांन यां नै मिहीं वांदि क्यौं सुहाव तो गरम लेप करे

तो भगंदर की वें फुल सी आछी होय १ अथवा तिल नींब की व

कल महुवो यां नै मिहीं वांदि सीतल जल सँ उंठे लेप करे तो पि

त को भगंदर आछ्यो होय २ अथवा चंवेली का पांन वड का

पांन गिलवें सूँठि सीं थो लूण यां सारां नै छाछि में वांदि भगंदर

कै लेप करे तो भगंदर आछ्यो होय ३ अथवा हलद आक को

दूध सां धो लूण गूगल कर्नार का पांन यां नै थो राय ई में तो ल

अनुमान माफिक ई में तेल नां विपकावे तदि जल उंगै रें बलि जाय

तेल मात्र आय रहे तदि ई तेल को उंठे मर्दन करे तो भगंदर जाय ४

अथवा गूगल त्रिफला पीपलि यां नै वरावरिले त्यां नै मिहीं वां

टिंक १ जल सँ ले तो भगंदर जाय अथवा सो जानें गोला नै

३२१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

सारनें यांसारनें योहरिकरैठै ५ इति नवकार्षिको गूगलः

अथवा चौराउगैरैकादेवामें निपटकुसल छै वैद्यसथियोदेय

तौ ऊंकनै चौरादेराय व्रणकाजतनमल्लिमादिक छै सोलगा

जेतौ भगंदर आछ्यो होय ६ अरभगंदर बालो इतनी वस्तक

रैनहीं षेद मैथुन शुद्ध घोडाउपरि चटिबो ऊरपोनाज सायन

हीं भगंदर आछ्यो होय गयोतौ भीवरस एकताई करै नही ये

सर्वभाव प्रकासमै लिप्यछै अथवा रसोत दोनूं हलद

मजीठ नीचकापान निंसोत तेजबल दांतूणी यानें मिहीं बां

टि भगंदर कै यांकोले पकरैतौ अरयां हीं सूवें नैं धौवैतौ भगंदर

आछ्यो होय ७ अथवा कृत्ताका हाड कैतुवायानें गधाकालो

हासूं मिहीं बां टि पथरउपरि अरभगंदर कैले पकरैतौ भगंदर

आछ्यो होय ८ अथवा बिलाईका हाडनैं निफलाकारससूं

मिहीं बां टि भगंदर कैले पकरैतौ भगंदर जाय ९ अथवा बि

लाईका हाड कीराष कूकराकाडाड कीराष तीनैं लोहकापाव

मैंगडका घृतमैं घसि भगंदर कैले पकरैतौ भगंदर जाय १०

अथरूपराज रसकी विधि पारोभागदोय २ तांबाकामैल

काभागचारि ४ यां दोन्यां नैं येक छकरिकागल हरिकारसमै दि

न १५ परल करै पाछै यां नैं तांबाकासं पुटमैं मैले आसपासउ

पर बालरैतसूं हांडीभरै पाछै वैकैनीचै आंच देल कड्यां पूब

पहर आठकी ८ पाछै सांगसीतलहुवां संपुटनैं वै मां हि सूं का

टै पाछै संपुटमां हि सूं वै नैं कादि वै नैं घृतसहत सुहागोयेदे

पाछै वै नैं पकी सुसिमैं मेल्ले वै कीअधमसिकरि धवणीसूं वै नैं

पूबधवों वै तदि आंच कषायफिरै तदि वै नैं वै मां हि सूं काटै त

३२३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

दियोर ससिद्धि होय पाछे ईर सने रती ३ सहत सुं ले तो भगंदर
निश्चै आछो होय ऊपर सुं बिफलां को काटो पीवै अर पथ्य रहै ॥

इति रूपराजरसः अथ रवि सुंदर रस लिख्यते पारोभा

१ आंवला सार गंधक भाग २ पाछे यां दोन्यां की परल में घालि

कजली करै पाछे यां नै कवार का पाठा कारस में भरल करै पाछे

ई को गो लो करै वेंगोलानें तां बाकासं पुट में मेलै वेंसं पुट नें हा

डी में मेलै आस पास वें कै चौगुड दांरां षदे वें कै चीचि संपुट में मेलै

पाछे वें कै नीचै अभिवाले दिन १ ताई पाछे स्वांग सीतल हुवां

वें सां हि सुं वें नै काटै पाछे वें कै जंभीरी कारस की पुट ७ दे पाछे

ई नें रती १ सहत घृत सुं चाटै तो भगंदर जाय ई ऊपरी सुं सत्तल

सण पीवै ई पाया ऊपरि सीठो अर हार करै न हीं दिन नें सो वें न हीं

मैथुन करै न हीं ई ऊपर सीतल भोजन करै न हीं इति रवि सुंदर

रसः १२ योर ससिंधु में लिख्यो छै इति भगंदर रोग की उ

त्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ उपदंस रोग की उत्प

त्ति लक्षण जतन लिख्यते हथ सरका करि वासूं अर इंद्रिका

क हीं तरै सुं नष अर दांतला गि जाय ती सुं अथ वा स्त्रियां कै

गर पीका प्रभाव सुं अथ वा स्त्रियां का भग ऊपरि वडा क दोर वा

ल होय आबै त्यां का उपाडि वासूं अथ वा योनि को छिद्र मिहीं होय

ती सुं स्त्रीयां की ज्योनि दूषित होय छै तीं कारण सुं अथ वा लिं

गेंद्रि नें धोवै न हीं ई कारण सुं अथ वा स्त्री पुरष सुं मैथुन यणों क

रै ई कारण सुं पुरस कै लिं गेंद्रि कै विषे पांच प्रकार को उपदंस हो

य छै अर नाना प्रकार का जो कुपथ्य करि गोत्यां कारणों सुं उपदं

स होय छै सो उपदंस रोग ५ पांच प्रकार को छै वायको १ पित्तको

कफको ३ सन्निपातको ४ अरकींहीतरैलींगेंदीकै नषदतादिक
 कीचोटलगिवाको ५ अथवायकाउ पदसकोलक्षणलि
 लिंगेंदीकैविषैगरमीकरिपीडाहोय अरउंकीसीनाईफटि
 जाय अरओफुरकै अरउंठेकालीफुरास्यां होयजायतौ जाशि
 जेवायकोउपदंसहै १ अथपित्तकाउ पदसकोलक्षणलि
 उंठेफुरास्यांपीलीहोय अरउंठेघणोंवेपनीसरैअरउंठेदाह
 होय अथवा फुरास्यांलालहोय येजीमेंलक्षणहोयतदिपि
 त्तकोउपदंसजाणिजे २ अथकफकाउ पदसकोलक्षण
 लिख्यते जीमेंबाजिघणीहोय सोजोघणोंहोय वैफुरास्यांसु
 पेदहोय अरजाडोजाडोवांमैअवै येजीमेंलक्षणहोयतीमैक
 फकोउपदंसकहिजै ३ येसर्वलक्षणजीमेंहोयतीनैसन्निपा
 तकोउपदंसकहिजै ४ अथउपदंसकोअसाध्यलक्षण
 लिख्यते जीलिंगेंदीकोमांसविषरिजाय अरवैमेंकमीपडिजा
 य अरइंद्रीगलीजाय अरआंडअवसेसआयरहै ओउपदं
 सअसाध्यजाणिजे ५ अथवाउपदंसजीकैहुवोहै अरवैको
 जतननहींकरै अरविषैकरतोजाय अरवैमेंकमीपडिजाय
 अरवैकीइंद्रीगलिजाय ओपुरषमरिजाय ५ अथलिंगार
 सकोलक्षणलिख्यते जीपुरसकीलिंगेंदीकैविषैधानका
 अंकूरसरीसाऊपरहोजाय कूकडाकीसिसासरीसाहोजाय
 अरलिंगेंदीकैमांहीं अरवैकीसंधिकीनसांमेंपीडाघणीहोय
 अरवाइंद्रीनूवालागीजाय वैनैलिंगार्सकहिजै १ अथउप
 सकोजतनलिख्यते जोकलगायऊठाकोलोहीकटाजै अ
 वानैपकवानैपकवादेनहीं इसीतरैकरैतौ उपदंसजाय १

अथवा सादीकीजड गिलवे संहि महलौठी वडकाकोमलपंख
 यानैओटाय ईपाणीसूलिंगेंद्रीनै धोवैतौउपदंसजाय २ ~~अथवा~~
 वा लिंगेंद्रीकीनसांछुहावैतौउपदंसजाय ३ अथवा वडका
 कोमलपत्रकुहवाकीवकल जांमुणिकीवकल लोद हरडैकी
 छालि हलद येवराबरिले यानैजलसंमिहींवांढि लिंगेंद्रीकैले
 पकरैतौ लिंगेंद्रीकीसारीधथा असउठाकोसोजोदूरिहोय ४
 अथवा लिंगेंद्रीपकजायतौ लिंगेंद्रीनैयांहींओषधसूंथावै
 तौउपदंसजाय ५ अथवा त्रिफलाकाकाढासूंवैनैधोवै नै
 थवा भांगरांकारससूंवैनैधोवै अथवा कमलकापाणीसूंवैनै
 धोवै अथवा यांकोउठेलेपकरैतौउपदंसजाय ६ ~~अथवा~~
 जन्यांरूपकीवकलकोचूर्ण अथवा दाड्यूकावकलकोचूर्ण यां
 नैमिहींवांढि लिंगेंद्रीकैलेपकरैतौउपदंसजाय ७ ~~अथवा~~
 पारीनैपाणीमैघसंलगावैतौउपदंसजाय ८ अथवा कडा
 होमैत्रिफलानैवालिवैकीराषकरिसहतसूंउपदंसकैलेपकरै
 तौउपदंसआछ्योहोय ९ अथवा पटोल नांबकीछालि त्रि
 फला चिरायतौ बैरसार विजैसार गूगल यानैवराबरिले पा
 छैयानैओटायपीवैतौउपदंसजाय १० अथवा चिरायतौ नां
 बकीछालि त्रिफला पटोल कण्णचकीजड आंवला बैरसार
 विजैसार यांकोकाढोकरि तींकाढामैघृतपकावै पाछैपाणी
 वलिजाय घृतमात्रआयरहै तदिईघृतकोलेपकरैतौ अ
 थवा ईघृतनैभोजनमैपायतौउपदंसजाय ११ इतिभूषण
 वादिघृतम् औरघृतकोदकाजतनमैलिथ्याछै अथवा
 काजतनमैलिथ्याछै सोपंघृतलगावै अथवा भोजनमै

३२५ अमृतसोगर तथा प्रतापसागर तरंग १६

पावैतोउपदंसजाय १२ अथवा जुलाबकाले वासूउपदंसजाय
१३ अथवा जांगीहरडैपईसा ८ भर सुपेदकाथोपईसा १ भर नी
लोथूथोपईसा १ भर यानैमिहींवांदि पाछैपक्कानींबूसो १०० का
रसमैषरलकरै योरससुंसायदै पाछैयांकीगोलीभांसा १ भरकी
करै पाछैगोली १ रोजानांदिन १५ दहीकैसाथिलेअरपथ्यरहैतौ
उपदंसनिश्चैआछोहोय १४ अथवा नीलोथूथोभाग १ काथोभा
ग २ सुरदासीगीभाग २ सुपारीकीराषभाग २ यानैमिहींवांदि
उपदंसकीचांदीकैयांकोभुरकोदेतौ उपदंसनिश्चैआछोहोय १५
अथवा पारो गंधक हरताल सींदूर मैसासिल यानैतांबाका
पानमैतांबाकाधोदासूधृतमैवांदिदिन ३ पाछैईनैलगवैतौ
उपदंसजाय १६ अथवा गस्साइरिहोवाकोजतनपाछैलिथ्या
छै लोकरिकैलिगासकोजतनबैद्यकरिले इतिउपदंसरोग
कीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् येसर्वभादप्रक्राममै
लिथ्याछै अथसूकरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिखते
जोसुरषपुरसहोयसोविगरिविचास्यांमूर्षाकाकत्थांसू लिंग
नै बधायोचाहै पट्टीकरिलेपादिकांकरि तीपुरषकेअठारा
प्रकारकोलिंगकैविसैसूकरोगपैदाहोयछै सोसूकरोगअथ
राप्रकारकोछै सर्पिंपिका १ अष्टिलिका २ ग्रथित ३ कुंभीका ४
अलजी ५ मृदिन ६ समूदपिडिका ७ अवमंथ ८ पुष्करिका ९
स्पर्शहानि १० उत्तमा ११ शतपोनक १२ त्रकपाक १३ शोणिता
बुंद १४ अर्बुद १५ मासपाक १६ विद्रधी १७ तिलकालक १८
अथसर्पपिकाकोलक्षणलिखते जीकैकहांतरैसूंलिं
गकैसिरसूंसिरीसीगोरीफुलसीहोयजाय वायकफकरिकै

३२६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

तीनैसर्षपिकानामसूकरोगकहिजै १ अथअष्टीलीकासूकरोगकोलक्षणलिख्यते कहींतरैवेंकालिंगकीविसें करडीअरवांकी पीछालीयांफुणस्यां होय तीनैअष्टीलासूकरोगकहिजै २ अथकुंभीकासूकरोगकोलक्षणलिख्यते कहींकारणसंरक्त पित्तसं जींकालिंगकै जांमुशिकीगुंठसीसिरीसीफुणसीहोय जाय तीनैकुंभीकासूकरोगकहिजै ४ अथअलजीसूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकीइंद्रीकैविषेप्रमेहकीफुणसीहोय जाय तीनैअलजीसूकरोगकहिजै ५ अथमृदितसूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकीइंद्रीकहींतरैमसलीगईहोय अरवेंमेंपीड होयआवैवायकरिकैं तीनैमृदितसूकरोगकहिजै ६ अथसंमूटपिडिकासूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकैदोसूं हाथांसंकहींतरैइंद्रीपीडीगईहोयतांकिरिवैकैऊठेफुणस्यां होय तीनैसंमूटपिडिकासूकरोगकहिजै ७ अथअवमंथसूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकालिंगकैमध्यकहींकारणसंवडीअरघणीफुणस्यां होयजाय कफलोहीकादुष्टपणांसं अरवांमेंपीडा होय रोमांच होयआवैतीनैअवमंथसूकरोगकहिजै ८ अथपुष्करिकासूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकीसुपारीकैऊपरिपित्तलोहीकाकोपसूं फुणस्यां घणी होयवैनेपुष्करिकासूकरोगकहिजै ९ अथस्पर्शहानिसूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींकीइंद्रीकहींकारणसंहाथउगैरैकोस्पर्शसहैनहीं तीनैस्पर्शहानिसूकरोगकहिजै १० अथउत्तमासूकरोगकोलक्षणलिख्यते जींपुरसकैअजीर्णसं मूंगउददसिरीसी रक्तपित्तकाकोपसंलिंगकैविषैलालफुणसीहोजाय तीनैउत्तमासूकरोग

१२७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

रोग कहिजे ११ अथ सत योम कसू रोग को लक्षण लिखते
जीं कालिग कै विषै कहीं कारणसू वात लोही का कोप सू छिद्र
एण पड़ि जाय वै कै सत योम कसू रोग कहिजे १२ अथ त्वक पा
कसू रोग को लक्षण लिखते जीं की इंद्री वाय पित्त कफ करि
कै पकि जाय अर उठे दाह होय आवै अर पीडासूं सरीर में छुर
होय आवै तीनै त्वक पा कसू रोग कहिजे १३ अथ सोणिता बु
दसू रोग को लक्षण लिखते जीं की इंद्री विषै काली लाल फु
एसी होय आवै अर उठे पीड होय आवै तीनै सोणिता बुदसू र
रोग कहिजे १४ अथ मांसा बुदसू रोग को लक्षण लिखते
जीं की इंद्री को मांस विष रिजाय अर उठे पीड घणी होय सो आंस
व दोस का कोप को छै वैनै मांस पाक कहिजे १५ अथ विदधी सू
क रोग को लक्षण लिखते जीं कालिग कै विषै सनिपात का कोप
संफु ए स्यां उठे वैनै विदधी सू रोग कहिजे १६ अथ तिल का
ल कसू रोग को लक्षण लिखते जीं की इंद्री विषै काली अर
नाना प्रकार की रंग नै लीयां अर विस नै लीयां ऐसी फु ए स्यां हो
य अर वै फु ए स्यां पकि वाला गि जाय अर ज्यां मै राधि पडै इंद्री
लिजाय या सनिपात का कोप संहोय छै इनै तिल काल कसू र
रोग कहिजे १७ अथ सूक रोगां को असाध्य लक्षण लिखते
मांसा बुद १ मांस पाक २ विदधी ३ तिल काल ४ ये चारि आ
छ्यान हो होय १ अथ सूक रोग का जतन लिखते अथ राही
सूक रोग का विस नै इरि करि वावा लजतन कीजे १ अथ बा लि
गेंद्री को जो कां सू दुष्ट लोही कटाय नां पिजे तौ सूक रोग जाय २
अथ बा इंद्री नै आछा जु लान दीयां सूक रोग जाय ३ अथ बाल

३२८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

द्युभोजनांसूकरोगजाय ४ अथवा त्रिफलाकाकादासूं गूगल
षायतौ सूकरोगजाय ५ आलीऔषधां कालेपासूं सेकवासूं सू
करोगजाय ६ सीतलजतनांसूं सूकरोगजाय ७ अथवा दार
हलद तुलसी महलोठी धूमसो यांमें तेलनांषिपकावै येऔष
दिसीजिजाय तदिदं तेलको मर्दनकरैतौ सूकरोगजाय ९ अ
थवा परैदांको तेलकरिकै मर्दनकरैतौ सूकरोगजाय ११ ये
सर्वसंग्रहमें लिथ्याछै इति सूकरोगकी उत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूर्णम् अथकुष्ठकहीजैकोदकी उत्पत्तिलक्षण
जतनलिख्यते विरुद्धअन्नपानकाषाचापीबासूं पतली
चीकणिभारि येजोवस्त्यांकाषावासूं वमनकावेगकारोके
वासूं मलमूत्रकावेगकारोकीवासूं घणाअग्निकातपिवासूं घ
णाभोजनकाकरिवासूं सीतलउष्ण कानहींगिणवासूं तावडा
कारहवासूं अमकाकरिवासूं भयकालागिवासूं अरताबडाभ
यअमयांसूं दुषाहुवोजोपुरस अरततकालयांउपरिसीतलप
णीपीवैतींकारणसूं अरअजीर्णमें भोजनकरैजैसूं अरयमन
जुलावनें आदिलेरजांमें कुपथ्यकरैज्यांसूं नवीनजलकापी
वासूं दहीमछलीषावासूं घणालूणाकाषावासूं घणीषटाई
काषावासूं अरउउद मूली पीस्योअन्नतिल हलदगुड यांका
घणाषावासूं दिनकासोवासूं आम्हणकासरापसूं औरअनेक
प्रकारका घणाषावासूं घणास्त्रीसंगसूं औरअनेकप्रकारका
पापांकरिवासूं मनुष्यांकै वायपित्तकफदेरौ दुष्टदुवाथका अ
रसात्प्रधातुदुष्टदुईबकीवैकासरीरकालोहीनें मांसमें वैका
सरीरकाजलनें हसितकरै अरअरगा १८ प्रकारका कोदानें

३२९. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तंत्रंग १६

येकारणयाने प्रगाट करै छै ॥ अथ अमृतसागर का कोट को नाम लिख्यते ॥ कपाल १ उदंबर २ मंडल ३ रिक्षजिह्व ४ पुंडरीक ५ सिंघाक हीजे विभूति ६ कारण ७ येक कुष्ठ ८ गजचर्म ९ चर्म दल १० किटभ ११ बैयादिक १२ अलस १३ दाद १४ पांच १५ विस्मोटक १६ सतारू १७ विवर्षिका १८ यां अमृतसागरे सांतम हां कुष्ठ कपाल १ उदंबर २ मंडल ३ सिंघा विभूति ४ का कारण ५ पुंडरीक ६ रिक्षजिह्व ७ अरइयारा ११ साधारण अथ कुष्ठ रोग को पूर्व रूप लिख्यते ॥ पहली व्रण होय वैत्रण को मूल होय अथवा परधरोज्या को स्पर्श होय अथवा वैत्रण रूपा होय अथवा बांघ्रणों में पसेव आवै अथवा ताकड़ों में पसेव आवै नही अथवा घरा को वर्ण और सो होय बांघ्रणों में दाह होय बांघ्रणों में पुजा लिखा वैवात्त चा सोय जाय बांघ्रणों में पीडा होय वैत्रण ऊंचा होय बांघ्रणों में सूख घणी होय अतत काल बांघ्रणों की उत्पत्ति होय अरघणादि नां तां ईर है अरकुपथ्य तो थोड़ी करे अरकुपथ्य को कोप घणों होय अर बांघ्रणों में दाह होय को करे अर बांघ्रणों में लोही नीसरे येजी में लक्षण होय तदि जाणिजे ईर कोट होस १ अथ कोट को सामान्य लक्षण लिख्यते ॥ पूर्व जन्म का पाप सो तौ अनुषां की लुहि है सो वि कुर्वित हु ईश की कुपथ्य करे पाछे बांघ्रणों को कोप कूपा मिहु बांघ्रणों को पित्त कफ सो सरीर की नीसों में प्राप्ति होय अर सरीर की त्वचाने अर सरीर को लोहीने अर मांसने हु सित करे अर सरीर की त्वचा को स्वरूप और सोही करे छै ताने वैवैद्य है सो कोट कहै छै १ अर बांघ्रणों में घणों को पकरे तदि कपाल कुष्ठ ने पैदा करै छै सरीर में घणों को पकरे तदि कपाल कुष्ठ ने पैदा करै छै

सरीरमें पित्तकोपकूंप्राप्ति होय तदित्रौ दुंबरकोटनें पैदा करै छै सरीरमें कफकोपकूंप्राप्ति होय तदि मंडलनामकोटकूंकरी छै अरवाय पित्तसरीरमें कोपकूंप्राप्तहुवाय का विवचीनामकोटनें अरि क्षजिह्वा नामकोटनें पैदा करै छै अरवाय कफसरीरमें कोपकूंप्राप्तहुवाय का चर्मकुष्ठनें किरिमकुष्ठनें सिध्दानें अलसकुष्ठनें विपादिकाकुष्ठनें पैदा करै छै पित्तकफसरीरमें कोपकूंप्राप्तहुवाय का दाहनें सतारुषीनामकोटनें पुंडरीककोटनें विस्मोटककोटनें पांगनें चर्मदलकोटनें पैदा करै छै साराही वाय पित्तकफसरीरमें कोपकूंप्राप्तहुवाय का कंकणनामकोटनें पैदा करै छै १ अथ सात महाकुष्ठ कै मध्यकापालिककोटकोलक्षणलि० जीका सरीर की त्वचा काली अरलाल अरजागां जागां फाटी अरलूषी अरकठोर अरसूक्ष्म होय अरवेमें पीडघणी होय वेंकोटनें वैद्यकापालनाम कहै छै योकोट विसम छै दोहरा जाय १ अथ सात महाकुष्ठ मध्ये त्रौ दुंबर छै तीकोलक्षणलिख्यते जीका सरीर की त्वचा में दाहघणों होय अरललाई घणी होय अरषुजाली घणी चालें रोम रोममें अररोम पीला होय अरसरीर की त्वचा गूलर का पक्या फल सिरासी होय तीनें त्रौ दुंबरकोट कहि छै २ अथ महाकुष्ठामें मंडलकोटकोलक्षणलिख्यते जीकी त्वचा सुपेद अरलाल होय अरवास्थिर रहै अरचीकणी होय अरउंची होय अरआलीर हवो करै ईनें वैद्यमंडलनामकोट कहै छै ३ अथ सिधानामविभूतिकोटकोलक्षणलिख्यते जीकी त्वचा सुपेद तांबा सिरासी होय अरत्वचा सूक्ष्म होय अरबेंलच में पाजिआवें अरत्वचा मिहीं मिहीं उचरती जाय अरवाविभू,

तिमुष्णहियामें घंणी होय घीयाका फूलसिरासी तीनैं वैद्यसिध्दा
 नामविभूतिको द कहैं छै ४ अथमहांकुष्ठमध्येकां कणीनाम
 कोदतीं कोलक्षणलिखते जीं की त्वचा चर्मसिरासी होय वि
 चमें काली अंतमें लाल औ सी होय अरवापकैन हीं जीमें पीडघ
 णी होय ईनैं वैद्यकां कणीनामको द कहैं छै यो सन्निपातका को
 पसंरुफजैं छै यो आच्छो होय न हीं ५ अथमहांकुष्ठमध्ये
 डरीकनामकोदतीं कोलक्षणलिखते जीं की त्वचा सुपेद
 लाल ईनैं लीयां कमल की पाषंडी सिरासी होय ओक फकाको
 पसं होय छै ईनैं वैद्यपुंडरीकनाम कहैं छै ६ अथरिखजिह्वा
 नामकोदतीं कोलक्षणलिखते जीं की त्वचा रक्तपर्यंत अंतमें
 लाल होय जीमें काली भी होय जीनैं रिखजिह्वा नामको द क
 हैं छै ७ अथग्याराहुडकोदतीं मध्ये एककुष्ठनामको
 दतीं कोलक्षणलिखते जीं की त्वचा में पसेवन हीं आवै अ
 र बडो जीं को स्थान होय मछलीका टुकसिरासी होय तीनैं ए
 ककुष्ठनामको द कहैं छै १ अथगजेचरमकोदकोलक्षण
 लिखते हाथ की चर्मसिरासी जीं की त्वचा जाडी होय तीनैं
 जचर्मको द कहैं २ अथचर्मदलकोदकोलक्षणलि
 जीं की त्वचा सुलनें लीयां लाल होय अरजीमें बाजिचालैं अ
 जीमें फाट्यासा होय अरजीका हाथका स्पर्शनैं सहसकैन
 तीनैं चर्मदलको द कहैं ३ अथविचर्चिककोदकोल
 णलिखते जीं की त्वचा में फुलस्यां बाजिनैं लीयां होय अर
 णस्यां काली होय अरज्यां फुलस्यां में चीपनीसरै या हाथप
 में होय छै तीनैं विचर्चिकानामको द कहैं ४ अथपां

३३२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर १६

नाम पांव कोट कोलक्षण लिख्यते जीकासरिर के छोटा छोटा
अरघणी फुल स्यां होय अरज्यामैं चेपनी सरें अरज्यामैं बाजि आवै
अरलाल फुल स्यां होय अरदाह होय तीनैं पांमानाम पांव कोट
द कहिजै ५ अथ दाद नाम कोट कोलक्षण लिख्यते जीमैं बा
जी आवै अरलाल फुल स्यां होय अरत्वचा सुं उंची होय ये ल
क्षण जमैं होय तीनैं दाद नाम कोट कहिजै ६ अथ दाद को
भेद कुछ दाद कोट ती कोलक्षण लिख्यते जीका हाथ पग कैं
अथवा काछ में दूंगा कैं जो फुल स्यां होय जीमैं यणों दाह होय ती
नैं कुछ दाद कोट कहिजै ७ अथ विस्फोटक नाम कोट को
लक्षण लिख्यते जीकी त्वचामैं फाड़ा काला अरलाल अरछो
रा होय तीनैं विस्फोटक नाम कोट कहिजै ८ अथ किंकिभवा
म कोट कोलक्षण लिख्यते जीकी त्वचामैं सूका वरण का स्था
न की सी नाई काला भर धरा कठोर ज्यां को स्पर्श होय तीनैं किं
भनाम कोट कहिजै ९ अथ अलसक नाम कोट कोलक्षण
लिख्यते जीकी त्वचामैं बड़ी फुल स्यां लाल ई नैं लीयां होय जी
मैं बाजि आवै तीमैं अलसक नाम कोट कहिजै १० अथ रुना
म कोट कोलक्षण लिख्यते जीकी त्वचामैं फुल स्यां ला
ल काली दाह नैं लीयां होय तीनैं सतारु नाम कोट कहिजै ११
ये अठारानां कोट तो कथा अथ सरिर की सात धातों में
सहवा जो कोट त्यां कज्जु दाजु दा लक्षण लिख्यते अथ रस
तमै प्रास हुबो जो कोट ती कोलक्षण लिख्यते त्वचामैं स्थिति जो
दनी की त्वचा को स्वरूप और सो होय अरत्वचा लुपी होय अरल
ज्जो ज्जाय रोमां चर हवा करै पमे वयणां आवै ये जीमैं लक्षण होय

३६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

सधातमें प्राप्तिहुवो कोटजाणिजै १ अथरुधिमें प्राप्तिहुवो जो
कोटतीं कोलक्षणलिखते जीमें बाजि आवै अरराधिनीसरे
तदिजाणिजे लोहीमें प्राप्तिहुवो कोट है २ अथमांसमें प्राप्तिहुवो
कोटतीं कोलक्षणलिखते ओकोटपुष्टयणों होय अरमूंदो घ
लोंसूके अरफुणस्यांकठोर होय अरवांमें पीड होय ये लक्षण हो
यतीं मांसमें प्राप्तिहुवो कोटजाणिजै ३ अथमेंदमें प्राप्तिहुवो
जो कोटतीं कोलक्षणलिखते हाथको नांस होय जाय कुहणी
आंयरहे चाल्यो जाय नही सर्वअंग दूरिवांलगि जाय थोड़ीचोट
सरबत्र फेलि जाय मूंदोसूके फुणस्यांकठोर होय अरवांमें पीडा हो
य येजीमें लक्षण होय तीनोंमें प्राप्तिहुवो कोटजाणिजै ४ अथ
हाड अरमांजीमें प्राप्तिहुवो जो कोटतीं कोलक्षणलिखते
नोकगलि जाय नेत्र लाल हो जाय अरवां अणोंमें रुमी पडि जा
य कंठको सरपांघो हो जाय अरअणोंमें पीड होय तदिजाणिजे
हाडमें अरमांजीमें प्राप्तिहुवो कोट है ५ अथवीर्यमें प्राप्तिहुवो
जो कोटतीं कोलक्षणलिखते तां कामातापिताका वीर्यमें
कोटको दोस घणों होय वांकाहुवा जो वेटावेटी सोभी कोटाही
होय ७ अथकोटको साध्यासाध्य लक्षणलिखते कोटवा
य कफको होय अरत्वचालोही मांसमें रहतो होय सोतो साध्य जा
णिजे अरकोटमें दमें जाय प्राप्ति होय अरदोय दोसको होय सो-
जाय जाणिजे अरकोटमांजीमें जाय प्राप्ति होय अररुमि पडि
जाय अरदाह होय आवै अरमंदग्नि होय जाय अरनिदोसको
होय सोकोट असाध्य जाणिजे अरशुक्रमें प्राप्तिहुवो जो कोट
सोभी असाध्य जाणिजे १ अथकोटको असाध्य लक्षणत्रे

रलिष्यते कोटविषमिजाय अरक्षुबालागिजाय अरजीकोकंठ
 सुरयांधोपडिजाय अरवेनेवमनविरेचकादिकादेनहीं ईसाए
 रसनैकोटमारिनांषे १ अथकुष्टकोभेद एकश्चित्राभीष्टे
 तींकीउत्पत्तिलक्षणलिष्यते जोकोटकीउत्पत्तिसोहास्विनी
 उत्पत्तिस्विनीलाल होय अरक्षुवेकोयनहीं कोटक्षुवैइमेंयोभे
 द अरस्वित्रिकोभेदयेककिलासछै योलालहोयछै पुनश्चि
 दोयप्रकारको एकतौवायपित्तकफसूंडपज्यो अरएकघणसूंड
 पज्यो अथश्चित्रिकोटकोसाध्यासाध्यलक्षणलिष्यते मि
 हांहोयकालाबालामेंहोय एकदोसकोहोय नवीनउपज्योहोय
 नहीं अग्निसूंडपज्योहोय इसोश्चित्रिकोटसाध्यजाणिजे इंचें
 औरलक्षणहोयसोश्चित्रिअसाध्यजाणिजे अथकुष्टकामि
 लापथकीकुष्टजैमेंऔरमनुष्यकैजायलागै तैमेंहींऔर
 मायेरोगऔरपुरमांकैभीजायलागैछै यांरोगांवालाकोप्रसं
 गकरैतौ अथवा गात्रसूंगात्रमिलावैतौ अथवा एकठाभोजन
 करैतौ अथवा एकठासोवैतौ अथवा आपंसमेंवस्त्रपहरैतौ
 अथवा आपत्तमेंकहींचस्तकोलेपकरैतौ इतनारोगउद्दि
 औरकैजायलागै सोरोगलिपूछे सोस १ कोट २ जुर ३ राज
 रोग ४ आंधिदूषणी ५ भीतनानै ६ आदिलेर येरोगउडिजाय
 लागैछै पुनःकोटकोअसाध्यलक्षणलिष्यते गुदस्थानमें
 होय हाथमेंहोय होठामेंहोय सोकोटजायनहीं अथकोट
 रोगकाजतनलिष्यते हगडेंकीछालि कणगचकीजडभिर
 सूं हलद वावची सांधोल्ला वाचविडंग यम्ववगचरिले सोने
 गोमूतमेंमिहींचांदि कोटकोलेपकरैतौकोटहरिहोय १ इतिपञ्च

३२५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ३६

दिलेप अथवा वावचीनेंमिहीं बांदि आराकारसकी वेंकै पुट
 दे पाछेईको कोटकै उबटणों करै तौ कोट जाय २ अथवा ब्रह्मा
 जीमार्कडेजीनें वता योजो प्रयोग सो कोटनें आदिलेर जो और भी
 रोगलांका इमिकरि बावासे संहं चै ठेलि पूछं नींबका फूलकै
 समें तौ नींबका फूललै अरनींबका फलां कै समें नींबका फलले
 अरनींबकी वकललै नींबकी जडले अरनींबका पानले योनीं
 बको पंचांग नबोले अरदोन्यं हलद भिफला सूरि कालीमिर
 चि पीपलि ब्रह्मा गोषरू सोध्याभिलावा चित्रक वायविडंग
 सार बाराही कंद गिलवै बावचि किरमालो मिश्री कूठ इंडज
 ब पाट बैरसार ये बराबरिले यांनै मिहीं बांदि नांगर मोथका
 रसफियां कै पुट दै अरनींबका पंचांग कारसकी यां कै पुट दै ७ दे
 पाछे भांगरा कारसकी यां कै पुट ७ दे पाछे यांनै लाया सुकाय
 मिहीं चूर्ण करिले पाछे आठ्यो दिन दोष कोट बात्सनें बुलाव
 दै सहत कै साथि अथवा बैरसारका कांदा कै साथि परभात
 कै समें गरम प्राणी सूलै प्रमाण अथे लास पाछे कौं वध तो जा
 यटका भर ताई ऊपर हलको भोजन करै घृत समेत तौ अतनारो
 गांनै हरिकरै यौचीनै उदंबरनै पुंदरीकनै कापालनै राहनै कि
 टभनै अलसकनै सत्तारुनै विस्फोटकनै यंसारजातिका कोट
 छै त्यांनै विसर्प रोगनै इतनारोगां वैयो निब पंच अवलेह हरिक
 रै छै ३ इति पंचनिब अवलेह अथवा वावचीटका ५१
 भर सोध्योगूलटका ५१ भर सोधी सोनासुरवीटका ३ सारटका
 २१ भर गोरषमुंडीटका ३१ भर कपागचटका ११ बैरसारटका ५१
 गिलवैटका २१ मिसोतटका २१ नांगरमोथोटका २१ वायविडंगटका ११

हलददंका १। तजदंका १। नांवकोपंचांगदंका ५। त्रिफलादंका ३।
 चित्रकदंका २। भर यांसर्वनेमिहीनांदि दंका २। प्रमाणसहतपु
 तकेसाथिगोलीकरै पाछैप्रभातहीगोली १। गोमूतसूतेतौ को
 दमात्रने वातरक्तने पांडुरोगने उदररोगने प्रमेहने गोलाने
 यांसोगाने योहरिकरेछै अरबूटापणाने योहरिकरेछै जुवान
 पणानेकरैछै ४ इतिस्वायंभुवोगूगल अथवा चित्रक
 त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि जीरी कलौंजी वच सांधोखण
 अतीस कूठ चव्य इलायची जवषार बायविडंग अजमोद ना
 गरमोथो देवदार येबरावरिले यांसर्वकीबराबरिसोध्योगूग
 लछे पाछैयांसर्वनेमिहीनांदि येकजीबकरिघृतसेती पाछैमां
 साचारिभरकीगोलीकरै पाछैगोली १। भोजनकैसमेंषायतौ
 कोदमात्रने कृमिने व्रणमात्रने संधहणाने ववासीरने मूटा
 कारोगने ग्रधसीने गोलाने यांसारारोगाने योहरिकरेछै १ इ
 तिकैसोरगूगलः अथवा सोध्योभिलावासेर ३२ पाणीसेर
 ३१५ मैओटावे यांओटातांमैगिलवेसेर ३२ कूटिनांषै पाछैरै
 पाणीकोचतुर्थासआयरहै तदिउतारिछाणिले पाछैयांमैगऊ
 कोघृतसेर ३१ नांषै गऊकोदूधसेर ३४ ईमैनांषै मिश्रासेर ३१ ई
 मेंनांषै सहतसेर ३१। ईमैनांषै पाछैईनेमधुराआंचसूपकावे ये
 सर्वजाडीहोजाय तदिईनेआंचसूउतारि ईमैयेओषदिनांषै
 वाचंचिदंका २ पचाडकाबीजदंका २ नांवकीछालिदंका २ हरदेकी
 छालिदंका २ आंबलादंका २ सांधोखणदंका २ नागरमोथो २ इल
 इचीदंका २ नागकैसरिदंका २ पित्तपापडोदंका २ पत्रजदंका २ ने
 ववाखोटदंका २ पसदंका २ चंदनदंका २ गोषरूदंका २ कचूरदंका २

३३७ अमृतसागरस्तथा प्रतापसागर तरंग १६

रक्तचंदनदं २ येसारीओषदिमिहींवांदि भिलावाउगैरैकावेंजा
 घरसमेंयेनांषियेकजीवकरै ईनेंदकायेकभरप्रभातहीजलकैसा
 धिरोजीनांलेतो सर्वकुष्टमात्रनै रातरक्तनै वचासीरनैयोदूरकरै
 ईअमृतभल्लातककोषावावालोइतनीवस्तकरैनहीं पेदकरेन
 हीं तावडैरदैनहीं अग्निकनैजायनहीं षटाईषायनहीं मांसद
 हांपायनहीं तेललगावैनहीं मार्गचालैनहीं ६ इतिअमृतभ
 ल्लातकावलेह अथवा नींबकीवकल गौरीसर मजीठ कुठ
 की वायमाणा विफला नागरमोथो पित्तपापडो वावची जंचा
 सो वच धैरसार रक्तचंदन पाठ सूरि भाउंगी अरडूसौ चिरा
 यतो कुडाकीछालि निसोत इंद्रायणकीजड मूर्वा वायविडं
 ग इंदजव चित्रक मानपात गिलवै वकायणा पटोल दैन्युं
 हलद पीपलि किरमालाकीगिरि सतोन्वू वेत सोधीचिरमी
 कलहारीजडीकीजड रासा साठीकीजड दांखूणी सोध्याज
 मालगोटा भांगरो कटसेलो अंकोट साबोटक येसारीओष
 दिजुदीजुदीटका २ भरले त्यांनैजोकूटकरिसेर ११६ पकापा
 णीमेंओटावै तांकोचतुर्थीसआयरहै तदिईनैउतागिछाणि
 जै पाछैभिलावासोध्या सेर सोलापांणीमेंओटाय ई
 कोचतुर्थीसजुदोरावै पाछैयांदोन्यांनेएकठामिलायले पाछै
 यांदोन्यांकारसमेंगुडटका १०० भरकीचासणीमेंयेओषदिनां
 धे खंडिटका १। भिरचिटका १। पीपलिटका १। विफलाटका ३।
 नागरमोथोटका १। वायविडंगटका १। चित्रकटका १। सींधी
 लणटका १। चंदनटका १। कूठटका १। अजमोदटका १। तज
 टका १। पत्रजटका १। नागकेसरिटका १। इलायचीटका १।

३३८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर मंत्र १५

ये सारी औषधि मिहीं वांछि अचले हमें नांछि ईको ये कजीब करे
पाछे आछो दिन दोषिद का ॥ भररोजी नां ई नै पाय तो सर्वकोट
मात्र नै वचासीर नै ग्रहमात्र नै रुमि रोग नै रक्तपित्त नै उदाव
र्त नै कासनै सासनै भगंदर नै यांसांशो गानै यो हूरि करै छै
अरजुवान पणानै करै छै सरीर की परम कान्ति नै करै छै भूष
निपट घणी वधावै छै ईको घावावालोषटाई उगैरै कुपथ्यक
देनहां गरम वस्तु पायनहां इति महाभल्लातक अवलेख
७ अथवा मजीठ त्रिफला कुटकी वच दारु हलद नीब
की छालि गिलवै यांनै वराबरिले त्यांनै जौ कूट करि टंक ५ को
कादोरोजी नांछे तो कोट मात्र नै वातरक्त नै विसर्प नै विस्फोर
कने यो हूरि करै छै अभ्यास कथोथको इति लघु मंजिष्ठा
काथ ८ अथवा मजीठ वावची पंचाड नीब की छालि हर
डै की छालि हलद आवला अरडूसो सतावरी घेरै दी गंगेरण
की छालि महलोदी महुवो कट्याली पलोर्ल बेस गिलवै रक्त
चंदन ये सर्व वराबरिले यांनै जौ कूट करि टंक ५ भरको कादो
करि देतो सर्वकुष्ट मात्र नै वातरक्त नै यो हूरि करै छै इति मध्य
मंजिष्ठादि काथ अथवा मजीठ इंद्रजव गिलवै भागर
मोथो वच संहि हलद दोनूं कट्याली नीब की छालि पटोल
कूठ कुटकी भाडंगी वायविडंग चित्रक मूर्वा देवदारु नल
भांगरो पीपलि वायमाण पाठ सतावरी घेरसार विजैसार
त्रिफला चिरायतो चकायण किरमाळा की गिरि निसोत वाव
ची रक्तचंदन वरख्यो दंत्यूणी साधोद अरडूसो पित्तपाप
जे गौरीसर अतीस जचासा इंद्रायण की जड ये सब बगनार

३३९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

ले यांनेजो कूटकरिदं ५ कोकादोरोजीनांकरिदेतौ अमराप्रका
रकाकोटमाचनें वातरक्तनें लोहीकाविकारमाचनें विसर्परोगनें
लचाकासून्यपणानें यांसारंगोणानें योडूरिकरैछै १० इति वृह
यांजिष्ठादिकाय अथवा कलीभिरचि निसोत नागरमोषोह
रंताल देवदारु दोनूं हलदं छंड कूट रक्तचंदन इंद्रायणकीजड
कलौंजी आककोदूध गोबरकोरस येसारीओषदि अथेलांअ
धेलाभरिले सांगीमोहरोपईसाभरले कडबोतेलसेर ३१ ले पा
णीसेर ३४ गोमूतसेर ३८ पाछेयांसारंगे मधुरीआंचसूंघोटावे
पाछेयेसर्वजलउगेरें बलिजाय तेलमात्रआयरहै तदिईनेंउ
तारिले पाछेईकोमर्दनकरैतौ सर्वकुष्ठमाचनें योडूरिकरैछै ११
इति मधुमयीच्यादिनेलम् अथवा कलीभिरचि निसो
त दांलूणी आककोदूध गोबर गोरस देवदारु दोनूं हलदं छ
ंड कूट रक्तचंदन इंद्रायणकीजड कलौंजी हरताल मैणसिल
कनीरकीजड चित्रक कलहारीकीजड नागरमोषो १। वायविडंग
पंवाह सिरसकीजड कुंडाकीछालि नांबकीछालि सतोन्वाकी
छालि गिलबै थोहरिकेदूध किरमालाकीगिरि बैरसार वाव
नी वच माछकांगणी येसर्वओषदिटकाटकाभरिले सांगीमो
हरोटका २भरले कडबोतेलसेर ३४ ले गोमूतसेर ३१ ले यांसा
रानें येकठानदाय मधुरीआंचसूंघकावे पाछेसर्वगोमूतउगेरें
बलिजाय तेलमात्रआयरहै तदिउतामिछालिले पाछेईतेलको
मर्दनकरैतौ सर्वकोटमाचनें ब्रह्ममाचनें पांवनें व्यांजीनें दादनें
पोडानें मुखकीछायानें यांरोगानें ईतेलकोमर्दनसिरैछै अरईको
रुईनहूरिकसोथको जोवनपणानेंकरैछै अरयोवायमात्रका

रोगनें मनुष्यका थोड़ाका हाथीसंगेरैकानें दूरिकरैछै १२ इति
हामरीच्यादितैलम् अथवा हरतालकापत्रचोपाले लानें
चित्रककारससूदिन १ परलकरै पाछैई कीटिकडी करिआलीतरेसुका
वै पाछैई हरतालनें सादीकापंचांगकाधारकेवीचिभैलचूले
चदावै ई हरतालकोधूवोनिकलिवादेनहीं इसीतरेवें हलताल
कीटिकडीनेवें सादीकाधारकेवीचिधूवदाविदे पाछैवें केनांचै
मधुरीआंचदेनिरंतररात्रिदिन एकदिनताई पाछैवधावशीदिन
४ ताई पाछैसांगसीतलहुवांवें हरतालकीटिकडीनेवें सादीका
रमांहिसूनिपदजावतासूं चतुरमनुष्यकाटै बाहरलतोलपूरी
उतरैनिधूमहोय अरसुपेदहोय पाछैई हरतालनें रती २ मनुष्य
षाय ईऊपरिगुडूच्यादिककोकाथलेतौ अठाराप्रकारकाकोटनें
वातरक्तनें उपदंसनें फिरंगवावनें याहरतालदूरिकरैछै अरई
हरतालकोधूवावालो लूण पदाई कडबोरस ताकडो येसेवेन
हीं अरलूणविनांनहीं रयोजायतौ सींधोलूणषाय अरमांगो
षणोंषाय १३ इतिहरतालकीविधिः इहीनेंतालकें
रसकहैछै अथवा पासो सोधीगंधक तांमेसुर सार गूल
चित्रक सिलाजीत कुचिला वच अभ्रक येसर्वबराबरिलैं कण
गचकाबीजएकओषधिसूंचौएणाले प्रथमपारागंधककीकून
लीकरै पाछैई कजलीमें येसारीओषधिभिलायएकजीचकरै
पाछैईनेंटंक २ सहतघृतकैसाधिरोजीनांषाय ऊपरसूंचाव
लदूधहीषायतौ गलतकोटजाय अरसरीरवेंकोमहांसुंदरका
मदेवसिरीसोहोजाय बोरसषायजितेंक्रीसंगकरैनहीं १४

इतिगलतकुंष्टारिरसः अथविभूतिकोजतनलिप्यते कूट
मूलीकाबीज मिरसू हलद केसरि यानेसिरसकाजलकरिपका
पछेपकरैतौ घण्टादिनकीभीविभूतिजातीरहै १५ अथवा के
लिकोषार हलद दारुहलद मूलीकाबीज हरताल देवदारु स
षकोचून येबराबरिले यानेनागरिबेलकापानांकारसमैमिहीं
वांटे लेपकरैतौविभूतिहोय १६ अथचर्मदलकोटको
जतनलिप्यते अमचूर ईमैकिंनिलीधोलूण जीनेंजलसूं
तांबाकापात्रमेंतांबाकाघोरासंभूवपीसिवेकैलेपकरैतौचर्म
दलकोटजाय १७ अथपावकोजतनलिप्यते जीरोटका
सींदूरदंक ५ यांदोन्यानेंकेडवानेलमेंधूववांटेपकाय ईकोले
पकरैतौआंवआलीहोय १८ अथवा मजीठ त्रिफला लाष
कलहारीकीजड हलद आंवलासार गंधक यानेबराबरिले
यानेमिहींवांटे ताबडेधूवगरमकरि पाछेयांकोलेपकरैतौपांचजा
य १९ अथवा पारो दोनूंजीरा दोनूंहलद सलीमिरकि सिंदूर आं
वला सार गंधक येएसिल यानेबराबरिले पाछेपारागंधककीक
जलीकरि ईकजलीमेंयेओषदिमिहींवांटे गऊकाघृतमेंदिन १
घरलकरै पाछेईकोमर्दनकरैतौपांचजाय २० अथवा पारो आं
वला सार गंधक नीलीधूवा काथ मिहंदी पुरासाणी अजवायण
मोम मालकांगणी येसारीओषदिबराबरिले पाछेपारागंधक
कीकजलीजुदीकरै अरमोमनेंघृतमेंजुदोपपलावे येओषदां
जुदीवांटे पाछेपारागंधककीकजलीमें सारीओषदांगऊका
घृतसंएकहीवांटेदिन १ तांई पाछेईकोमर्दनकरैतौ पांचउगेरै
लोहीकासर्वरोगजाय २१ अथवा सोधी आंवलासार गंधक

३४२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

टंक १ नीलोद्भूथोभासा ३ यांदोन्यानेपाणीसंमिहींवांदि गोली १ गोली १ बांधिले पाछेईगोलीनेंमिहींकपडामेंबांधैपोटलीकरै यापोटलीगोहांकीवांदिअल्हणीमेंसेकें वाटीतीनन्यारिमें पाछे वांटीघृतमेंचोपडिपुवावै अथवा यांकोबूरासूंनूरिमोकारिया यद्विन ५ तांई तौपांचउगैरै लोहीकासर्वविकारजाय २२ अथ वा सांधोल्हण पंचाडकाबीज सरसूं पीपलि यांनैंकांजीकापा णीमेंमिहींवांदि लेपकरैतौषुजालिदूरिहोय २३ अथ कछा दादकीऔषदिलिख्यते आककापांनाकोरस अरहलदका काढाकोरस यांमेंसरसूंकोतेलपकावै पाछेईतेलकोमर्दन करैतौकछदादजाय २४ इतिअर्कतैलम् अथवा मेलमि ल हीराकसीस आंवल सार गंधक सांधोल्हण सोनसुषोप थरफोडासंठि पीपलि कलहारीकनीर पवाड वायविडंग चि चक दांत्यूणीनींबकापान येसारीऔषदिअधेलाअधेलाभीर ले त्यांनैंजलसंमिहींवांदि ईकापाणीमेंकडवोतेलसेर ३२ दोय पकावै तींमध्येआककोदूध अरथोहरिकोदूध अधअधपाव नांयै अरईमेंगोमूतसेर ३४ नांयै पाछेयांनैमधुरीआंचसूं प कावै येसारीबलिजाय तेलमात्रआपरहै तदिईकोमर्दनक रैतौ असाध्यभीकछदादजाय पांचषूजालिलोहीकामर्वरोग जाय २५ इतिकछराक्षसनामतैलम् अथदादकाजंत नलिख्यते कूठ वायविडंग पंचाडकाबीज तिल सांधोल्हण सरसूं येबराबरिले यांनैषटार्ष्टमिहींवांटै पाछेईकोलेप्रक रैतौ दादफोटदूरिहोय २६ अथवा दोब हरडैकीछालि सांधां लण पडाकाबीज कंडारकीछालि येबराबरिले पाछेयांनैका

३४३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

जीमें अथवा छात्रिमें बाँटिई कोलेपकरैतौ सद्ध क्रुद्ध दजाय
जिभीजाय २७ अथभित्रीनाम कोटती काजतन लिखते वहे
डाकीछालि हरदै कीछालि कठवर वावची यांकोकादोलेतौभि
त्रिनामकोटदूरिहोय २८ अथवा हरताल मैणसिल निरमीचि
त्रक यांनैंगोमूतमेंमिहींवाँटि लेपकरैतौभित्रीनामकोटदूरिहो
य २९ अथवा विष्णुक्रांत सांघाडूली गावची आंवल बेरसारं यां
कोसेवनकरै अरपथ्यमेंरहैतौ भित्रीनामकोटदूरिहोय ३० ये
साराजतनभावप्रकासमैलिथ्याहै अथवा हलददका ८
भर गऊकोघृतदका ६ भर गऊकोदूधसेर ५४ मिथ्रीदका ५०
भर सुंठिदका ११ भर कालीमिरचिदका ११ पीपलदका ११ भर तज
दका ११ भर पत्रजदका ११ भर नागकेसीरदका ११ भर वार्षचिडंगद
का ११ भर निसोतदका ११ भर त्रिफलादका ११ भर केसरिदका ११ भर
नागरमोथोदका ११ भर पाछैयांनैमिहींजुदावाँटि घृतमेंमकरोय
हलदमें दूधमें ईकोबरौमावोकरै पाछैईमावासमेत घांमकीचा
सलीकरि चासलीमेंमावो अरसारीऔषधांईमेंगांथै पाछैईका
गोलीदकायेकेकभरकीबांधै गोली १ राजीनांषायतौ कोटवैंहु
जालिनें फोडानें दादनें यांरोगानेंइरिकरैहै ३१ इतिहरिद्रव
डः अथहरतालमारवाकीविधि हरतालचोबीतबकी-
याले तीमेंदसबाँहिसासुवागाकाट कमिलाय वेंकीवाफताका
कपडाकीचारिपुटकीपोदलीकरै पाछैवापोदलीजंभीरीकार
सकै वोचैमोलिडोलकायंत्रकरि पाछैवेंकैनांचैआठीगाडीआंचदे
पहरदोयकी २ औसंऔदावै पाछैइहांतरेंकांजीकापाणीमेंऔदावै
पाछैइहांतरेंपेठाकापाणीमेंऔदावै पाछैइहांतरेंतेलमेंऔदावै

पाछे ईहांतरै नफलाकापाणीमें जोटावे पाछे ईहरतालनैं कहीतरै
 कीपटाईमें धोयले पाछे ईहरतालनैं छीलाकीबकलकारसमेंष
 रलकरै दिन २ रात्रिदिन पाछे ईनैं तावडैं सुकाय ईकोगोलोकरै
 पाछे ईगोलानैं सरावासंपुटमें धूवजतनसूंमेलै पाछे वें सरावाकै
 पांमदे पाछे गजपुटदे आरणाछाणामें पूंकिदे पाछे स्वांगसीत
 लहोय जदिवें मां हि सूं वें हरताल कासंपुटनैं काटै पाछे ईसंपुट
 मां हि सूं वें हरताल नैं काटै पाछे वें हरताल नैं बकरीकाइधसेतीदि
 न १ बरलकरै पाछे ईकोगोलोकरै ओरुतांवडैं ईगोलानैं सुका
 यलै पाछे पलासकीराबसेर ३४ पक्कीहांडीमें घालि बेराषकैबी
 चिवें हरतालकोगोलोमेलै धूवनिपटगादिदावे वाराषहांडीमें
 दाविभरै मूदाताई पाछे वांहांडीचूल्हेचटावे नांचेआंचदेवैको
 धूवोनीसर वादेनहीं ईसीतरै दाविवाराषहांडीमें भरै पाछे आं
 चअनुक्रमसूं दे मंदमध्यअरनिपटगारीप्रहरबतीसकी ३२
 पाछे ईनैं स्वांगसीतलहुवांईहरतालनैं वें मां हि सूं काटै बाहरता
 लईमांहांसूं सुपेदनीकलै निधूमतोलकीपूरी पाछे ईनैं पुराणा
 गुडकैसाथिरती १ घाय ईउपरिचलांकीरोटीसाटीनाचल गई
 कीधृतदिन २१ येप्राय ईउपरिल्लणषटाईषायनहीं तौअठाराप्र
 कारकाकोटै नैं वातरक्तनैं फिरंगवायनैं याहरतालइरिकरैछै
 २५ इनिहरतालमारणविधिः अथवा पारोटंक २ सोपी
 गंधकटंक २ हरतालटंक २ मैणसिलटंक २ वाचचीटंक ५ प्रम
 सोटंक २ सींदूरटंक २ दोन्यूहलदटंक ५ यांसारांनंगउकाघृत
 संपूषमिहींवांटि लेपकरै तावडैरहै प्रह २ पाछे स्नानकरै तौ कं
 टनैं राहनैं कृमिनैं कोटनैंदिन ३ मां हि इरिकरै २३ अथवा ईं

३४५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

कीजडकीसूकीवकलटका २५॥ भर तांकीराबकरै तीकैबीचिबो
 धीहरतालतबकीयामांसा २५॥ जननसूवैमैमेलै नवीनगादीआ
 छीहांडीमेंदावै पाछैवैहांडीउपरीसराबोदेविनांमूंधां पाछैवै
 हांडीनैचूल्हैचदावै पाछैवैकैनीचैभिपटगादीअग्निबालैपहर
 १० ताई पाछैस्वांगसीतलहुवांवैनैवस्त्रसूंछाणिले पाछैईशष
 नैरती१॥ विनांसेक्याजीराकैसाथिलै जीरोयांसा१ वांट्यो यांटोयां
 नैयेककरि पक्कनागरवेलिकपांनकैसाथिसीतलजलसूंषा
 य ईउपरीचणांकीरोटिषायअलूणी मंडलएकताई ईकोषा
 बाचालोपचनतावडोषायनहां ईविधिसूरहैतौ अगाराप्रकार
 काकोटनै वातरक्तनै ग्रणमात्रनै पिडिकानै वातव्याधिनै यांसांरा
 रोगांनैयोनिश्चैदूरिकरैछै ३४ अथदादकाजतनलिष्यते
 पंचादकाबीज वावची सिरस्यू तिल कूठ दोन्यूंहलद नागरमो
 शो येबराबरिले यांनैछाछिमेंषूबमिहींवांदि पाछैईकोलेपकरै
 तौ दाद कंड औंची येसारादूरिहोय ३५ अथकोटकादूरिहो
 बाकोलेष नीलोथूथो सुहागो येदोन्यूंहंक २ वावचीहंक ५
 यांतीन्यांनैमिहींवांदि जलआगराकारसकीयांकैपुट ७ दे पा
 छैयांकोलेपकरैतौकोटजाय ३६ येसर्वजतनवैद्यपहस्यमें
 लिष्याछै अथमहालेपलिष्यते पारोटका१॥ संषकोषार
 टका१॥ आंधीफाड़ाकोषारटका१॥ तिलोकोषारटका१॥ साटी
 कोषारटका१॥ हरडैकोषारटका१॥ अरंडूसाकोषारटका१॥
 पटोलकोषार अरंडकोषार जवषार सुहागो साजी नौसादर
 आवला सारगंधक पांचूलूण कूठ सूंछि कालीमिरचि पीपलि
 हांसकांकीजड कणगचकीजड कलहारीकीजड हलद ज

३४६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १६

शोकंद गोरषमुंडीकोषार कहुवाकोषार पापलिकोषार राई
सिरसूं सींदूर सिलाजीत पापडरवार कपेल्लो लोद थोहरकी
जड आककीजड नालोथूथो चिनक आककापंचांगकोषार ये
साराओषदीजुदीजुदीदका १। भरलीजै पाछैयां सारीओषधां
नेंमिहांवांरि एकरीगोमूंतसूं तांत्रकावडायात्रमैराधै पाछैइहं
मैंइतनीवस्तुओरनांथै भैंसिकोमूंत थोडाकोमूंत बकराकोमूंत
हाथीकोमूंत ऊंलकोमूंत नांबूकोरस जंभीरीकोरस विजोराओ
रस नारंगीकोरस चणवार सहजणांकोरस सातूंधातांकीकां
जीरार्दकासंजोगकी येसारीवांकाअनुमानमाफिकयालै वेंको
सूंछेदांकिदिन २१ जाबतासूंमेलिराधै पाछैईकोलेपकरैतौस
वेंकोदमात्रहरिहोय अरयैरोगभीईकालेपसूंजाय गंडमाला
विसर्प बवासीर थौंवी वायकासर्वरोगमहीना १ येकमैयेसर्व
रोगजाय ३७ योरससंग्रहमैलिथौछै इतिकोदरोग
कीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीयन्महावा.
जाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजी
निरचितेअमृतसागरनामग्रंथे भगंदर उपदंस लिंगा
संकरोग कोट यांसर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्ष
णजतननिरूपणंनामषोडशःस्तरंगः १६ अथशीत
पित्तउदरदकोट उत्कोट यांरोगांकी उत्पत्तिलक्षणज
तनलिष्यते सीतलपवनकास्पर्शकस्यांथकांकफअरपव
नहैंसोडुछहोय पित्तकरिकेंसहित आपकाकारणकारिकेंड
छहोय त्वचाकेसांहिअरवारै वायअरकफकरिकें सीतपि-
त्तादिकरोगांमैपैदाकरैछै १ अथसीतपित्तादिककोपू

३४७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

वैरूपलिष्यते तिसलागै अरुबिहोय वमनसीआवेदेहमेंपी
डाहोय सरीरभास्योहोय नेत्रलाहोय घेलसणहोयतदिजा
णिजै सीतपित्तादिकरोगहोसी १ अथसीतपित्तउदरदको-
लक्षणलिष्यते जैसैकीडीकाकाक्यादाफडहोयआवे तै
सैंत्वचाउपरिदफडघणां होयजाय अरवांमेंबाजीआवे अर
पीडघणीहोय आरछांदणीहोय अरखुरहोय अरदाहलागि
जाय तदिजाणिजैसीतपित्तछै अरदहीनैउदरदकहीजै वायको
अधिकहोयतौसीतपित्तजाणिजै कफकोअधिकहोयतौ
उदरदजाणिजै योसिसिररितुमेंघणां होयछै १ अथकोटउ-
त्कोटकोलक्षणलिष्यते वमनआवतांनैरोकै तदिपित्तक
फडहुवाथकालाललालघुजातिनैलियांदाफडसरीरमेंक
रिदै तनैकोटकहिजै येथोडीबाररहै अरयेहीघणीवाररहै
तौउत्कोटकहीजै १ अथसीतपित्तउदरदकोटउत्कोटयांरो
गांकाजतनलिष्यते औषधांसंवमनकरायदेतौसीतपि-
त्तउदरदइरिहोय १ अथवा पटोल नांबकीछाली अरडूसौविफ
ला गूगल पीपलि यांकोकाटोदेतौसीतपित्तउदरदजाय २ अ-
थवा जुलावदेतौसीतपित्तउदरदजाय ३ अथवा कडवातैल-
कोमर्दनकरै अरसरीरनैगरमपाणीसूंघोवैतौसीतपित्तउदरद
जाय ४ अथवा त्रिफलासहतसूंघायतौसीतपित्तउदरदजाय
५ अथवा कुटकीकोजुलावलेमिश्रीकासंजोगसूंतौसीतपि-
त्तउदरदजाय ६ अथवा गुडआवलाषाय अथवा सूरिअज-
वायणि कालीमिरचि पीपलि जवषार यांकोचूर्णदंकरदिन ७
गरमपाणीसूंलेतौ सीतपित्तउदरदजाय ७ अथवा आदा

३४८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १५

कोरस पुराणैरुडधायतौ सीतपित्तउदरजाय ८ अथवा अज
 मोदटक ५ गुडटक ५ यां दोन्याने एकथा करि दिन पांच सात रोजी
 नां धायतौ सीतपित्तउदरजाय ९ अथवा सरसू हलद पंच
 डका बीज तिल यां सारां नैं कडवा तेल में मिहीं वांटिले पकरैतौ
 सीतपित्तउदरजाय १० अथवा वकायण कावकारटक ५ मिहीं
 वांटि गडका घृत कैसा थिपीवैतौ सीतपित्तउदरजाय ११ अथवा
 लोही कटाजैतौ सीतपित्तउदरजाय १२ अथवा आंवलां नैं
 अरनां वका कोमल पां नां नैं घृत में तलिटका ११ प्रमाण मनुष्य
 दिन १५ धायतौ फोडाकारोग नैं पित्त नैं कृमि नैं सीतपित्त नैं
 खुजाहिकारोग नैं गरमीकारोग नैं कफकारोग नैं योहरिकरैछै
 १३ अथवा छोट्या आदा काटू कछोटा छोटा सेर ५१ काकरै अ
 रगडं को घृत सेर ६२ लेतौ गडू को दूध सेर ५२ ले तीं को मावो
 करै तीं में आदा काटू क घृत सूंचो पडिवै में नां धै पाछै वै में मावो
 नां चै आंच दे बै को बैरो मावो करै अरमिश्ची सेर ५१ ये ककीच
 सणी करै पत्तली अवलेह की सी तींचा सणी में मावो नां धै अ
 रये औषदि मिहीं वांटि नां धै सो लि घूंछूं पीपला मूल मिरि
 संहि चित्रक वायविडंग नागरमोथो नोगकेसरि तज इला
 यत्रा पत्रंज कचूर ये सारी औषदि जुदि जुदि टका ११ ये केरु
 भरिले त्यां नैं मिहीं वांटि वां नैं मिश्ची की चासणी में नां धै पाछै
 ई नैं रोजी नां टका ११ संध्या नैं धायतौ सीतपित्त नैं उदर नैं को
 र नैं उत्कोष्ट नैं राजरोग नैं रक्तपित्त नैं वासनैं सासनैं अरु
 विनैं वायकागोलानैं उदवर्त्तनैं सो जानैं खुजाहिनैं कृमि रो
 ग नैं उदरकारोग नैं यां रोगां नैं यो अवलेह हरिकरैछै अरयो

३४९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

बलवीर्यनैवधावैलै अरसररनेपुष्टकरैलै १४ इतिआद्रक
षंडअवलेहः येसर्वजतनभावप्रकासमैलिष्यालै अथ
वा सींधोलूणनै धृतमैमिहींवांरिजै सररकैमर्दनकरै पाछैला
लकांमलोअदैंतौ पित्तीकोरोगजाय १५ अथवा गडकोधृत
गेरु सींधोलूण कसूंभाकाफूल येबरावरिले लानैमिहींवांरिस
शरकैउगटणैकरैतौपित्तीदूरिहोय १६ अथवा निरायतौ अर
डूसोकुटकी पटोल त्रिफला रक्तचदन नींबकीछालि यांकोकाहो
लेतौ पित्तकारोगनै फोडानै दाहनै ज्वरनै सुषसोसनै तिसकारो
गनै वगननै यांसारागानैयोकाहोदूरिकरैलै १७ अथवा आ
रणछाणंकीराष सररकैमर्दनकरैतौपित्तीजाय १८ अथवा फि
टकडी नागरवेलिकपापानांकारसमैवांरिवैकोसररकैमर्दनक
रैतौपित्तीजाय १९ अथवा लसणदकाभरषाय अथवा त्रिफ
लादका ५५भर मिहींवांरिसहतसूंचादैंतौपित्तीजाय २० येस
र्वजतनवैधरहस्यमैलिष्यालै अथवा मेथीदाणादका १
भर काळीभिरचिटका १भर हलददका १भर यांसारानैमिहींवां
रि पाछैयांकैआदाकारसकीपुट ३दे पाछैगोलीदंकर प्रमाण
करै पाछैगोली १रोजीनांषायतौ पित्तीकासर्वविकारानैदूरि
करैलै २१ योवैधरहस्यमैलिष्योले इतिसीतपित्तउद
र्दकोदउत्कोटरोगयेपित्तीकाभेदहैत्यांकीउत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूर्णम् अथअम्लपित्तकीउत्पत्तिलक्षणजन
नलिष्यते लूणकाषावासूं बटाईकाषावासूं बडीवस्तांका
षावासूं गरमवस्तंकाषावासूं ओहीपित्तहैसोकोपकूंप्राप्ति
होय अम्लपित्तनैपैदाकरैलै सोअम्लपित्तरोगभी ३प्रकारं

कोछै बायको १ कफको २ कफवायको ३ अथअम्लपित्तको
लक्षणलिख्यते अन्नपचै नहां विनांषेदकस्यौ अमहोय वम
नसो आबोकरै कडवीपाटीडकारआवै सरीरभास्योहोय हिय
में कंठमें दाह होय भोजनमें अरुचि होय ये लक्षण होय जीमें अ
म्लपित्त कहिजै १ योअम्लपित्त दोय प्रकारकोछै येकतौ उर्ध्व-
गामी सोतो मुखमांहि होय करि जाय येक अधोगामी गुदद्वारा
भायो होयछै अथ उर्ध्वगामी अम्लपित्तको लक्षणलि
जो वमन करै सोहस्यौ पीलो नीलो कालो लाल अत्यंत निर्मल
भी मांसकाजलसिरासौ अरअम्लपित्तकफसूं मिल्यो होयतौ
घणोंची कणोंछादे अरकरडोलसूणोती षोछादे १ अथअ
धोगामी अम्लपित्तको लक्षणलिख्यते जांका मलमें ना
ना प्रकारको वर्ण होय अरतिस होय दाह होय मूर्छा होय मोह
होय हियो दुषे वमनसो आवै सरीरमें दाफड होय आवै अरउ
कारघणी होय अरकंठमें कूषिमें हियामें दाह होय सरीरमें पी
डा होय हाथपगामें दाह होय भोजनमें अरुचि होय जुर होय
ये लक्षण जीमें होय तदि जाणिजे ईकै अम्लपित्तको रोगछै १
अम्लपित्तकै विसैं और भी दोसांको मिलाप छै सोलि
ई अम्लपित्तकै विसैं बायको भी मिलाप होयछै अरकफको भी
मिलाप होयछै अथे वैद्यहैं सो मोहकूं प्राप्ति होयछै अथदोष
भेद करिकैं अम्लपित्तको भेदलि ० जीमें कांपणी होय प्रला
प होय मूर्छा होय सरीरमें चिमचिमाटि होय अरसरीरमें पीडा
अरसूल होय अरअंधेरी आवै अरभौलि आवै अरमोह होय
अरहर्ष होय आवै तदि जाणिजे अम्लपित्तमें बायको मिलापछै

३५१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

अथवा कफधूके सरिरभासो होय अरु चिहोय सरिरमें सीतलो
 वमन होय अग्निजातीर है बलजातीर है सरिरमें खुजालि आवे
 अरु नाद यणी आवे ये जीमें लक्षण होय तदिजाणिजे ई अम्लपित्त
 रैं कफ मिल्यो छै अथ अम्लपित्त को साध्य असाध्य ल
 क्षलिष्यते अम्लपित्त को रोग न बीनउ पज्यो होय सो तो साध्य
 जतन कक्षां जाय अरयो ही घणों दिन को होय सो जाप्य जाणिजे
 अरयो ही घणों दिन को होय अरपथ चाले न हां सो असाध्य जा
 णिजे १ अथ अम्लपित्त रोग का जतन लि अम्लपित्त रो
 ग बालाने पटोल नांब की छालि अरु डू सो ये बराबर ले त्यां
 को काटो करि ई से तीव्र मन करा जेतौ अम्लपित्त जाय १ अथ
 वा मेंदल सहत सांधोलूण यां करि वमन करानेतौ अम्लपि
 त्त जाय २ अथवा जुलाब सूं अम्लपित्त जाय ३ अथवा नि
 सोत सहत आवला यां को जुलाब देतौ अम्लपित्त जाय ४ अ
 थवा ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त होय तीनें वमन कराने अरु आधो
 गामी अम्लपित्त होय तीनें जुलाब दीजे ५ अथवा जवाको सा
 त् अथवा गोहांको सत् अथवा चावलंको सत् मिश्रीका सं
 जोग संघायतौ अम्लपित्त जाय ६ अथवा जब अरु डू सो आव
 ला तज पत्रज इलायची यां को काटो सहत नां धि अरु पीवैतौ
 तत्काल अम्लपित्त जाय ७ अथवा गिल वै नांब की छालि प
 टोल यां को काटो करि सहत नां धि पीवैतौ महाभयंकर भी अ
 म्लपित्त जाय ८ अथवा अरु डू सो गिल वै पित्त पापडो चिरा
 यतौ नांब की छालि जल भांगरो निफला कुलस यां को काटो
 सहत नां धि देतौ अम्लपित्त जाय ९ इति दशांगकाथः

३५२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तंत्र १०

अथवा भोजनकरिआंवत्संकोरसपीवैतौ अम्लपित्तनें वमननें
अरुचिनें दाहनें मोहनें तिमिरनें ब्रणनें भूतकादोषनें योद्भिक्त
रैछै अरयोहीबुदापानेइरिक्कर तरुणकरैछै १० अथकृष्ण
डावलेहः पक्कापेठानेछोलि तींकाबीजगिरिकादि तीनेंकू-
टितीकोरसटका १०० भरले पाछैटकासौ १०० भरहींगऊकोइ
धले अरटकाआठ ८ भरआंवत्सले अरटका ८ भरमिश्राले
अरगऊकोघृतटका २ भरले यांसारांनेंमधुरीआंचसूपका
वै पाछैईकीअवलेहकीसीचासणीकरै पाछैटका ११ भर अ
थवा टंक ५१ रोजीनांषायतौ अम्लपित्तजाय ११ अथवा ना
लेरकागिरिनेंछोलितीनें पथरऊपरिवांटिले पाछैवैंगिरिसूं
चौगुणीचाणारसषांडले तींकिचासणीकरै अरवेंवांटिगिरि
नेंगऊकाइधमैपकायवेंकोमावोकरै ओमावोवेचासणीमैनां
वै पाछैयेओषदिमिहींवांटिचासणीमैनां वै धरौं पीपलामू
ल तज पत्रज नागकेसर इलायची येसारीओषदिटंकये
कएकले पाछैयांसारांनेंमिलाय यांकोयेकजीवकरिटका ११
भरकीगोलीवांधै अथवा टंक ५१ भरकीगोलीवांधै गोली १
रोजीनांषायतौ अम्लपित्तनेंरक्तपित्तनें सूलनेंइरिकरैछै १२
इतिनालेखंडः येसर्वजननभावप्रकासमैछै अथवा
मिनकादाषनेंधोय तींकीमिंगीकादि तींबराबारिबडीहरउंकी
वकलकोचूर्णनें पाछैयांदोन्यांवराचारिमिश्रामिताययांकी
गोलीटंक २१ कीवांधै पाछैगोली १ रोजीनांषायतौ अम्लपित्त
नें हीयाकाकंठकादाहनें तिसनें मूर्छानें भोग्निनें मंदाग्निनें
आमवाननेंइरिकरैछै १३ इति द्राक्षादिगुटिका ॥

अथवा सृष्टि कालीधिरचि पीपलि भिफला इलायची नागर
 मोथो वायविदंग पत्रज येबराबरिले यांसारांकीबराबरिलों
 गनें यांसारांसूइणीनिसोतनें यांसारीऔषधांकीबराबरिमि
 श्रीले यांकोचूरणकरिदंक २सीतलजलसूलेतौ अम्लपित्त
 जाय १४ इतिअविपित्तकचूरणम् इतिअम्लपित्तरो
 गकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथविसर्परोगकी
 उत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते लक्षणषट्द्वयं गरमवस्तुकां-
 चावासूं विसर्परोगपैदाहोयछे सोअविसर्परोगफैल्योथको
 सात ७ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपात
 को ४ वातपित्तको ५ वातकफको ६ कफपित्तको ७ अथवि
 सर्परोगको सामान्यलक्षणलिष्यते लक्षणषट्द्वयं गरमनें
 आदितेर येपाछेंलिष्याछें त्यांकाघणाचावासूं वायपित्तक
 फबेकोपकूं प्राप्तिहोय सरीरकालोहीनैमांसउगैरैसातधात
 नैविगाडिशरीरमें छोटीबडीकुणस्यांकामंडलनें सरीरमेंफै
 लायदेछें ईवास्तैवैद्यांईरोगकौनामविसर्पकाड्योछे १ अथ
 वायकाविसर्पकोलक्षणलिष्यते सरीरमेंआपकाकुपथ्य
 काकरिवांसूं वायकोपकूं प्राप्तिहोय सरीरमेंकोटैहीछोटिछो
 टिकुणस्यांपैदाकरै तदिकुणस्यांसरीरमेंफैलिजाय तदिवाय
 ज्वरकासर्वलक्षणवैमैमिलै अरवांमैसोजोहोयआवे अरवां
 मेंपीडघणीहीय अरवेंकुणस्यांफाटिवालागिजाय अरवांमें
 पांवत्सीसीपीडघणीहोय अरवांमेंबुजालिघणीआवै १ अ-
 थपित्तकाविसर्पकोलक्षणलिष्यते आपकाकुपथ्यमांसपि-
 त्तकोपकूं प्राप्तिहोयसरीरमेंछोटीबडीकुणस्यांहुईहोय सोवै

फैलिजाय तदिवांमौपित्तज्वरकासर्वलक्षणमिले अरवेंफुणस्यां
वेगदुरघणीफैलिजाय अरघणीलालहोय २ अथवा
सर्परोगकोलक्षणलिख्यते आपकाकुपथ्यकाकरिवासं
फकोपकूप्राप्तिहोय सरीरमेंछोटीमोटीफुणस्यांनैफैलायदे पा
छैवांमैंबाजिघणीआवे अरवेंफुणस्यांचीकणीहोय अरवेंमैंक
फजुरकासर्वलक्षणमिले ३ अथसन्निपातकाविसर्परो
गकोलक्षणलिख्यते आपकाकुपथ्यकाकरिवासं सन्निपा
तकोपकूप्राप्तिहोय सरीरमेंछोटिवडीफुणस्यांपेदाकरि बांफु
णस्यांनैसरीरमेंतत्कालफैलायदे अरवांफुणस्यांमैंपाछैकत्या
छैसोलक्षणवामेंहोजाय अरसन्निपातज्वरकासर्वलक्षणहो
जाय ४ अथवातपित्तविसर्परोगकोलक्षणलिख्यते
जींकासरीरमेंवायपित्त आपकाकुपथ्यकाकरिवासं कोपकूप्रा
प्तिहोय सरीरमेंछोटिवडिफुणस्यांमैंपैदाकरै सोवेंफुणस्यांस
रीरमेंफैलिजाय तदिआग्नारव्यनामवांफुणस्यांनैकहैंजें अ
ग्निसरीसोबांकोरूपहोय अरजीमेंवायपित्तज्वरकालक्षणमि
ले अरछर्दि मूर्छा अतीसार तिस भ्रम येभीजीमेंहोय अरस
रीरकाहाडटूटै अंगामेंपीडाहोय अंधेरीआवे अरुचिहोय सा
रोसरीरअंगारेसिरीसोबलै जींजींस्थानमेंहोय तींतींस्थानमें
कालोकरिनांथै अथवा नीलोकरिनांथै अथवा लालकरिनां
थैं जेंसैंलायकादाज्याकैगर्मस्थानमेंफैलिजाय वेंकोअंगघरीं
पीडाकूप्राप्तिहोय वेंकीसंज्ञाजातीरहै नांदआवेनहीं मासहां
यथावे हिचकीहोयजाय सरीरमेंचैनपडैनहीं मनदेहसर्वविग
डिजाय सरीरकोग्यांनजातीरहैं योविसर्परोगनिपटअसाध्यजा

एजै ५ अथवातकफविसर्प रोग को लक्षण लिख्यते
 वायकफ आपका कुपथ्य काकार वासू को पकू प्राप्ति होय सरी
 रमें छोटी बड़ी फुलस्थानें पैदा करै वानें फैलाय दे वां फुलस्थानें ग्रं
 थारव्य नाम कहै जै वेगां दिसिरीसी होय छै यो पवन है सो कफ क
 रि कै रुखौ थको कफ नैं बलौं प्रकार भेदै पाछै लचा मांस नसां
 में प्राप्त हुबो जो लोही तीनैं ओइ धित करै कड़ा छोटा गोल भार्या
 घर धराइ सां गूमड़ा की मालानें पैदा करै तीं में घणी पीड अरला
 ललाल जुर नैं लीयां अर स्वास पास अती सार सुष सोस हिच
 का वमन भ्रम सोह सरीर को रंग और सौ अर मूर्छा अंग फूट
 णी मंदग्नि ये भोजी में होय तदि जा एजै वायकफ को विसर्प
 रोग छै ६ अथ कफ पित्त का विसर्प रोग को लक्षण लि
 कफ पित्त आपका कुपथ्य का कारण सूं को पकू प्राप्ति हुबो थ
 को सरीर में छोटी बड़ी फुलस्थानें पैदा करै वानें फैलाय दे वां फु
 लस्थानें बैद्य कर्दम हा भयंकर विसर्प रोग कहै छै तीं में ये लक्ष
 ण होय जुर होय सरीर जकड़ बंध होजाय नींद आवै न हीं तं
 द्र होय सरीर में पीडा होय अंग में फूट णी होय प्रलाप होय
 भ्रम होय भूष जातीर है हाड हाड टूटै तिस होय सरीर भार्यो
 होय आं बजाय इद्रियां पकि जाय अंग अंग में पीडा होय फुल
 स्थानें सारा सरीर में घणी फैलै घणी लाल नीकणी काली में लीसो
 जानें लीयां भारी मोडी पकै गंभीर जीं को पाक जीं में बल न घणी
 राधि जीं में घणी कां पै सरीर की नसां बी सरीर है अर जीं में मुर
 दा की सी दुरगंथि आवै ये जीं में लक्षण होय तीनी कर्दनाम वि
 सर्प रोग कहि जै ७ अथ शस्त्रादिक कांधा वसू रुक्ज्यो

३५६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

जोबिसर्पतींकोलक्षणलिख्यते शस्त्रादिककीचोटलग्निवा
संकोपकृंभासहुबोजोवाय सोलोहीसमेतपित्तकंदुष्टकरै कुल
त्सिसिरीसीसरीरमेंकुणस्यानेपैदाकरैजोबिसर्पछै पाछैबांझ
एस्यांकाफोडाहोजाय अरवांमेंसोजोहोय अरजुरहोय येभी
होयजाय लोहीकालोहोयजाय - अथविसर्परोगकोउप
द्रवलिख्यते जुरहोय अतीसारहोय वमनहोय तिसहोय
मांसकोविषारिबो बुद्धिठिकाणैनहीरहै अरुचि अन्नपचैनहीं
येईकाउपद्रवछै अथविसर्परोगकोसाध्यअसाध्यल-
क्षणलिख्यते वायंपित्तकफकीजुदीजोबिसर्प अरअग्निसं
उपज्योजोबिसर्प अरमर्मस्थानमेंउपज्योजोबिसर्परोगसोअ
साध्यजाणिजै १ अथविसर्परोगकोजतनलिख्यते गुला
ब वमन औषधांका लेप रुधिरकटावो येसाराहीजतनकिं
सर्परोगनेआछ्या १ अथवायकाविसर्परोगकोजतनलि-
रास्त्रा कमलगट्टा देवदारु रक्तचंदन महुबो धरैटी यांनैबरा
बरिले यांनैदूधसूं घृतसूंमिहींवांटिलेपकरैतौ वायकोबिसर्प
रोगजाय १ अथपित्तकाविसर्परोगकोजतनलिख्यते
किसोस्त्रासिंघाडा कमलगट्टा जलकोसिवाल रक्तचंदन यां
नैचांदिथोयाघृत सीतलजलसूंलगावैतौबिसर्परोगजाय २
अथकफकाविसर्परोगकोजतनलिख्यते त्रिफला कम-
लगट्टा बसलजालू कनीरकीजड नरसलकीजड जवासो यां
नैजलसूंमिहींवांटिलेपकरैतौकफकोबिसर्पजाय ३ अथ
दशांगलेपः तगर सिरसकीजड महलोठी रक्तचंदन इला
यची छह दोन्यूंहलद नेत्रवालो यांनैमिहींवांटिलेजलसूंयां

मैंगडको घृतनाशिले पकरैतौ सर्वप्रकारको विसर्पजाय ४ अथ
वा विराषतौ अरदुसो कुटका पटोल विफला रक्तचंदन नींबकी-
छाल ये बराबरि छै यानै जौ कुट करि दंकर कोका दोदेतौ विसर्परो
गनें दाहनें चुरनें सोजानैं खुजालिनें फोडानैं वगननें इतना रोगां
नें योका दोदुरि करै छै ५ अथवा कृपागच सतोन्वा की वकल कल
हारी की जड बारीको दूध आक की दूध चित्रक जल भांगरो हलद
सांती मोहरो ये बराबरि दकाटका भरि अरगो भूत सेर ३२ ले पा
णी सेर ३२ ले तेल तिलांको सेर ३१ पाछै यानै एकठा करै पाछै यांके
नाचै मधुरी आंच दे सर्वसबलि जाय तेल यात्र आयर है तदिई
को मर्दन करैतौ विसर्पनें फोडानैं औंचानैं यो तेल दुरि करै छै
६ ये सर्वजतन भाव प्रकास में छै अथवा बडकी जडा नाग
रगोयो कोल को बिचलोगर्भ यानै धोया घृतसूले पकरैतौ वि
सर्प रोगनें गांठिनें योले पदुरि करै छै ७ अथवा सिरस की वक
लनें १०० सो बार धोय घृत कै साथि भिही बांटिले पकरैतौ विस
र्प रोग सर्वप्रकार को रोग जाय ८ अरकोट फोडा सीतला यो
सर्वरोग जो ककालाग वासूनि छै जाय ९ ये सर्वजतन वैद्यर
हस्य में छै इति विसर्प रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपू
अथ रुमायु रोग रुमायु कहै जे वालो तीरोग की उत्पत्ति ल
क्षण जतन लिख्यते सोटा जल कापी वासू दुष्ट अन्न का वा
वासू को पकूपा सहु बो जो वाय सो हाथ पगां कै बिषै फोला नै
अथवा सोजानै करै छै पाछै चाफ फोला नै औ वाय हे सो फोडि
करि फोलां की जागा ऊठे पिछ हे सो नसांनै सुकाय तांति सिरी
सा डोरानै ओकु पित्त दुबोथ को जो वाय तीनै करै छै सो तांति सि

रीसोडोरो हैसो छालिसातूकापीडबांधिबासूंसनैस नैंबारेभि
 लिपडै अरओदूदिजायतौ कोपकुंभासिहोय आरओबारेभि
 लिबावैतौओजातोरहै अरओओरसरारमेंजातोरहै अथवा हा
 थमें अथवा पगांमेंकहांकारणसूंदूदिजायतौ दूटेमनुष्यनैंबोरो
 करिदे येजांमेंलक्षण होयतीनैंवालाकोरोग कहिजै १ ~~अथवा~~
 लाकाजननलिष्यते हांगटक ५ तीनैंसीतलजलसूंदिन ३
 पायतौ वालाकोरोगकदेहोयनहीं १ गउकोघृत ३ रोजीनांदिन
 ३ पीवैतौ वालाकोरोगजाय २ अथवा भिगुंडीकोरसदिन ३ पर्द
 सा ४ भर रोजीनांदिन ३ पीवैतौ वालाकोरोगजाय ३ ~~अथवा~~ क
 लैंजीकीजड सीतलजलसूंदिन ७ पीवैतौ वालाकोरोगजाय
 ४ अथवा अरंडकीजडकोरस गउकाघृतसूंदिन ७ पीवैतौ वा
 लाकोरोगजाय ५ अथवा अतीस नागरमोषो भाडंगो सूंदि
 पीपलि बहेजकीछालि येंवराबरिले यांनैमिहांवांटिदंक २ रोजी
 नांदिन ७ गरम पाणीसूंलेतौ वालोजाय ६ अथवा सहज
 शांकीजड अरपांन यांनैकांजीकापाणीसूंवांदि सींधोतूणमिडा
 य पाछैवैनैंवालाउपरिबांधैतौ वालोजाय ७ अथवा कांठावा
 चीजालि नांकीजड तीनैंजलसूंवांदि वालाउपमिदिन ७ बांधैतौ
 निचैवालोजाय ८ ~~अथवा~~ सर्वजननभावप्रकासमेंछै अथ
 वा कूट सूंदि सहजशांकीजड यांनैपाणीसूंमिहींवांदि वालाउ
 पारितेपकरै अथवा यांओषधानैंपीवैतौ वालोजाय ९ ~~अथवा~~
 वा धतूराकापांनकोतेलगाय वालाउपरैबांधैतौ वालोजाय
 १० अथवा वंचूलकाबीजत्यांनैंकांजीसूंसिजाय वालाउपरिबांधै
 तौ वालोजाय ११ अथवा वालाकामंभसूंवालोजाय सोमंभलि

बहु विरूपनाथ वामन के पूतसूत काटिकिये बहुत या के फूटे पा
 डकर विरूपनाथ की आज्ञा पुरे ईमं च सुवाला उपरि गडने वार ७
 मंनिवाला बाला नै पुवाजे तौ बालो जाय १२ येज जन्म वै दुरहस्य
 लिख्यो है अथवा रुतुर की बाँट की सहत संगो लिबांधिदि
 न ७ निगलाय देतौ गान्धेक देभीनी सरै न ही १३ यो वै दुरहस्य में
 लिख्यो है अथवा बहुत में साजी बाँटि ई कोले पकरै तौ बालो
 जाय १४ इति बालारोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्
 अथ अविस्फोट करोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते ॥
 रुडवीषस्त काषा वासू पयस्य काषा वासू तोषी वस्त काषा वासू
 गरम वस्त काषा वासू रूपी वस्त काषा वासू पारी वस्त काषा वासू
 अजीर्ण कार ह वासू भोजन उपरि भोजन करि वासू तावडा में र
 ह वासू सीत उष्ण वर्षा रितु येजो तीर्क पणां अथवा नही अथवा
 यां कवि परीत पणां तें कोप कुंभ्राप्त हुवा जो वाय पित्त कफ ये दोष
 सो सरीर की त्वचा में प्राप्त होय सरीर कालो ही नैं अरमांस नैं अर
 हाड नैं क्षुब्ध करै छै सरीर में भयंकर फोड नैं पैदा करै छै पहली जु
 र नैं उपजाय करि सोई नैं विस्फोट करोग कहिजै १ अथ विस्फो
 ट करोग को लक्षण लिख्यते जु र तें बां फोडा में मानुं आगि सिरी
 सी दीनी छै इसा फोडा होय वै फोडा रक्त पित्त स्रुड पज्या छै सरीर
 में सर्वत्र होय अथवा कहां होय ती नैं विस्फोट कहिजै २ अथ
 वाय का विस्फोट को लक्षण लिख्यते मथ वाय होय फोडा
 में पीड होय जुर होय तिस होय हाड फूटणी होय फोडा को ब्रण हो
 य येल क्षण होय जी नैं वाय को विस्फोट कजाणिजै ३ अथ पित्त
 का विस्फोट को लक्षण लिख्यते जुर होय दाह होय फोडा

अथ अविस्फोट करोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्
 अथ अविस्फोट करोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते ॥
 रुडवीषस्त काषा वासू पयस्य काषा वासू तोषी वस्त काषा वासू
 गरम वस्त काषा वासू रूपी वस्त काषा वासू पारी वस्त काषा वासू
 अजीर्ण कार ह वासू भोजन उपरि भोजन करि वासू तावडा में र
 ह वासू सीत उष्ण वर्षा रितु येजो तीर्क पणां अथवा नही अथवा
 यां कवि परीत पणां तें कोप कुंभ्राप्त हुवा जो वाय पित्त कफ ये दोष
 सो सरीर की त्वचा में प्राप्त होय सरीर कालो ही नैं अरमांस नैं अर
 हाड नैं क्षुब्ध करै छै सरीर में भयंकर फोड नैं पैदा करै छै पहली जु
 र नैं उपजाय करि सोई नैं विस्फोट करोग कहिजै १ अथ विस्फो
 ट करोग को लक्षण लिख्यते जु र तें बां फोडा में मानुं आगि सिरी
 सी दीनी छै इसा फोडा होय वै फोडा रक्त पित्त स्रुड पज्या छै सरीर
 में सर्वत्र होय अथवा कहां होय ती नैं विस्फोट कहिजै २ अथ
 वाय का विस्फोट को लक्षण लिख्यते मथ वाय होय फोडा
 में पीड होय जुर होय तिस होय हाड फूटणी होय फोडा को ब्रण हो
 य येल क्षण होय जी नैं वाय को विस्फोट कजाणिजै ३ अथ पित्त
 का विस्फोट को लक्षण लिख्यते जुर होय दाह होय फोडा

में पीड़ा होय कूटैवेगो पकैवेगो सबैवेगो तिस होय फोडाकोपी
 लोलालवर्ण होय येलक्षण होय तौ पित्तको विस्फोटक कहिजै २
 अथ कफका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते छर्दि होय अरु
 चिहोय मोडोपकै तीनै कफको विस्फोटक जाणिजै ३ अथ
 तपित्तका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते घणो पीडा होय
 अरयांत पित्तकालक्षण मिलता होय तीनै वायु पित्तको विस्फो
 टक जाणिजै ४ अथ वायु कफका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते
 सरीर भास्यो होय पुजालि चालै तौ कफको जानिये ५
 अथ पित्तकफका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते बज्जिका
 वै वैमें दाह होय सुर होय छादणी होय तौ कफपित्तको जाणिजै
 ६ अथ सन्निपातका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते फोडा
 कौबीचि पाडो होय असंजोभी होय अरफोडो गादो होय थोरो
 पकै फोडा में दाह होय ललाई घणी होय तिस होय मोह होय
 छर्दि होय मूडूछो होय फोडा में पीड होय सुर होय प्रताप होय
 सरीर कांपे येलक्षण होय तीनै सन्निपातको विस्फोटक जाणिजै
 ७ अथ लोहीका विस्फोटक को लक्षण लिख्यते
 जीमें पित्तका फोडका सर्वलक्षण होय फोडाको निरमा सरीरमा
 वर्ण होय जीमें लोहीनी सरै जीमें दाह होय योजतन सूर्भाया
 ओन ही होय ८ अथ विस्फोटक का उपद्रव लिख्यते तिस
 होय स्वास होय मांसको संकोच होय वैमें दाह होय हिचकन
 लै सुर होय फोडा फैलि जाय मर्मस्थानमें ईका उपद्रव छै ९
 अथ विस्फोटक को साध्य असाध्य लक्षण लिख्यते एक दोष
 को साध्य दोष दोषको कष्ट साध्य त्रिदोषको अरयणां जीमें उप

द्रवसौत्रसाध्य १ अथ विस्फोटक रोग का जनन लिखते
 विस्फोटक रोग वाला नैलंघन अर वमन अर जुलाव अर प
 थ्य भोजन अर पुराणी सालि चावल जव गौहं मूंग मसूर आर ह
 डये आछालें १ अथवा दसमूल को काढो रास्ना दाह हलद ष
 स कृष्णाली गिलवै धणों नागर मोथो यांको काढो देतौ वाय को
 विस्फोटक जाय २ अथवा दाष कुंभेर छवारा पटोल नींब की
 छालि अर डूसो कुठ की चावला की पीत जवा सो यांको काढो
 देतौ वित्त को विस्फोटक जाय २ अथवा चिरायतौ वच अर डू
 सो भिफला इंदजव कुडा की छालि पटोल यांको काढो सहत मि
 लाय देतौ कफ को विस्फोटक जाय ३ अथवा चिरायतौ कुठ
 की नींब की छालि महलोठी नागर मोथो पटोल पित्त पाप डो
 षस भिफला कुडा की छालि यांको काढो देतौ सर्व प्रकार को वि-
 स्फोटक जाय ४ अथवा चावल कुडा की छालि यांनै जलसूं मि
 हीं वारि फोडा रू परिले प करैतौ विस्फोटक जाय ५ अथवा गि
 लवै पटोल चिरायतौ अर डूसो नींब की छालि पित्त पाप डो षै
 रसार यांको काढो देतौ विस्फोटक रोग की जुर जाय ६ अथवा
 चंदन नाग केसरि गौरीसर चौलाई की जड़ सिरस की वकल
 चंचेला का पांन यांनै जलसूं मि हीं वारि ले प करैतौ विस्फोटक
 जाय ७ अथवा कमलगट्टा रक्तचंदन खोद षस गौरीसर
 यांनै जलसूं वारि ले प करैतौ विस्फोटक जाय ८ अथवा जी
 यापोता की मींजी जलसूं वारि ले प करैतौ विस्फोटक नै पांको
 लाई नै गला की गांठि नै कान की गांठि नै ओर फोडा फुल सीमा
 वनें थोले पहरि करैतौ ९ ये सर्व जनन भाव प्रकास में छै

अथ विस्फोटक रोग का जनन लिखते

दशांगलेप किशोर गूगल येभीईनेंआछ्याछै इतिविस्फोट
 करोगकीउत्पत्तिलक्षणजननसंपूर्णम् अथफिरंगरोग
 कीउत्पत्तिलक्षणजननलिप्यते योफिरंगरोगउपदंशवाय
 कोभेदछै सोघणीगरमवालीस्त्रीयांकासंगकरिवासूं अथवा
 वेंकोसंगकहींऔरकस्योहोयसोओउंठेमूतैउंठेयोभीमूतै
 अथवा वेंकोकहींतरेंभोजनादिककोसंगकरैतौ वायकापका
 कारणांसंकोपकूंपासुहय ईरोगनेंप्रगटकरै अथवा योघी
 एपुरषहोय अरमैथुनवारंवारकरै तदियोनिपटषीणपडै
 तदिईकैबंधैजरहैनहीं अरईकैवायकीनानाप्रकारकीसरीर
 मेंपीडाहोय तदिईकावायपित्तकफयेसाराहीकोपकूंपासिहो
 य ईआगतुकनामफिरंगवावनेंयेदोषप्राप्तिकरै सोफिरंगवा
 वतीनप्रकारकोछै सरीरकैमांहिनसांमेंधसिजाय १ सरीरकी
 त्वचाकैऊपरिरहै २ अरमांहिवारैभीरह ३ अथसरीरकीत्व
 चाकैवारैहोयतींकोलक्षणलिप्यते लिंगेंडीकेउपरीकुण
 सी अरफाटिवाउगेरैचिन्हहोय अरउंठेयोडीपीडाहोय सो
 तोसुषसाध्यहीछै योजतनकर्त्यामिहिजाय १ अथसरीर
 कीसंध्यामेंअरनसांमेंधसिगयोहोयतींकोलक्षणलि
 सरीरमेंकीडीकाट्याहोय इसाचावापडिजाय मोरियांमेंजांषा
 में पीट्यामें यांमेंघणीपीडाहोय अरउंठेसोजोहोय योकष्टसा
 ध्यछै २ अथसरीरकैमांहिवारैहोयतींकोलक्षणलिप्यते
 येसर्वलक्षणकस्याछैसोहोय अरघणांदिनांतांईरहै सोघणी
 कष्टसाध्यछै ३ अथफिरंगवावकाउपद्रवलिप्यते सरीर
 क्षीणपडिजाय बलजातोरहै नांकगलिजाय अग्निमंदहोय

३६३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

मांसरुधिरजातोरहे अरहाडमान्त्रापरहे येईकाउपद्रवछे
येचाळ्यानहीं १ अथफिरंगवावकाजतनलिष्यते रसकपूर
रकासाध्यासेतोफिरंगवावनिश्चैजाय सोरसकपूरकासाधिवा
की अरवावाकीविधिलिष्यते रसकपूररती ४ ले तीनैगोहूं
काचूननैपांणीसूंओसणी तांकेविचारसकपूरमेखिवेकीगोली
करै पाछैलंबंगानैमिहींवांढि अरगहूंकाचूनकीगोलीरसक
पूरसमेक्षिवेनैलंबांगानाचूर्णमैलपेटै पाछैवैगोलीनैनिगलिजा
य दांतलगावैनहीं सीतलजलसूंनिगलै ईउपरित्नागवेलिको
पांनचावैकाथचूनाविनाईउपरित्नागवायनहीं षट्पाईवायन
हीं षेदकरैनहीं तावडेरहैनहीं इसीतरैदिन २ करैतौफिरंगवा
यजाय २ अथसंप्रसरणगुटिकालिष्यते पारोटंक १ षेर
सारटंक १ अकलकरोटंक २ सेहेतटंक ३ यांसारानैषरलमैमि
हींवांढि यांकोयेकजीवकरै पाछैयांकी ७ गोलीकरै मोली १ रो
जीनाप्रभातसीतलजलसूंलेतौफिरंगवायजाय ईउपरित्नाग
षट्पाईवायनहीं २ अथवा पारोटंक २ आंवलासारगंधकटंक
२ चावलटंक २ यांतीन्यांनैषरलमैमिहींवांढि कजलीकरै पा
छैयांकीपुडी ७ करै पाछैपुडि १ येकेकरीजीनाइंद्रीकेधूणी
देतौफिरंगवायजाय ३ अथवा पीलाफूलकीषरैदीकापांनानै
कोरसटंक १ ले अरपारोटंक १ ले यांदोन्यांनैदोन्यूहाथामैमस
लि पारानै अरबैरसनैहाथामैचरायदै पारोदीसैजठाताई पा
छैयांहाथानैक्यौतपायले पसेवआवैजठाताई इसीतरैदिन ७
करैतौफिरंगवायजाय अरत्नाषट्पाईवायनहीं ४ अथवा नीं
बकापांनटंक ८ हरडैकीछालिटंक ७ आंवलाटंक ७ हलदटंक १

३६४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

पारो यांसारानैमिहींवांदि मासा ४ ईनैसीतलजलसं रोजीनांदि
न ७ लेतौफिरंगवायमांहिलोअर बारलोजाय ५ अथवा चोव
चीनीकोचूरणमासा ४ सहतसूदिन १५ चाटैतौफिरंगवायजाय
ईउपरिल्लणषटाईषायनहीं अरषायतौसींधोल्लणषाय ६ अ
थवा पारोटंक १ तीनैटकसेलाकारससेतीषरलकरै पाछैईमै
गूगलटंक ५ नांषै अकलकरोटक ५ त्रिफलाटक ५ येमिहींवांदि
ईमैनांषै पाछैसहतटक ५ गडकोघृतटक ५ ईकैसाथिईचूरण
नैटक १ रोजीनांदिन २१ षायतौ अथवा ईकोमर्दनकरैतौफिरं
गवायजाय ईउपरिल्लणषटाईषायनहीं ७ येसर्वजतनभा
वप्रकासमेंलिप्याछै अथवा जुलावसू अथवा लोहीका
कटावासूफिरंगवायजाय ८ अथवा पारो हींगल नीलोयू
यो हीराकसीस सोधोआंवला सारगंधक येसर्ववराबरिले
त्यांनैषरलमेंमिहींवांदि एकजीवकरिईकोभुरकोदे अथवा ई
कोलेपकरैतौफिरंगवायजाय ९ इतिस्नानकाद्योलेपः अ
थवा सो १०० बारकोधोयोघृत तींकोलेपकरैतौफिरंगवायजा
य १० अथवा कडवोतेलटका ११ मोमटक ५ कपेलो चेरजो
येदोन्युअधेलाभरिले सांदूरटक २ ले सोरोटक २ ले मुरदासीणी
टक २ यांसारानैमिहींवांदि पीतलकापात्रमेंमधुरीआंचसूबां
नैपकायपाछै आपकाहाथांसूमधिमाबीमेंघाउराषै पाछैई
कीकागलीदेतौ फिरंगकगूमडानैउपदंसनै यावनै यामलि
मआछाकरैछै १२ इतिमलहरमल्लिम अथवा सिंदूर
अधपाव ३१ गडकोघृतसेर ३१ यादोन्यानैमधिसरीरकैलेपक
रैतौ पाछैचंद्रकापरालनैसरीरकैलेपटै इसीतरेंदिन ३ करै

३६५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

ईऊपरिषीरषायतौ ध्रुवमात्रविस्फोटकफिरंगकागुमडायेसर्व
 सूक्तिजाय १३ अथवा पारो अरसीसो येबराबरिले पाछेयांदो
 न्यांकीबरलमेंकजलीकरै अरगोहांकातुस आमलीकाचीयां नीं
 बकापान घरकोधूससो येसाराबराबरिले यांनैनांबकारससूं
 परलकरै पाछेटंक २ अरकीगोलीबांधै पाछेसरीरनैवस्वसूं
 किकिरिइसीतरैदिन ७ गोली १ एककीधूलीलेतौसर्वप्रकारको
 विस्फोटकजाय ईऊपरिषीरषायदिन २१ तथा १४ अथवा त्रि
 फला घेरसार जायपत्री येबराबरिले यांनैपाणीमेंओढायमूढा
 नैधोवै पाछेधूलीलेतौफिरंगवायजाय १५ अथवा भालोजी
 रोकूठ येदोन्यूतीनतीनटांकले अरपुराणोगुडयांसूतिगुणो
 ले यांनैकूटियांकीगोली १५ करै पाछेगोली १ प्रभातगोली १
 संध्याषायतौफिरंगवायजाय ईऊपरिगोहांकीरोटीघृतसूंचो
 पडिषाय १५ इतिफिरंगगजकैसरीरसः अथवा हींग
 लूमासा ६ सुहागोमासा १० अकलकरोमासा १० सोममासा १०
 पाछेयांनैभिहींवांदि ईकीगोलीरती १ प्रमाणकीकरै पाछेचौ
 लिकाकोइलामेंगोलीयेकेकीदिन ७ धूलीदेतौफिरंगजाय १७
 अथवा सहजणांकीबकल बडकीबकल फांऊंकीबकल नीं
 बकीबकल जलभांगरो कत्ताली कचनारकीबकल यांको-
 काटोलेतौफिरंगवायजायदिन ७ में १८ अथवा हींगलूमा
 सा ४ मेषसिलमासा ४ यांनैभिहींवांदिबोरकीलकडीकीअंग
 चीमें मासा २ कीधूलीदेनिवर्तिस्थानमेंकपडोउढायतौफि
 रंगजाय १९ इतिहिंशुलादिधूमशुदाकैदै अथरसकपू
 रमूंदैआयोहोयतीकोजतनलिष्यते पीपलीकीबकल

३६६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १०

गूलरिकाचकलसे प्लक्षजोडोदोवदोतीकाचकलसे वडकीचकल
वेतकीचकल यांकोकाटीकरितींकाकुरलाकरैतौमूँदाकोसोजेदू
रिहोय २० अथवा जीरोटंक ५षेरसारटेक २ यांनैजलसूँवांदि
छालाकैलगवेतौ सुषपाकडूरिहोय २१ इतिफिरंगरोग
उत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् अथमसूरिकानामसी
तलातींकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते कडवीवस्तका
षावासूं लहूँका षारीवस्तकाषावासूं विरूद्धवस्तकाषावासूं भो
जनऊपरिभोजनकरिवासूं घणासांकादिककाषावासूं दुष्टपव
नकासेवासूं दुष्टग्रहकाआल्लासूं देशमेंसीतलाकाउपदवासूं
यांकारणांसूंईसरीरमेंलोहीनैयोदोषदुष्टकरै मसूरकैआकृति
फुलसांनैपैदाकरैछै सोमसूरिकानामरोगवचंदे १४ प्रकारके
हैं बायको १ पित्तको २ लोहीको ३ कफको ४ सन्निपातको ५ च
र्मज ६ रोगांतिका ७ अरसातूधातुगत रसगत ८ रक्तगत ९ वां
सगत १० मेदगत ११ अस्थिगत १२ मज्जागत १३ शुक्रगत १४
अथवायकीमसूरिकाकोलक्षणलिख्यते वेंकैफुलसांका
लीहोय लालहोय लूषीहोय जीमेंपीड़ाघणीदांय करडाहोय
मोडापंके येनक्षणहोयतदिजाणिजे वायकीमसूरिकाहै १
अथपित्तकीमसूरिकाकोलक्षणलिख्यते जीवैफुलसा
लालहोय पीलाहोय कालीहोय दाहनेंलीयांहोय जीमेंप
णीपीडाहोय अरवोगापकै येनक्षणहोयतदिपित्तकीमसूरि
काजाणिजे २ अथलोहीकीमसूरिकाकोलक्षणलिख्यते
जीमेंअतिसारहोय अरजीमेंघणोजुरहोय अथपित्तकालक्ष
णहोय येजिमेंनक्षणहोयतनिंलोहीकीमसूरिकाकहिजे ३

३६७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

अथ कफकी मसूरिकाकोलक्षणलिखते जीमें कुणस्यांसुपे
दहोय अरचीकणीहोय अरबडीहोय अरजीमें पाजिआवे अरमं
दपोडाहोय अरमोडीपकै येलक्षणजीमें होयतीने कफकी मसूरि
का कहिजै ४ अथ सन्निपातकी मसूरिकाकोलक्षणलि
जीमें कुणस्यां नीलीहोय अरमोडीपकै अरघणीहोय अरचिपटि
होय अरफेलिजाय अरविचमें पाडानें लीयां होय अरजीमें पीड
प्रणीहोय अरजीमें राधिपडतीहोय ये जीमें लक्षणहोयतीने स
न्निपातकी मसूरिका कहिजै ५ अथ रसमें प्राप्तिहुई जो मसू
रिकातीकोलक्षणलिखते त्वचामें प्राप्तिहुई जो मसूरिका
सोपाणी कबुदबुदासिरीसीहोय अरयांमें स्वल्पदोषहोय अर
वेंफूटेजदिवांमें पाणीनीसरे ६ अथ लोहीमें प्राप्तिहुई जो म
सूरिकातीकोलक्षणलिखते कुणस्यांकोलालआकारहोय
अरयेततकालपकै अरत्वचामांहीं होजाय अरयेही अतिदुष्ट
हुईसाध्यनहींछै अरयेही फूटीथकीलोहीनें बहावैछै ७ अथ मां
समें प्राप्तिहुई जो मसूरिकातीकोलक्षणलिखते वेंकुणस्यां
कडोरहोय अरचीकणीहोय अरमोडीपकै अरत्वचामांहीं होय
अरगानमें सूलचालै अरषुजालिहोय अरसूलाहोय अरदाहति
सहोय ८ अथ मेदमें प्राप्तिहुई जो मसूरिकातीकोलक्षणलि
वेंकुणस्यांमंडलकै आकारहोय अरकोमलहोय अरकडं चीहोय
अरवेंमें भयंकरजुरहोय अरवेंकुणस्यांवडी अरचीकणीहोय
अरसूलनें लीयां होय अरजीमें सोह अरअप्रीतिहोय अरजीमें
तापहोय इमें कोईकसोजीवै ९ अथ हाडमें मीजमें प्राप्तिहुई
जो मसूरिकातीकोलक्षणलि वेंकुणस्यांछोटोहोय अरगात्र

३६८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

कीसमानहोय अरलूषीहोय अरविपरीहोय अंकुशंभीहोय अ
रधैमोहघणोहोय अरपीडअप्रीतियेघणीहोय १० अथसु
कर्मप्राप्तिहुईजोमसूरिकातांकोलक्षणलिखते वैकुण्ठा
पद्मीसीठेठहांसूंदीसे अरचीकणी अरजीमेंघणीपीडा अरजीमें
अप्रीतिहोय अरदाह अरउन्मादयेभीजीमेंहोय ऐसा लक्षण
होयसोजीवैनहां ११ अथचर्ममेंउपजीजोमसूरिकातांको
लक्षणलिखते वैकुण्ठास्यांचर्ममेंउपजीथकीकंठनैरोकिदे
छै अरअरुचिनैकरैछै तंझानैकरैछै अरप्रलापनैकरैछै अप्री
तिनैकरैछै याधणांजतनकीथांसंआछीहोयछै १२ अथरो
मांतिकीनामरोमरोममेंप्राप्तिहुईजोमसूरिकातांकोल
क्षणलिखते प्रथमजुरहोय रोमरोममेंकुणस्याहोयअरचैक
कंउंची याकफपित्तसंहोयछै ईमेंपास अरुचिहोय ईनैरांभा
तिकाकहिजै १४ अथमसूरिकाकोसाध्यलक्षणलिखते
त्वचामें रक्तमेंमसूरिकाहोय अरपित्तसंहोयउपजीहोय अथवा
कफसंहोयउपजीहोय अथवा कफपित्तसंहोयउपजीहोयसोतोसा
ध्यजाहिजै यातोयिनांजतनहांआछीहोय १ अथमसूरिका
कोअसाध्यलक्षणलिखते यासन्निपातसंहोयउपजीहोय अ
रमूंणांसिरीसोजीकोवर्णहोय अथवा जामुणिसिरीसोजीको
वर्णहोय अथवा लोहसिरीसोजीकोवर्णहोय अथवा अलसी
काफूलसिरीसोजीकोवर्णहोय ईकाअनेकवर्णछै यामसूरिका
असाध्यछै अरईमेंयेलक्षणहोय सोभीअसाध्यजाहिजै १
अथमसूरिकाकोजतनलिखते मसूरिकाकाप्रारंभकौपयें
सुपेदचंदननैभिजोय ईकोपासोलंदिन ७ तौमसूरिकायोगीना
कलें

३६९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

अथवा वामकोरसपीवैतौ मसूरिका थोड़ी नीसरै १ अथवाय
की मसूरिका को जतन लिखते दसमूल रास्मा आवला ष
स धमासो गिलवै धरौ नागरमोथो यांको कादो देतौ चायकी म
सूरिका आछी होय २ अथवा मजीठ वडका अंकुर सिरसकी
वकल गूलर की वकल यांको घुत्त घालिले पकरैतौ चायकी म
सूरिका आछी होय ३ अथवा गिलवै महुवो दाष सूया दाड
मकी वकल यांको कादो गुड नांघि देतौ चायकी मसूरिका आ
छी होय ४ अथवा मसूरिका में सालिका चावल मूग मसूर मि
श्री ये पाय लूणा पाय नहीं थोड़ो सी धोलू पाय ५ अथपित्त
की मसूरिका को जतन लिखते पटोल की जड़ को कादो ले
अथवा वामकोरसपीवैतौ पित्तकी मसूरिका आछी होय ६ अथ
वा नींबकी छालि पित्त पापड़ो पाठ पटोल दोन्यून चंदन षस
कुटकी आवला अरडू सो जवासो यांको कादो मिश्री नांघि लेतौ
पित्तकी मसूरिका आछी होय ७ अथलोही की मसूरिका को
जतन लिखते ईमें लोही कदाजेतौ लोही मसूरिका आछी होय
८ अथकफकी मसूरिका को जतन लिखते अरडू सो चिरा
यतौ त्रिफला जवासो पटोल नींबकी छालि यांको कादो सह
तनांघि देतौ कफकी मसूरिका आछी होय ९ अथसर्वमसूरि
का मान को जतन लिखते पाठ पटोल कुटकी दोन्यून चं
न षस आवला अरडू सो जवासो यांको कादो मिश्री नांघि
देतौ सर्वमसूरिका मान आछी होय १० अथमसूरिका में कं
ठमें ब्रण होय गया होयतौ को जतन लिखते आवला महुवो
यांको कादो करिती में सहत नांघि तीं का कुरला करैतौ कंठ का ब्रण

आख्याहोय ११ अथमसूरिकांमेंआंध्यांचिपिगईहोयतींको
 जननलिष्यते महुवांकापाणीमेंअरंडकोसेककरैतौआंधिपुल्ले
 १२ अथमसूरिकांमेंनेत्रांमेंअणहुवाहोयतींकोजननलिष्यते
 महुवां विफला मूर्वा दारुहलद कमलगट्टा षस लोद मजीठ गंठो
 लेपकरैतौनेत्रांकाअणआछाहोय फेरउंठेअणहोयनहीं १३ अ
 थवा बडकीवकल गूलरिकीवकल पीपलिकीवकल यांकोने
 त्रांकेउपरिलेपकरैतौनेत्रआछाहोय १४ अथवा आरणांछा
 णांकीराषलगायवोंजांसूससूरिकाआछीहोय १५ येसर्वजनन
 भावप्रकासमेंलिष्याछै अथमसूरिकाकोभेदसीतलाती
 कोस्वरूपलिष्यते प्रथमजुरहोय विषम विषमकांईकदेघोही
 होय कदेघणीहोय कदेसीतलागे कदेगरमहोयतींकोभीनेमन
 हीं पाछेमसूरिकाआकारफुलस्यांनीसरे वेचडीहोजाय जुरकैती
 नदिन ३ पाछेनीसरिबोकरै दिन ७ तांईतीईपाछैदलै तीनैसीत
 लाकहिजै वासीतला ७ प्रकारकीछै अथसीतलाकाजन
 नलिष्यते आरणांछाणांकीराष नीचैविलाइजै सीतलाप
 होयती १ अथवा नींवकाडालीसेतीमांषीउडाईजै २ ईकाजु
 रकैविषैसीतलजलपाईजै ३ सीतलानेंमनोहरसीतलजलमें
 स्थापिजै पवित्रहोयसीतलाकोपूजनकीजै ईसीतलामेंघलीबो
 षदिकोजतनकीजेनहीं ४ अथवा सीतलजलसंहलदनैपीवें
 छै तांकोसीतलाकोफोडोनिपटकमहोय ५ अथवा केंतिकांज
 लसंसुपेदचंदननै अथवा अरुसाकारससेतीमहुवांनै अ
 थवा सहनसेतीमहुवांनैजोपुरयचालकनै सीतलाप्रथमपावें
 ती वेंकेसीतलाकोविकारकोईहोयनही ६ अथसीतलावा

कीरण्यालिष्यते जीर्णरमेंसीतलावालोरहे तींघरकैचारणैनीं
 वकापानबांधिजै अथवा चंदन अरडूसो नागरमोथो गिलवैदा
 ष यांकोकाढोदीजैतौ सीतलाकीजुरजाय ७ अथवा जप हो
 म दान ग्राम्हाभोजन शिवपार्वतीजीको पूजन अद्वासंकराजै ८
 अथसीतलाकेआगैसीतलास्तोत्रपदाजै सोस्तोत्रलि०
 स्कंदउवाच भगवन्देवदेवेशसीतलायास्तवंशुभम् वक्तुमर्ह
 सिशेषेणविस्फोटकभयापहम् १ ईश्वरउवाच वंदेहसीतलां
 देवींसर्वरोगभयापहम् यामासाद्यनिवर्तेतविस्फोटकभयंमहत्
 २ सीतलेसीतले चोतेयोब्रूयाद्दहपीडितः विस्फोटकभयंघोरंक्षि
 प्रंतस्यविनश्यति ३ यस्तामुदकमध्येतुधृत्वासंपूज्यतेनरः वि
 स्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यनजायते ४ सीतलेतलुजान् रोगान्
 मृणांहरसुदुस्तरान् विस्फोटकविशीर्णानांत्वमेकामृतवर्षिणी
 ५ गलगंडयहारोगान् येचान्येदारुणानृणाम् तदनुध्यानमात्रे
 णसीतलेयांतिसंक्षयम् ६ नमंत्रंनौषधंकिंचित्पापरोगस्यवि
 द्यते त्वमेकासीतलेचासिनान्यांन्पश्यामिदेवताम् ७ मृणालतं
 तुसदृशीनाभिरून्मध्यसंस्थितां येत्तांविचिंत्यदेवेशितस्यमृत्यु
 र्नजायते ८ श्रोतव्यंपठितंयंत्रंनैर्भक्तिसमन्वितं उपसर्गविना
 शायपरंस्वस्त्ययनंमहत् ९ शीतलाष्टकमेतंचनदेयंयस्यकस्य
 चित् किंतुतस्मैप्रदातव्यंभक्तिश्रद्धान्वितस्यच १० इतिस्कंदपु
 राणेशीतलाष्टकसंपूर्णम् अथसीतलाकाश्रोरभेदति०
 वायकफसंडपजी इसीकोदवाकहिजेकोडूकीसाआकृतिहोय
 वाकफकीभीहोय बैमेंअंगअंगकौबैषैगरमीहोयछै सरिरसासो
 दरदनायोजाय यासातदिनमें अथवा १२दिनमें ओषधिविनां

३७२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १७

हांआछीहोय ईनेंलोकिकमेंबोदरीकहैंछै ईमेंगरमघणीहोयस
शरमेंभोरीकहैंछै अरसररमें सरसूंआकारपीलीफुलसांहोय
येसर्ववालकांकैहोयछै येसर्वशीतलाकाभेदछै इतिमसूरि
कानामसीतलाबोदरीभोरी यांकीउत्पत्तिलक्षणजन
संपूर्णम् इतिश्रीमहाराजाधिराजमहाराज्वराजराखेंद
आसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे
सीतपित्तउदरदकोटउत्कोट अम्लपित्त विसर्प स्वातुर्द्व
मवालो विस्फोटक फिरंगवाय मसूरिकानाम सीतला
बोदरी भोरीयांसर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण
तननिरूपणं नामसप्तदशस्तरंगसमाप्तः १७ अथसद
रोगांकीउत्पत्तिलक्षणजननलिख्यते अथअजकहि
कानामफुलसीतीकोलक्षणलिख्यते वाफुलसीचीकणी
होय सरीरकावर्णसिरीसांहोय जीमेंपीडनहींहोय अरमृगम
माणहोय याकफवायसंडपजैछै १ अथयवप्रस्ताफुलसी
कोलक्षणलिख्यते यवकेआकारहोय करडीहोय गंडीलीहोय
मांसमेंरहतीहोय याकफवायसंडपजैछै २ अथअंबालकी
फुलसीकोलक्षणलिख्यते वाफुलसीभाराहोय सूपीहोय उंचीहोय
मंडलमेंलीयांहोय राधिजीमेंचोडीहोय याकफवायसंडपजैछै ३
अथविष्टनानामफुलसीकोलक्षणलिख्यते काटामूदाकीजीमें
घणोंदाहोय पक्क्यागूलरिकाफलसिरासांहोय मंडलमेंलीयां
य ४ अथकळपि काफुलसीकोलक्षणलिख्यते पांचतबाउइ
गोंदिहोयवेधयंकरहोय काठियासिरासांउंचीहोय याकफवाय
मंडपजैछै ५ अथबत्तीकफुलसीकोलक्षणलिख्यते कांभीमेंदे

३७३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर नरंग १८

काषमें होय हाथमें होय पगमें होय गला में होय यां स्थाना में बंधी
 कै आकार जो गांठि होय ऊपध्य का करि बावाला कै पाछें बागांठि व
 धें तीं का अनेक मुष होय बां सुषा में राधिनी सरे अरवा में पीड होय
 अरवा उंची होय अरवा वि सर्प रोग की सी नां ई फेंलि जाय ई कोज
 तन छैन हीं ६ अथ ई इ इ इ नाम फुल सी कोल हा एलिष्यते
 कमल कै बिचें वें कर्णिकामें कमल गदार है छै तीं कै आकार फुल
 स्यां होय चो फेर या वाय पित्त संरुठी छै तीं नैं इ इ इ नाम फुल सी
 कह जे ७ अथ गर्दभिका फुल सी तीं कोल हा एलिष्यते
 मंडल कै आकार गोल होय अर उंची होय अर लाल होय अर वें
 में पीड होय या वाय पित्त संरुप जी छै ई नें गर्दभिका फुल सी कहि
 जे ८ अथ पाषाण गर्दभ फुल सी तीं कोल हा एलिष्यते
 या दटा की संधि में होय सो जानैं लीयां वा स्थिर होय ई में पीड मंद
 होय अर या चीकणी होय ई नें पाषाण गर्दभ फुल सी कहि जे ९
 अथ पतंग फुल सी तीं कोल हा एलिष्यते १० कान कै बिचें हो
 य वें में पीड घणी होय अर वा स्थिर होय या वाय कफ संरुप जी
 छै ई नें पतंग कहि जे ११ अथ जाल गर्दभ फुल सी तीं को
 ल हा एलिष्यते जो सो जो पहली थोडो होय अर ओपि सर्प की
 सी नां ई फेंलि जाय अर ओप कै न हीं अर ओदा हजुर नें करे छै
 यो पित्त संरुप जी छै तीं नें जाल गर्दभ फुल सी कहि जे १२ अथ
 इर वेलिका फुल सी तीं कोल हा एलिष्यते जो मस्तक में गोल फु
 ल सी होय अर जी में पीड घणी होय जुर नें लीयां या सन्निपात सं
 होय छै ई नें इर वेलिका कहि जे १३ अथ काषोलाई कोज तन
 ल हा एलिष्यते भुजा का एक देश में अथवा पसवाडा कपड़ देश में

अथवा कांधाकायेकदेशमें कालो फोडो होय पीडानै लीयां बापि
 तक्रकोपसंहोय छै ईनै काषोलाई कहै छै अर केई पाछु एका दो
 बसूं काषमें फोडो होय तीनों काषोलाई कहि जै १३ अथ अघिसो
 हिणी फुलसीती कोलक्षणलि० काषका एक देशमें मांस नै र
 दीर्घा करि वावाला फोडा भयंकर होय अर बां फोडां में दाहजुरभी
 होय अर मानु बां फोडा में अंगार भि दीया छै ईनै अघिसो हिणी क
 हि जै या सन्निपातसुं उपजी छै या असाध्य छै १४ अथ चिप्यना
 म फुलसीती कोलक्षणलि० वायपित्त है सो नषका मांस में र
 ह करि कै दाह नै अर पाक नै करै छै तदि ई चिप्यना म फुलसीने पैं द
 करै छै १५ अथ कुनषरोग नषजी काजा तारत्या होय तीनों
 लक्षणलि० वायपित्त कफ ये थोडा कोप को प्राप्त होय तदि पुर
 ष कै कुनषरोग नै करै १६ अथ अनुशयी फुलसी कोलक्षण
 लिखते बा फुलसी गंभीर होय जी को आरंभ अल्प होय सरीसृ
 वर्ण सिरासी होय पग में उपरि होय माहं जी को कोप होय ये जी में
 लक्षण होय तीनों अनुशयी फुलसी कहि जै १७ अथ विदारि
 का फुलसी कोलक्षणलि० बा फुलसी विदारी कंद सिरासी गौ
 ल होय काय की संधि में अथवा जां प की संधि में होय अर सन्नि
 पात सुं उपजी होय तीनों विदारिका फुलसी कहि जै १८ अथ क
 र्कराना म फुलसी ती कोलक्षणलि० कफ मे द वाय ये है सो मां
 स नै नसां नै प्राप्त होय गांठि नै सहत सिरासी अथवा घृत सि
 रीसी अथवा वसा सिरासी नै पैं दा करै छै सो वा गांठि वधा धर्मा में
 तालो ही नै चलावै छै अर सरीर का मांस नै सुकाय दे छै तीनों शर्क
 रा फुलसी कहि जै १९ अथ शर्करा बुद फुलसी कोलक्षण

३७५. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

बाहुष्ठगांठिहोय तीमेंचेंघणोनीसरे नानावर्णकोअरवांकीन
 सांलोहीमेंघणोअवचोहीकरै तीनेंशर्कराबुंदकहिजै २० अथवा
 कोलक्षणलिखते जांकापगघणाल्पाहोय अरफिरबोकरै
 तांकापगयलीमेंबायहै सोव्याउनेंकरै २१ अथकदरफुरा
 सीकोलक्षणलिखते पगमें अथवा हाथमेंकांकराजुभीहोय
 अथवा सांदोनुभोहोय तींकरिकेंबोरकीसीगांठिहोयजाय ऊं
 चातीनेंकदरकहिजै २२ अथपारवाकोलक्षणलि० इष्टका
 दाकास्पर्शकरियांथकापगकिआंगुलीकेनाचैपाजिआवै अरउ
 देदाहहोयआवै अरपीडाहोयतीनेंपारवोकहिजै २३ अथइंद
 लुत्तनामसौकिंकमेंउंदरीलागीकहेतींकोलक्षणलि०
 रोमरोममेंरहतोजोपित्तसोवायकरिकेंसहितवधोथकोवालां
 मेंइरिकरैछै पाछैलोहिसहितकफहैसोकेसांनेंउपजावैसूरोकि
 देईनेंइंदलुत्त अथवा चांयलोकहिजै २४ अथअरुंधिका-
 योभीइहांकोभेदछैतींकोलक्षणलि० देसाकीभूमिमेंपाजि
 घणीचालै अरवाभूमिलूषीपडिजाय कफवायकाकोपकरिकें
 ईनेंदारणककहिजै कफअरलोहीमस्तगमेंकोपकूंप्राप्तिहोय त
 दिमनुष्यांकैअरुंधिकानेंप्रगटकरै २५ अथजोवनअन्व
 स्थामेंसुपेदवालहोयतींकोलक्षणलि० कोथसेति अथवा
 सोवसेति सशरकांगरसीहैसोसिरमेंजाय तदिपित्तहैसोकेशा
 नेंसुपेदकरिदे २६ अथल्हसणकोलक्षणलिखते कालीअ
 रवाकणोंहोय अरवेमेंपीडनहींहोय ओकफलोहीसूंउपजैछै
 अरयासरीरकीसाधिहीउपजैछै ईनेंल्हसणकहिजै २७ अ
 थमसांकोलक्षणलिखते वेंकैपीडनहींहोय कालोहोय

३७६. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

सरीरसूँउदसिशोउंचोहोय योवायसूँहोयछै इनेँयस्ताकहिजे
२८ अथतिलकोलक्षणलि० कालाहोय तिलकैउनमानहो
य पीडज्यांमैनहींहोय देहबराबरीहोय येवायपित्तकफकाय
धिक्यसूँहोयछै अरघणांहोयछै यांनैतिलकहिजे २९ अथ
कुकोलक्षणलिष्यते यडोहोयछै अथवा छोरोहोय कालोहो
य अथवा सुपेदहोय गोलहोय पीडनहींहोय तीनैँन्यठकहिजे
३० अथलिंगवर्तिकाकोलक्षणलि० लिंगेंद्रीकामसलित
थकी अथवा वैनैँपाझांधकी अथवा उंटेचोटलागिवाधकी लिं
गेंद्रीकेंविषेंचायहैसौविचरतोथको लिंगेंद्रीकीचामडीनैँउंघ-
लीअरसुपारीकैनांचै एकगांठिनैँकरिदै लंबीषाडानैँलीयां वा
वायसूँउपजेछै इनेँलिंगवर्तिकानामरोगकहिजे ३१ अथ
वपाटिकारोगकोलक्षणलि० स्त्रीकीजोनिकोमूंदोनिपट
सांकडोहोय तींस्त्रीकनैँपुरषहैसोहर्षथकोसंगकरिबानैँजा
य अथवा आपकासरीरकाबलसूँ तदिवेंपुरुषकीलिंगेंद्रीकी
चामडीउतरिजाय तीनैँअवपाटिकानामरोगकहिजे ३२ अथ
निरुद्धप्रकाशरोगकोलक्षणलि० लिंगेंद्रीमेंचायचायध
सै तदिसुपारीकीचामडीमेंरहकरिसुपारीमेंचामडीसूँडकी आ
मूंतकामारगनैँरोकंद अरउंटेहीचायसूँमिलिपीडनैँकरै तदिदै
नैँनिरुद्धप्रकासनामरोगकहिजे ३३ अथमणीनामरोगको
लक्षणलिष्यते निरुद्धप्रकाशरोगनैँहुवांपाछैमूंतकीधारि
नापीडमिहींचालै अरवैँकाआंतकोमूंदोनोंलोहोयजाय तीनैँ
मणीनामरोगकहिजे ३४ अथसन्निरुद्धगुदरोगकोलक्षण
लि० मूतकीवाधाकावेगनैँराकैँजोपुरषतीकैँचायहैसोगुदका

३७७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

बडामार्गनेछोटोमार्गकरिदे तदिछोटामार्गकाप्रभावसूवेंकैमैल
रूपीविष्टाहैसौबडाकष्टसुंदरै इनेसन्निकटगुदरोगकहीजैयो
भयंकरछै ३५ अथवृषणकलरोगकोलक्षणलि० जोपुरुष
स्नाननहीकरैतौहोय तींकापोतकैलआवै जीमेंपसेवआयषुजा
लघणीचालै तदिउठेपुजालिवासंफोडाहोयआवै पाछैचांफोडां
मेंराधवहै तदिउठेकफअरलोहीकाकोपसुंदपज्योवृषणकलरु
गकहिजै ३६ अथगुदरोगभ्रंशकोलक्षणलि० मोडानिबाही
अरअतोसारयांदोन्याहींसंपुरषवीणपडिजाय अरवेंकोस
रीरलूषोपडिजाय अरअोदुर्बलहोजाय तदिवेंपुरषकीगुदा
वारेंनासरिआवै तदिइनेकांचिकहीजै ३७ अथसूकरदंष्ट्रक
रोगकोलक्षणलि० जोकीत्वचापकीजाय असउंढेपीडघणीहो
य अरउंढेदाहलागिजाय अरलालजागाहोय अरउंढेपुजाल
घणीचालै अरजुरहोयआवै इनेभूकरदंष्ट्रकरोगकहिजै ३८
अथक्षद्रोगाकाजतनलिखते अजगहिकानेंआदिलेर
जोफुलंस्यांछै त्यांकोजोकांकरिलोहिकादिनांषणों १ अथचां
पकाजोत्रणत्यांकाजोजतनपाछैलिघ्याछैसोकरिजे त्यांकरिये
रोगआछ्याहोय २ अथवा फिटकडी सोंफकोषार यांनैसातल
जलसंमिहींवांटियांकोलेपकरैतौ अजगहिकानेंआदिलेर
जोसारीफुलस्यांआछीहोय ३ अथवा मैणसिल देवदारु कू
ठ यांनैपाणीसूंमिहींवांटियांकोईकैलेपकरै पाछैयेपकिजाय
तदियांकेसरूसूंवीरोदे यांकीराधिकादि पाछैवैमल्लिमाकरी
छै त्यांकरियेनिअैआछीहोय ४ अथवा सहिजणोंदेवदारु
यांनैजलसंवांट पाछैलेपकरैतौ बिदारिकाफुलसीआछीहोय ५

३७८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

अथ इरिवेल्लिकाफुणसीकोजतनलिष्यते पित्तकायसंप
कोजतनछैसोईकोजतनछै६, अथपनसिकाफुणसीकोजत
नलिष्यते प्रथमनींबकापांनबांधै ईनैंपकावै पाछैमैणसितकू
ठहलदतिल यांनैमिहांवांदि यांकोलेपकरै यांनैंपकावै पाछैनी
रोदै ईंकीराधिकादै पाछैमल्लिमंलगवै तौपनसिकाआछीहोय
७ अथपाषाणगर्दभफुणसीजतनलिष्यते प्रथमजोकां
सूंलोहीकटावणौ अथवा ऊहालेपकरिईनैंपकावै पाछैब्रणका
जतनसूं ईंकाजतनकरै८ अथचल्मीकफुणसीकोजतन
लिष्यते ईनैंपकायईंकेचोरोदीजै पाछैलूणचित्रक यांकोलेपक
रै पाछैईंकीराधिकादिनांषै पाछैअर्बुदरोगकाजतनकरिईंभ
रिजै९ अथवा जोकनैआदिलंरईंकांलोहीकटाजै१० अथवा
कुलथकीजड गिलवै लूण फिरमालाकाजड दांतूणी निसोन
यांनैपाणीसूंमिहांवांदि पाछैगरमकरिईंमैव्यूधृतमिलाय ईं
कोलेपकरैतौ यापकिजाय पाछैचोरोदैईंकोसुरदारमांसकादि
नांषै पाछैब्रणकाआछीहोवाकीमल्लिमासूंयाआछीहोय ११
अथवा मैणसिल इलायची अगर रक्तचंदन कूठ चंचेलीकापांन
मिलावा आछिनींबकापांन यांमैतेलपकावै पाछैईंतेलनैईंकेल
गावैतौ चल्मीकफुणसीसोजासंयुक्तआछीहोय१२ इतिमनःसि
लातैलम् अथकापोलाईअरअग्निरोहिणीयांदोन्याका
जतनलिष्यते प्रथमजलोकासूंयांकोरुद्धिरकटाजै अथवा पि
त्तकोयिसर्पकोजतनसोईकोजतन१३ अथवा रंजदाम मैण
सिल कूठ यांनैचराबगिने यांनैजलसूंमिहांवांदिस्वंगरमकरिईं
कोलेपकरै अथवा ईंकाक्यूंयेचसुहावतागरमकापोलाईकंपांगी

३७९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

बांधेंतौ कापोलाई आछी होय १४ अथ अचयादिका को जतन
लिख्यते चाकणी वस्तुसंसर्गसर्गसंहावतौ सेक करै तौ अपपाहि
का आछी होय १५ अथ निरुद्ध प्रक स क को जतन लि० चूका का
रस समै तेल नें पकाय वें तेल को सेक करै अथवा भूरका धृत को से
क करै तौ निरुद्ध प्रक स क आछी होय १६ अथ सनिरुद्ध गुद को
जतन लिख्यते सुहावतोगरम तेल को सेक करै अथवा वायनैं इ
रे करिवाला तेल त्यां को सेक करै तौ सनिरुद्ध गुद रोग जाय १७
अथ वृषण कछु रोग को जतन लि० गल कूठ सांधो लूण सर
सूं या नें जल सूं मिहीं बांदि ई को उबटणों करै तौ वृषण कछु रोग
आछी होय १८ अथ गुद भूं स कां चि रोग को जतन लिख्यते
गडका घृत नें आदिलेर चीकणा द्रव्य छै सां सूं सुहावतौ सेक करै तौ
गुद भूं स जाय १९ अथवा कमलनीका को मल पांन सां नें सुकाय
तां में मिथ्या मिलाय टंक २० रोजी नां पायतौ कांची नी कल तीर है २०
अथवा ऊं दरा का मांस को घृत तीं को कां चि के लेप करै तौ कां चि
नी कल तीर है २१ अथवा उंस त्यां चि चक लूण्यो वील की गिरि
पाट जव थार ये बरा थार ले तीं को मिहीं चूर्ण करि टंक २१ गडकी छा
छि सुं रोजी नां ले तौ गुद भूं स नाम कां चि को रोग जाय २२ अथवा सू
सा को मांस अरदस मूल यां में पाणी घालियां को काथ करै पाछें ई
काथ में तेल पकाय ले पाछें ई तेल को मर्दन करै तौ गुद भूं स कां चि
को रोग जाय गुद सुं ल जाय अरभगंदर ये रोग जाय २३ इति मूष
क तैल सू अथवा ठक छूं दरी को तेल मूषक तेल की सीनाई
करि ले तीं काले पसूं गुद भूं स को रोग जाय २४ अथवा ममा लूणी
कोरस कोर की जड कोरस दही छाछि ई में सूं ठि अरज व थार घृत

३८० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

नांघि ईमैपकायें पाछै ई घृत नै टंक ५ रेजीनां पायतौ गुद भंस को रोग
जाय २५ इति चांगेरी घृतम् अथ भूकर दंष्ट्र रोग काजतन
लिप्यते जल भांगरा कीजड हलद यां नै मिही बांदि जल संजै रेजै
ठै स्त्रका लो होय त ठै ई काले पकरै तो भूर की दाट को बिष आछो
होय २६ अथ अलस नाम पार वाती को जतन लिप्यते परो
ल मै एसिल नींबू गोरोचन काली भिरचि तिल कल्याली कोर
स कांजां यां मै कडवा तेल पत्रावे पाछै पार वां को ई कै मर्दन करै
तौ पार वा आछा होय २७ अथवा कणग चक्क बीज हलद ही
राकसीस महुवो गोरोचन हरताल येबरा बभिले यां नै सहत स
मिहीं बांदि ई को ले पकरै तो पार वा आछा होय २८ अथ व्याड
को जतन लिप्यते गरम गरम तेल सुहावतौ ई को सेक करै तो या
ऊ आछी होय २९ अथवा मोम जव पार घृत मै मिलाय गरम
गरम व्याड मै भरै तो व्याड आछी होय ३० अथवा राल सांधान
ए सहत घृत यां सारां नै कडवा तेल मै मथै पाछै यां नै व्याड मै भरै
तौ व्याड आछी होय ३१ अथवा सहत मोम गेरू घृत गुड गुल
राल यां नै मिहीं बांदि मिलाय यां को एक जीव करै व्याड मै भरै तो
ऊ आछी होय ३२ अथवा धतूरा का बीज जव पार यां नै कडवा तेल
मै पकाय ई तेल को मर्दन करै तो व्याड आछी होय ३३ अथ
कदर को जतन लिप्यते जीका पग मै कांठो कांठी चुभा हो
यत दिवें कै आट ए पड़ जाय त दिवें आट ए नै ताता तेल मंरो
कै अथवा आक को दूध गुड मित्राय बांधै तो कदर को रोग जाय
३४ अथ तिल काजतन लिप्यते सरस्य माजा हन्त केसी
यां नै मिहीं बांदि ललस उग्र ए को करै पहला लूरा उग्रै संघानै

८१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

उज्ज्वलको करैतौ सरार कालिजाय ३५ अथ मस्सा काज-
नलिष्यते साजीचू नो सा बरा जलमैवांदि मस्सा कैल गावैतौ म
सा इरि होय ३६ अथ जनु भणिना मल्ह स एती को जत नलि
ल स एने पाछा सूर गढै ईउ परिसर स्पू हल द कूठ साजी जव भार
केसरि बांनै पाणी सूमि ही पासि यांको उच दणो करैतौ ल्ह स एजा
य ३७ अथ चेप्याना मरोग को जत नलिष्यते ईरोग विषैज
लैकानै आदिलेर त्यां सूरु धिर कटावणो अथवा सुपारी की राष
पीली कोडी की राष काथो कपेलो मुरदासिया नीलो धूयो यांको भु
रको करि लगावैतौ चेष्यो जाय ३८ अथवा लोह का पात्र में हरडे
नै हल द कार स सूर गढै पाछै ईने गरम करि लगावैतौ चेष्यो जाय
३९ अथ कुन धरोग को जत नलिष्यते सारभासो सहत सुं
रोजीना वाय अथवा कुटकी को साधन करैतौ कुन धरोग जाय
४० अथ मस्सा तिल स ए यांको इ सरो जत नलिष्यते
हींगल सेक्यो नीलो धूयो येदो नू पई सा ए क भरिले सिंदुर टंक १
राल टंक ७ यां सारा नै छ ६ टका भर्या गड का घृत मैकांसी की या
ली में लोह का दंड सुं अथवा तांब का घोंटा सुं दिन ३ रगढै तांद्यो
काजल सीर सो हो जाय तदि ई को लेप करैतौ मस्सा ल स ए वा
र बा फोडा कुजालिये सर्व जाय ४१ अथवा काली जीरी टंक २१
नो सा दर टंक ५ सांय को चूर्ण टंक ७ नीलो धूयो टका २ यां सारां
मै ही पांसीसिया कै अरणी कार स की पुट ३ दे पाछै जल भां गरा का
र स की पुट ३ दे पाछै जाव दै सुकावै पाछै बाछडी का मूत सुं ई की
गोली बांधै पाछै बाछडी का मूत सुं ई ही गोली नै यसि अर मस्सा
ने ल स ए के लगावैतौ तिल मस्सा ल स ए ये सारा जाय ४२ अ

थषुजालिकोजतनलिष्यते लोहकापात्रमेंलोहकाघोटासंघा
 वला सारगंधक पारो नीलोत्थूथो येतीन्युंयेकएकभागवधतालेहां
 नैंगऊकाघृतमैरगडै पाछैयांकोलेपकरैतौषुजालिदूरिहोय ४३
 अथजोवनअवस्थामैसुपेदवालहोयतांकोजतनलि
 लोहचूरदंक २॥ आंवकीरुंठलीदंक २॥ आंवला २ वहीदोयहर
 डैकोचूर वहेडो १ यांसारानैमिहांवांठि लोहकापात्रमेंभांगराकासा
 सैंदिन २ भिजोयरायै पाछैसुपेदकेसांकैलपकरैतौस्यामहोय
 ४४ अथवा केतकीकीजड अथवा कैवडाकीजड सहजणांका
 फूल कुंभेरकीजड लोहचूर जलभांगरो त्रिफला यांसारानैतेलमें
 पकाय पाछैलोहकापात्रमेंघालि पाछैपृथ्वीमेंमहानों १ गाभिरा
 यै पाछैईतेलनैसुपेदवालांकैलगावैतौबालकालाहोय ४५ अथ
 वा त्रिफला नींवकापात्र लोहचूर जलभांगराकोरस गान्नीकां
 मूतयांनैमिहींवारि सुपेदवालाकलगावैतौबालस्यामहोय ४६
 अथवा पापडधारमासो १ सींदूरमासो १ सुरदासिंधमासो १
 घावाकोचूनोमासा ८ यांनैसिलाऊपरिपाणीसंघट्टा ३ निपटरगई
 ईकोरंगकालोनषऊपरिआवैतदि सुपेदकेसांकैलगावैतौकेसम
 लाहोय ४७ अथवा मांजूफललेनचामोटा त्यांनैभोभगिमैंसै
 किले बेंफाटेजठातांईचांनैबलवादेनहीं ईसीचतुराईसंसेके १
 छैमांजूफलतौ १ ले सिंधरासिमामो १ लै नीलोत्थूधोरता १५ लै भौ
 मादररती ३ ले लचंग २ फिटकरारती २ लोहचूर १ तो १ यांमागै
 आंवन्नारसकायाणीमेंलोहकाकडछलासैंलोहकाघोटासंघट्टा
 १ रगडै पाछैबेंकांरंगनयऊपरआयै तदिसुपेदकेमनैआंवन्नाका
 पाणीसंघोवै केसांऊपरियांकाजामोलेपकरै जेपऊपरिअरंडका

३८३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

पानवांधै पहर १ राधै पाछै आंवलाका पाणीसूं धोय नां धै तो केसका
 लाहोय ४८ अथवा धावाको नूनो अथवा अरहरणकी राष अथ
 वा कौड्यांकी राष तीनैं सीसासूं रगडै ईमें हूं गोपीचंदन नां धै मुरदा
 सिंघमासो १ नां धै पाछै रगडै अरनंष के कालोरंग आवै तदि ईको के
 सांकेले पकरै उपर अरंड का पानवांधै तो केसका लाहोय ४९ अ
 थउंदरीलागी होय तांको जतन लिख्यते पटोल का पानांका
 रसमें कुटकी नैं वांटे ईकोले पकरै तो बालगया होय जठै बाल
 उगिआवै ५० अथवा हाथी दांतकी राष बकरीका दूधमें मिला
 यलगावै तो बाल उगिआवै ५१ अथवा कमलकी जड दाष तेल
 घृत दूध यांसा रानैं वांटे ले पकरै तो बाल उगिआवै ५२ अथवा
 चंचेली का पान कणगचकी जड कनीरकी जड चित्रक यांमें तेल
 पकावै पाछै ईतेल को मर्दन करै तो बाल उगिआवै ५३ अथवा
 यको जतन लिख्यते चिरंजी नैं कड छलामें बालिसजी चतीसी
 पाछै चने नैं वांटे ले पकरै तो चांय को रोग जाय ५४ ये सब जतन
 भाव प्रकासमें छै इति सुदरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतन
 संपूर्णम् अथ सिरनाममस्तगरोगकी उत्पत्तिलक्षण ज
 तन लिख्यते मस्तगरोग इग्या ११ वायको १ पित्तको २ कफको
 ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ क्षीणपणांको ६ कृमिको ७ सूर्यो
 वर्त ८ अनंतवात ९ संकनामकनफटी दूषबाको १० अर्द्धाच भे
 दक ११ ये इग्या प्रकार का मस्तगरोग छै सो सुथ तो दुष्ट भी
 जनसंहोय छै १ अथ वायका सिरों रोग को लक्षण लिख्यते
 जीकामस्तगमें विनांकारण हांघणी होय अररात्रिमें निपट घणी
 होय अरओषटिकाले पकत्तां से ककत्तां आराम होय तदि जा

३८४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग ५

जाणिजैवायकीपीडाछै १ अथपित्तकासीरोगकोलक्षणलि
जीकोमाथोअग्निसिरासोबोलै अरसिरकाटूकहुवाजाय अरजीका
नेत्रमेंपीडाहोय घणीफूटवासिसीसी अरसीतपणांकरिरात्रिमें
विशेषहोय तदिजाणिजैपित्तकीपीडाछै २ अथकफकासिरो
रोगकोलक्षणलिष्यते जीकोमस्तगकफसूलिष्योयकोहोय व
रभास्योहोय अरठंदोहोय अरआंथांकेनांसिकाकेमूंडाकेजीके
सोईहोय अरजीकोशिरबले येलक्षणहोय तदिजाणिजैकफकी
पीडाछै ३ अथसन्निपातकासिरोगकोलक्षणलिष्यते
येपाछैकस्यासौसारालक्षणजीकेहोय तदिजाणिजैसन्निपात
कीपीडाछै ४ अथलोहीकासिरोगकोलक्षणलि जीमेंपि
तकालक्षणसारामिले अरहाथकोस्पर्शमस्तगकेसहैनहोय तदि
जाणिजैरक्तकीपीडाछै ५ अथपीणपणांसूउपज्योजोसीसो
रोगतीकोलक्षणलि सरीरकोबलजातोरहै तदिमस्तगर
तोपडिजाय तदिसिरबले अरमस्तगमेंघणीपीडाहोय तदिजा
णिजेपीणपणांकीपीडाछै ६ अथकृमिपणांसूउपज्योजो
सिरोगतीकोलक्षणलि जीकोसिरघणीपीडाकूंआमिहां
य अरघणोंफुरके अरजीकानांकमेंकरलोहअरगधिघणोंनी
सरे अरबेंकोसिरनियदघणावले येलक्षणजीमेंहोय तदिहृम
कीपीडाजाणिजै ७ अथसूर्यावर्त्तरोगकोलक्षणलिष्यते
सूर्यकाउदैहोतैंहीसिरकेंपिमेंमंदमंदपीडाहोय अरज्यूंज्युंदिन
देन्यूंपीडावधे दोयपहरांतांई अरआंथांमेंभवांरांमेंपीडाप
गीहोय अरदोयपहरांपीछेपीडामंदहोताजाय ईनंसूर्यावर्त्त
रुहिये ८ अथअनंतवानसिरोगकोलक्षणलि वायांन

३८५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

कफयेतीन्मूत्रोषदुष्टहुवाथकाकांधीकैविषेयणीपीडाकरै अरनेत्रां
 कैविषेधवांराकेविषे कनपठ्याकैविषेभिपटयणीपीडाकरै माटी
 नैहालबादेनहीं अरकपोलकैविषेकांपणीकरै अरनेत्रविकार
 करै अरसिरकैविषेपीडाघणीकरै ईनेअनंतबात कहिजे १० अ
 थसंघनामकनपटीइधैतीकोलक्षणाति० पित्तअरलोहीअ
 रवाययेदुष्टहुवाथकाकनपटीमेंपीडाघणीकरै अरकमपटीने
 लालकरिदै अरशरीरमेंदाहकरै सिरकाहूकरै गलानैरोकिदै
 ईनेसंघनामसिरकोरोगकहिजे ईरोगबालोदीनतिनजीबै १०
 अथअर्द्धवभेदकशिरोरोगकोलक्षणातिथ्यते लूषीव-
 स्तकाषावासूं भोजनउपरिभोजनकरिवासूं पूर्वकापनसूं घणा
 मैथुनकरिवासूं मलमूत्रकाशोकिवासूं बेदकाकरिवासूं यांसूंवा
 यकुपित्तहुवोकफनेंग्रहणकरै पाछेओवायकोधीनेभवारानें अ
 रकनपठ्यानें कानानें नेत्रानें ललाटनें यांसाराहीनेंआधाआधा
 नेंअेसीपीडाकरै मानूसंखकी वज्रकीटागीछै ईनेअर्द्धवभेदक
 हिजे अरयापीडानेवांमें कानांमें घणीवधीथकी मसुष्यनेंमारिनां
 पै ११ अथवायकासिरोरोगकोजतनलि० वायकातेल अथ
 बालोहीतेल त्यांकोमर्दनकरै अरवायनेंइरिकरिवाबालीवस्त्रनें
 धायतो वायकोसिरोरोगजाय २ अथवा स्वांसकुठाररसकीनां
 सलेतो नानाप्रकारकीसिरकीपीडाजाय ३ अथवा उडदांकानूननें
 जलमेंओसणीवेंकीरोओकरै वेंरोदीनेपहर १ सिरकैबांधैतोसि
 रकीपीडाइरिहोय ४ अथसिरोवस्तिलिथ्यते सिरकैऊपरिउड
 दांकानूनकीपाणीमेंओसणिवांटिकरै आंगुल १६की अथवाआं
 गुल ८ की तीनंगरमतेलसंपूर्णकरिओतेलपहर १ अथवा घडी

माथांरुपरिनिश्चलवैठिरापैतौ वायकासिरकारोगानें उदाकाकांध
काकांनका माथांरु यांसारारोगानें योशिरोवस्तिहृत्करैछें ईनेदि
नपांचसातसेवनकरैतौ ५ इतिसिरोवस्ति अथपित्तका
सिरोरोगकोजतनलिय्यते चंदन कमलगट्टा यांनैंसातलज
लसूंवांदि लेपकरैतौ पित्तकीमथवायजाय ६ अथवा सो१०० क
रकोधोयो घृततीकोलेपकरैतौ पित्तकीमथवायजाय ७ अथवा
स्वासकुठाररसकपूर केसरि मिथीचंदन यांनैवकरीकाइधसूंवांदि
यांकोलेपकरैतौ पित्तकीमथवायजाय ८ अथवा सूरि अरगुड
यांदोनूंनैंपाणीमेंवांदि यांकीनांसलेतौ सर्वप्रकारकीमथवायजा
य ९ अथलोहीकीमथवायकोजतनलि १० पित्तकीमथवाय
काअरईकाजतनएकछें ईमैलोहीखुमाबोविशेषछें १० अथ
कफकीमथवायकोजतनलि ११ ईमथवायमैलंघनकरगोजो
ग्यछें अथवा कफहारीऔषधांत्वांनैंवांदि त्यांकोगरमलेपकरै
तौ यामथवायजाय ११ अरसंनिपातकीमथवाय संनिपातनैइ
रिक्करै त्यांऔषधांकोलेपकरै अथवा वांऔषधांनैंपायतौ याम
थवायजाय १२ अथषट्बिंदुतेललिय्यते अरंडकीजड तगर
मौफ जीवंती सीधोनूण रास्ना जलभांगरो वायविडंग महनोर्ष
सूरि तिलांकोतेल यांऔषधांसंअरगुणोले तेलसूंबौगुणोले
जलभांगराकोरसले तेलसूंबौगुणोहावकरीकोइधले पाछेंयां
सारानैंयंकठाकफि मधुराआंचसूं कडाहीमेंपकावें येसर्वबलिजा
य तेलमात्रआयरहै तदिईतेल कीनांकमेंबुंदछछकीनांमनैतौ
मिरकाविकारसाराजाय अरदातांकारोग नेचांकारोगसागजाय
६ इतिषट्बिंदुतेलम् अथषोणपणांसूंहुवांजायय

३८७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

वायतीको० तानेपोषणपणानें दूरिकरै इसाजतनकसांयामथवा
यजाय १४ अथकृमीसंउपजीजोमथवायतीकोजतनलि०
सुंदि मिरचि पीपलि फिरमालाकीजड सहजणांकाबीज येबराब
लेले यांमैंबकरीकासुंतमैंमिहींवांदि यांकीनांसलेतौ माथाकीक
मिजाय अरमथवायआछीहोय १५ अथसूर्यावर्त्तनांमआ
धासीसीतीकोजतनलि० दूधअरघृतयांनैमिलाययांकीनांस
लेतौआधासीसीजाय १६ अथवा गुडकाघृतकामालपूराषाय
अथवा पीरषाय अथवा तिळांकोसेककरावेतौआधासीसीजाय
१७ अथवा जलभांगराकोरस बकरीकोदूधयेबराबरिले त्यांनैता
वडासंगरमकरै पाछेईकीनांसलेतौ आधासीसीजाय १८ अथ
वा सींगीमोहरो आफू आककीजड धतूराकीजड सुंदि कूड लह
सण हांग यांनैगोमूलमैंमिहींवांदि गरमकरिमाथांकोलेपकरैतौ
आधासीसीजाय १९ अथवा ईनेंजुलावदीजेतौआधोमाथोदूष
तोरहै २० अथवा गरमभोजनसंथोआछोहोय २१ अथवा या
यविडंग कालातिल येदोन्युंवांदि यांकोलेपकरैतौयोआछीहो
य २२ अथवा मिथ्रीदूधकाचानालेरकोपाणीयेसर्वमिलाययांने
पीवै अथवा ईकीनांसलेतौ आधासीसीअरआधोमाथोदूषवो
येदोन्युंआछोहोय २३ अथअनंतवांतसिरोरोगकोजतन
आधासीसीकोअरईकोजतनयेकछै अथवा माथांकीनसकी-
सीरछुनावेतौयोआछोहोय अथवा सहतकामालपूराषायतौ
अनंतवांतसिरकोरोगजाय २४ अथपेथ्यादिकफायलिथ्यते
हरडैकीछालि बहेडा आवला हलद गिलवै चिरायतौ नांवकी
छालि गुड येसर्वबराबरिले यांनैजौकूडकर ईकोकाद्येलेतौभं

वारादूषवा कनपदीदूषती नेत्रांकारोग आधोमाथोदूषतोयेरोगजाय
 अथवा ईकीनांसलेतो २५ इतिपथ्यादिकक्षयः अथकनक
 दीदूषती होयती कोजतनलिष्यते दाहहृद हलद मजी
 ठ गौरीसर घस कमलगट्टा यांनैजलसंसीतलसंमिहींवांदि
 नपल्यांकैलेपकरैतो कनपदीआछीहोय २६ अथवा सीतलजल
 संसीतलऔषदिकोलेपकरैतो कनपदीआछीहोय २७ अथवा
 हलौंठी उडद येदोनूंबराबरिले यांकोचोयोहिसोसंगीमोहरोले
 पाछैयांनैमिहींवांदि ईनैसरस्युं प्रमाणसंघेतो सर्वप्रकारकीसिर
 कीव्यथादूरिहोय २८ अथवा आलो सीं पाकोचूनो अरनैसादर
 यांनै हथेलीमें मथे ईकीनांसलेतो सर्वप्रकारकीसिरकीव्यथानाव
 २९ अथआधासीसीकोऔरजतनलिष्यते मिश्री केसरी कंनै
 घृतमेंसेकै पाछैईकीनांसलेतो आधासीसी कनपदीदूषवो कंनवे
 भंवाराको नेत्रकोदूषवो येसारारोगजाय ३० येसर्वजतनभाव
 प्रकासमेंलिष्याछै अथवा संहि मिरचि पीपलि पोहकरबूब
 हलद राक्ता देबदारु असगंध यांकोकादोलेतो सर्वप्रकारका
 माथांकारोगजाय ३१ अथवा मिश्री अरईसूंआधीदाडमकीक
 लि त्यांनैमिहींवांदि ईकीनांसलेतो माथाकीपीडाजाय ३२ अथवा
 सुचकंदका फूलकोलेपकरैतो मथवायजाय ३३ अथवा कूठ
 अरंडकीजड यांनैकांजीसूंवांदि यांकोलेपकरैतो मथवायजाय
 ३४ अथवा देबदारु तगर कूठ घस संहि तिल यांनैकांजीमेंवां
 दि यांकोलेपकरैतो मथवायजाय ३५ अथआधासीसीको
 रजतनलि मिश्री अरमेंटल यांनैगोमूतसंमिहींवांदि ईकीनां
 नैतो आधासीसीनैआदिलेरसर्वजाय ३६ अथवा मुसाकोसोव

३८९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

वांमोमिरनिनांमिभोजनपहलीदिन ७ वायतौ आधासीसीनैआदि
लेरसर्वरोगजाय ३७ येसर्वजतनवैद्यरहस्यमैछै अथवा
चंदन लवण सूंठि यांनैपाणीमेंमिहींवांदि लेपकरैतौमथवाय
जाय ३८ अथवा आंबकीछालिकोलेपकरैतौ घणीभीमथवायजा
य ३९ अथवा जलभांगराकोरसकूठगड्ढोमाषनयांतीन्यांनैवांदि
यांकोलेपकरैतौघणीभीमथवायजाय ४० अथवा पीपलि मिर
चि खेद येबराबरिले यांनैमिहींवांदि याकीदिन ३ नांसलेतौ आ
धासीसीउगेरैमथवायजाय ४१ अथकपालकाकीडाकोज
तनलिष्यते कडवाककोडाकापांनकोरसतीकांनांसलेतौका
पालकाकीडाजाय ४२ अथवा पीपलि आंधोप्राडो सरसूं आक
कामोमीकाबीज यांकोसीतलजलसूंलेपकरैतौ मथवायजाय ४३
येजतनवैद्यवल्लभमैछै अथमाथाकोकेसबांधिवाकोज
तनलिष्यते छडछडीलोकूठ कालातिल गौरीसरजमलगट्टा
यांनैसहतअरइधसूंमिहींवांदि यांकोलेपकरैतौ माथाकाकेस
बधै ४४ अथवा चिरम्यांनैमिहींवांदि तांनैजलभांगराकारसमें
योचूर्ण अरतिलकोतेलपकावै ईतेलमेंइलायची छड कूठ मि
लाय ईतेलकोमर्दनकरैतौकेसबधै ४५ अथवा छड घरैरी वौ
लसिरीकीछालि आंवला कूठ यांनैजलमेंमिहींवांदि यांकोलेपक
रैतौकेसबधै ४६ अथमथवायकोऔरजंतनलि लवंग
भिरचि हांग यांतीन्यांकूलसूंवांदि चणाप्रमाणनांसलेतौमथ
वायनिब्वैजाय ४७ अथआसीसीकादूरिहोवांकोसिद्धमं
त्रलिष्यते उंनमोकालीदेवीकिलिकिलेवासीसृधोभ्यासे हणबं
तबीरहाक्यारै आधासीसीअधकपालीनारौ जाजारेपापणीजा

जारेहत्पारी नजायतोतारागुरुनीआजा हनवंतरीरनीआजा गरु
उपपन्नाआजा मेरीभक्तियुक्तकीशक्ति कुरांमंजोइंरवरोवाच ईमंजं
माथाकेंवार २१ सनेसमेंफुकदेती ईसंआधासीसीनिबेंजाय अर
ईमंजनेईक्षणपक्षकी १४ कैदिनगक्तिमाफिकजपिवोकरेतोईदमं
सिद्धिरहें २२ अथइसरामंज अंनमोआधासीसीहूहूकरा पद
रपचारी सुषसुंदिपादलैमारी असुकारेसीसरहै सुषमदेवररी
आजाफुरै अंठंठंसाहा बार २१ मंजजै आंगुत्थमस्तगउपरिफैरै
तौ आधासीसीजाय ४९ इतिमस्तगरोगकीउत्पत्तिलक्षण
जतनसंपूर्णम् अथनेत्रांकारोगांकीउत्पत्तिलक्षणजत
नलिख्यते प्रथमनेत्रकोमंडलेंसोदोयअदाईआंगुलप्रमाणहैं
अथवा आपकाअंगुठाकाउदरप्रमाणहैं सोनेत्रमंडलमेंबोंगव
णवै ९४ रोगहैं सारंगधरकामतसं अरकैईकआचार्याकामतमं
अठतरि ७८ रोगसुंध्यहैं दृष्टिमेंतोंवारा १२ रोगहैं नेत्रमेंदोय ३
रोगहैं औरहैं नेत्रकीकालीजागामें ४ रोगहैं नेत्रकासुपेदभाग
में ११ रोगहैं नेत्रकामार्गमें १० रोगहैं नेत्रकीबांधेंफणानें २ रोगहैं
नेत्रकीसंधिमें ० रोगहैं सर्वनेत्रमें १३ रोगहैं अंमंमंजकेविषें ३
रोगहैं येचरयमेंलिख्याहैं श्रुतमें ७५ लिख्याहैं राक्ष
१० पित्तका १० फफका १३ सोदाका १६ मनिपातका २० जंजोका
हैं २ अंमंमें ७५ लिख्याहैं अथनेत्रांकारोगांकीउत्पत्तिलिख्यो
तावडानेंआदिलेरसरीरमेंगरमहुईदोय पाछेंनंदीतलावबावमें
पगैरेंजोजनतीमेंउरुषप्रवेशकर तीसं अरडारिकादोपियामं दिन
कोसोबासं पसेबंमंनेत्रांमंरजपडैतांमं नेत्रांमंधूवाजादामं बरि
कागंकिवासं पाणावमनकाकीरियामं गरमवमनकापावामं अंमं

कुलखण्डदयांकावासां अथवायमलमूत्रं यांकाशोकिवाकरि
 रिनुकाविपरीतपणांकरि क्लेशकाकरिवाकरि धणामैशुनकाकरि
 वाकरि आंसूकारोकिवाकरि सूक्ष्मवस्तुकादेषिवाकरि ईर्नंआदिने
 रजोवस्तुतींकाकरिवाकरि यांवस्तांसं नेत्रांका ७६रोगपैदाहोयछे
 अथप्रथमदृष्टिकारोगलिख्यते दृष्टिकहजैकहा तींकोलस
 ए नेत्रमंडलकैविषै कालीजागांमैंमसूरकीदालप्रमाण येकसा
 एअणोछे सोओमाणसौ पांचमहांभूतांसंउपज्योछे अरओआग्या
 सरीसोचमकैछे अरओअविनाशीजोतेजतत्सुरूपओसिद्धछे
 अरओईनेत्रगोलायेंचारिपटलकरिदेछे पटलकहिजैकांकांदाका
 ओतसिरीसीझिली तींकरिकै यासारीआंधिआछादितहोयरही
 छे अरवादृष्टिनिपटसीतलरूपछे ईनैबुद्धिबानदृष्टिकहैछे सो
 यादृष्टिजलकैअरलोहीकैआधारछे ईदृष्टिकै ४पटलछे प्रथमप
 टलतौतेजअरजलत्यांकोआअयछे दूसरोपटलमांसकेआअय
 छे तीसरोपटलमेदकेआअयछे तीमेंतेजजलमांसमेदअस्थि
 यांपांचकैआअयछे अथप्रथमपटलमेंहुवेजोरोगतीं-
 कोलक्षणलिख्यते प्रथमनेत्रकापटलकीदृष्टिमेंजोरोगरहैछे
 तींपुरषनैकदेकजबायसांगोपांगदीसेनहीं पहलापटलमेंदोष
 थोडोरहैछे अथदूसरापटलमेंहुवाजोरोगतींकोलक्षण
 लिख्यते जींकानेवस्तुदूसरापटलमेंआयोजोदोष तीर्नैमांषीमां
 षरकेस यांकासबूहकासबूहदीसेनहीं दूरिकानिकददिसौ निक
 रिकादूरिदीसै दृष्टिधमतिरहै अरघणांजलसंभीसुईकोछेइदी
 सेनहीं बूंददृष्टिहैसोषणीबिबलहोजाय २ अथतीसरापटल
 मेंहुवाजोदोषतींकोलक्षणलिख्यते तीर्नैउंचोदीसे अरनांचाकोदो

सेनहीं रूपकासमूहभादीसेनहीं जाणिजे वस्त्राडो आयगयो छे
 काननाकनेत्रये औरसादीसे दृष्टिमें दोषघणो आयरखो होय तो
 नीचरली वस्तु परदीसे ऊपरली वस्तु नीचे दीसे अरजो कानेबब
 पसवाडा में दोष होय तीन पसवाडा की वस्तु दीसे नही अरनंचके
 व्यासुं ओपरहता जो दोष तीन आकुल व्याकुल चकचौ धो दीसे अ
 रहृष्टि मध्यरहतो जो दोष तीन वडा को छोटी दीसे अरदृष्टिमें स्थित
 जो दोष तीन पसवाडा का येक का दोष दीषे दोय का तीन दीषे अर
 घणां होय त्यां की गिणती आवे नही इसादीषे ये लक्षण तीसरा पद
 का दोष का जाणिजे ३ अथ चतुर्थ पदल में हुबो जो दोष तीसरा
 लक्षण लिख्यते चौथा पदल में उपज्यो दोसती नैलौ किकमैतिमर
 कहें छे अरईने के ईक आचार्य ईवै धरुशास्त्र का जाणिवा बाला
 ई चौथा पदल का रोग नै लिंगनास कहें छे लिंगनास कहै जै कहा क
 नेत्रां की लजो मयी जो पूतली सोनीली का चसिरी सी हो जाय अरई
 में ये लक्षण होय क्यूं ई पदल में दोष घणो होय छे सूर्य चंद्रमा न
 क्षत्र आकाश बीजलिये निर्मल नेज छे सोभी आछा दीसे नही पं
 सारा ही भ्रमता ही दीषे सोई दोष नैतिमिर कहें छे अथ वाई नै न
 गनास कहें छे अरलोकी कमें ई नै न जलोक कहें छे ई ई क मोतीया
 विंद कहें छे ४ अथ और शास्त्र का मत सुई लिंगनास अर
 मोतिया विंद को लक्षण लिख्यते यो लिंगनास मोतिया विंद रां
 ग ५ प्रकार को छे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४
 नांहीको ५ परिम्लायनको ६ परिम्लायन नाम नांही संसृष्टि तहु
 वां जो पित्त तांको ६ अथ वायु कर्तन गनास को लक्षण लि
 जां के वायु को लिंगनास होय तनिं संपूर्ण वस्तु भ्रमनां दीषे अरमं

३९३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

वस्तुमत्तीनसीदीपै अरसर्ववस्तुमत्तीनसीदीपै अरसर्ववस्तु
 दिक्कानामवांकीदीपै तदिजाणिजेईकैवायकोलिंगनासछै १ अथ
 पित्तकालिंगनासकोलक्षणलिखते पित्तकोलिंगनासजीकै
 होय तीनेंसूर्य चंद्रमा नक्षत्र आग्याइंद्रकोधनुष्य बीजली येसा
 भ्रमतादीसै ओसर्ववस्तुमत्तीनसीदीपै तदिजाणिजेईकैपित्तको
 लिंगनासछै २ अथकफकालिंगनासकोलक्षणलि० जीके
 कफकोलिंगनासहोय जीनेजोदीपैसोचीकणोअरसुपेददीपै अ
 रवंमनुष्यनेत्रजलसंभ्रमाहीरहै ३ अथसन्निपातकालिंग
 नासकोलक्षणलि० जीकैसन्निपातकोलिंगनासहोय तीनेना
 नामकारकाआकारदीपै अरहीनअधिकअंगदीपै अरसारीवस्तु
 तेजरूपदीपै अरपाछैकह्यासोभीलक्षणहोय ४ अथलोहीसं
 उपज्योजोलिंगनासतीकोलक्षणलि० जीकेलोहीकोलिंगना
 सहोय तीनेंलालदीपै अरसुपेददीपै हत्याकाला पीला सारीहा
 वस्तुदीपै ५ अथपरिस्तायिनसूउपज्योजोलिंगनासती
 कोलक्षणलि० रक्तसंमूर्धितहुवोजोपित्ततीनेंपरिस्तायिनक
 हजै तीकरिउपज्योजोलिंगनासतीनेंदसंदिशापीलीदीपै जाणिजे
 सर्वत्रसूर्यहीउग्याछै अक्षाउगैरैसर्ववस्तुदग्धहुवाअग्निशि
 साहीदीपै ६ अथलिंगनासकोओरस्वरूपलि० वायको
 लिंगनासअरुणहोयपीलानेलायां अरनीलोहोय १ अरओसो
 हीपित्तकोहोय २ अरकफकोसुपेदहोय ३ अरसन्निपातको
 चिबेहोय ४ अरलोहीकोलालहोय ५ अथवायनेंआदिर
 र ६ प्रकारकोलिंगनासकह्योतीकानेनकामंमलजुद
 जुदस्वरूपलि० वायकोनेत्रमंमलअरुणहोय १ पित्तकोने

३९४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

मंडलनीलोहोयकांसीकावर्णशिरीसोहोय अरपीलोहोय २ अर
कफकोनेत्रमंमलद्यणोंचीकणोंहोय अरशंषसिरीसोहुंदकाकूल
सिरीसोपीलोहोय चंचलहोय वेंनेत्रमंडलमेंसुपेदबूंदहोय ३
अथसन्निपातकानेत्रमंडलकोलक्षणलि० ईनेत्रमंमल
मेंमूंगासरीसो अथवापंमकापत्रसिरीसोनेत्रमंमलहोय अरपा
छैलक्षणकत्याछेसोमीहोय ४ अथलोहीकानेत्रमंमंडलको
लक्षणलि० योनेत्रमंमललालहोय ५ परिम्लायिननेत्रमं
मलकोलक्षणलि० जीकासरीरमेंपित्तउष्ट्रहोवोहोयतीपुर
षकीदृष्टिपीलीहोय अरवेंनैसारीवस्तपीलीहीपीलीदीषै १ अथ
चाहुष्टपित्ततीसरापटलमेंजाय प्राप्तिहोयतीकास्वरूपलिप्यते
वेंपुरुषनैदिननैदीषैनहीं अररात्रिनैदीषैचंद्रमाकासीतलप
णांतें स्पृपित्तकोअल्पपणोंरात्रिमेंहोयजीसूं १ अथकफका
स्त्रिजीकीदृष्टिविदग्धहुईहोयतीकोलक्षणलि० जीकीदृ
ष्टिकफकरिबिदग्धहोयतीनेसर्वसुपेदहीदीसै योरोगप्रथमदि
तीयपटलमेंहोयछै २ अथरक्तांधनामरातिंयांकोलक्षण
लि० तीसरापटलमेंकफआवेंतदिनक्तांधहोयदिननैदीषैरात्रि
दीषैनहीं ईनैलौकिकमेंरातिंधोकहैछै १ अथधूमदर्शिसिरो
रोगकोलक्षणलि० शोकसेताजुरसेतीषेदसेतीसिरमेंताप
जाय प्राप्तिहोय तदिमलुथकीदृष्टिहैसोधूंवासेतीव्याप्तहोय
तदिईमनुष्यनैसारीवस्तधूंवांसीरीसीदीषै २ अथद्रुस्वजा
त्यरोगकोलक्षणलि० जोपुरषवमाकष्टसेतीभीवमीवस्तनै
देषै सोवावस्तदिननैछोदीहीदीषै अररात्रिमेंजथार्थदीषैतीं
नैह्रस्वजातिरोगकरिजै ३ अथनकुलांधरोगकोलक्षण

३९५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

लिख्यते जींपुरषकी दृष्टि तौ आछी तरै संधीषे अरवें दृष्टिमें दोष आ
यथाप्ति होय तदिवे नौ दिन नौ चित्र विचित्र दोषे ईने न कुलांध कहि
जे १ अथ गंभीरकारोग को लक्षण लिख्यते जींपुरष नैं सासनैले
तावें की दृष्टि मांहि वडि जाय अरनेत्र में पीड चालि जाय ईने गंभीर
नाम रोग कहि जे १ अथ विनाकारण ही लिगनाश होय तो
को लक्षण लिख्यते जीं की दृष्टि निर्मल छी सो विनाकारण ही का
ली होय जाय तीने विनाकारण लिगनाश कहि जे १ इति दृष्टि सो
गा ॥ अथ कालानेत्र मंभल में हुवा जो रोग त्याकानाम अ
रवां किसं थालि ॥ येचारि रोग ई कृष्ण मंभल में होय छै सत्रण
शुक्र १ अत्रण शुक्र २ अक्षिपा कात्यय ३ अजकोजात ४ अथ
सत्रण शुक्र को लक्षण लिख्यते नेत्र की कालि जाय गंभै पूत
लीरूपरी दोष आयो होय अरवें दोष करि माणस्यो दकि जाय अ
रवा बूंद नेत्र में गमि जाय अरवें मै सुई कासा चभका चालि जाय अ
रवें मै गरम गरम पाणी पडि बोकरे तीने सत्रण शुक्र कहि जे १
अथ सत्रण शुक्र को साध्य साध्य लक्षण लिख्यते वा बूंद दृष्टि
कै समीप होय न ही अरगा दीन ही होय अर ई संविपरीत लक्षण
होय सो असाध्य जाणि जे १ अथ अत्रण शुक्र को लक्षण लिख्यते
जीं की काली पूत लीका माणस्य उपरि शुक्र की बूंद आई होय अरवा
बूंद हाले चाले अरवा बूंद संपसरीसी चंद्रमा सरीसी कुंद का
फूल सरीसी होय अथ वा आकास सरीसी होय अथ वा दलास
रीसी होय ओ अत्रण शुक्र जाणि जे योनि परसाध्य छै १ अथ अ
त्रण शुक्र साध्य छै पणि ई की अवस्था भेद करि ई को कष्ट
साध्य लक्षण लिख्यते जीं कानेत्र को मांस विषरी जाय अरवा बूंद

३९६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

औंहीहोय अरवांसंभैंह ईहोय अरवागादीहोय अरवाइसरापद
लमेंहोय अरवाहूंओरलालहोय अरवाघदीनाकीहोय सोअत्र
एशुक्रसाध्यजाणिजै ईकाजतनकीजैनहीं १ अथईकोओरअ
साध्यलक्षणलि० जांकानेत्रमेंआंशुगमपडै अरनेत्रमेंकृणस्य
होय अरभाणस्यांरुपरीशुक्रकीबूंदसूंगसमानहोय अरतीतर
कीपावसरीसीहोय ओभीवणशुक्रअसाध्यजाणिजै १ अथअ
क्षिपाकात्ययनेत्ररोगकोलक्षणलिखते जांकानेत्रकीसुपे
दजगांसांसीसूजीजाय अरआंसूघणापडै अरउठेपीडघणीहो
य अरअनेत्रदोषांसंघविजाय ईनेअक्षिपाकात्ययरोगकहिजै
योयीअसाध्यडै १ अथअजकाजानेनेत्ररोगकोलक्षणलि
खते जांकीआंघिवकरीकीमांगदीसरीसीहोजाय अरवेंमेंपी
डचालै अरआंघीलालरहै अरलालहीजीमेंआंसूआवेजामाजा
डा ईनेअजकाजानेनेत्ररोगकहिजै १ येआरुद्रुणमंमलकारो
गछै अथनेत्रकाशुक्रलभागमेंउपज्याजोरोगत्यांकाना
मअरवांकीसंख्यालि० ईनेत्रकाशुक्रभागमेंग्यारारोगछै ११
प्रस्तार्यम १ शक्त्यार्यम २ रक्तार्यम ३ अधिमांसार्यम ४ स्नाघर्यम
५ शक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ सिराजाल ९ सिरापिडिका १० बा
लसग्रथित ११ येईग्याराहोकरकारिकेंसंस्थानेत्रकाशुक्रभागमें
होयछै अथप्रस्तार्यमनेत्ररोगकोलक्षणलि० ईनेत्रकाशु
क्रभागमेंगरमनेलीयां अरबडोअरकालोअरलालचिन्हहोय
तीनेप्रस्तार्यमनेत्ररोगकहिजै १ अथशुक्लार्यमनेत्ररोगको
लक्षणलिखते नेत्रकासुपेदभागमेंसुपेदहाअरकोमलसोव
धैतीनेशक्त्यार्यमनेत्ररोगकहिजै १ अथरक्तार्यमनेत्ररोग

३९७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

कोलक्षणांलिष्यते नेत्रकासुपेदभागमें यद्गुसरीसोकोमलजो
मांसवधैर्तीनें रक्तार्थमरोग कहिजै ३ अथ अधिमांसार्थमनेत्र
रोगकोलक्षणांलि० नेत्रकासुपेदभागमें चढोअरकोमल अरसु
एकालजासरीसोचिन्ह होय तीनें अधिमांसार्थमनेत्ररोग कहिजै ४
अथ स्नाय्वर्मनेत्ररोगकोलक्षणांलि० नेत्रकासुपेदभागमें क
रढोअरस्थिरचिन्ह होय तीनें स्नाय्वर्मनेत्ररोग कहिजै ५ अथ क्षु
क्तिनामनेत्ररोगतीकोलक्षणांलि० जीकानेत्रकाशुकूभागमें
कालीअरमांससरीसीबूंदघणी होय तीनचारितीनें शुक्तिनाम
नेत्ररोग कहिजै ६ अथ अर्जुनरोगकोलक्षणांलि० जीकानेत्र
काशुकूभागमें सुसकारुधिरसरीसीयेक बूंद होय तीनें अर्जुन
नामनेत्ररोग कहिजै ७ अथ पिष्टकनामनेत्ररोगतीकोलक्ष
णांलिष्यते जीकानेत्रकाशुकूभागमें वायकफकाकोषकरिमांस
ऊंचो होय आवै पीस्याचूनसरीसो तीनें पिष्टकनामनेत्ररोग कहि
जै ८ अथ सिराजालनेत्ररोगकोलक्षणांलि० जीकानेत्रका
सुपेदभागमें नसांकासमूह करिणअरपीली होय आवै जीनेसि
राजालनेत्ररोग कहिजै ९ अथ सिरापिडिकानामनेत्ररोगती
कोलक्षणांलि० जीकानेत्रकासुपेदभागमें सुपेदफुलस्यांनसांक
रिआग्रत होय तीनें सिरापिडिकानामरोग कहिजै १० अथ बला
सग्रथितनेत्ररोगकोलक्षणांलि० जीकानेत्रकासुपेदभागमें
कांसीसरीसोसुपेद अथवा कमलसरीसोवर्णअरकठोरअसौ
चिन्ह होय तीनें बलासग्रथितनेत्ररोग कहिजै ११ येनेत्रकाशुकू
भागका इग्यारोग छै ११ अथ नेत्रकामर्मस्थानमें २१ रोग
छै सो दोनूनेत्रांनैंदके नीचरलीअरउपरली पाषंडीत्यांमें येर

३९८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

हठै उत्संगपिडिका १ कुंभीका २ पोथकी ३ वर्त्मशर्करा ४ अशोवर्त्मा
 ५ शक्कार्श ६ अंजननामिका ७ घट्टलवर्त्मा ८ वर्त्मबंधक ९ क्लिष्ट
 वर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्यामवर्त्मा १२ प्रक्लिनवर्त्मा १३ अक्लिनव
 र्त्मा १४ वातहर्षवर्त्मा १५ वर्त्माबुद १६ आश्रयस्तिनिमेष १७ शोणिता
 र्श १८ लगाण १९ विसवर्त्मा २० कुंचन २१ अथ उत्संगपिडिका
 कोलक्षणालिष्यते नेत्रकीटकवावालीयां फणानामकोयां
 तांकेमां हि फणसी होय अरतींकोमाहिं हीं सूं दो होय बाफुणसी-
 लाल होय घणीउंची होय अरवालो हीं सूं उपजी होय अरबडी हो
 य अरजीमें बाजिचालै येजीमें लक्षण होय तांनें उत्संगपिडिका
 कहिजै १ अथ कुंभिकापिडिका कोलक्षणालिष्यते जींका
 नेत्रका अंतकामार्गमें कुंभीका बीजसरीसी फणसी होय अरवाफु
 णसी फूट बोकरै अरथवबोकरै अरवा सोई नैं लीयां होय तांनें
 कुंभिकानाम नेत्ररोग कहिजै २ अथवा पोथकीनाम नेत्ररो
 ग कोलक्षणालि० जींका कोया मां हिलाल सिरस्यं कै मानि फुण
 सी होय अरवा बहुत जरै अरवेंमें बाजिघणी आवै अरवेंमें पीडा
 होय ईनें पोथकीपिडिकानाम नेत्ररोग कहिजै ३ अथ वर्त्मश
 र्करापिडिकानाम नेत्ररोग कोलक्षणालि० जींका कोयामें स
 क्ष्म फुणसी घणी होय अरपरधरी होय अरभारी होय तांनें वर्त्मश
 र्करारोग कहिजै ४ अथ अशोवर्त्मापिडिकानाम नेत्ररोग को
 लक्षणालि० जींका कोया मां हि तेवरसी का कडीका बीजसरीसी
 फुणसी होय अरजीमें पीडकम होय अथवा फुणसीची कणी हो
 य अरकदोर होय वेंनें अशोवर्त्मा फुणसीको नेत्ररोग कहिजै ५
 अथ सुक्काशनेत्ररोग कोलक्षणालि० जींका नेत्रका कोयामें

बभावमात्रं कुरवरधराभयं करहोय तीने सुकार्शनामनेत्ररोग क
 हिजे ८ अथ अंजननामिका नेत्ररोगको लक्षणलि० जीका
 नेत्रका कोया मां हिं फुणस्यां होय अरदाहनेलीयां होय अरलाल हो
 य अरवें फुणस्यां कोमल होय अरवें फुणस्यां छोटी होय ज्यांमें पी
 डमंद होय तीने अंजननामिका नेत्ररोग कहिजे ७ अथ बहुल वर्त्मा
 र्त्मा फुणसी नेत्ररोगको लक्षणलि० जीका कोया मां हि च हूं औ
 र फुणस्यां होय एक वर्त्मा की घणी वानें बहुल वर्त्मा फुणसी नेत्र रो
 ग कहिजे ८ अथ वर्त्मा बंधकनाम नेत्ररोगको लक्षणलि०
 जीका नेत्रका कोयां में सो जो होय अरवें में थोड़ा खुजालि आवै अ
 र वें में थोड़ा पीडा होय अर सोई सूं कपूं नेत्र दकि जाय तीने वर्त्मा बंध
 कनाम नेत्ररोग कहिजे ९ अथ क्लिष्ट वर्त्मानाम नेत्ररोगको
 लक्षणलि० जीका नेत्रां का कोयां को मार्ग अकस्मात् लाल हो
 जाय अर जीमें मंद पीडा होय तीने क्लिष्ट वर्त्मानेत्ररोग कहिजे
 १० अथ वर्त्मा कर्दम नेत्ररोगको लक्षणलि० जीका नेत्र मां हि
 पित्तसंयुक्त लोही दग्ध होय कुपथ्यसू तीका आंघिगीड सूं आली
 घणी रहै तीने वर्त्मा कर्दम नाम रोग कहिजे ११ अथ श्याव वर्त्मा
 नाम नेत्ररोगको लक्षणलि० जीका नेत्रका कोयां का मार्ग मां हि
 अर बारें काली स्फोई होय अर वें सोई में पीडा होय अर वें में षांजि
 आवै अर गीड भी आवै तीने श्याव वर्त्मानेत्ररोग कहिजे १२ अथ
 प्रक्लिन्न वर्त्मानेत्ररोगको लक्षणलि० जीका नेत्रका कोयां के
 बारें सोई होय अर उठे पीडन ही होय अर गीड घणी आवै तीने प्र
 क्लिन्न वर्त्मानेत्र प्रक्लिन्न वर्त्मानेत्ररोग कहिजे १३ अथ अक्लिन्न
 वर्त्मानेत्ररोगको लक्षणलि० जीका आंघि धो वे ती न ही धावे ती

बुद्धेन हींभीची हीरहै तीने अक्लिन्न कर्माने त्ररोग कहिजै १४ अथवा
 तहतवर्त्माने त्ररोग को लक्षणलि० जीका पलक आली तरैमि
 चैनही अर बुली हीरहै तदि पीडरहै अथवा नहीरहै अथवा आं
 षिमिचीरहै ईने वातहतवर्त्माने त्ररोग कहिजै १५ अथवर्त्मा बुद्धि
 ने त्ररोग को लक्षणलि० जीकाने त्रका कोयां का मार्ग मां हिगांठि
 लांबा होय जीमें पीडनही होय अर गांठि लाल होय तीने वर्त्मा बुद्धि
 दने त्रकोरोग कहिजै १६ अथ अश्वस्तनि मेषने त्ररोग को ल
 क्षणलि० जीकाने त्रका कोयाने त्रमां हिपैठि जाय वाय करि कैवा
 फलीने चलावै ईने अश्वस्तनि मेषने त्ररोग कहिजै १७ अथ शो
 णितार्शने त्रकारोग को लक्षणलि० जीका कोयां कावां फली
 का मार्गमें फुलसीका कोमल अंकुर होय त्यांनै दूर करि वा वासे
 बांधै सोवै अंकुर बंधवो करै तीने शोणितार्शने त्ररोग कहिजै १८
 अथ लगणनामने त्ररोग को लक्षणलि० जीकाने त्रका को
 यां का मार्गमें गांठि बोर प्रमाण होय अर वां गांठि पकेनही अ
 र करडी होय अर वैमै पाजि आवै अरने त्रमै गीम आवै तीने ल
 गणने त्रकोरोग कहिजै १९ अथ विषवर्त्माने त्रकारोग को ल
 क्षणलि० जीकाने त्रका कोयां के घणा छिद्र पडि जाय अर कोयां ड
 परिसोजो चटि जाय ने त्रमां हि आंशू घणा आवै रहेनही तीने वि
 षवर्त्माने त्रकोरोग कहिजै २० अथ कुंचननामने त्रकारोग को
 लक्षणलि० वायपित्तकफ है सो जीकाने त्रका कोयां का मार्गने
 संकोच करै कोयाने ने त्रसूँ उघडवा देनही क्यूं भावस्तदेषवादे
 नहीं ईने कुंचननामने त्रकोरोग कहिजै २१ इति ने त्रका कोयां
 कोरोग० अथ ने त्रका कोयां फली का दोय रोग० पक्ष्मकोपा

४०१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

पक्षशांत २ अथपक्षकोपवांफणीकारोगकोलक्षणलि०
जांकाकोयांकीवांफणीजातीरहै अथवाकोयांमेंधसिजाय अथ
वावाफणीयांमेंषाजिघणीआवै योरोगवायकाकोपकरिजाशि
जै योरोगबहुतभयंकरछै ईमेंसोजोभीहोयछै योअसाध्यछै ३
अथपक्षशांतवांफणीकारोगकोलक्षणलि० नेत्रकाकोयां
कीवांफणीजातीरहै अरउठेषाजिआवै अरउठेबलतिरहै योपि
तकाकोपसंहोयछै ईनेपक्षशांतनामवांफणीकोरोगकहिजै २
अथनेत्रांकीसंधिमेंनव९ रोगछै त्यांकानामलिख्यते पूया
लस १ उपनाह २ पैतिकआव ३ कफआव ४ सन्निपातआव ५
रक्तआव ६ पर्वणीका ७ अलजी ८ जंतुयंथि ९ अथपूयाल
सनेत्रकीसंधिकारोगकोलक्षणलि० नेत्रकीमांहीलीपूत
लीकनेकोयांकाअंतमेंनोवासंधिछै सोवादूषणीआय अरप
किरिवासूजिजाय अरवैगीमराधिसरीसीजाडीजाडीघणीआ
वै ईनेपूयालसनामनेत्रकीसंधिकारोगकहिजै १ अथउपनाह
नामनेत्रकीसंधिकारोगकोलक्षणलि० नेत्रकीसंधिमेंव
डागांठिहोयअरओपकैनहीं अरवैमेंषाजिआवै अरवैमेंपीडन
हींहोय तीनेउपनाहनामनेत्रकीसंधिकारोगकहिजे २ अथपि
त्तिकआवनेत्रकीसंधिकारोगकोलक्षणलि० जांकानेत्रकी
संधिमेंजलकाआंसुंहलदसरीसापीलायणाआवै वेनेपैतिक
आवनेत्रकीसंधिकारोगकहिजै ३ अथकफआवनेत्रकीसंधि
कारोगकोलक्षणलि० जांकानेत्रकीसंधिमेंजलकाआंसुसुपे
दजाडाअरचीकशाआवै तीनेकफआवनेत्रकीसंधिकारोगक
हिजै ४ अथसन्निपातआवनेत्रकीसंधिकारोगकोल

क्षणालिष्यते जीकानेत्रकीसंधिमेंनासूरपडिजाय अरवेंमेंदुर्ग
 धिलियांराधिआवोकरै तीनेसन्निपातआवनेत्रकीसंधिकोरोग
 कहिजै ५ अथरक्तआवनेत्रकीसंधिकारोगकोलक्षणलि
 जीकानेत्रकीसंधिमेंगरमलोहीघणोनासरै तीनेरक्तआवनेत्र
 कीसंधिकोरोगकहजै ६ अथपर्वणीकानेत्रकीसंधिकारो
 गकोलक्षणलि जीकानेत्रकीसंधितांवाकाचर्णसरीसीलाल
 होय अरमिहींहोय अरपकिजाय ईनेपर्वणीकानेत्रकीसंधिको
 रोगकहजै ७ अथअलजीनामनेत्रकीसंधिकारोगकोल
 क्षणलि जीकानेत्रकीसंधितांवासरीसीलालहोय अरमिहीं
 अरबलतनेलीयां अरपकीसोनासरीसीहोय तीनेअलजीनाम
 नेत्रकीसंधिकोरोगकहजै ८ अथजंतुअंथिनामनेत्रकीसंधि
 कारोगकोलक्षणलि जीकानेत्रकीसंधिकीगांठीमेंलुमिप
 डिजाय अरवेंसूवांफणीजातीरहैं अरउंढेखुजालिआवै अर
 वेंकानेत्रकीसंधिमेंअनेकमिहींमार्गहोजाय अरनेत्रमेंपीदाय
 णीहोय तीनेजंतुअंथिनामनेत्रकीसंधिकोरोगकहजै ९ अथ
 नेत्रकाऔरसमस्तरोगत्यांकीसंख्याअरनामलि वायको
 अभिष्यंद १ पित्तकोअभिष्यंद २ कफकोअभिष्यंद ३ रक्तकोअ
 भिष्यंद ४ वायकोअधिमंथ ५ पित्तकोअधिमंथ ६ कफकोअधि
 मंथ ७ रक्तकोअधिमंथ ८ सशोथपाक ९ अशोथपाक १० ह
 ताधिमंथ ११ वातपर्याय १२ शुक्कालिपात १३ अन्नतोवात १४
 अम्लाध्युपित १५ शिरोत्पात १६ शिरादुर्ब १७ अथनेत्रकीसमता
 १ अरनेत्रकीनिरामता २ अथनेत्रकावायकाअभिष्यंद ईने
 लौकिकमेंआंखदूषणीकहै ३ तीकोलक्षणलि जीकाआंख

में पीड़ घणी होय जींकारोमांच होय आवै अर आंषिमें शुजालिआ
 वै नेत्र कर डा हो जाय अर मांथो बलै अर जीं काने त्र का आंसूं सीत
 ल पडै तदि ई नै वाता भीषंद नेत्र को रोग कहि जै १ अथ पित्त का
 अभिष्यंद गर मांसूं आंषि दूषणी आई तीं को लक्षण लि०
 जीं काने त्र में दाह घणी होय अर आंषि पकि जाय अर नेत्रां नै सीत
 ल ताई सुहावै अर जीं काने त्र में धूं वो सो नीसरै अर जीं काने त्र में
 गरम आंसूं नीसरै अर नेत्र पीला होय तीं नै पित्त को अभिष्यंद ने
 त्र को रोग कह जै २ अथ कफ का अभिष्यंद को लक्षण लिख्य
 जीं की आंषि नै गरम सुहावै अर नेत्र सीत ल घणार है अर जाडो जा
 डो बहु तफरै ई नै कफ को अभिष्यंद नेत्र को रोग कहि जै ३ अथ
 रक्ताभिष्यंद नेत्र रोग को लक्षण लि० जीं काने त्र लाल होय अ
 र आंसूं ताबा का वर्ण सिरी सा पडै अर नेत्रां में दाह होय अर नेत्रां
 नै सीत ल ताई सुहावै अर गरम आंसूं पडै तदि जाणि नेत्रो ही
 का अभिष्यंद नेत्र को रोग छै ४ अथ वाय का अधिमंथ ई नै
 लौकिक में घणी आंषि दूषणी आई कहै जै तीं को लक्षण लि०
 आंषि दूषणी आवै तीं में कुपथ्य करै तदि आंषि में घब का घण
 चालै जाणि जे आंषि फूटि जासि अर आंषि में इसा रूला चालै जा
 णि जे आंषि में जेर एणो यालि आंषि नै मथै छै अथो शिर अधर हो जा
 य मांथो बल उरै जीं में आंसूं सीत ल आवै तदि जाणि जे ई वैषाय
 को अधिमंथ नेत्र को रोग छै ५ अथ पित्त का अधिमंथ को लक्ष
 ण लि० जीं की आंषि दूषणी आई होय अर आंगर म वस्त षट् आई
 उगेरै षाय कुपथ्य करै तदि वै की आंषि में रूला घणा चालै जाणि
 जे आंषि घब कांसूं फूटि जासो अर आंषि में दाह होय अर पकि जा

४०४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

य अरनेत्रांनंसीतलताईरुहवै आंसूपीलानीसरै नेत्रपीलाहोय
तदिजाणिजैपित्तकाअधिमंथकोईकैनेत्रकोरोगछै ६ अथकफ
काअधिमंथकोलक्षणलि० जीकीआंषमेंरूखाधराचालैजा
णिजेआंषिवेठिजासी अरवेनेंगरमसुहावै आंषांकैसोजोहोय
अरषाजीआवै अरजाडोजाडोबहुतसरै ईनेकफकोअधिमंथ
नेत्रकोरोगकहिजै ७ अथरक्तकाअधिमंथकोलक्षणलि०
जीकीआंषिदूषणीआईहोय अरजीमेंलोहीविगडैईसाकुपथ्य
करै जीकीआंषिमेंरूखाधराचालैजाणीजै आंषिवेठिजासी अ
रवेकीआंषिमेंतांवाकावर्णसरीसागरमआंसूपडै अरलालआ
पिहोय अरदाहहोय पकिजाय तदिजाणिजैरक्तकोअधिमंथका
नेत्रकोरोगछै ८ कफकोअधिमंथसात ७ दिनमें नेत्रनेंफोडै जो
हकोअधिमंथ ५ दिनमें नेत्रनेंफोडै वायकोअधिमंथ ६ दिनमें
नेत्रनेंफोडै पित्तकोअधिमंथतत्कालनेत्रनेंफोडै अथससो
थपाकनेत्ररोगकोलक्षणलि० जीकानेत्रांमैंआंसूआवै अ
रषाजिआवै बैकानेत्रपक्यागूलरिकाफलसरीसापकिजाय अ
रनेत्रांडपरिसोजोहोजाय अरजीकानेत्रलालहोय तांनंससोय
पाकनेत्ररोगकहिजै ९ अथअसोथपाकनेत्ररोगकोलक्षण
लि० जीकानेत्रांडपरिसोजोहोयनहीं अरषाजिआवै अरपका
गूरिकाफलसरीषापकिजाय अरनेत्रलालहोय तांनेअसोथपा
कनेत्ररोगकहिजै १० अथहनाधिमंथनेत्ररोगकोलक्षणलि०
जीकानेत्रसूफिवासूंवेठिरहै अरजांमेंपीडघणीहोय जैसैकमल
सूफिजायइसानेत्रहोयजाय तांनेहनाधिमंथनेत्रकोरोगकहिजै
११ अथवातपर्यायनेत्ररोगकोलक्षणलि० जीकायवांमैं

४०५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

अरनेत्रांमेंवारंवारपीडघणीचाले तीनैवातपर्यायनेत्ररोगकहिजे

१२ अथसुकाक्षिपाकनेत्रकारोगकोलक्षणलि० जीकानेत्र

मुंदिजायअरबले अरलालहोयजाय अरआछीतरैसूजेनहीं अ

रलूषाहोजायबुसारा तीनैसुकाक्षिपाकनेत्रकोरोगकहिजे १३

अथअन्यतोवातनेत्ररोगकोलक्षणलि० जीकाषांधीशिरदा

दिकानभवारंआंधियांमेंवायकीपीडघणीचाले तीनैअन्यतोवा

तनेत्ररोगकहिजे १४ अथअम्लाध्युषितनेत्ररोगकोलक्षणलि०

जीकानेत्रसाराकालाअरलालहोजाय अरपकिजाय अरवेमेंसो

जानैलैयांदाहहोय अरनेत्रांमेंपाणीआवे तीनैअम्लाध्युषितने

त्ररोगकहिजे १५ अथसिरोत्पातईनेत्रांकेकमेंसबलवायक

हैछैतीकोलक्षणलि० जीकीआंध्यांमेंपीडहोय अथवानहींहो

य अरवेकीआंध्यांकीनसांताबासरीसीलालहोय चहुंओर ईने

सिरोत्पातसबलवायनेत्रकोनेत्रकोरोगकहिजे १६ अथसिराह

र्षनेत्रकारोगकोलक्षणलि० जोपुरबध्यज्ञानथकीईसबल

वायकोजतननहींकरै तींकीआंधिमेंआंसूंवारवारबहोतपडिबो

हीकरै अरवानेत्रांसंखूंभीदीसैनहीं ईनेसिराहर्षनेत्ररोगकहि

जे १७ अथनेत्रांकोरोगगद्योनहींतीकोलक्षणलि० नेत्रमें

पीडरहै अरवेमेंलालईरहै अरवेमेंषाजिरहै अरवेमेंसूलभी

रहै तादजाणिजेईकानेत्रमेंरोगछैरोगगद्योनहीं १८ अथनेत्र

कोरोगजातौरह्योतीकोलक्षणलि० नेत्रमेंक्यूंभीपीडनहीं

रहै अरषाजिक्यूंभीआवेनहीं अरवेकैसोजोहोयनहीं अरआं

संलगैरै वेमेंक्यूंभीआवेनहीं अरवानेत्रांकोनिपटआछेओवर्णहो

य अरभिहांभीसर्ववस्तुजथार्थदीषे तींकोनेत्रकोरोगगद्योजाणि

४०६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तैरंग १८

जै २ यापरिक्षा अरनेत्ररोगवालाकै अतनीवस्त करिजेनहीं सुरमां
उगैरै काजलयालिजेनहीं घणों घृतषुवाजेनहीं अरकसायलीषदा
ईउगैरैकुपथ्यकराजेनहीं गरिष्ठभोजनकराजेनहीं स्नानकराजेन
हां पानउगैरैगरमवस्तषुवाजेनहीं जितैनेत्रांकै आरामहोयजितै
इतिनेत्रांकासमस्त रोगांकी उत्पत्तिलक्षणसंपूर्ण अथ
समस्तनेत्ररोगांकाजतनलि० नेत्रांकारोगवालाभैं लंघनअर
लेप अरस्वेदकर्म अरसिरकीनसकीसीर छुमावो अरआभ्योत
नकर्मकरिवो अरईनेत्रादिलेर औरजतनत्यां करिनेत्रांकाविकारस
कजायछै अथआंधिदूषणीआई होयतीकोजतनलि०
जोंकीआंधिदूषणीआई होयतीकौदिन ३ ताईतौअंजननादिककीजै
नहां ओनेत्रकादूषणापणांकू काचोजाणि पाछैनेत्रकोदूषणापणी
चोथीदिनपकजाय तदिनेत्रमेंअंजनऔषदिकरैतौओनेत्रवेगो
आछैहोय १ हेमंतरितुअरशरीरितुमेंतौअंजनमध्यान्हमेंकरि
जै अरशीघ्ररितुअरशरदरितुमेंमध्याह्नपहलीअंजनकीजै अर
वर्षाकितुमेंबादलनहींहोयतदिअंजनकीजै अरवसंतरितुमेंचा
हैजदिहीअंजनकीजै जोसुरमाउगैरेअंजनकरैतौईकैनेत्ररोगक
देहीहोयनहीं प्रथमतोवाईआंधिआंजिजै पाछैजीवणीआंधिआं
जिजैयोसंप्रदायछै अथआंधिदूषणीकोलेपलि० हरडैकी
छालि सींधोल्लण सोनागेरू रसोत येबराबरिले त्यानेजकसं
मिहांवांढि नेत्रांरपरिलेपकरैतौसर्वनेत्रकारोगजाय १ अथईस
रोलेपलिष्यते लोहकापात्रमेंनांबूकोरसनांधि पाछैचेरसनैंकू
येकजामोकरै पाछैनेत्रउपरिलगावैतौ नेत्रदूषताआछाहोय
१ अथनेत्रकादूषिवानेंतत्कालदूरिकरैमोलेपलि० अफीम
माता १

फुलाईफिटकडीमासो १ लोदमासो १ यानेंनींबूकारसमेंबांदि यानें
 क्यूंलोहकीकडछीमेंगरमकरि पाछेवेंकोनेबांउपरिलेपकरैतौ ने
 वतत्कालदूषतारहै ३ अथनेत्रकाआँख्योहोवाकोओरलेप
 महलोदी गेरू सींधोखण धरुहलद रसोत येबराबरले लानेंज
 लसूंमिहींबांदि नेत्रउपरैलेपकरैतौ नेत्रकादूषिवाकासर्वरोगजा
 य ४ अथआँषदूषणीकाआँख्याहोवाकीपोदलीलि ० पय
 लीलोदमासो १ फुलाईफिटकडीमासो १ रसोतमासो १ महलोदी
 मासो १ यानेंमिहींबांदि गवारकापाठाकारसमें अथवापोस्तका
 पाणीमें अथवाजलमेंमासोयेक १ भरकीपोदली करि दूषतानेचकै
 ऊपरिवारवारफरैतौ नेत्रआँख्योहोय ५ अथनेत्रमेंवायकरि
 सुंलचालैतौ होयतीकाआँख्योहोवाकोसेकलि ० पयणी
 लोदनेंमिहींबांदिबेंकपडासूंछाणि वेंनेघृतमेंभूषे पाछेबेनेंग
 रमपाणीसूंसेकैतौनेत्रआँख्याहोय ६ अथनेत्ररोगनेंआँखा
 करिवाकैचास्तेइतरैअननांजतनकरैतौबैद्यठगाबेनहीं
 ईसंप्रदायसूंसोजतनसारंगधरवागभटादिकांकायतसूं
 लि ० सेक १ आँख्योतनकर्म २ पींडाबांधणी ३ बिडालकर्मनामआं
 ख्यांउपरलेपकरवो ४ तर्पणनामनेत्रमांहिधूतरसादिकयालणा
 ५ पुटपाक ६ अंजन ७ शस्त्रकर्म ८ ईप्रकारनेत्ररोगकाजतनक
 राजे अरंडकापांन ब्रकल जडयानेंऔदाय यांकोजलकरि ईज
 लनेंबकरीकादूधमेंऔदायै योजलबलिजायदूधआयिरहै तदि
 वेंदूधनेंक्यूंगरमकरिआँखिउपरितरडोदेवेसौ १०० बाररोलेजि
 तेतौवायकादूषिवाकिआँखिआँहीहोय ७ अथवा दूधमेंक्यूंसां
 धोखणनांषिगरमकरिसुहावतौइहीतरैआँखिउपरीतरडोदेतौ-

४०८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

वायकीआंषिआछीहोय ८ अथवा हलद राकहलद सांधोल्ला यां
मेंदूधपकाय ईदूधकोआंषिउपरितरडोदेतौआंषिआछीहोय ९
अथगरमीसूआंषिदूषणीआईहोयतींकोसेकलि १० पगणी
लोद महलोठी यांनैमिहीवांरिघृतमेंसेकि पाछैबकरीकादूधमेंयां
नैपकाये पाछैईदूधकोआंषिकैतरडोदेतौ गरमीकादूधवाकीआं
षिआछीहोय १० अरलोहीकादुष्टपणांसूआंषिदूषेतींकोपाय
हीजतनछै ११ अथवा त्रिफला लोद महलोठी मिश्री नागरमोथो
यांनैसीतलजलसंमिहीवांरि ईकोनेबकैतरडोदेतौलोहीसूदूषती
आंषिआछीहोय १२ अथआभ्योतनकीविधिलि ० आभ्योत
नकर्मसातिनेनहांकीजै आंषिउघाडीराषे तीमेंआठ ८ बूदओष
धांकारसकीनांषिजै सीतकालमेंगरमनांषिजै उष्णकालमेंसीत
सनांषिजै वायकीआंषिदूषेतींतीपीओषदिनांषिजै कफकीआंषिदू
षेती तीपी लूणी अरउन्हीओषदिकोरसनांषिजै १३ अथवायसू
आंषिदूषेतींकोलेपलि ० नांबकापानांकोरसपाणीयालिफाटै
तींमेंलोदनेवांरिगरमकरै पाछैवैकोलेपकरैआंषिउपरितौ वाय
कीरक्तपित्तसूदूषतीआंषिआछीहोय १४ अथरक्तपित्तअर
वायसूआंषिदूषेतींकोजतनलि ० नेचनेंउयाडिस्त्रीकादूधका
टोपा ८ नांषेतौगरमीकीलोहीकादूषतीआंषिआछीहोय १५ अ
थवायसूआंषिमेंरूलाचालै अरजतनकसां आरामनहींहोयतीं
काललाटकीनसकी शीरकोकमूलोहीकटाजै अथवाभवांराउपर
अहदेतौनेत्रकारूलाआछ्याहोय १६ अथवा सहजणांकापांजांकी
पींटी अथवानांबकापानांकीपींटी नेत्रउपरिवांधेतौ कफकानेत्र
रूडाजाय १७ अथनेत्रमेंगरमीकारूलाचालैतींकोजतन

लिप्यते आंवलानेपाणीसूंवांरिवेंकीपींडीबांधे अथवा बकाय
 एकापानांकीपींडीबांधेतौ नेत्रकागरमीकरूलाजाय १७ अथवा
 त्रिफला लोद यानेंकांजीकापाणीमेंवांरि पाछेयानेंघृतमेंतले यां
 कीपींडीबांधेतौ गरमकाअरकफकरूलाजाय १८ अथनेत्रमें
 रूलाअरसोईषाजिहोयतीकोजतनलि० सूंरि नींबकापान
 ईमेंक्यूसंधोलानांषि यानेंमिहांवांरि ईकीपींडीनेत्रकोबांधेतौ
 नेत्रकरूलासोईषाजियेसर्वजाय १९ अथनेत्रकीगुहांजणी
 कोजतनलि० नेत्रकीगुहांजणीनेघृतसूंसेकै पाछेवेंगुहांजणी
 नेंशस्त्रसूंफाडै वेंकपरिमेणसिल हरताल तगर संधोलए येब
 राबरिले यानेसहतसूंमिहांवांरि ईकोलेपकरेतौगुहांजणीजा
 य २० अथनेत्ररोगवांस्तेतरपणकीविधिलि० जीजायगांप
 वनचालेनहींतहांसूंथोसुवाणिजै पाछेवेंनेत्रउपरी षोण्डदाई
 उडदांकोचूनमिहांपीसी वेंनेपाणीसूंओसणि वेंकीनेत्रांकैवाडि-
 कीजै अंगुलदोयरकी पाछेवेंमेंघृतक्यूसगरमकरिसुहावतौ अथ
 वासौ १०० वारकोधोयो अथवा दूधईमेंराषैजितै १०० वारकीगि
 एतीमिलोतितनैराषेतौनेत्रकारोगवाकांपणो वांफणीजातीरहो
 होयसौ आंषिआलिखतरेंउगडैनहींसोतिमीरफूलो मथवाय रूला
 येसारारोगईतरपणसूंजायछै योतर्पणाबादलामेंउष्णकाल
 मेंचिंतामेंभ्रममेंनहींकरजै २१ इतितर्पणविधिः अथने
 त्रंजनलिप्यते शंषकीनाभि वहेडाकीसीजी हरडैकीसीगीमें
 एसिल पापलि मिरचि कूठ बच येबराबरिलै त्यानेंबकरीका
 दूधसूंमिहांवांरि अंजनकरेतौ फूलो तिमिर नेत्रमें मांस्कीदृष्टि
 नेत्रमेंकाचआयोहोयजीनें पटलनैरातिंधानै औरनेत्रांकारोगनै

४१० अमृतसागर तत्र प्रतापसागर तरंग १८

योअंजनद्विरकरैछै २२ इतिचंद्रोदयगुटिकाः अथलेपनी
गुटिकालि० कणगचकाबीजानेंमिहांवांदिवांकैकेसुलांकारसका
घणीपुटदे पाछैयांकिगोलीकरि पाछैईगोलीनेंपाणीसूधसिअंज
नकरैतौफूलानेंआदिलेरनेत्रकासर्वरोगजाय २३ अथदंतवर्ति
लिथ्यते सूरकोदांत ऊरुकोदांत गरुकोदांत घोडाकोदांत गधा
कोदांत संषकीनाभि अवीधमोती समुद्रकाप्राग येसाराबराब
रिले यांनैमिहांवांदिवांकोअंजनकरैतौ सर्वप्रकारकाफूलजाय
२४ अथवा कमलगट्टा सहजणांकाबीज नागकेसरीयांनैमिहां
वांदि अंजनकरैतौ नींदआवैनहीं २५ इतिनींदद्विरहोवाको
अंजन० अथरोपणीगुटिकालि० तिलांकाफूल ८० पीपलि
काबीज ६० चंचेलाकाफूल ५० मिरचि १६ यांनैमिहांवांदि गोली
करिरावै पाछैगोलीनेंपाणीमेंघसिईकोअंजनकरैतौ तिमिरअ
र्जुनरोगफुलौमांसवृद्धिनेंआदिलेरसर्वरोगजाय २६ अथस्नेह
नीगुटिका रसोत दोन्यूंहलद चंचेलाकाफूल अथवापांन नींब-
कापांन यांनैमिहांवांदि गोवरकारससूअंजनकरैतौरातिथोजाय
२७ अथदुतीयस्नेहनीगुटिकालि० आंवलाकाबीज यहडाका
बीज हरडैकीबीज यांनैमिहांवांदि यांकोअंजनकरैतौ नेत्रकापा
णीनें अरवातरक्तारोगनें योअंजनद्विरकरैछै २८ अथवा नीलो
शूथो सौनामुषा सांधोलूण मिथी संषकीनाभि मैरासिल गेरू स
मुद्रकाप्राग कालीमिरचि येबराबरिले यांनैमिहांवांदि सहतसंअं
जनकरैतौ तिमिरनें नेत्रमेंकाचआयोहोयतीनें फूलानेंयोअंजन
द्विरकरै २९ अथफूलाकाद्विरहोवाकोअंजन० चीणियांकप्र
नैवडकाहूधसेतीअंजनकरैतौ दोयमहीनाकोफूलोजाय ३०

अथ नींद का दूरि होवा को अंजन० दोप कालीमिरचि मिहीं बांदि यो
डाकी लालसू अथ वा सहतसू अंजन करैतौ नींद जातिर है ३१ अथ
तंद्रा का दूरि होवा को अंजन० मूंगो कालीमिरचि कुटकी बच्चा
सींधो लूण ये बराबरिले यांने वाखडी का मूतसू घसि ईको अंजन
करैतौ तंद्रा जाय ३२ अथ रसांजन गुटिका रसोत राल चंवे
लीका फूल मेलसिल समुद्र प्राग सींधो लूण गेरू कालीमिरचि
ये बराबरिले यांने मिहीं बांदि सहतमें अंजन करैतौ नेत्र की पाजि
ने बांफली जातिरहि होय यांने यो आछी करै ३३ अथ मोतीया
विंद का दूरि होवा को अंजन० गिल वै कोर सदं कथा सहत भा
सो१ सींधो लूण मासो१ यां सारांने ये कठा करि मिहीं बांदि अंज
न करैतौ मोतीया विंद तिमिर धूंधि काचने आदिलेर सर्व रोग जा
य ३४ अथ वा साटी की जडने स्त्री का दूधसू घसि अंजन करैतौ
नेत्रां की पाजि जाय साटी की जडने सहतसू घसि अंजन करैतौ
नेत्रां को पाणी पडतोर है साटी की जडने घृतसूरगडि अंजन करैतौ
फूलो जाय साटी की जडने तेलसू घसि अंजन करैतौ तिमिर जाय
साटी की जडने कांजीसू घसि अंजन करैतौ राति धोजाय ३५ अ
थ नेत्रांमें पाणी पडैतौ का दूरि होवा को अंजन० बौल का पां
नां को काटो करि ती कोर सकाटै पाछै तीर सनें लाशि ओरुंगाटो
करै पाछै ईमें सहत मिलाय ईको अंजन करैतौ नेत्रां को पाणी पड
तोर है ३६ अथ वा निरमली का फूलनें पाणीमें घसि ईको अंजन
करैतौ नेत्रां को पाणी पडतोर है ३७ अथ नेत्रां का निरमल क
रि वा को अंजन० निरमली का फूलनें सहतमें घसि ईमें क्यूंकू
र मिलाय अंजन करैतौ नेत्र निरमल होय ३८ अथ जी का नेत्र

में मोतियाविंद का चउगैरै आयसूँ न हीं तीं का आछ्या हो-
 बां को अंजन लि० काला सांप का मांस को घृत अर शंषकी नाभि
 अर नीर मलीयां नें मिहीं वांटे नेवां में अंजन करै तो मोतीयां विंद
 गैरै रोग जाय अर ई नें सूँ ३९ अथवा सुरगां का अंडा का ल्यौं तमें
 एसिल काच शंषकी नाभि चंदन सींधोल ए येसर्व बराबर ले
 यां नें मिहीं वांटे अंजन करै तो मोतीयां विंद फूलानें आदि लेर नेत्र
 का रोग जाय ४० अथ नेत्र का सर्व रोग दूरि होषा को अंजन०
 काली मिरचि मासा २ पीपलि मासा २ समुद्र भाग मासा २ सींधोल
 ए मासा २ सुरमो मासा २ यां नें निपट में मिहीं वांटे चिबान क्षत्र के
 दिन ई को अंजन करै तो फूलोषाजिका चनेत्र में आयो होय तीउ
 गैरै नेत्र का सर्व रोग जाय ४१ अथ नेत्र का सर्व रोग जाबान्यो
 अंजन लि० पपस्थानें मिहीं वांटे पाछे वें नें जल में म बोय दे पाछे
 वें को उपर लोपाणी ले तो जाय ती नें जु दोरा धे बार बार को पाणी अ
 र नीचैर त्यो जो पपस्था को चूर्ण ती नें ले न हीं अर ओषपस्था को पा
 णी छे सो जु दापात्र में सुकाय दे तीं की पापडी करि ले पाछे वें पाप
 डी के त्रिफलाकार स की पुट ३ दे पाछे ई पापडी को दश उं हिसो ई में
 क पूर भिलावै पाछे ई नें ओरूं मिहीं वांटे पाछे ई नें अंजन करै तो-
 नेत्रां का सर्व रोग जाय ४२ अथ नेत्रां का सर्व रोग हर भा को ओ
 र अंजन लि० सुरमानें अघिसंगर म करि त्रिफलांकार स में बार
 ७ म बोवै पाछे स्त्री का दूध में चैं सीत रें बार ७ म बोवै पाछे गाय-
 का मूत में दू सीत रें बार बार ता तो ता तो करि ई सुरमानें म बोवै पाछे
 ओरूं स्त्री का दूध में बार ५ म बोवै पाछे ई नें वांटे ई को अंजन करै
 तो नेत्रां का सर्व रोग जाय ४३ अथ नेत्र की दृष्टि करि भा वाली

४१३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १०

सलाकालिष्यते सीसानैअग्निनैंगालिगालि त्रिफलांकारसमैवा
रसोडबोवै पाछैइसीहीतरैजलभांगराकारसमैवार ५० मबोवै पा
छैइसीहीतरैसंठिकारसमैवार २५ मबोवै पाछैइसीहीतरैधृतमैवा
र ५० मबोवै पाछैइसीहीगोमूतमैवार २५ मबोवै पाछैसहतमैवार
२५ मबोवै पाछैबकरीकादूधमैवार २५ मबोवै पाछैईसीसाकीस
लाकाकरै पाछैईसलाफानैनेत्रमैफेरैतौ सर्वप्रकारकानेत्रकारो
गजाय ४४ अथनयनामृतअंजनलि० सोध्यासीसानैंगालि
वै बराबरवैमैपारोघालिदीजै पाछैपाराकीबराबरवैमैसुर
प्रोघालै अरयांसारंकोदशबोहिसोईमैभागसेनीकपूरनांभै पा
छैयांसारंनैमिहींवांढिईकोअंजनकरैतौनेत्रकासर्वरोगजाय
४५ अथसर्पउगैरैकाजहरकादूरिकारिवाकोअंजनलि
जमालगोटाकीमांहिलीमींजीलीजैतौकैनीबूकारसकीपुट २१
दीजै पाछैईकागोलीकीजै पाछैईगोलीनैमनुष्यकीलालसंघ
सिनेत्रमैअंजनकरैतौ सर्पउगैरैकाजहरदूरिहोय ओआदमी
मूबोभाजीवै ४६ येसाराअंजनसारंगधरमैलि० अथ
आषिदूषतीहोयतीकाआछ्योहोवाकोथीहजुरकोयता
योनुकसोलि० अत्तारकीदवा यहिजांगीहरइ येदोन्युंओष
दिपाणीमेंघसिआंथाकैचोगडदाले पकरैतौ वायपित्तकफयां
तीन्युंआजारांमैकोईधिकारसूं आषिदूषणीआईहोयतौवाआं
षिकैशीघ्रआरामहोय योनुकसोअंजमायोहुकोछै अथवा वा
अटकामतसूंमोतियांविंदकोलक्षणलि० कच्चाभोतियां
विंदकोजालोसलाकाकासितारिजेनहीं पक्काभोतियांविंदको
जालोउतारिजै अथपक्काभोतियांविंदकोलक्षणलिष्यते

४१४ . अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

माणस्याउपरिदहांसशिसोमहासरिसोखंदआयजाय अरवेंनेंखूं
भीदीसेनहीं अरवेंनेत्रमेंपीडादिकसूंभीहोयनहीं तीनेत्रकोस
लाकाकरि जालोउतारिजें अरइतनाआदमीकानेत्रकोजालोउता
रिजेंनहीं पीनसकारोगवालाको पासीवालाको अजीर्णवालाको
मरपस्यालको वमनकस्योहोयजीको माथांकारोगवालाको अरका
नमेंपीडचाले नेत्रमेंसूलचालैतीको इतनांआदम्यांकोनेत्रकोजा
लोउतारिजेंनहीं अरसांघणकार्तिक चैत्र यांमहीनांमैजालोउता
रिजेंनहीं अरसाधारणकालहोय तदिजुलाबदेशरारनेंशुद्धक
रिभोजनकरि आछ्याभिर्मलस्थानमेंबैठाय पवनादिकजैदेनहीं
होयतैवैमध्यान्हपहली आंध्याकारोगमेंप्रवीणअेसोवैद्यआथां
कारोगमेंदूरिकरिवालो अेसाकनैजालोलिवावै ओवैद्यहैसोवेंने
त्रकारोगनेंपालथीकरिवेठावै वेंरोगीकैपीछैस्याणाआदमीचतु
रनेंवेठावैंओआदमीदोन्यूंहाथांसूंरोगीनेंपकडै वेंनेंहालवादेनहीं
ईसीतरैवेंनेंवेठावैं पाछैवेंकीआंधिमैंओवैद्यसलाकाघालै निपट
चतुराईसूं वेंकीआंधिमैंसलाकाफेरनेत्रकाप्रांतभागमेंजालानेंफो
डिसारानेत्रकोजालोदूरिकरै पाछैवेंजालामाहिसूंवेंमाणस्याउपर
लीवाधिकारकीबूंदटहपडै तदिईमलुप्यनेंसर्वचस्तजथार्थदीधै
अरसलाकाफेस्यांपहली नेत्रनेंसूंटांकीवाफसंफूकदेपसेबयुक्तक
रिले अरवैद्यआपकाअंगूठासूंवेंरोगीकानेचमसलिनैत्रकोमल
येकठोकरिलै पाछैसलाकासूंजालोले अरवैद्यभीआपकोहाथओ
रतरैहलावेनहीं ईंधिसूंनेत्रकोजालोले पाछैरोगीकीघणीघातर
जमाकरिवेंनेंसुझायदे पाछैवेंरोगीकीआंधिउपरघृतकाफोहावांधै
अरवेंरोगीनेंसुधोसुवावैपवनचिलकाउगेरैआवादेनहीं ईसीजाय

गांजुवाणो अरवेंरोगीकोसिरउगैरैसारोसरीरहलावादेनहीं अरवें
रोगीनेंछांक पास मकार थूकबो घणपाणीपीबो दांतण स्थान पे
दउगैरैकर्मकरिवादेनहीं अरवेंनेंभ्रौधोसोवादेनहीं निपट हलको
भोजनकरावै घृतादिकगरिष्ठवस्तुवाबादेनहीं ईषिधिदिन ७ करै
पाछैक्यूंघृतघालिपतलो हलको अन्नकोपलेबोपुवावैप्यावै पा
छैवायनेंदूरिकरिवावाला मिश्रीनेंआदिलेर द्रव्यषुचावैईसीतरैमं
मल १ तांईरावैक्यूंकुपथ्यकरिवादेनहीं पवनतेजअरमिहींबस्त
नेदेषवादेनहीं अरनेत्रनेंसीतलताईहोय इसीबस्त दोबउगैरैदे
षवादे इसीतरैकरैतौमोतायोवंदनेंआदिलेरनेत्रकासब्रोगजा
य पाछैईकेमोतियाविंदकोसीतलचसमोलगावैतौयोरोगईके
कदेहोयनहीं योमोतियाविंदकोजतनचाभटमेंलिथ्योछै ४८ अ
थपांडुरोगकादूरिकरिवाकोअंजनलि० हांगनेंइमघलकर
समैंघसिनेत्रामेंअंजनकरैतौपांडुरोगपील्योजाय ४९ अथनेत्रां
कादूषवाकोनारायणांजनलि० तुलसीकापानांकोरस अरबी
लकापानांकोरसयेबराबरिले पाछैयां दोन्यांनेंकांसीकापात्रमेंया
छै अरयां दोन्यांकीबराबरिलीकादूध घालेपाछैयांतीन्यांनेंकांसी
कापात्रमेंघालि गजबेलिकाघोटासूपहरदोयरगडै पाछैवैहीपा
त्रमेंतांबाकाघोटासूपहरदोयरगडै पाछैईकोअंजनकरैतौ नेत्रकी
सूल अरनेत्रकोषकियोतत्कालजाय ५० अथनयनांमृत्तगुदिका
संहि हरईकीठालि कुलथ वपस्यो फिटकडि घेरसार गांजूफल
येसारऔषदिवराबरिले अरभीमसेनीकपूर कस्तूरी अवीथ मो
ती येएकएकऔषदिका तौलसंख्याथाआधाले पाछैयांसातानेंबर
लमेंमिहींवांछि पाछैनीबूकारसमेंदिन ५ परलकीजै पाछैयागोंछी

जलमें घसि अंजन करैतौ नेत्रांकोतिमिरजाय अरईगोलीनें स्त्रीकोइ
धसूं घसि अंजन करैतौ पुखौ पटलजाय अरईगोलीनें सहसूं अंज
न करैतौ नेत्रांको जलपड़तौरहै अरईनें गोमूतसूं अंजैतौ रातिथो
जाय अरकेलिकारससूं अंजैतौ नेत्रकीमांस दृष्टिजाय ५१ इति न
यनामृतगुटिका० अथ नेत्रांकी वांफणीजातीरही होयतीको
अंजनलि० आंधीकाडाकापानांनें गोमूतगेंवांदि पाछेईसूं आधो
षपस्योले पाछेयांदोन्यानेषरलमें बांदि यांदोन्यांकेवीचिजसतकापि
हांपवकरियेले पाछेईकीकपडमिटीदेसकाय आरणाछाणोंमें ग
जपुदयेंफूकिदे पाछेस्वांगसीतलहुवांकाटै पाछेईनेंमिहींवांदि
ईकोअंजन करैतौ नेत्रांकेवांफणीआवे ५२ अथ सीतलका
फूलादूरिहोवाकोअंजनलि० गधाकीमाटनेंमिहींवांदिवेंको
अंजन करैतौ सीतलाकोफूलोजाय ५३ अथ सबलवायका
दूरिहोवाकोअंजनलि० आंचलार गंधकसेतीमासौतांबोतीनें
मिहींवांदिवेंकोअंजन करैतौ सबलवायपटलनेंआदिलेनेत्रां
कासर्वरोगजाय ५४ येसर्वजननवैद्यरहस्यमैछै अथ फू
लाधूंधिकादूरिहोवाकोजतनलि० चोषोनीलोथूथोटंक ५५ पि
दकडिफुलाईदंक ५५ पीपलीभीजोयबीजकाटिलेटंक ५५ मिश्री
मासा ५५ यांनेंमिहींवांटिकाजलकरियोंकाजलनेत्रांमेंघालेतौ फू
लोदलकोधूंधियेसाराजाय ५५ अथ चंद्रोदरगुटिका० शंख
कीनीभी वहेडाकीबांगी हरडैकीछालिमेणसिल पीपलि काली
मिरचि कूठ वच येओषदिसर्वबराबरिले त्यांनेंबकरीकाइधसूं
मिहींपीसिगोलीकरिराखै पाछेगोलीनेंजलसूं घसि अंजन करैतौ
तिमिरनें नेत्रका मांसकीदृष्टिनें पटलनें काचनें रातिथानें फूलनें

यादूरिकरैछै ५५ अथचंद्रप्रभाशुटिका० हलद नांभकापान पीप
 लि मिमरि बायविडंग नागरमोयो हरडैकीछालि येसर्वबराबरिले
 यांनैमिहांवांदि बकरीकामृतसूदिन २ परलकरै पाछैयांकीगोली
 करिछायासुकावै पाछैईगोलीनैगोमृतसूंधसिअंजनकरैतौनेत्रका
 काचनैदूरिकरै अरजलसूंधसिअंजनकरैतौनिमिरनैदूरिकरैछै स
 हतसूंधसिअंजनकरैतौपटलनैदूरिकरै अरदंनैरूकीकादूधसूंधासि
 अंजनकरैतौफूलनैदूरिकरै ५७ इतिचंद्रप्रभावर्ति अथद्वा
 दशामृतहरितकीलि० हरडैकीछालिकोभाग १ वहैडाकीछालि
 कोभाग २ आवलाकाभाग ४ सतावरीदका २ सारदका १ महलो-
 टीदका २ नजदंक ५ सींधोलूसादंक ५ पीपलिलदंक ५ अरमिथीयां
 सांसांकीबराबरिले पाछैयांसांरानैमिहांवांदिदंक २॥ सहतअर
 घृतकैसाथिरोजीनांदिन ४९ बायतौ निमिरनै पटलनैनेत्रांकाका
 चनै रातिंधानै फूलनैनेत्रमैजलआवैतीनै सबलबायउगैरैसर
 बनेत्रांकासांनै याददशामृतहरितकीदूरिकरैछै ५८ अथत्रि
 फलादिशुटिका० त्रिफलाकोरससेर १ गिलबैकोरससेर १ आं
 वलाकोरससेर १ जलभांगराकोरससेर १ अरडूसाकोरससेर १
 सतावरीकोरससेर १ बकरीकोदूधसेर १ कमलगट्टा त्रिफला म
 हलोटी पीपलि दाष मिथी कल्याली यांसांरांकोरसअधअधसे
 रले ३॥ यांसांरामैगडकोघृतसेर ३२ पकोनांषे पाछैमधुरिआंचसूं
 पकावै येसर्वबलिजायघृतमात्रआयरहै तदिईघृतनैदका २॥
 भररोजीनांबायतौ नेत्रकोनिमिर काच फूलो सबलबायउगैरैसर्व
 रोगजाय ५९ इतिमहार्त्रैफल्यंघृतम् अथगरमकाविकारदू
 रिहोयवाकाअंजन लेपकीविधिलि० आंषिदूषैवासोदरीय

४१८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

आवै अंगकैतौ आंषांमें अंजन कल्याण लेप कीयां आराम होय सो
धो सुपे दो मासा १० तांका सोधिवा कीविधि सुपे दानै मिहीं बांरिचीणी
कावास एमें धणापाणी सुंधोय ले सुपे दो नीचो वैं ठिजाय तदि वैं कोपा
णी कादिनांषे ईतरें तीनवार करि लीजे पाछे अंजरूत औषदि अचार
की मासा ३ लीजे तांका सोधिवा कीविधि अंजरूत नै मिहीं पीसे पा
छे बेटीवाली स्त्री को दूध ले अरई में इतो मिलावै जो पहर आठ में सु-
सि जाय ईतरें पुट पांच ५ दे पाछे कतीरो मासा १ भीमसेनी कपूर ती-
४ निर्सस तो औषदी अतार की मासा २ धौली गूंद मासो १ तोल माफि
कसर्व औषदि भेली करि गुलाब काजल में धरल करे पाछे ये कजीव
हु बांधोर प्रमाण गोली बांधे पाछे लगवणी होय अथवा आंजणी हो
य तदि गुलाब काजल में अथवा सादा जल में हीं अंजन तथा लेप करे
तों गरम कास र्व विकार इरि होय ६० इति गरम का अंजन लेप की
विधिः इति नेत्रांकास र्व रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन संपू-
अथ कानांकारोगां की उत्पत्ति लक्षण जतन नामलि० का-
नांकारोग शुश्रुत में अठार सलि ग्याछे सोल पूछूं कर्णशूल १
कर्णनाद २ बधिर्नाम बहरापणों ३ श्वेद ४ कर्णआव ५ कर्णकंडू
६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोदलागि वासूंकर्ण में
व्रण होय १० अर दोषां सूंकर्ण में व्रण होय ११ कर्णपाक १२ पूतिका
कण १३ वायका कर्ण सोथ १४ पित्तको कर्ण सोथ १५ कफको कर्ण
सोथ १६ लोहीको कर्ण सोथ १७ वायको कर्णार्श १८ पित्तको कर्णार्श
१९ कफको कर्णार्श २० लोहीको कर्णार्श २१ वायको कर्ण के अर्बुद २२
पित्तको कर्ण के अर्बुद २३ कफको कर्ण के अर्बुद २४ रक्तको कर्ण के
अर्बुद २५ मांसको कर्ण के अर्बुद २६ मंदको कर्ण के अर्बुद २७ नसां

४१९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

कोकर्णकैश्चर्बुद २० चरकमें कर्णपालीकैविषै आरि रोगवधताकृत्वा
 है उत्पात १ उन्मथक २ हुनववर्द्धन ३ परलेहिन ४ अथ कर्णभूलको
 लक्ष्णालि० जींकाकांनमें वायधसिजाय अरओकोपकूप्राप्तिहोय
 जदिकानमें घणोंसूलनलावे ईने कर्णभूलकहिजे १ अथ कर्णनाद
 कोलक्ष्णालि० जींकाकांनका छिदमें वायधसिरहै तदिवें पुरषकेकां
 नमें भेरिको मृदंगको संषते आदिले अने कशब्द बोले तानें कर्णना
 दकहिजे २ अथ बाधिर्घ्यकोलक्ष्णालि० बालकअरबूदो अर
 घणादिनको बहरोजो होय सो आछ्यो होयनहीं ३ अथ क्ष्वेडकर्ण
 रोगकोलक्ष्णालि० जींकाकांनमें वायपित्तकफधसिजाय अरवें
 ककांनमें वांसफाडि बाकासाशब्द होय तानें कर्णक्ष्वेडरोगकहि
 जे ४ अथ कर्णश्रावकोलक्ष्णालि० जिंकाशिरमें चोटलागि होय
 अथवा जींकाकांनमें जल पड्यो होय वेंकाकांनमां हि सूर्याधिबहू
 वोकरै तानें कर्णश्रावको रोगकहिजे ५ अथ कर्णकंडकोलक्ष्ण
 लिष्यते जींकाकांनमें कफसंयुक्त वायपैदें औकांनमें वाजिकरै
 तानें कर्णकंडकहिजे ६ अथ कर्णगूथकोलक्ष्णालि० जींकाका
 नमें पित्तकीगरमीधसिजाय अरकफनें सोसिले तोंकाकांनमें म
 ली घणी आवै तानें कर्णगूथकहिजे ७ अथ कर्णप्रतिनादकोल
 क्ष्णालि० ओकर्णगूथपतलो होजाय अरपाछे औ नां कमें आयप्रा
 प्तिहोय तानें कर्णप्रतिनादकहिजे ८ अथ रुमिकर्णकोलक्ष्ण
 लिष्यते जींकाकांनमें बुग पतंग जिनावरकांनखिजूरानें आदिले
 रकोई जिनावरधसिजाय तोंकाकांनमें फडफडावै अरवें पुरषनेपीड
 करि घणोंच्याकुलकपिदे अरवें कीभूषउगैरै सर्वजातीरहै तानें रुमि
 कर्णरोगकहिजे ९ अथ कर्णविदूधीकोलक्ष्णालि० यादोयप्रका

रकीछे एकतों कानमें चोदलागिग्रण पडिजाय अरयेक दोषां सूंका
नमें ग्रण पडिजाय पाछे वें कान सां हि सूं लोही राधि उगै रै सर्वनी सरै
अर कान में दाह उगै रै सर्वर है ती नैं कर्ण विद्रधी कहिजे १० ११ अथ क
र्ण पाक कोल क्षणलि० जीं का कान पित्त करि पकि जाय अर वें का
कान में राधि नीक ले सो का दासरि सीनी सरै ती नैं करण पाक कहिजे
१२ अथ पूति कर्ण कोल क्षणलि० जीं का कान में ग्रण पडै पाछे वें
का कान में जल पडि बोकै अर वें में राधि भी पडि ती नैं पूति कर्ण कहिजे
१३ अथ वाय पित्त कफ लोही का प्रभाव सूं जो होय जाय सो यां
काल क्षण सूं जाणी लीज्यो ४ अर वाय पित्त कफ लोही यां का प्र-
भाव सूं कान में अर्श पै दो होय छे मस्सरूप सो वां काल क्षण सूं वें भी
जाणी लीज्यो ४ अर कान में वाय पित्त कफ लोही मांस मे दन सां ये सा
सूं हाये क अर्बुद नाम रोग गांठिरूप होय छे ती नैं भी करै छे तीं काल क्ष
ण पाछे कत्याछे अर्बुद रोग में सो जाणि लीज्यो ७ अथ ये कान में भ
र्व अराई सं रोग छे २० चरक कामत सूं कान के नां चै च्यारि ४ रांग
छे सो लिखूं वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ अथ कर्ण
पाली कै विषै पांच ५ त्यां कानां मल क्षणलि० अथ परिपोदक
कोल क्षणलि० कानां की लौल कोमल घणी होय छे ई नैं स्त्रावधावा
की करै तदि कान की लौलि सूं जिजाय अर वें में पड होय आवे ई नैं प
रिपोदक कहिजे १ अथ उत्पात कोल क्षणलि० कान की लौली में
भास्यो गहणी पहरै तीं का सो जोग सूं अथ वाक हीं तरै लौलि नैं पै चिया
सूं लोलि ऊपरि सो जो होय ही आवे अर दाह होय अर पकि जाय अर
पोड होय ती नैं उत्यात रोग कहिजे २ अथ उन्मथ कोल क्षणलि०
जो कान की लौलि हर सूं वधायो चाहै तदि वें दे वाय को पकरि कफ

४२१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

संयुक्तसोजानेंकरै अरुंटेहीभाजिनैंकरै ईनैंउभथेकहिजै ३ अ
थहुःखवईनकोलसएलि० जीकाकानकीलीलहुःखसंविधो
गईहोय अरुंटेदाहहोय अरुंटेपीडहोय अपकिजाय तीनैंहुः
खवईनकहिजै ४ अथपरलेहिनकोलसएलि० जीकाकानकी
लीलिउपरिकफलोहीकाकोपकरिसरसूंसरीसीफुणस्यांहीयजा
य अरुंटेभाजिआवे अरुंटेदाहहोय अपकिजाय तीनैंपरिलेहि
नकहिजै ५ अथकर्णरोगकाजतनलि० आदकोरस सहत
सींधोलूण तेल येसर्वयेकठाकरि यांनैंक्यूंगरमकरिकानमेंघा
लैतौ कानकीपीड कर्णनांद अरुवहरापणों अरुकर्णक्षेद येसा
रारोगइरिहोय १ अथवा लसणकोरस आदकोरस वरण्यांकी
जडकोरस कैलिकोरस यांसारानैंयेकठाकरि अयूंयेकगरमकरि
कानमेंनांभेतौकानकापीडउगैरैकानकोरोगजाय २ अथकान
कीसूल इरिहोवांकोजतनलि० आककांकोमलपानांनैं षडा
ईसूंपीसीईकोरसकाटै ईमेंतेलअरुलूणनांभे पाछैईनैंथोहरिकी
लकडीमेंघालै पाछैवेलकडीकैकपडमिड्डीकरि वेंकोपुटपाकक
रिवेंकोरसकाटै पाछैईरसनें क्यूंगरमकरिकानमेंघालैतौकान
कीसूलजाय ३ अथवा आककापांनैंकैधृतलगायअग्निस्वांनैं
तपायवांकोरसकाटै पाछैईरसनें क्यूंगरमकरिकानमेंनांभेतौका
नकीसूलजाय ४ अथवा वकराकामूतमेंसींधोलूणनांभिवेनैंक्यूं
गरमकरिकानमेंनांभेतौकानकीसूलजाय ५ अथवा अरुकी
जडकोरसमेंमधुरीआंचसूंतेलपकायअोरसबलिजाय तेल
आयरहै तादईतेलनेंकानमेंनांभेतौत्रिदोषसूंउपजीभाकर्णसू
लजाय ६ अथवहरापणानैंआदिलेरकोनकारोगानैंहुं

रिकरैसोतेललि० कडवातेलमेंसूँठ मिरचि पीपलि कूठ पीपला
 मूल आंधीजाडाकोषार जवषार बीलकीजडकोर्स गोमूतयेनांषि
 मधुरीआंचसूपकावै पाछैयेसाराबलिजाय तेलमात्रआयरहै त
 दिईतेलनेंकांनमेंनांषे तौबहरापणानें कांनमेंशब्दहोयजीनें कां
 नबहतोहोयजीनें यांसारांरोगानेंयोतेलदूरिकरैछै ७ इतिविल्व
 तैलम् अथवा बीलकाकाचाफलत्यांकोरसकादितीमेंसाजीको
 चूर्णनांषे पाछैवेनेंपीवैतौकांनकीपीडनें कांनकाबहरपणानें कां
 नमांहिदाहनें यांसारांनेंदूरिकरैछै ८ अथकांनमेंराधिवहती
 होयतीकांआछोहोवाकोतेललि० आवलाकापानांकोरसजा
 मुशिकापानांकोरस महुवाकापानांकोरस बडकीबकलकोरस
 चंचेलीकापानांकोरस यांमेंतेलनांषि मधुरीआंचसूपकावै येस
 बबलिजाय तेलआयरहै तदिईतेलनेंकांनमेंघालैतौकांनकीरा
 धिवहतीरहै ९ अथवास्त्रीकादूधमेंरसोतघसिजीमेंसहतमिला
 यकांनमेंघालैतौ कांनवहतोहरहै १० अथवा कूठ हांग वच दारुहल
 द सौंफ सूँठ सींधोलूण यांनेंमिहींचांदि बकराकासूंतमेंघालि अर
 यांमेंतेलनांषिमधुरीआंचसूपकावै येसर्ववलिजाय तेलमात्रआ
 यरहै तदिईतेलनेंकांनमेंघालैतौ कांनकीराधिवहतीरहै ११ अ
 थकांनमेंत्रणपडिगयोहोयतीकादूरिहोवाकोतेल० मोदी-
 सींयाकाचूर्णनेंकडवातेलमेंपकावै पाछैओतेलकांनमेंघालैतौ
 कांनकोत्रणआछोहोयछै १२ अथवा आवलासारगंधकदका १।
 मेणसिलटका १। हलददका १ कडवोतेलदका ८। भर धतूराकापां
 नांकोरस यांसारांकीवराबरिले यांनेंमिहींचांदि मधुरीआंचसूपका
 वै येसर्ववलिजाय तेलमात्रआयरहै तदिईतेलनेंकांनमेंनांषेतौ

कानकौत्रणआछ्योहोय १३ अथकानमेंरुमिपडिगईहोयतीका
 दूरिहोवाकोजतनलि० रुमिरोगकादूरिहोवाकाजतनपाछेलिथ्या
 छैसोदेघिलीज्यो १४ अथवा वेंगणकीजडकोरससिरसूंकातेलके
 साथिईकोधूंकोनमेंदेतौकानका रुमिजायपड १५ अरकानकासो
 जाकाअरफानकाअरसका अरकानकाअर्बुदरोगकाजतन यां पा
 छिलारोगांमेंलिथ्याछैसोदेघलीज्यो १५ येसर्वजतनभावप्रका
 समेंलिथ्याछै अथबहरापणानेंदूरिकरेतीकोतेललिथ्यते
 मूलीकीजडकोरस कडवोतेलसहतयेबराबरिलेखानेकंगूरमक
 रिकानमेंघालेतौवहरापणोंजाय १६ अथवा मिथ्या अंरइलायची
 यांनैमिहीचांदि कानमेंराखेतौवहरापणोंजाय १७ अथकानकीपी
 डकादूरिहोवाकोतेललि० संधि पीपलि सींधोलूण कूठ हींग
 वच उसण तिलांकोतेल पाकाआककापानांकोरसत्यांनैमधुरी
 आंचसूपकावें येसाराउगैरैसाराबलिजाय तेलआयरहेतदिई
 तेलनैकानमेंनाखेतौकानकीपीडदूरिहोय १८ अथकानकासर्व
 रोगांकाहरवाकोतेललि० जामौअरमोटीसींपाकोचून पदमा
 ष हांगतंबरू सींधोलूण कूठ कपासकीसींगी यांनैचांदिपाछै
 यांकोकादोकरिईकादामेंकडवोतेलरका० भरनांखै अरहुलहु
 लकोरसयांसर्वकीबराबरिनांखैयाछैईनेमधुरीआंचसूपका
 वें येरसउगैरैसर्वबलिजाय तेलमात्रआयरहेतदिईतेलनै
 कानमेंनाखेतौकानकाघ्रणनै राधिनीसेरैनीवहरापणानें कां
 नकाशब्दनेआदिलेरसर्वरोगानेंयादूरिकरे १९ अथवा कूकरभां
 गराकोरसपावडा हरफारेबडीकोरस लसणकोरसपईसा ४भर
 सौंफटंक २॥ गचटंक २॥ कूठटंक २॥ संधिटंक २॥ मिरचिटंक २॥

पीपलितं क २॥ लवंगं क ३॥ बकरीकोइध अथ सेर ॥ कडवोतेल द
का ५॥ येसारायेक गकरि मधुरीआंचसूपकावै येसाराबलिजायते
लमात्रआयरहै तदिईतेलनै कानमें घालेंतौ बहरापणों अरराधि
पडैसो और कानकारोग साराजाय २० अथ कानकी राधिवहती
की औषदिलि० समदफेन सुपारी कीराष काथ यांनैमिहां चारिका
नमेंनांषेतौ कानवहतौरहै २१ येसाराजतन वैधरहस्यमें लिखा
छै अथ कानकी लोलपकिंगई होयती का आछ्या होवा को
तेललि० सतावरी आसगंध इध अरंडकी अरमोली तिलांकोतेल
यांनै मधुरीआंचसूपकावै येसाराबलिजाय तेलमात्रआयरहै त
दिईतेलनै कानकी लोलकोलगावैतौ कानकी लोलकी पीडउगैसा
शमितै अरलो लिवधै २२ अथ परिपोटी का को आछ्या होवा
कोतेललि० जीवनीय गणमें तेलपचायै ई तेलको मर्दनकरैतौ
परिपोठिका आछी होय २३ अथवा अरजोकां कालगायासू उत
पातरोगजाय २४ स्तरमो कलहारी बावची कंकजी नावरको मांस
यांमै तिलांकोतेल पकावै मधुरीआंचसूपछैरसबलिजाय तेल
मात्रआयरहै तदिईतेलनै कानकी लोलकैलगावैतौ उन्मथजाय
२५ अथवा जामुणीका पांन आवकापांन वडकापांन यांकोकादो
करिईकादामें तेलपकावै पाछैईतेलको मर्दनकरैतौ दुःखवर्दनरोग
जाय २६ अथवा गोबरका छाणासूंसेकै अथवा कपूरका इधसं-
अथवा गोमूतसूं ईकोलेपकरैतौ कानकी लोलआछी होय २७
येसाराजतन भावप्रकाशमें लिखाछै इति कर्णरोगसंपू
र्णम् अथ नासिकाकारोगकी उत्पत्ति लक्षणानामजतननि०
नामिकांयेंचौतास २४ रोगछै पीनस १ पूतिनाश २ नासापाक ३

४२५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तर्पण १८

पूयशोणित ४ घणीछाँकआवे ५ छाँकआवेनहीं ६ नाकबलिबोकरै
७ प्रतिनाह ८ प्रतिआवे ९ नससोथ १० प्रतिश्याय ११ चारिप्रको
रको १५ नासारुदसातप्रकारको २३ नाशार्शचारिप्रकारको २६ ना
कसोथचारिप्रकारको ३० नाशिकामेंरक्तपित्तचारिप्रकारको ३४
अथपीनसकोलक्षणलि० जीकानांकमेंकफकरिकैसांसआ
छानरैआवेनहीं अरनांकरुंधिजाय अरनांकसूक्ष्मोरहै अरजीमें
धुंकोनीसरै अरजीकानांकसुं सुगंधदुरगंधिकीवास आवेनहींई
नेपीनसकहिजै १ अथपूतनश्यकोलक्षणलि० जीकागलाका
तालवाकामूलकोवायहैसोपित्तनेकफनेत्येहीनेइषितकरै अर
वेकामूढामेंअरनासिकांमेंओवायदुर्गंधिकाटेस्वास्केमार्गतीने
पूतनश्यरोगकहिजै २ अथनासापाककोलक्षणलि० जीका
नांकमेंपित्तइषितहोय अरनांकमेंफुणसीकरै अरवेनेपकावे
अरवेमौहिसूराधिकाटे तीनेनासापाककहिजै ३ अथपूयरक्त
कोलक्षणलि० जीकाललाटमेंकहांतरैसूंचोटलागै तदिवेकैदो
षकोपकंप्राप्तिहोय अरनासिकाद्वाराधातिनेलीयांलोहीनीसरै ती
नेपूयरक्त रोगकहिजै ४ अथक्षवथूनामछाँकघणीआवेतीं
कोलक्षणलि० जीकानांकमेंपवनदुष्टहोय ओपवननांकका
मर्मस्थानेनेइषितकरै पाछैओकफसंसिले तदिओघणीचारंवार
छाँकनेंप्रगटकरै तीनेवक्षथूनामरोगकहिजै ५ अथवक्षथूको
औरलक्षणलि० जोपुरबनांकमेंभिरचिनेआदिलेरओषदिया
ले अथवासूर्यकानीदेवै अथबानांकमेंतृणउगैरेघाले तदिवेका
नांकमेंछाँकघणीआवे ईनेभाक्षवथूनामरोगकहिजै ६ अथव
क्षथूभंसकोलक्षणलि० जीकानांकमेंकफदग्धहोयजायपित्त

करिकेंतीपुरषनैंछांकआवेनहीं ईनेक्षवधूभंशकरोगकहिजै ७ अ
थदीप्तिरोगकोलक्षणलि० जींकानांकमेंपित्तद्रुपिहोय अरनां
कमेंदाहघणोंकरै अरनांकमेंधूंसोनीसरे वाचायपवनसंज्ञांक
बलै ईनेदीप्तिरोगकहिजै ८ अथप्रतीनाहकोलक्षणलिष्यते
वायकरिकेंसंयुक्तकफहै सोनांककासुरनैंरोकिदे सासआवादेन
हींतीनेप्रतीनाहकहिजै ९ अथप्रतिआवकोलक्षणलि० जींका
नांककासुरमांहिजामोअरपीलेसुपेदाईनेंलीयांनांकमांहिसंतीस
रै तीनैंप्रतिआवकहिजै १० अथनांसासंसोषकोलक्षणलि०
जींकानांकमेंवायपित्तकफयेतीन्यंडुष्टहोयतौओमहाकष्टसंसा
सले तीनेंनशासंसोषकहिजै ११ अथप्रतिश्यायकोलक्षण
लिष्यते जींकेपीनसकोरोगहोय अरओआलसकरिवेंकोजतन
करैनेहीं तदिओपीनसवधिअरकोपकरै आरओरस्थानमेंजा
यपाछैंप्रगटै तदिवेंकोओरअनेकनिजलाउगैरैनामपडै अरओ-
अनेकरोगानैंकरै १२ अथपीनसकोपूर्वरूपलि० जीनैंछांक
आयै अरमांथोभास्योरहै अरअंगजकडबंधहोजाय अररोमांच
होय ईनेंआदिलैरओरउपद्रवहोय तदिजाणीजेईकैपीनसरोगहो
सी १३ अथवायकापीनसकोलक्षणलि० जींकानांकमांहि
होयपिलासनेंलीयांगरमगरमपांणीपडै अरओमसुष्यरुसहो
जाय अरवेंकोसरीरगरमरहै अरजींकानांकमांहिअभिरूपधूंसो
नीसरे अरओवमनभीकरै तीनैंपित्तकोपीनसकहिजै १४ अथ
कफकापीनसकोलक्षणलि० जींकानांकमांहिजाडोजाडोसु
पेदकफघणोंनीसरे अरवेंकोसरीरसुपेदहोजाय अरआंथांड
परिसोईहोय अरमांथोभास्योहोय अरगलामेंतालचांमेंहोबामें

४२७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

सिरमें बाजियणी होय तदिजाणिजै ईको कफ को पीनस छै १५ अथ सन्निपात का पीनस को लक्षण लि० जीं कानां कमें ये पाछे कत्था सो सर्व लक्षण होय अरओ पीनस वारंवार होय अरज तन क र्त्ता जाय न हीं अरप कै भान हीं ईने सन्निपात को उ प पीनस जाणिजै यो असाध्य छै १६ अथ दुष्ट पीनस को लक्षण लि० जीं कानां क वारंवार परबोकरै अरस कि जाय अरसासनां कमें आछी तरैं आवैं न हीं नां करु धि जाय अरक दे कषु लि जाय अरसुगंधि दुर्गंधि को म्वां सरहैन हीं ईने दुष्ट पीनस कहिजै १७ अथ लोही का उ प ज्या पीन स को लक्षण लि० जीं की छातीमें चोट लागी होय तीं कै लोही को पीनस होय तीं कानां कमें लोही पडै अरवैं कै पित्त का पीनस काल क्षण होय अरवैं की आं पिलाल होय येल क्षण जीं कै होय तीं नै लो ही को पीनस कहिजै १८ अथ पीनस को असाध्य लक्षण लि० आलस करि कै पीनस को जतन करै न हीं तीं सर्व ही पीनस चसाध्य होजाय १९ अथ पीनस वाला कै नां कमें कृमि पडि जाय तीं को लक्षण लि० जीं कानां कमें पीनस करि कै सुपेद अरबी कणी अरछोटी कृमि पडि जाय अरदी सैन हीं तीं कै सिर को रोग होजाय अरओर भी रोगां नैं प्रगट करै बहरा पणां नैं नैन कारोगां नैं सीजा नैं अग्नि मां च नैं षासी नैं यो रोगां नैं यो कृमि पीनस प्रगट करै अर नां कमें अर्बुद नां मगां २० प्रकार की होय छै अरसोजो ४ प्रकार को नां कमें अरस ४ प्रकार को रक्त पित्त नां कमें ४ प्रकार को होय छै सो यां काल क्षण पाछा नैं लिखा छै सो बुद्धि वान जां नि लीज्यो २४ अथ पीनस का काचा पणां को लक्षण लि० जीं को सीर भाख्यो रहै भोजनमें अरु वि होय नां कजर बोकरै होले बोले शरीर क्षीण

४२८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

पडिजाय धूकैघरीं येलक्षण होयतदिक्काचोपीनसजायिजै २० अ
थपकापीनशकोलक्षणलि० जीकानांककोकफजाडोनीसरे अ
रनांककाठिइकैचिप्योभीरहे अरजीकोचर्णमीआछ्योहोजाय अर
जीकोसुरभीआछ्योहोजाय अरभूप्रउगैरैसर्वलागैतीनेपक्वोपीन
सकहिजै २१ अथनांककांरोगांकाजतनलि० कालीमिरचि गुड
दही येतीन्यूंमिलाय अनुमानमाफिकषायतौ पीनसकोरोगजाय
१ अथवा कायफल पौहकरसूल काकडासींगी सूंठि कालीमिरचि
पीपलि कलौंजी यांसारांनैमिहींवांदि यांकोचूर्णटंक २॥ आटाका
रसमैले अथवा ईकोकाढोलेतौपीनसनें सुरभंगनै संनिपातनै
कफनें पासनें सासनें यांसारांनैयोदूरिकरै २ अथवा कालफल हीं
ग मिरचि लाष इंद्रजव कूठ वच सहजणांकीजड वायविडंग यां
कोकाढोलेतौ पीनसजाय ३ अथव्योषादिगुटिका सूंठि का
लीमिरचि पीपलि चित्रक तालीसपच डांसत्यां अमलवेद वच
जीरो इलायची तज पत्रज येबराबारिलै यानैमिहींवांदि याबरा
बारिपुरोगुडले तांकीटंक २॥ भर गोलीकरै गोली १ रोजीमांदिन १०
षायतौ पीनसनें पासनें अरुचिनै यांनैदूरिकरै ४ अथपीनस
दूरिहोवाकोतेललि० कत्याली दांतूणी वच सहजणांकीछालि
तुलसीकापांन सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण यांसारांनैमिहीं
वांदि बांमैतेलपकावै पाछैईतेलकीनांसलेतौ पीनसजाय ५ इ
तिव्याध्रीतेलछै अथवा सहजणांकीछालि कत्याली निसोम
सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण बीलकायांनकोरस यांसारांनैते
लमैपकावै पाछैईतेलकीनांसलेतौ पीनसजाय ६ इतिशुभ्रुते
लम् अथजीनैंहींकपणीआवैतांकोजतनलि० घृत गुग्गुल मोप

यांकीनांकमें धूली देतौ छींक आवतार है ७ अथवा सूँठि कूठ पीप-
लि बालकीगिरि दाँष यांकोकाटोकरि ईमें तेलपकावै पाछै ई तेलकी
नांसलेतौ घणी छींक आवैसौ दूरि होय ८ अथ पीनसका दूरि हो
वाकोचूर्ण वायविडंग सींधोल्ण हांग गूगल मैंगसिल बच यां
नौभिर्हापीसि ईनें सूँधैतौ पीनसजाय ९ अथ पीनसका दूरि होवा
कोतेलम् भांगिकापानांकोरस सींधोल्ण ईमें तेलपकावै पाछै ई ते
लनें सूँधैतौ पीनसजाय १० अथ नांकमें अर्शनाममस्सा होयतीं
कोतेल ० धूसमौ पीपलि दारुहलद आंधीमाडाकाबीज जबषर
किरमालाकीगिरि अथवायकल सींधोल्ण यांमें तेलपकावै पाछै
योतेलनांककामस्साकैलगावैतौ मस्सा दूरि होय ११ औरनांकका
रोगकत्याछै सांकाजतनवारोगमें बुद्धिवानदेषिलीज्यौ १२ येसर्व
जंतनभावप्रकासमें लिप्याछै अथवा जो पुरषसोवाकैसमें
आधौओटायोपाणीपीवैतीं कै पीनसकोरोगजाय १३ अथवा जी
रो घृत घाम भिलाय वायतौ पीनसजाय १४ इति नासिकांका
रोगांकाजतनसंपूर्णम् अथ सुषकारोगांकी उत्पत्तिलक्षण
एजतनलि ० अथ सुषरोगकोलक्षणलि ० सुषकासात ० अंग
छै होठ १ मसूरा २ दांत ३ जीभ ४ तालवा ५ गलो ६ गलाने आदिले
रसुषकोसर्वांग ७ अथ मुंदांकासर्वरोगांकी संध्यालि ० सर्व
मुंदांकासिडकट ६० रोगछै होठका ८ मसूडांका १६ दांताका ८
जीभका ५ तालवाका ९ कंठका १० सर्वसुषमें फेलता २ अथ सुष
रोगांकी उत्पत्तिलि ० अनूपदेशकामांसकाषावासं घणाद्धका
पीवासं घणादहांकाषावासं अरउडदनें आदिले रघणाषावासं
कोपकूंप्राप्तिहुवोजोवायपित्तकफसो सुषकारोगांनै प्रगटकरैछै १

४३० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

अथ होठकारोगां की उत्पत्ति लि० होठकारोग आठ ८ हैं वायको
 १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ मांसको ६ वेदके
 ७ चोटलागिवांको ८ अथ वायका होठरोग को लक्षण लिखते
 जीका होठ कठोर होय अरु धरागादा होय काला होय ज्यामें पीड
 घणी होय अरु फाट्वा घणा होय तौ वायका कोपको होठ को रोग जा
 णाजै १ अथ पित्तका कोपका होठरोग को लक्षण लिखते
 जीका होठ कैं फुल स्यां होय अरु वें फुल स्यां च्यु बालागि जाय अरु बां
 में चोगड दाई पीड भा होय अरु बां में दाह होय अरु पकि जाय अरु बां
 की कांति प्रालि होय तदि जाणिजै पित्तका कोपका होठ को रोग छै २
 अथ कफका कोपका होठकारोग को लक्षण लि० जीका हो
 ठ देह का वर्ण सरीसा होय अरु चूवें अरु उदें फुल स्यां होय अरु ज्यां
 में पीड न ही होय अरु ज्यां में षाजि आवैं अरु ज्यां में कफ जाडो अरु
 रीनी सरै तदि जाणिजै कफका कोपका होठ को रोग छै ३ अथ स
 न्निपातका कोपका होठरोग को लक्षण लि० घडीक में तौ का
 ला हो जाय अरु घडीक में पीला हो जाय घडीक में सुपेद आजी में
 घणी फुल स्यां होय अरु सर्व काल क्षण जी में भिलै तीन सन्निपात
 का कोपको होठ को रोग कहिजै ४ अथ लोहीका कोपका होठका
 रोग को लक्षण लि० जीका होठ कैं फुल स्यां घणी होय अरु ज्यां में
 पीड घणी होय अरु ज्यां को रंग छं वारा सरीसो होय अरु ज्यां में लोही
 घणी पड़े येल क्षण होय तदि लोहीका कोपको होठ को रोग जाणिजै
 ५ अथ चोटलागिवाका होठकारोग को लक्षण लि० जीका
 होठ कैं कहीं तरै सूं चोटलागी होय तदि वें का होठ फाटि जाय अरु
 ठे षाजि आवैं अरु होठ मथासा होय अरु बां में पीड भा होय तदि-

जाणिजैचोटकालागिचांकोकोपकोहोठकोरोगछै ८ अथहोठांका
 रोगांकाजतनलि० ज्यांकेहोठांकोरोगहोय त्यांकेजलोकासूलो
 हीकडाजेतौहोठांकोरोगजाय २ अथवा घृतमेंशङ्खमोमनांषि वें
 सेतीहोठानैसिकाजेतौहोठांकोरोगजाय २ अथवा चारिप्रकार
 कास्नेहछै १ जलघृत मांसकोघृत ३ अथवा मांसमांहीलीमांजी ४
 यांच्यांस्नेहामेंमोमभिलाय वेंकोसेककरावेतौहोठकोरोगजाय
 ५ अथवा होठांकीसीरछुडायदेतौहोठांकोरोगजाय ५ अथवा सी
 तलओषधांलेपकरैतौ होठांकोरोगजाय ५ अथवा फूलप्रियंशु
 त्रिफला लोद यांनैभिहींबांभिर स्नेहमेंयांकोसेकसुहावतोकरैतौ अथ
 वा सहतसंभायतौ होठांकोरोगजाय ६ अथप्रतीसारणाविधि०
 होठांकेचूर्णअबलेह आंगुलीसूं सनें सनेंलगवैतौनैप्रतिसारण
 कहिजै ७ अथहोठांमेंघणात्रणपडिगयोहोय त्यांकाजतनपाछै
 घणाकाप्रकर्णमेंलिप्याछैसोकमिलीज्यो ८ इतिहोठांकारोगां-
 काजतनसंपूर्णम् अथमसूंदांकारोगांकानामसंख्यालि०
 सीतादि१ दंतपुष्ट२ दंतवैष्ट ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ पण्डिर ६
 उपशुक ७ वैदर्भ ८ खलिवर्द्धन ९ असिमांस १० पंचनाडीवायसूंम-
 सूंदांकीनसनीसरै ११ पित्तसूंमसूंदांकीनसनीसरै १२ कफसूंमसूं
 दांकीनसनीसरै १३ सन्निपातसूंमसूंदांकीनसनीसरै १४ चोटला
 गिचासूंमसूंदांकीनसनीसरै १५ दंतविद्धी १६ अथसीतादि
 मसूंदांकारोगकोलसंख्यालि० कारणविनांहीअकस्मात्मसूंदांमें
 लोहीनीसरिआवै अरवेंलोहीमेंदुरगंधिआवै अरओलोहीकालोहो
 य अरबसूदाकीमलहोय अरमसूदाविंशरिजाय आपसमेंपकिचा
 लागजाय योकफलोहीकादुष्टपरांसंउपजैछै ईनैसीतादिमसूंदांको

रोग कहिजे १ अथ दंतपुपटमसूदांकारोगकोलक्षणलि०
 दांताका तीन मसूदांमें सोजोयणों होजाय यो कफलो ही का कोपसूं हो
 यछै ईनें दंतवेदपुपटरोग कहिजे २ अथ दंतवेष्टरोगकोलक्ष
 णलि० जीं कामसूदांमें गाधिलीयां लोही नीसरे अरदांत हालवाला गि
 जाय ईनें दंतवेष्टिमसूदांकारोग कहिजे ३ अथ सौषिरमसूदांका
 रोगकोलक्षणलि० मसूदांमें सोजो होय आंचे अपडठे पीठ होय
 अरलाल पडै अरपाजी आंचे ईनें सौषिरनाम मसूदांकारोग कहिजे
 ४ यो कफ वायसूं उपज्यो छै ४ अथ महांसौषिररोगकोलक्षण
 लि० मसूदांते दांत हालवाला गजाय अरताल वोवै डिजाय केताल
 वाकै छेद पडिजाय यो सन्निपात का कोपसूं उपज्यो छै ईनें महासौषि
 र कहिजे ५ अथ परिदरमसूदांकारोगकोलक्षणलि० जीं का
 दांता कामसूदा विषरिजाय अरवांमें लोही बहै न हीं ओपित्त लोही
 कफ यां का कोपसूं उपज्यो छै ईनें परिदर कहिजे ६ अथ उपकुश
 मसूदांकारोगकोलक्षणलि० ज्यां कामसूदांमें दाहा होय अरप
 किजाय दांत हालवाला गै अरज्यां मसूदांनें दाया अथवा ओषयां
 स्रग्धस्यां लोही नीसरे अरवांमें पीठ न हीं होय अरमूदांमें दुर्गंधि आ
 बै ओपित्त लोही सूं उपज्यो छै ईनें उपकुशरोग कहिजे ७ अथ वेद
 र्भमसूदारोगकोलक्षणलि० जीं कामसूदांके कहांतरें संचो
 टलागै अथवा वैधस्था जाय तदिवांके सोजो होजाय अरदांत हा
 लवाला गै अरवंमें दाह पीडा भा होय ईनें वैदर्भरोग कहिजे ८ अ
 थ रवलि वर्द्धनरोगकोलक्षणलि० जीं कामसूदांमें दांत अधिक
 न धे अरउठे पीठ घणी होय वेंनें रवलि वर्द्धनरोग कहिजे ९ अथ
 अधिमांसरोगकोलक्षणलि० जीं की नीवरली भादका अंतमें

४३३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

सोजोघणो होय अरपीडघणी होय मूढांमें लालपडे योक्कफसंउप
जोछे इनें अधिमांसरोग कहिजे १० अथ मसूदां की नसांमै रोग
कोलक्षणलि० बायपित्तकफसंनिपात अरचोटलागिवोयांसूपां
चनसांकारोग होयछे १५ अथ दंतविद्रधीरोग कोलक्षणलि०
दांताकामसूदांमें लोहीनीसरै अरघणोंसोजो होय अरदाह होय
अरपीड होय अरराधिलोहीलीयांघणों अवे इनें दंतविद्रधीमसू
दांकोरोग कहिजे १६ अथ मसूदांकारोगांकाजतनलि० अथ
सीतादिमसूदांकोजतनलि० ईरोगमें मसूदांको लोहीकदाजै
पाछेसंठि सिरसूं त्रिफला यांकोकादोकीरि कुरलाकरैतौ सीतम
सूदांकोरोगजाय १ अथवा हीराकसीस पठाणीलोद पीपलि मेंश
सिल फूलपियंगु तेजफल येबराबरलै लानैमिहींवांढि सहतसूं
मसूदांकेलगावैतौ सीतादिमसूदांकोरोगजाय २ अथवा तेलकैघृ
तकाकुरलाकरैतौ सीतादिमसूदांकोरोगजाय ३ अथ दंतपुण्ड
कोजतनलि० ईरोगमें मसूदांको लोहीकदाय तीळपरिपांचूल्
एजबधारसहतनांषि यांकोकादोकीरितींकाकुरलाकरैतौ दंतपु
ण्डरोगजाय ४ अथ दंतवेष्टिकोजतनलि० वेंनेचाकणाभोज
नकराजे अरतेलकाकुरलाकराजेतौ योरोगजाय ५ अथ चल
दंतकोजतनलि० लोद पतंग महुवो लाष बौलसिरि कीवकल
यांनैमिहींवांढि ईकाचूर्णनैमसूदांके मसलैतौ चलदंतकोरोगजा
य ६ अथवा नागरमीयो हरडैकीछालि संठि मिरचि पीपलि वा
यचिडंग नांबकापांन यांनैमिहींवांढिगोमूतसूं वेंकीगोलाकरै पा
छेछायासुकाय अरसोवतांगोली १ मूदांमें रावैतौ चलदंतकोरोग
जाय दांतगादाहोय ७ इति भद्रसुस्तादियुटिसं पूर्णम् ॥

अथवा नीलाफूलकोकठसेलो धमासे बैरसार जायुणिकीवकल
 आवकीवकल सहलोदी कमलगट्टा येसाराबराबिलेटकाटकाभ
 र पाछैयांनैसेर १६ पाणीमेंऔटायचतुर्थीशजल राषे पाछैईमें
 तेल तथाबकरीकोदूधमधुरायांचसूपकावै वोरसबलिजायतेल
 आयरहै तदिईतेलवाघृतनेंघट्टीरेंमूढांमैराषेतौ दांतगाढाहोय
 इतिसहचराद्यंतैलम् अथसौधिरोगकोजतनलि ईरोग
 मेंमसूढांकोलोहीकाटै पाछैलोद नागरमोथो रसोत सहत यांसा
 रांनैमिहींवांरि सहंतसेतीमसूढांकेलेपकरै अरपाछैदूधकाकुर
 लाकरैतौसौधिरमसूढांकोरोगजाय ९ अथपरिदरकोजतनलि
 प्रथममसूढांकोलोहीकाटै पाछैसूरि सिरस्यूत्रिफला यांकोका
 दोकरिईकाकुरलाकरैतौ परदल उपकुंश येरोगजाय १० अथ
 मसूढांकात्रणकोजतनलि गूलरकापांन लवण सहत सी
 भिरचि पीपलि यांनैऔटायकाढोकरै अरमसूढांकोशस्त्रसू
 धिरकाटै पाछैईकाकागकुरलाकरै पाछैमसूढांकेलवणउगैरै
 क्यूषारलगावैतौ मसूढांकात्रणआछ्याहोय अरवांकीहूमिमरि
 जाय अरयोरोगजातौरहै ११ अथषनिचईनकोजतनलि
 ईरोगकामसूढांकोमांसकाटिनांषजै पाछैसहतकाकुरलाकरा
 जै पाछै वच तेल बल पाठ साजांजवधार पीपलि यांनैमिहींवां
 दिमसूढांकेलगाजैतौ खनिचईनरोगजाय १२ अथमसूढांकी
 नसांमेंपांचप्रकारकात्रणकोजतनलि वामसूढांकोमां
 सशस्त्रसूदूरिकरै पाछैपटोल नींबकापांन त्रिफला यांकोकाढो
 रें पाछैक्यू गरमगुहावताईकाकुरलाकरैतौ मसूढांकीनसांका
 वणजाय १३ अथवा चंचेलीकापांन धनूराकापांन कट्याली गो

४३५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

षट्कोपचांग मजीठ लोद घेरसार महलौठा गोंकोकादोकरि ई
काटामें मधुरी आंचसंमेलमकावै पाछै ई तेल काकुरलाकरैतौ म
सूटांकात्रणउगैरैसर्वरोगजाय १४ इतिमसूटांकारोगांकाज
तनसं० अथदांतांकारोगांकीनांमसंख्यालिख्य० दालिन १
कुमिदंतक २ भंजनक ३ दंतहर्ष ४ दंतशर्करा ५ कापालिक ६ श्या
वदंत ७ कराल ८ अथदालिननामदांतकारोगकोलक्षण०
जींकादांतमेंदूदादांतकीपीडहोय वापीडवायसंहोयछै ईनेंदालि
ननामदांतकोरोगकहिजै १ अथकुमिदंतककोलक्षणलि०
जींकादांतमेंकालाछिद्रपडिजाय अरहाले अरवांमेंकुंरुधिर
नीसरै अरवांमेंसोजोहोय अरवांमेंपीडभीहोय विनाकारणहा
त्रायकी तीनेंकुमिदंतारोगकहिजै २ अथभंजनकरोगको
लक्षणलि० जींकादांतवांकावांकाहोयदूटिजाय योफवाय
सुंउपजैछै ईमेंभंजनकरोगकहिजै ३ अथदंतहर्षरोगकोल
क्षणलि० जींकेसीतलजलादिकसूं लूषीयस्तसूं सीतलपव
नसूं षटाईसूं दांतआंव्याजाय बाटोहोजाय योवायपित्तसंहो
यछै तीनेंदंतहर्षकहिजै ४ अथदंतशर्कराकोलक्षणलि०
जींकादांतामेंमैलरहे वेंमैलनेंफवायसोषिले पाछैवेंकादां
तषरधरालागे अररेतकीसीनांईधिरताजाय तीनेंदंतशर्करा
कहिजै ५ अथकापालिकीनांमरोगकोलक्षणलि० जीं
कादांतमाटिकाथडाकाकापालसरीसाहोय अरवांमेंछिद्रहो
य अरबिरे अरवांमेंमेलहोय तीनेंकापालीकरोगकहिजै ६
अथस्यावदंतकरोगकोलक्षणलि० जींकादांतदुष्टलोही
सूंमित्यो जोपित्ततीकरिसारादग्धहोयजाय अरवेंकादांतकाला

४३६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरेण १८

अरसीलापडिजाय तीनें स्थाव दंत रोग कहिजे ७ अथ करानगे
गकोल क्षणलि० जांका दांता नें वाय है सो सनें सनें लुसा घाटका
करि दे भयंकर इनें कराल दांत को रोग कहिजे यो रोग जतना सं
पी आछो होय नहीं ८ अथ ग्रंथोंतर सुं ह सु मोक्ष १ दांता
कारोग को लक्षणलि० जांका दादा में वाय कुपित होय दांता नें
पकड़े दांतायें अथ वा दादा में पीड करे तीनें ह सु मोक्ष रोग कहा
जे वैमें अरि दंत रोग काल क्षण मिलै ९ अथ दांता कारोगांका
जतनलि० अथ लाक्षादि तैललि० लाषकोर ससेर ३१ ति
लांको तेल सेर पाव ३१ गऊको दूध सेर पाव ३१ लोदका ११ कायफ
लटका ११ मजीठका ११ कमल गट्टाटका ११ कमल की केसरिका
११ रक्तचंदन टका ११ महलो रोदका ११ यांभारांको काढो करे पाठै
ईकादा में मधुरा आंच सुं तेल पकावे ये सव र सउ गेंदें बलि जाय
तेल आयर है तदि ई तेल नें मूंदामें थडा १ रायै नौ दांता का मारा
हो आं दू रोग जाय अर दांत गादा होय इति लाक्षादि तैल मू
अथ वा वाय नें दूर करि वावा लजो तेल त्यांका नुरला करे तो
दांता का सारा रोग जाय २ अथ कृमि दंत को जतनलि० हीं
गनें क्यूं पेक गर म करि दांता के बिचें दंतौ दांता का कृमि जाय ३
अथ वा कागल हार नील की जड कडवी तुंघा की जड यांनें भिरां
वांढियांको दांता के मर्दन करे तो दांत का कृमि जाय ४ अथ दांत
आंचार है तीं की ओषधि० सांभरोलूण नरकचूर सुंढि आ
कलकरो यांनें भिरां वांढि दांता के मर्दन करे तो दांत आंचा आछा
होय ६ अथ दांता का सर्व रोग जांवा की ओषधि० पांचुलूण
नीलोथूयो मूंढि भिरचि पीपलि पापन्नामूल हीराकसीस यां

४३७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

जूफल वायविडंग यानैमिहींवांदि यांकोदांताकैमर्दनकरैतौ दांता
 कासर्वरोगजाय ७ अथ दांत गादा होवाकीमिस्सीलि० हीराक
 सीस मांजुफल लोहचूर सैनासुषी मजीठ फुलई फिटकडी त्रि
 फला येसाराबराबरिले यानैषरलमेंमिहींवांदि काजलसिरीसा
 करै पाछैमासो १ दांताकैघडीर मसलैईविधिदिन ७ करैतौ दांत
 स्पामहोय ८ अथ दांताकासर्वविरहरवाकीत्रौषदिलि० फि
 टकडी फुलाई नीलोथूथो तेजबल पापड्यौ काथ पीपलिकीक
 च्चीलाष सूंठि मिरचि पीपलि आंवला हीराकसीस मांजूफल
 मजीठ रूमीमस्तंगी बौलसिरीकीवकल सींधोलूण दिषणीसु
 पारी येसाराबराबरिले पाछैयानैकूटि कपडछाएकरि निर्गुंडी
 कारसकीपुट २१ दे पाछैबौलसिरीकावकलकीपुट २१ दे पुटदे
 देतावडैसुकावै पाछैईनैमिहींवांदि क्यूसींधोलूणमिलावै पाछैई
 कोदांताकैमर्दनकरैतौ दांताकासर्वरोगजाय ९ अथ दांताका
 दूषवांकीत्रौषदिलि० कूठटक ५ सूंठटक ५ मिरचितंक
 ५ पीपलिटंक ५ घुरासाणी अजवायणटक ५ हरडैकीछालिटं
 क ५ काथटक ५ यानैमिहींवांदि दांताकैमर्दनकरैतौ दांतदूषता
 रहै १० अथवा गंगापारकीतमाषू आकलकरो कायफल वाय
 विडंग सूंठि मिरचि पीपलि लूण यानैमिहींवांदि यांकोमर्दनक
 रैतौ दांतदूषतारहै ११ अथ दांत हालताहोयअरवांमैपीड
 चालैतीकीत्रौषदिलि० पीपलि सींधोलूण जीरो हरडैकीछा
 लि मोनारस यानैमिहींवांदि दांताकैरगडैतौ दांतहालतारहै
 अरवांकीपीडजाय १२ अथवा नागरमोथौ हरडैकीछालि सूं
 ठि मिरचि पीपलि वायविडंग नीबकापान यानैमिहींवांदि यांके

४३८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

गोमूतकीपुट ३ दे छायासुकाय गोलीकरै पाछैवागोलीरातिनै
सोवतांमूंदामैराषै अरप्रभातिवैगोलीनैनांषै पाछैकुरलाकरैतौदं
ताकासर्वरोगजाय १३ अथवा फिटकडी नीलोथूथो बैरसार पा
पड्यौ काय तेजबल कच्चीलाष वंसलोचन भिरचि आंचल मजीठ
रुमीमस्तंगी बौलसिराकीवकल सींधोल्हण मांजूफल दिषणीसु
पारी यानैमिहींवांदि कपड छांएकरि यांकैनिर्गुडीकारसकीघणी
पुटदे पाछैयांकेचंबेलीकारसकीपुटदे तावडैसुकावतोजायपा
छैबौलसिराकीघणीपुटदे पाछैसुकाययानैमिहींवांदि दांताकै
रंगडैतौदांतगाढाहोय अरदांताकासर्वरोगजाय १४ अथदां
तांमैलोहीनीसरैतीकीओषदिलि० सींधोल्हण बैरसार कूठ
धणौ सूंठि सेकौजीरो यानैमिहींवांदि दांताकैमर्द
नकरैतौ दांताकौलोहीनीसरतोरहै १५ इतिदांताकारोगांका
जतनसंपूर्ण अथजीभकारोगांकीउत्पत्तिनामसरगालि०
जीभकारोग १ वायको १ पित्तको २ कफको ३ अलास ४ उपजिह्वा
५ अथवायकाजिह्वारोगाकोलक्षणलि० जींकीजीभफा
टिजाय अरसोईहोय अरहरीहोयजाय अरजीमैंकांटापडिजा
य अरस्वादकोज्ञानजातोरहै येलक्षणहोयतदिवायकोजीभकै
रोगजाणिजै १ अथपित्तकाजीभरोगकोलक्षणलि० जींकीजी
भमैंदाहरहै अरजीभकोवर्णलालहोय अरकांटापडिजाय तदि
जाणिजेजीभकैपित्तकोरोगछै २ अथकफकाजीभकोलक्षण०
जींकीजीभभारीलषावै अरजाढीहोयजाय अरजीभमैंसुपेदकां
टापडै तौकफकाजीभरोगजाणिजै ३ अथअलासजीभकारो
गकोलक्षणलि० जीभकैनीचैघणौसोजोहोय अरयोजीभमैल

४३९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

ठुकरिदे अरमादीनेलठुकरिदे हालवादेनहीं अरजीभनीजैपकि
जाय योरोगकफलोहीसूं पैदा होयछे ईनेअलासकहीजै ४ अथ
उपजिह्वाकोलक्षणलि० जीभकीअणीउपरैसोजोहोय दूसरी
जीभसिरीसोजाणीजैदूसरीजीभछै अरलाउघणीपडै अरवेमेषा
जिआवे अरवेमैदाह होय ईनेउपजिह्वाजीभकोरोगकहीजै ५ अ
थजीभकारोगांकाजतनलि० जीभकासारोगांकादूरिकरि
वाकैवासेलौहीकटावोजोग्यछे १ अथवा गिलवै पीपलि नांबकी
छालि कुटकी यांकोकादोरिकुरलाकरैतौजीभकारोगजाय २
अथवा होरकाजतनपाछैकत्याछैत्यांसूंभीजीभकारोगजायछे
३ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि जवषार हरडै यांनेमिहींवांठि
जीभकैलगावैतौजीभकारोगजाय ४ अथवा सूंठि मिरचि पीप
लि जवषार हरडैकीछालि यांमैतेलपकायईतेलकाकुरलाकरै
तौ उपजिह्वादूरिहोय ५ अथपुनः जीभकीओषदिलि० कच
नारलकीबकलकाकादाकाकुरलाकरैतौ जीभकासर्वरोगजाय
६ इतिजीभकारोगांकाजतनसं० अथतालवाकारोगांकी
नामसंख्यालि० तालवाकारोग ९ गलसुंडी १ तुंडकेसरी २ ध्रुव
३ कछप ४ ताल्वर्बुद ५ मांससंघात ६ ताल्वखुपुट ७ तालसोस
८ तालपाल ९ अथगलसुंडिकोलक्षणलि० तालवाकीजडसूं
सोजोबमोवधै अरओसोजोडूटीपालसिरीसोहोय जाणिजैई
पालमैवायभदिनीछै अरवेनेतिसलागै अरषाससासभीहोय
ईनेगलसुंडीरोगकहीजै योकफलोहीसूंउपज्योछै १ अथतुंडके
सरीकोलक्षणलि० तालवाकीजडसूंउपज्योसोजोसोदाहअ
रपीडअरपकिचानेलीयांउपजैसोयोकफलोहीकादुष्टपणांसूं

४४० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

उपज्यौ ईनेतुंडकेसरीरोगकहिजै २ अथध्रुवरोगकोलक्षणलि
जीकातालवांमैंसोजो लाल होय जुरनेंलीयांतीनें ध्रुवनामरोगक
हीजै ३ अथकच्छपरोगकोलक्षणलि० जीकातालवांमैंसोजो
काष्ठबाकै आकार उंचो होय अरवेमैंपीड होय योकफसू उपज्यौछै
ईनेकछपरोगकहिजै ४ अथताल्वर्बुदकोलक्षणलि० जीकाता
लवांमैंसोजोकमलकै आकार होय अरजीमेंवभाअंकुर होय तीं
नेंताल्वर्बुदरोगकहिजै ५ अथमांसघातरोगकोलक्षणलि०
जीकाताल्वामेंहुष्टमांसवधै जीमेंपीडनहीं होय तीनेंमांससंघात
रोगकहिजै ६ अथताल्वप्युधुदरोगकोलक्षणलि० जीकाताल
वांमैंबोरसरीसोसोजो होय जीमेंपीडनहीं होय तीनेंताल्वप्युधुद
रोगकहिजै ७ अथतालुसोसंकोलक्षणलि० जीकोतालवोसू
कीजाय अरफाटिजाय अरस्वासहोय आवै तीनेंतालुसोसकहिजे
८ अथतालुपाककोलक्षणलि० जीकोतालवोगरमीसूंधणों
पकिजाय तीनेंतालुपाकरोगकहिजै ९ अथतालवांकारोमांका
जतनलि० गलसुंडीरोग होय जीनेंचतुरवैद्यहैसो शस्त्राविसक
रि कै कारिनांषैतौ गलसुंडीरोगजाय १ अथवा कूठ मिरकि सीं
धोलूरा पाठ मोथो यांनेंमिहींवांदिगलसंसुंडीकैमसलेतोगलसुं
डीरोगजाय २ अथवा पीपलि अतीसकूठवचसुं ठ कालीमिर
वि सीं धोलूरा यांनेंमिहींवांदि सहतसेती गलसुंडीकैलगवैतौ
गलसुंडीआछी होय ३ अथवा पीपलि अतीस कुठ वच रात्रा
कुटकी नांबकीछालि यांनेंजौकूठकरियाकोकाटोलैतौ तालवा
कागलसुंडीतुंडकेसरीनें आदिलेरसर्वरोगजाय ४ इतिताळ
वांकारोगांकाजतनसंपूर्णम् अथगलकारोगांका

४४१ असृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

मसंख्यालि० गलाकाअगरारोगछे पांचप्रकारकीतोरोहिणी
वायकी१पित्तकी२कफकी३सन्निपातकी४लोहीकी५कंठसाखू
क६अधिजिह्वा७बलया८अलास९एकदृंद१०दृंद११शत
घ्नी१२गिलयु१३गलविद्धी१४गलौघ१५स्वरघ्न१६मांसतान१७
विदार१८अथवायकीरोहिणीकोलक्षणलि० सारीजीभमें
घणीपीडहोय अरजीभमेंसारेमांसकाअंकुरनीसरिआवे अर
वांसुकंठरुकिजाय अरवायकासर्वउपद्रवहोजाय ईनेवायकी
रोहिणीकहिजै १ अथपित्तकीरोहिणीकोलक्षणलि० जीको
गलोपकिजाय अरगलामेंदाहहोय अरजुरघणीहोय ईनेपि-
त्तकीरोहिणीकहिजै २ अथकफकीरोहिणीकोलक्षणलि०
जीकागलाकासोतकफसंरुकिजाय अरगलोमोडोपके अरग
लोभाखोहोय ईनेकफकीरोहिणीकहिजै ३ अथसन्निपातकी
रोहिणीकोलक्षणलि० औडौजीकोपाकहीय अरवैकोवार्य
दूरहोयनहींजतनासूंभी अरजीमेंसर्वलक्षणमिलै वात्रिदो
षकीरोहिणीजाणिजै ४ अथलोहीकीरोहिणीकोलक्षणलि०
जीकागलामेंफोडोहोयआवे अरज्यामेंपित्तकालक्षणमिलै तो
नेलोहीकीरोहिणीकहिजै ५ अथकंठसाखूकोलक्षणलि०
जीकागलामेंबोरकीमांगीप्रमाणगंठिहोय अरगलामेंबरधरा
२ कांटापडिजाय अरउंटेपीडभीहोय तीनैकंठसाखूकहिजै
६ अथअधिजिह्वारोगकोलक्षणलि० जीकाजीभकीअणीकै
उपरीसोजोहोय अरलोहीनैलीयांकफनैथूकै अरजीभकफलेही
संखोलीरहे ईनेअधिजिह्वारोगकहिजै ७ अथबलयरोगकोलक्ष-
णलि० जीकागलामेंकफबधे पाछैओगलामेंसोजानैकरै अन्नउगे

रैगलामेंजाबादेनहिंवेकोमार्गरोकिदे ईनेंवल्यगलाकोरोगक
 हिजै ८ योअसाध्यछै अथअलासरोगकोलक्षणलि० जीका
 गलामेंकफवायवधिकरि गलामेंसोजोकरै अरस्वासमेंअरपी
 डनेंप्रगटकरै मर्मस्थानमेंछेदताथकाहियामेंपीडकरै ईनेंअ
 लसरोगकहिजै ९ अथएकवृंदकोलक्षणलि० जीकागला
 मेंकफअरलोहीदुष्टदुवाथकागलाकैमांहिगोलअरउंचीसोई
 नेंकरै दाहनेंलीयांअरउठेपाजिभीचालै गलोपकिजाय अरगं
 लोभाखौकोमललषावै ईनेंएकवृंदरोगकहिजै १० अथवृंदना
 मगलाकारोगकोलक्षणलि० जीकागलामेंपित्तअरलोहीकोप
 कूंप्राप्तिहोय वांसंयुक्तगलामेंबिनांपीडासोजानैंप्रगटकरै अर
 गलामेंदाहकरै अरतीव्रजुरनेंपेदाकरै ईनेंवृंदनामगलाकोरो
 गकहिजै ११ अथशतघ्नीकोलक्षणलि० जीकागलामेंमांस
 काअंकूरजामाजामाकरडाकरडाकंठनेंरोकिवावालाघणाऊ
 गै अरवांमेंपीडघणीचालै प्राणानेंहरवावाली प्यारोगत्रिदोष
 काकोपसूंहोयछै सोअसाध्यछै ईनेंशतघ्नीगलाकोरोगकहिजै
 १२ अथगिलायुरोगकोलक्षणलि० जीकागलामेंआंबला
 कामांगीप्रमाणगांठिहोय अरउठेपीडकमहोय वागांठिकफ
 लोहीसूंहोयछै अरभोजनकरतांवावुरीलागै ईनेंगलायुरोगक
 हिजै १३ अथगलविद्रधीकोलक्षणलि० जीकासारागलामें
 सोजोहोय अरउठेपीडघणीहोय योभीत्रिदोषकाकोपसूंहोयछै
 ईनेंगलविद्रधिरोगकहिजै १४ अथगलौघकोलक्षणलि० जी
 कागलाकामार्गमेंसोजोघणोंहोय अरजीकागलामेंपवनभीजा
 यसकैनहीं अरतीव्रजुरहोयजाय योकफलोहीकादुष्टपणसं.

४४३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

होयछै इनेंगलौघरोगकहजै १५ अथस्वरघ्नरोगकोलक्षणलि०
जीकांगलामेंकफहुष्टहोयगलाकास्वरनेंदुरिकरै अरसासदोहरो
लियोजाय अरपांघोबोलै भोजनकस्योजायनहीं थोकफकंठका
पवननेंविगाडै इनेंस्वरघ्नरोगकहजै १६ अथमांसतानकोलक्ष
णलि० जीकांगलामेंसोजोकमसूंवधै अरसारागलामेंफैलिजा
य गलामेंपीडहोय योभीत्रिदोषसूंहोयछै इनेंमांसतानरोगकहि
जै १७ अथविदारिरोगकोलक्षणलि० तांकागलामेंतांबाकाव
र्णसरसो दाहनेंलायांसोजोहोय अरगलोलटकिजाय पकिजाय
जामेंराधिपडै योपित्तकाकोयसूंहोयछै अरगलाकापसबाडामेंज
ठसोवैतठविदारिकंदसोहोय तीनोंविदारिगलाकोरोगकहिजै
१८ अथगलाकारोगांकाजतनलि० जीकैरोहिणीहोयतांका
गलाकैजलौकासूंलोहीकटाजेतौरोहिणीरोगआछोहोय १ ग
लाकासारारोगांकाजतन वमनकरावो औषधांसूंहु काप्यावो
औषधांकाकुरलाकरावो नंसदेवो लोहीछुडावो लूणकोसेक
येसारगलाकारोगनेंआछा २ अथवा स्नेहकाकुरलायेवायका
गलाकारोगनेंआछा ३ अथपित्तकारोगकाजतनलि० मिश्रा
सहत कुलप्रियंगु यांकाकादासंपित्तकागलाकारोगजाय ४
अथकफकारोगांकाजतनलि० घरकोधूमसो कुटकी यां
काकादासंकफकारोगजाय ५ अथवा कुटकी सूंठि पीपलि मि
रचि वायविडंग दंत्यूणी सींधेलूण यांकोकाढोरित्तामेंतेलप
कावै पाछैईतेल कीनांसलेतौ कफकागलाकासर्वरोगजाय ६ अ
थवाविष्णुकांताकोकाढोपीवैतौरोहिणीनामगलाकोरोगजाय ७
अथवा विष्णुकांताअस्तांवाहूलीयांदोन्यांनैघोटिपीवैतौ कंठ

४४४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

सालूक तुमकेसरी उपजिङ्क अधिजिङ्क येकहंद हंद गिलयुयेस
 वरोगजाय ८ अथशस्त्रक्रियां करि गलाकोरुधिरकटावैतौ ग
 लविद्रधीनै आदिलेरगलाकासर्वरोगजाय ९ अथकंठकारोगां
 काजतनलि ० कंठरोगांकेविषैलोहीकटावणैं नांसदेणो यांसूं
 कंठआख्याहोय १० अथवा दारुहलद नांवकीछालि इंदजव हर
 डैकीछालि तज यांकोकादोकरि सहतनांषिपीवैतौ कंठकासर्वरोग
 जाय ११ अथवा कुटकी अतीस दारुहलद नागरमोथो इंदजव यां
 कोकादोकरि कादामैंगोमूतनांषिपीवैतौ कंठकासर्वरोगजाय १२
 अथवा हरडैकीछालीकोकादोसहतनांषिपीवैतौ कंठकासर्वरोग
 जाय १३ अथवा भिनकादाष कुटकी सूठि मिरचि पीपलि दारुह
 लद तज त्रिफला नागरमोथो पाठ रसोन मूर्वा तेजबल हलदयां
 कोकादोसहतनांषिपीवैतौ अथवा ईकाकुरलाकरै अथवा यांकी
 सहतसूंगोलीबांधिगोलीमूंदामैंराषैतौ गलाककंठकासारारोग
 जाय १४ अथगलाकासर्वरोगांकीगोली ० तेजबल पाठ र
 सौत दारुहलद पीपलि यांनैमिहींवाटिसहतसूंगोलीबांधै पा
 छैईगोलीनैमूंदामैंराषैतौसर्वगलाकारोगजाय १५ इतिगला
 कारोगांकाजतनसंपूर्ण अथसमस्तमुषरोगांकीउत्पत्ति
 संस्थालिख्यते वायकोमुषरोग १ पित्तको २ कफको ३ अथवाय
 कामुषरोगकोलक्षणलि ० जींका मूंदामैंसर्वचछालाहोयजाय
 अरवांमैंपीड घणीहोयतौ वायकोमुषरोगजाणिजै १ अथपित्तका
 मुषरोगकोलक्षणलि ० जींका मूंदामैंछालालालहोय दाहनैला
 यां अरवेपीलाहोयतीनैंपित्तकोमुषरोगकहिजै २ अथकफका
 मुषरोगकोलक्षणलि ० जींका मूंदामैंछालासुपेदविनापीडहोय

४४५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

अरवांमेषाजिआवै तीनैकफकोमुषरोग कहिजै ३ अथमुषरो
गकोअसाध्यलक्षणलि० जीकाहोगंमेंछालाहोय अरमसू
दांमेंहोय मांसलोहीकाकोपसूंअरत्रिदोषकाकोपसूंभीहोय
सोअसाध्यजाणीजै ४ अथसमस्तमुषरोगांकाजतनलिष०
वायकासुषमेंछालाहोयतौ लूणफिटकडीकाकुरलाकराजै १
अथवां वायनैइर करिवावालातेलकाकुरलासूंयेछालाजाय २
अथपित्तकाछालांकोजतनलि० महलीठी बैरसार यांनैओ
दायईमेंसहतनांषि ईकाकुरलाकरैतौपित्तकासुषरोगकाछा
लाजाय ३ अथवां इधनैगरमकरिखूंघृतसहतनांषिवैकाकु
रलाकरैतौ पित्तरोगकाछालाजाय ४ अथकफकाछालांको
जतनलि० नीलोथूथो फिटकडि यांनैवांदि छालांकैलगवैतौ
अरमूदांकीलारनांषतौजायतौकफकाछालाजाय ५ अथसनि
पातकाछालांकोजतनलि० यांरोगांमेंमूदांकीनसकीसीरछु
उवैतौयेछालाजाय ६ अथवां चंबेडीकापांन गिलवै त्रिफला
जवासो दारुहलद दाष यांकोकादोकरितमैंसहतनांषिईका
कुरलाकरैतौत्रिदोषकासुषकाछालाजाय ७ अथवा कालोनीरो
कूठ इंदजव यांनैमिहींवांदिदांतानीचैदे अरमुषमेंरसजाय तीं
नैथूकतोजायतौ त्रिदोषकाछालाआछाहोय ८ अथवा पटोल
कापांन नींबकीछालि जासुशिकापांन आवलाकापांन चंबेडी
कापांन यांकोकादोकरि पाछैयांकाकुरलाकरैतौत्रिदोषकोसुष
पाकछालाजाय ९ अथवा पटोलकापांन त्रिफला दारुहलद
यांकोकादोकरितमैंसहतनांषि ईकाकुरलाकरैतौत्रिदोषकोसुष
पाकजाय १० अथवा षस पटोल नागरमोथो हरडैकीछालि कु

४४६. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

टकी महलौरी किरमालाकीछालिरक्तचंदन यांकोकादोले अ
थवाईकाकुरलाकरैतौ त्रिदोषकामुषपाकछालाजाय ११ अथवा
तिलांकाडांड कमलकीजड घृतभिआइसहत यांसारानैएक
ठाकरियांकाकुरलाकरैतौ त्रिदोषकामुषपाककाछालाजाय
१२ अथवा हलद नींबकापान महलौरी कमलकीजड यानैतेल
मैपकायै पाछैइतेलकाकुरलाकरैतौ त्रिदोषकामुषपाककाछाला
जाय १३ येसारोजतनभावप्रकासमैलिष्याछै अथमुषपा
ककाइरिफरियाकाओरजतनलि० चंवेलीकापानानैचा
वैतौछालाजाय १४ अथपैरसारकीगोलीलि० पैरसारजा
यफल भीमसेनीकपूर दिवणीसुपारीतज पत्रज नागकेसरि
इलायची कस्तूरी येसर्वबराबरिले यांनैमिहींवांदि पैरसार
काकाढामेंयांकीगोलीबांधैचणाप्रमाण पाछैगोलीमूढामेंराबै
तौ जीभका होठका दांताका मूढांका गलाका तालवाका सर्वरोग
जाय १५ अथइसरीगोली० जायफल कस्तूरी भीमसेनीक
पूर सुपारी यांकीबराबरि पैरसार यांनैमिहींवांदिगोलिकरिसु
षमैराबैतौ मुषकारोगजाय १६ अथवा दासहलद गिलचैचंवे
लीकापान दाष अजवायण त्रिफला यांकोकादोकरिकुरलाक
रैतौ मुषपाकजाय १७ येजतनवैद्यरहस्यमैछै अथमूढा
ऊपरकिछायाइरिहोवाकाजतनलि० गोंद धणै वच गोरों
चन मिरचि यांनैवांदिमुषकैलेपकरैतौछायाजाय १ अथवा
सरसूं वच लोद सींधोलूण यांनैपाणीमैवांदि मुषकैलेपकरै
तौछायाजाय २ अथवा रक्तचंदन मजीठ रूठ लोद प्रियंगु व
उकान्मंर मसूर यांनैजलसूंवांदि लगावैतौछायाजाय ३

४४७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १८

अथवा जायफलनैघसिलगावैतौछायाजाय ४ अथवा आकका
हूधमें हलदनैभेयलगवैतौछायाजाय ५ अथवा मसूरनैहूधसू
पीसियुतमिलायलेपकरैतौछायाजाय कांतिवधै ६ अथवा के
सर कमलकीजड अथवा केसरिरक्तचंदन लौद षस मजीठ
महलौठी पत्रज कूठ गोरोचन दोन्यूं हलद लवण नागकेसरि
केसूला फूलप्रियंगु बडकाअंकुर चंवेलीकापांन गोम सरसू
वच थांकोकाटोकरि ईकाटामेंतैलपकावै मधुरीआंचसू पाछे
ईतैलकोमर्दनकरैतौ मूटांकीछाया कील तिल मस्साउगैरै मूटा
कासर्वविकारजाय ७ इतिकुकुमाद्यतैलम् येसर्वभावप्रका
समेंछै इतिश्रीमन्महाराजधिराजमहाराजराजराजें
द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथे
क्षद्रोगमस्तगरोगनेत्रांकारोगकांनकसर्वरोगनांका
सर्वरोगसुषकासर्वरोगहोरांका मसूटांका दातांकाजीभ-
कातालवाकागलाकायांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणजत
ननिरूपणानामअष्टादशस्तरंगसंपूर्णम् १८ अथसर्वस्था
वरजंगमविषमात्रकी अरयांसूउपज्याजोरोगत्यांकीउत्प
त्तिलक्षणजतनलिख्यते प्रथमविष दोयप्रकारकोछै स्था
वर १ जंगम २ स्थावरविषहैसोदश १० जायंगारहै दृच्छकीजड
में १ पत्रमें २ फलमें ३ पुष्पमें ४ छालमें ५ दृक्षकाइयमें ६ दृ-
क्षकासारमें ७ दृक्षकारसनामगूंदमें ८ धातमात्रहरतालादिक
में ९ कंदनामसींगीमोहरादिकमें १० यादशजायगांस्थावरवि
षरहै अथजंगमविष १६ जायगांमेंरहैसोलि ० मनुष्यादि
कांकीदृष्टिमें १ सर्पादिकांकास्वासमें २ स्नानसृगात्मादिकांकी

४४८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

मादमें ३ सिंहव्याघ्रादिकांकानस्वामें ४ विसमरादिकांकामूलमें
५ मूत्रमें ६ वंदरादिकांकाशुक्रमें ७ हिडक्याजिनावरस्नानसुमा
लमें आदिलेरत्यांकीलालमें विष ९ गरमवस्तुषाई होय इसीजो स्त्री
त्यांका भगमें विष १० अरगरमवस्तु ज्वां पाय होय त्यांकी गुदा में विष
११ सर्पादिकांका कांहाड में विष १२ थोला मांछलानें आदिलेर त्यां
का पित्त में विष १३ भौरादिकांका कांटा में विष १४ भूषक का दांतां
में विष १५ सिंहादिकांका रोग में विष १६ अथ स्थावर विष बायां
जो रोग छै सो लि० स्थावर विष पायां जुर होय हिचकी होय दंत आं
या होय गलोष कड्यो जाय मूंदे जाग आवै छादणी होय अरुचि
होय स्वास होय मूर्छा होय जीमें ये लक्षण होय तदि जाणि जै रै स्था
वर विष पायो छै १ अथ वृक्षादिकांकी जड का विष पावा काल
क्षणलि० वृक्षादिकांकी जड का विष पायां व मन होय मोह होय
बकबो होय १ अथ वृक्षादिकांका पत्र का विष पावा काल क्ष
णलि० जंभाई यणी आवै शरीर कां पै स्वास होय २ अथ वृक्षादि कां
का फल का विष पावा काल क्षणलि० मुषमें सो जो होय शरीर
में दाह होय भोजन मानमें द्वेष होय ३ अथ वृक्षादिकांका पुष्प
का पांवा सूं घिवा काल क्षणलि० छर्दि होय आफरो होय मूर्छ होय
४ अथ वृक्षादिकांकी बकल कर सकाषा बालगावा काल
क्षणलि० बेंका मूंदामें दुर्गंधि आवै शरीर कर डो होय जाय मथ
वाय हो जाय मूंदामें कफ घणो नीसरै ५ अथ वृक्षादिकांका डू
प का विष का पावा काल क्षणलि० मूंदामें जाग आवै गुदा को बं
ध छूटि जाय जीभ भांश हो जाय ६ अथ धातु विष हरतालादिकां
का पावा काल क्षणलि० हियो हूषै मूर्छा होय शरीरमें दाह लागि

४४९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

अरताल बांमें दाह लागे ईविषसूवेगोभामरै अथवा कालांतरसूम
 रे ७ अथकंदविषसींगीमोहरानैआदिलेरतीकाषावाका
 उगैरैकालक्षलि० सींगीमोहरादिकाकाषावासूं मनुष्यादिक
 तत्कालमरिजाय हियोदूषै मूर्छाहोय शरीरमेंदाहहोय तालबो
 बलै - अथस्थावरविषमानकाशङ्कहुवाकाषावाकागु
 णलि० स्थावरविषमानलूषोछै अरऊन्हूछै तीपोछै अरईको
 सूक्ष्मगुणछै अरयोस्त्रीसंघघणोंकरावैछै अरयोसर्वशरीरमें
 तत्कालफेलीजाय अरउगिआवै अरतत्कालईकोपरिपाकहोय
 जायछै अरयेईस्थावरविषमेंदशगुणछै ९ अथस्थावरवि
 षकाषावासूंजोरोगउपजैछैसोलि० विषकालूपापणोंका
 गुणसूं मतिकूविगाडै अरसर्वस्थानकाबंधनैकाटै अरविषका
 सूक्ष्मपणोंकागुणतैशरीरकाअंगअंगमेंओविषबढिजाय अ
 रविषकापराक्रमसूंस्त्रीसंगघणोंकरावै ईगुणथकीशरीरका
 दोषानै अरशरीरकीधातानै अरशरीरकामलनैविगाडै अर
 विषकाशोघपणोंकागुणथकी शरीरकूंकेशदेवै ईवास्तेविष
 कजतनअतिकरिनछै १० अथज्याकाशस्त्राकैविषकी
 पांएलागीहोयत्यांकालक्षणलि० ज्याकाशस्त्राकैविषकी
 पांएलागीहोयत्यांशस्त्राकीज्याकैलागे त्यांकाधावतत्काल
 पकिजाय अरबांधावामोहिसूंलोहीघणोंनीसरै अरवैकोलो
 हीकालोहोय अरजीमेंदुर्गंधिघणीआवै अरजीकोमांसविष
 शेजाय अरजीनैतसलागे अरजीकैतापहोय अरजीकेदाहहो
 य अरमूर्छाहोय येजीमेंलक्षणहोय तदिजाणिजेकहीचैशिश
 स्त्रकीधारकैविषदीयोछै तींकालक्षणाजाणीजै ११ अथजी

कहीं कहीं नैविष दीओ होय तीं काजाणीवाकै वासैं तीं कालस
 एल्लि० विष देवावाला मनुष्य की वाणी की चेष्टा री मूढ़ां की आकृति
 ओर सी होय जाय अर कोइ उनें वूँ पै तदि ओ विष को देवावाले वेनें
 बूँ ज्यों को उत्तर देन हीं अर कह बाकी करै अर ओ विष को देवावाले
 मोह कूं प्राप्ति होय बो ल्यो जाय न हीं अर बो लैं तो मूर्ख की सी तरें बो लैं
 अर आंगुली करि कै पृथ्वी नै बनें अर हस बाला गि जाय अर घर मां
 हि सुं बारे नी सरवा की करै अर ओठी उंठी चारं चार देष तौ जाय अर
 विष का देवावाला को चित्त विपरीत हो जाय ये सर्व लक्षण विष का
 देवावाला मनुष्य में होय छै सो बुद्धिवान वै नै जाणिजै १२ अथ जं
 गम विष जो सर्पादि कसो ज्यों नै काठै त्यां सुं उ पज्या जो रोग
 त्यां का सामान्य लक्षण लि० जो कै कहीं जीना वर का क्यो होय
 तीं नै निद्रा आवै अर वै कै तंद्रा होय अर सर्व ज्ञानें डीजा तीर है अर
 दाह होय अंध्याश आवै अर रोसांच होय अर उंठे सो जो होय अर
 अतीसार होय ईं सर्व लक्षण कहीं विषे लजि ना वर का का ल्या का
 जाणिजै १ अथ सर्पनाम भोगी संमल राजिल जो सर्प त्यां का
 काठि बाका जु दा जु दा लक्षण लि० नाय की प्रकृति वालो भोगी
 पित्त की प्रकृति वालो मंडल नाम कफ की प्रकृति वालो राजिल ना
 म २ ये जो सर्प सो ज्यों नै काठै त्यां कालक्षण लि० भोगी सर्प जी
 नै काठै तीं का दंस की जाय गां काली पडि जाय अर वै कै सर्व वाय क
 रोग उपजि आवै अर संमल नाम सर्प जी नै काठै तीं का काठ बाकी
 जाय गां पीली हो जाय अर कोमल सो जो हो जाय अर वै कै पित्त का
 र्व रोग हो जाय ओर राजिल सर्प जी नै काठै तीं का काठ बाकी जाय
 गां स्थिर सो जो होय अर उंठै पीलो अर चीकणें अर जाग नै लायां

अरजामोवें काटवाकीजायगांलोहीनीसरै अरवेंकैकफकासर्व
 गेहोय २ अथदेशविषैसमेंअरकालविषैसमेंजोसर्पादि
 ककाट्याछैत्यां कालक्षणलि० पीपलकास्थानमेंदहरामेंसमसा
 रमें वेंवाकनैं चहुटाकैमाहि संध्याकैसमें भरणी अरमधानक्षत्र
 केमाहि अरमर्मस्थानकेमाहिजोसर्पादिकयांस्थानांमेंमनुष्यादिक
 नकूंकठैसोमनुष्यमरिजाय ३ अथदूर्वाकरनामसर्पजीको
 फणकंडछीसरीसोहोयतीकाकाट्याकोलक्षणलि० जीको
 फणपहियासिरीसो अथवाछत्रसिरीसो कमलसिरीसो अंडुश
 त्रीसोहोय अरओसर्पउतावलोचालैवेंनेदूर्वाकरसर्पकहिजे
 ४ अथअतनामनुष्यादिकानेंसर्पादिककाट्याहोयत्यां
 कोजंतनकीजेनहीसोलि० अजीर्णवालनैं गरमीकाधिकार
 वालनैं बालकनैं बूढनैं भूषाआदमीनैं घाववालनैं प्रमेहवा-
 लनैं गर्भवतीस्त्रीनैं जीकासरीरमेंरुधिरनहींहोयजानैंयांआद
 म्यांनैंसर्पादिककठैतोंअसाध्यजाणिजै ५ अथवा जीकामूंदामें
 रुधिरधारपडै अरजीकीगुदामें अरइंटीमेंरुधिरकीधारपडैसो
 भीअसाध्यछै ६ अथदूसीविसकोलक्षणलि० स्थावर अ
 थवा जंगमजोविषछै सोघणादिनांकाप्रभावसं वेओषदादिक
 दूसीविषहोयजाय वांकोणजातोरहैरसजातोरहैअरपुराणी
 औषदादिकविसकीषायतौ वेंकेमूर्छाभ्रमवमनादिकहोजाय ७
 अथमूसाकाविषकोलक्षणलि० जठैमूंसेकाट्योहोयतीजा
 यगांलोहीपीलोनीसरै अरउंठेमंफलपडिजाय अरजुरहोय अ
 रुचिहोय रोमोचहोय दाहहोय येलक्षणांकाशरीरमेंहोय न
 दिजाणिजैईनेंमूंसेकाट्योछै ८ अथप्राणहरमूंसाकाविष

४५२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

कालक्षणालि० जीमूसाकाकात्वाथकीमूर्छाहोय अंगमेंसोजोहोय
शरीरकोवर्णऔरसोचैजाय शरीरमेंवेदघणोंहोयजाय दंशका
जायगालोहीघणोंपडै अरजुरहोयआवै सिरभाखौहोजाय ला
लघणीपडै लोहीछादे ईमूसाकाकात्वाथअसाध्यजाणिजै ९ अथ
कीरकाकात्वाकाकात्वाकाविषकोलक्षणालि० किरकात्वाका
कात्वाकीजायगांसोजोहोय अरउंढेजायगांकालीपडिजाय अर
शरीरकानानावर्णहोयजाय अरमोहोहोयआवै अरअतीसारहो
यजाय तदिजाणिजैकिरकात्वाकाकात्वाकोजहरछै १० अथवीं
छुकाकाकात्वाकाविषकोलक्षणालि० जीजायगांशरीरमेंवींछु
काठै तींजायगांअग्निलागिजाय अरउंचोचढै अरउंढेकाटवा-
कीजायगांशरीरफाटवासोलागिजाय ११ अरवींछुकाकात्वा
कोअसाध्यलक्षणालि० जोबिंछुनिपटब्रह्महरीहोय अनंक
मैकाटैतौउंढेअग्निघणीलागै वेंकीजीभथकिजायपीडसूं अर
उंढाकोमांसपडिवालागजाय इसोमनुष्यमरिजाय १२ अथवि
शेलमींडकेकात्वाहोयतींकाविसकोलक्षणालि० विशेलमीं
उकोजीनैंकाठैतींकेवेंजायगांसोजोहोय अरउंढेपीडहोय अरवें
नैंतिसलागै अरनांदघणीआवै अरछादणीहोय १३ अथविसे
लमलुजीनैंकाठैतींकाविसकोलक्षणालि० विसेलमांछलोजी
नैंकाठैतींकाशरीरमेंदाहलागै अरउंढेसोजोहोय अरपीडहांय
१४ अथविसेलजोककाकात्वाकोलक्षणालि० उठेपाजि-
आयेंसोजोहोयअरहोय मूर्छाहोय तदिजाणिजैविषजोकका
कात्वाकोछै १५ अथविसेलविसमरेकात्वाहोयतींकोलक्ष
णालि० उंढेदाहहोय अरसोजोहोय अरपीडहांय पसंवआवै १६

४५३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

अथ कनसलाका काट्याकोलक्षणलि० जीजायगांकनसलेका
ठैतैठैपीडहोय अरपसेवआवे अरउंठेदाहहोय १७ अथमांछ
रकाविषकोलक्षणलि० उंठेपुजालिआवे कौंसोजोहोय अर
मंदपीडाहोय १८ अथवाबनका मांछरका काट्याकोअसाध्य
लक्षणलि० जीनैविसेल मांछरकाठै जीकैपित्तिसीसालालदा
फडयावसिरासाग्रौंटापडिजाय अरउंठेपीडघणीहोय ओअ
साध्यजाणिजै १९ अथविसेलमांषीका काट्याकोलक्षणलि०
जैरेविसेलमांषि अथवाभंवरमांषीजीनैकाठैतीकाविसकोलक्ष
णलिघ्यते जीजायगांकाठैतैकाजीजायगांपडिजाय दाहहोय
मूर्छाहोयजुरहोय अरउंठेदाफडहोय ईकोकाट्योमरिजाय २०
अथसिंहवघेरोची तोजीनैकाठैतीकोलक्षणलि० जीनैसिं
हादिककाठैतीकोघावपकै अरवैमैराधिपडै अरजुरहोयआवे
२१ अथहिडक्यास्वानकोलक्षणलि० जीकासूंदामेंलालपडै
अरओस्तातआंधोहोजाय अरवहरोहोजाय अरओनौचौगड
दाईदौडै अरवैकीसूधीपूछहोजाय अरवैकीडाढीअरकांधोअ
रमांथोघणोंदूबै तीकरिवैकोमूंदोनीचोहीरहै इसास्ताननै अथ
वासिंहस्यालव्याघ्रादिकानैभीहिडक्योहोजाणिजै २२ अथहिड
क्यास्वानादिकजीनैकाठैतीकोलक्षणलि० जीनैहिडक्यास्वा
नादिककाठै तीकैलोहीकालोनीसरै अरवैकोहियोशिरघणों
दूबै अरजुरहोय शरीरवैकोजकडबंधहोयतिसलागै अरउंठे
पाजिआवे पीडहोय शरीरकौवर्णओरसोहोजाय अरशरीरमें
कैशघणोंहोय भांवलआवे दाहहोय काठवाकिजायगांपकै सो
जोहोय उंठेगांठिपडिजाय काट्योजठैफाटिवालागजाय उंठे

फोडा होय आवें येई काल क्षण जाणिजे २३ अथ ईको असाध्य लक्ष
 णलि० जो पुरुष जलमें जाचमें तैलादिकमें स्नान स्थाल नें देवै अरपु
 कार डठै अरवां की सीचेष्टा करिवाला गंजाय अरजल सें मरै ओम-
 रि जाय २४ अथ स्थावर विषं मात्र काजत नलि० स्थावर विष जे
 षापो होय ती नें ओषध्यां सूं वसन करा जेतौ स्थावर विष जाय १ वि-
 ष मात्र गरम छै ई वा सै सीतल सर्व जतन आछ्या २ अथ वा सहत
 घृत संयुक्त विष नें दूरि करिवा वाली ओषदी जेतौ स्थावर विष जा-
 य ३ अथ वा स्थावर विष वाला नें षट् ई भिरचि दी जेतौ ही अरवें
 नें भोजन में साखा चावल कोंदू सीं धोलूण दी जै ५ अथ विष का दू-
 रि करिवा कोले पलि० फूल प्रियंगु कांगणी कीजड पांन बकल
 फूल बीज अरभिरस कोपंचांग त्या नें गोमूत में बांढले पकरैतौ स्था-
 वर विष को रोग जाय ६ अथ वा दूसी विष का दूरि करिवा कोले
 पलि० पीपलि छड लोद इलायची काली भिरचि नेत्र पालो सौं
 नगेरू त्या नें जल सूं मिहीं बांढले पकरैतौ दूसी विष जाय ७ येस
 र्वजतन भाव प्रकास में छै अथ वा चोलाई कीजड नें चांयलां
 कापाणी सूं पीसी पीवैतौ स्थावर विष को दोष दूरि होय ८ अथ जे
 गम विष काजत नलि० अथ मृत्यु पास छे दिघृत लि० हरडै का
 छालि गोरोचन कूठ आक का फूल कमल कीजड नरसल कीजड
 वेत कीजड तुलसी इंदुजव मजीठ जबासो सतावरी सिंगाडायां
 कोकाढो करि तीमें गऊ को घृत पकावै पाछे येस र्व बलि जाय घृत
 मात्र आयर है तदि ई घृत में बराबर को सहत नांषि ई को शरीर कें
 ले पकरैतौ विष मात्र को दोष साप का काळ्या उगैरै सर्व जिनां वर को
 विसहरि होय ई घृत नें पावामें लेप में नांस में दी जै ९ यो भाव प्र

४५५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

कासमेंछै अथसर्पकाविषकादूरिहोवाकोजतनलिप्यते
घृतसहत मांषन पीपलि आदे मिरचि सांथोलूण यांसारंनैमि
हांवांदिपीवैतौ कासासापकौभीकाट्यौआछौहोय १० अथवा
सिरसकाफूलकारसकीसहजणांकाबीजांकैपुटसात ७देपाछैवेंको
अंजनकरैतौसांपकोकाट्यौआछौहोय ११ अथवासुपेदसाटीकी
जडनैपुंष्यार्ककैदिनल्यावै पाछैवेनेंचादलांकापाणीसूंवांदिपीवै
तौ सांपकोकाट्यौआछौहोय १२ अथवींछूकाविषकोजतन
जमालगोदानेंघसिवांछूकाडंककैलगावैतौवींछूकोविषदूरिहो
य १३ अथवा नौसादर हरताल यांनैपाणीसूंवांदि वींछूकाडंक
कैलेपकरैतौ वींछूकोविषदूरिहोय १४ अथवा पलासपापडानें
आककाडूधमेंघसिवांछूकाडंककैलगावैतौ वींछूकोविषदूरि
होजाय १५ अथवा सिरसकाबीजानें बकरीकाडूधमेंवांदि वींछू
काडंककैलगावैतौवींछूकोविषजाय १६ अथवींछूकाविषका
दूरिहोवाकोमंचलि० उ० आदित्यरथवेगेनविष्णुब्राह्मबलेनच
मुपर्णपक्षपातेनभूम्यांगछमहाविष १ ओपक्षजोगपदज्ञा
शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञाभूम्यांगछमहाविष ईमंचस्वार २१ मंच
ऊपरप्राडोदीजैतौवींछूकोजहरउतरै १ अथकनीरकाविषका
दूरिकरवाकोजतनलि० हलदनेंदूधमेंवांदि वेंमेंमिश्रीमिला
यपीवैतौकनीरकोविषउतरै १७ अथधतूराकाविषकाडू
रिहोवाकोजतनलि० चोलाईकीजड अथवा गिलवै त्यानैपी
वै अथवा कपासकोपंचांगनैपीवैतौ धतूराकोविषजाय १८ अ
थआककाविषदूरिहोवाकोजतनलि० तिल दोब यांनैबक
रीकाडूधमेंवांदि लेपकरैतौ आककोविषजाय १९ अथकोंछि

४५६. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

काविसकाइरिहोवाकोलेपलि० घृतकोमर्दनकरैतौकौंछिको
विषजाय २० अथभिलावाकाविषकाइरिहोवाकोजतनलि
सो १०० बारकाधोयाघृतकोमर्दनकरैतौ भिलावाकोजहरजाय २१
अथमांषकाविषकाइरिहोवाकोलेपलि० केसरितगर स्रंदि
यानेंजलसंवांटिलेपकरैतौ मांषकोविषजाय २२ अथभौरमांषी
काविसकाइरिहोवाकोलेपलि० स्रंदि कबूतरकीवीठ विजोरा
कोरस हरताल सांधोलूण यानेंमिहींवांटिउंठेलेपकरैतौभौर
मांषीकोविषजाय २३ अथऊंनराकाविषकाइरिहोवाकोज
तनलि० धूसो मजीठ हलद सांधोलूण यानेंवांटिपाणीसूंलेप
करैतौऊंनराकोविषजाय २४ अथभीडकाकाविषकाइरिहो
वाकोजतनलि० सिरसकाबीजानेंथोहरिकादूधमेंवांटिलेपक
रैतौ भीमकाकोविषजाय २५ अथकनसलाकाविषकाइरिहो
वाकोलेपलि० दापगकातेलकोलेपकरैतौकनसलाकोविषजा
य २६ अथसर्पकाविषकाइरिहोवाकोअंजनलि० जमाल
गोटाकीमींगीकैनींबूकारसकीपुट ७ दे तावडेंसुकावै पाछेइसी
हीतरैलाषकारसकीपुट १ दे पाछेईकोअंजनकरैतौ सांपकोका
ख्योआछोहोय २७ अथहिडक्योकुत्तोसपालउगैरैकाठैतांको
जतनलि० योजिनावरजठैकाठैतांजागांकोलोहीकटायनांषि
जै अथवाउंठेलोहकीसलाकासूंदाहृदाजैतौकुत्तासपालउगैरैको
विषइरिहोय २८ अथवाधतूराकोरसदका १ आककोदूधदका १
घृतदका १ यानेंमिहींवांटियांकोलेपकरैतौहिडक्यागंडककोवि
षजाय २९ अथवाधतूराकाफलनैबीजांसमेतले पाछेचौलाई
कीजडकारससूंवांटै अथवागोभीसहनसूंवांटै पाछेलेपकरैतौ

४५७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग १९

हिडक्याकुत्ताकोविषजाय ३० अथवा मांस आककोदूध तेल गुड
यांचास्नानेबराबरिले पाछेंदंक १० जेनांदिन ७ घायतौ ईकोविष
जाय ३१ अथवा ईमंत्रसूँ एकसौआठ १०८ आहूतिदेजीनेहडको
स्नानकाव्योहोयतीनेचोहेंदे अथवा नदीकीतीरचौकोदिवायवेने
स्नानकराय आपगयिनहोय ऊंठेईमंत्रसूँ होमकरै एकसौआठ
आहूतिदे पाछेंमाभसूँ ईकेजाडोदेतौ ईकोविषऊतरे अथमंत्र
लिष्यते अलकाधिपतेयक्षसारमेयगणाधिपः अलकजुष्टमे
तमेनिर्विषंकुरुमाचिरात्स्वाहा इतिमंत्रः अथवा गुड तेल
आककोदूधयांकोलेपकरैतौस्नानकाकाव्याकोविषदूरिहोय ३२
अथवा कूकडाकीवीठकोलेपकरै अथवा कुबारकापाठाकीमिरि
सांधोल्हण येवेंऊपरिदिन ५ बांधेतौस्नानकोविषजाय ३३ अथ
वा चौलाईकीजड तुलसीकीजड वच यांनेचावलांकापाणीमेंवां
दिदिन ७ पीवैतौस्नानकोविषजाय ३४ अथवा चौलाईकीजड
कोरस अरघूतचोषयेमिलायदिन ७ घायतौ स्नानकोविषजा
य ३५ अथवा कडवातंबीकीजड दंक ४ सूँदरंक ४ मिरचिदंक ४
नांवकीनिबोलीदंक ४ जमालगोटासोधादंक ९ निसोतदंक ७
यांनेमिहींवांदि गुडमेंगोलाबांधीदंक ११ भरकी गोली १ गरमपा
णीसूँदिन ७ तथा १४ लेतौहिडक्यास्नानकोविषजाय ३६ अथ
वा कडवातंबीकीजड हांगलू सोधाजमालगोटा मिरचिफुला
गोसुहागो येबराबरिले लांकीरती २ भरकीगोलीचौलाईकारस
मेंबांधै गोली १ तातापाणीसूँदिन ७ लेतौस्नानकोविषजाय अ
जेठेकाव्योहोयतेंदें ईगोलीनेमूतसूँ घसिलगावैतौमूतमेंहोय
लरगिरिपडै ३७ इतिस्नानकाविषकाजतनसंपूर्णसूँ

४५८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरेग २०

इतिस्थावरजंगमविषमात्रकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम्

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसुभा

ईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथस्थावरजंग

मविषमात्रकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणना

मएकोनविंशतिमस्तरंगःसंपूर्णम्१९ अथस्त्रियांकाप्रद

रनेंआदिलेरसर्वरोगांकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते

अथप्रदररोगकीउत्पत्तिलिख्यते विरुद्धभोजनसंघणाम

द्यक्षापीवासूं भोजनउपरिभोजनकस्यांसूं अजीर्णसूं गर्भकाप

डिबासूं अतिमैथुनसूं असवारीकाचढवासूं मार्गकाचाडिबासूं

सोचसूं अतितिक्ष्णपणसूं भारकाचहवासूं चोटकालागीवासूंदि

नकासोवासूं स्त्रियांकेबायपित्तकफसन्निपातयेकोपहूंप्राप्तिहोय

प्रदरकारोगनेंयेपेंदाकरैछैं सोप्रदरकोरोगस्त्रियांकेचारि४प्रकार

कोछैं बायको१पित्तको२कफको३सन्निपातको४ अथप्रदर

कोसामान्यलक्षणलि०स्त्रीकीजोनिमाहिंसूंनानघ्नकारको

लोहोविनांहोरितुनीसरें अररुधिरनीसरतांहाडफूटशीहोय

सर्वशरीरमेंअरपीडचालैं तीनेंप्रदरकोरोगकहिजै१ अथबाय

कापेंरकोलक्षणलि०वैकीजोनिंकैलोहोहोहोय अरजागनें

लीयांहोय अरथोडोथोडोजाय अरपीडनेंलीयांहोय अरमांसका

पाणोंमिरिसोजाय१ अथपित्तकापेंरकोलक्षणलि०वैकीजो

निकालेहोपीलोजाय नीलोसुपेदाईनेंलीयां अरलाल अरउद्ध

यणोंजाय अरसरीरमेंदाहहोय येपित्तकालक्षणछैं२ अथकफ

कापेंरकोलक्षणलि०जीकेअधिरगुंदजरीरांजीकाले अरका

चों अरपालो अरगुलावकाजलसगीजांजाय तीनेंपदकाहहिजै१

४५९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरेण २०

अथ सन्निपातकापैरकोलक्षणाणि • सहतसिरिशो अथवा
घृतसिरिशो हरतालसरीशो माथाकीभेजीसरीसौ मुरदाकीदुर
गंधनेलीयां जीकोलोहीजाय सौत्रिदोषकोजाणिजै ४ अथरू
धिरकाघणाजाचाकाउपद्बलि • रुधिरघणोंजायत्तदिक्रो
दुर्बलहोजाय स्रमहोय मूर्छाहोय मदहोय तिसघणीलागै दाह
होय प्रलापहोय शरीरपीलोहोय तंद्राहोय अरबायेंकाऔर
भीरोगहोय ५ अथप्रदरकाअसाध्यलक्षणाणि • जोनिमाहि
संनिरंतररुधिरचालबोहीकरैरैहैनहीं अरतिसहोय दाहहोय
अरशरीरमेंजुरहोय शरीरदुबलोहोय वनेंअसाध्यजाणिजै ६
अथशुद्धआर्चवनामस्त्रीधर्मकोलक्षणाणि • जीस्त्रीकीजो
निकोरुधिरमहीनांकीमहीनेंसुसाकारुधिरसिरिशोनीसरैजी
रुधिरमेंदाहनहीं अररुधिरनीसरतांपीठनहीं अरपांच ५ रा
त्रिताईनीसरै अरघणोंनीसरैनहीं थोडोभीनीसरैनहीं तांनैशु
द्धस्त्रीधर्मपणोंजाणिजै ७ अथस्त्रीधर्मपणोंसोला १६ दि
नतांईरहैछै अथप्रदररोगकोजतनलि • संचरलूणजीरो
महलौठी कमलगट्टा यांकोकादोसहतनांभिलेतौ बायकोपैर
कोरोगदूरिहोय १ अथवा महलौथटक १० भिआटक २ यांनैम
हांवाटिबाबलोंकोपाणीसूलेतौ पित्तकापैरकोरोगजाय २ अथ
वारसोतटक २० • कोलाईकीलडकोरसदका थाजीमेंसहस्रमिल्ला
यादिन ७ पीवैतौसर्वप्रकारकी पेरकोरोगजाय ३ अथवा आसा
पालाकीबकलकोकादोकमितांमेंदूधनांभिपीवैतौ घणोंभीपेरको
रोगजाय ४ अथवा माभकीजडमेंचावलांकापाणीसूवां टवेंनौदिन
३ पीवैतौपेरकोरोगजाय ५ अथवा कडूबरकीबकलकोरसनीमें

४६० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

सहतनांषि अथवा मिश्रीनांषेतीमेंचावलांकोपाणीनांषिपीवैतो
 पैरकोरोगजाय ६ अथवा दारुहलद रसोत चिरायतौ अरुडसो ना
 गरमोथो रक्तचंदन आककाफूलयांकोकाढोकरै तमेंसहतनांषि
 पीवैतो लालअरसुपेद अरपीला सर्वप्रकारकास्त्रीकापैरकारोग
 जाय ७ इतिदार्वादिक्वाथः अथवा गूलरिकाफलानेंसुकाय
 करिपाछेंवैनेमिहांवांढि यांमैमिश्री सहतमिलाय बांकीगोलीबांधै
 टका १। भरकी पाछेंईगोलीनौदन ७ पायतौपैरकोरोगजाय ४ अ
 थस्त्रियांकेपैरकोभेदसोमरोगहोयछैतांकोलक्षणस्थिते
 स्त्रियांकाघणाप्रसंगकरिकेंसोचतैंपेदकाकरिवाकरिकेंजहरका
 संजोगतैं अतीसारकीसानांईस्त्रियांके अथवापुरुषांकेभीसोम
 रोगहोयछै बारंवारमूतैं घणोंउतरै ईकोनामसोमरोगकहिजै
 - अथसोमरोगकोसामान्यलक्षणलि० सुंदरहैस्वरूपज्या
 कोइसीजोस्त्रीयांत्यांकेयोनिमार्गमेंहोय मूतवारंवारबहोतचलै
 वैस्त्रीदूरबलीहोयजाय बांकेसुषयडीयेककोभीहोयनहीं घणां
 मूतकेंआगे बांस्त्रियांकोसिरसिथलहोजाय मूंदोअरतालवोबां
 कोसूकिवोकरै अरबांकेमूर्छाहोय जंभाईघणीआवै अरबांके
 प्रलापहोय बांकीत्वचालूषीपडिजाय अरभोजनादिकांमेंवेतधि
 होयनहीं येलक्षणजामेंहोयतानेंसोमरोगकहिजै १ अथसोम
 रोगकोजतनलि० पक्काकेलाकैमिश्रीलगायपायतौसोमरो
 गजाय १ अथवा आवलाकारसमेंसहतनांषिपायतौसोमरोग
 जाय २ अथवा उडदांकोचून गहलौठी अरविदारिकंद यांनैमि
 हांवांढि तांमेंबरात्रिकामिश्रीमिलायटका १। भर दूधसंरोजीनां
 दिन १० छेतौसोमरोगजाय ३ अथसुपेदपैरजावाकोजत

४६१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

नलिष्यते आंवलाकाबीजदंक ५ तानैजलमें भेय बांटे छांणी तीं
 में सहत मिथीनां धिरोजीनां दिन १५ पीवैतौ सुपेद पैर को रोग जाय ५
 अथ सूत्रातीसार को लक्षण लि० सो रोग घणादि न रहै तदि सू
 त्र अतीसार होय ई सूत्र अतीसार में बल जातोर है अरसूत यणों
 ऊतरे ६ अथ सूत्रातीसार को जनन लि० ताल हृक्ष की जड छवा
 रा मंहलौवा विदारी कंद यानै मिहीं बांटे ईमें सहत मिथी मिलाय द
 का १ भरसोजीनां धायती सूत्रातीसार जाय ७ अथवा पंवाड की जड
 नै चांवला का पाणी सूपी वैतौ सूत्र अति सार जाय ८ अथवा सुपेद सू
 सडी ताल हृक्ष की जड छवा रा पका के ला यानै दूध सूपी वैतौ सूत्र अ
 तिसार जाय ९ अथ प्रदर का और जनन लि० ऊं दरा की मांगणी
 दंक २१ ईमें बराबर की मिथी मिलाय दूध सूं दिन ३ पीवैतौ स्त्री का
 लाल सुपेद सारी तरै का पैर आछ्या होय १० अथवा धावडा का फू
 ल बीजा बोल मूसा की मांगणी ये बराबर लेयां मै मिहीं बांटे ईमें
 मिथी मिलाय दंक २१ जल सूं लेतौ प्रदर को रोग जोय ११ इति प्र
 दर रोग की उत्पत्ति लक्षण जनन संपूर्णम् अथ स्त्रियां की
 योनि रोग की उत्पत्ति लक्षण संध्या लि० स्त्रियां कै मिथ्या अहार
 मिथ्या विहार करि कै गाय पित्त कफ है सो दुष्ट हुवाथ का स्त्रियां की
 योनि कै विषे रोग नै करै छै सो स्त्रियां की योनि कै विषे बीश प्रकार
 का रोग छै त्यां कानां मलिष्यतै उदावर्त्त १ वंध्या २ विपुता ३ परिपुता ४
 वातला ५ लोहित क्षरा ६ दुःप्रजाविनी ७ वामिनी ८ पुत्रघ्नी ९ पि
 त्तला १० अत्यानंदा ११ कर्षिनी १२ कर्षिका १३ अतिचरणा १४ अन
 चरणा १५ अगर्त्तवा १६ अस्तनी १७ पंडी १८ अंडनी १९ विदृता
 २० सूतीवल्का २१ अथ स्त्रियां की योनि काल लक्षण लि० जो स्त्री

स्त्रीधर्महोतां रुधिरवडाकष्टमूच्छांडै आगनें लीयांतीनें उदावर्तजोनी
 कहिजै १ अरजोस्त्रीस्त्रीधर्महोयनहींतीनें वंध्यायोनि कहिजै २ अर
 जीकीयोनिमें नित्यही पीडा रहै तीनें विपुताजोनि कहिजै ३ अरजोस्त्री
 कैस्त्रीधर्महोतां यणी पीडा होय तीनें परिपुताजोनि कहिजै ४ अरजी
 कीजोनि कठोर होय अरजोनिमें सुलचाले जीनें चालतजोनि कहिजै
 ५ अरजीकीजोनिमें दाहरहै अरलोहीनीसरबोकरै तीनें लोहितश
 र्णजोनि कहिजै ६ अरजीकीजोनी सुखबोकरै अरकुपितरहै तीनें
 दुःप्रजाविनीजोनि कहिजै ७ अरजीकीजोनिमें संतान दोह
 रा होय ८ अरजीकीजोनिमें यवनसंयुक्तवीर्यनीसरे रुधिरनें
 लीयां तीनें यामिनीजोनि कहिजै ९ अरजीकीजोनिमें गर्भरहि रहि जाय
 अरपाछै जातोरहै तीनें पुत्रघ्नीजोनि कहिजै १० अरजीकीजोनिमें दा
 हघणोरहै अरपकिजाय शरीरमें खुररहै तीनें पिच्छलायोनि कहिजै
 ११ अरजीकीजोनिमें सुनमैं संतोष कूं नही प्राप्त होय तीनें अत्यानंद
 जोनि कहिजै १२ अरजीकीजोनि फूलकें आकार होय अरवें
 में फललोहीनीसरबोकरै तीनें वणीनीजोनि कहिजै १३ अरजीजो
 निमें वीर्य रहै नहीं तीनें अनचरणाजोनि कहिजै १४ अरजीकीजो
 नि पटछोटा स्तन होय तीनें अस्तनीजोनि कहिजै १५ अरजीकीजो
 नि घंडित होय अरमें खुनकरतां वयूं नीचै लटकियावै तीनें पंडाजो
 नि कहिजै १६ अरजीकीजोनि को लट्ठ द्रसूक्ष्म होय तीनें अंडनीजो
 नि कहिजै १७ अरजीको घूंटे वदो होय तीनें महाजोनि वदताक
 हिजै १८ अरजीकां मूत्रोत्प्रेमिरासां होय तीनें सूखा वक्राजोनि कहि
 जै १९ अरजीको निरुद्रो गव्वा उन्मत्ति २० दिनका सोवा मूं अ
 निको धका करि वासूं षे दसूं अति गैयुन का करि वासूं जोनि उपरि

४६३- अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

कहींतरैकीचोटलागिवासूं अथवा जोनिकै नषदांतकालागिवा
सूं येकुपितहुवाजोवायपित्तकफसोजोनिकैविषैं जोनिकंदनाम
येकरोगनेउपजावैछै १ अथजोनिकंदरोगकीस्वरूपलिख्यते
जोनिकैमांहियेकगांठिराधिलोहीनैलीयांवडहलकाफलसिरीसी
उपजैछै सोपाछैकारणकह्यातांसंवेनैवध्यकहैछै अरजोनिकं
दनामभारोगकहैछै १ औजोनिकंदनामरोगचारिप्रकारकोछै
वायको १ पित्तको २ कफको ३ संनिपातको ४ अथवाथकाजो
निकंदकोलक्षणलि० वाजोनिमांहिलीगांठिलूबीहोय वैकोव
र्णआख्योनहींहोय अरजोनिकावर्णसिरीसोवेंगांठिकोमूढोफा
ल्योहोय वेंनैवायकोयोनिकंदकहीजै १ अथपित्तकाजोनिकं
दकोलक्षणलि० वाजोनिमांहिलीगांठिदाह्नैलीयांहोय अर
लालहोय अरवेंसेतीजुरहोयआवे ईनैपित्तकोजोनिकंदकहीजै
४ अरजीस्त्रीकैयोजोनिकंदरोगहोयछै वास्त्रीचांजहोयछै वा-
स्त्रीस्त्रीधर्महोयनहीं २ अथवंध्यास्त्रीकाजंतनलि० जोस्त्री
स्त्रीधर्महोयनहीं वास्त्रीनित्यमांछलाकामांसनैषायतौस्त्रीध-
र्महोय १ अथवाकांजीनित्यप्राय अथवा तिलनित्यप्राय अथ
वा उडदनित्यप्राय अथवादहीनित्यप्रायतौवास्त्रीस्त्रीधर्महोय
तदिवेंकोवंध्यापणांकोदोषदूरहोय २ अथवा साठकाबीज क
डबीतूंबी दांत्युणी पीपलि गुड मेंदल दारुकोफावो जवषार
थोहरकोदूध यांसारानैयेकतामिहींवांठिजोनिमेंईकीवातीदे
तौवास्त्रीस्त्रीधर्मतत्कालहोय अरवेंकोवंध्यापणांकोदोषतत्का
लदूरहोय ३ अथवा मालकांगणीगईविजयसार वच यांनैमिहींवां
ठिसीतलजलसूदिन ५पीवैतौवास्त्रीस्त्रीधर्महोय अरवेंकोवंध्या

४६४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग - २०

पलौंजाय ४ अथवांस्त्रीकेपुत्रहोवाकोजतनलि० चरैदी
गंगेरिक्कीछालि महुवो बडकाअंकूर नागकेसरि येवराबरि
ले त्यानेमिहींवांदि गडकाइधमेंसहतनांधिदंक ५ ईच्छुर्णनेरो
जीनांदिन १५ पीवैतौ बंध्यास्त्रीकैनिश्चैपुत्रहोय ५ अथस्त्रीस्त्री
धर्मनहींहोयतोंकोजतनलि० कालानिल सूरि मिरचि पीप-
लि भाडंगी गुड यांसारानेंदंक १॥ भर औदायईकोकाढोकीरदिन
१५ पीवैतौवास्त्रीस्त्रीधर्मनिश्चैहोय अरवेंकासुधिरकोगुल्मइरि
होय अरवेंकैपुत्रहोय ६ अथवा असगंधकाकाढामेंगडकोइ
धअरगडकोघृतमिलायरितुकैसमेंस्त्रीपरभातदिन ५ पीवैतौ
स्त्रीगर्भनेंधारै ७ अथवा सुपेदकल्यालीकीजडपुष्पनक्षत्रकैदि
नउपाडीहोयतीनेंदंक २॥ मिहींवांदिइधकीसाधिरितुकैसमें
दिन ३ स्त्रीपीवैतौस्त्रीनिश्चैगर्भनेंधारै ८ अथवा कटसेलाकीज
ड धावडया बडकाअंकूर कमलगट्टा यांनैमिहींवांदिदंक ३॥ रि-
तुकैसमेंस्त्रीपीवैतौनिश्चैस्त्रीगर्भनेंधारै ९ अथवा पार्श्वपीपल
कीजड अथवा ईकाबीज अरसुपेदजीरो अरसरपंपायेवराब-
रिलै यांनैमिहींवांदिदंक ३॥ रितुकैसमेंस्त्रीइधकीसाधिलेतोंवेस्त्री
कैकगर्भरहै निश्चैहोवेंकैपुत्रहोय १० अथवा जोस्त्रीगर्भवती
होय वास्त्रीछीछीकायेकेक १ पाननेंगडकाइधकीसाधिपीवैतौ
निश्चैही वेंकै पराक्रमापुत्रहोय ११ अथवा बाराहोकंद अरकम-
थ अरशिवलिंजी यांनैमिहींवांदिरितुकैसमेंदंक ३॥ इधकैसाधि
जोस्त्रीलेतोवेंकैनिश्चैपुत्रहोय १२ येसर्वजतनभावप्रकाशमेंछै
अथवा विजोराकाबीजानें गडकाइधमेंसिजावै पाछेवांमैगड-
कोघृतमिलाय अरवेंवराबरिनागकेसरिमिलायरितुकैसमेंदंक

४६५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तैरंग २०

मिश्रीकैसाधिदिन ७ स्त्रीघायतौ स्त्रीगर्भनैधारे १३ अथवा अरं
डकीअरंडोली अरविजोराकाबोज यादोन्यानें घृतसंघोषिदूधके
साधिरितुकैसमेंस्त्रीदिन ३ पीवैतौस्त्रीगर्भनैधारे १४ अथवा पीप
लि सूरि मिश्रि नागकेसरियांनैमिहांनांशिरितुकैसमेंस्त्रीघृतकैसा
धिदिन ३ पीवैतौस्त्रीगर्भनैधारे १५ येसर्वसंग्रहमेंलिप्याछे ॥
अथगर्भनहींहवाकीओषदिलि० पीपलि रायबिडंग मुहागो
येबराबरिले यांनैमिहांनांशिरितुकैसमेंस्त्रीदिन ५ जलसूलेतौस्त्री
गर्भनैकदेभीधारेनहीं १७ अथवा पुराणोगुडडका ११ भरतीनें ओ
रायिरितुकैसमेंस्त्रीरोजिनादिन १५ पीवैतौस्त्रीकदेभीगर्भनैधारे
नहीं १८ अथवा निबोलीकातेलकाफोहानैस्त्रीरितुकैसमेंयोनि
मांदिधरणिमौदिन ५ देतौस्त्रीगर्भभीकदेधारेनहीं १९ येभावप्र
काशमेंलिप्याछे अथस्त्रीकीजोक्रारोगांकाजतनक्रमसं
लि० तगर कट्याली कूठ सींधोलूण देवदारु यांकोकाढोकरि ईका
ढामेंतेलपकावै पाछैईतेलनैस्त्रीजोनिमेंफोहासूराषैतौस्त्रीकी
विपुताजोनिकोरोगजाय २० अरवायकाजोनिकारोगांकाडूरि
करिवाकैवास्ते पाडलकापानानै अथवावैकीवकलनैसजाय
वैसंजोनिनेपसेवजुक्तकरै अरधौचौकरैतौवायकाजोनिकारोग
जाय २१ अथपित्तकाजोनिकारोगांकाडूरिकरिवाकैवास्ते
तिलांकतेलमेंनिबोल्यानैपकाय ईतेलसूंयोनिमेंसेकैतौपित्त
काजोनिकारोगजाय २२ अथवा पित्तनैहरवावालीओषदिको
घृतत्यांसूंयोनिनैसेकैतौपित्तकाजोनिकारोगजाय २३ अथवाआ
बलाकारसमेंमिश्रानांशिरिदिन १० पीवैतौस्त्रीकीजोनिदाहजा
य २४ कूकरभंगराकीजडकारसनैचावलांकापाणीकैसाधिरिस्त्री

४६६ अमृतसागर तन्वाप्रतापसागर तरंग २०

पवित्रैस्त्रीकीजोनिमेंराधिपडतीहोयसोदूरहोय २५ अथवा नौ
बकापांन किरमालाकापांन वच अरडूसाकापांन पटोलकापांनयां
नैऔरायईसेतीजोनिनैंधोवैतौजोनिकीडुगंधीजाय २६ अथवापी
पलि मिरचि उडद सौंफ कूठ सींधोलूण यांनैऔराय ईसूंजोनि-
नैंधोवैतौजोनि काकफकारोगसाराजाय २७ अथजोनिसेको
चनकीऔषदिलि मूंगकाफूल घैरसार हरडै जायफल मांजू
फल सुपारी यांनैमिहींवांदिमिहीवस्त्रसंछाणि स्त्रीजोनिमेंराधैतौ
स्त्रीकीजोनिसेकीर्णहोय २८ अथवा कौंछिकीजडकाकादासूंजो
निनैंधोवैतौस्त्रीकीजोनिगादीहोय २९ अथवा भांगिनैमिहींवांदि
ईकीपोटलीकरिस्त्रीजोनिमेंराधैतौ स्त्रीकीभगमहासंकोचनहोय
३० अथवा मोचारसनैमिहींवांदि ईकीपोटलीकरिस्त्रीजोनिमेंरा
धैतौस्त्रीकीजोनिसेकोचकूं प्राप्तिहोय ३१ अथवा आंवलाकीजड
कसेलो बौलकीजड अरबोरकीजड अरडूसाकीजड मांजूफल यां
सारानैऔराय पाणासूंजोनिनैंधोवैतौजोनिसेकोचहोय ३२ अथ
वा दहीसूंजोनिनैंधोवैतौजोनिसेकोचहोय ३३ अथवा सुपेदफि
टकडीनैकुलाय धावल्याकाफूल मांजूफल यांनैमिहींवांदिपोट
लीकरिभंगमेंमेलैतौ स्त्रीकोभगसंकोचहोय ३४ इतिभगसंको
चन० अथजोनि कासर्वरोगांकादूरिकरिवाकोफलघृतलि
मजीठ महलोठा कूठ निफला मिश्री घुरैटी मेद असगंध अज
मोद दोन्धूलद फूलपियंगु कुटकी कमलकीजड दापरक्तचं
दन चंदन येसाराअधेलाअधेलाभरिले अरगळकोघृतसेर ३५ ले
सतावरीकोरससेर ३४ ले पाछैईनेमधुरीआंचसूपकाधै यसर्व
बलिजायघृतमात्रआयरहै तदिईघृतनेमनुथ अथस्त्री

४६७ अमृतसागर तथा प्रतापसागरतरंग २०

जिनां टका १। भरपी वैतौ औ पुरबन पूंसक भी होयतौ महाकामीव
हो पराक्रमी पुत्रानें उ पजावावा लोई फल घृत का प्रभाव संहोय अ
रस्त्री ई घृत नैं पायतौ स्त्री की जीनिका सर्वरोग जाय अरवैं कै ई घृ
त का प्रभाव संपुत्र होय दीर्घायु बल बालो बुद्धि वान ३५ अथ जो
निकंद रोग का जतन लि० गेरू वाय किडंग हलद काय फल यां
नैं मिहीं बांटे त्रिफला का कादासं तमिस्र हतमिलाय ई चूर्ण नैं स्त्री
योमि में राबैतौ स्त्री की जीनिकंद रोग जाय ३६ अथ गर्भिणी-
स्त्री का रोग का जतन लि० जो स्त्री को गर्भ नीसरतौ होय तौ स्त्री
नैं फांऊ रूष की जड अतीस नागरमोथो मोचारस इंरुजव यां
को काटो करि देतौ वै स्त्री को गर्भ पडतौ रहै ३७ अथ गर्भिणी स्त्री
की जुर को जतन लि० महलोदी रक्तचंदन षस गौरी सर कमल
की जड यां को काटो मिश्रास हततां पिपी वैतौ गर्भिणी स्त्री की जुर
जाय ३८ अथ गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी को जतन लि० चाव
लां का सातू लैं आम की चरजा सुशिकी बकल का कादासूं लेतौ गर्भि
णी स्त्री की संग्रहणी जाय ३९ अथ वा फांऊ रूष की बकल अरलू की
बकल रक्तचंदन षरैं टी धणों कुडा की छालि नागरमोथो जवा
सी पित्त पोपडो अतीस यां को काटो गर्भिणी स्त्री लैंतौ वै का अती
सार नैं संग्रहणी नैं जुर नैं डरि करै ४० अथ स्त्री का गर्भ का पड
वां को अर गर्भ का अर की उत्पत्ति लक्षण लि० यणामेथुन का
करि वासूं मार्ग का चालि वासूं असवाश का चट वासूं पैद का पीड
का चाल वासूं जुर का आ वासूं उपवास का करि वासूं चोट काला
गि वासूं अजीर्ण में भोजन करि वासूं दौडि वासूं वमन का करि वासूं
जुलाब काले वासूं तीषी कडवी गरम लूणी वस्त का पा वासूं बि

अमृतसागर तत्रैव वासं भयका आवासे इतनी वस्तांस्तु स्त्रीकै
 गर्भकोपडवौ अरगर्भको आब होय छै पेटमें सुलचालिकै ४१ अथ
 गर्भका पडिवाको अरगर्भका स्त्रावको पूर्वरूपलि० स्त्रीकै गर्भ
 रक्षा पाछै आरि महीनां माहि गर्भ पडै तानै गर्भ पात कहि जै अठै दशं
 तदी जै जै सै दृष्ट कै लघो फल नहीं की चोट लग्यांगिर पडै तै सै रुजो
 ही गर्भ कहि तरे की चोट लग्यांगिर पडै ४२ अथ गर्भ अवतार
 तीं का थंभिवा को जत नलि० कमल की जड कमल की नाल कम
 ल का फूल महलौरी यां नै दूध की साधि औराय पीवै तौ गर्भ का आ
 व पडतौ थंभै प्रयोही गर्भिणी स्त्री का दाह नैं तिस नैं मूर्छा नैं छ
 दिनैं अरु चिनैं दूर करै ४३ अथ गर्भ पात का उ पदवलि प्यते
 स्त्रीकै गर्भ पडै तदि दाह होय सुलचालै पसवाडा में अरपी गीमें पा
 ड होय अरपैर बूटि जाय अरगू नऊतरे नही अरगर्भ और स्थान
 में जाय तीं कै भीये ही उ पदव होय ४४ अथ गर्भ पडतौ होय तीं
 का थांबवा का जत नलि० उभ की जड कांस की जड अरंड की ज
 ड गोषरु की जड यां में गऊ को दूध औराय गर्भिणी पीवै तौ बंका
 हिया उगै रै की सुल जाय ४५ अथवा गोषरु महलौरी कस्याली
 मदन बाण का फूल यां नै गऊ का दूध में औराय ई दूध नैं स्त्री पीवै तौ
 गर्भ पडतौ र है अर स्त्री का शरीर की सर्व प्रकार की वेदना जाय ४७
 अथवा कुंभार का चाना क की मांढि गेरु चबेली मजीठ धावड़ा
 का फूल रसोत राल यां को चूर्ण करि दंक ५ स्त्री सहत सुलै तौ स्त्री का
 पैर उगै रै सर्व रोग जाय ४८ अथवा भृंग जिनांवर का पद की मांढा म
 जीठ लजातू किसो स्त्री दान की जड यां नै गऊ का दूध में औराय
 ई दूध नैं स्त्री पीवै तौ स्त्री को गर्भ पडतौ र है ४९ अथ गर्भिणी स्त्रीकै

४६९ असृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

आफरो होयती कोज तनलि० डामकीजड दोबकीजड बचरसो
त हींग संचरलूण यांनैँइधमैँओराय पाछैँईनेँपीवैँतौ स्त्रीकीआफरो
जाय ५० अथगभिणीस्त्रीकैँमूत्रनेँनहींती कोज तनलिष्यते
डामकीजड दोबकीजड कांसकीजड यांनैँइधमैँओराय ईँइधमैँ
स्त्रीपीवैँतौ स्त्रीकैँमूत्रउतरे ५१ अथमहीनांकीमहीनैँयेँओ
षट्तिदेँतौ स्त्रीकैँगर्भपडैँनहींसोलि० महलौठी सालहृक्षकाबी
ज बीरकाकोली देवदारु लूणक्यौ कालातिल रामपीपलिसताब
रा कमल कीजड जवासौ गौरीसर रास्ना दोन्युकट्याली सिंघाडा
किसोखा दाष भित्री यांनैँओरायपीवैँतौ महीनांकीमहीनैँदिन ७
तौ स्त्रीकैँगर्भपडैँनहीं अरओरउपडवहोयनहीं येसाराजतनसा
त ७ महीनांतांईकीजे ५२ अथआठचामहीनांकाजतनलि०
कैथकीजड कट्यालीकीजड वीलकीजड पटोलकीजड सादीकीज
ड यांनैँइधमैँपकाय ईँइधनैँपीवैँतौगर्भपुष्टरहे ५३ अथनवमा
महीनांकोजतनलि० महलौठी जवासौ बीरकाकोली गौरीस
र यांनैँअधेलाअधेलाभरिले पाछैँयांनैँइधमैँओराय इधनैँपी
वैँतौगर्भपुष्टरहे ५४ अथदशमामहीनांकाजतनलि० स्रंठि
बीरकाकोली यांनैँइधमैँओराय इधपीवैँतौ अथवा स्रंठि महलौ
ठी देवदारु बीरकाकोली कमलगट्टा मजीठ यांनैँजलमैँओराय
जलनैँइधमैँओरावैँ पाछैँयोपाणीबलिजाय इधआयरहे तदि
ईँइधनैँपीवैँतौ स्त्रीकैँगर्भपुष्टरहैँनिरोगरहे अरईँस्त्रीकैँकहींतरे
कोउपडवउठैँनहीं ५५ अथवायकरिगर्भसूकिजायतींका
जतनलि० जीस्त्रीकोचायकरिगर्भसूकिजाय तींस्त्रीकोउदरप
रिपूर्णहोयनहींघालीरहे तदिस्त्रीस्त्रीछैँसोपुष्टाईँनेँनीयाँइध

४७० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

मांसरस और पुष्ट औषधि पाय अरु दूध पीवै तदिवाय दूर होय गर्भ
परिपूर्ण होय ५६ अथ गर्भ का बाल क का होय बा का महीना लि
व्यतै स्त्री है सो नव मै महीने अथ वा दश वै महीने संतान नैं उ प जावै
छे अर को ये क स्त्री है सो ग्यार वै अथ वा बारा वै महीने संतान नैं उ प
जावै छे अर यां महीना उ परांत जो गर्भ है ओ गर्भ विकार को जाणि
जै तदि ई गर्भ का उदर का रोगां मै गणि अर वै को जतन कीजै ५७
अथ स्त्री कै सुषुं प्रसव होवा को जतन लि ० सां प की कांच
ली मर वो यां दोन्यां की भग मै धूणी देतौ स्त्री सुषुं संतान नैं जणै
अथ वा कल हारी की जड नैं स्त्री हाथ पगां कै बांधै तौ स्त्री कै तत्काल
प्रसूति होय ५९ अथ वा कूकर भांगरा की जड अर पाडल की जड नैं
स्त्री हाथ पगां कै बांधै तौ स्त्री कै तत्काल प्रसूति होय ६० अथ वा यो
ई की जड का कादा मै तिलां को तेल नां पि स्त्री है सो गर्भ कै लेप करै तौ
स्त्री कै सुषुं तत्काल प्रसव होय ६१ अथ वा पीपलि वच यां नैं जल
संवां डि भग कै लेप करै तौ स्त्री कै सुषुं तत्काल प्रसूति होय ६२
अथ वा अरुंड का तेल नैं स्त्री नाभि कै लेप करै तौ तत्काल प्रसूति होय
६३ अथ वा विजोरा की जड महुवो यां दोन्यां नैं स्त्री पीवै तौ स्त्री कै त
त्काल प्रसूत होय ६४ अथ वा सांठ की जड नैं स्त्री कटि कै बांधै तौ स्त्री कै
तत्काल प्रसूति होय ६५ ये जतन भाव प्रकाश मै छे अथ वा औ
धाहली की जड नैं ककल हरि की जड नैं रुटि कै बांधै तौ तत्काल प्रसूत
होय ६६ ओग चिंता मणि मै छे अथ सुषुं तत्काल प्रसव का
वा को मंत्र लि ०

१८	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

सुक्ता=यासा वि सुक्ता अ सुक्ता सु
क्त=सर्व भयाद्गर्भ एतौ हि मा चिर
मा चिर स्वाहा ई मंत्र संजल नैं बार सात ७ यं वै वा

४७१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

छै ईजल नै स्त्रीपीवैतौ स्त्रीकै तत्काल प्रसूत होय ६७ अथवा ईजं व
नै स्त्रीदेवैतौ तत्काल प्रसूति होय ६८ अथ मूंदगर्भ की उत्पत्ति ल
क्षण जंतु मिले ॥ जी स्त्री का सरीर में वायु पित्त होय वै स्त्री की जो नि
मां हि अरउ दरकूषि मां हि सू लनें अरमूंत उतर वादे नही अर आदुष्ट प
वन गर्भ नै वांको करि दे जो निमें चारि ४ प्रकार करि कै सो प्रकार लिखूं
छे अथ गर्भ में बाल क दुष्ट पवन चारि प्रकार करि अथवा आ
ठ प्रकार करि रहै छै सो प्रकार लि० कीलक १ प्रतिपुर २ परिघ ३
बीज ४ ऊर्ध्व बाहु चरण सिर पसवाडा का भेद करि आठ प्रकार सूं बा
ल क भाग का गर्भ में रहै छै ८ अथ कीलक को लक्षण लि० स्त्री कै
जो नि कै मूंदै कालो सोला गि जाय ती नै कीलक कहौ जै १ अर स्त्री की
जो नि कै मूंदै हाथ पग आडा आय जाय ती नै प्रतिपुर कहौ जै २ स्त्री की
जो नि कै मूंदै आगल सीला ग जाय ती नै परिघ कहौ जै ३ स्त्री की जो नि
कै मूंदै सिर आय अर कै ती नै बीज क मूंदगर्भ कहौ जै ४ स्त्री की जो नि
कै मूंदै पेट आय अर कै ५ स्त्री की जो नि कै मूंदै पसवाडो आय अर
कै ६ अर स्त्री की जो नि कै मूंदै मुषर्नां चो होय ७ स्त्री की जो नि कै मूंदै
सगर अर कै ८ अैसें मूंदगर्भ आठ प्रकार सूं होय छै अथ मूंदगर्भ
को असाध्य लक्षण लि० जी स्त्री को मां थो रु भो स्थौर हैन ही लट
व्यो जाय अर जी स्त्री की लाज जाती रहै अर जी गर्भवती स्त्री का सर्व
अंग सी तल हो जाय अर जी गर्भवती स्त्री की शरीर कान सी नीली हो
जाय वै स्त्री को बाल क मूवो जाय जै अर वा स्त्री भी मरि जाय १
अथ जी स्त्री का गर्भ में जो बाल क मूवो होय ० ती स्त्री को गर्भ फु
रकै नही अर वें को मूंदो कालो पिना स नै लीयां होय जाय अर वें का
माक का अर वें का मूंदो का सास में मूवा की सी दुर्गंध आवै अर पै

४७२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

तमेंसूलचालै येलक्षणजीमेंहोयतीनेंजाणिजे ईकाउदरमेंबालक
मूवोछै २ अथजीकापेटमेंबालकमूवोहोयतीकोकारण
लि० जीस्त्रीकैकोईभाई मातापिता पुत्रभर्तारउगैरैकोईप्यासमें
रैहोय अथत्रावेंकाइयादिककहींतरेंसूजातारहे अथवावेंकाउ
दरकैकहींतरेंकीचोटलागिजाय तदिवेंस्त्रीकैदुषउपजै तदिवेंदु
षकाप्रभावसूवेंकोगर्भघणोंइषीहोय अरवेंकीकूषमेंअनेकरो
गपैदाहोय तदिवेंकापेटकोबालवेंकापेटमेंमरिजाय ३ अथग
र्भिणीस्त्रीकोअसाध्यलक्षणलि० जीस्त्रीकीजोनिमूढोमूवा
बालककरिदकिजाय अरकूषिमेंसूलचालै वेंगर्भनेंमकलक
संज्ञाकहिजे अरपाछैकत्थाउपदवसोभीहोय ४ अथमूटगर्भ
काजतनलि० जीस्त्रीकागर्भासयमेंभगकैकनेंबालकपुरीतर
हआयगयोहोय तीकैवास्तैनिपटचतुरघणाबालकआछीतरें
जणायाहोय ऐसीदाईनैबुलाईजे अरवादाई बालकजणावामें
कुशलहोय सोहाथकैघृतलगाय ओहाथचतुराईसंभगमेंधा
लिबालकनेंसूधोकरिजीवतोहीतत्कालभगमाहिस्वारेकादै
छै ५ अथगर्भमेंबालकमरिगयोहोयतीकोजतनलिष्य
वानिपटचतुरदाईहोयसोचतुराईसंभगमेंपाछणोछोदोअर
ताषोघालि वेंमूवाबालककाअंगअंगकाटिचतुराईसंभगकैबा
रैसर्वअंगकादैसोमूवाबालकनेंइसीतरेंभगमाहिस्वकादै नही
तोवागर्भवतीस्त्रीवेंकासाथिमरै ईवास्तैतत्कालमूवागर्भनेंईतरें
कादै अरमूवाबालकनेंगर्भमाहिस्वकात्वांपाछैभगनेंचतुराईसं
गरमपाणीसूधोवै अरवेंहासमेंभगनेंसुहावतागरमघृतसं अथ
वातेलसंभगनेंचोपडेतौओभगकोमलरहे अरवेंभगनेंसूत्तादिव

४७३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

कोकोईउपद्रवहोयनहीं पाछैकडवातूंबीकापत्र अरपठाणीलो
दयानैबराबरिले अरयानैमिहींवांदि ईकोभगकैलेपकरैतौभग
ज्यूंकोज्यूंआपकेठिकाणैबैठै अथवा पलासपापले पक्षागूलरी
काफलयानैबराबरिले पाछैथानैतिलांकातेलमैमिहींवांदि वैभग
कैलेपकरैतौ औभगंगादोहोजाय अरइसीहीतरैदिन २१ करैतौ
भगकैकोईरोगहोयनहीं ६ अथईकाऔरऔषदलि सापकी
कान्चली कुदकी सिरस्युं यातीन्यानैमिहींवांदि कलवाते लसूंग
कैयांकीधूणीदेतौ भगकारोगजाय ७ अथवा कलहाराकीजडनै
औटायवैपाणीसूहाथपगानैलीयैतौ भगमांहिलोमूवाबालक-
कोदोषदूरिहोय ८ अथमकलकरोग कीउत्पत्तिलक्षणलि
जांस्त्रीकैसंतानहुईहोय अरवास्त्रीलूषीअरवायलवस्तपाय
तांस्त्रीकैतीषीद्वयपीपलामूलउगैरै मिल्यानहींअरवैवायनहीं
तांकेवायहैसोनाभिकैनाचै अथवादोन्यूपसवाडामें अथवापेड
मैंवाचायलोहीनैरोकिवायकीगांठिकरैछै अथवाओवायहैसो
नाभिमैंउदरमें पकासयनैसूलनैप्रगटकरैछै अथवा ओवाय
पेडमैंआफरानैकरैछै अरसूतनैउतरिवादेनहीं ईनैवैद्यहैसोम
कल्यकरोगकहैछै ९ अथकमलकरोगकाजतनलि जव
धारनैगरमपाणीसू ईनैवांदिजोस्त्रीलेतौ वैस्त्रीकोमलकरोग
जाय २ अथवा पीपलि पीपलामूल भिरचि गजपीपलि सूंठिचि
चकचय्य संभालू इलायची अजमोद सिरस्युं सेकहींग भाङ्गी
याठ इंदजवजीरो बकायण सूर्वा अतीस कुदकी वायविडंग यो
पिप्पलादिगणछै तानैबराबरिले अरयानैमिहींवांदिदंक २॥
गरमपाणीसूलेतौ अथवायांकोकाढोकरिले ईमेंसौंसांधोलूण

४७४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

नांभैतौस्त्रीकाकफकाअरवायकासारारोगजाय अरस्त्रीकागो
लानैसूलनैजुरनैदूरिकरै अरभूषलगवै अरआंबनैदूरिकरै अर
ईकमल्लकरोगनैनिश्चैहीदूरिकरै ३ अथवा सूरि मिरचि पीपलि
तज पन्नज नागकेसरि इलायची धणों यांनैमिहींवांटिदंकराए
राणोगुडसूलैतौ कमल्लकरोगजाय ४ अथजौस्त्रीकैप्रसूतिहु
ईहोयतीस्त्रीनैजुंकेसूआहारविहारकरावै ० अरवास्त्री
इतनीवस्तकरैनहीं षेद मैथुन क्रोध ठंढिमेंरहवोयेवस्तकरैनहीं
मिथ्याआरणकरैतौ वेंकैसूतिकारोगपैदाहोय १ अथसूतिका
रोगकीउत्पत्तिलि ० मिथ्याआहारतेंघणाकूशकाकरिवाकरैमि
षमआसनकरिकैं अजोर्णमेंभोजनकरिकैं अरजायामैजोरोग
होयछैसोसाराईभयंकरछै १ अथसूतिकारोगकोलक्षणलि ०
अंगामेंपीडाहोय जुरहोय षासीहोय तिसघणीलागै शरीरभा
स्योहोय अरशरीरमेंसोजोहोय अरपेटमेंसूलहोय अतीसारहो
य येजामेंलक्षणहोय तीनैसूतिकारोगकहिजै १ अथसूतिका
रोगमेंऔरजुरादिकरोगहोयतींकीविशेषउत्पत्तिलिख्यते
जापामेंजुरहोय अतीसारहोय सोजोहोय पेटमेंसूलहोय आ
फरोहोय शरीरकोबलजातोरहै तंद्राहोय अरुचिहोय अरईनें
आदिलेरऔरभीकोईरोगहोय वायकफको अरबलमांस अ
ग्निजांकीजातीरहीहोय यांसाराहीरोगांनैसूतिकारोगकहिजै
१ अथसूतिकारोगकाजतनलि ० जोवस्तवायनैदूरिकरैसो
सारीहीऔषदिसूतिकारोगनैदूरिकरै २ अथवा दशमूलकोका
दौसूतिकारोगनैदूरिकरै ३ अथवा गिलवै सूरि सहजणों पीप
लि पीपलासूल चब्य चित्रक नेत्रचाली यांकोकादोसहतनांषि

४७५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

देतौसूतिरोगहरिहोय ४ अथवा देवदारु वच कूठ पीपलि स्रंठि
 चिरायतौ कायफल नागरमोथो हरडैकीछालि गजपीपलि धमा
 सो गोषरु जवासो कल्यालि गिलवै कालोजीरो येबराबरिले यां
 कोकादौकरि अरहींग सींधोलूणकीप्रतिवायदे यांकोदेतौ सूति
 कारोगनें सूलनें घासनें सासनें जुरनें मूर्छानें मथवायनें प्रलाप
 नें तिसनें तंद्रनें अतीसारनें वमननें यांसांराहीरोगानेंयोहरिक
 रैछै॥ इतिदेवदर्व्यादिकाथः अथपंचजीरकपाकलि०
 स्याहजीरो सुपेदजीरो सौंफअजवायण अजमोद यणों मेथीसं
 ठि पीपलि पीपलामूल चित्रक जाऊंरूषकीजड कीबकल वो
 रकीर्मांगी कूठ कपेलो येसारीऔषदितकाटकाभरिले सानेंमि
 हींवांटिकपडाछाणकरै पाछैगऊकाघृतसेरयेकमें३१मकरोवै
 पाछैईचूर्णनेंसेर ४ गऊकादूधकामावामें ईघृतसूंमकरोयाचू
 र्णनेंपकाय ईकोषेरोमावोकरै पाछैईर नेंदकासो १००भरणाम
 कीचासणीमेंनांषै पाछैईकीटका ११भरकीगोलीकरै पाछैईनें
 रोजीनांजांयावालीरूषायतौ सूवाकारोगनें जुरनें क्षईनें वा
 सनें सासनें पांडुरोगनें क्षीणतानें वायकारोगानें योपंचजिर
 कपाकदूरिकरैछै ६ अथसोभाग्यसुंरिपाकलि० सतवा
 स्रंठिसेरआध॥ इनेंमिहींवांटिकपडासूंछाणिकरिसेरआध
 ॥ गऊकाघृतमेंमकरोवै पाछैगऊकादूधसेर ३५कामावामेंईनें
 पकाय ईकोमधुरीआंचसुंषरोमावोकरै पाछैसेर ३५षांमकी-
 चासणीकरि ईचासणीमेंयेऔषदिमिहींवांटिकपडासूंछाणी
 करिईमेंनांषैसांऔषदिलिपूछूं धणोंदंक ११सौंफदंक ५१वायवि
 डंगदका ११स्रंठिकका ११कालीमिरचिकका ११पीपलिटका ११ना

४७६ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २०

गकेसरिटका १। नागरसोथोटका १। ये औषदिमिहींवांटे ईचास-
णीमेंनांषि सारटंक ५ अमृतकटंक ५ येईमेंनांषे ओरमेंवोजथारु
चिईमेंनांषे पाछेटका १। भरकीगोलीबांधे पाछेईगोलीमेंस्त्रीषाय
तौस्त्रीयांकीतिसकारोगनें छदिनेंजुरनें दाहनें घासनें सासनें पां
रुोगनें मंदाग्निनेंयोइरकरे ७ इतिसौभाग्यसुंठिपाकः अ
थस्तनरोगकालक्षणलि० ईसाराशरीरमेंफेलताजोवायपि
तकफदोषसोयेदुष्टहुवाथकास्त्रीकास्तनमेंजायप्राप्तहोयछे वें
स्त्रीकास्तनदूधसंयुक्तहोय अथवा दूधविनांकाहोयलांस्तनाकैवि
वैवेंदुष्टदोषहैसौस्तनाकैविषैरोगांनें पैदाकरेछे गांठिउंगेरैलोही
काविकारनें ८ अथस्तनरोगकाजतनलि० स्त्रीकास्तनउपरि
वैद्यसोजोदेवैतांसोजानेंविदधीकाजतनपाछेलिष्याछेसोजन
नकरैतौस्तनरोगजाय अरस्त्रीकास्तनऊपरिगांठिकच्चीहीछे तौ
गांठिनें पित्तनेंइरकरिवावालीसीनल औषदिलगावैतौस्तनको
रोगजाय १ अथवा जोकलगायस्तनकीगांठिकोलोहीकदावैतौ
स्तनकासर्वरोगजाय २ अथस्तनकीपीडाकोलक्षणलि०
गरहूवांकीजडनेंपाणीमेंवांटेवेंकोलेपकरैतौस्तनकीपीडाजा
य ३ अथवा हलद धतूराकीजड यांनैजलसूंमिहींवांटिलेपकरै
तौस्तनकीपीडाहूरीहोय ४ अथवा वांमकंकोलकीजडनेंमिहीं
वांटेजलसूं ईकोलेपकरैतौस्तनकोरोगजाय ५ अथवा लोहनें
गरमकरि ओगरमपाणीस्त्रीपीवैतौस्त्रीकास्तनकोरोगजाय ६
येसर्वजतनभावप्रकाशमेंलिष्याछे अथरंडास्त्रीकागर्भमि
बारणगर्भपातनकाजतनलि० । तुकेसमेंचौथैदिनतालीस
पत्र अरमेंरूटंक १० मिहींवांटेसीतलजलसूंपीवैतौस्त्रीवंध्याहो
य ७

४७७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तंत्रंग २०

तथा स्त्रीधर्मकैसमें पलासपापडानें सह तस्मिं हिंवां विभगकैसा
हलेपकरैतौ वास्त्रीगर्भनैक देभीधारै नही ८ अथवा गाजरका बी
ज कलें जी यानें गुड कैसा धिषायतौ स्त्रीको गर्भगिरिषडै ९ अथवा
चौलाई की जड नैचां वलां का पाणी कैसा धिस्त्रीरितु कैसमें दिन ५

पीवैतौ वास्त्रीवांध्या होय १० अथवा रितु कैसमें नांब की जड की
जुक्ति संजोनी कै धूणी देतौ स्त्रीवांध्या होय ११ अथवा मेथी दाणा से
रआध ॥ अरगुंड सेर ॥ यानें पाणी सूं ओटा योजल दिन ५ पी
वैतौ अरगरुडवां की जड अराल यां की वाती करि भगमें मैलैतौ रंडा
स्त्रीको गर्भ पातै होय १२ अथवा कडवी तूंबी अरसां पकी चली सि
रसूं यानें कडवाते लमें वांछि ई की भग कै धूणी देतौ स्त्रीको गर्भ पा
त होय १३ इति स्त्रियां का सर्व रोगां की उत्पत्ति लक्षण जनन सं

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेंद्र श्री संवा ई प्रता
पसिंह जी विरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे स्त्रियां का प्रदरनै
आदिले र स्त्रियां का सर्व रोगां का भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण ज
नन निरूपण नाम विंशतियस्तरंगः संपूर्णम् २० अथवा
लकां का रोगां की उत्पत्ति लक्षण जनन लि० प्रथम बालकां
कान वग्रह जुदा ही छै यां न द्रुं ग हां सुं भिन्न छै सो अषवित्र बालक
नै वेन वग्रह पीडा करै छै सो ई कारण सुं वां न वग्रहानें बालक की र
क्षा करणी १ अथ बालकां कान वग्रह कां नाना मलि० स्कंद ग्रह
१ स्कंद पस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ गंध पूतना ६ शी
त पूतना ७ मुष मंडिका ८ नैग मेयन ९ अथ न वग्रहानें की उ
त्पत्ति लि० येन वग्रह सामकार्तिक की रक्षा कै अर्थ श्री महादेव
जी उ पजाव ताहुवा सो यां न वग्रहानें को रूपा म हा सुं दर जो स्त्री

तीकोसोसरूपहोतोहुवो अरकहींककोस्वरूपसुंदरपुरुषकोसोहो
तोहुवो अथवा स्वामकार्तिककोसषाक्सिषाषजोंकोनाम अधिसिरी
सीजोंकाशरीरकीकांति इसानींश्रीमहादेवजी औरपेदाकरताहु
वा पाछेयेसाराहीमिलिस्वामिकार्तिकजीकैसेसाधिरहताहुवा पाछे
स्वामकार्तिकजीसूयांसारामिलिअरजकरि म्हेभूषाछां म्हाकाषा
बाकैवासेमहानेकाईआजीवकाद्यो तदिस्वामकार्तिकजीमहादेव
जीसूंअरजकरी तदिश्रीमहादेवजीयापुरमाईजगतकैविषेक
शुपंछीनेंआदिलेर तीर्यगजोनिभीरहैछै अरमनुष्यभीरहैछै अरे
वताभीरहैछै ईं अतमें सोदेवतामनुष्यांनेंपीडाकरैछै अरदेवता
पशुपंछ्यानेंभीपीडाकरैछै जथाकालप्रभृतिहुवाद्यका उष्णकाल
मेंगरमीकरिकै अरवर्षाकालमेंसीतपवनकरिकै अरशीतकाल
मेंशीतकरिकै अरमनुष्यहैसौनमस्कारजपहोमादिकरिकैभलेंप्र
कारदेवतानेंप्रसनकरैछै अरवांदेवतानेंभोजनकोभोगदेछै अर
ईंसीतरेंजोमनुष्यनहींकरैछै त्यांकाबालकानेंथेपीडाकरो अर
वांनेंथेपावो १ अथबालग्रहनौ१छैसौबालकांकालेवाको
कारणलि० आ मनुष्यांकाकुलमेंदेवतांकी पिनेश्वरांकी ब्राह्म
णकी अतीतांकी गुरांकी अतिथीकी पूजादिकनहींकरैछै अ
रवांनैभोजनादिकक्यूनहींदेछै अरकांसीका फूटा पत्रमेंजोपाय
छै वांकाबालकानेंथेपावो यामहादेवजीभीवांग्रहानेंकहींतद
वांकीआजीवकाहुई १ अथबालग्रहज्यांबालकानेंलागै-
त्यांबालकांकालक्षएलि० जांबालकनेंयबालग्रहलागैसोवा
लकषिणोकमेंतौउदवेगकूप्राप्तहोय अरविणोकमेंउरपिवात्मा
गिजाय अरविणोकमेंतौबै अरविणोकमेंआपकीधायनं नषां

सूक्ष्मरदांतासूकादिवालागिजाय अरुं चोआकाशकानों देषवो
करै अरआपकादांता नैंचाविबोकरै अरकुणाहिवोकरै जंभाई
लेवोकरै अरभंवाराचढावोकरै होठकारिवोकरै अरमूंदेजाग
आवोकरै अरवमनकरवोकरै अरअतीसारयुक्तभी होय अरबैं
कोशरीरपीणपडिजाय अररातिनैंजागै अरशरीरकैंसोई आयजा
य अरकंठकोसुरघांघो होय अरवैंकाशरीरमेंमांछलाकीसीदुर
गंधिआवै जीकोशरीरदुर्बलअरमैलोहोजाय अरसारीसंज्ञाजा
तीरहै येलक्षणजीबालकमें होयतीनैंजाणिजेबालग्रहलाग्योछै
येबालग्रहकासामान्यलक्षणछै १ अथबालग्रहजीनैंलाग्यो
होयतीकोविशेषलक्षणलि० जीकाअंगसिथल होय अरजी
काशरीरमेंलोहीकीदुरगंधिआवै अरस्तनांकोदूधपीवैनहीं अर
मूंदोबांको होजाय अरआधोआंगरहजाय अरनेत्रांमेंआंसूरहै
रोचैयोडो हाथकामूठीबंधीरहै येजीमेंलक्षण होयतदिजाणि
जैईनेसंद्यहलाग्योछै १ अथविशाषग्रहजीनैंलाग्यो हो
यतीकोलक्षणलि० जीकीसंज्ञाजातीरहै अरफेरिसंज्ञाआय
जाय अरकदेकहाथपगानैंनचावणालागिजाय अरमलमूच
विनांसंग्याहीकरिदे अरजंभाईधषीआवै मूंदेफागआवै तदि
जाणिजैईविशाषग्रहलाग्योछै २ अथशकुनीग्रहजीनैंलाग्यो
होयतीकोलक्षणलि० अंगसिथलरहै भयकराचकितरहवो
करै अरवैंकाशरीरमेंमांछीकीसीदुरगंधिआवै अरशरीरमेंव्रण
घणापडिजाय अरशरीरमेंदाहहोय येलक्षणजीमेंहोय तदिजा
णिजैईशकुनीग्रहलाग्योछै ३ अथरेवतीग्रहजीनैंलाग्यो हो
यतीकोलक्षणलि० जीकोमूंदोलाल अरहस्योहोय अरपीला

जोंकीदेहीहोय अरजोंका हाथपगकालाहोय अरपीडानेंलीयांरे
 सोबालकहोय तदिजाणिजै ईकैरेवतीग्रहकोदोषछै ४ अथपू
 तनाग्रहजीनैलाग्योहोयतीकोलक्षणलि० जोंकोशरीरशिय
 लहोय रातिदिनसोवैनहीं अरवेंकोमलपतलोपडिजाय अरवें
 काशरीरमेंकागलाकीसीदुरगंधिआवै अरछर्दिहोय निसघणी
 होय जोंकैयेलक्षणहोयतदिजाणिजे ईकैपूतनाग्रहलाग्याछै ५
 अथजोंकैगंधपूतनालाग्योहोयतीकोलक्षणलि० ओबालक
 स्तनकोदूधपीवैनहीं अरअतीसारहोय घास हिचकीछर्दियेभी
 होय जुरहोय अरशरीरकोवर्णजातोरहै अरशरीरमेंलोहीकीसी
 दुरगंधिआवै तदिजाणिजै ईकैपूतनाकोदोषछै ६ अथसीतपू
 तनांकादोषकोलक्षणलि० बालकरोवोकरै अर्कापीवोकरै
 अरजोंकाआंतबोलै अरशरीरसिथलहोजाय अरअतीसारघ
 णोहोय जोंकैयेलक्षणहोयतदिजाणिजै ईकैसीतपूतनाकोदोष
 छै ७ अथनैगमैयग्रहकादोषकोलक्षणलि० जोंकैमूटैजा
 गघणाआवै अरकांपैघणौ अरहसैघणौ अरऊंचोहीदेवै अर
 पुकारैघणौ अरशरीरमेंदुरगंधिआवै संग्याजातिरहै तदिजाणि
 जै ईकै नैगमैयग्रहकोदोषछै ८ अरयेहीलक्षणडाकिणिकादो
 षकाजाणिलीज्यो १० अथसामान्यग्रहांकादोषांकालक्षण०
 गोरषभूंडी वसयांकोकाटोकर ईकाटासूबालकनैरुमानकरावै
 अथचा हलद चंदन कूठ यांनैवांदिशरीरकेलेपकरैतौ बालकका
 सामान्यग्रहकोदोषदूरहोय १ अथबा सांपकीकांचली लसणसि
 रसूं नांबकापांन बिलईकीबीठ बकराकाबाल मींटाकोसांग यच
 सहत येसारावांदि यांकीबालककोंधूणीदेतौ बालककाग्रहांका

सारादोषजाय औरउतारावगैरैसाराजननकरैतौ बालकांकाग्र
 हांकोदोषजाय ३ अथस्कंदग्रहनेंआदिलेर बालककांग्रहां
 काविशेषजननलि० बालनें दूरि करिवावालाजोदृक्षत्यांका
 पानाकोकादोकरितींसूं बालकनेंस्नानकरावैतौ बालकांकाग्रहां
 कादोषदूरिहोय ४ अथवा सिरस्यूं सांपकीकांचली वच कागल
 हरियांनैंकूटि अरईमेंऊंठकाअरबकराका बालमिलावै अरवच
 अरभृतमिलायईकीबालककैधूणीदेतौ बालकांकायांग्रहांको
 दोषदूरिहोय ५ अथस्कंदापस्मारतीकादोषकोजननलि
 बालकीजड सिरसकीजड सुपेददोष सुपेदसिरस्यूं पाटमरवो
 राई सुपेदचावची कायफल कसूंभी वायविडंग संभालू गूलर
 बरेंटा चिरणोटणि बकायण कालीतुलसी भाडंगी यांकोकादो
 करिईकादाकापाणीसूं बालकनेंस्नानकरावैतौ स्कंदापस्मारबा
 लककाग्रहकोदोषजाय ६ अथवा गोमूत्र बकरीकोमूत भेडिको
 मूत भैंसिकोमूत घोडाकोमूत गधाकोमूत ऊंठकोमूत यांसा
 रांमूतांमें तेलपकावैमधुरीआंचसूं येमूतबलिजाय तैलमात्र
 आयरहे तदिनेलकोबालककैमर्दनकरैतौ स्कंदापस्मार बाल
 कांकाग्रहांकोदोषजाय ७ अथवा मांथाकाकेस हाथीकोनष
 बलधकारोम यांमेंघृतमिलाय ईकीधूणीदेतौ बालककीस्कंदा
 पस्मारग्रहकोदोषजाय ८ अथवा जवासो मैणसिल कस्तूरी
 कौंछकीजड यांकीबालककैधूणीदेतौ बालकैबांधैतौ स्कंदाप
 स्मारबालककाग्रहकोदोषजाय ९ अथवा बालकनेंचौहटैस्ना
 नकरावैतौ स्कंदापस्मारअरबिसाषाकोदोषजाय १० अथशकु
 नीग्रहकादोषका दूरिहोवाकोजननलि० बेतकीलकडी

आंबकीजड कैथकीजड यांकोकाढोकरि ईपाणीसूंबालकनैरु
नकरावैतौ शकुनीग्रहकोदोषजाय १ अथवा जंडरूषकीजड महु
बो बस गौरीसर कमलकीजड पदमाष लोद फूलप्रियंगु मजाठ
गेरूं यांनैजलसूंमिहींवोरि ईकोबालककैउवटलोकरैतौ बालककै
शकुनीग्रहकोदोषजाय २ अथवा स्कंदपस्मारकाजतनकट्याछैसौ
मीशकुनीग्रहकादोषनैहूरिकरैछै ३ अथवा सतावरी अथवा इं
द्रायणकीजड अथवा नागदवणि अथवा कलाली अथवासहदेई
यांकोपूजनकरिबालकागलाकैबांधैतौ शकुनीग्रहकादोषहूरि
होय ४ अथवा तिल चावल फूलंकीमाला हरताल मेषासिल यां
कीशकुनीग्रहनैबलिदेविधिपूर्वक ओरबालकनैओषटांकाज
लसूंस्नानकरावैतौ शकुनीग्रहकोदोषहूरिहोय ५ अथरेवती
ग्रहकाजतनलि० असगंध मींटासींगा गौरीसर सादीकीजड
सेवतीकाफूल विदारीकंद यांकोकाढोकरि ईकाटाकापाणीसूंबा
लकनैस्नानकरावैतौ बालककैरेवतीग्रहकोदोषजाय ६ अथवा
बालककैतेलकीमर्दनकरै अथवा कूठ शल गूगल बस हलद
यांकीबालककैधूणीदेतौरेवतीग्रहकोदोषहूरिहोय ७ अथवा
सुगंधिनैलीयां सुपेदफूल चावलांकीषील इध रांधासाल दहीयां
नैबालकउपरिनांषि बालकनैस्नानकरावै अरयांहींकागडसा-
लामेंबलिदेतौ बालककैरेवतीग्रहकोदोषहूरिहोय ८ अथपूत
नाग्रहकाजतनलि० नांबकीछालि विष्णुकांता वणिकीछालि
यांकोकाढोकरि ईजलसूंबालनैस्नानकरावैतौ पूतनाग्रहकोदोष
हूरिहोय ९ अथवा नवीनविदारीकंद सुपेद दाब हरताल मेषा
सिल कूठ शल यांकोकाढोकरि ईकाटाकारसमैतेल अथवा घृत

४८३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २१

पकावै पाछै ई तेल अथवा घृत को बालक कै मर्दन करै तौ पूतनाग्रह को दोष हरि होय १० अथ गंध पूतनाग्रह काज तनलि नींब का पांन पटोल का पांन कल्याली का पांन गिलोय का पांन अरंड साका पांन यांको काटो करि ई पाणी सूं बालक नै स्नान करावै तौ गंध पूतना को दोष हरि होय ११ अथवा पीपलि पीपलामूल दोनूंक ल्याली यांको काटो करि ई काढा में गड को घृत पकावै पाछै ई घृत को मर्दन करै तौ बालक को गंध पूतना को दोष हरि होय १२ अथवा केसरि अगर कपूर कस्तूरी चंदन यांनै मिहीं पीसि बालक की आंघ्यां कै लेप करै तौ गंध पूतना को दोष हरि होय १३ अथवा कूकडा की बीठ बालक का केस लसन की छालि घृत यांनै बालक ऊपरि बारिचागं में मेलै तौ गंध पूतना को दोष हरि होय १४ अथ सीत पूतना काज तनलि गोमूत बकरा को मूत नागर मोथो देवदार चंदन नै आदिले रसर्व सुगंधियां में तेल पकावै ई तेल को बालक कै मर्दन करै तौ सीत पूतनाग्रह को दोष हरि होय १५ अथवा कुटकी नींब की छालि धैरसार छाला की छालि कहवा की छालि यांको काटो करि ई में घृत पकावै पाछै ई घृत नै बालक नै खुवावै अथवा बालक कै लेप करै तौ सीत पूतना को दोष हरि होय १६ अथवा नींब का पांन की बालक की धूणी दै अथवा बालक नै चीरमि की माला पहरावै तौ सीत पूतना को दोष हरि होय १७ अथवा नदी ऊपरि मूंग चावल सीत पूतना नै समर्पण करै तौ सीत पूतना को दोष हरि होय १८ अथ मुषमंडिकाग्रह काज तनलि प्यते केथ बीछ अरण्यो अरंड सो सुपेद अरंड कूठ यांको काटो करि ई काढा सूं बालक नै स्नान करावै तौ मुषमंडिका को दोष जाय १९

४८४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २१

अथवा भांगराकोरस वच ईमें तेल पकावै पाछे ई तेल को बालक
कै मर्दन करैतौ सुषमंडिका को दोष दूरि होय २० अथवा राल कूर
यांको काढो करि ईंकारसमें घृत पकावै पाछे ई घृत को बालक कै म
र्दन करैतौ सुषमंडिका को दोष दूरि होय २१ अथवा गंडुका स्थानमें
कलिकरै अरुं डेई मंत्रसंस्नान करावैतौ सुषमंडिका को दोष दूरि
होय २२ अथवा स्नान काजल को मंत्रलि० अलंछता कामवतीशु
भगा कामरूपिणी गोष्ठमध्यालयरतापातुं तां सुषमंडिका २३ अ
थनै गमेयग्रह काजतनलि० बालकी जड की वकल अरण्याकी
जड कणगच की जड यांको काढो करि ई पाणी सूं बालक नै स्नान क
रावैतौ नै गमेयग्रह को दोष जाय २४ अथवा फूल प्रियंगु जवा सो
सौं फ चित्रक वृक्ष की वकल ई नै लौकिकमें गुड हलद को ब्रक्ष कहै
छै यांको काढो करि ईं काढा कारसमें तेल पकावै पाछे ई तेल नै प
कतां ही ईमें गोभूत दही अरु कांजीनाषै पाछे ओरुं ई तेल नै पकावै
ये सारा बलि जाय तेल मात्र आयर है तीर ई को बालक कै मर्दन क
रैतौ नै गमेयग्रह को दोष जाय २६ अथवा तिल चावल फूलों
की माला लाडू नै आदिले रमीराई यां नै बालक ऊपरि सात ७ बार
बारि बारि वृक्ष का पेड़ कनें मैलैतौ नै गमेयग्रह को दोष दूरि होय
२७ अथवा रिक को मंत्रलि० आज्ञानन अलाक्षित्रू कामरूपी
महायशा बालं पालय तो देवानै गमेयोसि रक्षतु २८ ये सर्व
जतन भाव प्रकासमें लिखा छै अथवा वण को वणायो बाल
तंत्रनाम ग्रंथ छै तीं कां मंत्रसूं बाल कां कोडा कृष्णी नै आदिले
रत्नां का आच्छा हो बा बालक्षण उत्पत्ति लि० बालक को जन्म
हुवां पाछे पहलौ दिन प्रथम मास प्रथम वरसमें मंदाना ममातृका

नैआदिलेर रावण की बारा १२ बहण छै सो बालक नै दोष करै छै तीका
 येल क्षण छै बालक कै लुर होय रोवे घणै ओ बोलै न ही तीका आछा
 होवा में वै कै वासो बलि कहै छै नदी का दोन्यूनल की मां दाले वै को-
 पूत लो करै कोरी सैन कमें अर वै कै कने चावल सुपेद फूल सात ७
 ध्वजा सात ७ दिवा सात ७ गुल गुला सात ७ पान गंध धूप मांस दा-
 स ये सारा बालक ऊपरि बारि पूर्व दिशा कानी चो हटै मध्यान्ह कै समें
 बलि दै अर पी पल को पान मांथा में गांधि बालक नै स्नान करावै तो-
 नंदाना ममातृका को दोष दूर होय १ ईतरै दिन च्यारि करै अर बाल-
 क कै सिर स्यूं मांदा को सींग नीब का पान सिब निर्मात्य यांकी धूणी
 दै तो बालक आछ्यो होय अथ उत्तारा को मंत्रलि ० ऊन मो भगव
 ते रावणाय हन हन सुंच सुंच स्वाहा २० अथ बालक काज नम
 संहू सरे दिन हू सरे मही नै हू सरे वर स शुभ दाना ममातृका
 रावण की बहण बाल नै दोष करै छै तीका लक्षणलि ० प्रथम
 ज्वर होखने नमिचैन ही शरीर का पीबो करै नांद आवे न ही पुकारी
 वो करै बोलै न ही वैका आछ्या होवा कै वासो बलि नाम उतारो लि पू
 छूं जां करि बालक नै सुष होय सवासेर चावल दही मांछला को-
 मांस दारु तिल को चूर्ण ये सारा साशवा में मैलि पश्चिम दश नै चो
 हटै तीन ३ दिन संथ्या समें बालक ऊपर उतारो करै तो पाछै सालि
 काजल सूं बालक नै स्नान करावै पाछै शिव निर्मात्य पस बिलाई का
 रोम घृत ह्व ई की बालक कै धूणी दे अथ उत्तारा को मंत्रलि ०
 ऊरावणाय हन २ सुंच २ हूं फट् स्वाहा चौथे दिन ब्राह्मण भोजन ज
 था शक्ति करावै तो शुभ दा को दोष जाय ३१ अथ तीसरे दिन ती-
 सरे मास तीसरे वर स पूत नाना भरावण की बहण बालक कै

दोष करै छै ती कोल ० प्रथम बालक कै ज्वर शरीर कांपै ओ बोलेनहीं
 मूँठि षोलेनहीं खुकारि वो करै आकांश मांही देष वो करै वै बालक-
 का सुष के वास्ते वै को उतारौलि ० नदी का दोन्यूनटांकी मांटीला
 टीले ती को पूतलो करै पूतलानै सरावा में मेलै वै कै मधि तांबूल
 रक्तपुष्प रक्तचंदन रक्तसात ७ धजा सात दीवा मांस सुरा भा
 तमेलि दक्षिण दिशा में ती सरै पहर चौहटे बलि दे पाछै शिब नि-
 र्गाल्य गूगल सिरस्युं नींबका पान पीना को सींच यांकी धूर्णादि
 नतीन ताई दे अथ उतारा को मंत्रलि ० ऊन मोरा नणायनमः
 हन २ मुंच २ नासय नासय स्वाहा चौथै दिन ब्राह्मण भोजन करै
 ती बालक कै आराम होय ३२ अथ चौथै दिन चौथै मास चौथै व
 रस मुष मांड काना मरावण की वहणती कादेश का लक्षण ०
 प्रथम जुर होय कांथीन वै नहीं नेत्र फाट्योर है बावोलेनहीं रोवो क
 रै सो वेधणौ हाथ की मूठी बंधीर है वै का सुष के वास्ते उतारौलि व्यंत
 नदी का दोन्यातटांकी मांटीले ती को पूतलो करै वै कै आगे कमल का
 फूल मेलै गंध तांबूल सुपेद फूल चारि दिवा तेरा पूवा मांछ ला-
 को मांस सुरा छाछि ये सारा सरावा में मेलजै पाछै उत्तर दिशा में
 ती सरै पहर चौहटे बलि दे ती बालक कै सुष होय अथ उतारा
 को मंत्रलि ० ऊन मोरा वणाय हन २ मथ २ स्वाहा चौथै दिन ब्राह्म
 ण भोजन करै ती बालक आछ्यो होय ३३ अथ पांचमै दिन पांच
 मै महीनै पांच वै वरष पूतनाम मातृ कारावण की वहण-
 ती को दोष का लक्षण ० प्रथम जुर होय शरीर कांपै ओ बोलेनहीं
 हाथ की मूठी षोलेनहीं अथ वै का आछ्या होवा को उतारौलि ०
 कुम्हार का चाकरी मांटीले ती को पूतलो करै ती कै आगे गंध तांबू

४८७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २१

लचावल सुपेदफूल पांचधजा पांचदीवा पांचवडा ईसानदिशा
 मेंउतारोमेलै पाछैसांति काजलसंस्नानकरावै पाछैशिवनिर्मा-
 ल्य सांपकीकांचली घृत नांबकापांन यांकीधूणीदेतौ बालकआ
 छौहोय अथउताराकोमंत्रलि० ऊंनमोरावणायनमः नूर्ण
 य २ स्वाहा चौथेदिनब्राह्मणभोजनकरावैतौ बालकआछौहोय
 ३४ अथछठैदिनछठैमासछठैवरसशकुनीनाममातृ-
 कारावणकीबहणतीकादोषकोलक्षणलि० प्रथमजुरहोय
 शरीरकांपै रात्रिदिनमेंसुषहोयनहींउंचोदेपैवैकासुषकैवास्ते
 अथउतारोलि० गोहांकाचूनकोपूतलोकरै सुपेदफूल लालफू-
 ल पीलाफूल मद्य मांस दीव १० धजा १० वडा १० दूध जामुशि
 मांस दारु यांकोउतारो अग्निकोणमें मथान्हसमैमले पाछै-
 सीतलजलसंस्नानकरावै पाछैशिवनिर्माल्य ल्हसण गूगल
 सिरस्ये सापकीकांचली नांबकापांन घृत यांकीधूणी अथउ-
 ताराकोमंत्रलि० नमोरावणायनूर्णय २ हन २ स्वाहा ३५
 अथसांतवैदिनसातवैमाससातवैवरससुकरैवतीना
 ममातृकारावणकीबहणतीकादोषकालक्षणलि० प्रथ
 मजुरहोय गात्रकांपै मूठाबंधारहै रोवैबहुत तीकासुषकै-
 वास्तेउतारोलि० नदीकांतटकीमांदि कोपूतलोकरै तीकैआ
 गीलालफूल मद्य तांबूल लालचावलाकीषांचडी दशदीवा
 मांस दारु धजा १३ पश्चिमदिशामेंगांवकैवारांतीसरैपहरउ
 तारोमेलै पाछैस्नानकरावै पाछैशिवनिर्माल्य गींटाकोसींग सिर-
 स्ये षस घृत यांकीधूणीदै अथउताराकोमंत्रलि० ऊंनमोरा
 वणाय तत्तेजसे हन २ मुंच २ स्वाहा चौथेदिनब्राह्मणभोजन-

४८८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २१

करैतौ बालक आछ्यो होय ३६ अथ आठवै दिन आठवै मास इ
ठवै वरषना नाममातृकारावणकी बहणती को दोष लक्ष
णलि० जुर होय शरीरमें दुरगंधि आवै अहार लेनहीं शरीर कांपै
वैकासुषकै वासै उतारो लि० लाल फूल पीला ध्वजा रक्तचंदन
षार मांस सुरा यांको बलिग्रभातसमें ईमंत्रसंहदे ऊन मोरावणाय
विलोक्य विद्रावणाय चतुर्दश मोक्षणाय ज्वर हन ३७ फट् स्वाहा
३७ अथ नवै दिन नवै मास नवै वरष सूति कानाममातृका
रावणकी बहणती का दोष को लक्षणलि० जुर होय शरीरमें पी
डा होय छादणी होय वैकासुषकै वासै उतारो लिष्यते नदीका दो
न्यून तांकी मांटी को पूत लोकरै सुपेद वपहरावै सुपेद फूल गंधतां
बूल दीवा १३ ध्वजा १३ उत्तरदिशामें गावकै वारै उतारो करै पाछै
शांतिकाजल संस्नान करावै गूगल नांबका पांन गायको सींग सि
रस्युं घृत यांकी धूली दे अथ उतारा को मंत्र लि० ऊन मोरावणाय
हन २ स्वाहा चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करै तौ बालक आछ्यो होय
३८ अथ दशवै दिन दशवै मास दशवै वरष क्रियानाममातृ
कारावणकी बहणती का दोष को लक्षणलि० ज्वर होय शरीर
कांपै रोवे मल मूत्र करि दे अथ वैको उतारो लि० नदीका दोन्यून
तांकी मांटी को पूत लोकरै पाछै गंध तांबूल रक्तफूल रक्तचंदन ध्व
जा ५ दीवा ५ पूवा मांस सुरा वायव्य कोणमें बलि दे पाछै काक वि
ष्टा गडको सींग विलाई करोम नांबका पांन घृत यांकी धूली दे उ
तारा को मंत्र ऊन मोरावणाय चूर्णिन हस्तय मुंच २ स्वाहा चौथे दि
न ब्राह्मण भोजन करै तौ आछ्यो होय ३९ अथ इग्यारवै दिन इग्या
रवै मास इग्यारवै वरष पिपली कानाममातृकारावणकी ब

बहणातीकादोषकोलक्षणलि० जुर होय अहार लेनहीं अथवें
 कासुषकैवासेवेंकीबलिलि० गोहांकोआटाकोपूतलोकरीवेंपू
 तलांकासूँटाकैदूधकीधारदे पाछैरक्तचंदन पीलाकूल गंध तांबू
 ल दीवा ७ बडा ८ माला पूवा मांस सुरा पूर्वादिशमें उतारोमेले
 पाछैसांतिकाजलसंस्नानकरावै पाछैशिवनिर्माल्य गूगल गडको
 सांग सापकीकांचली घृत यांकीधूणीदे अथमंत्रलिथ्य० ऊंनमो
 रावणायमुंच २ स्ताहा नौथैदिनब्राम्हणभोजनकरावैतौ बालकआ
 छ्योहोय ४० अथवारवैदिनवारवैमासवारवैवरषकासुका
 नाममातृ कारावणकीबहणातीकादोषकालक्षणलि० जुर
 होय हसै हाथसूँडूरिकरै पुकारैघणों सालघणोंले अथवेंकीबलि
 लि० गावाकोपूतलोकरी पाछैगंधतांबूल सुपेदपुष्प ध्वजा ७ माल
 पूवा ७ यांकीबलिदे पाछैशांतिकाजलसंस्नानकरावै पाछैशिव
 निर्माल्य गूगल सिरसूं घृत यांकीधूणीदे अथउताराकोमंत्र
 लि० ऊंनमोरावणायमुंच २ हन २ स्ताहा नौथैदिनब्राम्हणभोज
 नकरावैतौ बालकआछ्योहोय ४१ योरावणकोवणायोकु-
 मारतंत्रचक्रदत्तमेंलिथ्योछै अथबालकांकारोगांकी-
 औसउत्पत्तिलक्षणलि० धायकाभास्वागरिष्टभोजनकखांसूं
 अरविषमवायपित्तकाआजारांसूं बालककाशरीरमेंदोषहैसोको
 पकूंप्राप्तिहोयछै अरअैसैंहींकुपथ्यकाभोजनसूं धायकास्तनमें
 प्राप्तिहोयदूधद्वाराबालककैरोगमेंकरैछै धायकावायकादुष्ट
 भोजनसूंवायदुष्टहोय अरऔवायदूधमेंप्राप्तिहोय तदिऔबूध
 पावैजदिबालककौवायकारोगहोयछै तदिऔबालकपीणहो
 जाय मूँदोसुपेदहोजाय शरीरकसहोजाय अरवेंकोमलमूत्रनीठी

ऊतरे ईनेंआदिलेर वायकाओर रोग होयछै औसैंहीं बालकपित्तका
 दुष्टको दूधपीवैतौ बालकको पित्तकारोग पैदा होयछै वेंबालककै प
 सेव आवै मल पतलो जाय शरीर पीलो होजाय तिस घण्टी लागै श
 रीर गरम रहै ईनेंआदिलेर पित्तकारोग होयछै वेंकै लाल घण्टी पडै
 नांद घण्टी आवै जठर घण्टी रहै शरीर सूखोर है नेत्र मूंदो सारो शरीर
 भाखोर है अरजुरनेंआदिलेर और सर्वरोग छै सो वना आदमीकें जो
 होयछै सोही बालककें जाणिजै अर बालककें जोरोग होयछै सो व
 डा आदमीकें कोई होय नहीं तालुक कंठकनेंआदिलेर अथ तालु
 क कंठक को लक्षणलि० तालु वाकामांसमें बालककै कफ को प
 करै जदि वेंकै तालु वामें कांटा पडि जाय अर वेंको तालु बौवोठि जा
 य अर तालु वाकावै ठिवासूं बोवांको दूधपीवै नहीं मल पतलो कै जा
 य तिस घण्टी लागै आंषि दूषै कंठमें मूंदामें पीछा होय मांथो उठे
 नहीं बमन करै १ अथ महापद्मरोग को लक्षणलि० बालक
 कामस्तगमें अर गुदामें रोग पैदा होय अर रत वा वपेदा होय अ
 र पद्मका वर्ण सिरीसो जांको वर्ण होय सो वाती न्यूं दोषांको पसूं
 होयछै प्रथम ओरोग कन पट्यांमें होयछै पाछै कन पट्यां संहिया
 में आवै पाछै हियां संहि गुदांमें आवै औसैंहीं पेड़ संहि गुदांमें जाय अर
 गुदासूं पेड़ हियांमें जाय अर हियासूं सिरमें जाय २ अथ कुंकूण
 रोग को लक्षणलि० कुंकूणरोग दुष्ट दूध कापी वासूं बालककें
 ही होयछै वेंकानेत्र दूषै नेत्रांमें षाजि आवै आंसू नारवार घण्टी पडै
 अर ओ बालक ललाटे नेत्रनांक यांनें घसीवोही करै अर तावडा का
 नां देखै नहीं अर वेंकी आंषि लुधै नहीं ईनें कुंकूणरोग कहिं ३
 अथ तुंडिगुदापाकरोग को लक्षणलि० बालकको गुदा पकि

जाय अरवें की नाभि में पीड़ा होय तीनै तुटि गुदा पाकरोग कहि जै ४
 अथ अहि पूतनारोग को लक्षण लि० बालक की गुदा मल मूत्र
 संलि पीरह बोही करै अरगुद नैं थोवै अथ वा कय डासूं पूछै बात पावै
 जदि बाजि आवै अरगुदालार है अरं वो बालक गुदानें पुजालै त
 दिवें कै फोडा होय वें की गुदा पाणी सूं जर बो करै अरवें की गुदा में व्र
 ए हो जाय भयंकर वें नैं अहि पूतनारोग कहि जै ५ अथ अजगल्ली
 रोग को लक्षण लि० जीका शरीर में चीकणालालये कवर्ण कामूं
 गप्रणालयणी फुल स्यां हो जाय अरवें में पीडनहीं होय ओक फवा
 य सूंड पजै छै ई नैं अजगल्लिका कहि जै ६ अथ पारिगर्भिक रोग
 को लक्षण लि० बालक है सो गर्भिणी लुगार्द को दूध पीवै जी कै
 घासी होय अग्नि मंद होय शरीर में दाह होय अरतंदा होय पीण
 पडि जाय अरुचि होय भौलि आवै अरवें को येद वधि जाय वेनें पा
 रिगर्भ रोग कहि जै ७ अथ बालक का दांता के रोग लि० बालक
 के दांत नैं आवत जांजुर होय पेट लुटी जाय घासी होय छाटै मांथो
 दूषै आंषि दूषै रत वाव होय घेल क्षण दांत रोगां का जाणि जै ८ अ
 थ बालकां का रोगां को जतन लि० जो बडा आदम्यां कै रोग होय
 छै अर ओही रोग बालकां कै होय नौ बेही जतन बडा आदम्यां कै
 करै सोही बालकां का कीजै अर बालक नैं औषदि दीजे सो रतीये के
 कवध ती दीजै वरस येक ताई अर दूसरा वरस सूं मासो १ दीजे या
 मर्यादा छै अर बालक की हाथ लगायो रोवे त ठे रोग जाणि जै अर
 वें को जतन कीजै १ अथ बालक की जुर को विशेष जतन लि०
 नागर मोथो हर डै की छालि नींब की छालि पटोल यां को कादो करि
 तीं में सहत नांषि पाछै बालक नैं प्यावै तो बालक की सर्व प्रकार की जुर जा

इतिभद्रमुस्तादिक्वाथः९ अथबालककैशुरअतीसारहोयतीं
 कोजतनलि० नागरमोथो पीपलिअतीस काकडासींगी यांकोचूर्ण
 करिसहतसंबालनैचटावैतौ बालककोज्वरातिसारजाय अरषासनें
 वमननैहूरिकरै१० इतिचातुर्भद्रादि० अथबालककाअतीसार
 कोजतनलि० बालकागिरि धावड्याकाफूल नेत्रवालों लोद गजपी
 पलि यांकोकाटोसहतनांषिदेतौ बालकांकोअतीसारजाय११ अथ
 बालकांकाभयंकरअतीसारकोलक्षणाति० मजीठ धावड्याका
 फूल लोद गौरीसर यांकोकाटोकरितीमेंसहतनांषिदेतौ बालकको-
 भयंकरभाअतीसारजाय१२ इतिसमंगारिक्वाथः अथबाल
 ककाआमातिसारकोजतनलि० गायविडंग अजमोद पीपलि
 यांनैमिहींवांदिचांबलांकापाणीमेंदेतौआमअतिसारजाय१३ इति
 विडंगादिक्वा० अथबालककारक्तातिसारकोजतनलिष्यते
 मोचारस मजीठ धावड्याकाफूल कमलकीकेसरि यांनैमिहींवांदि
 साव्याचाबलांका मांडकेसाथिदेतौ बालककोरक्तअतिसारजाय१४
 अथबालकांकासर्वप्रकारकाअतीसारकोजतनलि० सूँठि
 अतीस नागरमोथो नेत्रवालो इंद्रजव यांकोक्वाथदेतौ बालकांको
 सर्वप्रकारकोअतीसारजाय१५ अथबालकांकीमोडानिवाहीको
 जतनलि० चांबलांकीपाल महलोठी महुवा यांनैमिहींवांदि मिश्री
 अरसहतमेंचटावैतौ बालककामोडानिवाहीजाय१६ अथबाल
 ककासंग्रहणीकोजतनलि० हलद चय देवदारु कल्याण गज
 पीपलि पृष्ठपर्णा सौंफ यांनैमिहींवांदि सहतघृतकेसाथिचादेतौ स
 ग्रहणीनै पांडुरोगनै जुरातिसारनैहूरिकरै अरभृषलगवैउं१७ इ
 तिरजन्पादिचूर्णम् अथबालककापासकोजतनलिष्यते

४९३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २१

नागरमोथो अतीस अरडूसो पीपलि काकडासोंगी यानेंमिहींवांदि
 सहतकैसाथिचाटैतौ बालककोपांच प्रकारकोषासजाय १८ इति
 मुस्तादि० अथषासकोओरजतनलि० कल्यालीकाफूलोंकी
 केसरितीनैंसहतसूंचाटैतौ बालककीषासीजाय १९ अथषास
 सासकोजतनलि० भिनकादाष अरडूसो हरडैकीछालि पीपलि
 यानेंवांदि सहतअरघुतकैसाथिचाटैतौ सासअरषासजाय २०
 इतिद्राक्षादि० अथबालककीहिचकीकोजतनलि० कुट
 कनैंमिहींवांदि सहतसूंचटावैतौ बालककीहिचकीअरछादणी
 जाय २१ अथबालककीछर्दिकोजतनलि० आमलीकाशुंठ
 ली अरचाबलंकीषील सांधोलूण यानेंवांदि सहतसूंचाटैतौ
 बालककीछर्दिजाय २२ अथबालकदूधछादेतीकोजतनलि०
 कल्यालीकाडोडांकीरस पीपलि पीपलामूल चय चित्रक सूंठि
 यानेंमिहींवांदि सहतघृतसूंचाटैतौ बालकदूधछादेनही २३ अ
 थबालककापेटमेंआफरोहोयअरसूलचालैतीकोजतन
 लि० सांधोलूण सूंठि इलायची सेकीहींग भाडंगी यानेंमिहींवांदि
 गरमपाणीसूंलेतौ बालककोआफरोअरसूलजाय २४ अथबा
 लककोमूत्रथंभिगयोहोयतीकोजतनलि० पीपलि मिरचि
 छोटीइलायची सांधोलूण यानेंमिहींवांदि मिथीअरसहतसूंचाटै
 तौमूतरुकिगयोहोयसोअछीतरैऊतरै २५ अथबालककैला
 लघणीपडैतीकोजतनलि० गौसीसर तिल लोद यांकोकाढो
 सहतनौषि बालकनैंप्यावैतौ बालककामूंदाकीलालपंडतीरहै
 २६ अथबालककामूंदामेंछालाहोयतीकोजतनलि० पीप
 लकीबकल अरवैकापांन यानेंवांदि सहतमेंमिलायचटावैतौवा

लककाछालाआछ्याहोय २७ अथबालककीनाभिकेसोजोहो
यतीकोजतनलि० पीलीमांदीनेँअग्निमूलालकरिदूधसूनाभिके
सेकैतौ बालककीनाभिकोसोजोजाय २८ अथबालककीनाभिप
किगईहोयतीकोजतनलि० हलद लोद फूलप्रियंगु यांनैसहत
सूवांदिनाभिकेलेपकरैतौनाभिकोपकिबोदूहोय २९ अथबाल
ककीगुदापकिजायतीकोजतनलि० रसोतनेँपाणामेंपासि
गुदाकेलेपकरैतौगुदापकतीरहै ३० अथवासंष महलोढा रसोत
येतीन्यूवांदिलगवैतौ बालककीगुदापकतीरहै ३१ अथबालक
कैदांत दोहराआवैतीकोजतनलि० धावछाकाफूल पीपलि
यांनैआंवलांकारसमेंबालककामसूराकैलगवैतौ दांतआछीत
वैआवै ३२ अरलाक्षादिकतेलसूंबालककालुरादिकसर्वरोगजाय
३३ इतिश्रीबालकांकासर्वरोगाकीउत्पत्तिलक्षणजतनसं
पूर्णम् येसर्वभावप्रकाशमेंलिखाछे इतिश्रीमन्महाराजा
धिराजमहाराजराजराजेंद्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचि
तेअमृतसागरनामग्रंथेबालकांकासर्वरोगाकाभेदसंयुक्त
उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणनामएकविंशतिमस्तरंगः २१
अथवाजीकरणाधिकारलिख्यते वाजीकरणकहजैकांई
जोपुरुषदीषतकोतोपुष्टीसे अरओनपुंसकहोय स्त्रीकाकाम
कोनहींहोयतीकोजतनलिख्यते ओनपुंसकपुरुषसातप्रकर
होयछे तीकीउत्पत्तिलक्षणलि० स्त्रीसूं रमवाकीइछाकरै अर
संगहोयनहीं यांकारणांसूंलिंगउठैनहीं तीनेँनपुंसककहिजै सो
कारणलिघूंछे कडवीवस्तु बढाई गरम लूण यांकाघणायावा
सूंबान्यकोनाशहोय अथवाभयसूं अथवा सोकसूं ओधनंआ

४९५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २२

दिलेर तींका करि वासूं वीर्य को नाश होय तींसूं न पूंसक होय अथ
वा पुत्र स्त्री धन नैं आदिलेर तींका नां सूं न पूंसक होय अथ वारोगों
का आवासूं न पूंसक होय अथ वा अति मैथुन का करि वासूं वीर्य को
नाश होय तींसूं न पूंसक होय अथ वा हाथ की कहीं तरै चोट लागि
वासूं लिंग की नस मारी जाय तींसूं न पूंसक होय यणा ब्रंम्ह चर्य रह
वासूं न पूंसक होय ई नैं आदिलेर और भी कारण हैं यां कारण सूं क
हीं तरै लिंग की नस दूटै सो असाध्य जाणिजै अथ न पूंसक पणों
का दूर हो वा का जत नलि० मधुर वस्त नैं आदिलेर नाना प्रकार
काम नोहर अति स्वाद इसा जो भोजन त्यां करि न पूंसक पणों जाय
२ अथ वा महा सुंदर जो स्त्री तींकी वाणीं कानां नैं सुंदर लागै तीं करि
न पूंसक पणों जाय ३ अथ वा तांबूल सुंदर आसव को पीयो उपवन
पुष्टाई की ओषधि दूध मिश्री का संजोग की मृगांक चंद्रोदय नैं आ-
दिलेर सात्धात दधि सिषरणि उडद ये सर्व वस्त न पूंसक पणों नैं दू-
र करै हैं अथ वा अमर सनैं आदिलेर भोजन भीम सेनी कपूर क
स्तूरी का संजोग की पांन की बीडा ई नैं आदिलेर और भी वस्त तींसूं
न पूंसक पणों जाय ४ अथ गोसुरादि चूर्ण लि० गोषरु ताल
मषाणा असगंध सतावरी सुपेद मूसली कौंचिका बीज महलौ
ठा षरै ठीका बीज गंगेर शिकी छालि ये सर्व बराबर मिले त्यां नैं मिहां बां-
दि ई मै मिश्री अनुमान माफिक मिलाय औटाया दूध कै साथि टंक ५
राति नैं रोजीनां ले अरपथ्य रहै नौ न पूंसक पणों जाय ५ अथ सुषा-
री पाक लि० दषणी सुपारी सेर ५ तीं नैं दिन २ जल में भिजोवै पा-
छै वे नैं मिहां कतरि सुकाय लै पाछै वें को चूर्ण करै अर वस्त्र सूंछाणि
ले पाछै वें बराबर घृत सूंमकरोय अर अठराणा दूध में वें को षरी

४९६. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २२

माचोकै पाछै अटगुणी मिश्रीकी चासणी करै तौ मै यो सुपारी को
माचो नां पै अरये औषदि ईमें नां पै सो लिखूं इलायची परंटी गं
गेरिका छालि पीपलि जायफल लवंग जायपत्री पत्रज संधि
सतावरी मूसली कौंछा काबीज विदारीकंद गोबरू दाष सालि
ममिश्री सिंघाडा जीरो छड वंसलोचन असगंध केसर कस्तूरी क
चूर चंदन भीमसेनी कपूर अगर ये सारी औषदि टकाट का भरिलै
पाछै वैद्य आपकी बुद्धि साफिकलै और मृगांकचंद्रोदय वंग सार अ
भक्त सुगंधद्रव्य मेवो आपकी बुद्धि साफिक ईमें नां पै पाछे टका १।
प्रमाण ईको मोदक करै मोदक १ रोजीनां घाय अरपथर हेंतौ निथै
हीन पूंसक पणों जाय इतिरति बल्लभ पूंग पाकः अथ आम्र
पाकलि ० पक्का मीठा आम कोर ससेर १५ सोला ले तीमें मिश्री सेर
चारि ४ नां पै अरईमें घृत सेर १ नां पै अरुईनें मांटीका चासणमें प
काय गाढो करि ईनें चासणी सिरीसो करै चांदीको चासण मिलै तौ
ईमें करै अरईमें ये औषदि नां पै संधि टका ८ भर मिरचि टका ८ भर
पीपलि टका २ भर धणों टका ४ भर जीरो टका १ भर चित्रक टका १।
भर पत्रज टका १ भर दालचिनी टका १ भर नाग केसरि टका १ भ
र केसरि टका १ भर इलायची टका १ भर लवंग टका १ भर जा
यफल टका १ भर कस्तूरी मासा ४ भीमसेनी कपूर टका १ भर सह
त सेर १ पाछै यां सर्व को ये कजीव करै अमृतवानमें भरि राखै पाछै
ईनें टका १ भर रोजीनां घायतौ न पूंसक पणों ईर होय अरु स्त्री सूं
संग धणों करावै अरु संग हणीनें क्षईनें सासकारोगनें अरु चिनें
अस्ल पित्तनें रक्त पित्तनें पांडू रोगनें यो आम्र पाक इतरांगों नें द
रि करै छै इति आम्र पाकः अथ हथरस उगैरें कडीतें

४९७ असृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २२

नपुंसक होय गयो होय तीको जतनलि० देशी गोषरुको चूर्ण
 टंक ५ सहत टंक ५ मिलाय बकरीका दूधकै साथि महीनां २ ले तो
 नपुंसक पणौं दूरि होय अथ चंदनादितै ललि० रक्तचंदन पतं
 ग अगर देवदारु चीद पदमाष कपूर कस्तूरी केसरि जायफल जा
 यपत्री लवंग इलायची बडी इलायची कंकोल तज दालचिनी पत्र
 ज नाग केसरि नेत्रबालो पश छड दारु हलद मूर्वा कचूर सिस्र
 जीत नागरमोथो संभाल फूलप्रियंगु लोहवान गूगल लाष न
 षल्या राल धावड्याका फूल कसूभाका फूल पीपलासूल मजीठ
 तगर मोम येसारी औषदि च्यारि च्यारि मासाले अरयांको मधुरीआं
 चसूकाटाकरै पाछै ईको चोथो हि सोराषे पाछै ईमें मोडो ते लसेर ३१
 नांषे फेरि मधुरीआं चमें पकावै पाछै काढकोर सबलि जाय नैल
 मात्र आयर है तदि छाणी पात्रमें घालि राषे पाछै ईको शरीर कै मर्द
 न करै तो बूढो आदमी सो त्याग होय और शरीर का सर्वरोग जाय
 इति चंदनादितै लं अथ वानरीगुटिका लि० कौंछिका बी
 जसेर ३१ यांनै सेर ३१ गडुका दूधमें सने सने पकावै पाछै यांका छैयो
 तरा दूरि करै पाछै यांको मिही चूर्ण करै पाछै दूधमें ओसणि छोटा
 छोटा ईका बडा करै गडुका धृतमें तले पाछै यांसू दूणी मिश्री की चा
 सणी करियां बडा कै गले फंदे पाछै यां बडानें सहत में नांषे पाछै यां
 नें रोजी नाटंक १० महीनां दोयषाय तो नपुंसक पणौं जाय स्त्रीक नें
 पुरष मोडो सबलि त होय बीर्य मोडो पडै इति वानरीगुटिकाः ०
 अथ नपुंसक पणौं नें दूरि करि वाको जतनलि० आकलकरो सूं
 ठि लवंग केसरि पोपलि जायफल जायपत्री सुपेद चंदन येसारी
 औषदि अथेला अथेला भरिले अरअफीम ठका ११ भरले पाछै यां

४९८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २२

सारांनैसंहतसूंभिहींचांदिउडदप्रमाणगोलीकरै गोली१रात्रीनैरो
जीनांषाय ऊपरसूंद्धपीवैतौवीर्यमोडोपडै अरनपूसकपणोंजाय
येसर्वजतनभावप्रकशमेंलिप्याछै अथवा तिलांनैकूकडाका
अंडाकापाणीसूंभिजोवैवार११ पाछैचांतिलांनैदंक ५रोजीनांषाय
ऊपरदूधपीवैतौनपूसकपणोंजाय अरघणीस्त्रीयांसूंसंभोगकरै
अथवा विदारीकंदकोचूर्णकरै अरवेंचूर्णकैआलाविदारीकंदकार
सकीपुट२१देरसुकावतोजाय पाछैवैविदारीकंदमेंमिश्रीसहतअ
रघृतमिलाय रोजीनांदंक२षायऊपरदूधपीवैतौबूढोभीमनुष्यज
वानहोयजाय योचंदमेंलिप्याछै अथवा आंवलाकोचूर्णकरै
पाछैईचूर्णकैआलाआंवलाकरसकीपुट२१देरसुकायले पाछैई
चूर्णनैमिश्रीसहतघृतसूंरोजीनांदंक२षायतौबूढोभीमोत्पारहोय
योचक्रदत्तमेंछै अथमदनमंजरीगुटिका० संहि मिरचि
पीपलि यांतीन्यांकाचारिभागकरै पाराकोएकभाग अरबंगका
दोयभागकरै यांसारांकीबराबरिसतावरी तज पत्रज, नागकेसरि
इलायची जायफल मिरचि पीपलि संहि लवंग जायपवी यांसारां
कादोयभाग पाछैयांसारांनैभिहींचांदि मिश्रीसहतघृतमेंगोली
दंक ५कैअनुमानकरै पाछैगोली१रोजीनांषाय ऊपरसूंद्धपी
वैतौबूढोभीजवानहोय इतिमदनमंजरीगुटिका० योजोग
तरंगिणीमेंछै अथवा अफीम पारो येबराबरिले पाछैयांदो
न्यांनैधतूराकाबीजांकातेलमेंमदनकरैदिन ३पाछैईमेंमिश्रीअर
भांगिबराबरिमिलायरति१षायऊपरदूधपीवैतौवीर्यपडैनहींअ
रनपूसकपणोंईसूंजाय योसारसंग्रहणीमेंछै अथवा जायफल
आकलकरो लवंग संहि केसवि पीपलि कस्तूरी भीयसेनोकपूर

४९९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २२

अभ्रक यांसारोंकी बराबरी अफीम पाछें यांसारोंनैमिहीं बांढि सूं
गप्रमाणगोली करै पाछें गोली १ तथा २ ले तो वीर्य पडै न हीं अथवा
गार्जुनीगुटिका लिंगलेप कीलि ० नीलियांकपूर सुहागो पारो
ये बराबरिले पाछें यांमें अगथ्याकोरस सहत यांमें दिन १ परलक
रै पाछें लिंगलेप करै पहर १ राखै पाछें लिंगनें धोय नांखै पाछें स्त्री
सूं संग करै तो वीर्य मोडो पडै अथ पट्टी लिंगलेप कीलि ० सुपेद
कंडीरकी जडकी बकल आकल करौ अजमोद कालाधतूराकाबी
ज जायफल यांसारोंनै जल सूं मिहीं बांढि मिरचि प्रमाणगोली बां
धै पाछें गोली १ मनुष्यका मूत सूं घसि लिंगलेप करै तीन पुंसकप
णों जाय वीर्य मोडो पडै अथवा सूत को घृत सहत यां दोन्यांनै परल
में घसि लिंगलेप करै महीना १ ताई तो लिंगकी कसरसारी मिटै अ
थवा सुपेद कंडीरकी जडकी छालि तीनों दूधमें जमाय घृत काटे पा
छै ई घृतमें मोहरो जायफल अफीम जमालगोदो अनुमानमाफि
कमिलाय लिंगलेप दिन ७ करै ऊपर यांन बांधै ब्रह्मचर्य रहै तो न पूं
सक पणों जाय इति श्री बाजीकरण अधिकारन पुंसकपणोंका
दूरिकरिवाकासं पूर्णम् इति श्री मन्महाराजाधिराज महा
राजराजराजेंद्र श्री सवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृत
सागरनाम ग्रंथेन पुंसकपणोंका दूरिकरिवाकालक्षणभेद
संयुक्त जतन निरूपणं नाम द्वाविंशतिमस्तरंगः संपूर्णः २२
अथ सरीरकी पुष्टाईका जतन बुढापा नै दूरिकरिवाकासातूं
धात सात उपधात अरचंद्रोदयनै आदितेररसत्यांकी क्रिया
अरवांकाषावांकी विधिलिखते सोनो १ रूपो २ तांबो ३ पीत
ल ४ सीसो ५ रांग ६ लोह ७ अथ मृगांकी विधिलिखते

५०० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग

सोनांकापतलाउरककराताताकरै तेलमेंकांजीमें छालिमें बिफ
 लामें गोमूतमें कुलत्थकाकादामें शरतीनतीनबुजावै पाछेसोना
 स्रंडूणैपारोले अरसोनांकाउरकानेंषटाइकेसाधिषरलकरै पाछे
 वेंगोगोलोकरै पाछेवांदोन्यांकीबराबरिसोधीगंधक आंबलासार
 वेंगोलाकैनांचैंऊपरिदेर सरावासंपुटमेंमेलि वेंकैकपडमिट्टीदे
 गजपुटमेंफूकिदे इसीतरैईकैपुट ३दे तदियोमृगांकचोषोहोय
 अथवा सोनांकांचापाउरकले तीकोसोलबोहिसोईमेंसीसोनांषे
 यांदोन्यांनैषटाईसूंषरलकरै पाछेईकैनीचैंऊपरि सोधीगंधक
 यांकीबराबरिदे अरसरावांमेंमेलिवेंकैकपडमिट्टीदेरगजपुट
 मेंफूकिदे इसीतरैपुट ७देतोमृगांकचोषोवणै २ अथवा सो
 नांकाउरकमगायवांकीबराबरिवांमैपारोचरावैषरलमेंषटाई
 सूं पाछेनांकैकचनारकारसकीपुट १दे पाछेवेंकैअग्निजालकारस
 कीपुट ३दे पाछेवेंकैकलहारीजडीकारसकीपुट १दे पाछेवांमै
 सोनांकाउरकसूंचोथोहिसोवांमैमोतीनांषे अरषरलकरै पाछे
 वांमैवांसर्वकीबराबरिसोधीगंधकनांषे पाछेदीनदोयषरलक
 रै पाछेवांकोगोलोकरिसरावासंपुटमेंमेलि वेंकैकपडमिट्टीकरि
 गजपुटमेंफूकिदे पाछेबेनेंस्वांगसातलहुवांकादेतोमृगांकचोषो
 वणै ३ अथमृगांकषावाकीविधि ७रती १ मृगांकले तीमेंसह
 तदंक १॥ मिलाय तीमेंपापलि १ मिलायषावैतो पासनें सासनें स
 ईनें अरुचिनें आदिलेरसर्वरोगांनैंदूरिकरै महीनांदोयषायतो
 शरीरनेंपुष्टकरैपथरत्यांषटाईउगैरैषायनहीं ४ इतिमृगांकाचि०

अथरूपरसकीविधिलि० नांदीकाउरकभागतीन ३ले अ
 रहरतालकापत्रयेकभागले पाछेयांदोन्यांनैषटाईसूंषरलकरै

पाछैयांकोगोलोकरिसरावासंपुटमेंमेलि गजपुटमेंफूकिदेइसीत
 रेंपुट १४ देतौरूपरसनिपटचोषोवणै पाछैईनैरती १ पायतौ घ
 णोंगुणकरै अथवाचांदीकापत्रांकैनीचैऊपरिरूपमष्ठीबराबर
 कीदे अरंसरावासंपुटमेंमेलि गजपुटमेंफूकिदेतौ रूपरसचोषो
 होय पाछैईनैरोजीनारती १ महीनोयेकपायतौ घणोंगुणकरै १
 इतिरूपरसविधिः अथतामैसुरकीविधिलि० चोषातांवा
 कापत्रजाडाकराय तैलमें छाछिमें त्रिफलांकारसमें बारसात
 सातसोधिले पाछैवांपत्राबराबररूपमष्ठीवांरिवांकैनीचैऊ
 परिदे सरावासंपुटमेंमेलि गजपुटमेंफूकिदेतौ तामेश्वरचोषोव
 णै पाछैईनैरती १ रोजीनांमहीनोयेकपायतौ सासवासनै आ
 दिलेरसागसेमजाय अरघणोंगुणकरै इतितामैसुरकीविधिः
 अथनागेश्वरकीविधिलि० सीसोनैंगालिगालि तैलमेंछाछि
 में गोसूतमें कांजीमें त्रिफलांकापाणीमें आककाटू धमेंबुजवेवा
 रसातसात पाछैकड्डलामेंयालि चूल्हेचदायनीचैअभिवाले
 पाछैसीसांडपरिपीयलकाछेयोडांकोचूर्ण अरंआंमलीकाछेयोडां
 कोचूर्ण सीसासूंचैथाईलै वेंसीसांडपरियोडोथोडोनांषतोजाय
 अरलोहकीकड्डाकापींदासूंवेनैरंगडेतौ जायदिन १ ताईनिरंत
 रपाछैईनैजंभीरीसंओसणिगजपुटमेंफूकिदे पाछैइसीतरेंजं-
 भीरीकापुटगजपुट १० दे पाछैनागरिवेलिकापांनकारसकीपुट १०
 दे पाछैसीसाबराबरमेणसिलले तीनैकांजीसूंषरलकरै पाछै
 हिकडीबांधिसरावांमेंमेलि गजपुटमेंफूकिदे पाछैस्वांगसीतल
 होवांकाटे इसीतरेंपुट ६० देतौनागेश्वरचोषोहोय गुणघणोंकरै
 सर्वरोगानेंदूमिकरै पावाकीमात्रारती १ तथा ॥ अथदूसरावि

धिलिष्यते सीसानेंसोधि कडछलामेंचढावै नांचैअग्निवालें केव
डाफाघोटासूरगड तोजाय निरंतरदिन १ वोभस्महोयलाल मानार
ती १ रांजीनांदिन २१ पायतौ गुणघणोंकरै इतिनागेश्वरविधिः

अथबंगेसुरकीविधिलि० रांगनैंगालिगालि तेलमें छालि
में गोमूतमें कांजीमें त्रिफलांकापाणीमें वारसातसातबुज्जवै अ
रआककादूधमेंवारसातबुज्जवै पाछैकडछलामेंघालि चूल्हेंचढा
वै रांगसूंचौथाईपीपलकाछोडा चोथाईहींआमलोकाछोडा लानें
मिहींबांदि रांगउपरिनांषतोजाय अरकडछीकापींदासूरगड
तोजाय पहरदोय २ तांदितदिओरांगभस्महोय पाछैरांगबराब
रिहरतालले षटाईसूषरलकरै गजपुटमेंफूकिदे इसीतरेंपुट
१०दे तदिवंगेसुरसिद्धिहोय गुणघणोंकरै मानारती १॥ अथवा
वंगपावडले तांबराबरिपारोले त्यांकोयेकजीवकरियनकरै मछै
छाणों १ वसो तीमेंकसेलाकोचूरसेर ३१ विछायतींउपरिरांगकाटू
कडामेलै फेरिउपरिकसेलाकोचूरमेलि आसपासछाणोंदे
विनापवनकीजायगामेंफूकिदे वेंरांगकाफूल्याहोयजाय घोघ
णोंगुणकरै इतिवंगेसुरविधिः अथसारकीविधिलिष्यते
गजवेलिकोचूरकराय तीनैतेलमें छालिमें गोमूतमें कांजीमें
वारसातसातबुज्जवै पाछैआककादूधकीपुट ७दे अरथोहरिका
दूधकीपुट ७दे त्रिफलांकारसकीपुट ७दे दांडूकापांनाकारसकी
पुट ७दे इसीतरेंपुटदेदे भस्मकरैशिलाउपरिवांटे सोजलउप
रितिरैजैठानाईभस्मकरैतौ गुणघणोंकरै १ अथवा गजवेलिको
चूरकरै तीकैनांबूकारसकी अरनौसादरकीपुट २१ दे गजपुट
मेंफूकतोजा अरवांदतोजायतौ सारचोयोहोय अरगुणघणोंको

सुन्धारती १ रोजीनां घायती सर्वरोगनैर्हरिकरै इतिसारकीवि
धिः अथसातउपधातांकासारवाकीविधिलि० सौनम
ष्ठी अररूपमयी १ अभ्रक २ मेणसिल ३ हरताल ४ पारो ५ षप
स्त्यो ६ सुरमों ७ अथसौनमष्ठीकोसोधनलि० सौनमष्ठीका
भाग ३ सींथांत्तणकोभाग १ थांदोन्यांनैलोहकाकढलामेंघालि
विजोराकारसमें अरजंभीरीकारसमें पकावे जेठाताईलोहकोपा
त्रललहोजाय तदिसौनमष्ठीसुद्धहोय १ अथसौनमष्ठीको
गारणलि० सौनमष्ठीनैकुलत्यकाकाठामेंपीसि सरावासंपुट
मेंमेलि गजपुटमेंफूकिदे अथवा तेलमेंवांटिगजपुटदे अथवा
छालिमेंवांटिगजपुटदे अथवाबकरीकादूधमेंवांटि गजपुटदे
तोसौनमष्ठीमरै ईकीसावारती १ घायती गुणकरै १ अथअ
भ्रकशोधनमारणविधिलि० कालाभोडलनैलेअभिमेंतपा
यदूधमेंबुजावे अथवाचौलाईकारसमेंबुजावे अथवाषट्आईमेंबु
जावे तदिअभ्रकसुद्धहोय पाछैअभ्रककाजुदापत्रकरिवानैकू
दिअरभिहींकरिसुकायदे पाछैवानैकामलांमेंघालि अरवांमेंसा
लिघालि अरअभ्रकनैसालिसुधामसलिमसलिकामलांमांहि
संपाणीकरिवारैकादैं जुदावासणमें तदिअोधान्याअभ्रकहोय
पाछैईअभ्रकनैआककादूधमेंषरलकरै ईकीटिकडाबांधै पाछै
सुकायआककापांनामेंलपेटै ईकैकपढमिट्टीदे विनासरावेगज
पुटमेंफूकिदे इसीतरै ७ पुटदे इसीतरैथोहरिकादूधकीपुट ७
दे इसीतरैकवास्कापागकीपुट ७ दे इसीतरैचौलाईकारसकी
अथवा नागरमोथाकाकाटाकी अथवा कांजीकी अथवाचित्रक
काकाटाकी अथवाजंभीरीकी अथवानिफलांकी अथवागोमूतकी

५०४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २३

यांकीपुटसातसातइसीतरैदै पाछैवडकीजटाकाकादाकी अरमजी
 उकाकादाकीपुटसातसातदेतौ अभ्रकनिपटचोषोवणै अरयोअभ्र
 करोजीनारती १ बाय महीनांदोय २ तांईतौ प्रमेहनैआदिलेसर्व
 ग्रेगजाय अरशरीरनैघणैपुष्टकरै अरनुकसपणैदूरिहोय इति
अभ्रकविधिः अथअभ्रककीदूसरीविधिलि० सुपेदभोडलले
 तांबराबरिगुडले तांगुडनैपांणीमैघोलैजाडो पाछैभोडलकाप
 त्रांकैजामोजामोलेपकरै अरवांपत्राडपरिसोरोधुरकावतोजाय
 सोरोभोजडलसूंआधोलै अरभोडलकीतहकरतोजाय पाछैईभो
 डलकीतहनैछाणामैंफूकिदे ओभोडलषिलिजाय निश्चंद्रहोय
 योभीगुणकरैछै मात्रारती १ येककी इतिअभ्रकविधिः अथ
 हरतालकोसोधनमारएलि० पीलीहरतालकापत्रकारिअरवें
 कीपोटलीकरि हांडीमैंकांजांयालि डोलजंत्रसूंपहरयेक १ तांईप
 कायजै पाछैपेठाकोपाणीहांडिमैंघालि तीमैंडोलजंत्रसूंपहर १
 पकायजै पाछैचूनांकीकलीकापाणीमैंपोटलीकरि डोलजंत्र
 सूंपहरअर ४ पकाजै इसीतरैहरतालनैपचायांहरतालशुद्ध
 होय अथहरतालकोमारवोलिथते ईसोधीहरतालनै
 षरलमैंमिहांवांदि दूधिकारसमैंदिनदोय २ षरलकरै पाछै
 षरेंटीकारसमैंदिनदोय २ षरलकरै पाछैईकोगोलोकरि छाया
 मेंसुकाय पाछैछीलाकीराषनैहांडीमैंदाविदाविभरै तांके
 वांन्दिईहरतालकागोलानैमैले पाछैईहांडीनैचूल्हैचढाय नां
 चैअग्निवालै कमसूंमंदमध्यअरगाटीअग्निदेरिन ३ तांईनिरं
 तरदै वेंक्रोधूंबोनीसरिवादेनहि अरधूंबोनीसरैतौ धूंवांनैछी
 लाकीराषसूंदाबतोजाय पाछैसांगसीतलहोयजदिईहरताल

नैहांडीमां हिस्काटे तंदियाहरतालसिद्धिहोय सुपेदहोय बाबमें
मात्रारती १ बायतौसर्वरोगमात्रनैयादूरिकरैछै अरभूषण
करैछै इतिहरतालमारणविधिः अथवा प्रथमहरतालनें
इहांविधिसुं सोधिछै पाछेईहरतालनें कवारका पाठाकारसमेंदि
नतीन ३ षरलकरै पाछेईकीटिकडीकरै छायामेंसुकावै पाछेछो
लाकीराषनेंहांडीमेंदाविदाविभरितीकैवांचिईहरतालकीटिकडी
नेंमैलै पाछेचूल्हैचदावै पाछेवैकैनांचैअग्निबाले प्रहर ४ की पाछे
ईनैस्वांगसीतलहुवांकाटे अरवातोलउतरे निर्धूमहोय ईनेंपान
मेंरती १ लेतौयांकोटनेंइरिकरै बाबमेंमोठचणांकीरोटीअरलुणा
पायतौकोटजाय इतिहरतालमारणविधिः अथचंद्रोदयर
सकीविधिलि० सोनांकानोषाउरकलेटका १ भर

अरसोथोपारोटका ८ भरलै अथवा हींगलूकोकाट्यो
पारोले ८ भर अरसोधीगंधकआंबलासारटका १५ भरले पाछेतीं
न्यानेंषरलमेंयालिनांदणिवणिकाफूलांकारससूंदिन ३ षरलकरै
पाछेकवारकापाठाकारससूंदिन ३ षरलकरै पाछेईनेंसुकायका
चकीआतसीसीसीकैकपडमिट्टी ७ दे पाछेईनेंसुकायईसीसीमेंये-
सारीओषधांसोनांकाउरकसमेंतमरै पाछेसीसीकोमूंदोमुंदिदे
अरवालुकाजंत्रमेंचबाय चूल्हैमैलै पाछेनेंचैअग्निबाले प्रथममंद
मथ्य आगदीइसीतरेबालै प्रहरवतीसकी ३२ आंचदे पाछेस्वांग
सीतलहुवाईवालुकाजंत्रमेंसूंईसीसीनेंकाटे पाछेईसीसीमां हिस्
चंद्रोदयनेंकाटे डाबामेंभरिणवे ईकोरंगहींगलूसिरीसोतालहोय
पाछेबाबमेंमात्रारती १ अरईमेंजायफल भीमसेनीकपूर समदसो
सत्त्वंग कस्तूरीयेसारासा ५ भिन्नायसेजीनांषायतौगुणयशैं

करे ऊपरसंघोषोदूधमिश्रीकासंजोगकौरुचिमाफिकरातिनैपति
 अरयांसउगेरेपुष्टाईवस्तथाय अरपदाईषायनहींतोपणीस्त्रियांसं
 संभोगकरे अरनपुंसकपणानेईहचंद्रोदयइरिकरेछे नार्यकोबंध
 जकरेछे इतिचंद्रोदयकरिवाकीअरपावाकीविधिसंपूर्ण
 अथरससिंदूरकाविधिलि ईनेहरिगोरीरसकहेछे प्रथमपा
 रानेंसोधि अरपारानेंपरलमेंघालि हलदअरइंद अरधूमसो अर
 नांबूकोरस ईमृदिन ३परलकरे तदिईकीसातुंकांचलीइरिहोय
 पाछेनिफला कांजी चित्रक कवारकोपादोसूँर मिरचि पापलि
 आंमोदिन ३परलकरे पाछेलसंणकारसमेंपरलकरेईदम ३पाछे
 जंभीराकारसमेंदिन ३परलकरे पाछेईनेहांडामेंमलि इसरीहां
 डीकांसूंमोजोडे पाछेसूँदकेंयामदेचूल्हेचरावे अरऊपरलीदंमि
 कैपीदोआनोकपडोरायेंनांचे अग्निवालैतदिओपाराउपरनीहां
 मिक्केपीदेजायलागे तदिपारानेंकारिले अथवाहिंगन्धकोपारा
 इहांविधिसूँकादिने पाछेईपारानेंवांजककोडकारसमेंपरलक
 रे पाछेहांडामेंवांजककोडकोरसघालि अरईहांडामेंलारसमेंयेव
 स्तओरआठे सरपाक्षीजडी अरजिमीकंदकोरसअरभांगराका
 रससांभरोल्ला सांधोल्ला अरकांजी येसाशिवरावस्तहांडामें
 पाछे पाछेईमेंडोलकाजंनकरिकपडांपेपारोवांधिपहर ४ पक्का
 यले तदिइहपाराशुंइहोय इतिपाराशुइ अथवा हजार
 १००० नांबूफारसमें सूँर मिरचि पापलि राई सांभरोल्ला चि
 त्रक हांग अंसारानांबूकारसमेंनांधिदिन २१ ईरसमेंपारानेंपर
 लकरे तदिओपाराशुइहोय इतिपाराशु पाछेबोमोंधोपातंद
 क ५१भिलि अरसोधीआंवलासारगंधदटका ५१भरने अरदो

यटकनौसादरलेटक सां फिटकडीले पाछेयांसारानेदिन ३ परलक
 रे पाछेआतसीसीसीकेकपडमिट्टीदे अरयेसीसीमेंयेओषोदिभ
 रे पाछेसीसीकेमूटेबामदेरवालुकाजंत्रमेंसीसीमेले पाछेऊनेभ
 ट्टीऊपरिचढावे नीचेअग्निबाले कमसूं मंद मध्य अरधणी इसीत
 रेअग्निप्रहर ३२कादे पाछेस्वांगसीतलहुवां वालुकाजंत्रमेंसूससी
 नेंकाटे पाछे सीसीमांहांसूंईरससिंदूरमेंकादिवांदि रती १रोजी
 नांपानकेसाथिषाय अरपथरहेतौसकरोगेनैलुछलु दांअलुमा
 नसूंयोदूरिकरेछे अरभूषलगवेछे अरशरीरनेंयुष्टकरेछे १
 इतिहरिगौरारससिंदूरकीक्रिया ० अथवा हांगलूकीक्रिया
 पारो अथवा योहीसुध्योपारो असोध्योआंवलासारगंधक यांदो
 न्यानैबराबरिले अरयानेवडकाजटाकारसमेंदिन १ परलकरे
 पाछेआतसीसीसीकेकपडमिट्टीदेवेमेंयेभरे पाछेईसीसीकेईट
 कीषामदे अरवालुकाजंत्रमेंसीसीमेले पाछेवालुकजंत्रमेंभभी
 परचढाथ कमसूंमंदमध्यअरतीक्ष्णआंचदेपहर २१ की पाछे
 ईनेंस्वांगसीतलहुवांकाटे पाछेईनेंसीसीमांहांसूंकाटे ईकीरंग
 हांगलूसिरीसोहोय ओरती १ पानमेंषायतोगुणधणोंकरे सर्वरी
 गानेंदूरिकरे इतिरससिंदूरकीक्रिया ० २ अथपारामारचा-
 कीविधि० पारानेपरलमेंघालि गूलरिकादूधमेंपहर १ पर
 लकरे पाछेईकगोलीबांधे पाछेगूलरिकादूधमेंचोषीहांगध-
 सि ईहांगकीसुसिदोष २ वणावे पाछेईपाराकीगोलीनेंमुसिमें
 बोलि दूसरीमुसिकोहुं हंडोजोडिमुसिकेबामकरे पाछेईनेंमुकाय
 सेर १ छायांकीभीभरिमेंपकावे तदिओपारोसुपेदधिलिजाय ई
 कीभस्महोय याभस्मसर्वरोगमात्रनें दूरिकरेछे इतिपारामार

वाकीक्रिया० अथवा आंधीजाहाकाबीजानेंमिहींवांटियांकीसु
सिदीयकरै यांसुसिमैंगूलरकादूधमेंपारानें षरलकरै पाछेपाराकी
गोलीबांधि यागोलीसुसिमैंगेलि अरपाराकीगोलिकैनांचैऊपरि
दडघलकाफूल वायविडंगषेरयांकोचूरशकरिमेलै यांसुसिको-
गोलोकरै पाछेयांगोलानेंधवणिसूकोइलामेंधवांचै पाछेईकैक
पडमिट्टीदे गजपुटमेंफूकिदे तदिईकीभस्महोय तोलऊतरै याभ
स्मसर्वरोगानेंदूरिकरै इतिपाराभस्मकीक्रिया० अथवसंत-
मालतीरसकीक्रियालि० सौनांकाउरकमासा १ मोतांमासा २ हीं
गलूमासा ३ मिरचिमासा ४ सूरतीषपक्षौमासा ८ रूपोमासा ८
षपस्थानेंगोमूतमेंपहर १६ मोलकाजंत्रसूपकाचै पाछेयांसारा
नैषरलमेंघालि मांषनसूंषरलकरै यांमांषनयामेंसुसैइतनोघा
लै पाछेनीबूकारससूंषरलकरै ओमांषनसुसिजाय इतनैषरल
करै अरईकीचिकुणासइरीकरै ईप्रमाणचाहेजिनोकरै पाछेईको
गोलीकरै पाछेईनैरती १ पीपलि २ सहतका संजोगसूंषायतौ रो
जिनांविषमज्वरनैआदिलेरसर्वरोगानेंदूरिकरै अरईनैपुष्टाई
कासंजोगसूंषायतौशरीरनैपुष्टकरै इतिवसंतमालतीरसः

अथहांगलूमारवाकीविधिलि० हांगलूचोषोपईसा ४ भर
कीडलीले तीनैकडछलामेंमेलै ईमलीऊपरिनीबूकोरससेर ३२
सुसावै पाछेईहांगलूऊपरिकांदाकोरससेर ३५ सुसावै पाछेईड
लीनैकाटै औरुंकडछलामेंमेलै ईमलीकैनांचैऊपरिसेर ३९ कांय
कीलुगदीदेरपकायलै पाछेईमलीनैजुदीकाटै पाछेसेर ३९ कुच
लासेर ३९ राईसेर ३९ मालकांगरीसेर ३९ कांदासेर ३९ मृतसेर ३९
अहतयांसारांनैमिहींवांटियांकोयेकलुगदेकरै कडाहीमेंमेलै

५०९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २३

अरलुगदाकैचीचि यांहीगलूकीहलीमेलै अरईकैनांचैअग्निबालै
 पहरकी तदियोहीगलूसिद्धिहोय तोलपूरोऊतरे रंगलालहो
 य ईकीषाचाकीमात्रारतीआध॥ की अथवारती१ पांनमेंषाय
 पथ्यरहैतौ सर्वरोगांनैयोहरिकरै भूषणालगावै अरनपूसक
 पणानैहरिकरैछै इतिहीगलूकरिवाकीविधिसंपूर्णम् इ
 तिपुष्टाईकीसातथातसातउपधानकामारवाकीविधिचं
 द्रोदयनैआदिलेरसांकीविधिसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महा
 राजाधिराजमहाराजराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजी
 विरचितेअमृतसागरनामग्रंथेपुष्टाईकासर्वजंतननिरू
 पणानामरूपयोविंशस्तरंगसंपूर्णम् २३ अथआसवां-
 काकरिवाकीविधिलिख्यते अथदशमूलासवल्लिख्यते ॥
 सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूंकड्याली गोषरूचील अरलू अरलू
 कुंभेर पाडल यांसारंकीजडलीजै टकापांचपांचभर चिचकट-
 का २५। पैहकरमूलटका २५। लोदटका २० गिलवेदका २० झांच
 लाटका १५ धसासोटका १२। पैरसारटका १२। विजैसारटका १२।
 हरदैंकीछालिटका १२कूटका ९६ मजीरटका २ देवदारुटका २।
 वायविडंगटका २। मंहलोटीटका २। भाईंगीटका २। कैथटका २।
 वहैडाकीछालिटका २। साटीकीजडटका २। पदमाषटका २। नागवे
 सरिटका २। नागरमोथोटका २। श्वब्बटका २। छडटका २। फूलप्रि
 यंगुटका २। गोरीसरटका २। कालीजीरोटका २। निसोतटका २।
 संभालूटका २। रासनाटका २। पीपलिटका २। सुपारीटका २। क.
 चूरटका २। हलदटका २। सौंफटका २। इंदुजबटका २। काकडासीं
 गीटका २। जीबकटका २। रिषभटका २। मेदटका २। महामेदटका

काकोलीटका २। बीरकाकोलीटका २। रिद्धिटका २। वृद्धिटका २। मन
कादषटका ६०। सहतटका ३२। धावड्याका फूलसेर ७५ वोरफडी
सेर ७५ बौलीकी छालिसेर ७५ यांसारानें अरु गुणां पाणी में औद्य
जां कैचोथो हि सोरा बिजै अथवा यांसारानें जव कूठ करि बडामटका
नैं घालिजै ई कै अनुमान पाणी घालै अर इहां पाणी में चोबोगुडम
ए पक्वो घालै अर घातकी जीमी में यो मटको गाडि दे मटका को मुंह
डोटां कि दिन २१ तां ई पाछे ई को जावो ऊठै तदि ई जावानें और मठका
में घालै दारुकटाबाका जंत्र सूईनें कलाल कनां और वास ए में ई आ-
सवनें कटाइलीजै अर वेंजंत्र के मूंडै ये सुगंधिकी ओषदीनां बिजै पो-
टली करि बस चंदन को चूर जाय फल लवंग दालचिनी इलायची
पत्रज केसरि पीपलि ये सारी ओषदि दोय दोय टका भरि लीजै अर
करुदूरीमासा ४ यांनैं वांरि अर वेंकाटी बाका वास ए में वेंजंत्र की मूंडे
पोटली करि मेलिजै इसी तरे यो आसव करि लीजै पाछे ई नें पुराणों क
रिटका २। भर अनुमान माफिक मदात्यय का प्रकर्ण में ई कापी बाकी
विधिलिखी छै तिह माफिक पीजेतौ क्षई रोग नें छदि नें पांडुरोग नें संप्र
हणी नें अरुचि नें सूल नें वासनें सासनें भगंदर नें वायका सारा रोग
गानें कोट नें वचासीर नें प्रमेह नें मंदाग्नि नें उदरका सारा रोगानें पथ्य
री नें मूत्ररुद्ध नें यांसारो रोगानें यो दूरि करै छै अर भूषणें वधावै छै अ
र नपूंसक पणानें दूरि करै छै शरीर नें पुष्ट करै छै अर शरीर नें वीर्य नें नि
पट्यणों वधावै छै इति दश मूलसवकी विधिः अर इहां तरें सा-
रा आसव दष अंगूर नें आदिले र करि लीजै अथ पाकां का करि बा-
की विधिलि० अथ मूसली पाक करि बाकी विधिलि० सुपेद म-
सली पाव ३। कौंछिका बीज टंक ३। बिदारी कंद टंक ३। गोषरू टंक ३।

५११ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

सतावरिदंका २॥ षरैदीकाबीजदंका १ गंगेरशिकोछालिदका १ भर
तजदका १ भर सूँठिदका १ भर यानैभिहीवांदि यांबराबरिघृतमें
यानैमकरोवै अरयानैदूधसेर ३७ मेंपकावै अरदूधकोषरोमावोक
रै पाछैघांमसेर ३७ कीचासणीकरै लाडुवांकीसी पाछैचासणीमें
योपावोनांवै अरयेओषदिभीचासणीमेंओरनांवै मिरचिदंका २॥ पी
पलिदका २ सूँठिदका २ दालचिनीदका २ पत्रजदंका २ इलायचीद
का १ नागकेसरिदंका २ कस्तूरीमासा ४ लेंवंगदका १ जायफलदका
२ जायपत्रीदका २ वंसलोचनदका १ यांओषंघांनैजुदीजुदीवांदि
ईचासणीमेंनांवै अरसार वंग अभ्रक मृगांक अरहरिगौरीसर यो
भीअनुमानमाफिकचासणीमेंनांवै चारोलि पिसता येभीअनुमान
माफिकईचासणीमेंनांवै पाछैयांकोयेकजीवकरियांकीगोलीदका
१ भरीबांधै यागोलीरोजीनांघ्राय एकप्रभातरकंसंध्यासमेंषायतो
शरीरनैपुष्टकरै अरप्रमेहादिकसर्वरोगानैयोदूरकरैछै इति
मूशलोपांककीविधि ॥ अरइहांतरैसारापाककरिलीजे ॥

अथसिलाजीतसोधिवाकीविधिलि ॥ सिलाजीतपरबतको
मदतीनैलीजे अथवाचेचुयापरबतकाकांकरानैलीजे पाछैवै
सिलाजीतनेंगऊकादूधमेंभिजोवै अथवात्रिफलांकाकाटामें-
भिजोवै अथवाभागराकारसमेंभिजोवेदिन १ पाछैवैवासणमेंवैनें
षूचमसळै पाछैवेनेंकपडामेंछाणिवैनेंतावडैमेलेसुकायलेत
दिओशुद्धहोय १ अथवासिलाजीतसांकाकरालैरवांनैवांटेऊना
पाणीमेंप्रहर २॥ षै पाछैवांनैमसलिओरयांटीकापात्रमेंबस्त्रसूं
छाणिले पाछैवैपात्रनैतावडैमेले ऊपरलोपाणी ओरपात्रमेंनि
तारिले इसीतरैवारंवारमहीनांदेयचांईकरतोलाय्य तदिओसि

५१२ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

राजीतसुद्धहोय अग्निमेंनिर्धूमहोय अरअग्निमेंमेलोउभोहोय
जाय लिंगपमयोसोध्योसिलाजीत प्रमेहनैआदिलेरघणारंगोंमें
दूरकरै अरशरीरनैयोपुष्टकरैछै इतिसिलाजीतसोथनवि०
अथजवधारनैआदिलेरसाराधारकरिवाकीविधिलि०
पौदैआयाजवानैकादिबानेंसुकायलीजै पाछेवांनैबालिवांकीराय
करि वेंराघांनैचासणमेंभिजोयदीजेदिन २ताई पाछैतिषटीकैकप
डोवांधि वेंकपडांमेंओराघसमेतपाणीघालिदीजे पाछेवेंपाणी
औरघालतजाजै धारोपाणीनांसरैजटाताई पाछेवेंपाणीनैकडा
हीमेंचदाय ओपाणीवालिदीजै तदिकडाहीमेंवहैपाणीकोलूणमि
रीसोधारजमिजाय इहीतरेसाराधारकरिजै इतिजवधारनैआ
दिलेरसाराधारकरिवाकीवि० अथचणधारकरिवाकीवि
धिलि० महाकामहीनामेंचणाकोषेतहोयजठै चणाउपरिमिहीक
पडो घडातीनिचारिकैतउकैस्याणोंआदमीफेरील्यावै ओहीकप
डोरोजीनांदिन १५ताईफेरै अरनित्यवेंकपडांनैसुकावतोजाय
ओकपडोटाटसिरीसोजाडोहोयजायजैटाताई पाछेवेंकपडांनै
पाणीमेंभिजोय कडाहीमेंओरकपडांसूवेंपाणीनैछाणीले पाछे
कडाहीमेंओनिताखीपाणीघालेवेंपाणीनैचासणीसिरीसोगादो
करि औरचासणमेंघान्निरायैतोंवहचोचणायारहोय अरओ
पाटोयणांहोय इतिचणधारकरिवाकीविधि० अथस्नेह
विधिलि० स्नेहचारि४ प्रकारको घृत १ तैल २ वसानामशुद्धमा
सकोघृत ३ मज्जानाममंजीसोहाडामांहिसूनसिरै ४ येचारिहीमें
हपुष्टकर्ताछै १ अथस्नेदविधिलि० स्नेदचारि४ प्रकारको ताप
उष्ण २ उपनाह ३ उवस्नेद ४ तापअरउअस्नेदहैसोकफकाआजप

नैर्दूरकरैछै बालूरेन लूण वस्त्र तातोहाथ दकणी अंगीठी यांसूसे
 ककरै पसेवआवैतीनैतापस्वेदकहिजे १ लोहपींडोईटनेआदिलेर
 बानैतपायअरपसेवआवैतीनैउपश्वेदकहिजे २ तापअरउभयेदो
 न्युमिलिकरिपसेवआवैतीनैउपनाहस्वेदकहिजे ३ अरसरीरनैष
 स्त्रसंदांकि अरशरीरउपरिताताषटार्दकापाणीसूंसीचै अथवावा
 यनैर्दूरकरिवावालीऔषधांकापाणीसूंतातोतातोशरीरउपरिनां
 षे पसेवआवैतीनैद्वस्वेदकहिजे ४ येच्यारूंहीपसेववायकारो
 गानैर्दूरकरैछै अथमहासाल्वणस्वेदलि कुलत्त उडद गो
 हूं अलसी तिल सिरसूं सौंफ दोवदारु संभातू जीरो अंडोली
 अरडीकीजड रास्ना सहजणांकीजड यांसारांनैलूणसंयुक्त कांजी
 सूं अथवा कहींषटार्दसूंमिहींपीसि वेंनेगरमकरि शरीरमेंजेठेवा
 य आईहोयतेठेसेकैतौवायकासारारोग जाय इति महासाल्वण
 स्वेद० इतिस्वेदविधिः अथवमनविधिलि शरदरितुमें वसं
 तरितुमें वर्षारितुमें मनुष्यमात्रकूं वमन अरजुलाचलेवोजोग्यछै
 जीकासरीरमेंकफकारोगहोय हियानिआदिलेरदूषताहोय अरवि
 षकोदोषहोय मंदाग्निकोरोगहोय श्मीपदकोरोगहोय कोटको
 रोगहोय विसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम बास सास पीनस मृगी इन्ना
 द रक्तातिसार नांक तालवी होठ येपकिगयाहोय कानपकिगयो
 होय दोयजीभहोयगईहोय अतीसारहोय पित्तकाकफकारोगहोय
 मेदवधिगईहोय सिरकोरोगहोय पसवाडोदूषे तत्कालजुरहुईहो
 य अरुचिहोय यांसारांरोगानेंवमनकरियोजोग्यछै वमनसूयेरोग
 जाय १ अरइतनारोगानेंवमनकराजेनहीं निमिरकारोगनै गोल्ला
 करोगीनैठदरकारोगीनै दुर्बलनै बूढानै गर्भिणीस्त्रीनै स्थूलनैचो

दलागी होयजीनें मेदवालनें भूषानें उदावर्तिनें बायकारोगीनें यानें
 वमनकराजेनहीं अथवमनविधिः भेदडीपतलीधापिसुबाजें अ
 रभेदडीमें दूध छाछि दहीयेनांभिजें अरनिपटघणीषुबाजें कंठपर्यं
 त पाछेसींधोल्हा सहत वच येषुवाय ऊपरितातो पाणीपाय ग
 लामें आगुली घालिवमनकराजें १ अथवा कुटकी ओरतीषीवस्त
 अथवामेंदलकोचूर्णगरमगरमपाणीसूंलें अथवा फिटकडीतमा
 षूडगैरैगरमपाणीसूंलेंतौवमनहोय अथवा नींबनें आदिलेरकड
 वाद्रव्यसूंवमनहोयतौ येपाछेकत्थासोसर्वरोगजाय अथवमन
 कस्तांपाछे जीमकेंजीराउगैरै आछीवस्तलगाय अथवाबिजेता
 उगैरैआछीवस्तपाजें अंतरउगैरैआछीवस्तसूंधिजें आछ्याआ-
 छ्याभोजनकराजें इतिवमनविधिः अथविरेकनामजुला
 बतीकीविधिलि २ प्रथमपुरषनेंविधिपूर्वकवमनकराजें पाछे
 वेंपुरषनें पाचनद्रव्यदीजें वेंकाशरीरकाकफकारोगपचिजाय
 जठतांडै अरसरदरितु वसंतरितु ईनेंनिश्चैजुलाबदीजें अरजरू
 बजुलाबदीयांहींयाकोरोगजाय तदिचाहिजैरितुमेंजुलाबदीजें
 अरइतनांरोगवाला मनुथानेंनिश्चैहीजुलाबदीजें तदिये रोग
 जुलाबदीयांजाय जीर्णज्वरवालो जीकाशरीरमेंमलकोसंग्रहहो
 य नातरक्तवालो भगंदरवालो बचासीरवालो पांडुरोगी उदररो
 गी गोलाकोरोगी हृदरोगी अरुचिकारोगवालो जोनिकारोगवा
 ली गरमीकोरोगी प्रमेहकोरोगी व्रणकोरोगी फोडाकोरोगी
 बिसूचिकारोगी नेत्रवालाकोरोगी लुभिकारोगी मूलकोरोगी
 कोठी कानकोरोगी नांसीकांकोरोगी सिरकोरोगी मूंडाकोरोगी
 सोथकोरोगी मूत्राघातकोरोगी थारोगांवालो मनुष्यजुलाबले

५१५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

तौ ये रोगांतत्कालजाय १ अरइतनारोगवालो मलुष जुलाबलेन
 हीं बालक बूढो शरीरजीं को घणों चीकणों होय शस्त्रलाग्यां सूंसी
 ए होय मरपस्याल बेदजुक्त तिसायो स्थूल पुरुष गर्भिणी स्त्री त
 त्काल ज्वर च दी होय सो तत्काल जीं कै सें तानु हुई होय इसी स्त्री में
 दाग्निवालो मेदकारोगवालो लूषो जीं को शरीर होय इतनारोगवा
 लो पुरुष जुलाबलेन हीं अरपित्त की तासीरवाला नैं को मल जुला
 ब दीजै अरकफ की तासीरवाला नैं मध्य जुलाब दीजै अरवाय की
 तासीरवाला नैं करडो जुलाब दीजै तदियां को कारिज होय अथ मृ
 दु जुलाब लि० दाष दूध हर डैं नैं आदिले अथ मध्य जुलाब लि०
 निसोत कुटकी किरमाला नैं आदिले अथ तीक्ष्ण नाम करडो
 जुलाब लि० ओहरिको दूध चोष दांलूणी जमाल गोरो और इछा
 भेदी नैं आदिले अथ पुनः जुलाब लेवा की विधिलि० प्रथम दि
 न पांच सात तो पुरस मुंज सले सना मुषी दंक २॥ जीरो दंक १॥ सौं
 फटंक २॥ मिनका दाष दंक २॥ गुल्लब का फूल दंक २॥ षांम दंक १०
 यां सारां नैं तीन पाव ३॥ पाणी में औं टाय तां को पाणी पाव ३॥ राषे
 पाछे ई पाणी नैं छाणि रोजी नां दिन ४ पीवै तीपेट को मल पचै अर
 नीसर बोकरै अर रोजी नां चावलां की पिचडी घृत समेत पाय अर
 पांच वे दिन सना मुषी दंक १० निसोत दंक १० गुल्लब कंद दंक १० जी
 रो दंक २॥ सौं फटंक ५ षांम दंक १० यां नैं औं टाय दिन दोय चारि रो
 जीनां ले अर घृत समेत पिचडी पाय ती जुलाब आछी लागे अर ई
 संस्कार रोग जाय बारो बारो पाय न हीं जुलाब का दस्त ३० लागै ती उत
 म जुलाब जाणिजै अर दस्त २० लागै ती मध्य जुलाब जाणिजै अर
 दस्त १० लागै ती हीन जुलाब जाणिजै १ अथ छउरितु का जुदा

जुदाजुलाबलि० चसंतरितुमेंतौसनामुषी निसोत गुलाबकाफूल सौंफ जीरो यांमचीणी यांकोजुलाबदीजै श्रीधमरितुमें निसोत मिथी येदोन्धूंबराबरिले तौकोजुलाबलीजैतौरोगजाय शरीरशुद्ध होयजाय २ अथवर्षाकालकोजुलाबलि० निसोत पीपलि दा ष सूंठि सहत यांकाजुलाबसूरोगजाय ३ अथसरदरितुकोजुलाबलि० निसोत धमासो नागरमोथो दाषनेत्रवालो महलोठी चंदन सनामुषी मिथी यांकोजुलाबलेतौरोगजाय ४ अथहिमरितुकोजुलाबलि० निसोत चित्रक पाठ चोष सनामुषीवच याको जुलाबगरमपाणीसूंलेतौ रोगजाय ५ अथसरीररितुकोजुलाबलि० निसोत पीपलि सूंठिसींधोत्वृण सहत सनामुषी यांको जुलाबलेतौरोगजाय ६ अथअभयादिमोदकलि० हरडैकीछालि मिरचि सूंठि वायकिडंग आवला पीपलि पीपलामूल तज पत्रज नागरमोथो येसाराबराबरिलै अरयांसारांसूंतिगुणीदंतूणीले अरयांसारांसूंअदगुणीनिसोतले अरयांसारांसूंखगुणीमिथीले अरयांसारांनैमिहींवांटिस हतमेंटंकरा प्रमाणगोलीवांधै पाठै गोली १ प्रभातही सीतलजलसूंलेतौ जुलाबचोषोलागै गरमपाणीपीवेनहींजठाताईजुलाबलागिबोहीकरै अरुईमेंधणोंजुलाबलागिबोहीकरैतौ मनुष्यकासारारोगजाय विषमज्वर मंदाग्नि पांडुरोग बास भगंदर प्रमेह राजक्ष्मा नेत्रकारोग ववासीर कोद गंड माला उदरकारोग वायकारोग आफरो मूत्ररुद्ध पथरा जांघकटी कीपीडा यांसारांरोगानैयोअभयादिमोदकदूरि करैछै अरजुवान करैछै इतिअभयादिमोदक १ अथजुलाबलेवालोइतनावस्तकरैसोलि० जुलाबलाग्यांपीठैसीतलजलसूंआंधियांधै अन

५१७ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

रसंघे पानपाय पवनका धरमें रहै न हीं सीतलजलसंज्ञावे न हीं
गरमजलबारबारपीवै जगताई सारोजुलाबलागै अरबीचहीयेन
हीं करै तो नाभिमें कूषिमें सुलचाले पाछे जंगलउतरे न हीं अपवन
सरे न हीं पितीउगै रोगहोय अरशरीरभासौरहै दाहहोय अरुचिहो
य आफरोहोय भौलिआवे छादणीहोय तो पाछेवेने शचनादिकदे
औरु सुद्ध करै तो ये सारारोगजाय अरभूषलागै शरीरहलकोरहै अ
रजुलाबघणेलगे तो सुद्ध होय गुदावारे नीसरिआवे सुलचाले अ
रअनीसारनैआदि लेरऔरभीरोगहोय तदवेने सीतलजलसंज्ञानक
गजै अरचावल मिश्री सहत सिषरणीं दहीं येषुबाजै अरबकरीको
दूध मिश्रीनांषिपाजे अरसाख्याचावल मसूर येषुबाजै तदिधणैलु
लाबयंगै अरआछो जुलाबलागै जीकाये लक्षणलि० मनप्रसन्न
रहै वायसरे सर्वइंद्रियांमें बलहोय जाय बुद्धिनिर्मलहोय जाय भूष
चोबीलागै सर्वशरीरमें बलहोय १ इति विरेचननामजुलबकीके

अथ छउरितुमें हरडैषावाकीविधिलि० शीघरितुमें येक १
हरडैकीछालिकोचूर्णतिमें वराबरिको गुडमिलायरोजीनांदिन ६०
ताईषायतौ रोगहोय न हीं अरचर्षारितुमें दोयहरडैकोचूर्णसांधू
लक्षकीसाधिपायतौ रोगहोय न हीं अरशरदरितुमें मिश्रीकैसाधि
दोयहरडैकोचूर्णपायतौ रोगनहीं होय अरहिमरितुमें आरि ४हर
डैकोचूर्णसंदि कैसाधिपायतौ रोगनहीं होय अरसिसिरितुमें ५हर
डैकोचूर्णपीपलिकैसाधिपायतौ रोगनहीं होय अरवसंतरितुमें
छ ६हरडैकोचूर्णसहतकैसाधिपायतौ रोगनहीं होय इति छउरि
तुमें हरडैषावाकीविधि० अथ वस्तकर्मकीविधिलि० वस्तिना
मपिचरकीसोजीवोगीकै सुलसूलरुकिगयोहोय वायकांआजांरां

करिकें सोबापिचरकीइंद्रिमेंगुदामेंदेवे अरवापिचरकीजसतकीना
 लिगलायवकराकाआंठांकीवणैछै अथवासुवर्णनेआदिलेरधातां-
 कीनालिवणैछै गडकापूछकैआकारसोईमेंऔषधांकोजलयालिइं
 द्रीमेंअरगुदामेंयावस्तिकर्मकरिजेतो वायकासर्वरोगजाय सोबाव
 स्ति२प्रकारकीछै अनुवासाजीकोनाम१ निरूहजीकोनाम२ अर
 तेल घृतनेंआदिलेरजांकीपिचरकीदीजेतानेअनुवासनवस्तिकहि
 जै२अरनिरूहवस्तिकोभेदयेकउत्तरवस्तिछै१अरअनुवास
 नकोभेदमात्रावस्तिछै२यांकोतोळटका२भरजलकोछै इतना
 रोगवालानेंअनुवासनवस्तिदीजेनहीं भस्मकुरोगवालानें भयजुक्त
 नें सासधासवालानें क्षयरोगवालानें यांरोगांवालानें अनुवासन
 वस्तिदीजेनहीं अरयांरोगवालानें अनुवासनवस्तिकराजे अरये
 कबरसनेंलेरछवरसतांईकांनैतौछअगुलकीपिचरकीकीवस्ति
 दीजे अरबारावरषकाकै आठआंगुलकीपिचरकीदीजे बारावर
 षउपरांतिबाराआंगुलकीपिचरकीदीजे पाछैबुद्धिकाअनुमानसं
 दीजे अरपिचरकीकैघृतलागायलीजे अरवस्तिकर्मसंशरीरमेंबल
 वधै रोगजाय अरसीतकालमें अरवसंतरितुमें दिनमेंस्नेहवस्ति
 दीजे अरग्रीष्मरितुमेंवर्षारितुमें अरषादरितुमें रात्रिमेंअनुवास
 नवस्तिकर्मकीजे अरघणोंचीकणोंभोजनकराजेनहीं हलकोभोज
 नकराजे अरस्नेहमेंसौंफकोजलसींधोतूएनांपिगुदामेंवस्तिदीजे
 गरमपाणीपाय भोजनकराय अरफिराय अरमलमूत्रादिकराय
 अरबांवांपसवाडांकांनिसुवाय अरबांवांजांघनेंपराारि अरइराश
 जांघनेंउंचीकरिगुदामेंस्नेहकीपिचरकीदेअरबांवांहाथसंपकदि
 जीमणांहाथसंभ्रांचेंतांदगुदामेंपिचरकीकोजलअरस्नेहजायपरे

५१९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

अरपिचरकी देतो ओ देवावालो पुरष अरलेवावालो अतनीवस्तकरै
 नहीं जंभाई पासी छींक येले नहीं तीसतालीवजावै जगताई वस्ति
 कर्मकरै अथवा मूलां सूंसौ १०० बार की गिणती करै पाछे सारा सरीर
 नै पसारि सूयो सोवै पाछे दोन्यां पगां की आंगुली अंगूठानें चतुर आद
 मोकनै धेंचावै पाछे सेज उपरि सूधो सोवै दूंगा मसलावै नांदले इसी
 तरे करै तौ यावस्ति वायका सारा रोगानें दूरि करै अरवा गुदामें लीनी
 जो वस्ति सोमल समेत गुदामां हिंसूं सारा मल नें अर सारा वायकारो
 गानें दूरि करै छै अर अनुवासन वस्ति कर्म इहां विधि० छइ सात
 आठ नववार ये के का दिन को अंतर करि करि के करीथ की सर्व वायका
 रोगानें दूरि करै छै अर अनुवासन वस्ति कर्म कथां पाछे निरुह वस्ति
 करिजे अर जीका मलासयमें अथवा पक्कासयमें अनुवासन वस्ति च
 लाईथ की उठे टीवें को स्नेह जुक्त जल उगै रैर हजाय गुदामां हिंसूं नीस
 रैनहीं पेड़ नें मसल्यां थकां भीतौ निरुह वस्ति औरुं कीजे ती की औष
 दिकी वस्ति करि गुदामें चलाजे तौ वायु सुरै अर मां हिलो मल नीस रि
 जाय अर शरीर शुद्ध होय अथवा जुं ल्यब दे कादिजे अथ अनुवास
 न वस्ति का देबा को ते ललि० भिलवै अरंड की जड कणगच की
 जड भाडंगी अर दू सोरो हिंस सतावरी सहज शों कागल हरि यानें
 टकाटका भरिले जवे उडद अलसी बोर की जड कुलथ ये सेर सेर
 लीजे यां सारी औषधानें चौषडि ६४ सेर पाणी में औदाय यां को चो
 थो हिंसो राधिता में मीरो ते लसेर ५४ पकाय लीजे रस बलि जाय ते
 लआंयर है तदिई ते लनें छाणी टका ११ भर की पिचर की गुदामें दाजे
 तौ सर्व वायका रोग दूरि होय इति अनुवासन तैल० इति अनुवा
 सन वस्ति की विधि० अथ निरुह वस्ति करवा की विधि लि०

५२० अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग , २४

निरूहवस्ति तो घणा प्रकार है अरु ईकाधणां हीं कारण है अनिरूह
वस्ति को आस्थापन भी नाम है अनिरूहवस्ति को सवाप ईसै देवा
को प्रमाण है अतनां रोग बाला नै निरूहवस्ति दीजै जीं को शरीर चीक
णों धणोर है अरु हिया कै चोट लागी होय शरीर क्षीण होय आफरा को
रोग होय छर्दिको रोग होय हिच की बाला नै ववासीर बाला नै सासवा
स बाला नै गुदा का सोजा बाला नै अतीसार बाला नै विमूषिका बाला नै
उदावर्त बाला नै वातरक्त बाला नै विषमजुर बाला नै मूर्च्छा तिस उदर
आफरो मूत्र छु यथरा पैर को रोग मंदाग्नि सूल को रोग अम्ल पित्त
हृदय को रोग यां सारां हीं रोगां में ज्यां कै को ई रोग होय ज्यां नै निरूहव
स्ति दर्शय की यां सारां रोगां नै दूर करै है अनिरूहवस्ति का देवा
की विधि अनुवासन वस्ति की निधि में लिखि दीनी है या निरूहव
स्ति भी दो चारि बार ये के दिन को अंतर करि पाछे लिखि है तिहां विधि
सूंदी जै अरु केवल बाग को विकार होय तो स्नेह संयुक्त दीजै अरु पि
त्त को विकार होय तो दूध संयुक्त दोय वस्ति दीजै अरु कफ को विकार
होय तो कसाय लोकड वो अरु मूत नै आदिले र निरूहवस्ति दीजै अरु
सुकुमार कुं बालक कुं बूढा कुं मृदु वस्ति दीजै अथ उक्ते दन वस्ति
विधि अरुंड की अरुंडोली महुवो पीपलि सांधो नूरा वच जाऊं
रूष की वकल यां नै औलाय यां की वस्ति दीजै इति उक्ते दन वस्ति

अथ दोषहर वस्ति लि० सौंफ महलोरी बील इंद्रजव यां नै कांजी
अरु गोमूत में पीपि देतो सर्व दोष जाय इति दोषहर वस्ति अथ
लेखन वस्ति लि० त्रिफलां को कादो गोमूत सहज वपाय यां की
दीजै तो इति लेखन वस्ति अथ सोधन वस्ति लि० हरदेगिरमा
लानै आदिले रूपां को जुलाब लागै त्यां की पिचर की देतो नै सांधन व

५२१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

स्तिकहिजे अथसमनवस्ति० फूलपियंगु महलौरी नागरमोयो र
 सोत यांनैदूधमेंचांदि यांकीपिचरकीदीजेतीनेसमनवस्तिकहिजे
 अथहंहरवस्ति० पुष्टार्दकीभोषद्यांकोकाटोकरि तीमेंमीरा
 इव्यमिलाय अरघुतमांसरसउगैरैत्यांकीपिचरकीदेतीनेहंहरव
 स्तिकहिजे अथपिछलवस्ति० बोरकापान सत्तावरी ह्नेसवा
 मोचारस यांनैदूधमेंपकाय तीमेंसहतनांषे वस्तिदीजेतीने पिछ
 लवस्तिकहिजे अथनिरूहवस्ति० कातोलकोप्रमाणलि० प्रथम
 तोकिंचित्सींधोलूणनांषे पाछेवेमेंहंसेरआध॥ सहतनांषे अर
 सेरआध॥ घृतनांषे पाछेयांतिनांनैषूबमधि यांकीपिचरकीपां
 चसातवारयेकेदिनकाआंतरासंचतुरार्दसंदीजे इहनिरूहवस्ति
 कातोलकाप्रमाणलिथो इतिनिरूहसाआविधिः अथमधुते
 लकीवस्तिविधिलि० अरंडकीजडकोकाटोकरे तीमेंसहत अर
 मोरोतेलटकाभरनांषे अरसोंफर्दसाभर सांधोलूणअधेलाभ
 र यांनैचांदिपाछेयांनैमठे अरवांकीपिचरकीदेती मेदनैगोखनैठ
 मिने फ़ियानै मलकारोगनै उदावर्तनै यांरोगानै यावस्तिदूरिक
 रैठे अरशरीरनैबलवधावैठे इतिमधुतेलकीवस्ति० अथस्था
 पनवस्ति० सहत घृतदूधतेल येपर्दसापर्दसाभरले त्यामेंजां
 ऊंरूषकीयकलकोरस अरसांधोलूणअधेलाभरनांषे यांसारको
 येकजीवकरि पिचरकीदेतीनेस्थापनवस्तिकहिजे अथसिद्धव
 स्ति० पीपलि पीपलासूल चव्य चित्रक संधि यांकोकाटोकरि
 तीमेंतेलसहतसांधोलूण महलौरीयांनैऔदाययेभिमिलाययांकी
 पिचरकीदेतीनेसिद्धवस्तिकहिजे अथफलवर्ति० गुदकेमां
 दिबारेघृतलगाय आपकाअंगूठाप्रमाणजाडीदूदीआंसुलबारा१२

कीआधीगुदामेंचलावै अरईकीचतुराईसुं पिचरकीदेतीनेंफलवर्ति
 कहिजै अरनिरूहवस्ति कोहीभेदउत्तरवस्तिछै अरवस्तिकर्मकरिवा
 वालोगरमपाणीसूंस्नानकरै अरदिननेंसोवै अरअजीर्णकरैनेहीं
 औरभीकुपथ्यकूंकरैनेहीं इतिअनुवासनवस्ति० अरनिरूहव
 स्तिनेंआदिलेरसर्ववस्तिविधि० अथहुकनेंआदिलेरधूमपान
 कीविधिलि० धूमपानछंदप्रकारकोछै समन१ वृंहण२रेचन३पा
 सहर्त्ता४ वमनकर्त्ता५ वृणधूम६ तीषीऔषधांकोतीधूमपान
 वेंनेंसोधनकहिजै० इतनांरोगांनें धूमपानकराजेबही पेद
 संयुक्तनें उरपस्यालनें दुषीनें दांताकारोगांनें रातिनेंजाग्योहोयज्जी
 नें तिसवालानें दाहवालानें तालवाकीरोगीनें उदरकारोगीनें म
 थवायकारोगीनें छर्दिकारोगीनें आफराकारोगीनें तालवाकारोगी
 नें घावकारोगीनें प्रमेहकारोगीनें पांशुरोगीनें गर्भिणीलुगार्दनें
 क्षाणपुरुषनें बालकनें बूढानें इतनांपुरुषांनें धूमपानकराजैने
 हां अरधूमपानहैसोबायकासर्वरोगांनें अरकफकासर्वरोगांनें दू
 रिकरैछै अरसर्वइंद्रियांनें अरमननें प्रसन्नकरैछै केसानेंगाढैक
 रैछै दांतानेंगाढाकरैछै अरइलायचीनेंआदिलेरयांकोधूंवोली
 जैतीनेंवृंहणधूमकहिजै१ अररालनेंआदिलेरयांकोधूंईलीजै
 तीनेंवृंहणधूमकहिजै२ अरतीषीऔषदाकोधूंवोरेचनकहिजै३
 मिरचादिककोधूंवोकासघ्नकहिजै४ घालकोधूंवोवमनकर्त्ताक
 हिजै५ नींबवचननेंआदिलेरजांकोधूंवोदीजेव्रणादिककूं तीनेंवृं
 हणधूमनकहिजै६ अथअपगजितधूपलि० योरकापांष नां
 बकापान कल्यालीकाडोडा मिरनि हांग छड कपाम बकराकावा
 ल सांपकाकोचली बिनाईकीवीर हाथीकोदांत यांनेंवांरिपृतयि

५२३ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

लायधूलीदेतौ पिशाच राक्षस भूत प्रेत माकिणी नै आदिलेर सर्वदे
षद्विकरै जुरनै इरि करै इति अघराजित धूप० अथ माहेश्वर धू
पलि० हांग देवदारु वीलपत्र घृत गऊका हाड कुटकी सरसूनीव
रूपानि मांथाकाकेस सांपकीकांचली पिलाईकी विधि गऊकोसींग
में डल दोन्युंकलाली कपासतुस बकराकारोम चंदन मोरपांष बक
राकोसूत यांनै चारि आदमी के धूलीदेतौ पिशाच राक्षस माकिणी भू
त प्रेत सापबूडावळि मंनै आदिलेर सर्वदोष हरि होय अरसर्वप्रका
रकी जुरई धूपसंडरि होय इति माहेश्वर धूप० इति हुकानै आदि
लेर सर्वधूमकी विधि० अथ लोहीछुडानाकी विधिलि० आद
मीकाशरीरमें वैद्य है सो लोहीका विकार नै भले प्रकार दोष वैको लो
हीसेर १ तथा सेर आध ॥ तथा पाव ॥ तथा अधपाव ॥ कटायजे
अरसरदरितुमें तौ बिना विकार हीयो डो लोही कटाजे तौ मनुष्य के लोही
को विकार होय नहीं अथ शुद्ध लोहीको स्वरूप लि० लोहीको मीठो
रस छै लाल वर्ण छै सीतल अरगरम ये दोन्यून ही छै अरभास्यो छै
चीकणों छै अरदुरगंधि नै लीयां छै अरयो लोहाद भहु बोथ को गरमी
का सर्व विकार नै करै छै अरलोही शरीरमें दुष्ट होय यदि पीड होय श
रीर पकि जाय दाह होय शरीरमें चास पडि जाय पाजि होय फुल स्यां
होय सो जानै आदिलेर और विकार होय अरलोही शरीरमें बधि जाय
तौ नेत्र लाल रहै अरभारीन सोर है अरशरीर भाखोर है नांद घली आ
वै मेदवधै शरीरमें दाह होय अरशरीरमें लोही क्षीण पडि जाय तौ ष
टाईकी मिटाईकी चांछार है मूछो आवै शरीर लुपौ रहै शरीर की नसां
सिपल हो जाय अरबाय करि दुष्ट जो लोही तीको लक्षण लिख्यते
अरुण रंग होय फग आवै कठोर होय अरजीकी कृतावली चालती रहै

क्षमधारहोय अरसुईसिरिसाधाररमेंचमकाबालै अरत्तालहोय ये
 सारालोहीमेंलक्षणहोय तदिजाणिजेलोहीचायसूंदुष्टहुवोछै २ अ
 थपित्तसूंदुष्टहुवोजोलोहीतीकोलक्षणलि० लोहीपीलोहोय
 हल्लोहोय नीलोहोय कालोहोय जीमेंदुरगंधिघणीआवे चालेनहंग
 रमहोय मांथां अरकीडापायनहीं जीलोहीमेंयेलक्षणहोयतीनौपित्त
 सूंदुष्टहुवोजाणिजे ४ अथकफसूंदुष्टहुवोजोसोहीतीको
 लक्षणलि० लोहीसीतलहोय घणोहोय चीकणोहोय भास्योहोय गे
 रुंकारंगसिरिसोहोय मांसकीगुठल्यांसिरिसोहोय होलैचालै येल्ह
 एलोहीमेंहोयतीनैकफसूंदुष्टहुवोजाणिजे ५ अथसन्निपातसूंदु
 ष्टहुवोजोलोहीतीकोलक्षणलि० जीमेंयेसारालक्षणमिलै अर
 कांजींसिरिसोजीकोरंगहोय तीनेसन्निपातसूंदुष्टहुवोजाणिजे ६
 अथविषक्रिकेंदुष्टहुवोजोलोहीतीकोलक्षणलि० जीकोलोही
 कालोहोय अरनांकमेंधणैचालै दुरगंधिघणीआवे कांजीकोसोरंग
 होय ईसूंकोटहोयआवे सांवणकीडोकरीसोजीकोरंगहोय अरश
 रीरमेंसोजोहोयआवे अरशरीरमेंदाहलागिजाय शरीरपकिजाय येल्
 क्षणजीमेंहोय तीनौविषकरिदुष्टहुवोजाणिजे ७ अरअतनारोगां
 नैयोलोहीकटाबोजोग्यछै सोरोगलि० सोजाक्रोरोगहोय शरीर
 मेंदाहहोय अंगफोडाफुलस्यांसूपकिजाय शरीरकोवर्णलालहोयजा
 य वातरक्तकोरोगहोय व्याऊउगैरैरोगहोय स्तनकोरोगहोय शरीर
 भास्योरहै लालिआंधिरहै तंदाआवे नांसिकामूजकारोगहोय प्रीणो
 गोले विसर्पकोरोगहोय विद्रुधीहोय छालाउगैरैकोरोगहोय मथ
 वायकोरोगहोय उपदंशनामगरमीकोरोगहोय रक्तपित्तहोय वांसा
 रारोगांनैलोहीकटाबोजोग्यछै सोबारोगांमैलोही सींगडा अथवा

५२५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २४

जो कलगावै अथवा तूंबडीलगावै अथवा सीरछुडावै तदिमनुष्यनै
लोहीकटाबोजोग्यछै ८ अथअतनारोगवाला मनुष्यनै सीरक
रिलोहीकटाबोजोग्यनहीं सोलि ० क्षीणपुरुषनै स्त्रीसंगघणोंक
होहोयजीनै नपुंसकनै दरपस्यालनै गर्भिणीस्त्रीनै सूबावालीस्त्री
नै पांडुरोगनै जुलाबनै आदितेरपंचकर्मज्यांनहीं कल्यांत्यांनै ववासी
रवालांनै सर्वांगसोथवालांनै उदररोगीनै घाससासवालांनै छर्दिका
रोगीनै अतीसारनै पसेवयुक्तजीको शरीरहोयजीनै सोलावरषपह
लीमनुष्यनै अरसतर ७० वरषउपरांति इतनारोगवाला पुरुषनै सी
रछुमाबोजोग्यनहीं ९ अरयांरोगांमें लोहीकटायांरोगजायतौ जो
कांकरिकै लोहीकटाजै अरविषकरिदुष्टहुवोजो लोही तीनै सीरछु
डाबोजोग्यछै अथवा पाछणादेरलोहीकटाबोजोग्यछै अरवायुपित्त
कफकरिदुष्टहुवोजो लोहीतीनै सीगडीकरिजोकरितुंबरिकरिलोही
कटाबोजोग्यछै जो कतोयेकहायको लोहीसोसे सीगडितुंबडीबारा
गुलकोसोसे पाछणोयेकअंगूठाप्रमाणसोसे सीरशरीरकासर्वंग
कोसोसे अरसीतरितुमें इतनारोग्यांनै लोहीकटाजेनहीं सोलिषते
भूषानै मूर्छावालांनै नांदभांति मदमलमूलको ज्यांकोवेगहोयत्यां
पुरुषनै लोहीनहीं कटाजै १० अरजलीकांदि कांकरिज्यांको लोहीनहीं
नीससोहोयत्यांकात्रणकामूदानै क्रूरसंदि पिरनि पाषणि सांघोतूण
त्यांकरिनांकात्रणको मूंडोमसलैतौ लोहीआछोतरैनीसरै अथलो
हीआछीबषतमें कटाजै यणोंसांतयणोंतावडोनहीं होय भोजन
हलकोकहायलोहीकटाजै अथलोहीनीसरैतींकोयांवस्तांकरि
जतनकरैतौ लोहीअंभै सोलि ० लोदराखरसोतत्रवगौहूकोचून
थींकीचकल गैहू सांपकीकांचली रेसगांवस्त्रकीराष सांभरकीषाल

ग्रानैग्रणकैमूंदैलगावैतौलोहीथंभे अरऔरभीग्रणकोसीतलजतन
 करै अथवासीरछोडिबाकीनसतरकैउपरिडाहदे अथवाबैनसकै
 धारलगावै अथवानसनेकसायलीचस्तमूलीपै अरबांवांआंडकै
 सोजोहोयतौजोवणाहाथकासोजातरलीनसनेदग्धकरै अरजीव
 एआंडकैसोजोहोयतौबांवांहाथकाअगूंठातरलीनसनेदग्धकरैअ
 थवाबावांआंडकैसोजोहोयतौजीवणाहाथकीसीरछोडिजै अर-
 जीवणाआंडकैसोजोहोयतौबांवांहाथकीसीरछोडिजैतौओसोजो
 जाय ११ अरविसूचिकाहोयजायतौपसवाडाकीडाहदीजैतौविसू
 चिकजाय अथसीरछुडाबाकरिलोहीघणोंनीसरैतौअतना
 रोगहोयसोलि० आंधोहोजाय आंधोअंगरहजाय तिसकोरोगहो
 य अंधेरीआवै मथवायहोय सासषासहोय हिचकीहोय दाहहोय
 पांडुरोगहोय अरलोहीघणोंहीछूटैतौमनुष्यमरिजाय अरईशरीरमें
 लोहीकरिकैजीबोछै शरीरकोलोहीजातोरहैतौमरणछै जांसंशरी
 रकालोहिकोयणोंजाबतोकीजै अरलोहीछोट्यांसोजोहोयतौक्यूंग
 रमघृतकरिबेनेसेकैतौबेकीपीड अरसोजोडूरिहोय अरलोहीघणों
 नीसरैतौबेंपुषनेंहिरणकामांसकें अथवाबकराकामांसकोसो
 बरबोजोग्यछै अथवावेनेदूधपीबोजोम्यछै अथवासाठीचावल
 कीपीरषाबोजोग्यछै पीडासांतहोय शरीरदलकोहोजाय अरम
 नप्रसन्नहोबायजैगताई अथलोहीछुडाबाकाकुपथ्यलिफ्फ
 मैथुनकोथ सीतलजलसंस्त्राव बाहरकीघणीपवनएकासणयोडि
 बो दिममेंनांद लूणउगैरै घाटीवस्त कडवीवस्त सोच बाद अजीर
 एमेंभोजन येसारीवस्तलोहीछुडाबाबालोकैरेनहीं अरजैगताई
 शरीरमेंबलबापरैजगताईकुपथ्यकरैरेनहीं इतिभीसीरउगैरैओ

५३७ अमृतसागर तथा प्रतापसागरतरंग २४

हीछुडाबाकीविधिसंपू० इतिश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजें
दृष्टीसिचाईप्रतापसिंघजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथेसर्व-
आसवांकीविधि१ पांकांकीविधि२ सिलाजितसोधन ३ जवषा
रनेंआदिलेरषावांकीविधि ४ चणषारसोधवाकीविधि ५ सोह
विधि ६ स्नेदविधि ७ वमनविधि ८ जुलाबकीविधि ९ हरडैषावा
कीविधि १० वस्तिकर्म ११ हुकानेंआदिलेरधूमपानविधि १२ लो
हीछुडाबाकीविधि १३ निरूपणं नामचतुर्विंशतिमस्तरंगः २४

अथछउं० धरितुकोवर्णनलि० हिमरितु१ शिसिररितु२ वसंत
रितु३ ग्रीष्मरितु४ वर्षारितु५ शरदरितु६ येछउं० रितुदोयदोयमही
गांकी मागिसिरपोसतौहिमरितु१ सायफाल्गुनसिसिररितु २
चैत्रवैशाखवसंतरितु ३ जेठअसादग्रीष्मरितु४ सावणभाद्रवोवर्षारि
तु५ आसोजकार्तिकसरदरितु६ अथवाअन्यमतलि० हषअर
मिशुनकीसंक्रांतिवेदोन्ग्रोषरितुकहजै १ अरमिशुनकककीसं
क्रांतिवर्षारितुकहजै २ यारितुवादलासंछायोअंवरहोय गरमीनें
लायांवयूंवरसैभीयापितुवर्षारितुकोयेदेछे ३ अरसंहकाअरकन्या
कीसंक्रांतियादोन्यांनेंवर्षारितुकहजै ४ अरतुलकीअरदृष्टिककी
संक्रांतियांलोभ्यांनेंसरदरितुकहजै ५ अरधनकीअरमकरकीसं
क्रांतिवांदोन्यांनेंहिमरितुकहजै ५ अरकुंभकीअरमानकीसंक्रांति
वांदोन्यांनेंवसंतरितुकहजै ६ अथयारितुकेविषेबायपितक
फयांकोसंख्यप्रकोपअरशांतिलि० ग्रीष्मरितुमेंवायकोसंचय
वर्षारितुमेंवायकोकोप सरदरितुमेंवायकीशांति १ वर्षारितुमेंपित्तदे
संचय सरदरितुमेंपित्तकोकोप हिमरितुमेंपित्तकीशांति २ सिसिरितु
मेंकफकोसंचय वसंतरितुमेंकफकोकोप ग्रीष्मरितुमेंकफकीशांति

घोसंचयप्रकोपशांतिपणों वायुपित्तकफको आहारविहारसंहो
 छै अरयेहविगारिसमेंआपहिसंहोशांतिहोजायछै अथवावायुका
 पकभवाआहारविहारलि० हलकीवस्त लूणीवस्त थोडीवस्त
 तिसीतलवस्त अतिषेदतें संध्यासमेंकामैथुनसूं सोचकरि भयकरि
 चिंताकरि रातिकारिवाकरि बोटकालागिवासूं जलकातिरवासूं
 अन्नकीजीर्णहोवासूं धातुकापीणपणोंसूं अरयानेंआदिलेरओर
 भीकारणतीसूंवायुकोपहोयतदिवायुकाकोपकाडूरिकरिवाकाज
 तनकरैतदिशांतिहोय० अथपित्तकाकोपकरिवाकाआहारवि
 हारलि० कटवी षटाईलूण गरम तीषीयेजोवस्त घणियायती
 करि ओधकरिवासूं तावडानेंआदिलेरगरमवस्तसंमध्यान्हकैस
 मेंभूषकाअरतिसकारोकिवासूं अन्नकाअजीर्णहुवायुकाप्यांका
 रणांकरिआधिरातिकेंसमेंपित्तहैसौकोपकूंप्राप्तिहोयछै अरपि
 तकाडूरिकरिवाकाजतनांसूंपित्तकीशांतिहोयछै २ अथकफ
 काकोपकरिवाकाआहारविहारलि० मीठाद्रव्यसूं चीकणाद्र
 व्यसूं सीतलभोजनसूं दिनकासोवासूं अग्निकामंदहोवासूं प्रभा
 तसमेंभोजनकरुआपाछै षेदतेंईनेंआदिलेरओररात्यांसंकफ
 कोपकूंप्राप्तहोयछै अरकफकाकोपकाडूरिकरिवाकाजतनसूंक
 फकिशांतिहोयछै ३ अथहिमरितुकासेवाकाआहारविहा
 रलि० भैसकोगडकोनवीनघृत मीठोगुड मीठोदहीं लूण तेल
 कोमर्दने तिल गोहूं उडद मिश्रानेंआदिलेरमीठोद्रव्य संहिसंयुक्त
 हरडै रुई निर्वातस्थान नवीनवस्त्र नवीनस्त्राईनेंआदिलेरआछी
 वस्त ४ इतिहिमरितुकाआहारविहारादिक० अथसिंशिरि
 तुकाआहारविहारलि० पापलिसंयुक्तहरडै मिरानि आदी न्या

५२९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

नधृत सींधोलूण वडा गुड दही अरहिमरितुमें कल्यासोभि २ इ
तिशशीरितुकीविधि० अथवसंतरितुकाआहारविहारलि०
वसंतरितुमेंकोपकूप्राप्तिहुबोजोकफसोरोगानें पैदाकरै तदिज
ठरकीअग्निकोनाशकरै तीवास्तेसहतसंयुक्तहरडेषाणीतोक्फडू
रिहोय अरशरीरमें बलहोय अरवसंतरितुमें भ्रमणपथ्यछै अर
चित्रककोषाबोपथ्यछै अरकफहारीद्रव्यआख्याछै ३ इतिवसंत
रितुकीविधि० अथग्रीष्मरितुकाआहारविहारलि० ग्रीष्मरितु
मेंसूर्यसर्वप्राणिमात्रकोबलहारिलेछै ईवास्तेवृक्षादिकांकीसघन
छायासैबोजोग्यछै गुडसंयुक्तहरडै सीतलजलनेंआदिलेरद्रव्य
मधुरभोजन हलकाभोजन दाष चीकणाद्रव्य सिषरणि सातूसा
बतमिश्रीको सीतलजलमेंतिरबो षसषांनो फंवाराचादरिकोछु
डावो कपूरचंदनादिककोलेपदिनकोसोवो षसकोबीजणों बीर
कोभोजनईनेंआदिलेरऔरभीआछीवस्तयेरितुमेंपथ्यछै अरईरि
तुमेंईबनीकुपथ्यछै वडवीवस्त तीषीवस्त लूण षराई दाहवर्ग
वस्त षेद दारु तावडोयेताकुपथ्यछै ४ इतिग्रीष्मविधि० अथ
वर्षारितुकाआहारविहारलि० सींधोलूणसंयुक्तहरडै चीकणों
द्रव्य लूण षराई सालिजव सूरि मिरचि पीपलि पीपलामूल
चित्रक सींधोलूणयांसंयुक्तदहीकोमट्टो गरमपाणी कूचाकोज
ल सुपेदवस्त्र भ्रमण हलकाभोजन जुलाब ईरितुमेंपथ्यछै अथ
ईरितुमेंकुपथ्यदिनकोसोवो षेद तावडो तलावकोजल दही वन
कोथान मैथुन येकुपथ्य ५ इतिवर्षारितुकीविधि० अथसर
दरितुकाआहारविहारलि० वर्षारितुमेंउपज्योजोषित्तसोसरद
रितुमेंकोपकूप्राप्तीहोय तांकाइरिक्किवाकैवास्तेमिश्रीसंयुक्त

हरडैसेवणी मिथीनेंआदिलेरमीठीवस्त साली चावल मूंग सरोवर
 रकोजल ओढायोडूथसरदरितुमेंइतनांपथ्यछै अरयेकुपथ्यतीषी
 वस्त लूणषडाई आसब ताचडो दिनकोसोवो पूर्वकीपवनसरद
 रितुमेंइतनीवस्तकुपथ्य रितुउतरतांकासातदिनतांईरितुकीवि
 धिकरणी अरआठवांदिनसूंआगलारितुकीविधिकरणी इतिछ
 उरितुमेंआहारविहारकीविधिसंपू० अथदिनचर्यादिनमेंजो
 आहारविहारतीकीविधिलि० मनुष्यहैसोघडा ४ कैतडकैऊ
 ठि आषकाइष्टदेवत्यांकोथ्यानकरै पाछैवैसमेंमौविचारे ईंदिनमें
 योकार्यकरणों अरयोकार्यनहींकरणों पाछैसज्यांसूंउठि मलमू
 त्रकोत्यागकरै यांकोवेगरोकैनहीं अरदिननेंउत्तरदशाकानीसु
 षराषिमलमूत्रदिननेंकरै अररात्रिनेंदक्षिणदशाकानीमूंदोराषि
 मलमूत्रकरै अरमलमूत्रकरतांबोलेनहीं अरमलमूत्रकस्यांपा
 छै सूआवृछकोवौलसिरीनेंआदिलेर आपकाहाथकीकनिष्ठीका
 आंगुलीसिरीषोपतलोअरसूधीबारा १२ आंगुल कोदांतणकरै
 पाछैबांकीफाडकरैजीभनेंसोथै पाछैसीतलजलसूंबारा १२ कुर
 लाकरै पाछैसीतलजलसूंमुषधोवैतदिमुषकासर्वरोगजाय
 अरदांताकोसींधोलूणातांमेंक्यूसूंदि सेक्योजीरोमिलायमिहींवां
 दिईकोरोजीनांमर्दनकरैतौदांतामेंरोगनहींहोय पाछैसरीरके
 नारायणादिनेलकोमर्दनकरै पाछैस्नेहकाडूरिकरिवावास्तेच
 एकोचूनअरकटोळउगैरैतीकौउचणोकरै पाछैशरीरमेंनलराषि
 क्यूसरीरकाचलमाफिककुस्तीकरै पाछैअमहूरिकरिस्नानकरै
 कमरिनींचेतौगरमपाणीसूंस्नानकरै अरकमारिउपरिक्युंयंकनि
 वायासुहावताजलसूंस्नानकरैतौरोगहोयनहीं अथस्नानका

५३१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

गुणलि० स्नानसोचनें दूरिकरैछै अरशरीरकामलनें दूरिकरैछै
गरमीकारोगनें दूरिकरैछै हियाकीतापनें अररुधिरकाकापनें
दूरिकरैछै शरीरकादुरगंधिनें दूरिकरैछै काँतिनें अरतेजनें देखै
पापनें मनकीग्लानिनें दूरिकरैछै अरभूषकीरुचिकरैछै बुद्धिनें
धर्मेनें सुषनें इत्यनें यांसारानेवधावैछै शरीरकावीर्यनें अनंददेखै
शरीरकीकृमिनें मार्गकाषेदनें दूरिकरैछै येस्नानमें गुणछै अर
अतनारोगवालो पुरुषस्नानकरै नही सोलि० नींदसुंदरिक
रिस्नानकरै नही अरनींदआवती होय सोभी स्नानकरै नही षेद
वालो हिचकीकारोगवालो भोजनकरांपाछै बीएपुरुष कफ
काअरवायकारोगकलो वमनकासीगवालो यांरोगांवालो स्ना
नकरै नही अरस्नानकरांपाछै संध्याचंदन देवता गऊब्राम्हण
आचार्य गुरु बडा अतिथनें आदिलेरयांको पूजनकरै पाछै श
क्तिमाफिकदानदे पाछै मध्यान्हकैसमें बलिवेश्वदेवादिककरि
कोई अतिथनें आपकी शक्तिमाफिक भोजनकराय आपकुटुं
बसहित भोजनकरै प्रथममधुरअरचीकणों आपनें हितकारि
चावड मूंग गोहूँकीरोरी घृतसंयुक्तषाय चोषीतरकारीकैसा
थि अरसनें सनें भोजनकरै उतावलि करै नही अरभोजनकै
अंतमिआकासजोगकोदूधपीवै भोजनकै अंतदहीषायनही
अरभोजननिपटथोडो अरनिपटघणोंषायनही आपकीरु-
चिमाफिकषाय भोजनकरतां अतनानेकनें सबै मातापिता मि
त्रवैद्य पाककोकर्ता मोर कचोर कूकडो स्नान वानर यांकीदृष्टि
आठोछै अरभोजनकीयांपीछै अगस्त्य१ कुंभकर्ण२ शनैश्चर
३ वडवानळ४ भीमसेन ५ पांफांचाकोस्मरणकरैती भोजन

५३२. अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

आच्छीतरैपचिजाय पाछैसुगंधितपुष्पमाला अतर आछ्यावरु
यांकोधारणकीजै षसकापंषाने आदिलेरपवनलीजे सीतलछा
यामैरहजै भोजनकखांउपरांतिदोयघडीपीछै सीतलअरमीरो
जलथोडोथोडोपीजे घणोंपीयांरोगहोय अरभोजनकैआदिजल
पीवैतौ अग्निकीमंदताहोय भोजनकैअंतिमेंपीवैतौविषकोसोख
एकरै अरअजीर्णमेंजलपीवैतौ अजीर्णपचिजायअन्नपच्यापाछै
जलपीवैतौ शरीरमेंबलहोय अररात्रिकेअंतजलपीवैतौ सर्वरोग
जाय अरभोजनकरिवैठिजायतौ शरीरमेंभास्वापणोंहोजाय अर
भोजनकरिसूयोसोवेतोबलहोय भोजनकरिवांवेपसवाडैसोवे
तौआयुर्बलबधै भोजनकरिदौडैतौवेंकीरालमौतिदौडै भोजन
कखांपाछै घडीदोयवाडेपसवाडैसोवैनांदलेनहीं अथवाभोजन
कखांपाछैपांवडासो १०० चाले अरभोजनकैअंतगउकीछाछिपीवै
तौगुणकारीछै रुचिमाफिकपीवै अरभोजनकैअंतसिषरणिमछा
उगैरैरुचिकारीभोवस्तपाय अथसिषरणिकीविधिलि० चोषो
रातिकोजमायोभैसकोतथागउकोजमायोदहांले तानेंमधिछाणि
ले पाछैवेंदहीमेंमिश्रीकोछूरो अरमिरचि इलायची भामसेनीक
पूरनेंआदिलेर अनुमानमाफिकइमेंमिलावे अरइसीसिषरणीनें
प्रायतौ शक्रनेंअरबलनेंदे अरयारुचिकरै अरवायपित्तकारोग
नैड्रिकरै इतिसिषरणिकरिवाकीविधि० भैसकादहांनेंछाणि
तांमेंसूंठि मिरचि पीपलिराईलुणयानेंमिहांवांठिमिलाय अनु
मानमाफिकपायतौकपनायनेंड्रिकरै अरयोबलनेंकरेंछै अर
सीतकालकेंचोपैदहांघाणों इतिमन्त्राकरिवाकीविधि० संध्या
समंदतनीवस्तकराजेनहीं भोजन १मेंथुन २निद्रा ३पटिचो ४

संध्यामें भोजन कल्याण होय १ संध्यामें मैथुन कल्याण कर संतान हो
य २ संध्यामें निद्रा लियां दिदी होय ३ संध्यामें पट्या आयुर्बल को क्षय
होय ४ अथ बिचर्या रात्रि का आहार बिहार लि० रात्रि में चांद की
चांदली में सूतां कामदेव की वृद्धि होय अरवां चांदली सरीर का दाह नै
हूरि करै छै अर अंधारी राति आनंद दिक् नै हूरि करै छै रात्रि का प्रथ
म प्रहर में भोजनादि करै पाछें सयन करै सुंदर स्थान में पाछें सुंदर
स्त्रीसूं शक्ति माफिक संभोग करै जोवन वतीस अर शक्ति उपरांति
सुंदर स्त्रियां सुंभी संभोग करै नहीं अर संभोग कै आदि भैंसिको तथा
गऊ को दूध औ टायो भित्री का संजोग को पीवै अर संभोग का अंत में
भीयो ही दूध रुचि माफिक पीवै तो ई पुरस कै जरा पणां को रोग कदे
भी आवे नहीं वृद्ध स्त्रीसूं संभोग करै नहीं ये छह ६ वस्त प्राणानें त
त्काल हरै छै सो लि० सूको मांस १ वृद्ध स्त्री २ सूर्य का तावडा को से
बो ३ तत्काल को जमायो दही ४ प्रभात समें मैथुन ५ प्रभात समें नि
द्रा ६ ये छह तत्काल प्राणानें हरै छै अर छह वस्त तत्काल प्राणानें क
रै छै सो लि० तत्काल को मांस १ नवीन अन्न २ बाला स्त्री ३ क्षीर भोज
न ४ नवीन घृत ५ उष्ण जल सूखा ज ६ ये छह वस्त तत्काल प्राणानें
करै छै अथ छहरितु में स्त्रीसूं संभोग करै सो लि० हिमरितु में १
अर सिमिरितु में २ तौ आपका सरीर की शक्ति माफिक बारं बार स्त्री
संग करै तो भी रोग होय नहीं शरीर में आनंद रहै वसंतरितु ३ अर श
रदरितु में ४ शक्ति माफिक तीसरे तीसरे दिन स्त्री सेवन करै तो रोग हो
य नहीं अर वर्षारितु में ५ ग्रीष्मरितु में ६ पक्षनाम पंद्रह १ दिन शक्ति
माफिक स्त्री सेवन करै तो रोग होय नहीं सीतारितु में तौ रात्रि में संभोग
जे ग्रीष्मरितु में दिन नै संभोग की जे वर्षारितु में दिन में अर राति में

५३४ अमृतसागर तथा प्रतापसागरतरंग २५

जदिमेघगाजेअरवरसैंतांसमेंस्त्रीसेवनकीजेतौरोगहोयनही श
रदरितुमेंकामदेवजागेतदिकीजेतौरोगहोयनहीं अरइतनांस्त्रीयां
संसंभोगकीजेनहींसोलिष० रजस्वलास्त्रीसूं१ रोगवालीस्त्रीसूं
२ रुद्धस्त्रीसूं३ स्त्रीकैकामदेवजागेनहींतीस्त्रीसूं४ स्त्रीमलीनरहै-
तीसूं५ गर्भिणीस्त्रीसातमहिनाउपरांतितीसूं६ अरनींस्त्रीकीयो
निमेंगरबीकोरोगहोयनीसूं७ इतनांस्त्रीयांसूंसंभोगकीजेनही१
अथओरतरैभीमैथुनवरज्योसोलि० भययुक्तपुरुष१ धीर्यवि
नापुरुष२ भूषो३ रोगी४ तिसायो५ बालक६ बूढ़ो७ मलमूत्रका
बेगवालो८ इतनापुरुसमैथुनकरैनहीं अथअतिमैथुनसूंइतनां
रोगहोयसोलि० मूलहोय१ घास२ विषमलुर३ क्षीणता४ क्षया
रोग५ अरनायकापक्षाघातादिकरोगयेहोय अथमैथुनकीयां
अपरांतिकीजेसोलि० स्नानकीजे मिश्रीकासंजोगकोगरमकस्यो
दूधपीजै मांसादिकमीठारसषाजै आसवपीजै षसकाविजणानेंआ
दिलेरषवनकरजै शयनकीजै रात्रिनेंघणोंजागिजेनहीं दिनेंघणों
शेजेनहीं अररात्रिकाअंतमेंपांच५ यहिकैतडकैआरअंजलीप्र
साशमीढोसीतलजलपीजै पाछैघडी५ कैतडकैअरिजै ईंविधि
सदाकीजेतौ ईंपुरुषकैकदेभीरोगहोयनहीं सदाआरोम्यरहै इति
रात्रिचर्याकीविधि० येसर्वविधिभावयकासमेंअरसारंगपर
मैलिषाछैसोदेपिलीजो अथसारीरनाममनुष्याकाशरीरमें
जोजछ्छै वायुपित्तकफसर्वधात अरशरीरकोउपजिवांअ
रईंओनाशितानेंआदिलेरत्यांकोसर्वस्वरूपजथार्थआतिसंसंप
सूंरहांकीबुद्धिमाफिकलि० ईंगनुष्यकाशरीरमेंइतनीवस्तुं कजा०
गसय० धान० उपधान० सातधातांका० मल मानतचा० तीनठें

५३५ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरे २५

देहमें मांस अरहाड अरमेदयां सारां का बंधिवां की नसां १०० नवसो है
 अरदोयसै दश २१० ईमें हाड है अरके ईक आचार्या का मत सूती नसे
 २०० हाड है अरयेक सोसात १०० गर्म स्थान है सात सै ७०० नसां है र
 सनें बहवावाली धमनी नाडी २४ है मांस की पीडी ५०० है स्त्रीयां के मां
 सकी पीडी ५२० है सर्वसंखडी नाड्या सर्वशरीरमें व्यापती १६ सांने कं
 डरा कहै है अरमलुथां का शरीरमें १० छिद्र है स्त्रीयां की देहमें तेरा छि
 द्र है ये मनुष्य का शरीरमें छे सोनाम मात्र सुं लिखा है अरहुयां
 को स्वरूप जगार्थ मनुष्य का देहमें शास्त्र कै अनुसार भारी बुद्धिमा
 फिक लिखूं अथ कला को स्वरूप लि० धात अर आसय का कै वि
 चै जो फिली है जीमें बाल कर है ते तीनों कला कहि जै सो बाकला ७
 प्रकार की है मांस लोही मेदयां तीन्यां कै विचै ये कै फिली है अर रु
 त अर फीया कै विषै ये कै फिली है ४ आंतां कै विचै ये कै फिली है ५ ये क
 फिली उदकै अग्नि नै धारि रहै है ६ ये कै फिली वीर्य नै धारि रहै है ७ यां
 नै सात कला कहि जे अथ सात आसय लि० आसय नाम स्थान
 हियां में तौ क फ को धर हियां में नीचै आम को स्थान २ नाभिकै ऊपरि
 बाई कानी अभि को स्थान ३ अग्नि कै ऊपरि तिल है नाभिकै नीचै पत्र
 न को स्थान ४ पवन का स्थान कै नीचै पेडू में मल को स्थान ५ पेडू कै ल
 गती ही क्यूं नीचै घून को स्थान तीनों वस्ति कहि जे ६ हियां कै क्यूं ऊपरि
 जीव को अर लोही को स्थान ७ ये सारा स्त्री पुरसां कै आसय है अर
 स्त्री का आसय तीन बधता है येक तो गर्भ को स्थान १ दोय दुध का स्था
 न स्तन २ अथ सात धात लि० रस १ लोही २ मांस ३ र्मेद ४ हाड ५
 मांजी ६ शुक ७ ये सात धात का पित्त तेज करि पचीय की आपस में
 महीना येक में वीर्य पैदा होय है नौथे नौथे दिन ये के बधात होय है

जोअन्नपाणीप्रायजैछैसोपित्तकातेजसंपकै प्रथमरसपेदाहोय
पाछैवेपित्तकातेजसूरसपकिरसहीकोलोहीहोजायछै इसीतरै
सातूधातजाणिलीजौ अथसातउपधातलि० जीभकोमलनेत्र
कोमलगीढ गालांकोमल येतीन्यूरसधातकीउपधातजाणिजे१रं
जकनामापित्तलोहीकोउपधातजाणिजे२कोनकोमलमांसकोउप
धातजाणिजे३जीभदांतकाषइंद्रीनेंआदिलेयांमैंजोमलसोमेदको
उपधातजाणिजे४वीसूं२०नषयेहाडांकाउपधातजाणिजे५नेत्रमेंगी
दयोमींजीकोउपधातजाणिजे६सुषुउपरिचीकणापणोंअरकालांये
शुक्रकोउपधातजाणिजे७अरस्त्रिकैदोयधातऔरछैयेकतौस्तानां
मेंदूध१एकस्त्राधर्मपणों येदोन्यूसमेंमेंहोय अरसमेंहीमेंयेदोन्यू
जातारहै अरऔरभीसातूधातसंपेदाहोयछैसोलि० शरूमां
ससंपेदाहुवोजोघृततीनेंवसाकहिजै१पसेवरदांत३केस४ओज
५ओजसाराहीसरीरमेंहैंछैओचीकणीछैसीतलछै अरशरीरमें
बलअरपुष्टकोकरवावालोछै येभीसातूधातांसंपेदाहोयछै अथ
सातत्वचालि० उपरलोत्वचातोचीकणीछै अचभायिनीजीकोनां
मछै नामकविभूतिकोस्थानछै१ दूसरीलालजाएनी वेंमौतिलअर
येपेदाहोयछै२ तीसरीत्वचासुपेदछै वेमेंचर्मदलनामरोगपेदा
होयछै३ चौथीत्वचातांवाकारंगसिरीसीछै वेमेंसुपेदकोटपेदाहो
यछै४ पांचवांत्वचाछेदनांजीकोनांमतीसैसर्वकोटपेदाहायछै५
छठीत्वचारोहिणीजीकोनामतीमेंगूमडीगंडमालादिकपेदाहोयछै
६ सातवीत्वचास्थूलजीकोनांसोवेमेंविदधीरहैछै येसातूत्वचा
जबकैप्रमाणमोयछै अथतीनदोयांकोस्वरूपलि० गाय१पि
त२कफ३यानेंदोयभीकहिजै अरयानेंमलभीकहिजै सोयेतान्यू

येकेकपांचप्रकारकीछैयेपांचूजुदाजुदास्थानोंमेंरहबांसूंयांतीन्यामें
वायंबलवानछैसोयोवायसरीरमेंसर्ववस्तुकोविभागकरिसारादेहमें
नसांद्वारासर्ववपुहंजायदेछैअपित्तपांगुलोछैसूक्ष्मछैसीतलछैसू-
षोछैहलकोछैचंचलछैयोवायमलकाआसयमेंरहैछै१कोष्ठमेंरहै
छै२अग्निकास्थानमेंरहैछै३हियामेंरहैछै४कंठमेंरहैछै५येईकापां-
चमेंमुष्यस्थानछैअररहैछैसाराहीसरीरमेंगुदामेंतीईकोआपानना-
मछै१नाभिमेंईकोसमाननामछै२हृदामेंईकोप्राणनामछै३कंठमेंई
कोउदाननामछै४सर्वशरीरमेंरहतोतीकोव्याननामछै५इतिवाय
स्वरूप० अथपित्तकोस्वरूपलि० पित्तगरगछैपतलोछैपीलो
छैसतोगुणमईछैकडवोछैतीषोछैअरदग्धहुबोषारोहोआयछै-
योपांचस्थानमेंरहैछैअग्न्यासयमेंतिलप्रमाणयोअग्निरूपहोयर
हैछै१त्वचामेंयोकांतिकोकरवावालोछैनेत्रामेंयोरहैसर्वकोदेष
बावालोछै३प्रकृतिमेंयोरहैसर्ववस्तुनेपचायदेछैअरषायारस-
कोलोहीकरिदेछै४अरहियामेंरहतोजोपित्तसोबुध्यादिककुंकरैछै
५पाचक१भ्राजक२रंजक३आलोचक४साधक५येपित्तकाना
मछैअथकफकोस्वरूपलि० कफचीकणोछैभासौछैसुपेद
पिछिलछैसीतलछैतमोगुणमईछैमीठोछैयेदग्धहुबोषारोहोय
छैकफआमासयमें१माथामें२कंठामें३हियामें४संध्यामें५यांजां
गामेंमुथरहैछैअरदेहमेंरहतोथकोदेहकोधिरतानेंसर्वअंगका
कोमलपणानेंकरैछैकूदन१स्नेहन२एसन३अवलंबन४येई
कानामछै३अथस्नायुनसांकोस्वरूपलि० मनुष्यदेहकेंविषैं
मांसहृदमेदयांकाबांधबाकेंविषैंस्नायुनामनसांकही१अथहा-
डांकोस्वरूपलि० देहकेंविषैंयेआधारछैदेहयांविनांउभीरहेन

५३८ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

हीं अरदेहविषैसारयांहींकोछै अथमर्मस्थानकोस्वरूपलिष्य
जीवकाधारवावाला मर्मस्थानहींछै १ अथनसांकोस्वरूपलिष्य
संधिसंधियांसंबंधिछै अरवायपित्तकफअरसातूधातयानैभीषे
हीनसांवहैछै १ अथधमनोनाडीकोस्वरूपलि० धमनीनाडीरस
नैवहैछै अरपवननैवहैछै अथमांसकीपींडीकोस्वरूपलिष्य०
सर्वसंबन्धीनसांतीनैकंडराकहिजै सोसोलाछै १ सोवैसारअंगों
नैपसारिदेछै अरसंकोचकारिलेछै अथरसरंध्राकोस्वरूपलि०
नांककैदोयछेइछै नै कैदोयछेइछै कानांकैदोयछेइछै लिंग गु
दा मूढो यांकैयेकेकछिइछै येकमस्तगमेंछिइछै अरस्त्रीयांकैती
नअधिकछे दोयस्तनमें येकगर्भासयमें और ईशरीरमेंसूक्ष्मरोम
रोममेंछिइअनंतछै नाभिकैकनैवाईकानाफुफुसछै अरप्लीहना
मफीयोछै अरनाभिकैकनैजीवणीकान्नायकृतछै उद्दानवायको
आधारतीनैफुफुसकहिजै अरलोहीनैबहवालीजोनसांत्पांको
मूलप्लीहनामफीयोछै अररंजकनामजोपित्त तीकोजोस्थान
तीकैविषैजोरक्तकोस्थानतीनैयकृतकहिजै नाभिकावामभागकै
विषैअग्न्यासयकैउपरजोओतिलछै सोजलेनैबहवावालीजो
नसांत्पांकोमूलछै अरओतिलतिसनैदकिदेछै अरकूपिमेंजो
दोयगोलात्पांनैचकहिजै सोवैदोन्यूजरकोजोमेदतीनैपुष्टक
रैछै अरवृषणजोपोतासोवीर्यनैबहवावालीजोनसांत्पांकाअ
धारछै अरयेपुरुषार्थकाबहवावालाछै अरलिंगगर्भकोदेवा
गलोछै अरवीर्यमूत्रयांकोथरैछै अरहियोमनचित्तबुद्धिअहं
कारयांकोस्थानछै अरओजकोघरछै अरनाभिदेसोसरीजोधम
नीनैआदिलेरनसांत्पांकोस्थानछै सर्वशरीरमेंवैनसांफैठिरहैछै

५३९ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

नाभिसं अरसर्वधातांकासंजोगसं नाभिकोजोवायछै सोसर्वशरी
रकूपुष्टकरैछै अरनाभिकोजोपवनछै सोहियाकाकमलमेंजाय वें
कोस्पर्शकरिकुंडकेबारेंजायछै अंबिष्णुपदकोजोअमृततीनेपीवा
नेनासिकाद्वारा वाछै योनासिकाद्वाराकोपवनसोआकासकाअ
मृतनेपीकरि फेरूं सुषुप्तासिकाद्वाराकंठउगैरैउदरमेंआयप्राप्ति
होयछै वेगकरिकें पाछैयोपवनसंपूर्णदेहनेअरजीवने अरजठ-
रानलनेपुष्टकरैछै अरशरीरकाअरहृदकीप्राणपवनजोसंजो
गतीनेआयुर्बलकहिजे अरकहींसमेंयादोन्हाकोसंजोगदूरहोय
तीनेमरणकहिजे ई पृथ्वीकैविषेकोईप्राणीअमरनहीं ईकारणमृ
त्युहैसोनपरानहींजाय वैद्यहैंसोरोगांनैंदूरकरै अरमनुष्यकैसा
ध्यरोगछै अरओमनुष्यपथ्यादिकनहींकरैतो वेंमनुष्यकैसाध्यरो
गहीजाय्यहोजाय अरवेंमनुष्यकैजाय्यरोगछै अरसोमनुष्यकुप
थ्यकरिवोकरैतौजाय्यरोगहीअसाध्यहोयछै अरओअसमध्यरोग
हूवोथकोकुप्रथ्यकाकमिवावालासमुष्यनेनिश्चैमारिनांयैछै सो
ईकारणयकीमनुष्यचतुरहैंसोरोगांथकीशरीरकीरक्षाकरै कर्मवि
पाककोजाणिवावालो अंधर्मअर्थकाममोक्षयांच्छाहींकोसा
धनयेकयोमनुष्यकोशरीरहीछै जोपुरषईमनुष्य शरीरनेंमारैतां
सर्वनेंमाखौ अरजिनमनुष्यसरीरकीरक्षाकरी त्यांसर्वकीरक्षाक-
री अरसातूंधातअरसातूंधातांकामल अरनायपित्तकफपेसार
हीबराबरिकसाथका ईशरीरमेंशरीरनेंसुषदेछै अरयेसांताघत्या
वध्याअरकुपित्तहूवाथकाईशरीरकोनांसकरै इतिसातकला-
दिकांकाचिचारसंपू० अथसृष्टिकाउपजावाकोकथनलिखते
ईसंपूर्णब्रह्मांडकोकारणइछारहित सत्चित् आनंदस्वरूप अगो

जो ब्रह्म परमात्मा की प्रकृति नाममाया है सो वा परमात्मा की माया
 नित्य है जैसे सूर्य की प्रतिछाया नाम प्रकाश सो वा ब्रह्म परमात्मा की
 माया है सो जड ३२ चैतन्य जो परमात्मा की संजोग करि ई अतिल
 संसार नैया माया करती हुई नटकाथाल की सी नाई अरया संसार की
 माता जो प्रकृतिसो प्रथम बुद्धि नै उपजावती हुई बुद्धि के सो कइछा मई
 महातत्त्व जी को रूप पाछै महतत्त्व संत्र्य हंकार उपजतो हुबो पाछै ओ
 अहंकार तीन प्रकार को हुबो सजोगुण सतोगुण तमोगुण मई पा
 छै सतोगुण रजोगुण संमिलि दश इंद्रियां नै पैदा करता हुवा अमन
 भायां दोन्यां हीं संपेदा हुबो अथ दश इंद्रियां को स्वरूप लि० कान १
 त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ येतौ पांच ज्ञानेंद्रि बाक ६ हाथ ७
 पग ८ लिंग ९ गुदा १० ये पांच कर्मेंद्रि छै तमोगुण है सो धरां सतोगु
 ण संमिल्यो जो अहंकार तातें पंचतन्मात्रा उपजता हुवा अथ पांच
 तन्मात्रा काना नाम स्वरूप लि० शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५
 यां नै तन्मात्रा कहि जै पाछै तन्मात्रा संपंच महाभूत पेदा हुवा शब्द सूं
 तो आकाश हुबो १ स्पर्श तन्मात्रा सूं वायु पेदा हुबो २ रूप तन्मात्रा सूं
 अग्नि पेदा हुबो ३ रस तन्मात्रा सूं जल पेदा हुबो ४ गंध तन्मात्रा सूं पृ
 थ्वी पेदा हुई ५ अथ ज्ञानेंद्रियां का विषय लि० कान को विसय श
 ब्द १ त्वचा को विषय स्पर्श २ नेत्र को विषय रूप ३ जिह्वा को विसय स
 र्श को स्वाद ४ नासिका को विसय सुगंधि दुर्गंधि को ग्रहण करियो ५
 अथ कर्मेंद्रियां का विषय लि० बाणिको विसय बोलीबो २ हाथ को
 विसय ग्रहण करियो २ पगां को विसय चालिबो ३ लिंग को विषय मे
 थुन ४ गुदा को विसय मल को आछीतरै त्याग ५ अथ प्रकृति क
 नाम लि० प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ विरूति ५ शक्ति हें सो

५४१ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

शिवसंमिलितकीरहैछै अथचौबीसतत्वलि० महतल१ नाम
अहंकार१ पांचतन्मात्र५ प्रकृति१ दशइंद्रि१० येकमन१पां
चमहाभूत५ ये१२ विकारहै येसर्वमिलिचौबीस२४ तत्वहोय पाछे
यांचोईसतत्वांकोशरीररूपीयोधरवणै तदिईधरमेंजीवात्माशुभ
अशुभकर्माकैआधीनहूबोथकोईशरीररूपीधरमेंआयकरव
सैमनरूपीदूतकैवसहूबोथकोपाछेजीवकरिसंयुक्तईशरीरनैबु
द्धिबानदेहीकहैछै सोयोदेहीपापपुण्यसुषुप्तदुर्वादिंकांकरिव्याप्त
हूबोथकोअरयोमनकरिजीवात्माबंध्योथकोअरपापकस्याजोर्कर्म
बंधनत्वांसंबंधैछै अरकाम१ क्रोध२ लोभ३ मोह४ अहंकार५ द
श१० इंद्रिबुद्धि१ येसर्वअज्ञानथकीजीवात्माकैबंधनकैअर्थछै-
अरजीवात्मानेंआत्मज्ञानहोयतौईकीसुक्तिहोय अरजीमेंदुषउप
जैतीनैंआधिकहैछै जमिंसुषुप्तजैतीनेआरोग्यकहजैइतिस्
ष्टिजोउपजावाकोकहवोसंपू० अथआहारकोअरपरिपा
ककोअरगर्भकीउत्पत्तिकोअरबालककापोषणादिककोल
क्षणलि० जोभोजनादिककीजेछैसोहीयाकाप्राणपवनकरिकैप्रे
स्लोथको प्रथमआमासयमेंजायप्राप्तिहोयछै पाछेओहीआहारम
धुरपणानेंप्राप्तिहोयछै पाछेओहीआहारपाचकपित्तकाप्रभावक
रिकूंयेकपकोथकोअम्लपणानेंप्राप्तहोयछै पाछेओहीआहारना
भिकासमानपवनकरिप्रेस्लोथकोलुहीग्रहणीकलामेंप्राप्तिहोयछै
पाछेग्रहणीकलामेंआहारपचिकोष्टकीअग्निकरिकैओहीआहारक
उबोहोजायछै पाछेओहीआहारकोष्टकीअग्निकरिपचिवेंकोआल्लो
रसपेदाहोजायछै अरओआछेप्रकारपकैनहींअरकचौरहैतौवेंहीं
आहारकोआंबहोजायछै अरकोष्टकीअग्निबलवानहोयतौओआ

हारकोरसमधुरहोजायछै अरओहीपाछैमधुरहोयअरचीकणाप
 णानेंप्राप्तिहोयछै पाछैओहीरसभलेप्रकारपकौथकोईशरीरकीसं
 पूर्णधातनैपुष्टकरैछै अरयोरसअमृतकीउपमाकोप्राप्तहोयछै-
 अरयोआहारकोरसमंदाग्निकरिदग्धहोयतो उदरमेंकड़बोरसहो
 जाय अथवाषाटोहोजाय अथवायोहीरसविषकाशुभावनैप्राप्ति
 होजाय अथवायोहीरसरोगांकासमूहनेंशरीरमेंकरिदे अरयोहीआ
 हारकोरसछै सोईशरीरमेंसारनामबलछै अरसारहीनहोयतो यो
 मलूवनामपतलोहोजायछै सोआछ्योनहीं अरशरीरमेंपीयोजो
 जलसोवेंकोसारसारतौनसांझावायशरीरमेंपहुंचायदेछै अरई
 कानिःसारनैपेटमेंप्राप्तिकरिवेंकोमूतकरिदेछै सोमूतहोयलिंगद्व
 राबारेंनीसरैछै अरवेंआहारकोकीटजोमलसोपकासयमेंरहैछै-
 सोगुदाकापचनकाबलकरिओमलगुदाद्वाराबारेंनीसरैछै अरवें
 आहारकोजोरससोनाभिकासमानपचनकाबलकोप्रेक्ष्योथकोम
 लुथकाहियामेंजायप्राप्तिहोयछै अरपाछैओरसपित्तकरिपचौत
 दिलालरंगोथकोलोहीहोयजायछै सोओलोहीसर्वशरीरमेंरहैछै
 सोओलोहीजीवकोउत्तमआधारछै अरओलोहीचीकणोंछै अर
 भास्योछै अरबलवानछै मीठोछै अरयोदग्धहुवोपित्तकीसीनांई
 होयछै येकेकधातसवाच्यारिच्यारिदिनमेंपेटहोयछै अरभोजन
 कस्योजोअहारसोमहीनांयेकमेंतींकोमनुस्यकैवार्यपेटहोयछै अ
 रस्त्रीजोयोहीभोजनकस्योजोआहारसोयहीनायेकमेंस्त्रोधर्मद्वारा
 रजहोजायछै पाछैस्त्रीअरपुरसदोन्यूंमिलिमंथुनकरें तदिस्त्रीका
 भगमेंतौशुद्धलोही अरपुरुषकोशुद्धवार्ययेदोन्यूंवेसमेंमिलैतदि
 स्त्रीकागर्भस्थानमेंगर्भरहजायछै पाछैआनवेमहीनैभगद्वाराबारें

नीसरे तदिवेनें बाल कहवौ कहैं छै अरु वेंसमें स्त्री को रज अधिक होय
 तौ कन्या होय अरु पुरस को वीर्य अधिक होय तौ पुत्र होय अरु वेंसमें स्त्री
 अरु पुरस को रज अरु वीर्य बरा बरि होय तौ नपुंसक पैदा होय पाछे प
 रमेश्वर की इच्छा होय सो ही होय यो लघो नियम छै होय अरु नही वी हो
 य अथ बाल करने औषदि देवा की मात्रा लि० महीनाये को बाल
 क होय तौ रती १ औषदि दीजै दूध सहत मिश्रीयां के साथि पाछे ज्यूं
 जूं बाल कवथै तदि महीनाये के कर्म रतीये के क औषदि बधजे ये कवर
 सताई पाछे वरस सोला ताई १६ मासोये के क औषदि दीजै पाछे औ
 षदि देवा की मात्रा अतनो राधिजे वर्ष ७० ताई पाछे बाल क की सी नाई
 औषदि की मात्रा घटाये दीजै यो तोल कल्क चूर्ण को छै अरु का
 दा को तोल ईसं खोखो जाणिलीज्यो अरु बाल क होय तदि बाल क के
 काजल उबटणों स्नान करावो कीजै अरु महीना की महीने बाल करने
 वसन कराये दीजै अरु हर डे का घूटी रोली नांदीजै अरु अन्न को यास
 पांचवें वरस दीजै अरु जुलाब सोला वरष उपरांत दीजै अरु मैथुन
 बीस वर्ष उपरांत कीजै ई विधि संमनुष्य चालै तौ ई कै रोग क दे होय
 नहीं अरु ई कै जरा क दे आवै नहीं अथ मनुष्य का शरीर की गति
 लि० वरस दश ताई तो बाल क पणों रहैं छै बीस २० वर्ष पर्यंत ई को बध
 वा पणों रहैं छै तीस ३० वर्ष पर्यंत शरीर को मोटा पणों रहैं छै चालीस ४०
 वर्ष पर्यंत मनुष्य के बुद्धि को आगम रहैं छै पंचास ५० वर्ष पर्यंत मनुष्य
 का शरीर में त्वचा को गाढा पणों रहैं छै ६० वर्ष पर्यंत नेत्र की जोति आछी रहै
 छै ७० वर्ष पर्यंत मनुष्य का शरीर में वीर्य रहैं छै ८० वर्ष पर्यंत मनुष्य का श
 रीर में वीर्य को अधिक पणों रहैं छै ९० वर्ष पर्यंत आछी तरे ग्यान रहैं छै
 सो १०० वर्ष पर्यंत बोलि बोहाथ पगां में बल मल सूत्र का त्याग को गोन

५४४ अमृतसागर तथा प्रतापसागर तरंग २५

रहैछै एकसौदश११० वर्षपर्यंतमनुष्यकाशरीरमेंस्नानमात्रकोग्या
 रहैछै १२० वर्षपर्यंतशरीरमेंप्राणमात्ररहैछै जोमनुष्यकोशरीरभरो
 गोरहैतौ अरदशदशवर्षपाछै येलिष्ठासोघरताजायछै ईमनुष्यकी
 आयुबलकोप्रमाण१२०वर्षकोछै इतिआहारकोपरिपाकगर्भ
 कीउत्पत्तिबालककापोषणादिककीवि० अथवायकीप्रकृतिकोल
 क्षालि० छोराकेशहोय अरकससरीरहोय लक्षोशरीरहोय वाचालहो
 य चंचलमनहोय आकासमेंरहवावालासुपनाआवे येजीमेंलक्षण
 होयतौवायकीप्रकृतिजाणिजे१ अथपित्तकीप्रकृतिकोलक्षणलि०
 जवानअवस्थामेंसुपेदवालआवेबुद्धिवानहोय अरपसेवधणांआ
 वैक्रौंधीहोय सुपनामेंतेजदीधै येलक्षणहोयतौपित्तकीप्रकृतिजा
 णिजे२ अथकफकीप्रकृतिकोलक्षणलि० जीकागंभीरबुद्धिहोय
 स्थूलअंगहोय चीकणाकेशहोय बलवानहोय स्वप्नमेंजलकास्थानदे
 धै येलक्षणजीमेंहोयतीनेकफकीप्रकृतिकहिजे३ अथनींदकोलक्ष०
 कफअरतमोगुणअधिकहोयतदिमूर्छाहोय१ अरवायपित्तरजोगुण
 येअधिकहोयतदिभौलिअरभ्रांतिहोय२ कफवायअरतमोगुणअ
 धिकहोयतदितांडाहोय३ अरबलजातौरहै तदिलानिआवेअरदुप
 सूं अरअजीर्णसूं अरषेदसूं यांसूंभीग्लानिहोय४ अरबलथकीउ
 त्साहनहींहोयतीनेआलसकहिजे६ ईनेआदिलेरबुद्धिवानऔरभी
 जाणिलीज्यो इहमनुष्यकाशरीरकोवर्णनकस्यो इतिश्रीमन्महारा-
 जाधिराजमहाराजराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते
 अमृतसागरनामग्रंथे ऋतुवर्णनं नामीतुचर्या१दिनचर्या२रात्रि
 चर्या३शरीर४सर्वअंगासंयुक्तवर्णनं नामपंचविंशतिमस्तकं५५
 समाप्तोयंअमृतसागरनामग्रंथः॥ शुभंभूयात्॥ श्रीरस्तु

५४५ अमृतसागरकीसूचनिकानथाअनुक्रमणिकालि०

प्रथमअध्यायमैरोगविचार नाडीपरिक्षा मूत्रपरिक्षा रोगपरि० सुपनपरि० दूतपरि० सकुन० कालज्ञान० औषदिवि० देशकालअव० अर्थ कर्म अग्निबल रोगांको साध्यअसाध्यवि० रोगका भेद रोगांकीउत्पत्ति १ येप्रथम तरंगमेंलिख्याहै-	९ ९ १० १० ११ ११ १२ १२ १४	अवस्थाविचार अर्थविचार कर्मविचार अग्निबलविचार रोगकीअसाध्यपरीक्षा रोगकीसाध्यपरीक्षा रोगांकाभेद रोगांकीउत्पत्ति अधोवायकारोकिवाकोरोग
१ रोगविचार	१४	मलकारोकिवाकोरोग
१ रोगकीअरोग्यांकीपरिक्षा	१५	मूत्रकारोकिवाकोरोग
१ नाडीपरीक्षा	१५	दकारकारोकिवाकोरोग
२ नाडीदोषणी	१५	छींककारोकिवाकोरोग
४ मूत्रपरिक्षा	१५	तिसकारोकिवाकोरोग
५ रोगीकीपरीक्षा	१५	भूषकारोकिवाकोरोग
५ अनुक्रमसंरोगांकोविचार	१५	नींदकारोकिवाकोरोग
६ सुपनपरीक्षा	१६	पासकारोकिवाकोरोग
६ दूतपरिक्षा	१६	अमकास्वासकारोकिवा
७ सकुनपरिक्षा	१६	उवासीकारोकिवाकोरोग
७ कालज्ञान	१६	आंखेंरोगीवाकोरोग
८ औषदिविचार	१६	वमनकारोकिवाकोरोग
९ देशविचार	१६	कामदेवकारोकिवाकोरोग
९ कालविचार		इतिप्रथमस्तरंगः समाप्तः

५४६ सूचनिकापत्र तथा अनुक्रमणिका

	अथप्रथमज्वरकोअहवा	२९	सन्निपातकीनांस
	लज्वरज्वरकीउत्पत्तिदूस	३०	सन्निपातकूंअंजन
	रीतरंगमेंछै	३०	सन्निपातकूंपंचवक्ररस
१७	ज्वरकीउत्पत्ति	३०	सन्निपातकूंस्वच्छंदभैरवरस
१८	ज्वरआठप्रकारकोछै	३१	संनिपातमेंसीतल होयताको
१८	ज्वरकोसामान्यलक्ष	३१	महांसन्निपातकोजतन
१८	ज्वरकोपूर्वरूप	३१	पुनःसंनिपातहोकारिवेंकोज
१८	वायज्वरकोलक्षण	३२	तेरासन्निपातकानाम
१८	सामान्यज्वरकोजतन	३२	संधिगसंनिपातकालक्षण
१९	वायज्वरकोजतन	३३	संधिगसंनिपातकाजतन
१९	पित्तज्वरकोलक्षण	३३	अंतकसंनिपातकालक्ष
२०	पित्तज्वरकाजतन	३३	रुग्दाहसंनिपातकालक्ष
२०	फफज्वरकालक्षण	३३	रुग्दाहसंनिपातकोजतन
२३	कफज्वरकाजतन	३३	चित्तभ्रमसंनिपातकाल
२३	वातपित्तज्वरकालक्षण	३३	चित्तभ्रमकोजतन
२३	वातपित्तज्वरकाजतन	३४	सीतांगसंनिपातकोलक्ष
२४	वातकफज्वरकालक्षण	३४	सीतांगकोजतन
२५	वातकफज्वरकाजतन	३४	तंद्रिकसंनिपातकोलक्ष
२६	कफपित्तज्वरकालक्षण	३४	तंद्रिककोजतन
२६	कफपित्तज्वरकाजतन	३५	कंठकुञ्जसंनिपातकोल
२७	सन्निपातज्वरकीउत्पत्ति	३५	कंठकुञ्जसंनिपातकोजत
२८	सन्निपातकालक्षण	३५	कण्ठकसंनिपातकोल
२८	सन्निपातज्वरकाजतन	३५	कण्ठकसंनिपातकाजत

३५	भग्ननेत्रसंनिपातकोलक्ष०	४०	भूतादिकज्वरकाजतन
३६	भग्ननेत्रसंनिपातकोजत०	४०	भूतादिककाटिवाकोमंत्र
३६	रक्तष्टीवीसंनिपातकोल०	४०	दूसरोमंत्र
३७	रक्तष्टीवीकोजतन	४०	भूतवकरावाकोमंत्र
३७	प्रलापसंनिपातकोलक्ष०	४१	भूतकाटिवाकीर्नासचंजन
३७	प्रलापकोजतन	४१	भूतकाटिवाकोतंत्र
३७	जिह्वकसंनिपातकोलक्ष०	४१	क्रोधज्वरकालक्ष०
३७	जिह्वककोजतन०	४१	क्रोधज्वरकाजतन
३७	अभिन्यासिसंनिपातकोल०	४१	मानसज्वरकीउत्पत्तिलक्ष०
३७	अभिन्यासिसंनिपातकोज०	४१	मानसज्वरकाजतन
३७	संनिपातकोचंजन	४२	पुरुषकैकामज्वरकालक्ष०
३७	संनिपातकूनास	४२	कामज्वरकाजतन
३७	आग्नेज्वरकादूरिकरिवेकोचि	४२	स्त्रीकैकामज्वरकालक्ष०
	तामणिरस	४२	स्त्रीकैकामज्वरकाजत०
३८	अमृतसंजीवनीगुठिका	४२	भयज्वरकालक्ष०
३८	कालारिरस	४२	भयज्वरकोजतन
३८	त्रिपुरभैरवरस	४२	विषमज्वरकालक्ष०
३९	संज्ञाकरणरस	४३	विषमज्वरकाजतन
३९	ब्रम्हास्त्ररस	४३	सीतज्वरपैक्ष्मादिक०
३९	आगंतुकज्वरकानामउत्प०	४३	सीतज्वरपैषोडसांग०
३९	शस्त्रादिकज्वरकालक्ष०	४४	ज्वराकुंशसीतज्वरपै०
४०	शस्त्रादिकज्वरकाजत०	४४	जीर्णज्वरकालक्ष०
४०	भूतादिकज्वरकालक्ष०	४४	जीर्णज्वरकोजतनवसंतमाल०

४५ लाक्षादितैल	४९ ज्वरमेंघासहोयतीकोजतन
४५ निंबादिचूर्ण	४९ ज्वरमेंसासहोयतीकोजतन
४६ जीर्णज्वरकालक्षण	४९ ज्वरमेंहिचकीहोयतीकोज
४६ जीर्णज्वरकोजतन	५० ज्वरमेंचमनहोयतीकोज
४६ दृष्टिज्वरकालक्षण	५० ज्वरमेंमूर्छाहोयतीकोज
४६ दृष्टिज्वरकोजतन	५० ज्वरमेंबन्धुष्टहोयतीकोज
४६ सोहीकाविकारकीज्वरकोल	५० ज्वरमेंमुषसांसजीभकोरिस्स
४६ सोहीकाविकारकीज्वरकोज	५० ज्वरउत्तरिगर्दहोयतात्पणोज
४७ मलज्वरकालक्षण	इतिअमृतसांगरे २ स्तरंगः
४७ मलज्वरकोजतन	अथतीसरितरंगमेंअतीसा
४७ गर्भिणीस्त्रीकीज्वरकोजतन	र.संग्रहणि ववासार यांरो
४७ सूतिकाज्वरकालक्षण	गांकीउत्पतिलक्षणजतनहै
४७ सूतिकाज्वरकीओषदी	५१ अतिसारकीउत्पत्ति
४७ बालककीज्वरकीउत्पत्तिल	५१ अतिसारकोस्वरूप
४७ बालककीज्वरकोजतन	५१ अतिसारकोपूर्णरूप
४८ पेटमेंहृमिपिडिगर्दहोयतीकोल	५१ वायकाअतिसारकोलक्ष
४८ हृमिकीज्वरकोजतन	५२ वायकाअतिसारकोजतन
४८ कालज्वरकोलक्षण	५२ पित्तकाअतिसारकोलक्ष
४८ कालज्वरकोजतन	५२ पित्तकाअतिसारकोजतन
४८ ज्वरकादश १०३ उपद्रव	५२ रक्तातिसारकोजतन
४८ उपद्रवांकोलक्षण	५३ गुदापिगर्दहोयतीकोज
४९ ज्वरातिसारकोजतन	५३ कृपातिसारकोलक्षण
४९ ज्वरमेंनिसहोयतीकोजतन	५३ कृपातिसारकोजतन

५४२	संनिपातकाअतीसारकोल	६९	संनिपातकीसंग्रहणीकोज
५४४	संनिपातकाजतनलि०	६२	त्रिदोषकीसंग्रहणीकोभेद०
५४४	सोचकाअतीसारकोलक्ष०	६२	आमवातकीसंग्रहणीकोलक्ष०
५४४	सोचकाभयातिसारकोज०	६२	संग्रहणीकोभेदघटीयंत्रकोलक्ष०
५४४	आमातिसारकोलक्षणा०	६२	संग्रहणीकोविशेषजतन
५५५	आमातिसारकोजतन	६२	संग्रहणीवालेअतनीवस्तुषाय (नहीं)
५५५	पक्कातिसारकोजतन	६२	ववासीरकीउत्पत्ति
५५५	सोजातिसारकोजतन०	६४	सायीववासीरांकोपूर्वरूप
५५५	अतिसारमेंछादणीहोयतीकीज	६४	वायकीववासीरकोलक्ष०
५५५	मोडानिवाहीकोलक्ष०४प्रकार	६५	वायकीववासीरकोजतन
५५५	४प्रकारकीमोडानिवाहीकोज	६५	पित्तकीववासीरकोलक्ष०
५५५	आमातिसारकाऔरजतन	६७	लोहीकीववासीरकोलक्ष०
५६	अतीसारकोअसाध्यलक्ष०	६७	ववासीरकालोहीथंभिकीऔर
५६	असारजातोरत्नैषिकीकोलक्ष०	६८	लोहीथंभिकाकोदूसरोजतन०
५६	संग्रहणीकीउत्पत्ति	६८	मस्तादूरिहोवाकीऔरपदि
५६	संग्रहणीकालक्षणा	६८	पित्तलोहीकीववासीरकोज०
५९	वायकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिल	६९	कफकीववासीरकोलक्ष०
५९	वायकीसंग्रहणीकोजतन०	७०	कफकीववासीरकोजतन
६९	पिनकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिल	७०	संनिपातकीववासीरकोलक्ष०
६९	पित्तकीसंग्रहणीकोजतन०	७०	संनिपातकीववासीरकोज०
६९	कफकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिल	७१	शिवजीमनकोवणयोलोहसा
६९	कफकीसंग्रहणीकाजतन०	७२	औरस्थानमेंमसाहोयतीकोज
६९	संनिपातकीसंग्रहणीकोलक्ष०	७४	ववासीरकाअसाध्यलक्षणा

अथचौथीतरंगमेंअतनां	८५	विसूचिकाकाजनन-
रोगछैजीर्णमंदाग्निअस	८७	अलसविलंबिकाकाजनन
क विसूचिका अलसविलं	८७	कृमिरोगकीउत्पत्ति-
विका कृमि पांडु रतनारोग	८८	मांहीलीकृमिकीउत्पत्ति-
७४ अजीर्णरोगकीउत्पत्ति	८८	पेटमेंपिंडोलाहोयतीकोल
७५ मंदाग्निकोलक्षण	८८	कृमिरोगकोजनन
७५ तीक्ष्णाग्निकोलक्षण	८९	मस्तगमेंनूहलीषपिंडीको
७५ विषमाग्निकोलक्षण	८९	गुदामेंचुरण्णाहोयतीकोज
७५ समाग्निकोलक्षण	९०	पांडुरोगकामत्तारोगहलीम
७५ भस्मकरोगकीउत्पत्तिलक्ष		करोगकीउत्पत्तिलक्षण-
७६ अजीर्णरोगकीउत्पत्ति	९०	पांडुरोगकीउत्पत्ति
७६ अजीर्णरोगकोसामान्यल-	९०	पांडुरोगकोपूर्वरूप
७६ अजीर्णकोभेद	९०	वायकापांडुरोगकोलक्ष-
७७ आम्राजीर्णकोलक्षण	९०	पित्तकापांडुरोगकोलक्ष-
७७ विदग्धाजीर्णकोलक्षण	९०	कफकापांडुरोगकोलक्ष-
७७ विष्टब्धजीर्णकोलक्षण	९०	संनिपातकापांडुरोगकोल-
७७ रससोषअजीर्णकोलक्ष-	९०	पांडुरोगकोअसाध्यलक्ष-
७७ अजीर्णकाउपद्रव	९१	कामत्तारोगकोलक्षण
७७ विसूचिकाकोलक्षण	९१	हलीमकरोगकोलक्षण
७८ अलसकोलक्षण	९१	पांडुरोगकोजनन-
७८ विलंबिकाकोलक्षण		चतुर्थ स्तरंगः समाप्तः
७८ अजीर्णद्विहोचोहोयतीको		अथपांचवींतरंगमेंअत
७८ मंदाग्निमेंआदिलेविसूचि-		नारोगछैरक्तपित्तराजरा

९३	षास हिचकी सासरोगछे	९९	कर्पूरादिचूर्ण.
९३	रक्तपित्तकी उत्पत्ति.	९९	कुमुदेस्वररस.
९३	रक्तपित्तको पूर्व रूप	९९	निमनप्रास अवलेह
९३	कफकारक्तपित्तको लक्षण.	१००	कुमुदेस्वररस
९३	वायकारक्तपित्तको लक्षण.	१००	रूपदेस्वररस.
९३	पित्तकारक्तपित्तको लक्षण.	१०१	महाताली सादिचूर्ण
९४	रक्तपित्तका उपद्रव.	१०१	गगनायसचूर्ण
९४	रक्तपित्तको जनन.	१०१	लवंगादिचूर्ण
९६	राज रोग की उत्पत्ति.	१०२	शृंगारिभृङ्गगुटिका.
९६	राज रोग को पूर्व रूप	१०२	मधुपक्वहरडै
९६	राज रोग को लक्षण.	१०३	आदाको अवलेह
९७	वायकाराज रोग को लक्षण	१०३	क्षुद्रादि कषार
९७	कफकाराज रोग को लक्षण.	१०३	संघवटी
९७	हिष्णा की चोटकराज रोग को लक्षण.	१०४	अगस्ति हरडै की विधि
९७	राज रोग की अवधि.	१०५	षास रोग की उत्पत्ति.
९७	स्थूलसाध्य राज रोग को लक्षण.	१०६	षास रोग को पूर्व रूप
९७	घणामैथुन करि वासुं ड प्रज्यो	१०६	वायकाषास को लक्षण
	जो सो स रोग तां को लक्षण	१०६	पित्तकाषास को लक्षण
९८	जरा सो सी को लक्षण	१०६	कफकाषास को लक्षण
९८	मार्ग सो सी को लक्षण	१०६	क्षतजषास को लक्षण.
९८	व्रणका सो स को लक्षण.	१०७	सर्दरोग काषास को लक्षण
९८	राज रोग सो स रोग यां का जनन.	१०७	षास को असाध्य लक्षण
९८	राज भृगां कर स.	१०७	षास को जनन.

१०८	उवंगादिचूर्ण	११४	क्षुद्रस्वासकोलक्षण
१०९	सासकर्तरी	११५	स्वासरोगकोजतन
१०९	कर्पूरादिगुटिका	११६	स्वासकुठाररस
१०९	भृशहरीतकी	११६	सूर्यावर्तनरस
११०	कठ्यालीकोअवलेह	११६	महोदधिरस
११०	आनन्दभैरवरस	११७	अमृताणवसरस
११०	हिचकीकीउत्पत्ति	११७	मेघडंबररस
११०	हिचकीकोस्वरूप	इतिअमृतसागरे ५ स्तरंमः स्तरंगमै स्वरभेद अरो चक्र छर्दि मूर्छानै आदिले र इतनारोग छै.	
१११	हिचकीकोपूर्वरूप		
१११	अन्नजाहिचकीकोलक्षण		
१११	यमलाहिचकीकोलक्षण	११७	स्वरभेदकीउत्पत्ति
१११	क्षुद्राहिचकीकोलक्षण	११७	वायकास्वरभंगकोलक्षण
१११	गंधीराहिचकीकोलक्षण	११७	पित्तकास्वरभंगकोलक्षण
१११	महतीहिचकीकोलक्षण	११७	कफकास्वरभंगकोलक्षण
१११	हिचकीकोअसाध्यलक्षण	११८	सोनिपातकास्वरभंगकोलक्षण
१११	हिचकीकोजतन	११८	क्षुद्ररोगकास्वरभंगकोलक्षण
११२	सासरोगकीउत्पत्ति	११८	शरीरकामोटापणांकास्वरभंग
११२	सासरोगकोपूर्वरूप	११८	स्वरभंगकाजगतिकोलक्षण
११२	सासरोगकोस्वरूप	११९	कठ्यालीकोअवलेह
११२	महास्वासकोलक्षण	११९	चव्यादिचूर्ण
११४	ऊर्ध्वस्वासकोलक्षण	११९	अरोचक्ररोगकीउत्पत्ति
११४	छिन्नस्वासकोलक्षण	१२०	वायकीअरुचिकोलक्षण
११४	तमकस्वासकोलक्षण		

१२०	पित्तकीअरुचिकोलक्षण	१२५	भोजनउपरोतितिसलागैकोल
१२०	कफकीअरुचिकोस्वरूपलि	१२६	तिसकाउपद्रव
१२०	सोककीअरुचिकोलक्षण	१२६	तिसरोगकाजतन
१२०	अरुचिकोजतन	१२६	पित्तकीतिसकोजतन
१२१	सिषरणाकीक्रिया	१२६	कफकीतिसकोजतन
१२१	दाडिमादिचूर्ण	१२६	क्षीणताकीतिसकोजतन
१२१	दृढदेलादिचूर्ण	१२७	शस्त्रकाप्रहारकीतिसकोज
१२२	अधिकुमाररस	१२७	आंबकीतिसकोजतन
१२२	छर्दिरोगकीउत्पत्ति	१२७	दुर्बलकीतिसकोजतन
१२२	वायकीछर्दिकोलक्षण	१२७	मूर्छामोहभ्रमतंद्रानिद्रासं
१२२	छर्दिकोपूर्वरूपलि		न्यासयांकीउत्पत्तिलिख
१२३	पित्तकीछर्दिकोलक्ष-	१२७	मूर्छाकोसामान्यस्वरूप
१२३	कफकीछर्दिकोलक्ष-	१२८	मूर्छाकोपूर्वरूप
१२३	संनिपातकीछर्दिकोलक्ष-	१२८	वायपित्तकीमूर्छाकोलक्ष-
१२३	सूगलिवस्तदेषवाकीछर्दिको	१२८	कफकीमूर्छाकोलक्षण
१२३	छर्दिरोगकाजतन	१२९	लोहीकीमूर्छाकोलक्षण
१२४	तिसरोगकीउत्पत्ति	१२९	मद्यकीमूर्छाकोलक्षण
१२५	तिसकोस्वरूप	१२९	विषकीमूर्छाकोलक्षण
१२५	वायकीतिसकोलक्षणा	१२९	भ्रमकोनंद्राकोलक्षण
१२५	पित्तकीतिसकोलक्षण	१२९	निद्राकोलक्षण
१२५	कफकीतिसकोलक्षण	१२९	संन्यासकोलक्षण
१२५	शस्त्रादिककीचोटकीतिसको	१२९	मूर्छाकोजतन
१२५	क्षीणताकीतिसकोलक्षण	१२९	पित्तकीमूर्छाकोजतन

१३०	लोहीकीमूर्छाकोजतन	१३५	धतूराकामदकोजतन
१३०	मद्यकीमूर्छाकोजतन	१३५	भांगिकामदकोजतन
१३०	विषकीमूर्छाकोजतन	१३५	विषकामदकोजतन
१३०	भौलीकोजतन	१३६	द्वहरोगकीउत्पत्ति
१३१	तंद्राश्रतिभिद्राकोजतन	१३६	पित्तकादाहकोलक्षण
	इति षष्ठः क्षतरंगसमाप्तम्	१३६	लोहिकादाहकोलक्षण
	७मीतरंगमें मदात्पयउ	१३६	शस्त्रकाप्रहारकादाहकोल
	न्याद मृगी येरोगछै-	१३६	मदकापीडाकादाहकोल
१३१	मदात्पयरोगकीउत्पत्ति	१३६	पित्तकारोकिषाकादाहकोल
१३२	विधिसूंमद्यपीवो	१३६	धातक्षयकादाहकोलक्ष-
१३२	वायकामदात्पयकोलक्ष-	१३७	चैरुलभिनाकादाहकोल
१३२	कफकामदात्पयकोलक्ष-	१३७	दाहकोअसाध्यलक्षण
१३२	पित्तकामदात्पयकोलक्षण	१३७	दाहकोजतन
१३२	परमदकोलक्षण	१३७	लोहीकाविगडिकादाहको
१३२	पानाजीर्णकोलक्षण	१३८	उन्मादरोगकीउत्पत्ति
१३२	पानविभ्रमकोलक्षण	१३८	उन्मादकोस्वरूप
१३२	मदात्पयकोअसाध्यलक्ष-	१३९	उन्मादकोपूर्वरूप
१३२	मदात्पयनेत्रादिलेजतन	१३९	वायकाउन्मादकोलक्षण
१३४	वायकामदात्पयकोजतन	१३९	पित्तकाउन्मादकोलक्ष-
१३४	पित्तकामदात्पयकोजतन	१३९	कफकाउन्मादकोलक्ष-
१३५	कफकामदात्पयकोजतन	१४०	दुःखकाउन्मादकोलक्ष-
१३५	संनिपातकामदात्पयकोज-	१४०	विषषाकाउन्मादकोल-
१३५	पानविभ्रमकोजतन	१४०	उन्मादमात्रकोअसाध्यल-

१४०	भूतादिककाउन्मादकोल	१४८	डाकिणीकादूरिहोवाकोयंत्र
१४०	देवताकाउन्मादकोलक्षण	१४८	हाजरायतमंत्र
१४१	असुरकाउन्मादकोलक्षण	१४८	ध्यान
१४१	गंधर्वकाअरपितराकाउन्माद (कोल)	१४९	हाजरातिकीविधि
१४१	सतीकादोषकोलक्षण	१५०	मृगीकीउत्पत्ति
१४१	वेनपालकादोषकोलक्षण	१५०	मृगीकोपूर्वरूप
१४२	वीणासणीकादोसकोल	१५०	मयकीमृगीकोलक्षण
१४२	कामणकादोसकोलक्षण	१५१	पित्तकीमृगीकोलक्षण
१४२	साकिनीडाकिणीकाउन्मादको (लक्ष)	१५१	कफकीमृगीकोलक्षण
१४२	घोरीगतिकोप्रेतकाउन्मादकोल	१५१	संनिपातकीमृगीकोलक्षण
१४२	गण्डसलजिवाकाउन्मादकोल	१५१	मृगीकोअसाध्यलक्षण
१४३	अम्हराक्षसकाउन्मादकोल	१५१	मृगीकोजतन
१४३	पिशुचकाउन्मादकोलक्षण		इतिसप्तमस्तरंगः समाप्त
१४३	उन्मादकोअसाध्यलक्षण		८ वीतरंगमें ८४ शीप्रकार
१४३	उन्मादनेआदिलेरसारांकाज		कीवातरोगकीउत्पत्तिछै
१४४	सामस्वनचूर्ण	१५३	वातरोगकीउत्पत्ति-
१४५	कल्याणघृत	१५४	८४ प्रकारकावायकानाम
१४५	विश्वाद्यंचूर्ण	१५५	वातव्याधिकोसामान्यजत
१४६	भूतनेआदिलेरउन्मादकामंत्र (जतन)	१५५	सिरोग्रहकोलक्षण
१४६	उड्डीसकामंत्रजन	१५५	सिरोग्रहकोजतन
१४७	डाकिणिकाचकरावाकोयंत्र	१५५	अत्यकेसी कोजतन
१४७	डाकडिबुलावाकोमंत्र	१५५	जंभाईकोलक्षण
१४८	डाकिणिकादोसदूरिहोवाकी जाडी	१५६	जंभाईकोजतन

१५६ हनुग्रहकोलक्षण	१६७ बाहुसोमकोजतन
१५६ हनुग्रहकोजतन	१६७ अवबाहुककोलक्षण
१५७ जिह्वास्तंभकोलक्ष-	१६२ अवबाहुकोजतन
१५७ जिभास्तंभकोलक्ष-	१६२ विस्वाचीकोलक्षण
१५७ गूंगोगदगदपणोबकाईयांका	१६२ विस्वाचीकोजतन
१५८ यांगोगांकाजतन	१६२ ऊर्द्धवातकोलक्षण
१५८ सारस्वतधृत	१६२ ऊर्द्धवातकोजतन
१५८ सारस्वतीमंत्र	१६२ आध्यानरोगकोलक्षण
१५८ कल्याणकावलेह	१६२ आध्यानरोगकोजतन
१५८ प्रसांपवाचालरोगकोलक्षण	१६४ प्रत्याध्यानरोगकोलक्ष-
१५९ जीभकारसाज्ञानकालक्ष-	१६४ प्रत्याध्यानरोगकोजतन
१५९ त्वचासूनीहोयतीकोल०	१६४ प्रत्याष्टीलाकोलक्षण
१५९ त्वचासून्यकोजतन	१६४ वाताष्टीलाकोलक्षण
१६० अर्दितरोगकोलक्ष-	१६४ यांदोन्यांकाजतन
१६० पित्तकाअर्दितकोलक्ष-	१६४ तूनीकोलक्षण
१६० कफकाअर्दितकोलक्षण	१६४ प्रतीतूनीकोलक्षण
१६० अरदितकोअसाध्यलक्ष-	१६४ यांदोन्यांकाजतन
१६० अर्दितकोजतन	१६५ त्रिकसूलकोलक्षण
१६० रायकापित्तकाअर्दितकोज	१६५ त्रिकसूलकोजतन
१६१ कफकाअर्दितकोज०	१६५ त्रयोदशांगगूगल
१६१ मन्यास्तंभकोलक्ष०	१६५ वस्तिवातकोलक्षण
१६१ मन्यास्तंभकोजतन	१६५ र्दिकोजतन
१६१ बाहुसोमकोलक्षण	१६५ मूतरुकिगयोहोयतीकोज०

१६६	ग्रधसीकोलक्षण	१७०	अंतरायामरोगकोलक्षण
१६६	ग्रधसीकोजतन	१७०	बाह्यायामरोगकोलक्षण
१६७	गरुनादिककोकादो	१७०	इनकोजतन
१६७	षोडापांगलाकोलक्षण	१७०	धनुस्तंभकोलक्षण
१६७	यांदोन्यांकोजतन	१७१	कुडककोलक्षण
१६७	कुलायषंजकोलक्षण	१७१	अपतंत्रकोलक्षण
१६७	ईकोजतन	१७१	अपतंत्रकोजतन
१६७	कोष्ठुशीर्षकोलक्षण	१७१	अपतानककोलक्षण
१६७	कोष्ठुरोगकोजतन	१७२	ईकोजतन
१६८	गोडाहूषिवाकोजतन	१७२	पक्षाघातकोअसाध्यलक्षण
१६८	बल्लीरोगकोलक्षण	१७२	पक्षाघातकोजतन
१६८	बल्लीकोजतन	१७३	ग्रंथिकादितैलं
१६८	गतकंठकुरोगकोलक्षण	१७३	माषादितैलं
१६८	ईकोजतन	१७४	निद्रानाशकोजतन
१६८	पाददाहकोलक्षण	१७४	सर्वांगमेंवायुहोयतीकोल
१६९	पाददाहकोजतन	१७४	ईकोजतन
१६९	पादहर्षकोलक्षण	१७४	ग्रांसमेंप्राप्तहुवोनोवायतीकोल
१६९	ईकोजतन	१७४	मेदमेंप्राप्तजोवायतीकोल
१६९	पगफूरणीकोजतन	१७५	हाडमेंरहतीवायतीकोलक्षण
१६९	पीनसहितवायतीकोअक्षो	१७५	वीर्यमेंप्राप्तभयोजोवायतीकोल
१६९	केवलवायकाअक्षोपककोल	१७५	इनसवनकेजतन
१६९	चोरलागिवाकीवायकाअक्षो	१७५	कोष्ठमेंप्राप्तभयोजोवायतीको
१७०	ईकोजतन	१७५	इनकोजतन

१७५५	आमासयमें रहतौ जो बायती को	१८२	समीरगजकेशरिरस
१७५५	ई को जतन- (लेख)	१८२	वृद्धिचिंतामणिरस
१७५६	पक्कासयमें रहतौ जो बायती को	१८२	अमृतनामगुटिका
१७५६	गुदा में रहतौ जो बायती को लक्ष	१८३	रसराक्षसरस
१७५६	हिया में रहतौ जो बायती को ल	१८४	वंगेस्वररस
१७५६	यांका जतन	१८४	हरतालगुटिका
१७५६	कान में प्राप्त भयो जो बायती को ल	१८४	रुसणपाक
१७५६	शरीर की नसां में प्राप्त भयो जो बायती को लक्षण		इत्यष्टमस्तरंगः समाप्तः ९ मां तरंगों में ऊरुस्तंभ आम
१७५६	संध्या में प्राप्त भयो जो बायती को ल		वात पित्त व्याधि यांको निर्णयें हैं
१७५६	ई को जतन- (लेख)	१८५	ऊरुस्तंभ की उत्पत्ति
१७५६	वातरोग को सामान्य जतन	१८५	ऊरुस्तंभ को पूर्व रूप
१७५६	भाराय एतेन	१८६	ऊरुस्तंभ को जतन
१७५७	जीगराजगूल	१८७	आमवात की उत्पत्ति
१७५८	रुसण कल्प	१८७	ग्रंथांतर संज्ञा रोग को लक्ष-
१७५८	महारास्त्रादि काथ	१८७	ग्रंथांतर संज्ञा आमवात को ल-
१७५९	अष्टांग तैल	१८७	आमवात को जतन
१७५९	विसर्ग भूत तैल	१८८	महारास्त्रादि बंध-
१८०	लक्ष्मी विलास महासुगंधित तैल	१८९	अज मोदादि चूर्ण
१८०	विजै भैरव तैल	१८९	सुंघि पाक
१८१	विजै भैरव रस	१८९	मेधा पाक
१८२	वातारिरस	१९०	वृहत्संधवारित तैल
१८२	समीरपन्नगरस	१९०	आमवातारिरस

१९०	वाधिशार्दूलगूगल	१९७	वातरक्तकाउपद्रव
१९१	आमारिगुटिका	१९७	वातरक्तकाजतन
१९२	सिंहनादगूगल	१९७	लघुमंजिष्ठादिकथ
१९२	आमवातेसुररस	१९८	गुडूच्यादिकथ
१९३	पित्तव्याधिकीउत्पत्ति	१९८	कित्तोरगूगल
१९३	पित्तकाक्षोगांकानाम	१९९	अमृतभस्मतकाबलेह
१९४	पित्तकासारक्षीरोगांकानाम	२००	हरतालकेष्वररस
	न्यपणांसंजनन	२००	सूलरोगकीउत्पत्ति
१९४	कफव्याधिकीउत्पत्ति	२००	वायकासूलकोलक्षण
१९४	कफकी२०रोगत्वांकोलक्ष	२०१	पित्तकासूलकीउत्पत्ति
१९५	कफकारोगांकसामान्यजन	२०१	कफकीसूलकोलक्षण
	इति९मस्तरंगस्तमासः	२०१	संनिपातकीसूलकोलक्षण
	१०वातरंगमें वातरक्तसू	२०१	आंबकीसूलकोलक्षण
	लप्रणिणामसूलअंबद्व	२०१	वायकफकीसूलकोलक्षण
	जरत्पित्त येरोंगडै	२०२	सूलरोगकाउपद्रव
१९५	वातरक्तकीउत्पत्तिस्वरूप	२०२	सूलकोथेदपरिणामसूलती
१९५	वातरक्तकोपूर्वरूप	२०२	(कोलक्ष)
१९६	वाताधिकवातरक्तकोलक्ष	२०२	अंबद्वसूलकोलक्ष
१९६	रक्ताधिकवातरक्तकोलक्ष	२०२	जरत्पित्तकोलक्षण
१९६	पित्ताधिकवातरक्तकोलक्ष	२०२	सूलरोगकाजतन
१९६	कफाधिकवातरक्तकोलक्ष	२०३	कफकीसूलकोजतन
१९६	वातरक्तहाथोंमेंहोयतीकोलक्ष	२०४	कूष्मांडक्षार
१९७	वातरक्तकोअसाध्यलक्ष	२०४	पंचसमचूर्ण

२०४	सूलनाशनचूर्ण-	२१०	अधोवायरोकिवाकोलक्ष-
२०५	चित्रकादिगुटिका	२१०	मलकारोकिवाकाउदावर्तकील-
२०५	सूलनासिनीगोलि	२१०	मूत्रकारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०५	कुचिलादिगुटिका	२१०	जंभाईकरोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०५	सूलगजकेसरीरस	२१०	आंसूकारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०६	गुडाद्यमंदूर-	२११	छींककारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०६	ताशमंदूर-	२११	उकारकाउदावर्तकोलक्ष-
२०७	सूलगजकेसरीगुटिका	२११	छर्दिकाउदावर्तकोलक्ष-
२०७	सौवर्चलादिगुटिका	२११	शक्करकाउदावर्तकारोकि-ल-
२०७	हिंवादिगुटिका	२११	भूषकारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०८	विजैपूरादिजोग	२११	मिसकारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०८	सूलगजकेसरीरस	२११	नींदकारोकिवाकाउदावर्तकोल-
२०८	अग्निमुषरस	२११	उदावर्तकीउत्पत्तिस्वसकोल-
२०९	संषवटीरस	२१२	उदावर्तकोसामान्यलक्ष-
२०९	सूलदावानलरस	२१२	उदावर्तकोविशेषलक्षण-
२०९	पसवाद्यकीसूलकोजत-	२१२	कमकफिकेउदावर्तकोजत-
	इतिअमृतसागरे १० स्तरंग-	२१२	मलकाउदावर्तकोजतन-
	११ वांतरंगमें येरोगछे उदव-	२१२	मूत्रकाउदावर्तकोजतन-
	र्तअनाहशुल्म यकृत् ली-	२१२	जंभाईकाउदावर्तकोजत-
	हृत् द्रोग इतनारोगछे-	२१२	आंसूकाउदावर्तकोजतन-
२१०	उदावर्तकीउत्पत्तिअरवेग-	२१२	अरछींककाजतन-
	अनुक्रमसंअधोवायनैआ-	२१३	उकारकाउदावर्तकोजत-
	दिनेरतेरावेगकालक्षण-	२१३	शुक्रकाउदावर्तकाजतन-

२१३	भूषकाउदावर्तकोजतन	२१७	कफकागोलाकोलक्षण
२१३	तिसकाउदावर्तकोजतन	२१८	स्त्रीधर्मरुधिरकागुल्मकोल
२१३	श्रमकासासकाउदावर्तकोज	२१८	गुल्मकोअसाध्यलक्ष-
२१४	नींदकाउदावर्तकाजतन	२१८	गोलाकाऔरअसाध्यल-
२१४	सूषीवस्तुकाषावाकाउदाज-	२१८	गोलाकाजतन
२१४	हिंवादिफलवर्ति-	२१९	पित्तकागोलाकाजतन
२१४	मदनफलादिफलवर्ति	२१९	हिंवादिचूर्ण
२१४	नारायणचूर्ण	२१९	क्षाराष्टक
२१४	गुडाष्टक	२१९	बज्रक्षारचूर्ण
२१४	शुक्लमूलाद्यंघृत	२२०	गुवारकापाठाकोआसव
२१५	नाराचरसअंजेपालरस	२२०	सोपत्रयोग
२१५	अनाहरीगकीउत्पत्ति	२२१	कंसादिक्वाथकंकायनगुटिका
२१५	आंबकाआफराकोलक्ष-	२२१	लवणभास्करचूर्ण
२१५	मलबधवाकाआफराकोज	२२१	कर्णादिक्वाथ
२१५	आफराकाऔरजतन	२२१	विद्याधररस
२१६	गुल्मरोगकीउत्पत्ति	२२२	गुल्मकुमाररस
२१६	कोष्ठविषैंगुल्मकोस्थान	२२२	योनिकीसूलकोजतन
२१६	गुल्मकोसामान्यलक्षण	२२२	मिश्रकरुनेह
२१६	वायुगोलाकीउत्पत्ति	२२२	हिंगुद्वादशाकंचूर्ण
२१७	वायुकागुल्मकोलक्षण	२२२	चचाद्यंचूर्ण
२१७	पित्तकागोलाकीउत्पत्ति	२२३	दंतीहरितकी
२१७	पित्तकागोलाकोलक्षण	२२३	जंभीरीद्राव
२१७	कफकागोलाकीउत्पत्ति	२२४	नादेईक्षीर

२२५	यकृतप्लीहरोगकीउत्पत्तिलक्ष-	२३१	वायकामूत्ररुद्धकोलक्षण
२२५	वायकाफीयाकोलक्ष-	२३१	पित्तकामूत्ररुद्धकोलक्षण
२२५	पित्तकाफीयाकोलक्ष-	२३२	कफकामूत्ररुद्धकोलक्षण
२२५	कफकाफीयाकोलक्षण	२३२	चोटकालागिवाकामूत्ररुद्धलक्ष-
२२५	लोहीकाफीयाकोलक्ष-	२३२	मलकारोकिवाकामूत्ररुद्धलक्ष-
२२५	फीयाकोजतन	२३२	शुक्रकारोकिवाकामूत्ररुद्धलक्ष-
२२६	तक्रसंधानं	२३२	पथरीसंउपज्योजोमूत्ररुद्धलक्ष-
२२७	महारोहितकंघृतं	२३२	शर्कराकाउपद्रव
२२८	चित्रकाद्यंघृतं	२३३	मूत्ररुद्धरोगकाजतन
२२८	हृद्रोगकीउत्पत्ति-	२३३	गोक्षुरादिक्वाथ
२२८	हृद्रोगकोसामान्यलक्ष-	२३३	मलकारोकिवाकामूत्ररुद्धज्व-
२२८	वायकाहृद्रोगकोलक्ष-	२३३	हरितक्यादिक्वाथ
२२९	पित्तकाहृद्रोगकोलक्षण	२३४	लोहीकष्टसूंसेतीकोजतन
२२९	कफकाहृद्रोगकोलक्ष-	२३४	त्रणपंचक
२२९	कृमिकाहृद्रोगकोलक्षण	२३४	कूष्मांडरस
२२९	हृद्रोगकाउपद्रवअरजतन	२३४	गोक्षुरादिगूगल
२३०	हिरणकासींगकोषुटपाक-	२३४	जवधारतक्रजोग
२३०	हरितक्यादिचूर्ण	२३४	लघुलोकेश्वररस
	इतिएकादशस्तरंगःसमाप्तः	२३५	शुक्रकारोकिवाकामूत्ररुद्धज्व-
	१२तरंगमें मूत्ररुद्ध मूत्राघात	२३६	मूत्राघातकीउत्पत्तिलक्ष-
	तत्रअमरीशर्कराप्रमेहयेछै	२३६	मूत्राघातनेराप्रकारको
२३१	मूत्ररुद्धकारोगकीउत्पत्ति	२३६	चानकुंडलिकाकोलक्ष-
२३१	मूत्ररुद्धकोसामान्यलक्ष-	२३७	अष्टालाकोलक्षण

२३७	वातवस्तीकोलक्षण	२४२	पथरीरोगकाजतन
२३७	मूत्रातीतकोलक्षण	२४२	सुंख्यादिक्वाथ
२३७	मूत्रजठररोगकोलक्षण	२४३	वरण्यादिगुडकोअचलेह
२३७	मूत्रोत्संगकोलक्षण	२४३	कुलत्वाद्यंघृतं
२३७	मूत्रक्षयकोलक्षण	२४४	प्रमेहरोगकीउत्पत्ति
२३७	मूत्रग्रंथिकोलक्षण	२४४	कफवातपित्तकाप्रमेहकाज
२३७	मूत्रशक्त्ररोगकोलक्ष.	२४५	प्रमेहरूपकारकात्यांकानाम्
२३८	उष्णवातरोगकोलक्षण	२४६	आत्रेयकामतकाविशेषप्रमेह
२३८	मूत्रसादरोगकोलक्ष.	२४६	प्रमेहकोपूर्वरूप
२३८	विडघातरोगकोलक्षण	२४६	प्रमेहकोसामान्यलक्षण
२३८	वस्तिकुंडलरोगकोलक्ष.	२४६	कफकादशप्रमेह
२३८	मूत्राघातरोगकोजतन	२४६	उदकप्रमेहकोलक्षण
२३९	चित्रकाद्यंघृतं	२४६	इक्षुप्रमेहकोलक्षण
२४०	मूत्रशोधकोजतन	२४६	सांद्रप्रमेहकोलक्षण
२४०	मूत्रनिपटगरमउत्तरैर्तीकोज	२४६	सुराप्रमेहकोलक्षण
२४०	अस्मरीरोगकीउत्पत्ति	२४६	पिष्टप्रमेहकोलक्षण
२४१	पथरीकोपूर्वरूप	२४६	सुक्तप्रमेहकोलक्षण
२४१	पथरीरोगकोसामान्यल.	२४६	सिकताप्रमेहकोलक्षण
२४१	नीर्मैवायघणीहोयइसीपथ	२४७	सीतलप्रमेहकोलक्षण
२४१	पित्तकीपथरीकोल.	२४७	शनैःप्रमेहकोलक्षण
२४२	कफकीपथरीकोलक्षण	२४७	खालाप्रमेहकोलक्षण
२४२	शुक्रकीरोकिवाकीपथरीकोल	२४७	पित्तकाप्रथमप्रकारप्रमेह
२४२	पथरीउपद्व.	२४७	नीलप्रमेहकोलक्षण

२४७ कालप्रमेहकोलक्षण	२४९ कछुपिकाकोलक्षण
२४७ हरिद्रप्रमेहकोलक्षण	२४९ जालिनीकोलक्षण
२४७ मनिष्ठप्रमेहकोलक्षण	२४९ विनीताकोलक्षण
२४७ रक्तप्रमेहकोलक्षण	२५० अलजीकोलक्षण
२४७ वायकाष्ठप्रमेहतांमेंवसाप्रमेह (कोल)	२५० मसूरिकाकोलक्षण
२४७ मज्जाप्रमेहकोलक्षण	२५० सर्षपिकाकोलक्षण
२४८ सौद्रप्रमेहकोलक्षण	२५० पुत्रिणीकोलक्षण
२४८ मधुप्रमेहकोल	२५० विहारीकाकोलक्षण
२४८ कफकाप्रमेहकाउपद्रव	२५० विद्वधीकोलक्षण
२४८ पित्तकाप्रमेहकाउपद्रव	२५० पिडिकाकाउपद्रव
२४८ वायकाप्रमेहकाउपद्रव	२५० पिडिकाकाअसाध्यलक्षण
२४८ प्रमेहकोअसाध्यलक्ष-	२५० प्रमेहजातोरत्नोहोयतीकोल
२४८ अत्रेयकामतकाप्रमेहेछैत्यां (कानाम)	२५१ रक्तपित्तरक्तप्रमेहकोभेद
२४८ पूयप्रमेहकोलक्षण	२५१ प्रमेहरोगकाजतन
२४९ तक्रप्रमेहकोलक्षण	२५१ जलप्रमेहकोजतन
२४९ पिडिकाप्रमेहकोलक्षण	२५१ क्षारप्रमेहकोजतन
२४९ शर्कराप्रमेहकोलक्षण	२५२ तक्रप्रमेहकोजतन
२४९ घृतप्रमेहकोलक्षण	२५२ सूक्तप्रमेहकोजतन
२४९ अतिमूत्रप्रमेहकोलक्षण	२५२ घृतप्रमेहकोजतन
२४९ प्रमेहवात्सके १० जातिकपि	२५२ रूक्षप्रमेहकोजतन
२४९ ण्डिकाहोयछैत्यांकानाम	२५२ पित्तकाप्रमेहकोजतन
२४९ पिडिकाकोलक्षण	२५२ प्रमेहमात्रकोजतन
२४९ मराविकाकोलक्षण	२५२ मधुप्रमेहकोजतन

२५३	न्यग्रोधाद्यंचूर्ण	२५९	मेदकास्थान
२५३	चंद्रप्रभाशुटिका	२६०	मेदकोस्थूललक्षण
२५४	प्रमेहादिचूर्ण	२६०	मेदकोजतन
२५४	मधुप्रमेहकोजतन	२६०	वडवानलरस
२५४	वंगेश्वररसकीक्रिया	२६१	अमृतागूगल
२५५	सुपारीपाक	२६१	त्रिफलाद्यतैल
२५५	शोषरूपाक	२६१	पसेवासंदुर्गंधिआवैतीकोज
२५६	पंचाननशुटिका	२६१	काषामेंवासआवैतीकोजतन
२५६	घृतप्रमेहकोजतन	२६२	शरीरकीदुर्गंधिकोउबटणों
२५७	मेघनादरस	२६२	स्त्रीकेआख्यारंगहोवाकोलेप
२५७	हरिसंकररस	२६२	काषकीदुर्गंधिकोजतन
२५७	प्रमेहकुठाररस	२६२	काश्र्यनामक्षीणपणोंकारोगी
२५७	प्रमेहपिडिकाकालक्षणजतन	२६२	क्षीणरोगकोलक्षण
२५८	इंद्रीउपरिनायकीपिडिकाको	२६३	अत्यंतक्षीणपडिमयोहोयती
२५८	इंद्रीउपरिराधिपिडिगईहोयती	२६३	कैयरोगहोय-
२५८	रसरसाकरकाजतन	२६३	क्षीणरोगकोजतन
२५८	बहुमूत्रप्रमेहकोजतन	२६३	क्षीणपणोंकोअसाध्यलक्ष
२५८	तालकेश्वररस	२६४	उदररोगकीउत्पत्ति-
	इतिअमृतसागरे १२स्तंभ	२६४	उदररोगकीऔरउत्पत्ति-
	१३तरंगमें मेदको काश्र्यना	२६४	उदररोगकीउत्पत्ति-
	म क्षीणपणोंको उदररोग	२६४	उदररोगकासामान्यलक्ष-
२५९	मेदकीउत्पत्ति	२६४	उदररोगआठप्रकारको
२५९	मेदकादोष	२६४	नातोदरकोलक्षण

२६५	पित्तोदरकोलक्षण	१४	मीतरंगमें सोथरोग
२६५	कफोदरकोलक्षण		अंडहृदि अंत्रहृदि वधा
२६५	दूस्योदरकोलक्षण		नाम वध गलगंड कंठमा
२६५	प्लीहोदरफीयाकोलक्षण		ला अपची ग्रंथिनामगां
२६६	मलकावद्गुदोदरकोलक्षण		ठि अर्बुद अर्धबुद येछे
२६६	क्षतोदरकोलक्षण	२७१	सोथनामसोजाकी उत्पत्ति
२६६	जलोदरकोलक्षण	२७२	सोजाको पूर्वरूप
२६६	उदररोगको असाध्यलक्षण	२७२	सोजाको सामान्यलक्षण
२६७	पुनः असाध्यलक्षण	२७२	वायकासोजाकोलक्षण
२६७	वातोदरको जतन	२७२	पित्तकी सोईकोलक्षण
२६७	कुष्ठादि चूर्ण	२७२	कफकी सोईकोलक्षण
२६८	पित्तोदरको जतन	२७२	चोटलागिवाकी सोईकोल
२६८	कफोदरको जतन	२७२	विशेषजिनावरकाकादि
२६८	संनिपातका उदररोगको जतन		वाकी सोईकोलक्षण
२६८	नारायणचूर्ण	२७४	सोईका उपद्व
२६९	नाराचघृत	२७४	सोईको कष्टसाध्यलक्षण
२६९	पुनर्नवादि क्वाथ	२७४	पुनः असाध्यलक्षण
२६९	उदरामयहरचूर्ण	२७४	सोथरोगका जतन
२७०	जलोदरको जतन	२७४	कफकी सोईको जतन
२७०	उदरादिरस	२७४	भिलावाकी सोईको जतन
२७०	उदयभास्कररसः	२७५	सोथरोगका सामान्य जतन
२७१	विंदुघृत	२७५	पथ्यादि क्वाथ
	इति ग्रन्थसंग्रहे १३ स्तरंग	२७५	पोलांकी सोईको जतन

२७६ सोजाकादाहृदिहोवाकोलक्ष	२८१ गलगंभकोत्रसाध्यलक्ष-
२७६ पुनर्नवादिचूर्ण	२८१ कंठमालाकोलक्ष
२७६ पुनर्नवादिक्वाथ	२८१ अपचीकोलक्ष
२७६ अंडवृद्धिअंत्रवृद्धीकीउत्पत्ति	२८१ अपचीकीअसाध्यलक्ष-
२७६ अंत्रवृद्धिकोसामान्यलक्ष	२८१ गांठिकोलक्ष
२७७ वायकाअंडवृद्धिकोलक्ष	२८२ वायकीगांठिकोलक्ष
२७७ पित्तकाअंडवृद्धिकोलक्ष	२८२ पित्तकीगांठिकोलक्ष
२७७ कफकीअंडवृद्धिकोलक्ष	२८२ मेदकीगांठिकोलक्ष
२७७ दुष्टलोहीकीअंडवृद्धिकोलक्ष	२८२ नसांकीगांठिकोलक्ष
२७७ मेदकाअंडवृद्धिकोलक्ष	२८२ मर्मस्थान
२७७ मूत्रकारोकिवाकाअंडहलक्ष	२८२ अर्बुदकीउत्पत्ति-
२७७ अंत्रवृद्धिकीउत्पत्ति-	२८३ रक्तार्बुदकोलक्ष
२७८ अंडवृद्धिजनन	२८३ मांसार्वुदकीउत्पत्ति-
२७८ गोसोउत्तरिगयोहोयतीको	२८३ अर्धर्बुदकोलक्ष-
२७९ अंडवृद्धिकीओषधि-	२८३ अर्बुदरोगयकोनहीतीकोकार-
२७९ वधरोगवधकीउत्पत्ति	२८३ गलगंडनैआदिलेख्यांको
२८० वधकोजनन	अनुक्रमसंजनन-
२८० गलगंड, गंडमाला, अपची	२८४ अमृत्मादितैल
ग्रंथि, अर्बुदयांकीउत्पत्ति	२८४ कंचनादिगूगल
२८० गलगंभकोसामान्यलक्ष	२८५ गुंजातैल
२८० वायकागलगंडकोलक्ष	२८५ अपचीकोजनन
२८० कफकागलगंडकोलक्ष	२८५ चंदनादितैल
२८१ मेदकागलगंभकोलक्ष	२८५ औषादितैल-

२८५ गांठिकोजतन-	२९१ मांहीलीविद्रधीकोअसाध्यल०
२८५ अर्बुदकाजतन-	२९१ विद्रधीकोकष्टसाध्यल०
इतिअमृतसागरे १४स्तरंगः	२९१ विद्रधीकाजतन
१५वींतरंगमें श्लीपदविद्र	२९२ व्रणसोथरोगकीउत्पत्ति-
धी व्रणसोथ सारीरव्रण	२९२ व्रणसोथरोगकोलक्षण
भग्ननाडीव्रण इतनरोगछै	२९२ व्रणसोथपक्षोनहींतीकोल०
२८६ श्लीपदरोगकीउत्पत्ति	२९२ पक्षाव्रणसोथकोलक्षण०
२८६ श्लीपदरोगकोसामान्यलक्षण	२९२ परिपाकमेंऔरमतांतरकाल
२८७ वायकाश्लीपदकोलक्षण	२९३ कान्चापकाग्र्यांकैअर्थवैद्य
२८७ संनिपातकाश्लीपदकोलक्षण	२९३ कागुणदोषलिखते-
२८७ श्लीपदकोजतन	२९४ व्रणरोगकीउत्पत्ति-
२८७ पिण्डादिचूर्ण	२९४ पित्तकाव्रणकोलक्षण
२८८ विद्रधीरोगकीउत्पत्ति-	२९४ कफकाव्रणकोलक्षण
२८९ वायकीविद्रधीकोलक्षण	२९४ लोहीकाव्रणकोलक्षण
२८९ पित्तकीविद्रधीकोलक्षण	२९५ शुद्धव्रणकोलक्षण
२८९ संनिपातकीविद्रधीकोलक्षण	२९५ दुष्टव्रणकोलक्षण
२८९ चोटलागिवाकीविद्रधीकोलक्षण	२९५ अंकुरशुद्धकोलक्षण
२८९ रक्तकीविद्रधीकोलक्षण	२९५ व्रणकोसुषसाध्यलक्षण-
२८९ साध्यअसाध्यजाणिवाकैवा	२९६ पुनःव्रणकोअसाध्यलक्षण-
स्तैअंतरविद्रधीकोलक्षण-	२९६ आगंतुकव्रणशस्त्रादिकका
२९० गुदाकीविद्रधीकोलक्षण	लागिवाकीतीनोंकोलक्षण-
२९० विद्रधीकोसाध्यअसाध्यल०	२९६ छिन्नव्रणकोलक्षण
२९० पुनःअसाध्यलक्षण-	२९७ भिन्नव्रणकोलक्षण

२९७	विद्वन्नकोलक्षण	३०१	कफकासोजाकोतरडो
२९७	जीघावमेंसस्त्रउगैरैरहग	३०१	रक्तकासोजाकोजतन
	याहोयतीकोलक्षण	३०१	पित्तकासोजाकोजतन
२९७	कोष्ठमेंतीरइत्यादिकरहग	३०१	श्लेष्माकाकोबाधिवो
	याहोयतीकोलक्षण	३०२	व्रणसोधकोलेप
२९७	कोष्ठमेंरहतोजोअसाध्यम	३०२	व्रणकापुकिवाकीविधि
	लतीकोलक्षण	३०२	श्लेष्माकासूत्रणनैपकायदे
२९७	क्षतव्रणकोलक्षण	३०२	पक्षाव्रणकोचीरोदेवै
२९८	घृतव्रणकोलक्षण	३०२	अतनांआदम्यांकेचीरोलग
२९८	चोटकाव्रणकोसामान्यल०	३०३	(बैनहीं)
२९८	मर्मस्थान	३०३	अथपीडन
२९९	व्रणकासौलाउपद्रवहै	३०३	व्रणसोधन
२९९	अग्निदग्धकोलक्षण	३०४	व्रणरोपण
२९९	पुष्टदग्धकोलक्षण	३०४	व्रणमेंसूखउपज्यो
२९९	दुर्दग्धकोलक्षण	३०४	व्रणमेंहमिपंडिगईहोय
२९९	सम्यक्दग्धकोलक्षण	३०४	व्रणमेंछोतीपंडिगईहोय
२९९	अतिदग्धकोलक्षण	३०५	व्रणकाभरिबाकीमल्लिम
३००	दोषांमेंउपज्योजोव्रणत्यां	३०५	आगतुकव्रणत्यांकाजतन
	काजतन	३०५	जात्यादिघृतं
३००	पित्तकासोजाकोलेप	३०७	विपरीतमल्लनेल
३००	कफकासोजाकोलेप	३०७	अमृतादिगूगल
३०१	श्लेष्माकाजलकोतरडो	३०८	सम्यक्दग्धकोलक्षणजत०
३०१	पित्तकासोजाकोतरडो	३०८	अतिदग्धकोलक्षणजत०
		३०८	इति सिकतादिघृतं

३०८	तेलउगैरैकहीनरेसूदादोहो	३१४	कफकीनाडीव्रणकोलक्ष-
३०९	व्रणरोगकीउत्पत्ति-	३१४	पित्तकीनाडीव्रणकोलक्ष-
३०९	व्रणग्रंथिकोजतन-	३१४	संनिपातकीनाडीव्रणकोलक्ष-
३०९	व्रणग्रंथिव्रणरोगअग्निदग्धसं	३१४	शस्त्रादिककीचोटकानाडी
३०९	भग्नरोगकीउत्पत्ति-		व्रणकोलक्षण
३०९	शरीरकीसंधिदूरीकोलक्ष-	३१४	नाडीव्रणकोअसाध्यकष्ट-
३०९	उत्पृष्टदूरीवाकोलक्षण-		साध्यलक्षण
३०९	विच्छिष्टदूरीवाकोलक्षण	३१४	नाडीव्रणकाजतन
३१०	निवर्तिसंधिदूरीकोलक्षण	३१५	स्वर्जकादियुतं
३१०	निर्गमनिसंधिदूरीकोलक्ष-	३१६	निर्गुंडीतैलं
३१०	क्षिप्तसंधिदूरीहोयतीकोलक्ष-	३१६	सुपेदमल्लिमकीविधि
३१०	अधःसंधिदूरीकोलक्षण	३१७	पगफाटिव्याउसीयडिजा
३१०	हाडनलकपालवलयेनै-		यतीकीमल्लिम-
	आदिलेरतीकोलक्षण	३१७	नींबकीमल्लिम
३१०	हाडदूरीवो१२प्रकारको	३१८	व्रणकीत्वचाकारंगफेरिवा
३१०	दूध्याहाडकोलक्षण		कीअौषधि-
३१०	भग्नरोगकोकष्टसाध्यलक्ष-		इतिअमृतसागैरे१५स्तरंगः
३११	भग्नरोगकोअसाध्यलक्ष-		१६वीतरंगमें भगंदर उ
३११	पुनःअसाध्यलक्षण		पदंश लिंगार्सकरोग को
३११	हाडकैचोरलागैतीकाचीन्ह		द इतनारोगछै-
३११	भग्नरोगकाजतन	३१८	भगंदरकीउत्पत्ति-
३१२	चोटलागिवाकीअौषधि	३१९	पित्तकाउष्ट्रग्रीवभगंदरकोल
३१२	नाडीव्रणकीउत्पत्ति	३१९	कफकापरिआवीभगंदरको

३१९ सन्निपातकासंबूकावर्तभ	३२६ मृदितसूकरोगकोलक्षण
गंदरकोलक्षण	३२६ संभूटपिडिकाकोलक्षण
३१९ सस्त्रादिककालागिवाका	३२६ पुष्करिकासूकरोगकोलक्ष-
भगंदरकोलक्षण.	३२६ अवमंथसूकरोगकोलक्ष-
३२० भगंदरकोकष्टसाध्यलक्ष	३२६ स्पर्शहानिसूकरोगकोल०
३२० भगंदरकोजतन	३२६ अवमंथसूकरोगकोलक्ष-
३२० नवकार्पिकगूगल	३२६ उत्तमासूकरोगकोलक्ष-
३२१ भगंदरवालोदतनीवस्तकरोत	३२७ सत्तपोनककोलक्षण
रूपराजरस	३२७ सोणिताबुदकोलक्षण
३२२ रविसुंदररस	३२७ मांसाबुदकोलक्षण
३२२ उपदंशकीउत्पत्ति-	३२७ विद्वधीसूकरोगकोल०
३२२ वायकाउपदंशकोलक्ष-	३२७ तिलकालककोलक्षण-
३२३ पित्तकाउपदंशकोलक्ष-	३२७ सूकरोगकोअसाध्यलक्ष-
३२३ कफकाउपदंशकोलक्ष-	३२७ सूकरोगकाजतन
३२३ उपदंशकोअसाध्यलक्ष-	३२८ कुष्ठरोगकीउत्पत्ति-
३२३ लिंगांसकोलक्षण	३२९ अग्राप्रकारकाकोटांकनाप
३२३ उपदंशकोजतन	३२९ कुष्ठरोगकोपूर्वरूप
३२४ भूरिनिंबादिघृत	३२९ कोटकासामान्यलक्षण
३२५ सूकरोगकीउत्पत्ति-	३३० कापिलककोटकोलक्षण
३२५ सर्षपिकाकोलक्षण	३३० औदुबरकोटकोलक्षण
३२६ अष्टीलीकाकोलक्षण	३३० मंडलकोटकोलक्षण
३२६ कुंभीकाकोलक्षण	३३० विभूतिकोटकोलक्षण
३२६ अजलीसूकरोगकोलक्ष-	३३१ कांकणनामकोटकोलक्ष-

३३१ पुंढरीकनामकोटकोलक्षण	३३४ श्वित्रीकोसाध्यअसाध्यल०
३३१ रिक्षजिह्वकोटकोलक्षण	३३४ कोटनेत्रादिलेख्ये रोगकने
३३१ कुष्ठनामकोटकोलक्षण	रत्नासूजायलागे.
३३१ गजचर्मकोटकोलक्षण	३३४ कोटकाजतन
३३१ चर्मदलकोटकोलक्षण	३३५ पथ्यादिलेप
३३१ चर्चिकाकोटकोलक्षण	३३५ पंचनिंबअवलेह
३३२ पांचकोटकोलक्षण	३३५ स्वायंभूवोगूगल
३३२ दादकोटकोलक्षण	३३५ किसोरगूगल
३३२ कछदादकोटकोलक्षण	३३६ अमृतभल्लातकावलेह
३३२ विस्फोटककोटकोलक्षण	३३७ महाभल्लातकअवलेह
३३२ किटिभनामकोटकोलक्षण	३३८ लघुमंजिष्ठादिक्वाथ
३३२ अलसकनांभकोटकोलक्षण	३३८ मध्यमंजिष्ठादिक्वाथ
३३२ सत्तारुनामकोटकोलक्षण	३३८ बृहन्मंजिष्ठादिक्वाथ
३३२ सात्धातमेंप्राप्तहुवोजोकोल०	३३९ लघुमरीच्यादितैल
३३२ रसधातकाकोटकोलक्षण	३३९ महामरीच्यादितैल
३३३ रुधिरमेंप्राप्तहुवोजोकोल०	३४० हरतालकीविधि०
३३३ मांसमेंप्राप्तभयोतींकोल०	३४० गलतकुष्ठारिरस
३३३ मेदमेंप्राप्तभयोतींकोल०	३४१ विभूतिकोजतन
३३३ हाडमेंमीजीमेंप्राप्तभयोतींकोल०	३४१ चर्मदलकोटकोजतन
३३३ वीर्यमेंप्राप्तभयोतींकोलक्षण	३४१ पांचकोजतन
३३३ कोटकोसाध्यअसाध्यलक्षण	३४२ कछदादकीऔषदी
३३३ कोटकोअसाध्यलक्षण	३४२ अर्कतैल
३३४ कोटकोभेदश्वित्रीकोटनीको	३४२ यक्षराक्षसनामतैल

३४३	त्रिविकोटकोजतन	३५०	दोषकामेदकरिकेअम्लपि (तकोभेद-
३४३	हरिद्रबण्ड	३५१	अम्लपित्तोरोगकाजत-
३४३	हरतालमारवाकीविधि-	३५१	दृशोगकाथ-
३४५	दादकाजतत्रलि-	३५२	कूषांडावलेह-
३४५	कोटकोलेप	३५२	नालेरबण्ड-
३४५	महालेप	३५३	द्राक्षादिगुटिका
	इतिअमृतसागरे१६स्तरंग	३५३	विपत्तिकचूरणं
	१७तरंगमें शीतपित्तउद	३५३	विसर्परोगकीउत्पत्ति
	र्दकोटउत्कोटअम्लपित्त	३५३	विसर्पकोसामान्यलक्ष-
	विसर्पस्नायुकनामवालो	३५३	वायकाविसर्पकोलक्ष-
	विस्फोटकफिरंगवावमस	३५३	पित्तकाविसर्पकोलक्ष-
	रिकानामसीतलाबोदरी	३५४	कफकाविसर्पकोलक्ष-
	भोरीइतनरोग१७मेंछै-	३५४	सन्निपातकाविसर्पकोल
३४६	शीतपित्तउदर्दकोटउत्कोट	३५४	वातपित्तकाविसर्पकोलक्ष-
३४६	शीतपित्तादिककोपूर्वरूप	३५५	कफपित्तकाविसर्पकोल-
३४७	शीतपित्तउदर्दकोटकोल	३५६	शस्त्रादिककाविसर्पकोल-
३४७	यांसारकाजतन	३५६	विसर्परोगकाउपद्रवसाध्य
३४८	आदकबण्डअवलेह		असाध्यलक्ष-
३४९	अम्लपित्तकीउत्पत्ति-	३५६	वायकाविसर्पकोजतन-
३५०	अम्लपित्तकोलक्षणा-	३५६	पित्तकाविसर्पकोजत-
३५०	ऊर्ध्वगामीअम्लपित्तकोल	३५६	कफकाविसर्पकोजत-
३५०	अधोगामीअम्लपित्तकोल	३५६	दृशोगलेप-
३५०	अम्लपित्तमेंश्रीरदोषांकोभि	३५७	स्नायुनामवालाकीउत्पत्ति

३५८ वालाकाजतन	३६५ हिंगूलादिधूम
३५९ वालाकोमंत्र	३६५ रसंकपूरसंमूढोआयोहो यतीकोजतन
३५९ विस्फोटककीउत्पत्ति	३६६ मसूरिकानामसीलाकीउत्प
३५९ विस्फोटककोलक्ष	३६६ वायकीमसूरिकाकोल
३५९ पित्तकाविस्फोटककोल	३६६ पित्तकीमसूरिकाकोल
३६० कफकाविस्फोटककोल	३६६ लोहीकीमसूरिकाकोल
३६० वातपित्तकफकाविस्फोटक कोल	३६७ कफकीमसूरिकाकोल
३६० वायकफकाविस्फोटककोल	३६७ सन्निपातकीमसूरिकाकोल
३६० पित्तकफकाविस्फोटककोल	३६७ शरीरमेंप्राप्तहुईजोमसू रिकातीकोलक्षण
३६० सन्निपातकाविस्फोटकको	३६७ लोहीमेंप्राप्तहुईजोमसूरि कातीकोलक्षण
३६० लोहीकाविस्फोटककोल	३६७ मांसमेंप्राप्तहुईतीकोल
३६० विस्फोटककाउपद्रव	३६७ मेदमेंप्राप्तहुईजोतीकोल
३६० विस्फोटककोअसाध्यसाध्य ल	३६७ हाडमेंप्राप्तहुईतीकोल
३६१ विस्फोटककाजतन	३६७ पीजीमेंप्राप्तहुईतीकोल
३६२ फिरंगवायकीउत्पत्ति	३६८ शक्त्रमेंप्राप्तहुवोतीकोल
३६२ शरीरकीत्वचाचारेतीकोल	३६८ चर्ममेंप्राप्तहुवोतीकोल
३६२ शरीरकेमांहिचारेतीकोल	३६८ रोममेंप्राप्तहुईतीकोल
३६२ फिरंगवायकाउपद्रव	३६८ मसूरिकाकोअसाध्यल
३६२ फिरंगवायकाजतन	३६८ मसूरिकाकोसाध्यलक्ष
३६२ संप्रसारणगुटिका	३६८ मसूरिकाकाजतन
३६२ सूतकाद्योलेष	
३६४ मलहरमल्लिह	
३६४ फिरंगगजकेशरीरस	

३६९ गायत्रीमसूरिकाकोज०	गलाका कंठकायरोगहै-
३६९ पित्तकीमसूरिकाकोज०	३७२ क्षुद्ररोगांकीउत्पत्ति-
३६९ लोहीकीमसूरिकाकोल०	३७२ अजगल्लीकाफुणसीकोल-
३६९ कफकीमसूरिकाकोल०	३७२ यवप्रक्षाफुणसीकोल०
३६९ सर्वमसूरिकाभात्रकोज०	३७२ अत्रालजीफुणसीकोलस-
३६९ मसूरिकामेंकंठकाव्रणाञ्ज	३७२ विटताफुणसीकोलस-
३७० मसूरिकामेंआंघांनीपिग	३७२ कठपिकाफुणसीकोलस-
ईहोयतीकोजतन-	३७२ बल्लीकफुणसीकोलस-
३७० मसूरिकामेंनेत्रामेंव्रणहो	३७३ इंद्रुद्धफुणसीकोलस०
यतीकोजतन-	३७० गर्दभकाफुणसीकोलस-
३७० मसूरिकामेंकोभेदसीतला	३७२ पाषाणगर्दभफुणसीको०
तीकोस्वरूप	३७३ पनसीकाफुणसीकोल०
३७० सीतलाकाजतन-	३७३ जालगर्दभफुणसीकोल०
३७१ सीतलावालाकीरक्षा-	३७३ दरवेलिकाफुणसीकोल०
३७१ सीतलास्तोत्र-	३७३ काषोलाईकोल०
३७१ सीतलाकाअरभेद-	३७० अधिरोहीणिफुणसीकोल०
इतिअमृतसागरे१७स्तरंग	३७० विष्णुनामफुणसीकोल०
१०बीतरंगमें क्षुद्ररोग म	३७० कुनषरोगकोलस-
स्तगकारोग नेत्रांकारोग	३७० अनुशयीफुणसीकोल०
कानकारोग नाकाकारोग	३७० विदारिकाफुणसीकोल०
मुषकारोग होठकारोग म	३७० शर्कराफुणसीकोल-
सूटांकारोग दांतकारोग-	३७० शर्कराबुदकोलस-
जीभकारोग तालवाका	३७५ व्याउकोलस-

३७५ कदरकुणसीकोल०	३७९ निरुद्धप्रकसिकोजन०
३७५ पारवाकोलक्ष-	३७९ संनिरुद्धकोजतन-
३७५ उदरीकोलक्ष-	३७९ दृषणकछुकोजतन-
३७५ अरुणिकाकोल०	३७९ गुदभ्रंशकांचीकोजतन-
३७५ सुपेदवालकोल०	३७९ मूषकतैल-
३७५ लसणकोलक्षण-	३७९ चांगेरीघृतं
३७५ मस्साकोलक्षण	३८० शूकरदंष्ट्रकोजतन-
३७६ तिलकोलक्षण-	३८० पारवाकोजतनं
३७६ यक्षकोलक्षण-	३८० व्यासकोजतन
३७६ अवारिकाकोलक्ष-	३८० कदरकोजतन
३७६ निरुद्धकोलक्ष-	३८० तिलकाजतन
३७६ मणिरोगकोलक्ष-	३८१ मस्साकाजत-
३७६ संनिरुद्धगुदरोगको	३८१ लसणकाजतन
३७७ दृषणकछुकोलक्ष-	३८१ चैथाकाजतः
३७७ गुदभ्रंशकोलक्षण	३८१ कुनषकोजतन-
३७७ शूकरदंष्ट्रकोलक्ष-	३८१ मस्सातिललसणयांकोज०
३७७ क्षद्रोगांकाजत-	३८२ पुजालिकोजत-
३७८ इरवेल्लिकाकाजत-	३८२ सुपेदवालकोजतन
३७८ पनसिकाकोजतन-	३८३ उदरीलागीहोयतींकोजत-
३७८ पाषाणगर्दभकोजत०	३८३ चांयकोजतन
३७८ वन्मीककोजतन	३८३ मस्तकरोगकीउत्पत्ति-
३७८ काषोलाअरुअग्नीरोहिणी	३८३ वायकासिरोगकोलक्ष-
३७९ अरुणादि कोजतन०	३८३ पित्तकासिरोगकोल०

३८७ कफकाशिरोगकोल०	३८९ आधासीसीकोमंत्र-
३८८ संनिपातकाशिरोगकोल०	३९० नेत्रांकारोगांकीउत्पत्ति-
३८८ लोहीकाशिरोगकोल०	३९१ प्रथमदृष्टिरोग
३८८ शीषापणांकशिरोगको०	३९१ प्रथमपटलकारोगकोल०
३८८ सूर्यावर्तकोलक्षण-	३९१ दूसरापटलकारोगकोल०
३८८ अनंतवातकोलक्ष-	३९१ तीसरापटलकारोगकोल०
३८५ कनफटीदूषैतींकोलक्ष-	३९२ चौथापटलकारोगकोल०
३८५ अर्द्धवभेदकोलक्षण	३९२ लिंगनाशमोतिग्रविंदकोल०
३८५ वायकासीरोगकोजतन	३९२ वायकालिंगनाशकोल०
३८५ सिरोवस्ति-	३९३ पित्तकालिंगनाशकोल०
३८५ पित्तकासिरोगकोज०	३९३ कफकालिंगनाशकोल०
३८५ लोहीकीमथवायकोजत०	३९३ संनिपातकालिंगनाशकोल०
३८६ कफकीमथवायकाजत०	३९३ लोहीकालिंगनाशकोल०
३८६ षड्विंदुतैलं	३९३ परिम्लायनकालिंगना०ल०
३८६ शीषापणांकीमथवायकोज०	३९३ नेत्रांकांमंडलकाज्जु दाजु-
३८७ रुमीकीमथवायकोजत०	दास्वरूपलि०
३८७ आधासीसीकोजतन	३९४ संनिपातकानेत्रमंडलकोल०
३८७ अनंतवातसीरोगकोज०	३९४ लोहीकानेत्रमंडलकोल०
३८८ कनफटीदूषतींकोजत०	३९४ परिम्लायनकानेत्रमंडल०
३८८ आधासीसीकोऔरजत०	३९४ तीसरापटलमेंपित्तजाय
३८९ कपालकाकीडाकोजत०	तीकोस्वरूपलि०
३८९ केसवधीवाकीजतन	३९४ कफकरिदग्धदृष्टिकोल०
३८९ मथवायकोऔरजतन;	३९४ रतिंधाकोलक्ष-

३९४ धूमदशीशिरोगकोलक्ष०	३९७ पिडिकाकोलक्षण
३९४ ह्रस्वजान्यरोगकोलक्ष०	३९७ चलासग्रथितकोलक्ष०
३९४ नकुलांधरोगकोलक्ष०	३९८ उत्संगपिडिकोलेक्ष०
३९५ गंभीरकारोगकोलक्ष०	३९८ कुंभिकापिडिकाकोलक्ष०
३९५ विनाकारकालिंगनाशकाल	३९८ पोथकीरोगकोलक्ष०
३९५ कालानेत्रकामंडलकारोग	३९८ वर्त्मशर्करापिडिकाकोल०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९८ अर्शोवर्त्मपिडिकाकोल०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९८ शुक्लाशरोगकोलक्षल०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ अंजननामिकाकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ बहुलवर्त्माकोलक्षण
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ वर्त्मबंधकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ क्लिष्टवर्त्माकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ कर्मकर्मकोलक्षण०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ स्यावर्त्माकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ प्रक्लिनरोगकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	३९९ अक्लिनवर्त्माकोलक्षण
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० वातहतवर्त्माकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० वर्त्माबुदकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० अश्रुस्तनिमेषकोल०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० शोणितार्शकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० लग्नेत्रकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० विसवर्त्माकोलक्ष०
३९५ सन्नयशुक्रकोलक्षण	४०० कुंचनकोलक्ष०

४०० नेत्रकीवाफलीकारोग	४०४ असोथकोलक्ष-
४०१ पक्ष्मकोपकोलक्ष-	४०४ असोथपाकरोगकोलक्ष-
४०१ पक्ष्मशांतकोलक्ष-	४०४ हताधिमंथलक्षणा-
४०१ नेत्रकीसंधिकारोगांकानाम	४०४ वातपर्यायरोगकोलक्ष-
४०१ पूयालसनेत्रसंधिरोगकोल	४०४ सुकाक्षिपाकरोगकोल०
४०१ उपनाहरोगकोलक्ष-	४०५ अन्यतोवातरोगकोल०
४०१ पित्तिकाश्रवकोलक्ष-	४०५ अम्लाधुषितरोगकोल०
४०१ कफकाश्रवकोलक्ष-	४०५ सिरोत्पातसबलवायकोल०
४०१ सनिपातकाश्रवकोल०	४०५ सिराहर्षरोगकोलक्ष-
४०२ रक्तश्रवकोलक्ष-	४०५ नेत्ररोगगयोनहींतीकोल०
४०२ पर्वणीरोगकोल०	४०५ नेत्ररोगजातोरह्यौतांकोल०
४०२ अरुजीनामनेत्रकीसंधी	४०५ समस्तनेत्ररोगांकाजत०
कारोगकोलक्षणा-	४१० इतिनेत्रांकासमस्तरोगां
४०२ जंनुग्रंथिरोगकोलक्ष-	काजतनसंपूर्ण
नेत्रक्रासमस्तरोगांकीसंख्या	४१० अथकानकारोगांकीउत्प-
४०२ नेत्रवायकरिदूषैतीकोल०	४११ कर्णशूलकोलक्ष-
४०२ पित्तकरिदूषैतीकोल०	४११ कर्णनादकोलक्ष-
४०२ कफकरिदूषैतीकोल०	४११ वार्धेर्यकोलक्ष-
लोहीकमिदूषैतीकोल०	४११ क्ष्वेदकर्णकोलक्ष-
४०२ वायकाअधिमंथकोल०	४११ कर्णश्रवकोलक्ष-
४०२ पित्तकाअधिमंथकोल०	४११ कर्णकंडकोलक्ष०
४०४ कफकाअधिमंथकोल०	४११ कर्णगूथिकोलक्ष-
४०४ रक्तकाअधिमंथकोल०	४११ कर्णप्रतिनादकोलक्ष-

४१९ कर्णकृमिकोलक्षण-	४२६ प्रतिश्यायकोलक्षण-
४१९ कर्णविद्वधीकोलक्षण-	४२६ पीनसको पूर्वरूप
४२० कर्णपाककोलक्षण-	४२६ वायकापीनसकोलक्षण-
४२० प्रतिकर्णकोलक्षण-	४२६ कफकापीनसकोलक्षण-
४२० वायपित्तकफलोहीसंहो	४२७ संनिपातकापीनसकोल-
४२० यतीकोलक्षण-	४२७ दुष्टपीनसकोलक्षण-
४२० कर्णपालीकापरिपोटकूल-	४२७ लोहीकापीनसकोलक्षण-
४२० उत्पातकोलक्षण-	४२७ पीनसको असाध्यतक्षण-
४२० उन्मथकोलक्षण-	४२७ पीनसवालाकैकमीपडि
४२१ परिलेहिनकोलक्षण-	४२७ जायतीकोलक्षण-
४२१ कर्णरोगकाजतन	४२७ पीनसकाकाचापणकोल-
४२४ इतिकर्णरोगांकाजतनसं०	४२८ पक्षपीनसकोलक्षण-
४२४ अथनासिकारोगकीउत्प-	४२८ अथनांकरोगांकाजत-
४२५ पीनसकोलक्षण-	४२९ इतिनासिकारोगांकाजत-
४२५ पूतनस्यकोलक्षण-	४२९ अथमुषकारोगांकीउत्प-
४२५ नासापाककोलक्षण-	४२९ मुषकासर्वरोगांकीसंख्या
४२५ पूयरक्तकोलक्षण-	४३० होठारोगांकीउत्पत्ति-
४२५ क्षवथूकोलक्षण-	४३० वायकाहोठरोगकोलक्षण-
४२५ क्षवथूभ्रंशकोलक्षण-	४३० पित्तकाहोठरोगकोलक्षण-
४२५ दीप्तीरोगकोलक्षण-	४३० कफकाहोठरोगकोलक्षण-
४२६ प्रतीनाहकोलक्षण-	४३० संनिपातकाहोठरोगकोल-
४२६ प्रतीआबकोलक्षण-	४३० लोहीकाहोठरोगकोल-
४२६ नासासंसोषकोलक्षण-	४३० चोटलागीवाकाहोठरोग

४३१	होठकारोगांकाजतनसं०	४३५	हनुमोक्षरोगकोलक्ष-
४३१	मसूदांकारोगांकानामसंख्या	४३५	दांताकारोगांकाजत-
४३१	सीतादिमसूदांकारोगकोल-	४३८	इतिदांतांकारोगांकाजतन
४३२	दंतपुण्डरोगकोलक्ष-	४३८	जीभकारोगांकीउत्पत्ति-
४३२	दंतवेष्टिरोगकोलक्ष-	४३८	वायकाजीभरोगांकोलक्ष-
४३२	सौधिरोगकोलक्ष-मसूमांके	४३८	पित्तकाजीभरोगांकोल-
४३२	महासौधिरोगकोलक्ष-	४३८	कफकाजीभरोगांकोल-
४३२	पीरदरोगकोलक्ष-मसूदां-	४३८	अत्यसजीभरोगकोलक्ष-
४३२	उपकुशरोगकोलक्ष-	४३९	उपजिह्वाकोलक्ष-
४३२	वैदर्भरोगकोलक्ष-	४३९	जीभकारोगांकाजतन
४३२	खलिवर्द्धनरोगकोल-	४३९	तालवांकारोगांकानामसंख्या
४३२	अधिमांसरोगकोलक्ष-	४३९	गलसुंडीकोलक्षण
४३२	दंतविद्रुधीकोलक्ष-	४३९	तुमकेसरिकोलक्ष-
४३२	मसूदांकारोगांकाजत-	४४०	ध्रुवरोगकोलक्ष-
४३५	इतिमसूदांकारोगांकाज-	४४०	कछपरोगकोलक्ष-
४३५	दांताकारोगांकानामसंख्या	४४०	तालवर्बुदरोगकोलक्ष-
४३५	दालिनदांतकारोगकोल-	४४०	मांसघातकोलक्षण
४३५	कृमिदंतकरोगकोलक्ष-	४४०	तालवपुण्डकोलक्ष-
४३५	भंजनकरोगकोलक्षण	४४०	तालवसोसकोलक्षण-
४३५	दंतहर्षरोगकोलक्षण	४४०	तालुपाककोलक्षण
४३५	दंतशर्कराकोलक्ष-	४४०	तालवांकारोगांकाजत-
४३५	स्यावदंतकोलक्षण	४४०	गलांकारोगांकानामसंख्या
४३५	करालरोगकोलक्ष-	४४०	वायकीरोहिणीकोलक्ष-

४४१ पित्तकीरोहिणीकोलक्ष-	४४५ समस्तमुषरोगांकाजत-
४४१ कफकीरोहिणीकोलक्ष-	४४६ मूदांकीछायादूरीहोवाको
४४१ संनिपातकीरोहिणीकोल	इतिअमृतसाग-१८ स्तराः
४४१ लोहीकरोहिणीकोलक्ष-	१९ तरंगमेंस्थावरजंगमवि
४४१ कंठसूलककोलक्षण	ष-कालक्षणउत्पन्नत-हे
४४१ अधिजिह्वककोलक्ष-	४४७ जंगमविष-१६ प्रकारको-
४४१ वलयरोगकोलक्षण	४४८ स्थावरविष-१५ रोगहोयसी
४४२ अलासरोगकोलक्ष-	४४८ दृक्षकीजडीकाविषकाल-
४४२ येकदृंदकोलक्षण	४४८ दृक्षकापत्रांकाविषकाल-
४४२ दृंदरोगकोलक्षण	४४८ दृक्षकाफलकाविषकाल-
४४२ शतघ्नीकोलक्षण	४४८ दृक्षकापुष्पकाविषकाल-
४४२ गिलायुरोगकोलक्ष-	४४८ दृक्षकावकलकाविषकाल-
४४२ गलविद्रधीकोलक्ष-	४४८ दृक्षकादूधकाविषकाल-
४४२ गलौघकोलक्षण	४४८ द्रव्यविषहरतालंढिकांका
४४३ स्वरघ्नकोलक्षण	४४९ कंदविषसींगीमोहरानैआ
४४३ अधिमांसकोलक्ष-	दिलेरतांकालक्षण-
४४३ विदारिरोगकोलक्ष-	४४९ स्थावरविषसोध्याकाषा
४४३ गलाकारोगांकाजत-	वाकारुण-
४४४ समस्तमुषरोगांकीउत्पन्न	४४९ स्थावरविषसंरोगहोयसी
४४४ वायकामुषरोगकोलक्ष-	४४९ शक्त्राकैविषकीपांणला
४४४ पित्तकामुषरोगकोलक्ष-	गीत्यांकालक्षण
४४४ कफकामुषरोगकोलक्ष-	४५० सर्पकाकारिवाकारोगांका
४४५ मुषरोगकोअसाध्यलक्ष	लक्षणजुदाजुदाल-

४५१ देसविसेसकालविमेषमें-	४५४ ईकोअसाध्यलक्षण
सर्पकाढेलांकालक्ष-	४५५ स्थावरविषमात्रकाजत-
४५१ दर्वाकरसर्पकाढाकोल-	४५६ विसकादूरिकरिवाकोलेप
४५१ इसामनुस्यनेंसर्पकाढेलां	४५७ दूसाविसकोलेप
कोजतननहीं-	४५८ जगमविषकोजतन-
४५१ दूसाविषकोलक्ष-	४५९ सर्पकाविषकोजत-
४५१ मूसाकाविषकोलक्ष-	४५९ चीछूकाविषकोजतन-
४५१ प्राणहरमूसाकाविषकोल	४५९ वांछूकाविषकोमंत्र
४५२ किरकालांकाविसकोल-	४५९ कनीरकाविषकोजतन-
४५२ विंछकाविषकोलक्ष-	४५९ धतूराकाविषकोजतन-
४५२ वांछूकोढाकोअसाध्यल-	४५९ आककाविषकोजतन-
४५२ विसेलमीडकाकाविषकोल	४५६ कौंछिकाविषकोजतन-
४५२ विसेलमछकाविसकोल	४५६ भिलावाकाविषकोजत-
४५२ विमेलजोककाविसकोल	४५६ मांषीकाविषकोजतन-
४५२ विसेलवैसमराकाविषकोल	४५६ भवराकाविषकोजतन-
४५२ कनसलाकाविषकोलक्ष-	४५६ ऊनराकाविषकोजत-
४५२ मांछरकाविसकोलक्ष-	४५६ मीडकाकाविषकोजत-
४५२ वनकामांछरकाविषको-	४५६ कनसलाकाविषकोज-
असाध्यलक्षण	४५६ सर्पकाविषकोजत-
४५२ विसेलमांषीकोलक्ष-	४५६ हिडक्याकुतास्थालउगैरे
४५२ सिंहवधेरीचिताकाविष-	काठेतीकोजतन-
४५२ हिडक्यास्वानकोलक्ष-	४५७ यांकोमंत्र-
४५२ हिडक्योस्वानकाठेतीकोल	४५८ इतिअमृतसागरे १९ स्तरंग

२० वीतरंगमैस्त्रियांकाप्रदर	४६३ जौनिकंदकोस्वरूप
नैआदिलेरस्त्रियांकासर्व	४६२ वायकायोनि कंदकोल
रीगांकीउत्पत्तिजतनछै	४६३ पित्तकायोनि कंदकोल
४५५ प्रदररोगकीउत्पत्ति	४६३ वंध्यास्त्रीकाजतन
४५५ प्रदरकोसामान्यलक्ष	४६४ वंध्याकैपुत्रहोवाकोजत
४५५ वायकापैरकोलक्ष	४६४ स्त्रीधर्मनहींहोयतींकोज
४५५ पित्तकापैरकोलक्ष	४६५ गर्भनहींहवाकीऔषदि
४५५ कफकापैरकोलक्ष	४६५ स्त्रीकीजोनिकारोगांकाज
४५९ सनिपातकापैरकोल	४६५ जौनिसंकोचनकीऔषदि
४५९ घणा रुधिरजाबाकाउपद्रव	४६६ जौनिरोगकाहूरिवाकोफलुघ
४५९ अथप्रदरकाअसाध्यलक्ष	४६७ जौनिकंदरोगकाजत
४५९ शङ्खआवर्तस्त्रीधर्मकोल	४६७ गर्भिणीकारोगांकाजत
४५९ प्रदररोगकाजत	४६७ गर्भिणीकीजुरकोजतन
४५९ दुर्ग्यादिक्वाथ	४६७ गर्भिणीकीसंग्रहणीकोज
४६० स्त्रियांकापैरकोमेदसोमरो	४६७ गर्भकापडिवाअरआवकीउ
४६० सोमरोगकोसामान्यल	४६८ गर्भस्त्रावकोपूर्वरूप
४६० सोमरोगकाजतन	४६८ गर्भस्त्रावकोजतन
४६० सुपेदपैरकोजत	४६८ गर्भपातकाउपद्रव
४६१ मूत्रातिसारकोलक्ष	४६८ गर्भयंभिवाकोजतन
४६१ मूत्रातिसारकोजत	४६९ आफराकोजतन
४६१ स्त्रियांकायोनिरोगकीउत्प	४६९ महीनांकीमहानेंयेऔष
४६१ जौनिकालक्षण	दिदेतौगर्भपडेनहीं
४६२ जौनिकंदरोगकीउत्पत्ति	४६९ अठवामहीनांकाजत

४६९ नवामहीनांकजतन	४७७ अथबालकांकारोगांकीउ-
४६९ वायकीरगर्भसूक्तिजायतीज	४७७ नवग्रहांकीउत्पत्ति-
४७० गर्भकाबालकहोवाकामही-	४७८ नवग्रहछैसौबालकांका
४७० सुषसंप्रसूतिहोयसोजतन-	लेबाकोकारण-
४७० सुषसंततप्रलप्रसवकोमंजु-	४७८ बालग्रहजानैलागेतीकोल
४७१ मूदगर्भकीउत्पत्ति-	४७९ सामान्यग्रहांकादोषांकाल-
४७१ गर्भमेंबालकरहवाकोप्रका-	४८० नवग्रहांकाजतन-
४७१ बालककोलक्षण-	४८० स्तंदापसारकोजत-
४७१ मूदगर्भकोअसाध्यलक्ष-	४८१ शकुनीकोजतन
४७१ जीकागर्भमेंबालकभूवाहो-	४८२ रेवतीग्रहकोजतन
यतीकोकारण-	४८२ पूतनाग्रहकोजतन-
४७२ मूदगर्भकाजतन-	४८३ गंधपूतनांकाजतन-
४७२ गर्भमेंबालकसोहोयतीकोज-	४८३ सीतपूतनांकाजतन-
४७३ मल्लकरोगकीउत्पत्ति-	४८३ सुषमंडिकाकाजतन
४७३ मल्लकरोगकाजतन	४८४ नैगमेयकाजतन-
४७४ सूतिकारोगकीउत्पत्ति-	४८४ रावणकामंचासंउतारासं
४७४ सूतिकारोगकोलक्ष-	४८४ बालकआल्लोहोय-
४७४ सूतिकामेंज्वरकीउत्पत्ति-	४८५ नेरामातृकाकादोषकोज-
४७४ सूतिकारोगकाजतन-	४८५ प्रभदामातृकाकोजत-
४७५ स्तनरोगकालक्षण	४८५ पूतनाकोजतन-
४७५ स्तनरोगकाजतन-	४८६ सुषमंडिकाकोजतन
४७६ रंडास्त्रीकागर्भनिवारणको-	४८६ गंधपूतनाकोजतन-
४७७ इतिअमृतसागरे- उत्तरग-	४८७ शकुनीमातृकाकोजतन-

४८७	शङ्खरेवतीकोजतन-	४९४	इतिअमृतसागरे२३ स्तरंगः
४८८	नानामातृकाकोजतन-	४९४	अथबाजीकरणाधिकारिक-
४८८	सूचनिकायातृकाकोजत-	४९५	नपुंसकपणङ्गिहोवाकाज-
४८८	क्रियामातृकाकोजतन-	४९९	इतिअमृतसा०२२ स्तरंगः
४८८	पिपीलिकायातृकाकोज-	४९९	अथधातुभारणविधि-
४८९	बालकांकारोगांकीउत्प-	५००	मृगांकीविधि-
४९०	तालुकंदक१पद्मरोगकोल-	५००	रूपरसकीविधि-
४९०	कुहणरो१तुडिमुद्गरलक्ष-	५०१	ताम्रेसुरकीविधि-
४९१	अहिपूतन२अजगल्ली४	५०१	नागेश्वरकीवि-
४९१	पारिगर्भ५यांकालक्षण-	५०२	बंगेसुरकीविधि-
४९१	बालकांकादांतांकीरोग-	५०२	सारकीविधि-
४९१	बालकांकारोगांकोजत-	५०३	सौनमयीकोसोधन-
४९१	बालकांकीज्वरकोजतन-	५०३	अधककोसोधनमारण-
४९२	ज्वरातिसारकोजतन-	५०४	हरतालकोसोधनमार-
४९२	आमातिसाररक्तातिसार-	५०५	चंद्रोदयकीविधि-
४९२	सर्वप्रकारकाअतीसारको-	५०६	रससिंदूरकीविधि-
४९२	मरोडा निवाही संग्रहणी-	५०७	पागमारिवाकीवि-
	वास हिचकी छर्दि दूधछा-	५०८	वसंतमालतीरस-
	देयांकाजतन-	५०८	हींगलकीविधि-
४९३	बालककाआफरा मूत्रबंध-	५०९	इतिअमृतसाग०२३ स्तरंगः
	लालघणीपडै छालांकोन-	५०९	अथदशमूलशवकीवि-
	भिकैसोजोनाभिपकिहोय-	५११	सीलाजीतसोध-
	गुदापकिहोयदांतदोराआवे-	५१२	जवषारकरिवाकीविधि-

५१२	चणधारकरिवाकीवि०	५३१	सिपरणीकीविधि
५१२	लोहविधि	५३२	मठाकीविधि
५१२	स्वैदविधि	५३३	अथपानिचर्या
५१३	महासात्वणस्वेद	५३३	छउरितुमेंस्त्रासंभोग
५१३	वमनविधि	५३४	अथमनुष्यांकाशरीरकीच
५१४	विरेचनामजुलाबवि		वस्थाडिषिते
५१६	छउरितुकाजुलाबजुदख	५३५	कलाकोस्वरूप
५१७	छउरितुमेंहरडैवावाकीवि	५३५	सातआसय
५१७	वस्तिकर्मकीविधि	५३५	सातधात
५२१	होकार्नेआदिसेधूमपान	५३५	सातउपधात
५२३	अथधूपलि०	५३६	सातत्वचा
५२३	लोहीछुडावाकीवि०	५३६	तीनदोषांकोस्वरूप
५२७	इतिअमृतसाग०२४स्तंभः	५३७	पित्तकोस्वरूप
५२७	छउरितुकोवर्णन	५३७	कफकोस्वरूप
५२८	वायुकाकोपकाआहारवि	५३७	स्नायुनुसंकोचस्वरु
५२८	पित्तकाकोपकाआहारवि०	५३७	हार्माकोस्वरूप
५२८	कफकाकोपकाआहारवि०	५३८	मर्मस्थान
५२८	छउरितुकासेवाकाआहारवि०	५३८	मंसांकोस्वरूप
५२८	हिमपित्तु सिसिर वसंत ग्री	५३८	मांसकीपींडी
	ष्मकाआहारविहार	५३८	रसरंआकोस्वरूप
५२९	वर्षारितुशैरदरितुकाआ	५३९	सृष्टिकउपजावाकीवि०
	हारविहार	५४०	दशइंद्रियांकोस्वरूप
५३०	अथदिनचर्यालि०	५४०	पांचतत्वकोस्वरूप

५४०	ज्ञानेन्द्रियांकोविषय-	५४३	आहारकोपरिपाक
५४०	प्रकृतिकानाम-	५४४	वायुकीप्रकृतिकोल-
५४१	चौईसतत्व-	५४४	पित्तकीप्रकृतिकोलक्ष-
५४१	अथआहारकोअरपरिपा-	५४४	कफकीप्रकृतिकोलक्षण-
	ककोगर्भकीउत्पत्तिकोबा-	५४४	नींदकोलक्षण-
	लककापोषणादिकको-	५४४	इतिअमृतसागरेपंचवि-
	लक्षणलि०		शतिस्तरंगःसंपूर्णमस्तु
५४३	बालवर्नेत्रौषदिदेवाकीमा-		श्रीरस्तु
५४३	मनुष्यकाशरीरकीगति-		शमभूयात्

समाप्त-

